प्रकाशक
श्री डीडवाना नागरिक सभा
१६१/१, महात्मा गांधी रोड
३ तल्ला-८३ बी
कलकत्ता-७



प्रथमावृत्ति

विक्रमाब्द २०४०



मूल्य ७५.०० रुपये



मुद्रक
एसकेज
८, घोभाराम बैसाख स्ट्रीट
कलकत्ता-७

आचार्य विष्णुकांतजी शास्त्री

के कर कमलों द्वारा

सत्-साहित्य के पाठकों को

पुरोवचनिका

प्रस्तुत कृति डीडवाना, राजस्थान के स्वनामधन्य स्व० नाथूरामजी की रचनाओं का मकलन है। उनकी रचनाओ का प्रकीर्णक रूप तो पहले भी प्रकाशित हो चुका है—पर एकत्र सकलित रूप पहली बार इस लोक मगलमयी कृति के माध्यम से श्री जासूजी द्वारा सामने लाया जा रहा है। एतदर्थ वे तथा श्री डीडवाना नागरिक सभा साधुवाद के भाजन है।

कृति कृतिकार का यश शरीर है, जिस पर देश और काल का कोई विकारकारी प्रभाव नही पडता—फलत वह देश-काल जयी होता है। सत जन एषणाविहीन होते है अत· जव उनकी सभी एषणाएँ समाप्त है तो यशःप्राप्ति की लोकैषणा ही क्यो शेष होगी? जव सब प्रकार के परिग्रह से विहीन हो चुके तो चार रचनाओ का परिग्रह ही क्यो करने लगे? रचना की और जनता जनार्दन को समर्पित, फिर वे सम्हाले न सम्हाले—उनका दायित्व। जनता को जब उनकी रचनाएँ प्रेरणास्पद प्रतीत हुई, तब न केवल उनको सम्हाला, अपितु सकलित और मुद्रित कर सर्व सामान्य के लिये प्रस्तुत रूप मे सुलभ भी करा दिया। श्री डीडवाना नागरिक सभा ऐसी कृतज्ञ जनता का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रस्तुत मकलन मे अनेक प्रकार की रचनाएँ हैं। भक्तवर प्रह्लाद और सुदामा को केन्द्र मे रखकर लिखी गई ख्याल रूप गेय नाटिकाये, विभिन्न संवाद, स्तुति एव ललित लीला काव्य, अपने पूर्वज श्री नामदेव की मंगलमयी पद्यबद्ध गाथा, राग-रागिनियो मे निवद्ध विभिन्न देवी-देवताओ परक भजन और अतत समस्यापूर्तियाँ। इन विविध विध रचनाओ की तह मे जो चेतना प्रवाहित है, वह सहृदय पाठक की अनुभूति से ही गम्य हो सकती है।

यो कविवर्य, रामानुजाचार्य की तिगल शाखा मे दीक्षित भक्त थे और महाराज बालमुकुन्दाचार्यजी जो इनके अध्यात्म गुरु थे, की छाया मे अपनी साधना सम्पन्न की थी। सामान्यत अधकचरे साम्प्रदायिक दीक्षितो मे खण्ड बुद्धि कट्टरता पैदा करती है और अपने आराध्य को वे सीमा और भेदग्रस्त समझते है, फलत उनके समर्थन और अन्यो के खण्डन मे लग जाते हैं। सिद्ध महात्माओ की बात ही और होती है। वे साधना के बल पर 'पूण' का अनुभव करते है—'सत्य' की अपरोक्षानुभूति करते है और 'पूर्ण-सत्य'' दस बीस नही एक और केवल एक होता है। जहा दो है ही नही वहाँ किसकी अपेक्षा किसकी निन्दा? वस्तुत साधनकाल मे रुचि-भेद वश एकनिष्ठ होना पडता है, फलतः अपनी निष्ठा को प्रगाढ करने के लिये उसे अनेक दिशाओ से अन्वावृत करना आवश्यक होता है। इम प्रक्रिया मे भेद बुद्धि हो सकती है पर 'भेद' से 'अभेद' सत्य का साक्षात्कार सम्पन्न हो जाने पर सारे भेद एक ही अभिन्न सत्ता के विविध रूप मे अनुभव होने लगते है, साम्प्रदायिक कट्टरता निर्गलित हो जाती है—सर्वत्र अपने ही इष्ट का दर्शन होने लगता है। फिर तो 'का सन करहु विरोध'? यही कारण है कि भक्तवर स्व० नाथूरामजी एक

विशिष्ट निर्धारित प्रणाली से गतव्य तक पहुँचने के बाद स्मार्त पचदेवताओ की भी एक ही निष्ठा से स्तुति करते है—शिव और विष्णु मे अभेद देखते है, इतना ही नही—यह अभेद बोध महालक्ष्मी और विष्णु, शिवा और शिव तक व्याप्त हो जाता है। वे कहते है—

एक ब्रह्म मृत्तिका रूप सकल घट घट में।
जग दर्श रहा है भेद केवल बणगट में।—पृष्ठ-४८

एक ही सत्ता निर्गुन और सगुन रूप मे अवस्थित है।

ताप भय हरिहर निवारा। निगुन सगुन नभ घन ज्यूँ पियारा।
एक अनेक लघु दीर्घ दीदारा। जड़ चेतन चेतन जड़ द्वारा।—पृष्ठ-४८

× × ×

नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मण्ड।
हरिहर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है।—पृष्ठ-१५३

× × ×

महालक्ष्मी अरु विष्णु में कछु नहीं है भेद।
तज दुर्भाव तज माया ब्रह्म मिटे त्रिविध खेद॥—पृष्ठ-३३

गोस्वामी जी की तरह भक्तवर नाथूराम जी पचदेवोपासना—स्मार्त उपासना मे भेद नही देखते।

नाथूराम जी ने अनेक सम्वादो की अत्यन्त चित्ताकर्षक योजना की है। कतिपय सम्वाद इस प्रकार है .—

१—अगद रावण सम्वाद, २—हिरण्यकश्यप प्रह्लाद सम्वाद,
३—रभा शुक सम्वाद, ४—शिशुपाल देवर भाभी सम्वाद,
५—शिशुपाल पाडव सम्वाद, ६—श्री राम शबूक सम्वाद,
७—श्री राम बाली सम्वाद आदि।

इन सम्वादो की एक विशेषता ध्यान देने की यह है कि इनमे कवि ने अपने जीवन दर्शन का सार प्रस्तुत कर दिया है। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के निमित्त यह सरणि उत्तम है। देखिये, भक्तवर प्रह्लाद के मुख से हिरण्यकशिपु के पूछने पर क्या सिद्धांत कहलवाया है—

चार वेद षट् शास्त्र सम्मति आदि पुराणा।
सभी ही का सारांश अर्ध श्लोक में आना।
ब्रह्म सत्य जग मिथ्या जान मन धारण कीन्हा।
यह मै विद्या पढ़ी सफल होवेगा जीना।
और विद्या सब अविद्या हरि भक्ति विद्या खरी।
नाथू कहे प्रह्लाद ज्ञानी पिता यों भजता हरी॥ पृष्ठ-१२९

प्राय· सतजन स्वरूप साक्षात्कार करके आत्माराम हो जाते हैं। उन्हे लोक की पीडा से कोई मतलब नही रह जाता। ऐसे बिरले सत होते है जो स्वरूप साक्षात्कार कर स्वयम् तो कृतार्थ हो जाते हैं, पर लोक को दशा से दुखी होकर उसके निवारण का मार्ग भी निर्दिष्ट करते हैं। उसकी दशा का चित्रण कर उस पर आँसू भी बहाते हैं। संतजन भगवान की ही भाँति अकारण करुणावरूणालय होते है। उन्हे अपने साथ दूसरो के भी उद्धार की कामना रहती है। कलियुग वर्णन के माध्यम से मानो वे अपने युग के साथ एकाकार होकर समाज और राष्ट्र को भी देखते हैं। राष्ट्र और समाज की विकृतियो से उनका नवनीत कल्प हृदय विदीर्ण हो उठता है। जिस युग और राष्ट्र ने सत को कृतार्थ किया उसके प्रति वह तटस्थ कैसे रह सकता है। कविवर नाथूराम जी ने देश की परतत्रता पर बेचैनी के आँसू बहाये हैं। स्वतत्र शरीर मे ही स्वतत्र आत्मा स्वतत्र होने का अहसास करती है। परतत्र राष्ट्र अपनी खोई हुई अस्मिता को कैसे प्राप्त कर सकता है? कलियुग के व्याज से वे कहते हैं—

शील व्रत जाति कर्म, उठ गये दया धर्म।
नई फेशन धार शर्म, अधर्म कर बहाते है।
भाइन सग गैर पाले, साले सग मौज घाले।
निशि तोड़ ताले वाले, निराले हो जाते है।
सयाना नादान हुआ, चौड़े खेल २ जुआ।
हाथा पींजरे मे सुआ, पड़ के पछताते है।
कहे दर्जी नाथूराम, छोड़ लगे बुरे काम।
इस जमाने का ही नाम, कलियुग कहाते है।-पृष्ठ-१७८ (खण्ड-२)

समय और समाज की यह स्थिति देखकर उसे सुधारने की भी उनकी बलवती इच्छा है—

कहे नाथू शुचिकार होवे समाजी सुधार
करो पर उपकार देश जाति कार्य दौड़ के ॥ पृष्ठ-१८८ (खण्ड-२)।

इन सबके साथ उन्हे कविता इतनी हस्तामलकवत् हो गई थी कि समाज मे वे आशुकवि के रूप मे पूजित और मान्य थे, यही कारण है कि उनकी समस्यापूर्तियाँ बहुत महत्वपूर्ण बन पडी हैं।

ऐसे लोकसग्रही और आत्माराम महात्मा की रचनाओ का सग्रह प्रकाशित कर श्री डीडवाना नागरिक सभा ने अपना और राष्ट्र तथा समाज का जो मगल किया है वह अत्यन्त श्लाघास्पद है। एक बार पुन साधुवाद।

हिन्दी विभागाध्यक्ष
सागर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश)

डा० राममूर्त्ति त्रिपाठी

प्रकाशकीय

कवि, मनीषी एव सत ही किसी भी समाज की सच्ची ऊर्जा होते है। वे समाज की पीडा का अनुभव करते है एव उसका मार्गदर्शन भी करते है। इसी कारण उनकी वाणी एव साहित्य सही अर्थो मे समाज का प्रतिबिम्ब बनता है। डीडवाना नगर का यह सौभाग्य रहा है कि इसकी भूमि सत हरिदास जी निरजनी की एव जोगामडी के नाथो की वाणियो, नागोरिया तथा झालरिया मठ के आचार्यो के धार्मिक प्रवचनो एव कविवर नदलालजी एव नाथूरामजी के रसमय काव्य से सदैव अनुगु जित होती रही है।

रससिद्ध कवि नाथूरामजी का साहित्य डीडवाना एव आस-पास के क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय रहा है, आज भी उत्सवो एव त्योहारो मे उसे गाकर लोग झूम उठते है। अत श्री डीडवाना नागरिक सभा कलकत्ता ने निर्णय लिया कि उनका जो भी प्रकाशित अप्रकाशित साहित्य यत्र-तत्र बिखरा पडा है उसे एकत्रित कर सभा के प्रथम ग्रथ पुष्प के रूप मे प्रकाशित किया जाय। एतदर्थ सभा ने यह कार्य श्री रामस्वरूपजी सोनी, श्री रामगोपालजी सोनी एव श्री शिवरतनजी जासू को सौपा। श्री रामस्वरूपजी तथा श्री परसरामजी वर्मा छोटी खाटू, बिदासर, छापर, हरनावाँ, गच्छीपुरा, दयालपुरा आदि स्थानो पर गये, वहा के लोगो से, जो कविवर के सम्पर्क मे थे, पूछ कर साहित्य इकट्ठा किया। इस क्रम मे स्व० रामकुमारजी मानधण्या की भतीजी श्रीमती गुणवती देवी से भी बडी सहायता मिली जिन्होंने कविवर के भजनो का हस्तलिखित ग्रथ उपलब्ध कराया जो स्व० मानधण्या जी ने अपने मित्र कवि नाथूरामजी दर्जी के पास बैठकर लिखा था। इस प्रकार वह साहित्य— कुछ प्रकाशित पर बहुताश अप्रकाशित हमे प्राप्त हुआ। प्रकाशन कार्य के अन्तिम क्षणो मे कविवर के कुछ अनमोल पद्य श्री रामगोपालजी सोनी से और मिले जिन्हे जीवनी के क्रम मे प्रकाशित किया गया है। यद्यपि हमारा यह प्रयास रहा कि साहित्यिको के रसास्वादन हेतु इसे शीघ्र प्रकाशित करे परन्तु बीच-बीच मे व्यवधान आते रहे अत विलम्ब हुआ।

हर्ष है कि आज माँ सरस्वती के पूजनोत्सव एव श्री डीडवाना नागरिक सभा की रजत जयन्ती के अवसर पर यह साहित्य-पुष्प "नाथूराम श्याम के शरणे" नाम से हिन्दी के विशिष्ट सेवक श्री विष्णुकात जी शास्त्री के माध्यम से लोकार्पण किया जा रहा है। इस अवसर पर हम, उन सभी महानुभावो के प्रति, जिनका इस ग्रथ के प्रकाशन मे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहयोग रहा है, आभार प्रकट करते है और आशा करते हैं कि यह ग्रथ अपने उद्देश्य की पूर्त्ति मे सफल होगा। हम विद्वज्जनो से भी विनय करते है कि वे इसका साहित्यिक मूल्याकन करे और जनता मे कवि की लोक मगलकारी वाणी का प्रचार व प्रसार करने मे योगदान दे।

श्री कन्हैयालालजी सेठिया तथा प० राममूर्त्तिजी त्रिपाठी के हम आभारी हैं जिन्होने 'दो सबद' तथा 'पुरोवचनिका' लिखकर इसका मर्म सबके सामने प्रकट किया।

बसत पचमी
सम्वत् २०४० वि०
७ फरवरी १९८४

गौरी शकर छ्यावाला
अध्यक्ष
श्री डीडवाना नागरिक सभा

॥ श्री गणेशाय नम ॥

कविवर स्व० नाथूराम दर्जी का जीवन चरित्र

कवित्त—'हरियश गीत माला' 'पीयूष वर्षिणी,
'ख्याल भक्त सुदामा' 'प्रह्लाद' अभिराम है।
'रग पिचकारी' 'हनुमान यशपद माला',
भक्त 'नामदेव' गाथा ललित-ललाम है॥
विविध भजन, होरी गीत, रच झूलापद
शिक्षाप्रद सरजे 'सम्वाद' सुखधाम है।
डीडवाना साहित्य सरोवर मे विकसित
सौरभित सरसिज दर्जी नाथूराम है॥

सवैया—भक्ति रसामृत लाए नाथू मरुधर में रस धार बहाई।
कृष्णपदाम्बुज भ्रमर अहर्निश गुनगुन गु जन श्रवण सुहाई॥
सद्ग्रन्थभागवत रामायण गीतापढ गुन शुभ मति सरसाई।
दास 'स्वरूप' भक्त कवि नाथू, अजर अमर कल कीरति छाई॥

चौपाई—भक्ति रसायन साधक नाथू। बन्दऊं चरण नवावऊ माथू॥
मात शारदा जिह्वा बैठी। बुद्धि विमल कविता उर पैठी॥
सरस शब्द साहित्य बनाया। शैली सरल विगत छल माया॥
धोती चोला सिर पर पगड़ी। ज्योति क्षीण कर मे ली लकड़ी॥
नाक सु घनी, हिय श्रीरामा। कपड़े सीते, जपते नामा॥
वेद पुरान शास्त्र सुन सुन कर। पा नवनीत ज्ञान से मथकर॥
योग क्षेम रख राम भरोसे। रची अमर वाणी तन मन से॥
'नाथूराम श्याम के शरणे। हरिजस बरणे पार उतरणे॥'
सचमुच कवि हरि कथा बखानी। पायो मोक्ष सफल कर बानी॥
धन्य डीडवाना पुर पावन। जन्मे कवि नाथू मनभावन॥
धन्य धन्य छीपी कुल नथिया। धन्य भवन जह नाथू रमिया॥
धन्य रसिक जन नगर निवासी। पढे सुने पद हृदय-हुलासी।
धन्य प्रकाशक दान-प्रदाता ग्रन्थ छपाए आनन्द दाता॥
नाथू सत्साहित्य अनूपा। शारद-प्रेरित दास "स्वरूपा"॥

डीडवाना नगर का परम सौभाग्य है कि इस पावन भूमि मे सरस्वती के एक ऐसे वरद् पुत्र ने जन्म लिया जिसने अपनी साहित्य साधना एव अनूठी काव्य-सर्जना द्वारा एक अमूल्य साहित्यिक निधि का निर्माण किया और राजस्थानी मिश्रित हिन्दी भाषा के भण्डार मे अभिवृद्धि की। वह महामानव आज से केवल ३० वर्ष पूर्व अपनी सुखद स्मृति छोड कर इस धरा धाम से प्रस्थान कर गया, परन्तु जब तक उसकी रचनाएँ विद्यमान है और काव्य-रसिक उनका रसास्वादन करते रहेगे, तब तक कवि की यश काया अजर अमर रहेगी।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वरा।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणज भयम्॥

जननी जणे तो भक्त जन, कै दाता कै शूर।
नीतो रीजे बांझड़ी मती गमाजे नूर॥

वह माता धन्य थी, जिसकी कोख से एक भक्त कवि जन्मा और डीडवाना मे एक युग-निर्माण किया। उनका जन्म सवत् १९४६ वि० मे एक साधारण दर्जी परिवार मे हुआ था। उनके पितामह स्व० पूसाराम जी नथिया डीडवाना नगर में नाईयो की हताई मोहल्ले मे रहते थे और पारिवारिक धन्धा, सिलाई का कार्य करते थे। उनके दो पुत्र—स्व० मथुरादास जी एव स्व० हनुमानजी हुए। मथुरादासजी के पुत्र कवि नाथूरामजी तथा तीन पुत्रियाँ थी। हनुमान जी के पुत्र स्व० श्रीकृष्ण जी तथा एक पुत्री नारायणी देवी हुए। श्री कृष्णजी तथा कवि नाथूराम जी एक ही परिवार मे रहा करते थे। तथा उन दोनो मे आपस मे बडा प्रेम था। मथुरादासजी का स्वर्गवास हो जाने पर उनके भाई हनुमानजी अनाथ होकर एक प्रकार से रोने लगे थे, उस समय की निर्धनता देखी नही जाती थी। घरबार गिरवी पड़े थे, घर मे खाने को कुछ भी नही था। कर्जे से दुखी होकर हनुमानजी छिप कर बाहर रहते थे और महीनो घर पर नही आते थे। कभी कभी रात्रि के गहन अन्धकार मे छिपकर मिलने आकर चले जाते थे। इस प्रकार कष्टों को सहन करते करते यह परिवार महादुखी हो गया था। यही कारण था कि कवि नाथूराम जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण जी अर्थोपार्जन हेतु १० वर्ष की अल्पायु मे ही इन्दौर-लश्कर चले गये। कविवर के हृदय मे वाल्यावस्था से ही ईश्वर-भक्ति की लौ लगी होने के कारण वे धनोपार्जन की ओर से विमुख ही रहे, अत॰ परिवार का समस्त कर्ज श्रीकृष्णजी ने ही चुकाया और गिरवी पडा घर छुडाया। श्रीकृष्ण जी की धर्मपत्नी रामप्यारी देवी, जो आज सौभाग्य से हमारे वीच विद्यमान है, उस समय अपने पैरो मे कासी के कडले पहनती थी, और कपडे भी फटे हुए नसीब होते थे, परन्तु उस सकटपूर्ण स्थिति मे भी उन्होने धैर्य रक्खा और परिवार को वनाए रक्खा। कवि नाथूरामजी प्राय कहा करते थे कि यह औरत हमारे घर मे लक्ष्मी है। उसी के पुण्य प्रताप से समस्त कर्ज चुक गया, गिरवी मकान छुडा लिए गए और नवीन मकान भी खरीद लिये गए। यहाँ तक कि तत्कालीन सामाजिक मर्यादा के अनुसार पिता, वावा, माता आदि वडेरो का यथोचित सुधारा भी कर दिया गया।

इस प्रकार की विकट पारिवारिक परिस्थिति मे कवि नाथूराम जी कमल के समान रहकर अपना आध्यात्मिक चिन्तन मनन करते रहते थे। उन्होने अपना जीवन परिचय निम्न लिखित कवित्त मे दिया है।

तिथि दिन याद नाय, सुनी छियालीस मांय,
पड़े दुःख देण तांय, जनम गिरह खोटा है।
बालपने मात मरी, नौवें साल कुनार बरी,
बारहवें पितृ सुरपुरी, सहे कष्ट टोटा है।।
पढ़े अक टुक पोशाल, शारदा जगी सोलहवें साल,
विप्र कवि नन्दलाल गुरु मिलिया मोटा है।
विधि विष्णु शिव हसी रचे जग अशाअशी,
नाथू नामदेव वशी, कृष्णपद ओटा है।।

उपर्युक्त स्वकथ्य के अनुसार कविवर का जन्म सवत् १९४६ वि० मे हुआ था। परिवार इतनी विपन्नावस्था मे था कि किसी ने भी उनकी जन्म तिथि व दिन का कोई लिखा ही नही रखा। मैंने कविवर से एक बार पूछा था कि आपकी कोई जन्मपत्री बनी हो तो दिखाओ। मै उस समय Napoleon's Book of Fate नामक पुस्तक के आधार पर भविष्य दर्शन मालूम किया करता था। कविवर ने बताया कि सही तिथि याद नही है, परन्तु कृष्ण जन्माष्टमी के आसपास जन्म होने की बात कुछ बूढो से सुनी है। उनका जन्म दिन जो भी रहा हो, कविवर ने बाल्यावस्था मे अपार कष्ट पाया। छोटी अवस्था मे ही उनकी माता का देहान्त हो गया। अत मातृ सुख से वचित होकर बालक नाथू अनाथ के समान पडोसियो के दया-पात्र होकर रहे। नौ वर्ष की अल्पायु मे ही समाज मे उस समय प्रचलित परम्परा के अनुसार उनका विवाह फूली देवी से हुआ। वह स्त्री बडी फूहड और कर्कशा थी और कविवर को कई बार नादानी मे गाली भी निकाल देती थी, इसीलिए कविवर ने उसे 'कुनार' की सज्ञा दी है।

कुनार के गले मढ जाने का दुख तो था ही, १२ वर्ष की आयु मे ही कविवर के पिता का भी स्वर्गवास हो गया। माता पिता दोनो का साया उठ जाने से कविवर तूफानी समुद्र मे एक नाव की भाँति हो गए। उनके चाचा हनुमानजी ने ही उनको पाला, परन्तु परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी गिरी हुई थी कि दो वक्त की रोटी भी कष्टसाध्य थी। "सहे कष्ट टोटा है" का सकेत कविवर ने इसी आशय से दिया।

जब कविवर १० साल के थे तभी से वे महाजनी पोशाल मे पढने जाया करते थे। वहाँ उन्होंने अक और अक्षर ज्ञान प्राप्त किया। उस काल मे विद्यार्थी पट्टी पहाडा सीख कर व्यापार (दुकानदारी) का कार्य बडी दक्षता से सम्हाल लेते थे। डीडवाना मे पोशाल की पढाई का अच्छा महत्व और प्रचलन था। कविवर ने भी पोशाल से ही अको और अक्षरो का यत्किचित् ज्ञान प्राप्त किया। बारहवे वर्ष मे कविवर के पिता का स्वर्गवास हो जाने के बाद उनका पोशाल जाना भी छूट गया और घर पर रहकर सिलाई के काम मे अपने चाचा हनुमानजी को सहयोग देने लगे। तीन साल तक ये बराबर कामकाज करते रहे। साथ ही साथ ये ईश्वर भक्ति के भजन भी गुनगुनाते रहते थे। उनकी आवाज

मे इतना मिठास था कि श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो जाते थे। वे मन्दिर जात, कथा वार्ता श्रवण करते और ग्राहको से जितना मिलता उसी से घर-खर्च चलाते थे किन्तु उनकी इस वृत्ति से उनकी पत्नी का असन्तोष बढता गया और वह प्रतिदिन अधिक अर्थ के लिए कलह करने लगी। पर कवि अपने मार्ग से विचलित नही हुए और केवल पैसा कमाने मे ही उलझे रहने मे असमर्थता प्रकट कर दी। यह बात इनकी पत्नी को विशेष अखरी। शनै शनै कविवर भी गृहस्थाश्रम से विरक्त रहने लगे। वे घन्टो मन्दिर की सीढियो पर बैठ कर न जाने क्या गुनगुनाते रहते थे। अब कपडे सीना कम परन्तु भगवच्चर्चा अधिक, यह उनकी दिनचर्या बन गई। इधर १६ वर्ष की अवस्था मे ही इनकी पत्नी इन्हे छोडकर अन्यत्र चली गई। लोगो ने उसे बहुत समझाया कि एक भगवद्भक्त व्यक्ति के साथ रहने से तुम्हारा इहलोक और परलोक दोनो सुधरेंगे परन्तु उसके ऐसे भाग्य कहाँ थे? अब कवि एकाकी जीवन बिताते हुए मन्दिर मे कथावार्ता श्रवण मे अधिक समय देने लगे और केवल जीवन निर्वाह लायक सिलाई का धन्धा करने लगे। सौभाग्य से वे अपने एक समकालीन साहित्यकार कवि नन्दलालजी गुजराती (अवदीच्य) के निकट सम्पर्क मे आए और उनकी कविताओ मे रुचि लेने लगे।

कवि नन्दलालजी ज्योतिष एव कर्मकाण्ड के प्रखर विद्वान थे। उनके हस्तलिखित ग्रन्थ आज भी उनके परिवार मे सुरक्षित रक्खे है। वे परम आस्तिक एव सिद्धहस्त कवि भी थे।

नाथूराम जी भी मौखिक काव्य रचना करने लगे। अब दोनों व्यक्ति घन्टों काव्य-चर्चा मे लगे रहते थे। कवि नन्दलालजी उनको सुधार हेतु सुझाव देते रहते थे। दो तीन वर्षों मे कविवर अच्छे भजन बना कर यत्र तत्र सुनाने लगे। कविवर ने नन्दलालजी को ही अपना गुरु बनाया। सवत् १९६७ ई० मे शिवरात्रि के शुभ दिन वे एक नारियल और एक चवन्नी लेकर अपने गुरु के पास गए और कविता रचने के लिए उनका आशीर्वाद ग्रहण किया। उन्होने बाकायदा गुरु का कर-कमल अपने मस्तक पर धरवाया और अपना प्रथम अधिकृत पद उनके सामने ही रचा। इसके पूर्व उन्होने कितने भजन रचे और उनका क्या हुआ, यह जानकारी उपलब्ध नही है, परन्तु गुरु मुख से आशीर्वचन सुनने के बाद उन्होने जो पद रचा वह बडा सुन्दर बन पडा है। तीन चार वर्षो के प्रयास मे ही साक्षात् शारदा कवि के उर-अजिर मे नाचने लगी, यह ईश्वरीय चमत्कार था। कवि नाथू जी इसे गुरु कृपा का प्रसाद मानते थे। उन्होने इन पक्तियो के लेखक को कई बार कहा था कि गुरु नन्दलालजी का स्मरण करते ही उनकी काव्य बुद्धि पख लगा कर उडान भरने लगती है। कवि द्वारा रचित प्रथम पद गणेशजी का निम्न प्रकार से है।

जय शिवलाला, जपूँ तव माला, करो प्रतिपाला लखवाला ॥ टेर ॥
नव निधि वाला, सुमुख कुशाला, वक्रतुण्डाला दु दाला।
मुकुट विशाला कुण्डलवाला, त्रिपुण्ड्रनिकाला शुभभाला ॥ १ ॥
मुक्त प्रभाला हिय गलमाला जरकसवाला दुःशाला।
अष्ट गन्धाला मोदकवाला भजे त्रिकाला दिग्पाला ॥ २ ॥

अशुभकसाला विघ्नकराला हरहु कृपाला तत्काला।
दे धन माला सुमति सुचाला करहु निहाला सिद्धिसाला॥ ३ ॥
गुरु नन्दलाला उर गुण डाला, भए उजाला खुलताला।
नाथू सींवाला रचि पदमाला करत कुशाला गोपाला॥ ४ ॥

अब कवि को कविता रचते ५ वर्ष हो चुके थे। प्रारम्भिक कविताएँ पूर्णतया मौखिक ही हुआ करती थी। कवि को अपने रचे हुए भजन कण्ठस्थ रहते थे। मन्दिरो मे जब भी कीर्तनादि के कार्यक्रम होते, वे अवश्य जाकर स्वरचित भजन गाते। यदि कभी कुछ विस्मरण हो जाता तो आशु कवि होने के कारण तुरन्त उसकी पूर्ति कर लेते थे। अब कवि २१ वर्ष के हो चुके थे। गुरु नन्दलाल जी ने उनको राय दी कि भजन बनाने के लिए विभिन्न कथानको का ज्ञान करना आवश्यक है। हमारे पुराण और उपनिषद् ज्ञान विज्ञान के कोष है। इनकी गहराइयों मे उतरे बिना ज्ञान पल्ले नही पडेगा, अत तब से कविवर ग्रन्थों मे निहित ज्ञान प्राप्ति मे अहर्निश प्रवृत्त रहने लगे। स्वय पढे लिखे न होने के कारण ग्रन्थो का अध्ययन करना भी सम्भव न था। सौभाग्य से वे नागोरिया मठाधीश स्व० बालमुकुन्दाचार्य जी महाराज के प्रवचनो मे नियमित रूप से जाने लगे। स्वामीजी महाराज तपस्वी महात्मा थे और जानकीवल्लभ भगवान के अनन्य उपासक होने के कारण धर्मशास्त्रो का आलोडन-विलोडन करके भक्ति का गहन तत्व खोज चुके थे। कविवर उनके प्रवचनो मे बराबर जाकर शका समाधान किया करते थे। स्वामी जी महाराज ने उनको सुपात्र जानकर बडे प्रेम से श्रीमद्भागवत महापुराण के रसामृत का पान कराया। वे कवि की पारिवारिक परिस्थिति एव उनकी प्रच्छन्न प्रतिभा से पूर्णतया परिचित थे और कवि की कविताओ को बडे चाव से सुनते थे। उन्होने एक पुराण की कथा समाप्त होते ही दूसरा पुराण शुरू करके कुछ ही वर्षों मे कवि के ज्ञान भण्डार मे अतिशय वृद्धि कर दी। कवि ने पूरी श्रद्धा एव मनोयोग से पुराणो का श्रवण किया और आजीवन स्वामी जी महाराज के आभारी रहे जिन्होने उनके ज्ञान-चक्षु खोलकर परम-तत्व के दर्शन कराए। कविवर के हृदय मे कृष्णभक्ति के बीज अकुरित हुए एव उन्होने कृष्ण को ही अपना आराध्य स्वीकार कर लिया।

स्वामी जी महाराज ने कविवर को शास्त्र श्रवण कराकर उनको आशीर्वाद दिया कि अच्छे शिक्षाप्रद धार्मिक भजन बनाकर जनता मे सनातन धर्म का प्रचार करो। उन्होने कविवर मे वचन भी ले लिया था कि वे भगवान की विविध लीलाओ के चित्रण के अतिरिक्त साधारण मानव की झूठी प्रशसा करके कविता कौमुदी को कलकित नही करेंगे। कविवर ने आजीवन इस वचन को निभाया। उनके सामने कई प्रलोभन भी आए। यदि वे किसी धन-सम्पत्ति-शाली किन्तु आचरण हीन दम्भी व्यक्ति की प्रशसा मे काव्य-रचना करके उसे राजी कर देते तो उनको आर्थिक लाभ होता परन्तु कविवर ने कविता-कामिनी के कलेवर को कलुषित करना महापाप माना था। उन्होने अलबत्ता तत्कालीन जोधपुर नरेश स्व० उम्मेदसिंह जी महाराज की प्रशसा मे एक पद रचा था, परन्तु वे नरेश प्रजापालक व जन हितैषी होने के कारण सर्वत्र सर्वादृत थे, इसमे दो मत नही है।

अस्तु, अव कविवर ने भजन रचना करना प्रारम्भ किया और कोई भी पढा लिखा व्यक्ति मिलता, उसी से वे भजन लिखवा कर अपने पास रख लेते थे। सवत् १९६८ से स० १९७१ वि० तक उन्होने करीब ५०० से ऊपर भजन रचे। स्वजातीय सगीतज्ञ स्व० गुलावचन्द दर्जी को वे सायकाल अपने साथ लालवाग नामक स्थान पर ले जाते थे, जहाँ नगर के अन्य सगीत प्रेमी सज्जन और प्रतिष्ठित नागरिक आया करते थे। लालवाग के पुजारी स्व० वावा पूर्णदास अच्छे गायक थे। वहाँ कई प्रकार के वाद्ययन्त्र भी रक्खे रहते थे। कविवर अपने भजनो को स्व० गुलाबचन्द दर्जी से गवा कर, स्वय गाकर, राग रागिनी को शुद्ध करके, मात्रा आदि की अशुद्धियाँ सुधारते जाते थे। इस प्रकार कविवर ने अपनी प्रथम पुस्तक छपवाने के लिये काफी साहित्य-सर्जना कर ली। आर्थिक स्थिति अत्यन्त गिरी हुई होने के कारण कविवर के लिए स्वय पुस्तकें छपवाना नितान्त असम्भव था। कोई दानदाता मिले बिना यह कार्य काफी समय तक उपेक्षित पडा रहा। कविवर ने अपनी ओर से किसी की गरज भी नही की, क्योकि कवि बड़े सिद्धान्तवादी और आत्म सम्मानी थे। अन्ततोगत्वा सवत् १९७४ वि० मे भगवान की प्रेरणा से स्व० सेठ कन्हैयालालजी गट्टाणी ने परोपकार की भावना से इन भजनो को "हरियश पीयूष वर्षिणी" नाम से श्रीनिवास प्रेस, वृन्दावन मे छपवाकर प्रकाशित कराया। इसमे १११ पद शामिल किए गए, जो बडे लोकप्रिय सिद्ध हुए। यह पुस्तक हाथो हाथ विक गई। किन्तु अर्थाभाव के कारण इसकी दूसरी आवृत्ति नही हो पाई।

भजनो की रचना करने के साथ कविवर समस्या पूर्तियाँ करने के आशुकवि कहलाने लगे थे। किसी भी सामयिक विषय पर ये तुरन्त सवैया, कवित्त, चौपाई आदि कोई भी छन्द रच देते थे। वे कई कवि-सम्मेलनो मे जाने लगे थे और धार्मिक पृष्ठभूमि मे समस्या पूर्ति करके सर्वत्र अभिनन्दित होते थे। विक्रमाब्द १९७४ ई० मे डीडवाना महामारी (प्लेग) से आक्रान्त हो गया था। डीडवाना खाली सा हो गया था। कविवर अपने सगे सम्वन्धियो के पास छोटी खाटू नामक स्थान पर चले गए। वहाँ उन्होने तात्कालिक परिस्थिति का दिग्दर्शन करते हुए जो ओजपूर्ण कविता रची, उसका वर्णन इसी ग्रन्थ मे पृष्ठ १६७ (खण्ड-२) पर दिया गया है।

महामारी का प्रकोप शान्त होने के वाद कविवर काव्य-रचना करने लगे थे। उन्होने एक लघु नाटिका "ख्याल भक्त प्रह्लाद का" सवत् १९७० वि० मे लिख ली थी, जिसे उन्होने गुदडी वाजार मे गायको द्वारा मचित भी करा लिया था। वह पुस्तक अव तक प्रकाशित नही हुई थी। उसके लिए कोई दानदाता नही मिला। वह ख्याल भी प्रथम वार इसी ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहा है।

वैसे इस ख्याल के दो वर्ष पूर्व ही, अर्थात् सवत् १९६८ मे कविवर ने "ख्याल सुदामा भक्त का" लिख लिया था और वह इतना अच्छा रचा हुआ था कि कविवर उसे प्रकाशित कराने हेतु व्यग्र हो उठे, परन्तु कोई दानी व्यक्ति उनकी सहायता को न आया। आज से ४५ वर्ष पूर्व डीडवाना मे साहित्यिक गतिविधिया नही के वरावर थीं। साहित्यालोचन एव उसका मूल्याकन तव कोई समझता भी नही था। अन्त मे कविवर ने स्वय श्रम उठाया। अपनी गाढी कमाई मे से उन्होने जोधपुर से

सवत् १९९२ मे इस ख्याल को छपाया। प्रकाशित होते ही यह इतना लोकप्रिय हुआ कि उसी वर्ष रघुनाथ जी के मन्दिर मे नागरिको द्वारा इसका मचन किया गया। इस ख्याल की सरचना मे प्रसन्न होकर नागौरिया मठ की ओर से कवि को एक पोशाक तथा बांगड परिवार द्वारा आर्थिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुस्तक का प्रथम सस्करण ५०० प्रतियो का था जो कवि के प्रसशको एव मित्रो मे ही हाथोहाथ बँट गया।

इस बीच कविवर का भजन रचने का कार्यक्रम चालू था। उन्होने काफी संख्या मे भजन तैयार कर लिए थे। यहाँ यह सकेत देना अभीप्सित है कि कविवर ने भजनो की प्रथम पुस्तक "हरियश पीयूष वर्षिणी" प्रकाशित कराते समय ५०० से भी अधिक पद प्रेस मे भेज थे, उनमे से केवल १११ छपे। शेष वृन्दावन से लौटकर ही नही आए। भोले भाले और साधन हीन कवि ने यह जानने की चेष्टा भी नही की कि शेष भजनो का क्या हुआ? उनके पास तो सरस्वती का अक्षय भण्डार था, जिनमे से-जितना खर्च किया जाता था, उतना ही बढता जाता था। उन्होने महामारी का प्रकोप शान्त होने के बाद डीडवाना लौटने पर दो ही वर्षो मे नए पद तथा कवि-सम्मेलनो मे सुनाने लायक कुछ 'सम्वाद' रच लिए। यह "सम्वाद शैली" कविवर की स्वय की विशेषता थी। इससे कवि-सम्मेलनो मे एक अद्भुत समाँ बंध जाता था और कविवर जनता की वाहवाही लूटते थे। सम्वत् १९७८ मे १९८३ तक कविवर ने 'राम वाली सम्वाद" "अगदरावण सवाद" एव हिरण्य-कश्यप प्रह्लाद सवाद' लिख लिए थे और कई स्थानो पर उनको सुना भी चुके थे। उनको ये सम्वाद कण्ठस्थ हो गए थे।

कविवर ने रचनाओ के प्रकाशन हेतु किसी दानदाता की स्वीकृति मिलने का प्रयास किया। अन्त मे सन् १९८५ मे श्री रामगोपाल जी धूत ने उनके भजन छपाने का जिम्मा लिया। उन्होने कवि से करीब १०० भजन तथा २ सम्वाद लिये और बम्बई मे छपाने का निश्चय किया। बम्बई मे प० हरिप्रसाद भागीरथजी का, प्राचीन पुस्तकालय, कालबादेवी रोड, रामवाडी, बम्बई "नामक प्रेस मे' हरियश गीत माला भाग १" के नाम से ७४ भजनो की पुस्तक छपी। सम्वाद तो उसमे शामिल किए ही नही गए। कई भजन भी लुप्त हो गये।

तीन वर्षो के अन्तराल मे कविवर ने अपने व्यय से (सवत् १९८८वि० मे) भूतेश्वर प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर से भजनो की तीसरी पुस्तक "हरियश गीतमाला, भाग—२" छपवाई। उसमे ४६ पद छपे और सुप्रसिद्ध "रामवाली सम्वाद" भी इस पुस्तक मे प्रकाशित हुआ। भजनो की यह पुस्तक सर्वाधिक समादृत और लोकप्रिय हुई। आजकल यही पुस्तक घर घर मे मिलती है। कई भजन तो लोगो को कण्ठस्थ है ही, 'रामवाली 'सम्वाद' कई महिलाओ को भी याद है। "गणपत मूसा पर चढकर वेगा आईज्यो" यह सुविख्यात गणेश-वन्दना इसी पुस्तक मे छपी थी।

भजनो की शृ खला की अन्तिम कडी है "हरियश गीत माला, भाग-३"। इसके लिए कविवर ने कृष्ण लीला के अन्तर्गत कुछ झूला पद, होरी गीत तथा आध्यात्मिक चेतना को पुष्ट करने वाले पद लिखे थे। इनको छपाने के लिये भी कविवर ने अथक

प्रयास किया और भगवत्प्रेरणा से वह पुस्तक प्रकाशित हुई, परन्तु आज उसकी एक भी प्रति उपलव्ध न होने से कहा नही जा सकता कि उसको किसने छपवाया, किस प्रेस मे व किस सम्वत् मे प्रकाशन हुआ और उसमे कितने पद थे। अनुमानत वह पुस्तक स० १९९० वि० मे प्रकाशित हुई थी और उसकी इतनी ख्याति हो गई थी कि तत्कालीन साल्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा हाकिम स्व० लाला हरिश्चन्द्र जी माथुर जव भी स्थानीय पुस्तकालय मे अधिवेशन करते थे तो कविवर को बुलाकर उनके कुछ सम्वादो तथा पदों को सुनते थे। उस पुस्तक की खोज जारी है। यदि वह मिल गई तो उसकी साहित्य समीक्षा अलग से प्रकाशित की जायगी।

भजनो के क्षेत्र मे कविवर को इतनी ख्याति मिल जाने से यह स्वाभाविक था कि जनता उनका महत्व आँकती। पद घर घर मे प्रचलित हो गए और मन्दिरो मे बहुत हर्ष से गाये जाने लगे। कविवर अपनी विरादरी मे छोटी खाटु गच्छीपुरा, हरनावा, सीकर, लाडनूँ, नागौर आदि स्थानो पर जव जव जाते, वहाँ के लोगो को भजन, सम्वाद, कथा वार्ता के द्वारा आनन्दित करते थे और उनका ज्ञान-सवर्द्धन भी करते थे। इससे न केवल डीडवाना के आसपास के क्षेत्र मे, अपितु दूर दूर तक कविवर की ख्याति फैल गई।

इसी समय वे अपने एक अनन्य प्रशसक स्व० रामकुमार जी मानधण्या के निकट सम्पर्क मे आ गए। स्व० मानधण्याजी स्वयं वड अच्छे गायक और सगीतज्ञ थे। उनको भजनो का अच्छा शौक था। उन्होने जब ऐसे प्रतिभाशाली कवि को देखा और उनके पद सुने तो वे कवि के घर जाकर हाथ पकड कर उनको दूकान पर ले आए, जो वीच वाजार मे थी और उनसे निवेदन किया कि अव आजीवन इसी दूकान को अपनी बैठक समझो और यही विश्राम किया करो। तव से कविवर अपने समय का अधिकाश भाग उसी दूकान पर व्यतीत करने लगे और काव्य रचना निश्चिन्त होकर करने लगे। स्व० मानधण्या जी कृष्ण भक्त थे और कवि के भक्ति गीतो मे वडा आनन्द प्राप्त करते थे। वे कवि के पदो को मन्दिरो के उत्सवो मे गाते भी थे उन्होने कवि के भजन एव गीतो का सग्रह करना शुरू किया। आज वह अप्रकाशित सग्रह हमारी अमूल्य थाती है। करीव पौने दो सौ होरी गीत, भूलापद, भजन, कव्वाली, शेर, दोहे, लावणी, ख्याल मारवाडी लिपि मे लिखे हुए हैं। वे इस वात का प्रमाण है कि स्व० मानधण्या जी ने कितनी लगन, मनोयोग, श्रद्धा तथा परिश्रम से कविवर के पद लिखे।

अव तक कविवर ४४ साल के हो चुके थे। उनके विचार शैली आदि परिमार्जित हो चुके थे। उन्होंने कवि सम्मेलनो मे सुनाने के लिये 'शिशुपाल-पाण्डव सम्वाद', 'नृसिंह वीरभद्र सम्वाद', 'श्री राम-शम्बूक सम्वाद' 'रम्भा-शुक सम्वाद', तथा 'शिशुपाल-देवर भाभी सम्वाद' लिख लिए थे। स० १९९१ से सं० २००० तक का समय उनकी रचनाओं के चरमोत्कर्ष का था। प्रतिदिन मन्दिरो मे होने वाली कथावार्ताओ को जिज्ञासु वनकर श्रवण करते और उन आख्यानो को कविता सूत्र मे पिरो देते थे। स० १९९८ मे स्व० घीमालाल जी कावरा ने इनके पदो की पुस्तक "हनुमान यश पद माला" का प्रकाशन कराया। इस पुस्तक के पद केवल मात्र गेय भजन न होकर मन्त्र है जो वडे सिद्धि दाता है।

इमी वर्ष मे श्री डीडवाना हिन्दी पुस्तकालय का रजत जयन्ती उत्सव मनाया गया था। उसमे जोधपुर दरबार के राजगुरु श्री माधवानन्द जी महाराज भी पधारे थे। डा० सोमनाथजी गुप्ता की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन हुआ। जिसमे कविवर नाथूरामजी ने एक घन्टा के अपने काव्य पाठ द्वारा समाँ बाँध दिया जिससे श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो गए। उक्त सम्मेलन मे उन्हे "कविभूषण" की उपाधि से विभूषित किया गया।

अगले वर्ष अर्थात् सन् १९४२ मे बिदासर ग्राम मे एक विशाल कवि सम्मेलन रक्खा गया जिसमे कविवर को सम्मान आमन्त्रित किया गया। वे अपनी कमजोर नेत्र-ज्योति के बावजूद बिदासर गए और मच से अपनी कविताओ का पाठ किया, जिसका वर्णन अन्यत्र इसी पुस्तक मे दिया हुआ है। "कलि कलि" नामक समस्या पर सैकडो रचनाएँ पढी गई और भाव तथा भाषा की दृष्टि से कविवर की कविता सर्वश्रेष्ठ मानी गई। यह उल्लेखनीय है कि कविवर के एक मित्र डीडवाना निवासी स्व० प० बृजलालजी मिश्र ज्योतिषाचार्य सिद्धहस्त कवि थे। वे इससे पूर्व 'कविरत्न' उपाधि से विभूषित हो चुके थे। वे भी बिदासर कवि सम्मेलन मे भाग लेने हेतु कविवर के साथ ही गए थे और दोनो मित्र काफी यश प्राप्त करके लौटे थे। इनका प्रेम इतना प्रगाढ हो गया कि ये घन्टो साथ रहकर साहित्य चर्चा तथा नवीन सर्जन करते रहते थे। कविवर अब जो भी पद बनाते, उन्हे "कविरत्न को सुनाते थे। इस प्रकार परस्पर वार्ता द्वारा साहित्य भी उच्च कोटि का तैयार होने लगा। दोनो मित्र घन्टो साहित्य वार्ता करते रहते थे। भोज और कालिदास की भाँति दोनो काव्य मे ही बातचीत करते थे एवं समस्या पूर्ति के माध्यम से प्रश्नोत्तर पूछते करते थे। ऐसे अवसर का कविवर का एक कवित्त देखिए :—

रचे जभी तक मही चीज जान शंके विधि,
राधे ऋद्धि साधे सिद्धि, कृपण निधि छिपाई है।
परदारा भरम खा के, परदारा को रूप ताके,
ताला धर्म शर्म आँखें शुद्ध दवा सराई है॥
मैथुन के आठ भेद सो सन्यासी को निषेध,
मुख मूँडे ओठ कँद, गृहस्थ दुखदाई है।
कहे नाथू शुचिकार, कविरत्न करो विचार,
वधू मुख घूँघट से होत के बड़ाई है॥

कविरत्न प० बृजलालजी मिश्र की रचनाएँ अभी सकलित नही हो पाई है, परन्तु बिदासर कवि सम्मेलन मे पढी गई उनकी कविताएँ बिदासर से ही प्रकाशित 'कविकलरव" नामक पुस्तक मे छपी थी। उक्त पुस्तक अनुपलब्ध है।

कविवर की अन्तिम रचना "श्री नामदेव मगल" थी जो उन्होने 'भक्तमाल' नामक ग्रन्थ की छानबीन करके तैयार की थी। इस ग्रन्थ को उन्होने सन् १९३५ ई० से सन् १९३७ ई० की अवधि मे रच लिया था। इसमे उन्होने अपने स्वजातीय एव स्वगोत्रीय भक्त नामदेव की पावन गाथा गाई है। इसे उन्होने सर्वांग पूर्ण कृति बनाने का निश्चय किया था ताकि उनके समाज मे यह 'रामचरित मानस' की भाँति विख्यात हो जाय। वे इसे लेकर आसपास के गावो मे जाते थे और गायक द्वारा गवाते थे। वे स्वयं भी

आवश्यकतानुसार अन्तर्कथाए बनाते जाते थे। इस ग्रन्थ का "नामदेवजी का विवाह" का प्रसग लोगो को बडा रुचिकर लगता था। धीरे धीरे लोगो ने "रुक्मिणी मगल" और इस ग्रन्थ का साम्य ढूंढना शुरू किया तथा "नामदेवजी का ब्यावला" के रूप मे यह ग्रन्थ घर घर प्रचलित हो गया। सन् १९४७ ई० मे यह ग्रन्थ 'हिन्दू सन्देश प्रेस" जोधपुर मे छपा, जिसके लिये कविवर को काफी आर्थिक कष्ट उठाना पडा। इसकी बिक्री की भी समुचित व्यवस्था नही हो सकी।

कविवर ५८ साल के हो चले थे। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होने के कारण शरीर का समुचित साधन भी नही रख पा रहे थे। नेत्र ज्योति अत्यन्त क्षीण हो गई थी, दुर्वल शरीर धीरे धीरे जबाब दे रहा था। इस समय उन्होने "हरि-हर एकता पच्चीसी" सम्वाद, "कायस्थ कुल कीरत काव्य," 'शवरी-शिव लीला", "देवी गीता अष्टकी," "गीता ज्ञान वत्तीसी," "अवतारो की लावणी" आदि कई फुटकर रचनाएँ लिखी। मस्तिष्क सक्रिय था, परन्तु न वे किसी लिपिक से सम्पर्क कर सकते थे और न कोई प्रेस का साधन अपना सकते थे। सं० २००७ के बाद तो वे केवल दिन के प्रकाश मे ही घर से वाहर स्व० मानधन्याजी की दुकान तक जाते थे। रात्रि मे घर से बाहर जाना उनके लिए नितान्त असम्भव हो गया था।

उस महामानव ने जिसने भर जवानी मे पारिवारिक सुख को लात मारकर सासारिक जजाल से स्वय को मुक्त रखा था, "स्त्री शिक्षा के महत्व को समझते हुए सवत् १९८५ वि० मे ही लाहोटियो की गली मे श्री हरिबगसजी लाहोटी के मकान में कन्या पाठशाला की नींव डाली थी। प्रारम्भ मे १५ बालिकाएँ पढने के लिये नामांकित की गई। प्रथम अध्यापिका उनकी गुरु पुत्रवधू स्व० श्रीमती मथुरा देवी थी, जिन्होने केवल पाँच रुपये मासिक वेतन पर बालिकाओ को शिक्षित करना शुरू किया। कविवर की प्रेरणा से विद्यालय-व्यय निमित्त स्व० रामप्रसादजी सिंगी तथा स्व० रामबल्लभ जी कागलीवाल सात-सात रुपए मासिक प्रदान करते थे। सवत् १९९६ वि० मे वही स्कूल प्राइमरी विद्यालय के रूप मे मान्यता प्राप्त होकर श्रीरामचन्द्रजी भाभडा की भूमि के उस स्थल पर स्थानान्तरित हुआ, जहाँ आजकल "भाभड़ा भवन" निर्मित है। कविवर बराबर उस सस्था की प्रगति के लिए सचेष्ट रहते थे। विद्यालय मे कोई भी नई अध्यापिका अथवा निरीक्षक गण आते थे तो सस्थापक होने के नाते कविवर से मिलने जाते थे और उनके प्रति श्रद्धा-भावना प्रकट करते थे। आज तो वह सस्था एक अति विशाल एव सुन्दर भवन मे चल रही है और सैंकडो हजारो छात्राएँ एव अध्यापिकाएँ इससे लाभान्वित भी हो चुकी हैं, परन्तु कविवर की आत्मा उस सस्था मे अजर अमर है। जिस महापुरुष के करकमलो से वह पौधा लगा था, वह आज हजारो वालिकाओ को ज्ञान की शीतल छाया प्रदान कर रहा है।

कविवर वृद्धावस्था से टूट चुके थे। उन्होने अपनी सेवा के लिये परिवार के किसी व्यक्ति को कष्ट देना उचित नही समझा था। नियति का विधान मान कर और देह मे "कौमार यौवन जरा तथा देहान्तर प्राप्ति" अवश्यम्भावी जानकर शान्त चित्त से समय यापन करते थे। सवत् २००८ से स० २०१० वि० तक के तीन वर्षो मे वे किसी

के कन्धे पर हाथ धरकर स्व० मानधण्याजी की दूकान पर आ जाते थे। शीत काल मे रुई की वण्डी, पैवन्द लगा हरा कोट, पीला साफा, घुटनो तक पहनी हुई गाढी धोती, देशी जूतियां तथा विना हेडल की लकडी और ग्रीष्मकाल मे कुर्ता तथा पीली पगडी, यही उनका परिचित पहनावा था। वह मूर्तिमती कविता उन दिनो दर्शनीय विभूति हो चली थी।

संवत् २०१० वि० का श्रावण मास चल रहा था। कविवर स्वरचित भूला गीत गुनगुनाते रहते थे। स्मरण शक्ति जबाब देने लग गई थी। उनकी अनुज वधू श्रीमती रामप्यारीजी, जिनको कविवर लक्ष्मी कहकर सम्बोधित करते थे, लक्षण देखकर कविवर का दिनरात ध्यान रखा करती थी। भारतीय सस्कृति की परम्परा के अन्तर्गत रीति-नीति मे निपुण होने के कारण वे अपने जेठ से बोलने भी लगी थी। उस सेवा सुश्रूषा से कविवर को वडी सान्त्वना मिलती थी, परन्तु वे अपना ध्यान अपने आराध्यदेव "राधा कृष्ण" मे ही केन्द्रित रखते थे।

स० २०१० के श्रावण मास की अमावश्या आ पहुँची। कविवर के जीवन की वह अन्तिम रात्रि थी। सायकाल वे स्व० मानधण्याजी की बैठक से सकुशल लौटकर आए ही थे। कोई तकलीफ भी नही थी। रात्रि मे दो बार दस्त हुई। उनका जी घवडा सा रहा था। श्रीमती रामप्यारी देवी ने उनसे कहा कि बाबा भगवान आपके आराम करेगे। आपको ग्यारस, पूर्णिमा अथवा दानपुण्य कराने की इच्छा हो तो प्रकट करे। कविवर ने कहा कि कोई इच्छा नही है। हठात् उनके होठो से एक पद की प्रथम पक्ति फूट पडी—"हाँ कन्हैयो जादूगारो बशी बजाय हर्यो मन म्हारो।" इसी पद को वे गुनगुनाते रहे। कही से भूलते गए और कही से बोलते रहे। रात्रि के तीन बजे उन्होने खिचडी खाने की इच्छा प्रकट की। १० मिनट मे बन भी गई। केवल पाँच सात ग्रास खाकर ही उसे छोड दिया। पुन उनको तन्द्रा आ गई। वही गीत की धुन उनके होठो से पुन निकलने लगी, परन्तु इस बार अस्पष्ट थी। केवल 'थारो' तथा "म्हारो" शब्द यदा कदा सुनाई देते थे। परिवार के लोग सजग थे और उनका विशेष ध्यान रखते रहे। पाच वजे के लगभग "नाथूराम" "श्याम" ये दो शब्द पुन स्पष्ट तौर से सुनाई दिये। परिवार के लोग समझ गये कि वही गीत तन्द्रा मे गुनगुनाते हुए अब समाप्त हुआ है।

मनसा वाचा, कर्मणा कवि होने के कारण तथा शुद्धात्मा होने के कारण ही यह भगवान की कृपा थी कि उनको अन्त समय मे अपने आराध्यदेव का स्मरण हो आया और अर्धचेतन स्थिति मे भी स्वरचित पद उनके अन्तरतम से फूट पडा, जो इस प्रकार है :—

हाँ कन्हैयो जादूगारो बंशी बजाय मन मोह लियो म्हारो।
सूती ने हुयो चेत, हेत जद लग्यो उणारो ए॥
धुनी सुनी वंशी की भारी, सुध-बुध बिसर गई सखि सारी।
लोक लाज, कुल काण, काज सब घर को बिसारो ए॥
उलट पुलट पोशाकां साजी, राजी होय सखियां सब भाजी।
बाजी बशी खूब मिल्यो यो नन्द दुलारो ए॥
हरि को रूप निरख ब्रजनारी, मगन भई घर सुरति बिसारी।

ठाडे बिहारीलाल वेश नटवर को धारो ए ॥
और सखी सब आई वन मे, एक रही निज सखी भवन में।
वा कियो मन मे ध्यान मिल्यो जाय कृष्ण पियारो ए ॥
नाथूराम श्याम के शरणे, हरि जस बरणे पार उतरणे,
प्रीत सखी की देख मुक्ति दीन्हीं बंशीवारो ए ॥

श्रावण सुदी १ सं० २०१० का प्रात हो चुका था। कविवर अच्छी हालत मे थे। आठ बजे के लगभग उन्होने अपने परिवार वालो को अपने धन्धे मे प्रवृत होने के लिए कह भी दिया था। परिवार वालो ने पूछ भी लिया था कि बाबा, आप अस्वस्थ दिखते है, आप कहो तो हम काम धन्धे पर न जावे। कर्मयोगी कविवर ने कहा कि मेरी तबियत ठीक है, तुम लोग निश्चित होकर अपने धन्धे मे लगो। उनसे आज्ञा लेकर सभी लोग कपडे सीने चले गए। कविवर के बडे भतीजे श्री भँवरलाल जी वर्मा ने बताया कि उन्होने चार पाच कपडो का कटिग भी कर लिया था। प्रात साढे आठ बजे उनको बुलावा भेजा गया कि कविवर की तबीयत बिगड रही है। सभी दौड कर आए। पाँच मिनट मे ही कविवर के प्राण-पखेरु उड गये। बहुत आसानी से उनका जी निकला। कोई हडबड़ाहट नही, चेहरे पर कोई गम नही। "छिति जल पावक गगन समीरा। पच रचित यह अधम शरीरा"—पच भौतिक शरीर के पाचो तत्व विराट पुरुष के पाँचो बड़े तत्वो मे विलीन हो गए। नश्वर शरीर का तो सम्बन्धियो ने अन्तिम सस्कार कर दिया, परन्तु कविवर के यश की अजर अमर काया कभी नष्ट होने वाली नही है। जब तक उनका साहित्य विद्यमान है, तब तक कविवर भी विद्यमान है, क्योकि उनकी लावणियाँ, होरी-गीत, भूला पद, भजन, सम्वाद, ख्याल आदि युग युग तक अमर रहेगे और जन जन की हृत्तन्त्री के तार झकृत करते रहेगे।

ऐसे रससिद्ध कवि के लिए डीडवाना की जनता कृतज्ञ है। नगर की सुप्रसिद्ध सस्था श्री डीडवाना हिन्दी पुस्तकालय ने उनको अपना "विशिष्ट सदस्य" माना है जो एक असाधारण सम्मान है, क्योकि यह सस्था केवल उन्ही महानुभावो को यह सम्मान प्रदान करती है जो विशिष्ट क्षेत्रो मे प्रतिष्ठित होकर सस्था की गौरव-वृद्धि मे सहायक बने है। आज अखिल भारतवर्षीय नामदेव समाज की शाखा प्रशाखाएं कविवर के "नामदेव मगल" को 'वाणी' के रूप मे मान्यता देकर उसका पाठ कराती है। आशा है यह ग्रन्थ कविवर की स्मृति चिरस्थायी करने के साथ साथ डीडवाना नगर के गौरव की भी अभिवृद्धि करेगा।

डीडवाना (राजस्थान) रामस्वरूप सोनी

निकटता के क्षण—

कवि एव साहित्यकार के निकट बैठकर बिताये अतरग क्षण, जीवन की ऐसी अविस्मरणीय घडियाँ होती है जिनका जब भी स्मरण आता है मन आत्मविभोर हो जाता है और स्मृतियो के माध्यम से उन्ही क्षणो को फिर से जी उठने की उत्कट अभिलाषा होने लगती है। निकटता मे प्राप्त वह सुख जीवन को सदा आप्लावित करता रहता है।

नाथूरामजी आशुकवि थे। उनके निकट बैठकर बिताए अन्तरग क्षणो में उनसे विभिन्न विषयो पर अनेको छन्द सुनने का सौभाग्य मुझे मिला, सुनाते समय वे मुझे लिखने का आग्रह भी करते थे, मैं लिखता भी था पर आज वह सम्पूर्ण थाती सुरक्षित नही रख पाया इसका विषाद भी है। फिर भी जो कुछ स्मरण है उससे पाठक यह सहज ही कल्पना कर सकते है कि उनका परम्परागत शास्त्रो सम्बन्धी ज्ञान भी कितना अगाध था। प्रसग चाहे भागवत का हो या महाभारत का चाहे रामायण का हो या अन्य दैवी अवतारो का, वे प्रसग के उपयुक्त सटीक छन्दबद्ध रचना करके तत्काल सुना देते थे।

एकदिन नरोत्तमदास रचित सुदामा चरित के कुछ अश जो मुझे कण्ठस्थ थे, मै कविवर को सुना रहा था। यद्यपि स्वय कविवर लिखित सुदामा चरित भी (ख्याल सुदामा भक्त का) एक गेय नाटिका के रूप मे विख्यात था, तथापि उक्त रचनाएँ सुनकर वे भाव विभोर हो उठे और करीब पाँच मिनट आत्मस्थ रहने के बाद उनकी वाणी इस रूप मे मुखर हुई।

सवैया -

दीन सुदामा देखि दयानिधि, राज सिंहासन से खुद ऊठे।
मिले उर ला करुणा करके, दारिद्र नमूना हरे भर मूठे।
भीलनि बेर ज्यूँ बेर ही बेर, रहे मुख गेर रमा लखि तूठे।
नाथू कहे गहे भात के हाथ, क्या वामन नाथ बनोगे पूठे ?

भक्त हितारथ वामन क्या, बन किंकर सेऊँ सदा पद पूठे।
तुच्छ त्रिलोक विलोक प्रियेहित, वारद्यूँ लाखूँ ही लोक बैकुण्ठे।
पाऊ अनजल फूल या फल गल, चाहे हो रूखे सूखे जूठे।
नाथू कहे हरि भीम सुते, बहु भात ये भाव के भात के मूठे।

x x x

प्रसंग रामचरित मानस का चल रहा था। करुणा-वरुणालय भगवान राम के आदर्श जीवन चरित्र से होते होते वार्ता "शवरी, गीध, सुसेवकनि सुगति दीन रघुनाथ" पर आकर ठहर गई। इस दोहे की विस्तृत व्याख्या करते-करते हठात् उन्होने आदेश दिया—लिखो। और, "गीधराज सुनि आरत वानी, रघुकुल तिलक नारि पहिचानी" के वाद के मार्मिक दृश्य का मुझे आभास कराते हुए तीन पद्य उन्होने मुझे लिखाये। जब तव उक्त तीनो छन्द मेरी जुबान पर खेलते रहते है और सौभाग्य से कोई श्रोता सामने वैठा हुआ हो तो भाषा और भावो पर झूम २ उठता है। यहाँ प्रस्तुत है वे ही छन्द।

सवैया

सूवी व्याध फन्दे ज्यू सीता रावण रथ लखि दृष्टि-दूरी।
मृगराज या बाज ज्यू गाज गिरे धनु काट दिये पटके भट भूरी।
खल पख खँडो जब भूमि परे, रघुनायक आय लगा लिये ऊरी।
'नाथू' राम सिया सुधि पूछत, पोछे जटा से जटायु की धूरी।

कवित्त

अभख भखी पक्षी नीच भो सो कौन-जगत बीच,
कीच से निकारन खींच तौ सो को सुजान है।
दशरथ से ही अहोभाग पुण्य गये मेरे जाग,
नाथ हाथ रहे लाग जात आज प्राण है।
अन्तिम यही सदेश वैदेही हरि लकेश,
काटी चाप चॉच शेष खण्डी पर कृपान है।
कहे दर्जी नाथू राम नाम से ही अमर धाम
नैनां आगे छवि श्याम देन निरवाण है।

सीता काज गीधराज रावण से भिड़े आज,
नौचे अरि जान खाज काटदी कबान है।
दस शीश रीस धार काटी पर भो लाचार,
हमे कहन समाचार राखे तुम प्राण है।
करणी से वीर गति पाई तै महामति,
क्या दू मै खगपति तू भयो शिव समान है।
दर्जी नाथू राम कहे दूजाँ हेत दुख सहे,
सो ही अमरगति लहे श्रुति प्रमाण है।।

x x x

खण्ड २ के पृष्ठ १८९ पर "न्यायाधीश के प्रति" जो पद्य छपा है वह एक ऐतिहासिक सत्य है। कविवर को एक मामले के सिलसिले मे अदालत मे प्रतिवादी के रूप

मे उपस्थित होना पड़ा था। रजवाड़ो के शासनकाल में हाकिम (न्यायाधीश) लोग सिर पर साफा बांधा करते थे और लेखनकाल मे अपनी कलम को विश्राम देने के लिये कान पर साफा मे खोस लिया करते थे। स्याही के निरन्तर प्रयोग से कलम का अग्रभाग काला हो जाता है। न्यायाधीश की उसी कलम की ओर इंगित करते हुए कविवर ने इस कवित्त के माध्यम से ही अपने बयान दिये —

विधि कलम के प्रभाव राजकलम हाथ लगी,
कलम के कसाई मत कहाइज्यो जहान में।
जो निर्धन शर्मदार भावीवश हो गुनहगार,
त्याग कर क्रोध रहम कीजियो बयान में।
राजमद लोभवशी मुकदमा बिगाड़ दोगे,
कजाबाद जाओगे नरक स्थान में।
नाथू कवि जदकदाय गरीब की लगेगी हाय,
होही मुख मेरो सो कलम कहे कान में।

x x x

सर्दी का मौसम था। उस दिन मेरी दूकान मे नये मेवो का पार्सल आया था। एक परिचित ग्राहक को मैने नई आमदनी की सूचना देते हुए माल दिखाया। उसने मोल भाव भी किया और सम्भवत मन ही मन चिंतन भी—कि लूं या न लूं और १० १५ मिनट बाद विना खरीदे ही उठ कर चल दिया। कविवर जो कि मेरे पास ही विराजमान थे, ने जिज्ञासा वश पूछा—क्या हुआ ? कितना ले गया वह ? "शायद उसके प्रारब्ध मे ही नही है" ऐसा कहकर मैने उनके समक्ष एक समस्या रख दी "लिख्योडा ही पावे है"। उन्होने तत्काल मुझे कागज कलम सम्भालने का आदेश दिया और करीब दस मिनट की अवधि मे ही निम्नलिखित पंक्तियाँ कागज पर अंकित थी :—

मेवा मिष्ठान्न नाना खान पान पक्कवान,
सरजे भगवान जान वेद पुरान गावे है।
जहान में इन्सान आन करते है कर्मदान,
ताका फलदान विधि मुकद्दर बनावे है।
उसी भाग्य के अनुसार राव रंक द्वार यार,
चौरासी योनि धार बार-बार आवे है।
कहे दर्जी नाथूराम कृष्ण रजा विधि बाम,
करके पदारथ तमाम लिख्योड़ा ही पावे है।

x x x

कविवर ने बताया—"एक बार तत्कालीन हाकिम श्री श्यामनारायणजी ने, जो स्वय साहित्य रसिक थे, मुझे बुलवाया। कुछेक रचनाएँ सुनने के बाद एक समस्या "खड़ी नार चौक मे" उन्होने मेरे समक्ष रखी। तत्काल मेरा ध्यान विगत सप्ताह मे नरसिहजी के चौक मे घटी एक घटना की ओर चला गया। नरसिह चतुर्दशी के मेले के अवसर पर सम्पूर्ण चौक नाना वस्त्रालकारो से सज्जित स्त्री पुरुषो से भरा था। ऐसे मे एक बालक जो कि छत पर पतग उडा रहा था, अचानक चौक मे आ गिरा। मेले मे हाकिम स्वय भी उपस्थित थे। बालक के छत से टपक कर नीचे बालू के ढेर पर गिरने तक का दृश्य उपस्थित जनसमूह ने विस्मय पूर्वक देखा। उसी घटना को शब्दो के सूत्र मे पिरोते हुए मैने समस्यापूर्ति की।"—

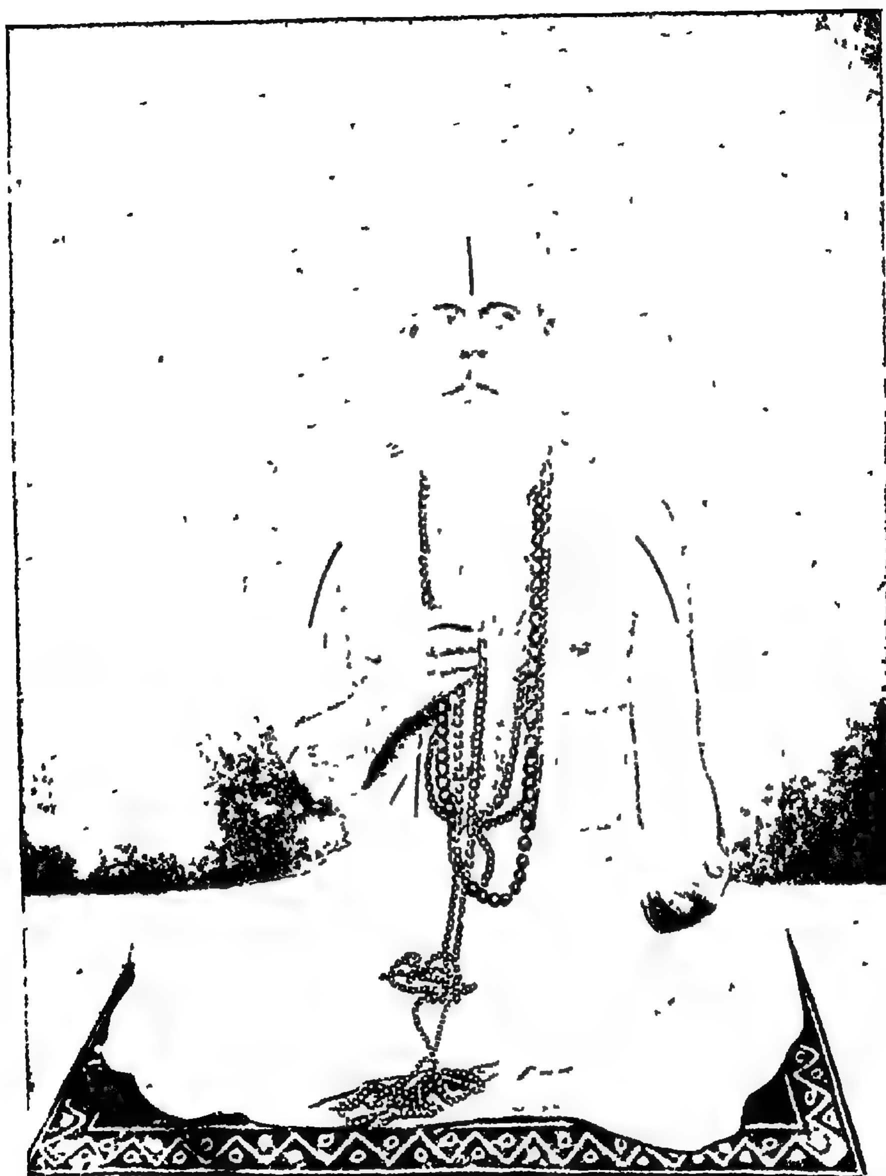
ठिकाने बड़ो के पूत, चोरी सीख हो कपूत,
आसमानी लगे जूत किनकों के शौक में।
पिछली गई थी साल, मोची ओसवाल बाल,
डूब मरे थे अकाल, मांझन के झोक में।
श्याम हाकिम किये मना, फिर क्यूं उड़ रया किना,
क्या कोई शिशुतना, काल आया लोक में।
नाथू कहे यूँ घर घर, छोरां हित चिन्ता कर,
आँगली धर अधर, खड़ी नार चौक में।

ऐसे समर्थ आशुर्भाव के लेखन को यथासम्भव एकत्र कर वृहद् पुस्तकाकार में जनता के समक्ष लाने का श्रीडीडवाना नागरिक सभा का प्रयत्न अपने आप मे सराहनीय है। इस प्रकाशन के बावजूद भी आशुकवि के कितने रत्न यत्र तत्र बिखडे पड़े होगे, इसका अन्दाज लगाना कठिन है। सुधि पाठको से हमारा निवेदन है कि वे अप्रकाशित रचनाओ एवं काव्यो को हमारे तक पहुँचाए ताकि हम अगले संस्करणो मे उन्हे भी जोड़ सके।

—रामगोपाल सोनी



अनुक्रमणिका



परलोकवासी स्वामीजी

श्री १००८ बालमुकुन्दाचार्यजी महाराज

जो कविवर के आध्यात्मिक गुरु थे और जिनकी प्रेरणा से ही वे
भक्ति परक साहित्य रचना की ओर उन्मुख हुए।



स्व० नाथूरामजी दर्जी "कवि भूषण"

"ख्याल सुदामा भक्त का"

एवं

"सज्जन कसाई भक्त प्रभा"

की

समीक्षा

कवि नाथूराम जी ने जो साहित्य-सर्जना की थी, उसका उद्देश्य तुलसी की भाँति "स्वान्त.सुखाय" था, न कि धनोपार्जन करना। यही कारण था कि उनकी प्रत्येक पुस्तक की एक ही छपाई-आवृत्ति हो पाई और प्रचार के अभाव मे वे पुस्तके भी अनबिकी पड़ी रही। मुझे भली भाँति ध्यान है कि केवल २५% पुस्तको का मूल्य प्राप्त हुआ, २५% भेंट स्वरूप प्रदान की गई और शेष ५०% कवि के पास या उनके अन्तरग स्नेही जनो के पास अनबिकी पडी रही। तुलसी की ही भाँति कवि ने "नाना पुराण निगमागम" और "क्वचिदन्यतोऽपि" आख्यान उपाख्यान पढे अ.र सुने तथा उनके ही आधार पर माँ भारती का भण्डार भरा।

प्रस्तुत ग्रन्थ "ख्याल सुदामा भक्त का" एव "सज्जन कसाई भक्त प्रभा" का छपा मूल्य केवल तीन आना (वर्तमान उन्नीस पैसे मात्र) था. परन्तु जो साहित्य की अक्षय निधि इन ४७ पृष्ठो मे दी हुई है, उसे देखते हुए तीन रुपए भी निर्धारित किया जाता तो भी कम था। इसका प्रकाशन सवत् १९९२ है परन्तु मूल ग्रन्थ का रचना काल सवत् १९६८ है जैसा कि ग्रन्थ के उपसहार में अकित है :—

गुण सागर नन्दलाल महर कर ज्ञान बताया जो।
पुर डीडवाना मे बसे दरजी नाथूराम॥
उगणीसे अडसठ के माही कीरति कर्‌या तमाम।
सुने सीखे सुख पावे, माया जग ठगनी गावे वेद मे॥
(लावणी)

खडी बोली मे नरोत्तमदास रचित "सुदामा चरित" इतना प्रसिद्ध हुआ कि विभिन्न पाठ्य-क्रमो मे उसे स्थान मिला। किसी अन्य कवि ने सुदामा चरित इस प्रकार सवाद शैली मे लिखा भी नही था और नरोत्तमदास का हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा मे अच्छा प्रभाव था, इसलिए उनको पाठ्य पुस्तको मे प्रकाशित हुई और छात्रो द्वारा अभिनीत भी हुई। खेद की बात है कि मारवाडी भाषा मे लिखी कवि की प्रस्तुत रचना उपेक्षित पडी रही। न तो यह विद्वानो के सामने आई और न इसका उचित मूल्याकन हुआ। मारवाडी के नरोत्तमदास कवि नाथूराम जी की

यह कृति किसी कसौटी से भी हल्की नही है, अपितु प्राजल भाषा, शब्द सौष्ठव, भाव गाम्भीर्य एवं परिमार्जित सवाद-शैली को देखते हुए साहित्य की बेजोड कृति है। भाव, विभाव, अनुभाव, सचारी भावो के सयोग से इसमे रस-निष्पत्ति होती है, यह कोई भी साहित्य-मर्मज्ञ अनुभव कर सकता है।

कवि नाथूराम जी कवित्त (घनाक्षरी) के सम्राट थे। उनके मुखारविन्द से कवित्त की उत्पत्ति ऐसे होती थी जैसे फूलों में से सुवास। कवित्त के चारो चरणो मे से प्रत्येक मे तीन तीन जगह तुक मिलाना उनको वरदान था। किसी भी कवित्त को रचने मे उनको चार पाच मिनट से अधिक नही लगता था। जैसे :—

शभु के सुत गणेश, देवो मोहि बुद्धि विशेष, मेटो दुख क्लेश, तोहि हमेश मैं ध्याता हूँ।
शारदा भवानी रानी, अरज करूँ जोरि पानी, करो मेहरबानी, दास आपका कहाता हूँ॥
अवदीच गुरू नन्दलाल, ज्ञान दिया हो दयाल, जान के जगदीश ईश शीश मै नवाता हूँ।
कहे नाथूराम दरजी, भई गुरूवर की मरजी, लीला सुदामा की सरजी प्रेम सहित गाता हूँ॥

प्रस्तुत 'ख्याल" का कथानक इतना ही है :—सुदामा की गरीबी, पत्नी द्वारा बार-बार कृष्ण के पास जाने को कहना, भेट स्वरुप चावल जुटाना; द्वारिका जाना; कृष्ण द्वारा सत्कार; दो मुट्ठी चावल खाना; सुदामा को अप्रत्यक्ष अथाह सम्पत्ति मिलना, विश्वकर्मा द्वारा भवन निर्माण, सुदामा व पत्नी को आश्चर्य, भक्त द्वारा भगवान की स्तुति। कवि ने राग जगला, राग माँड, राग कल्याणी, राग सोरठ, राग खम्माच, राग चन्द्रायण, राग ठुमरी, राग कालिंगडा, आसावरी आदि राग-रागिनियो मे पद रचना करके सवाद शैली मे लावणी रगत खड़ी, चौबोला, लावणी रगत लगड़ी का प्रयोग किया है, जिससे संवाद निखर उठते हैं और इस गेय लघु नाटिका की प्रभाव-शीलता परिलक्षित होती है।

ब्राह्मणी सुदामा से कहती है :—

धातन को बरतन नांय, भातन को सरतन नांय, भिक्षा मांग लाओ नाज बापरे जब ही जी।
टूटी खान झूंपड़ी, डटत नांय धूप री, बरसे जल ऊपरी कष्ट होय तब ही जी॥
महा दरिद्र दुख देना, सदा कैसे होय सहना, अच्छे खान पान गहना, देखे नांय कब ही जी।
नाथू कहे जोड़ हाथ, पति को समझाय बात, उपाय करो प्राणनाथ सुख मिले सब ही जी॥

सुदामा का उत्तर —

दुख और सुख नार, करमों के अनुसार, लिखिया करतार घटे बढ़े नांहि राई है।
कर्म ही से मिले राज, कर्म ही से हो मोहताज, करते जतन कर मिजाज, नर की मूढताई है॥
मन जाणे इन्द्र बणुं कर्म करे रक कासा, ऐसी कर आशा कौन पदवी नार पाई है।
नाथू कहे सुदामा जी समुझाय रहे पत्नी को किसको दें दोष धार क्यों न धीरताई है॥

यह है कवि नाथूराम जी का जीवन-दर्शन जो उन्होने सुदामा और उसकी पत्नी के सम्वाद के माध्यम से हमे दिया है। यह सम्वाद लावणी, राग मांड तथा शेर के द्वारा काफी बढाया गया है। आधा सेर चावल पडोसिन से उधार लेने हेतु राग कल्याणी में बडा सुन्दर और लम्बा सम्वाद दिया गया है। राग सोरठ मे ब्राह्मणी का सुदामा के प्रति कथन देखिए :—

पधारो पिया पुरी द्वारका आज ।।
द्वारका वासी है सुख राशी अविनाशी महाराज ।।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का दाता गरीब निवाज ।। १ ।।
जाचोनी वाने जाय पियाजी सरे मनोरथ काज ।
बड़ो भरोसो मोय उन्हीं को जिन त्यार्‌यो गजराज ।। २ ।।
लाई बाँध पुराना वस्त्र माँही चोखा नाज ।
करीजो कृष्ण लाल जी आगे प्रेम भेंट सिरताज ।। ३ ।।
लकुटी लोटा डोर झला के शकुन देऊँ सज साज ।
नाथूराम श्याम के शरणे सिवरो सिद्ध गणराज ।। ४ ।।

वैसे तो कविवर स्वय ही गायक थे और अपनी रचनाओ को विभिन्न साहित्यिक समारोहो में स्वय ही प्रस्तुत करते थे, तथापि इस गेय लघु नाटिका के लिए लावणियो, गीतो और चौबोलो की तर्जं बैठाने के लिए उन्होने एक युवक गुलाबचन्द दर्जी का सहयोग प्राप्त किया था और उसका आभार भी प्रकट किया था .—

नन्दलाल गुरुवर गुण दीना वेद शास्त्र मथ मथ के ।
तिमिर मिटाया भान उगाया गाते हरि यश कथ कथ के ।।
गुलाबचन्द दर्जी करी मर्जी गाने बताए गत गत के ।
नाथूराम श्याम के शरणे ध्यान धरत है तत् सत् के ।।

सुदामा द्वारा द्वारकापुरी का वर्णन देखिए .—

चारूँ ओर बड़ा परकोटा सागर बीच बसे नगरी ।
चक्र सुदर्शन पहरा देवे बसे सुखी रंयत सगरी ।।
कंचन का मन्दिर है सुन्दर इन्द्रपुरी से अधिकारी ।
हाट बाट चौहाटे अन्दर अनमोली चीजां बिकरी ।।

सुदामा कृष्ण की भेट, स्वागत सत्कार, पौशाल के सस्मरण आदि का आनन्द स्वय पढ कर उठाया जा सकता है । यह गू गे का गुड है जिसका स्वाद अन्तरतम मे ही महसूस किया जा सकता है, वाणी या लेखनी द्वारा प्रकट नही किया जा सकता । राग मॉड मे कृष्ण का सुदामा के प्रति कथन देखिए —

देवो नी सुदामा भाभी भेजी सो रसाल ।।
पढ्या छा सजन आपां एक पोशाल ।
कहा शरमावो मै हूँ मित्र सु बाल ।। १ ।।
लाड़लो भाभी के होत है देवर लाल ।
पदारथ देय वाकूं गावे प्रियगाल ।। २ ।।
होत है मालूम लख बोदड़ी विशाल ।
भेज्या है भावज गहरा रस भर माल ।। ३ ।।
मांगो नही देवो तो लेस्यूं खोस निकाल ।
फेर क्या रहेगो थारी बड़ाई सुचाल ।। ४ ।।
नाथू कहे गॉठरी छीन ली गोपाल ।
दोय मुट्ठी तन्दुल पाकर किए है निहाल ।। ५ ।।

सुदामा के तन्दुल खाने के बाद रुक्मिणी और कृष्ण का सम्वाद भी कवित्त रूप मे बानगी देखिए —

भीम सुता पकड़ हाथ, कहती है जोय बात, हे स्वामी जग के त्रात, तुष्ठे सो जाणी जी।
दोय मुट्ठी तन्दुल लेर, भये खुश दो लोक देर, अब तीजी भरो फेर, त्रिलोकी क्या ठानी जी ।।
त्रिलोकी देवोगे श्याम, अपना फिर कौन धाम, देवो भली पुरी तमाम, सोचो चक्रपानी जी ।।
नाथू कहे अनुरागी, दीसे विप्र वैरागी, सर्व विषय भोग त्यागी लाभ हान समानी जी ।।

कृष्ण का उत्तर —

सुख दुख लाभ हान, जानत है तेही समान, सोही प्रिय लगे महान, मुझको वो विज्ञानी जी ।।
ईसू शील द्विज की वाम, कहे क्या तारीफ आम, अष्ट याम मम नाम, रटत बड़ो ध्यानी जी ।।
ब्रह्म लोकी सुख स्वच्छ, जानते है ताको तुच्छ, वैराग्य मत में रुच, रह्यो शुद्ध प्राणी जी।
देऊँ त्रैलोक्य जगत, सेवा फल पल की फकत, नाथू कहे स्वामी भगत महिमा बखानी जी ।।

श्री कृष्ण जी अपनी रानियो को सुदामा को भोजन कराने का आदेश देते है .—

रगत चौबोला

बाल्न स्नेही पावणा आए सज्जन द्वार।
दिल बिच हर्ष बधावणा कर कर मगलाचार ।।
कर कर मंगलाचार नार कीजो मिजमानी भारी।
सीरा साबुनी खीर जलेबी लापसड़ी पचधारी ।।
लाडू घेवर बरफी फीनी करो मिठाई सारी।
पापड़ पूरी और कचौरी सब ही करो तैयारी ।।

कव्वाली

गुजा ठौर इमरती अकबरी और इन्दरसा।
मिला कर मायने मावा सेतला रग केसर सा ।।
बनाओ पोसरा पेठा मूण दे डोग मेसर सा।
वगता दाल वो भुजिया चरपरा स्वाद दिलहर सा ।।

इतनी तैयारी के बाद भी कविवर भग का प्रबन्ध कराना, जल की झारी मंगाना, आसन विछाना, भोजनान्तर लौग, पान, सुपारी प्रदान कराना, विश्राम के लिए शैया विछाना तथा कृष्ण द्वारा पखा झलवाना नही भूले है। कवि इतने सूक्ष्म द्रष्टा है कि सत्कार की कोई चीज उनकी नजर से बच नही सकी।

इधर भगवान कृष्ण ने विश्वकर्मा के माध्यम से सुदामा के घर मे अतुल सम्पदा भिजवा दी, उधर सुदामा को ग्लानि है कि हरि ने कुछ नही दिया। मैं माँगता तो हरि दे भी देते।

ब्राह्मणी को समझा देऊँगा धन मे ममता मत रखो।
झूठी धन माया ध्यान कर ग्यान से आतम रूप लखो ।।

काया काचो मठो रटो हरि नाम लिख्योना पटो पको।
यम दुख देवेगो जभी तो चले नहीं संग एक टको॥

ऐसा सोचते जब सुदामा अपने गाँव मे आए, तब अपने मकान का वैभव देख कर चकित हुए। उनकी मनोदशा का मनोहारी वर्णन इस पद में देखिए :—

कहाँ गया छपरा वेह हे मेरे राम।
कहाँ छपरा कहाँ विप्रानी यह तो सुन्दर गेह।
ऊँची अटा पर बैठी है सुन्दर क्यों हमें भाला देह।
यह तो दीसे राजा की रानी हम को लागत भैं।
क्या यह हमारी हँसी करे है लख कर दुर्बल देह।
नाथूराम श्याम के शरणे कैसे मिटे सन्देह॥

सुदामा का सन्देह तभी मिटा जब उसकी पत्नी स्वय आई और उसे महल में चलने को कहा :—

झालो दियो लख्या नांय, चालो जी महलां मांय, सम्पदा सम्हालो सारी आपकी है माया जी।
आप गए द्वारका में सभी काम हुआ ठीको पीछे से विश्वकर्मा ठाठ यह लगाया जी॥
ठौर ठौर अष्ट सिद्धि नव निद्धि धरि लाया, दास दासी बास सुख कैलाश सा बनाया जी।
नाथू कहे श्याम सेवर, आप ही सीर का सेवर, कृपा कर कृष्ण देवर जेवर बगसाया जी॥

सुदामा का कथन :—

जेवर बगसाया क्यों मन्दिर यह बनाया क्यों छप्पर को उड़ाया क्यों देकर धन माया जी।
माया है ठगणी, जगत ठग्या कोई भक्त, कई और ठगत जाल, मकड़ी ज्यूं छाया जी।
ऐसी ये ठगणी रूप, दीनी क्यूं यादव भूप, माया कई जीवों को जगत में भुलाया जी।
माया मे फस्यो जीव, भूल गयो आतम पीव, नाथू कहे सुदामा को विभव न सुहाया जी।

अन्त मे "माया है ठगनी गावे वेद मे" इस लावणी द्वारा कविवर ने अपना जीवन दर्शन समाज को दिया है कि गरीबी मे ही सच्चा आनन्द है और धन सम्पत्ति साधना के मार्ग मे बाधक है। कवि नाथूराम जी मन वचन कर्म से सुदामा ही थे, अन्तर इतना ही है कि उनको इस कलियुग मे कृष्ण नही मिला। कविवर ने अपनी दीन दशा के वर्णन मे सुदामा को ही आलम्बन बनाया है। वे साक्षात् नरोत्तमदास के ही सुदामा थे —

शीश पगा न झगा तन में
धोती फटी सी लटी दुपटी अरू पाँय उपानह की नहिं सामा॥

● ● ●

प्रस्तुत पुस्तक मे तीन पृष्ठो मे एक गेय लावणी दी हुई है जो रताऊ ग्राम के मुरली मनोहर जी के मन्दिर के लिए रची गई है —

शुभ सुमरुधरा पति उम्मेद सिंह जी नाम है।
जोधपुर जिल्ले रताऊ खालसे का ग्राम है॥
जा में श्री मुरली मनोहर धारि का एक धाम है।
अर्चावतारि विराजते प्रभु दर्श सुन्दर श्याम है॥

भगवान के भव्य मन्दिर, मूर्ति, आभूषण, शिवालय, नन्दी, दुर्गा, तुलसी-स्थान, कथा-मण्डप आदि का वडा अच्छा वर्णन इस लावणी मे किया गया है। प्रतिदिन आरती के समय आज भी यह लावणी भक्त जनो द्वारा गाई जाती है और जब तक यह लावणी भक्त जनो के हृदय और जिह्वा पर रहेगी, कविवर का नाम भी अजर अमर रहेगा। लावणी का उपसंहार निम्न भाँति किया गया है —

सवत् उगनी सौ निब्बे की साल मगसर मास जी।
कृष्णपक्ष नौमी शनिश्चर वार लख इतिहास जी॥
अवदीज गुरु नन्दलाल जी हिरदे किया परकाश जी।
पद रचे नाथूराम दर्जी डीडवाना बास जी॥
मुरलीधर का भजनगान करे मिटे फन्द भव सागर का॥ लावणी

● ● ●

ग्रन्थ के अन्त मे भक्त सज्जन कसाई की गाथा लावणी रूप मे दी हुई है। यह कथा "भक्त माल" से उद्धृत है और कविवर ने अपनी प्रतिभा तथा रचना-चातुर्य के द्वारा इसे ठोस प्रवन्ध काव्य का रूप दे दिया है। काशी के एक ब्राह्मण ने भूल से एक भागती हुई गाय को रोक लिया जो कसाई के चगुल से छूट कर भाग रही थी। पीछे से कसाई ने आकर उस गाय को मार डाला। इसका पाप उक्त ब्राह्मण को लगा और वह अगले जन्म मे भक्त सज्जन कसाई वना। वह अज्ञान से शालिग्राम के बाटो द्वारा मास को तोलता था, तो भी भगवान उससे अप्रसन्न नही हुए। वह एक अन्य परीक्षा मे भी खरा उतरा परन्तु उसके हाथ काट डाले गए, जो पूर्व जन्म मे गाय को रोकने का दण्ड था। इस सुन्दर कथानक को लावणी द्वारा सजीव रूप देना कवि नाथूरामजी जैसे भगवद्भक्त का चमत्कार था।

सज्जन कसाई भक्त हरी का हुआ जगत माँही सरनाम।
पूर्व पाप फल भोग भक्ति से पाए वे जगदीश्वर धाम॥

वह भगवद्भक्ति मे इतना तल्लीन रहता था कि पूजा के योग्य शालिग्राम पत्थर को ही बाट मान कर उससे मास तोलता था। एक सन्त ने शालिग्राम की यह दुर्गति देख कर वह बाट ही चुरा लिया, लेकिन भगवान ने सन्त को स्वप्न मे आदेश दिया कि सज्जन कसाई की भक्ति वास्तविक है, हमे वापिस वही पहुँचाओ —

अनजाने सालग से मिट्टी तोलत गोविन्द गुण गाता।
कुटम पालने नीच कर करम हरीजन पछताता।
प्रतिमा पूजक सन्त एक बटखरा देख किए दृग राता।
चतुराई से ले गया सन्त गंडि का सुत ग्याता।
शेर : स्नान पचामृत करा चन्दन चढा पूजन किया।
अकाल मृत्यु हरण मन्त्र बोल चरणोदक लिया॥
शयन करते ही स्वप्न मे हरि साधु को खिज कह दिया।
सदन घर पहुंचाय हमको क्यो घमडी तैं लिया॥

चौपाई : नांय सुहावे तेरा टमका टीका। सदन के हस्त कमल लागे नीका ।।
नेह बिन तेरा पंचामृत फीका। सदन प्रेमामृत मखन गोपी का ।।

भगवान सज्जन कसाई की नवधा भक्ति से प्रसन्न थे, इसलिए उस सन्त ने स्वप्नादेश मानकर शालिग्राम को पुन. सज्जन के पास ही पहुँचा दिया। परन्तु इस घटना से सज्जन के ज्ञान चक्षु खुल गए वे अज्ञान मे शालिग्राम को ही बाट मानकर मास जैसी घृणित वस्तु तोलते थे। उन्होने गृहस्थाश्रम त्याग दिया।

"ऐसे हरि लख प्रेम विकल भए टूटे गृहस्थ के बन्ध तमाम"

वे परमहस की भाँति विचरने लगे। एक दिन एक गृहस्थी के घर मे रात्रि मे विश्राम किया। उस घर की एक अति कामी कामिनी अर्द्ध रात्रि मे उनके पास आई और प्रेम की याचना की। सज्जन ने उसे मातेश्वरी सम्बोधित करके मना कर दिया। वह कहाँ मानने वाली थी। उसने अपने पति को मार दिया और पुन. सज्जन को कहा कि अब तुम नि शक होकर प्रेम करो। सज्जन के मना करने पर उस स्त्री ने त्रिया-चरित करने आरम्भ कर दिए कि सज्जन ने उसके पति को मारा है और उस स्त्री पर उसकी कुदृष्टि है। फलस्वरूप राज दरबार मे न्याय हेतु सज्जन कसाई के हाथ काट दिए गए। तत्पश्चात् भक्तराज जगदीशपुरी की ओर रवाना हो गए। वहाँ पुजारियो को स्वप्नादेश हुआ कि कोई भक्तराज आ रहे है। पुजारियो ने उनको पालकी मे बैठाकर भगवान की मूर्ति के समक्ष प्रस्तुत किया। भगवत्कृपा से उनके हाथ पुन उग गए।

सज्जन के मन में शका उठी कि किस अपराध से हाथ कटे। भगवान ने पुनः रात्रि के समय प्रकट होकर कहा कि पूर्व जन्म में गाय को पकडा जो बाद मे कसाई द्वारा बध्य हुई। उसी पाप का दण्ड है।

कविवर ने अटल सिद्धान्त निम्न भाँति प्रतिपादित किया है—

पाप की नहीं माफ होती ईश्वरी सरकार में।
मूर्ख विषयों वश फँसे इस ऋणाबन्ध संसार में।।
पातक मिटा अब शुद्ध हुआ चित्त लगा तत्व विचार में।
अन्त में मिल जायगा ज्योति मयी दीदार में।।
दे वर हरि भए अन्तर्ध्याना।
सदन भजन कर भए कल्याना।
नन्दलाल गुरु का धर ध्याना।
सदन चरित्र कथें भक्ति रसाना।।
दर्जी नाथूराम कृष्णपद शरण रहे डीडवाना ग्राम।।

—लावणी

यही पर इस लावणी की समाप्ति है। आज से ५० वर्ष पूर्व कवि नाथूरामजी ने इस प्रकार की लावणियो द्वारा जनता को उच्च कोटि का धार्मिक एव आध्यात्मिक साहित्य दिया, साथ ही जन रूचि का परिष्कार करके उसे साहित्यिक गतिविधियो की ओर मोड़ दिया, यही कविवर की विशेषता है। यही कारण है कि वे युग युग तक जनता के कण्ठहार बने रहेगे।



ख्याल सुदामा भक्त का

रङ्गत सेखावाटी

कवित्त

शम्भू के सुत गणेश, देवो मोहि बुद्धि विशेष।
मेटो दुख क्लेश, तोहि हमेश में ध्याता हूं॥
शारदा भवानी राणी, अरज करूं जोर पाणी।
करो मेहरवानी दास आपका कहलाता हूं॥
अवदीच गुरु नन्दलाल, ज्ञान दिया हो दयाल।
जान के जगदीश ईश सीस में निवाता हूं॥
कहे नाथुराम दरजी, भई गुरुवर की मरजी।
लीला सुदामा की सरजी, प्रेम सहित गाता हूं॥

टेर—सुदामा की, राग जगला

आए सुदामा भक्त शिरोमणि, बाल मित्र गोपाल का॥ टेर॥
गण नायक संतन सुख दायक सायक सदा मनाऊं।
द्यो बृहस्पति सी बुद्धि सरस्वती भक्ति से जस गाऊं।
द्विजवर श्री नन्दलाल गुरु के चरणों में चित लाऊं।
गुणी गुलाब की मरजी सेती फतह सभा में पाऊंजी।
रस सुने सकल नर ख्याल का॥ आए सुदामा०॥ १॥
धर्म रूप भूप है ज्यां को देश बड़ो गुजरात।
जहां है पुरी सुदामा मेरी मुल्कों में विख्यात।
कोस तीस है पुरी द्वारका नाथ बसे जगन्नात।
पार ब्रह्म पूर्ण अविनाशी ताहिं रटूं दिन रात जी,
म्हें मित्र एक पौशालका॥ आए सुदामा०॥ २॥
कृष्ण चन्द भगवान जिन्हों की महिमा अपरम्पार।
भूमि भार उतारण कारण धर्यो मनुज अवतार।
गुरु के सुत जीवत कर लाये जा के जमके द्वार।
मन्द मति नर जानत नाहीं गोविन्द का विस्तार जी।
भूल्या मोहा जाल का॥ आए सुदामा०॥ ३॥

या तन धन की कौन बड़ाई करके कहूं बयान।
देखत नैन चल्यो जग जावे है सपना के समान।
धरा तौलता ते नर हो गया धरनी में गलतान।
तज मन मोह जगत का फन्दा भज श्रीपति भगवानजी,
मिटे सर्व भय काल का ॥ आए सुदामा० ॥ ४ ॥

ब्राह्मणी सुदामा से कहती है
कवित्त

धातन को बरतन नांय भातन को सरतन नाँय,
भिक्षा मांग लावो नाज बापरे जब ही जी ॥ १ ॥
टूटी छान झूंपड़ी डटत नांय धूपरी,
बरसत जल ऊपरी कष्ट होय तबही जी ॥ २ ॥
महा दारिद्र दुख देना सदा कैसे होय सहना,
अच्छे खान-पान गहना देखे नांय कबही जी ॥ ३ ॥
नाथू कहे जोड़ हाथ पति को समझाय बात,
उपाय करो प्राणनाथ सुख मिले सबही जी ॥ ४ ॥

सुदामा ब्राह्मणी से
कवित्त

दुख और सुख नार करमों के अनुसार
लिखिया करतार घटे बढे नाहिं राई है।
कर्म ही से मिले राज कर्म ही से हो मोहताज
करते यत्न कर मिजाज नरकी मूढताई है।
मन जाणे इन्द्र बणूं कर्म करे रंक का सा
ऐसी कर आशा कौन पदवी नार पाई है।
नाथू कहे सुदामाजी समुझाय रहे पत्नी को
किसको दें दोष धार क्यूं न धीरताई है।

सुदामा और ब्राह्मणी का परस्पर सम्वाद
रगत धूमणी

लख निर्धनताई धण तो घबराई थांरी बालमा ॥ टेर ॥
प्रथम परिश्रम वर्षा ऋतु मे आश्रम टूटी छान।
दूजा दुख भिक्षा पिव लावो जद चाले गुजरान।
वृक्ष पात मे भोजन पावां करवासे जलपान।

ओढण फाटा लूगड़ा पोढण टूटी खाट।
ऐसा दारिद्र थांरे घरमे सकट भयो विराट्।
मिटे सो करो उपाई ।। धण तो घबरायी० ।। १ ।।

क्यों मन को डुलावे पावे धन माया अपने भाग की ।। टेर ।।
सुख सम्पत माया सुत दारा है करमां का खेल।
टूटी छान लिखी किस्मत में कौन चिणादे महल।
रक होयके कैसे करते राजा की सी सहल।
करता के दरबार में कमी काय की नांहि।
मानस भटके देश देशमें चूक चाकरी मांही।
गुणी जन ऐसे गावे ।। पावे धन माया अपने भाग की ।। २ ।।

गावे गुणी नर सांच पिया जी देखो घरका हाल।
अन्न वस्तर को टोटो घर में ऐसा कौन कगाल।
ऐसी मनुष्य की जूणी से तो पशु भी रहत कुशाल।
द्रव्य विना नर गृहस्थ को कैसे होत निभाव।
धन से धन २ बाजे जगत में दिलमें रहत उछाव।
बिना धन ना सुखदाई ।। धण तो घबराई० ।। ३ ।।

द्रव्य बिना सुखदाई नांहि ना बन्दा के सारे।
जैसा सचय करम जीवका लख विध जूण उतारे।
लाभ हानि अरु जीवन मरणा देव गति अनुसारे।
बन्दो जाणे धन करुं करके करूं गुमान।
विधना हाथ कतरणी राखे रख सदा उनमान।
बढे तो काट बगावे ।। पावे धन माया० ।। ४ ।।

काट बगावे अभिमानी को दीनन के हितकारी।
कई भगतां का कारज सार्‌या जादुपति अगारी।
हरिश्चन्द्र बलि नृग राजा कू दीना छ सुख भारी।
सुख सम्पति फल चार को दाता श्री गोपाल।
जैसी आशा होय भक्त की पूर्ण हो तत्काल।
आप जांचो यदुराई ।। धण तो घबरायी० ।। ५ ।।

जांच्यां धन देवे नही प्रभुजी धर्म कियाँ धन होय।
हरिश्चन्द्र बलि नृग सुख दीना पुण्य उसी का जोय।
मै पुण्य निमित्त दीवी नहीं कोड़ी कैसे हरि दे मोय।
राम झरोखे बैठके सब का मुजरा लेय।
जैसी नरकी लखे चाकरी तैसी ही भर देय।
करम से सब सुख पावे ।। पावे धन माया० ।। ६ ।।

ब्राह्मणी

शेर—पीवजी सुण आपको यो लखपति सो भाग है।
एक पठशाला पढ्योड़ा कृष्ण से अनुराग है।।
उसी कमला कंत के धन सम्पत्ती अथाग है।
क्षीर सागर मे पड़यो, क्यों नीर विन तड़ाग है।।

सुदामा

तालाव है जल विना दरिया ना लहरा करे।
उसी की तो रीत याही भरे कोही फिर भरे।।
द्रव्यवान मित्र को मित्र कभी नहीं वीसरे।
निरधनों से भायला भी मुख छिपाकर नीसरे।।

ब्राह्मणी
राग माड़

पियाजी थांरो वाल मित्र गोपाल फेर क्यों होय रहे कंगाल।। टेर।।
वाल मित्र गोपाल आप सग पढ़िया एक पोशाल।
सो प्रभु पुरी द्वारका राजा यादव पति भोपाल।।
कुवेर सा भंडारी जिनके भरा खजाना माल।
जिन पर नजर करे कृपा की उसको करे निहाल।। पियाजी०।। १।।

सुदामा

वावली भई विप्राणी वाल भायला करे किसी को निहाल।। टेर।।
मतलवकी मित्राई जग में झूठा मोहा जाल।।
ना कोइ पार लगावे मित्रता निरधन सेती पाल।
पुरुष लक्समीवान भोग सुख आपही रहे कुशाल।
वरोवर्‌यां मे रखें प्रीत दीनन पर करे न ख्याल।। वावली०।। २।।

ब्राह्मणी

ध्यान रखे सबही का कर्ता है वह दीन दयाल।
करे मतलवी प्रीति है नहीं प्राकृति मित्र लवाल।।
दियो विभीषण को निर्भय पद अचल राज कृपाल।।
सुखी कियो सुग्रीव मित्र लख मार हटायो वालि।। पियाजी०।। ३।।

सुदामा

हत्यो बालि पाल्यो रवि सुत को सियहित रच के जाल।
रिपु को भेद लेन विभीषण को अपनायो तत्काल॥
सेवा कर्‌यां ही ना दे किसको देवत है भग डाल।
बलि चाहता था स्वर्ग लेण को पठा दियो पाताल॥ बावली० ॥ ४ ॥

ब्राह्मणी

पठा पाताल दियो बर बलिको सुरपति को दुख टाल।
निरधन को धन है धरनीधर कमला पति दयाल॥
है विश्वास आस सब जन की पूरत है तत्काल॥ पियाजी० ॥ ५ ॥

सुदामा

परख्यो परखायोड़ो है, मै जाणू सारी चाल।
थारा कया से पुरी द्वारका जास्यूं प्रातः काल॥
इस मिस होसी दर्श हरी का चित्त भी रहे कुशाल।
नाथूराम श्याम के शरणे परम मित्र नन्दलाल॥ बावरी० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी

पिया थे यादव पति के पास द्वारका जावोजी॥ टेर॥
पुरी द्वारका जावो प्रीतम कारज मन का सरसी।
करुणा सागर जगत उजागर कृपा थां पर करसी॥
गरीब परवर नटवर नागर दुख दरिद्र सब हरसी।
बड़ो भरोसो मोय उसी को धन भन्डारा भरसी॥
देर मत ल्यावो जी॥ पिया० ॥ १ ॥

सुदामा

भेट कछु ल्यावोजी प्यारी म्हें जावां द्वारका ठेट॥ टेर॥
भेट कछु थें लावो नार म्हे पुरी द्वारका जास्यां।
कई बरस से अरस परस जा दरश हरि का पास्यां॥
गिरधर से मिलकर हित चित से परसों पाछा आस्यां।
रखां नही मन धन की तृष्णा देसी सो ले आस्यां॥
मॉगणको नहिं दावोजी॥ प्यारी० ॥ २ ॥

ब्राह्मणी

मांगण को नहीं काम पिया, विन मांग्यां देसी स्वामी।
घट घट की जाणत है सारी ईश्वर अन्तरजामी।
भक्त वत्सल भगवत को प्यारा लगे भक्त निस्कामी।
है असख्य ब्रह्मान्ड-पति साकार ब्रह्म सुखरासी॥
दरश तुम पावोजी॥ पिया०॥ ३॥

सुदामा

पाया दर्श हर्ष भये जीवमें मिलसी नन्दकिशोर।
लावो भेट-भाग पासी ज्यू ज्यूं भिलनी का बोर॥
कहो कछु संदेश प्रेम से देवो लोटो डोर।
सिद्ध गणेश मनाय सिधावां म्हे होते ही भोर॥
शकुन थे देवोजी॥ प्यारी०॥ ४॥

ब्राह्मणी और पडोसन वार्ता
राग कल्याणी

भायेली गुण मानूंगी थारो दीजे तान्दुल नेक उधार॥ टेर॥
हे पाड़ोसण धीर भायली परम हमारी।
मोय चावल अध सेर महर कर देवो पियारी॥
स्वेत नाज दियां आज सरेगो काज हमारो।
मानूंगी एहसान रहेगो जस तुम्हारो॥
आली जरासो काम ओ, अब के पड़्यो छे तुमसे।
नटो मती इस वक्त दूणा लेय लीजो हमसे॥ भायली०॥ १॥

पाडोसण

आली को मिजमान पधार्‌या ये तान्दुल का जीमणहारा॥ टेर॥
चावल तो जब चाहे सुसर घर आय जंवाई।
के चावल जब चाहे बहिन घर आवे भाई॥
तू मागे अधसेर सेर देदूंगी तुझको।
चाहत है केहि काज हाल बतलादे मुझको॥
आज तन्दुल जीमणे को कौन आया पावणा।
हे सखी दिल खोल के भेद सब बतलावणा॥ २॥

ब्राह्मणी

भेद कहुं हंस बोल खोल दिल तेरे आगे।
तन्दुल सेती आज हमारो किसमत जागे॥
मेरे पिव के मित्र द्वारका पति सुखराशी।
तासे मिलणे हेत हमारे प्रीतम जासी।
भेट करण को दीजिये कृष्ण लालजी के लिये।
तुष्ट मान चट होंगे दयाकर माधव हिये॥ ३॥

पाडोसण

दया धार गोपाल भेट तन्दुल की पासी।
सरसी तेरो काज खुशी होवे अविनाशी॥
मांगे जाके काज आज तुम नाज पियारी।
लेजा जितना चाये नटूनां बेर तिहारी।
अन्न-धन वोहि धन्य है अर्पण हो भगवान के।
और चाहिये चीज तो लेजाय मायली आनके॥ ४॥

ब्राह्मणी सुदामा से
राग सोरठ

पधारो पिया पुरी द्वारका आज॥ टेर।
द्वारका वासी है सुख राशी अविनासी महाराज॥
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का दाता गरीब निवाज॥ १॥
जाचोनी वाने जाय पियाजी सरे मनोरथ आज॥
बड़ो भरोसो मोय उनोको जिण त्यार्‌यो गजराज॥ २॥
लाई बांध पुराणा वस्त्र मांही चोखा नाज॥
करजो कृष्ण लालजी आगे प्रेम भेट सिरताज॥ ३॥
लुकटी लोटा डोर झिला के शकुन देऊँ सजसाज॥
नाथूराम श्याम के शरणे सिंवरो सिद्ध गणराज॥ ४॥

सुदामा कहता है
लावणी रङ्गत खडो

सेर—विषयूँ के आधीन मे मन रहत ज्यादा नारका॥
अच्छे खाना पहिनना सुख भोगना संसार का॥
इसी के मोह मे है फिरे भूल्या नाम नर करतारका॥

नारके कहने से अब मै जाता हूं पुरी द्वारका ॥
म्हारे नहीं धन की इच्छा मै पूरी द्वारका जाऊंगा ॥
वाल मित्र श्री कृष्ण चन्द्रजी जिनके दर्शण पाऊंगा ॥ टेर ॥
लुकटी लोटा डोर लिया कर गंठा खांक दबायाजी,
शकुन लेय सुमरण कर हरि का सिद्ध गणेश मनायाजी,
लगी देर ना मग में कछु भी महर करी यदुरायाजी,
पहर तीन के मांय चालके शहर किनारे आयाजी।
सेर—देख शोभा सघन वनकी अती आनन्द छावते।
ग्वाल बालक धेनु पालक सुभट धेनु चरावते।
वागवान बाग बिच कूप अरठ चलावते।
नाना विधि है वृक्ष बेलां फूल फल मन भावते।
वन शोभा को देखके अब में नगरी मांय सिधाउंगा ॥बालमित्र० ॥१॥
च्यारूं ओर बड़ा परकोटा सागर बीच बसे नगरी ॥
चक्र सुदर्शन पेरा देवे सुखी बसे रैयत सगरी ॥
कंचन का मन्दिर है सुन्दर इन्द्रपुरी से अधिकारी ॥
हाट वाट चौवटे अन्दर अनमोली चीजां विकरी ॥
सेर—बहुत शोभा दे रही है दुकानें बजाज की।
ठौर ठौर सुसग कीरत हो रही व्रजराज की।
यादवों की जुड़ी परिषद् सभाज्यूं सुरराज की।
सुदामा प्रसन्न भयो देख के छवि आज की।
गये पूछता सिंघ पोल अब पोल्या से बतलाऊंगा ॥ बालमित्र० ॥ २ ॥
द्वारपाल से सवाल कहा मै कहां कृष्णजी ब्राजे हैं,
कहा पोलिया भीतर जावो रत्न सिंघासन राजे है।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल कटि पीताम्बर साजे है ॥
दर्शण किये मै हर्ष कृष्ण का दुख दारिद्र भाजे हैं ॥
सेर—देखकर चट हरि मिले मोय सिंघासन बैठा लिया।
होय खुश पग धोयके सबको चरणोदक दिया।
निरख यादव लोक राण्यॉं बड़ा मन इचरज किया।
ऐसे दुर्बल को हरीजी क्यो इता आदर दिया।
ऐसे दीन दयाल प्रभु का बार बार गुण गाऊंगा ॥ बालमित्र० ॥ ३ ॥
नन्दलाल गुरुवर गुण दीना वेद शास्त्र मथ मथ के ॥
तिमिर मिटाया भान उगाया गाते हरियश कथ कथ के ॥
गुलाबचन्द दर्जी करी मरजी गाने बताये गत गत के ॥
नाथूराम श्याम के शरणे ध्यान धरत है तत् सत् के ॥
सेर—गुरु की भक्ति करे तो शिष्य मुक्ति पात है।
गुरु खिज कर सुमग घाले सो चेला सिर हात है।
कोप गुरु का से डरो यही पुरातन बात है।

जाण के विष्णु गुरु की सही हृदय पे लात है।
गुरु पल में गोविन्द मिलावे जिनका ध्यान लगाऊंगा ।। बाल मित्र० ।। ४ ।।

कृष्ण सुदामा सम्वाद

दोहा

आनन्द को रवि ऊगियो सुभ घड़ी भई उचित।
दर्शन दे प्रसन्न किया, कई बरसन से मित ।।

चौबोला

कई बरसन से मित्र आज तुम आये चाल द्वारे।
हुवा आपका आगमन से भवन पवित्र हमारे ।।
बड़े भाग्य अनुराग भया मन बिछड़े सजन निहारे।
बिछड़े सजन, गये धन मिलना दैव कृपा अनुसारे ।।
झड़—दैव जब कृपा करावे, बिछड़्या मित्र मिलावे।
दैव की अद्‌भुत माया, भई दैव की महर—
आज म्हाँ प्यारे मित्र मिलाया ।।

सुदामा

दोहा

तुमही देवी देवता तुमही हो जगन्नात।
लाभ हानि, मिल बिछुड़ना, सुख दुख तेरे हाथ ।।

चौबोला

सुख दुख तेरे हाथ नाथ तुम भक्तन के हितकारी।
तुम ही ब्रह्मा तुम ही विष्णु तुम ही शिव मदनारी ।।
तुम ही कर्ता तुम ही भर्ता भव भंजन अधिकारी।
मंडन धर्म पाप को खंडन धारो रूप मुरारी ।।
झड़-भवन चवदा के माँही, उदाहरण तुम से नाहीं।
छिपो भक्तां सु कांई, आप हो जग के सांई ।।
बसो नित सबके जांही, जगत बीच धारो तन—
नर का, फकत् भक्त के तांही ।।

दोहा

भक्त आप भगवान के, इसमें झूठी नांय।
बालपने के हाल को, ख्याल करो मन मांय ॥

चौबोला

ख्याल करो मन मांय एक पोशाल पढ़े आपाँ ही।
गुरु पत्नि से बहुत ही डरता गुरु से डरता नाँही ॥
एक समय गुरु पत्नि खिज कर भेजा ईंधन ताँही।
वर्षा भारी निस अंधियारो भटके बन के माहीं ॥
झड़-ढूँढते गुरु वर आये, साथ लेके घर ल्याये।
महर कर ज्ञान पढाये, अति मन आनन्द छाये ॥
बिछुड़े जब के भाई इतने दिन तुम रहे कहाँ—
हमे सुधि भी नहीं पाई ॥

जवाब सुदामा

दोहा

व्यापक हो सब विश्व में, रमापति तुम राम।
भूत भविष्य सब काल को, जानो हरी तमाम ॥

चौबोला

जानो हरी तमाम श्याम का नाम है अन्तरयामी।
हो सर्वेश्वर परमेश्वर दुख भंजन प्रभु सुख दामी ॥
असंख्य ब्रह्माण्ड है रूम रूम में हो अखण्ड गुणग्रामी।
रूप अनन्त सन्त जन पालक सबके मालिक स्वामी ॥
झड़—मनुज को रूप बणायो, आप निज तत्व छुपायो।
मोहनी तुमरी माया, सकल जी को भरमाया ॥
मूर्ख तोय पुरुष बतावे, करे कुतरकांवादी नर।
सो नरकां मांही जावे ॥

कृष्ण

दोहा

मूख नर्क सिधावसी, हरक फरक है नांय।
भावज भेजी भेट मित्र कांई हमारे तांय ॥

चौबाला

मित्र हमारे तांय भेट सो दीज्यो खोल बताई।
कैसी भेजी भेट ठेठ से हितकर के भोजाई॥
मती कांख के मांही छिपावो बेग दिखावो भाई।
बड़ी हमारी भूल भई इती बेर निगाह नहीं आई॥
झड़-अब तुम बेगी लावो, देर ना आप लगावो॥
दिखा दिल होय उछावो, हमे मतना तरसाओ॥
भाभी भेजी भेट लेण को दिल में भयो उमावो॥

सुदामा

दोहा

लग्यो उमावो आप को, कहा रमा वर सेठ।
पास हमारे है नहीं तेरे लायक भेट॥

चौबोला

तेरे लायक भेट लेट चरणो में अर्ज सुनाऊँ।
अति दुर्बल निर्धन निर्भागी नित तेरा गुण गाऊँ॥
भिक्षा लाकर उदर भरूँ मै या विधि गुजर चलाऊँ।
घड़ी २ क्या कहो हरी मैं खरी २ दर्शाऊँ॥
झड़—आपका दर्शण तांई, आयो तव पुर के मांही।
कुछ लायक हूँ नांही, भेट दिखलाऊँ कांई॥
कमल पद शीश निवाऊँ, बेर बेर कहूं टेर टेर प्रभु,
फिर मांगे सरमाऊँ॥

कृष्ण सुदामा से

राग माड

देवोनी सुदामा भाभी भेजी सो रसाल॥ टेर॥
पढ़्या छा सजन आपां एक पौशाल।
कहा शर्मावो मै हूं मित्र सु बाल॥ १॥
लाड़लो भाभी के होत देवर लाल।
पदारथ देवे वांकू गावे प्रियगाल॥ २॥
होत है मालूम लख बोदड़ी विशाल।
भेज्या है भावज गहरा रस भर माल॥ ३॥

मांगी नहीं देवो लेस्यूं खोस निकाल।
फेर क्या रहेगी थारी बड़ाई सुचाल ॥ ४ ॥
नाथू कहे गांठरी छीनली गोपाल।
दोय मूठी तान्दुल पाकर किये हैं निहाल ॥ ५ ॥

कृष्ण रुक्मिणि सम्वाद

राग खम्माच

रुक्मिणी आज के सवाद बहु भात ॥ टेर ॥
एक मूठी भर और पाणे दो मतना पकड़ो हाथ।
एक दिन जीम्या सासरे चावल उनकी छी और बात ॥
भावज भेजी भेट सनेह से लाये सुदामा भ्रात।
ऐ मीठा ज्यूं फल सिवरी का रुच पाया रघुनाथ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे मगन भये जग त्रात ॥

रुक्मिणी जबाब

कवित्त

भीम सुता पकड़ हाथ, कहती है जोय बात,
हे स्वामी जगके त्रात, तुष्ठे-सो जाणीजो।
दोय मुट्ठी तान्दुल लेर भये खुश दो लोक देर,
अब तीजी भरो फेर त्रिलोकी क्या ठानीजी।
त्रिलोकी देवोगे श्याम, अपना फेर कौन धाम,
देवो भले पुरी तमाम, सोचो चक्र पाणीजी।
नाथू कहे अनुरागी, दीसे विप्र वैरागी,
सर्व विषय भोग त्यागी, लाभ हान समानीजी ॥

कृष्ण

कवित

सुख दुख लाभ हान, जानत है तेही समान,
सोही प्रिय लगे महान, मुझको वो विज्ञानीजी।
ईसु शील द्विज की बाम, कहे क्या तारीफ आम,
अठ याम मम नाम रटत बड़ो ध्यानी जी।
ब्रह्म लोक सुख स्वच्छ, जानते हैं ताको तुच्छ,
वैराग मत मे रुच, रयो शुद्ध प्राणी जी।
देऊं त्रैलोक्य जगत, सेवा फल पल को फकत,
नाथू कहे स्वामी, भक्त महिमा बखानी जी ॥

रुक्मिणी

राग चन्द्रायण

भरो तीजा मूठा इतना कांई टुठा इन पर पीवजी ।। टेर ।।
दोय मूठी चावल में दीनी दोय लोक की माया।
अवे तीसरी भरो फेर प्रभू क्या दाता पन छाया ।।
त्रिलोकी देवोगे ठिकाणा अपना कौन ठहराया।
अपना कौन ठहराया बतावो सांवरा ।।
इता प्रेम के माँहि हुआ कांई बावरा ।। भरो० ।।

कृष्ण

थांने नहीं वेरा वालापण का ये मेरा मित्र है ।। टेर ।।
वालापण के मित्र सुदामा पढ़ता एक पौशाल।
सो बिछड़योड़ा घणा दिनां का द्वारे आया चाल ।।
क्या मैं यांको करूं खातरी कै देऊं धन माल।
कै देऊं धन माल सकुचाऊं मैं ही ।।
त्रिलोकी देऊं तो मोल पाऊं नहीं ।। थाने० ।।

रुक्मिणी

पावो नांही मोल इसी इन कांई करणी कीनी।
क्या हरिचन्द्र ज्यूं हेम दियो के नृग ज्यूं गायां दीनी।
के सन्यास धर्म कर साधन सून्य समाधी लीनी।
सून्य समाधी लीनी मन कूं मारिया।
क्या गृहस्थाश्रम छोड़ के भगवां धारिया ।। भरो० ।।

कृष्ण

भगवां धार्यां बुगला भक्ति भीतर कुटली कामी।
अन्तःकरन की प्रीत पिछाणूं मैं हूं अन्तर जामी ।।
जगत विषय मे रक्त नहीं है ओ है भक्त निस्कामी।
ओ है भक्त निसकामी खबर तुम को नहीं,
भक्त जनों की मन की प्रीत जाणूं मैं ही ।। थाने० ।।

रुक्मिणी

जाणो थेही सच कही प्रभुजी हो सरवज्ञ जग सांई।
और भक्त क्या हुआ नहीं हरीजी इसी जगत के मांही ।।
हरिचन्द्र वल नृग मोरध्वज पे इतना ठूठ्या नांही।
इतना ठूठ्या नाँहि वाँने उलटा ठग्या,
इनका तान्दुल इतना कांई मीठा लग्या ।। भरो० ।।

कृष्ण

मीठा नहीं किस विध लागे बाल सनेही भाई।
यांके घर पतिव्रता सुन्दर सो म्हाँकी भोजाई।।
वोही भाव भक्ति से भेजी भेट हमारे तांई,
भेट हमारे तांई हरख सु लेवस्यां।
सारी सम्पदा म्हाकी वाने देवस्यां।। थाने० ।।

रुक्मिणी

नाथ सम्पदा देवो भलांई टुक एक सोचो मन में।
ओ तो है पूर्ण वैरागी नहीं अभिलाषा धन में।
लाभ हानि होने को यांके हरख सोच नहीं तनमें।
हरख सोच नहीं तन में बात मानो सही।
बिना चायती दियां होय शोभा नहीं।। भरो० ।।

कृष्ण

शोभा नहीं किसी विध होवे याके बोलो वाणी।
ओ तो है पूर्ण वैरागी त्यागी ध्यानी ज्ञानी।
भावज के मन मे है धन की सो मै मनकी जानी।
सो मैं मन की जानी आश पूर्ण करू।
नाथू कहे हरि भक्तो का दुख परा हरु।। थाने० ।।

रगत चौबोला

बाल स्नेही पावणा आये सज्जन द्वार।
दिल बिच हर्ष बढ़ावणा कर कर मंगलाचार।।
कर कर मगलाचार नार कीजो मिजमानी भारी।

सीरा साबुनी खीर जलेबी लापसड़ी पचधारी ।।
लाडू घेवर बरफी फीणी करो मिठाई सारी ।
पापड़ पूरी और कचौड़ी सबही करो तैयारी ।।

कव्वाली

गुजा ठोर इमरती अकबरी और इन्दरसा ।
मिलाकर मायने मावा सेतला रंग केसरसा ।।
बनाओ पोसरा पेठा मूणदे खूब ही सरसा ।
बगता दाल वो भुजिया चरपरा स्वाद बिलहरसा ।।
(झड़) सलोना साग बनाओ, घृत मांही छिमकावो ।
मसाला खूब बनाओ, हेतसु इसे जिमावो ।।
जादुपति कहे पतिव्रता को रत्ती देर नहिं ल्यावो ।।

रुक्मिणी

दोहा

रत्ती देर नहि ल्यावसां हे पति सरजन हार ।
हुक्म आप को सिर धरां करां रसोई त्यार ।।

चौबोला

करां रसोई त्यार श्याम म्हें आज्ञा मान तुम्हारी ।
तुम हो मेरे प्राणनाथ प्रभु में चाकर चरणां री ।।
भक्तवत्सल भगवंत आपकी महिमा अपरम्पारी ।
रटे आप को दास जिन्हो के मान बढावो भारी ।।

कव्वाली

अटल पद ध्रू को दीना सुजस वो जग में जारी है ।
विभीषण यह मरन आया किया लंकेश मुरारी है ।।
पति बेमुख अहिल्या को चरन रज डार तारी है ।
जूंठे बोर भीलनी के पाय पल मे उधारी है ।।
झड़—भाग विदुर का भारी, साग पाये बनवारी ।
सदा सुन बनिता गारो, लूट दधि खायो मुरारी ।
यूंहि विप्र का तांदुल पा कर खातर करी मुरारी ।

कृष्ण

राग माड

हे बाल सनेही सुदामा म्हारा प्याराजी पीवो भांगड़ली ।। टेर ।।
आई भांग कंलाश सु भेजी शिव भगवान ।
घोटी राणी रुक्मणी गिरधर लाया छाण ।।
काली मिर्च मेवा घणां इस भांगड़ली मांय ।
या ठंडाई दुधिया बणी आप के तांय ।।
भांगड़ली में गुण बहुतेरो मुकता जीमो माल ।
सोच फिक्र तन ना रेवे होवे बदन विशाल ।।
लेवो बूँटी रुचे जिती मुकता जीमो माल ।
नाथु कहे स्वामी मृदु बोले भले आये मिजमान ।।

रगत सगीत

दोहा

जिमण सुदामा बेठिया, सुनो रुक्मणी नार ।
पुरसो कंचन थार में, कर कर अति मनवार ।।
प्यारीजी कर २ अति मनवार इन्होंकूं खूब जिमावोजी ।
प्यारीजी भीम दुलारी आप प्रेम कर चँवर दुलावोजी ।।
प्यारीजी थे कालिन्दी नार नीर झारी भर लावोजी ।
प्यारीजी श्रीसत्तभामा बाम हरक कर मगल गावोजी ।।

रानिया

दोहा

मगल गावां हरक स्वर हृदय प्रेम भरात ।
आप प्रभूजी क्या कहो म्हांके घणी ये बात ।।
प्रभुजी म्हांके घणी ये बात हात सूं भात जिमांवाजी ।
रखां जेठ को साख इसी से म्हें सरमावांजी ।।
प्रभुजी आप कहो तो अबे खातरी खूब करावांजी ।
प्रभुजी करकर बहु मनवार असन सबही सरसावाँजी ।

कृष्ण

असन परोसो भक्त कूं कर कर अति उछाव ।
ओ हैं भक्त सिरोमणी राखो घणेरो भाव ।।

प्यारीजी राखो घणेरो भाव करो थे टहल तवज्जाजी।
भक्त जिमावण हेत रखो थे काहे की लज्जाजी ।।
प्यारी जी भोजन जिमाकर फेर बिछादो फैन सी सेजाँ जी।
प्यारीजी क्या जाणगो भक्त हमे भगवत क्यूँ भेज्याजी ।।

रानी

भगत् भेज्या भगवत तुम मेटा उसी का दुख।
निज आनन्द वाँकू दिया ब्रह्मानन्द का सुख ।।
प्यारेजी ब्रह्मानन्द का सुख मुख वो यह अविनाशीजी।
प्रभुजी मूरख भजे बिन श्याम भोगते लख चोरासीजी ।।
प्रभुजी भक्त सुदामा हेत बनी रेती हम दासीजी।
प्रभुजी ऐसा बारम्बार भक्त कब द्वारे आसीजी ।।

कृष्ण सुदामा से
दोहा

जीम असन तृपत भया लौग सुपारी पान।
चाबो उत्तम, सेज पर सेंन करो सुख मान ।।
प्यारेजी सेंन करो सुखमान थक्या मारग का आयाजी।
दुख मोचन तोय देख मेरा लोचन सुख पायाजी ।।
प्यारेजी बातां करस्याँ फेर इसी कह महलाँ ल्यायाजी।
प्यारेजी चाँपे चरण यदुनाथ, सुदामा सुख फरमायाजी ।।

विश्वकर्मा कृष्ण से
दोहा

विश्वकर्मा कर जोर के पूछत कर उदमाद।
मेरे को यादवपति किया किस विध याद ।।
प्रभु किया किसविध याद काज मम सारू काँईजी।
कर्त्ता भर्त्ता आप सकल सृष्टी के साँईजी ।।
प्रभु धरो मनुज अवतार फक्त भक्तां के तांईजी।
प्रभु की आज्ञा मान काज करूँ पल के माँईजी ।।

कृष्ण का जबाब

दोहा

पल मांहि कारज करो तुम हो सामर्थ्य वान।
अंस कला ब्रह्मातणो चवदा विद्या निधान।।
चवदा विद्या निधान विश्वकर्मा कहलाया।
सब हुन्दर परबीन सिल्प विद्वत वर पाया।।
रिद्ध सिद्ध के अधिकार तुम्हारी रचो मन माया।
महिमा तेरी अपार सुजस जग माहीं छाया।।

विश्वकर्मा का जबाब

दोहा

सुजस विश्व में छारहा तुम्हारा कृपा निधान।
ब्रह्मा शकर इन्द्र के आप ईस भगवान।।
प्रभु आप ईस भगवान ज्ञान घन देव मुरारी।
चवदा भवन के मॉही प्रभुता अचल तुम्हारी।।
प्रभु हम दासन के दास सदा रहें आज्ञाकारी।
हुक्म देवो सोई काज करों लावाँ नहीं बारी।।

कृष्ण का जबाब

दोहा

बार लगावो तुम मती हो सब गुण के ग्राम।
पुरी सुदामा जाय के करियो ऐसा काम।।
करियो ऐसा काम धाम कंचन बनवावोजी।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि वहाँ धर के तुम आवोजी।।
दासी दास अनेक टहल करने को पठावोजी।
मेरा सुदामा भक्त जिन्हो का दरिद्र मिटावोजी।।

विश्वकर्मा अपने आप से

लावनी खडी रङ्गत

भगवत की भई महर भक्त पर मै मनमे हरसाऊँ हूं।
कचन भवन बणावण कारण पुरी सुदामा जाऊँ हूं।। टेर।।
पूरण प्रेम लख प्रभु भक्त का दो मुट्ठी तान्दुल पाया।
दोय लोक का द्रव्य खजाना मनोभाव से बकसाया।।

आज्ञा अब भई हमे हरी की पदा करूँ योग माया।
कारीगर मै सिल्प विद्या का पुरी सुदामा चट आया ॥
झड़—यहाँ देखो छान पुरानी, सूतो घर भीतर विप्राती।
मिलाप—अद्भुत कर से उठा झूँपडा सुन्दर महल बनाऊँ हूं ॥ कंचन० ॥ १ ॥
चारूँ मेर बडा परकोटा रच्या नौलखा धाम विशाल।
रत्न जडित कंचन का खम्भा चित्र विचित्र चित्र दीवाल ॥
ऊंचा गोखा जाली झरोखा चौखा बना दिया रग डाल।
काच महल हवाका बगला जगला चौबारू मे घाल ॥
झड—खजाना द्रव्य सहित सब सर्जा।
बिठाया चाकर जहाँ जैसा दर्जा ॥
मिलाप—दुपट किवाड काठ सुवर्ण का वन सुतार लगाऊँ हूं ॥ कचन० ॥ २ ॥
प्रभु आज्ञा अनुसार काज सब विप्र सुदामा का कीना।
पीछा आय द्वारका माँही हाल कृष्ण को कह दीना ॥
लेकर भक्ति इनाम श्याम या ब्रह्म लोक का पथ लीना।
नन्दलाल गुरु की कृपा से भेद कविता का चीन्हा ॥
झड –गुरु गुलावचन्द खिलारी गाने का सिखाया ढग तान गतसारी।
मिलाप—दरजी नाथूराम कृष्ण जस गुरू कृपा से गाऊं हूं ॥ कचन० ॥

सुदामा कृष्ण से

छप्पय

ते बिरला ससार बेन मुख मीठा भाखत।
ते बिरला ससार प्रीत निरधन सु राखत ॥
ते बिरला संसार जगत में लेत भलाई।
ते बिरला ससार दीन कू देत बडाई ॥
खूब खातरी थे करी कृपा भाव रखाइये।
सुदामा कर जोर कहे अब सीख प्रभु दिलाइये ॥

कृष्ण सुदामा से

राग ठुमरी

सीख मोसे दिवी नहीं जाय, जाय मेरे प्यारे सीख मोसे दिवी नहीं जाय ॥ टेर ॥
बहुत दिनों से मित्र मिले हो बिछडन सही नहीं जाय, जाय मेरे प्यारे ॥ १ ॥
मित्र सीख की मुख से बाणी हम से कही न जाय जाय मेरे प्यारे ॥ २ ॥
सयोग अमृत तज वियोग विष दृग मुख पियो न जाय, जाय मेरे प्यारे ॥ ३ ॥
सीख माँगता देख मित्र तोय मेरे दृगन जल छाय ॥ ४ ॥
नाथू के स्वामी मित्र मिलण—सुख दूणो प्रेम बढाय ॥ ५ ॥

सुदामा अपने आप से

सेर

बड़े जन सन्मान दें वो चिन्तामणी समान है।
धन पाय के खुश होय खल सो उसे ना ब्रह्म ज्ञान है॥
कोई कहे यूँ लोग मूरख द्रव्य में भगवान है।
बिरला गुणी जन कहत यूँ धन से बड़ा सन्मान है॥

लावणी रङ्गत लङ्गडी

दिया कृष्ण सन्मान मेरे कूँ लाखों का धन पाया जी।
क्या करूँ मै धन का मेरे सन्मान ही धन मन भायाजी॥ टेर॥
सीख माँग कर कृष्ण चन्द्र से मै ब्राह्मण चल धायाजी॥
मोय देख जावता कृष्ण का हिया नेह भर आयाजी॥
आप निरंजन मोह सब भजन जिनके मोह अति छायाजी।
नहीं जानी जावे कृष्ण की बड़ी विलक्षण मायाजी॥

सेर

ब्राह्मणी धन हेत भेजा धन्न तो प्रभु नां दिया।
मै भी धन माँगा नहीं सन्मान मेरा बहु किया।
माँगता तो देवता पण जाणता लोभी जिया।
वहि मेरे को लाख धनसों निर्लोभी हरी लख लिया।
बाल सनेही जान हमारा बहुत ही मान बढायाजी।
क्या करूँ में धन का० ॥ १ ॥
ब्राह्मणी को समझा देऊँगा धन में ममता मती रखो।
झूठी धन माया ध्यान कर ग्यान से आतम रूप लखो॥
काया काचो मठो रटो हरि नाम लिख्योना पटो पको।
यम दुख देवेगो जभी तो चले नहीं संग एक टको॥

सेर

देखियो दस कध के कितनो विभो माया तणो।
कनक कोही ग्राम धाम कुटम भी फैल्यो घणो।
अन्त मे ना दियो मुख में रती भर कचन कणो।
धरी रही सम्पदा सभी सुजस भी कछु ना बण्यो।
(मिलाप) धन धन करते सब जन फिरते वृथा जन्म गँवायाजी॥
क्या करूँ मै धन का० ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण की महिमा गाता मै मारग चल धायाजी ॥
सिघ्रताई से चाल कर पुरी सुदामा आयाजी ॥
वहां देखी नां टपरी तिरिया दिल में फिकर सतायाजी ।
वहां खूब ही सुन्दर बना एक मिन्दर देख डरायाजी ॥

शेर

सोच मन मे यूँ करूँ हे नाथ तुमने क्या किया ।
एक दुख तो था अगाड़ी दूसरा फेरूँ दिया ।
कहाँ हमारी झोपड़ी कहाँ गई सुशीला प्रिया ।
पग थकावट मिट गई पण इण फिकर व्याकुल हिया ।
(मिलाप) क्या मै कोई डगर भूल कर और नगर मे आयाजी ॥
क्या करू मे धन का० ॥ ३ ॥
पण्डित वर गणराज गुरु महाराज विवेकी ब्रह्मज्ञानी ॥
विद्या वरदानी श्रीनन्दलाल विप्र निरभिमानी ॥
दास जान करी महर जभी यह छन्द रीत मैने जानी ॥
गुलाबचन्दजी सिखाया गाने का मग सेहलानी ॥

शेर

मलियागिरि पारस गुरु अली नृप भगवानजी ।
याको कृपा भाव फल यह करे आप समानजी ।
गुरु की भक्ति किये से होय पूरण ज्ञान जी ।
गुरू से वेमुख हो सठ पावे नरक में स्थानजी ।
(मिलाप) नाथू राम कहे गुरू कृपा से जस प्रभु का कथ गायाजी ॥
क्या करू मे धन का० ॥ ४ ॥

सुदामा

कहाँ गया छपरा वेह, हे मेरे राम ॥ टेर ॥
कहँ छपरा कहं विप्रानी यह तो सुन्दर गेह ॥ १ ॥
ऊँची अटा पर बठी है सुन्दर क्यों हमें झाला देह ॥ २ ॥
यह तो दीसे राजा की रानी हम को लागत भै ॥ ३ ॥
क्या यह हमारी हँसी करे है लख कर दुर्बल देह ॥ ४ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे कैसे मिटे सन्देह ॥ ५ ॥

छप्पय

द्वार पाल से—सुन हो पोरेदार पोलिया बात हमारी ।।
यह किसका है धाम बन रहा अति मन हारी।
रत्न जड़ित है खम्भ अनोखे जाली झरोखा ।।
चित्र विचित्र चित्र-चितारे चित्रक चोखा ।।
क्या यहां पर कोई सुरपति यज्ञ पतिजी आइया ।।
भेद सब हमसे कहो यह अंदेशा छाइया ।।

द्वारपाल

छप्पय

सुनो विप्र महाराजा हाल मैं कहूं समझा के ।।
श्रीकृष्ण भगवान सदा पालक भगतों के ।।
विप्र सुदामा जी को लख हरी परम पियारा ।।
जिन हित विश्वकर्माजी रचिया है सुख सारा ।।
कंचन भवन विशाल गृह दासी दास तमामजी।
उसी महात्मा के लिये किया यह आरामजी ।।

कवित्त

झालो दियो लख्यो नांय, चालो जी महलां मांय, सम्पदा सम्हालो सारी आपकी है माया जी।
आप गए द्वारका मे सभी काम हुआ ठीकी पीछे से विश्वकर्मा ठाठ यह लगाया जी।
ठौर ठौर अष्ट सिद्धि नव निद्धि धरि लाया, दास दासी बास सुख कैलाश सा बनाया जी।
नाथू कहे श्याम सेवर, आप ही सीर का सेवर, कृपा कर कृष्ण देवर जेवर बगसाया जी।

सुदामा का जवाब

जवर बगसाया क्यों मन्दिर यह बनाया क्यों छप्पर को उड़ाया क्यों देकर धन माया जी।
माया है ठगणी जगत ठग्या कोई भगत, कई और ठगत जाल, मकड़ी ज्यू छाया जी।
ऐसी ये ठगणी रूप, दीनी क्यू यादव भूप, माया कई जीवों को जगत में भुलाया जी।
माया मे फँस्यो जीव, भूल गयो आतम पीव, नाथू कहे सुदामा को विभव ना सुहाया जी।

जवाब विप्रानी का

पिया म्हेलां चालोजी, सारो धन माल सम्हालो आपको ।। टेर ।।
आओ पियाजी म्हेलां अन्दर निरखो तव धन माया।
बाहर खड़ा क्यूं रह्या पियाजी ये लख भवन पराया ।।

तुम पीछे से विश्वकर्माजी ये सुख ठाठ लगाया।
अष्ट सिद्धि और नव निद्धि जी हाजर खड़ा तमाम ॥
मिल्यो स्वर्ग सो सुख आपकू दासी दास मुकाम।
श्याम थारी सेवा ताँईजी,
तन का सोच करो दूर हरक भरो मन के माँहीजी ॥
भोगो सब सुख सम्पदा जो दीनी यादव नाथ।
खोगया दुःख हो गया चित चाया ऐस करो दिन रात ॥
खुल्यो करमां को तालो जी ॥ सारो धन माल० ॥

जबाब सुदामा का

म्हारे मन नहीं भावेजी माया है ठगनी गायो वेद मे ॥ टेर ॥
या माया जग ठगनी प्यारी आदि जुगादि शक्ति।
मुक्ति तो है दुर्लभ जीव को विषयों में आसक्ति ॥
चित ममता कबहुन रुक सकती करवादे नही भक्ति।
काम क्रोध अरु लोभ की धन ते वृद्धि होय ॥
तुच्छ यह सुख दिखाया जी को लेवे जाल में पोय।
होय आधीन उणारे जी,
माया हेतु यह जीव पाप कई कर डारे जी ॥
अन्त समय के मांयने जी माया चले न साथ।
ऐसी आदि जग ठगनी माया क्यों दीनी यदुनाथ ॥
यही मोय सोच सतावे जी ॥ माया है ठगनी० ॥

जबाब बिप्रानी का

सोच सतावे क्यों पिव थांने धन से होय सब राजी।
धन के हेत करे केंई हिकमत क्या पण्डित क्या काजी ॥
धन से धन धन बाजे जग मे बनिक कहावे सा जी।
फाटा वस्त्र खोल के जी लेवो नवीना धार ॥
छप्पन भोग छतीसू व्यजन आरोगो भरतार।
त्यार है थांरे तांईजी, दीना सुख करतार आप भोगो क्यो नाहीं जी ॥
धन की तृष्णा थी मेरे पूरण करी घन श्याम।
जोग भोग पीव दोनों त्याजो जपो हरी का नाम ॥
पिया महल पधारो ॥

सुदामा का जवाब

नेह राम पद जब लगे सावत माया जाल नहीं होय।
इन्द्री पोषण मुक्ति साधन बात बने नही दोय ।।
सूरता जी के एक है जी भावे जहाँ ठहराय।
यातो हरी की भक्ति करो जी चाहे विभव कमाय ।।
कहे यूं सायर स्याणाजी,
ध्रूजी तज कर राज गया बन अचल पिछाना जी ।।
माया ममता जो तजि हुआ ज्ञान वैराग।
है जिनका मन भगवत माहीं हरदम रहा है लाग,
माया सब ज्ञान भुलावे ।। माया है ठगनी० ।।

बिप्रानी का जवाब

ज्ञान भूलावे जिनको माया तिनको हो आसक्ति।
जो माया के वश में होवे जिनको माया ठगती ।।
राजा जनक के मौज थी वैभव वैसुमार।
शाम दाम दण्ड भेद गुणा कर कियो राज को कार ।।
बड़ा वे ज्ञानी ध्यानीजी,
जोगेश्वर सुखदेव जोग गत उन पेई जानी जी।
ज्ञानी जगत में यूं रहे ज्यों जल माहीं फूल ।।
जोग भोग दोनों ही साजे कदेन लावे भूल।
जनक ज्यों थे ही मत पालो ।। पिया महल पधारो ।।

सुदामा का जवाब

पाल्यो धर्म जनक वेदेही जाति धर्म पिछान्यो।
जन्म जन्म को थो वो तपस्वी सास्त्र मांही बखान्यो।
लाभ हानि सुख दुःख होने को हर्ष सोच नहीं आन्यो ।।
ज्ञानी राजा जनक सा दुर्लभ होना नार।
जोग भोग दोनू ही साधन है खांडे की धार ।।
सभी का दिल हो नहीं वैसाजी,
अब कलि में मन चंचल होवे देखत ही पैसाजी।
धनवन्त के मन ना जचे जी ज्ञान ध्यान वैराग ।।
कोई सुख की करे अभिलाषा विषयों में मन लाग।
पाप यही विधी कमावे ।। माया है ठगनी० ।।

ब्राह्मणी

पाप कमावे धन से मिजाजी डूबन को भव कूप।
गणिकापना करे कुनारी या पतिव्रत फल रूप।।
ज्यूँ नर हिंस्या करने धारे सस्त्र धाडवी—भूप।
विद्या धन सुन्दरता जी, है प्रभुता का मूल।।
ज्ञानी कूं दे महल स्वर्ग हित मूर्ख कूं भव सूल।
भूल वश कुकर्म करता जी।।
कर कर पर उपकार तिन्हुं से यम दुःख टरता जी।।

सुदामा

महालक्ष्मी अरु विष्णु में कछु नहीं है भेद।
तज दुर्भाव तज माया ब्रह्म मिटे त्रिविध खेद।।
साय करे गोकुल वालो सायक मेरे भक्त वत्सल भगवान।
करूं रात दिन याद उसी कू धरू प्रेम सू ध्यान।।
कृपा कर मनसा भरे सारी करूं योग ब्रत दान।
या माया भगवान की जी उनके ही निमित लगाय।।
अपनी लख मति मोद भरो जी हरी में प्रीत बढ़ाय,
होय ज्यूं चित का चाया जी।।
गुण सागर नन्दलाल महर कर ज्ञान बताया जी।
पुर डीडवाना मे बसे दरजी नाथूराम।।
उगणी से अड़सठ के माही कीरति कर्या तमाम।
सुणे सीखे सुख पावे।। माया जग ठगनी गावे वेद में।।



॥ श्री मुरली मनोहर भगवान ग्राम रताऊ की लावणी ॥

रङ्गत लगडी

सेर

शुभ सुमरु धरापति उम्मेद सिंह जी नाम है।
जोधपुर जिल्ले रताऊ खालसे का ग्राम है॥
जा मे श्री मुरली मनोहर धारि का एक धाम है।
अर्चावतारि विराजते प्रभु दर्श सुन्दर श्याम है॥
मुरधर मांहि ग्राम रताऊ धाम ललित मुरलीधरका।
नित हित चित से दर्श करे मिले वास अमरा पुरका॥ टेर० ॥
संमत् अठारे सौ पदरा की साल माग सुद पखमांहि।
दशमे रवि सुत वार कूं दोलतराम भक्त ताहि॥
मालोद्या दाधीच वशमणी मन्दिर बना दीना वांहि।
राधाकृष्ण की पूजा ये करी प्रतिष्ठा शुभ जाहि॥

सेर

उस जमाने छुड़िला में एक आये महात्मा।
नाम मानदास जी को स्वप्न दे परमात्मा॥
सीताराम की मूरती हमारी अध्यात्मा।
धाम रताऊ में बिठावो तुम मिलो शुद्धात्मा॥
तीजे दिन हो स्वर्गवास लख सत कह्या करें रघुवरका॥
नित हित चित्त से० ॥ १ ॥
मध्य गांव में श्याम धाम का दरवाजा पश्चिमकानी।
पूर्व सिंहासन बिराज बंगला मे संग प्रियरानी॥
मुरलीधर के उतरादी भ्राजे सीता सारंग पानी।
दास भाव से बिराजे श्री बजरंग दरवानी॥

सेर

मुरलीधर के दिखन बाजू गिरजा सहित पशुपाल है।
अष्टभुजा देवी बिराजे सिंह गल रुंड माल है।

शुभ निशुभ सहारनि निजभक्त की प्रतिपाल है ॥
कासी का कुतवाल पास मे गजानन्द सुत शंकर का ॥
नित हित चित से० ॥ २ ॥
पट आभूषण सब प्रतिमा के सज रहि है जगमग जोती ।
सिर मुकट रजत का मणिमय कुण्डल गलमाला मोती ॥
मोर मुकट मुरलीधर के सिर राधे के जरकस सोहती ।
नक बेसर बिदी भूमरा करन गोखरू प्रभा मोती ॥

सेर

भगवान छवि सनमुख भरव दासकपि पश्चिम खरे ।
उत्तर शिवालय नंदिकेश्वर तुलछी द्रुमतरू दक्षिण हरे ।
दोलत वशी विप्र बारी ओसरे पूजा करें ।
धूप दीप और आरती नैवेद्य ठाकुर के धरें ।
नोपत झालर संख निरजन समै बचे सत शास्तर का ।
नित हित चित से० ॥ ३ ॥
कर प्रभु सेवा ले प्रसाद चरणोदक की महिमा भारी ।
लख खंवट प्रेमी भक्त गत पाई जान गगा वारी ॥
कथा भागवत पुराण बाँचते हरी चरित्र आनन्दकारी ।
डीडवाना के काकडा मोजीराम कुल अधिकारी ॥

सेर

समत् १९९० की साल मगसर मासजी ।
कृष्ण पक्ष नौमी शनिश्चर वार लख इतिहासजी ॥
अवदीच गुरु नंदलालजी हिरदे किया परकासजी ।
पद रचे नाथूराम दरजी डीडवाना वासजी ॥
मुरलीधर का भजन गान करें मिटे फन्द भव सागर का ॥
नित हित चित से० ॥ ४ ॥



अथ सज्जन कसाई भक्त प्रभा

लावणी रगत लगडी

सेर—पूजो पांचू ईस विष्णु सूरज शक्ति गण पति।
ब्रह्म रूप धाता विघ्न हरदे कृपा कर दे शुद्ध मति।
इन पांचू में लखे भेद तो कुकरम करा करे दुर्गति।
नन्दलाल भज नाथू कथे, दया करम भगती बीरति।
सज्जन कसाई भक्त हरी का हुआ जगत मांही सरनाम।
पूर्व पाप फल भोग भक्ति से पाए जगदीश्वर धाम ॥ टेर ॥
पूर्व जन्म काशी में ब्राह्मण भये विद्वान सदाचारी।
उसी पुरी में गऊ एक भगि आई डरको मारी।
कूके कसाई पीछे से कोई पकड़ो धेनु जाय म्हारी।
खल पुकार सुण के विप्र निज भुजा गऊ के गल डारी।

सेर—आके कसाई पकड़ गऊ को ले गया निज द्वारजी।
नगी तलवार काढ़ गऊ की दिवी गरदन मारजी।
गऊ हत्या किया दावा ब्रह्म के दरबारजी।
ब्रह्म द्विज को कसायण की कूप में दिये डारजी।

चौपाई—सोई भये वो सदन कसाई, विप्र करम से भक्ति पाई।
निजकर पशु बध है अन्याई, मोल मांस ले बेचे सदाई।
मिलाप—पुण्य लेन अघ सजा देन कर बाट बन गये सालगराम ॥ १ ॥

अनजाने सालग से मिट्टी तोलत गोविन्द गुण गाता।
कुटम पालने नीच कर करम हरीजन पछताता।
प्रतिमा पूजक सन्त एक बटखरा देख किए दृग राता।
चतुराई से ले गया सन्त गंढि का सुत ग्याता ॥

सेर—स्नान पंचामृत करा चन्दन चढा पूजन किया।
अकाल मृत्यु हरण मन्त्र बोल चरणोदक लिया ॥
शयन करते ही स्वप्न मे हरि साधु को खिज कह दिया।
सज्जन घर पहुंचाय हमको क्यों घमडी तै लिया ॥

चौपाई—नांय सुहावे तेरा टमका टीका। सदन के हस्त कमल लागे नीका॥
नेह बिन तेरा पंचामृत फीका। सदन प्रेमामृत मखन गोपी का॥
मिलाप—नवधा भक्ति से परम प्रिये मोय संत प्रेमा भक्ति निस्काम॥ २॥

आज्ञा हरिकी मान आचारी दौड़ गये सदना द्वारे।
समलाय बटखरा कृष्ण किरपा के हाल कहे सारे।
पड़ी तोल की तोल, सदन दृग खोल जन्म निज धिक्कारे।
जग पूज्य रूप से तोल कर मॉस निरादर कर डारे।

सेर—लानत पापी पेट को फिट कुटम्ब घर निज नार है।
हाय आत्म राम चिन्ता मणि दीनी वार है।
खम हो प्रभु भृगुलता धारी तेरी दया अपार है।
मम भूल चूक अपार है तुमरा बड़ा उपकार है।

चौपाई—खल पुतना बिष कुछ देतॉई, भेजी स्वग जाण निज माई।
निश्चय पतित पावन हो गुसॉई, तारण कोट भॅवर की नाई॥
मिलाप—ऐसे हरि लख प्रम विकल भये टूटे गृहस्थ के बन्ध तमाम॥ ३॥

चले सदन पुरुषोत्तम क्षेत्र को, एक नगर मॉय आके रीना।
घर गृहस्थ के मॉग अन्न खाय रैन बासा लीना।
आधी रात उस घर की नारी आय सदन का मुखचीना।
इश्क दिवानी होय कही ऐस करो संग रंग भीना।

सेर—भजन बाधक इन्द्रादिक और पूरब ले पाप है।
जब अतिकामी कामिनी का हो सु पति को मिलाप है।
त्यागे से दूजा विघ्न हो भोगे से दुर्गति ताप है।
विघ्न अग्नि सहन उत्तम होय कञ्चन साफ है।

चौपाई—मदन मोहन बसे सदन मन मॉहीं, एक म्यान दोय खॉडा धसे नॉही।
विनवे सदन नारी के पॉही, हे अम्ब अहित क्यो सुत के तॉही॥
मिलाप—उल्टी समझ गई नार पति से डरत पुरत नहीं दिल भर काम॥ ४॥

जा घर अपने सूता पति को मार नार पीछी आई।
सब हाल सुनाया सज्जन अब निडर करो सग ऐसाई।
थर थर कांपे सदन कहि धिक करि व्यभिचारण दुष्टाई।
पर पुरुष भोगने पूज्य पति खोय नर्क खोदीखाई।

सेर—काम वश नर नार केई करत खोटा कर्म है।
या तो दावा चूकने या रिणि बनता भर्म है।
न ग्यान अमान गिणे सुन्दरी, हुसरहो बेशर्म है।
आखिर निराशा हो गई घर भई क्रोधा गर्म है।

चौपाई—हाय पति २ कर कर रोई, आय पड़ोसी पूछे सोही।
कहा हुते पिव सदना द्रोही, मुझ सति की पत चाता वो खोई ॥
मिलाप—त्रिया चरित्र सुण जोर से सदन रटन लगे राम ही राम ॥ ५ ॥

पुरजन कह यह बड़ा धूर्त है बुगला भक्त बने परगट में।
दी खबर राज में सदन को पकड़ पठाये कोरट में।
चन्चल विधवा बयान दीना निर्लज्ज लाम्बा घुंघट में।
अन्तरजामी प्रेरणा करी ये हाकिम के घट में।

सेर—सच्ची गवा साबूत बिन नां हुकम सूली का दिया।
सुबा से भुज कटा छोड़े न्याय नीती युत किया।
सहन पीड़त भजत श्री जगदीश पुरीका पथ लिया।
पुजारियों को स्वप्न में कहि भक्त-गत कमलापिया।

चौपाई—श्याम रजासुण सेवक ध्याये, सदन पालखी बिठला लाये।
आय भगत दर शीश निवाये, किरपा कर हरि कर बगसाये ॥
मिलाप—संका करे सदन मन मेरे हस्त कटे किस कर्म से श्याम ॥ ६ ॥

सदन भक्त मम जान रातको प्रकट भये घनश्याम छटा।
तूं पूर्व ब्राह्मण गउ को पकड़ हस्त से पन्थ डटा।
आय कसाई पकड़ मारदी सोई भया यह अटा सटा।
वो पति कसाई नार गऊ मारे निमित्त कर तेरा कटा।

सेर—पाप की नहीं माफ होती ईश्वरी सरकार मे।
मूर्ख विषयों वश फँसे इस ऋणाबन्ध संसार में ॥
पातक मिटा अब शुद्ध हुआ चित्त लगा तत्व विचार में।
अन्त मे मिल जायगा ज्योति मयी दीदार में ॥

चौपाई—दे वर हरि भए अन्तर्ध्याना, सदन भजन कर भए कल्याना।
नन्दलाल गुर का घर ध्याना, सदन चरित्र कथे भक्ति रसाना ॥
मिलाप—दरजी नाथुराम कृष्ण पद शरण रहे डीडवाणे ग्राम ॥ पूर्व० ॥ ७ ॥



"ख्याल भक्त प्रह्लाद का"

की

समीक्षा

यह ख्याल भी "ख्याल सुदामा भक्त का" की भाँति एक गेय नाटिका है जो कवि ने जनता को स्वस्थ एव शिक्षापूर्ण मनोरजन देने हेतु रचा था। दोनो रचनाएँ दो वर्षो के अन्तर से लिखी गई थी। "ख्याल सुदामा भक्त का" का रचना काल संवत् १९६८ विक्रमी था जब कि "ख्याल भक्त प्रह्लाद का" सवत् १९७० विक्रमी मे रचा गया था। यह रचना अप्रकाशित इसीलिए रही कि कविवर को कोई दानवीर प्रकाशक न मिला। सरस्वती के अनन्य उपासक के पास लक्ष्मी का क्या काम था। अभाव की जिन्दगी जीने वाले कविवर नाथूराम जी की करीब-करीब सारी रचनाएँ दानी मानी व्यक्तियो द्वारा परोपकारार्थ प्रकाशित की गई थी, अतः इस अप्रकाशित ख्याल को छपवाने के लिए कविवर कोई प्रकाशक जुटा नही सके।

इस ग्रन्थ का कथानक इतना ही है .—हिरण्यकश्यप एव हिरण्याक्ष की उत्पत्ति; प्रह्लाद का जन्म; कुम्हारी द्वारा प्रह्लाद को ज्ञान, प्रह्लाद एव उसकी माता का वार्तालाप, गुरु शुक्राचार्य द्वारा पाठशाला मे प्रह्लाद को पढाना, गुरु एव शिष्य का वार्तालाप, हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद को विविध यातनाएँ, होलिका का भस्म होना, प्रह्लाद का खम्भ मे भगवान की सत्ता बतलाना, नृसिह भगवान की उत्पत्ति, हिरण्यकश्यप का मारा जाना, अन्त मे श्री नृसिह भगवान की आरती। इन सारे वार्तालापो मे कविवर ने कवित्त, लावणी, राग जगला, राग माँड, लावणी रगत जानकी, चौपाई, गजल रेख्ता, राग मालकोष (सोहनी) गजल कव्वाली लावणी रगत लँगडी, ठुमरी (राग गर्भा), चौबोला, एव भजन का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है और एक आदर्श साहित्यिक ख्याल का उद्‌भव किया है जो नाटक के सारे अगो का समावेश करता है और रचना की परिमार्जित शैली का बोध कराता है।

ख्याल के प्रारम्भ मे ही मगलाचरण के उपरान्त कविवर बडे नाटकीय ढग से राजा हिरण्यकश्यप के उद्‌घोषक का प्रवेश कराता है—"चुप रहो जन सारा, आया हलकारा, वचन सुणावताँ।।" उद्‌घोषक राजा हिरण्यकश्यप के आदेश की घोषणा करता है :—

राजद्रोही हरिभक्त महात्मा देख कैद मे डालो।
देखें सहायता कैसे करें हरि गहरा फोड़ा घालो।।

कविवर ने ग्रन्थारम्भ में श्रद्धापूर्वक अपने गुरु नन्दलाल (अवदीच्य ब्राह्मण) का स्मरण किया है तथा सगीत-गुरु गुलाबचन्द दर्जी का भी स्थान-स्थान पर आभार माना

है जिन्होने उनको भजनो तथा लावणियो की शुद्ध लय बताई, जिनके आधार पर यह ख्याल रचा गया :—

नन्दलाल अवदीच्य गुरु को हित से जोड़ूँ हाथ।
गुलाबचन्द गुरु राह बताई नाथूराम यश गात ॥

कविवर ने इस ख्याल मे चार पाँच जगह अपने समकालीन सगीतज्ञ गुलाबचन्द दर्जी को याद किया है जिनसे उन्होने विविध राग रागिनियो की सही धुने सीखी। इसका और भी प्रमाण देखिए .—

गुरु नन्दलाल ज्ञानधन पाया। ज्ञान मान घट में दरसाया ॥
गान तान का गुण सिखलाया। सो उस्ताद गुलाब कहाया ॥

इसके पश्चात् प्रह्लाद तथा कुम्हारी का वार्तालाप कविवर की सिद्धहस्त शैली मे लिखा है। कुम्हारी के न्यावडे मे से बिल्ली के बच्चे सकुशल आए देखकर प्रह्लाद ने भगवान की सत्ता मानी और इस ज्ञान के लिए कुम्हारी को अपना प्रथम गुरु माना। कविवर ने इसी प्रसग मे एक सार्थक पद लिखा है :—

लुल लुल लागूँ पाँय, कुम्हारी म्हारी सत्गुरु हे ॥ टेर ॥
सूता छा मोह नींद में री, जग सपने मे लुभाय।
जोर से हेला देय के, हमको दिया जगाय ॥ १ ॥
परतक परच्या राम का, नेणां दिया दिखाय।
धर्म पन्थ सुझा, दिया ए, मन का भ्रम मिटाय ॥ २ ॥
महिमा कही भगवान की ए, सच्ची ज्ञान की भाय।
बात प्रभु के ध्यान की, हिरदे दिवी जमाय ॥ ३ ॥
बाल बचे मंजार के जो देख सुमति गई आय।
नाथूराम प्रह्लाद के भजन रह्यो मन भाय ॥ ४ ॥

इसके बाद प्रह्लाद पर हरि भक्ति का रग ऐसा चढा और गहरा होता गया कि माता कयाधू की भी हरिभक्ति विरोधी शिक्षा का बालक प्रह्लाद पर कोई असर नही हुआ। कई पृष्ठो मे माता पुत्र का वार्तालाप चलता है :—

माता का वचन

मुख रटता रामराम, आया सुत मेरे धाम, ऐरे नादान जाम कौन भरमायो है।
दैत्य वश अरि हरि, तासे कहा प्रीत करी विष्णु भक्त परापरी, तात कों न भायो है ॥
कुल की मर्यादा त्याग, दूजे पंथ मती लाग, याही सों लगे दाग, कहाँ से सीख आयो है।
नाथू कहे पकड़ हाथ, पुत्र को समझाय मात, मान प्रह्लाद बात, मेरो कोख जायो है ॥

प्रह्लाद का उत्तर

किसे कौन जाया मात, आप मे समाया आप, मेरा सुत मेरा बाप, ये तो भ्रम जाल है।
सकल जगत का जो तात, माय वो ही है साक्षात्, उलट पुलट जीव जात, अनादि की चाल है ॥

झूठी मोह माया तज, सच्चा एक विष्णु भज सदा ये न सुख समझ, समझ का सवाल है।
नाथू कहे प्रह्लाद बात, मै तो नहीं भ्रम्यो मात, मन बस्यो साक्षात् दीन को दयाल है॥

माता एव पुत्र के लम्बे वार्तालाप के बाद राजा एव रानी का भी वार्तालाप कई पृष्ठो मे और कई छन्दो मे वर्णित है। राजा ने गुरु की पाठशाला मे बालक प्रह्लाद को भेजा है, परन्तु गुरु परिश्रम करके हार गए और बालक का मन हरि विमुख न कर सके। बालक प्रह्लाद यही बार बार कहते है —

गुरु पट्टी मे लिख दो राम राम राम॥ टेर।
विनवे बालक सुनो गुरुजी, चरणां करूं प्रणाम॥ १॥
सब वेदो का सार यही है अन्त मे आवे काम॥ २॥
मूल छुड़ावो डाल गहावो, कार्य न सरे छदाम॥ ३॥
विद्या और लगे ना आछी राच्यो मन हरिश्याम॥ ४॥
नाथू कहे मानस तन लाहा, सुमिर्‌यां विष्णु नाम॥ ५॥

गुरु शुक्राचार्य ने राजा हिरण्यकश्यप से प्रह्लाद की शिकायत की, परन्तु राजा ने गुरु को ही अयोग्य बता दिया जो एक बालक को भी पढना न सिखा सका। वार्तालाप बडा सजीव बन पडा है, परन्तु असली ज्ञान हिरण्यकश्यप प्रह्लाद के वार्तालाप मे है जिसमे पिता पुत्र ने सबल तर्कों द्वारा अपने मतो का मण्डन किया है —

राजा :—थारे कौन सो दुख मिटानो दे मुझको बतलाय।
सात द्वीप नव खण्ड मे मेरी रही प्रभुता छाय॥
मोसे अधिक विष्णु की प्रभुता तुमको कियां लखाय॥
तुमको कियां लखाय, हो गयो बावरो।
क्या दिवी अनोखी चीज तुझको सॉवरो॥

प्रह्लाद :—चीज अनोखी सबसे चोखी नित्य मुक्त सांवराज।
उस माधव की परम कृपा से सरे मनोरथ काज॥
जगत पति की होड़ करो मत चक्रवर्ती हो आज॥
चक्रवर्ती हो आज काल मिट जायगा।
काल गति बलवान बचन नहीं पायगा॥

इसके पश्चात् राजा तथा जल्लाद की बातचीत तथा राजा और रानी का पुन कथोपकथन है जो एक लम्बी लावणी के रूप मे और दलाल के अनुरूप ही प्रश्नोत्तर है। माता कयाधू प्रह्लाद को बहुत समझा कर हार गई, परन्तु प्रह्लाद का हठ कायम है। प्रह्लाद के मुख से कविवर ने एक सुन्दर भजन कहलवाया है —

राग—रांजो भरवा दे

मत बरज मेरी माय, हरि को भजवा दे॥ टेर॥
धन्य धन्य है ध्रुव की माता, दीना ज्ञान बताय॥ हरि०॥
उसी ज्ञान से भज ध्रुव हरि को, लियो अटल पदपाय॥ हरि०॥
तू माता है बड़ी बावरी, उल्टी राम छुड़ाय॥ हरि०॥
मारणिया है कुण हरिजन को झूठा भय दिखलाय॥ हरि०॥
नाथूराम श्याम के शरणे, विष्णु करसी सहाय॥ हरि०॥

जल्लाद एव प्रह्लाद की भी वातचीत दो पृष्ठो मे वर्णित है। जल्लाद के द्वारा प्रह्लाद को भारी यातनाएँ दी गई :—

दर्जी नाथूराम भरोसे जन प्रह्लाद चढे सूली।
हरि के सुदर्शन चक्र से खल गर्दन कटी ज्यू मूली ॥
हिरण्यकश्यप ले गिरि पटके, झेले गोद, लगे नहीं धूली।
फिर डारे सिन्धु में प्रभु-प्रताप रहे जल पर झूली ॥

हिरण्यकश्यप की योजना असफल रहने के बाद वह अपनी बहन होलिका को कहता है कि प्रह्लाद को गोद मे लेकर अग्नि-स्नान करो, जैसा कि वह वरदान के अनुसार किया करती थी। कविवर ने लावणी के द्वारा कयाधू और होलिका (ननद-भोजाई) की वातचीत कहलाई है। अन्त मे भगवत्माया से होलिका स्वय जल जाती है और भक्त प्रह्लाद सुरक्षित रूप मे अग्नि से बाहर आ जाते है। हिरण्यकश्यप यह देख कर आगे की योजनाएँ बनाते है :—

जली होलिका देख के, झाल उठी मन मांय।
अग्नि से तो बच गयो, अब बचने का नांय ॥
अब बचने का नांय मारने तांय खड़ग मै धारी।
या कृपाण बलवान इन्द्र का मान मरदने वारी ॥

पिता पुत्र का बड़ा सजीव और लम्बा कथोपकथन पढने की वस्तु नही, अपितु ख्याल के माध्यम से आनन्द उठाने की वस्तु है। लावणी के द्वारा अनेक पौराणिक प्रसगो का हवाला देकर दोनो पक्ष अपनी अपनी बातो की पुष्टि करते है। प्रह्लाद कहता है कि "तो मे मो मे खड्ग खम्भ मे प्रगट्या लख भय खाई', तो हिरण्यकश्यप यही चुनौती देता है कि "लो मैं मारूँ मुष्टि खम्भ मे क्यो नही परगट आवे"।

मुष्टि लगत ही खम्भ में, शब्द भयो घनघोर।
रूप नरहरि धर हरि, प्रगटे खम्भा फोर ॥

भगवान पुरुषोत्तम मास की चतुर्दशी को प्रगट हुए। हिरण्यकश्यप ने उनको मारने के लिए अपनी गदा उठाई :—

भिड़े मल्ल ज्यूं पकड़े हरि, ज्यू मृग को मृगराज।
अधर जंघों पर धर विभु, किए कोप अति गाज ॥
किए कोप अति गाज, भाग गए आन असुर समुदाई।
तलखण्डे बिच सन्ध्या समय विधि वचन सत्य अखराई ॥
नख से चीर शरीर विरोली आँत करी चतुराई।
दर्जी नाथू कहे हिरण्यकश्यप समर वीरगति पाई ॥

अन्त मे भगवान नृसिंह की एक सुन्दर आरती दी हुई है। "जय जगदीश हरे", "जब लक्ष्मी रमणा", "जय जानकीनाथा' आदि आरतियाँ तो बहुत प्रचलित है परन्तु भगवान नृसिंह के लिए आरती एक यही देखने मे आई है। गुरु कृपा से एक अनपढ मानव की जिह्वा और हृदय मे सरस्वती विराजो तो वह मानव साधारण लोगो से ऊँचा उठा हुआ ही था, इसमे दो राय नही है। ऐसे सिद्ध कवि के द्वारा रचित यह 'ख्याल' आप सभी सहृदय पाठको का ज्ञान संवर्द्धन और स्वस्थ मनोरंजन युग-युग तक करता रहे, यही मनोकामना है।

ख्याल भक्त प्रह्लाद का

वचन हलकारा का

मगलाचरण

आदि ओऽम् निराकार, वन्दौ मै बार बार,
पांच धार के अवतार, प्रगटे अनूप है।
बुद्धि वर दे गणेश, प्रभुताई दे महेश
मुक्ति मूल श्रीरमेश, विष्णु जग भूप है।
शक्ति बढ़ावे परिवार, ब्रह्मा धर्म के प्रचार
दाता विधाता करतार, स्वयम्भू स्वरूप है।
गुरु नन्दलाल नाम, रटे दर्जी नाथूराम
भक्त वश सुखधाम, भंजन भव कूप है।।

चुप रहो जन सारा, आया हलकारा, हुकम सुणावतां ।। टेर ।।

शिव शक्ति के नन्द गजानन्द, आनन्द कन्द मनाऊँ।
आन कण्ठ पर बैठ भगवती हित से ध्यान लगाऊँ ।।
तीजा गुरुवर नन्दलाल के चरणां शीश नवाऊँ ।।
गुणी गुलाब की कृपा से प्रह्लाद का ख्याल सुनाऊँ
घट भये उजियारा ।। आया ।।

एक समय सनकादि मुनीश्वर, जाते थे हरिपास।
आड़ी दीनी बेंत जय-विजय विष्णु द्वार का दास।
दीना ऋषिवर श्राप पाप से मृत्युलोक हो बास।
दोऊँ दिति की कोख औतरे बैर भक्ति प्रकाश।
भेद-मत को परचारा ।। आया ।।

पाँच देव को न्यारा न्यारा मान ठान जुदाई।
इन दुर्भावो से दोनो की असुरमति सरसाई।
जग व्यापक विष्णु को न्यारा लख पूजा मिटवाई।
धरा हरी हरिनाक्ष ग्राह बन दीना मार हटाई।
भूमि लाये करतारा ।। आया ।।

उस दिन से हिरणाकुश राजा बैर चौगुना ठाना।
बदला लिया चाय भ्रात का देत हुकम मनमाना।

जो कोई भक्ति करे विष्णु को तिनको शत्रु जाना।
मुझको दीना हुकम भूपति तिनके मुजब बखाना॥
जो यह कर्म हमारा॥ आया॥
राजा की नीति अनुकूलहि, प्रजा सारी चालो।
धर्म सनातन त्याग, एकता—भेद सम्प्रदा पालो।
राजद्रोही हरिभक्त—महात्मा, देख कँद में डालो।
देखूँ सहायता कैसे करे हरि, गहरा फोड़ा घालो।
कवि नाथू उबारा॥ आया॥

वचन हिरण्यकश्यप का

कवित्त—सच्चिदानन्द ज्वाला, ब्रह्मरूपणि विशाला,
नाम रूप साँचे ढाला जननी जग ख्याला है।
दिक्पाला गोरा काला, भरूँ जोगनी बेताला,
बावन वीर लिये भाला, चढ़ि सिंह कराला है।
मार दुष्ट पी प्याला, भक्तों की करो पाला,
मिले गुरु नन्दलाला, हिये ज्ञान डाला है।
नगर डीडवाने वाला जपे नाथूराम माला,
देवी शिष्य हो खुशहाला, सदा बोलबाला है।

लावणी

आया मैं हिरणाकुश बलवान शहर निज पाटनगढ़ मुल्तान।
शंकर सुत गणपति को सुमिरूँ स्वामि कार्तिके भ्रात।
सुमति दान दे कुमति निवारो मैं सुमिरूँ दिन रात॥
नन्दलाल अवदीच गुरू को हित से जोड़ूँ हाथ।
गुलाबचन्द गुरू राह बताई नाथूराम यश गात॥ १॥
जगत पिता ब्रह्माजी जिनके, नाती कश्यप नाम।
जिनके शीलवन्त दो रानी, दिती अदिती बाम॥
दिति के दो दैत्य भये सुत सूरवीर बल धाम।
देव अदीती पुत्र कहाये करे स्वर्ग आराम॥ २॥
देव दैत्य के वैर जुगादो स्वर्गपुरी के काज।
कोई समय मे दैत्य जीतते सदा रहे सुर राज॥
एक समय हम हारे इन्द्र से छोड़ समर गये भाज।
जब हम जाय करी बहु तपस्या, आये विधि महाराज॥ ३॥

कृपा कर ब्रह्माजी मोकूं मनचाहा वर दीना।
रात दिवस आकाश पृथ्वी अरू द्वादश महीना॥
खगचर बनचर सुर नर निशचर यम से निर्भय कीना।
काल बलि से नहि मरूं मै ऐसा वर ले लीना॥ ४॥
कश्यप मुनि के दोय पुत्र हम सूरवीर सरनाम।
छोटा भाई हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यपु मम नाम॥
हिरण्याक्ष को मार हटाया, वराह बन घनश्याम।
उस विष्णु से वैर हमारे लूंगा कर संग्राम॥ ५॥
यक्षदेव इन्द्रादिक सारा जुध कर लीना जीत।
निर्भय राज किया पृथ्वी पर कर मनमानी रीत॥
मेरे नाम की फिरे दुहाई नही हरि से प्रीत।
जो कोई नाम लेवे विष्णु का उनकी करूं फजीत॥ ६॥
रूपवती रानी बड़ भागण जाया सुत प्रह्लाद।
आज्ञाकारी पुत्र कहीजे पाले कुल मर्जाद॥
हुकम हमारा माने सारा जिनका मन आह्लाद।
विष्णु भक्त को ऐसा दण्ड दूं रहे बहुत दिन याद॥ ७॥

वचन प्रह्लाद का

कवित्त—गौरी के नन्दन को करता हूं वदन आज,
छन्दन को बतावो भेव देव तोहि ध्याता हूं।
शकर मनभानी रानी देवो शुद्ध बुद्ध बानी,
नारदादि बखानी शारदा मनाता हूं॥
गुरु नन्दलाल ज्ञानी करी मोपे महरबानी,
कविता की गति जानी शीश मै नवाता हूं।
दर्जी नाथूराम याद, करे सभ मे उस्ताद,
भक्त भये थे प्रह्लाद, जाका गुण गाता हूं॥

टेर—राग जगला

राज कवर प्रह्लाद सैर करने आये॥ टेर॥
रटूं आदि जुगादि शक्ति जाकी जोत अखण्डित जगती।
ताको हित से कर नर भक्ति, सो पाये पदारथ मुक्ति।
जाकी महिमा अपरम करे आबाद निगमागम जस गाय॥ १॥
हिरण्यकश्यपु तात हमारे, जाकी फिरे दुहाई सारे।
चाहे जिन्हे मारे तारे, विष्णु से बैर विचारे।
नही कर सकते कोई हरि को याद ऐसे हुकुम सुनाये॥ २॥

वे हमको आज्ञा दीनी मै शीघ्र शीश धर लीनी।
कई दैत्य ये करनी कीनी, अब सोई राय मैं चिन्हीं।
निज कुल की पालु मर्याद, निगाह करने को ध्याये।। ३ ।।
कहे नायू फिर सव ग्रामा, चल पहुंचे कुमारी धामा।
हम देखे नजर भर सामा, वो रट रही रामा रामा।
ये हरि भक्तां मिल गई आजाद, नैना रोस अति छाये।। ४ ।।

वचन प्रह्लाद का कुमारी से

अरी कुम्हारी आज क्यों तू रट रही है राम री।
क्या हिरण्यकश्यपु का शठ भूल गई है नाम री।।
उनका कुंवर मैं आज आया रजा से तव धामरी।
सब हाल झटपट दे बता तू देर का नहीं काम री।।

जबाव कुमारी का प्रह्लाद से

शेर—काम मुश्किल हो गया जभी रटूं मैं रामजी।
करेगा आसान मुश्किल पलक में घनश्याम जी।।
महाराज हिरण्यकश्यपु का मै नहीं भूली नामजी।
आज बड़ी कृपा करी सो आप आये धाम जी।।

प्रह्लाद का कुमारी से
रागमांड

कुमारी भई बावरी वाम आज तूं क्यों रटती है राम।
किस विध राम रटे समझा तू के कुमति बुद्धि छाई।।
सूरवीर हिरणाकुश राजा, जिनकी फिरे दुहाई।
तीन लोक चौदह भवनो में थिर जिनकी बादशाही।।
सुर इन्द्रादिक हार गये सब जिनसे ठान लड़ाई।।

कुमारी प्रह्लाद से

कॅवर मैं रटूं इसी विधि राम बचासी जीव हत्या से श्याम।
सुन्दर श्याम विश्व के पालक है सब शक्ति वान।
हिरनाकश्यपु राजा कॅवरां तप कर भये बलवान।
राम जिसी सामर्थ्य न उनकी सच सच कहूं बयान।।

दीन दयालु विष्णु कर दे मुश्किल से आसान ॥ १ ॥

प्रह्लाद—मुश्किल को आसान करणिया हिरनाकश्यप राव।
उसे भूल क्यो रटे हरि को जाने नहीं स्वभाव।
इन्द्रादिक सब देव जिनाको नहीं सह सकते ताव।
जाके रिपु का नाम रटे तू क्यो करती अन्याय ॥ २ ॥

कुमारी—है अन्याय न्याय का कर्त्ता श्री विष्णु भगवान।
हिरण्यकश्यपु करो चाहे सो तजूं न हरि को ध्यान ॥
मेरो दु:ख काटणिया जग में नही और बलवान।
लाग्यो फिकर अपार जिगर में मेरे कृपा निधान ॥ ३ ॥

प्रह्लाद—ऐसो फिकर हुयो के तेरे मुझको सांच बताय।
के थारे घर मै कुमारी गयो दरिद्र छाय।
कै थारे शत्रु भयो भारी निशिदिन रयो सताय।
हमको दुःख जतादे सारा छिन मे देऊं मिटाय ॥ ४ ॥

कुमारी—थाँसु मिट सकता नही दुखड़ा सांच कहूं समाचार।
इसी न्याव के मांय कंवरजी ब्याई एक मंजार ॥
सोही भूल से अन्दर रह गई सिलगा दई अगार।
थांकी शक्ति ऐसी होय तो लेवो बच्चा उबार ॥ ५ ॥

प्रह्लाद—उबरे नही अनल जलती में मत कर झूठ तूफान।
अग्नि का तो है स्वभाव ही जारे सब समान ॥
ऋषभदेव परम पद पावन बदन जलायो जान।
मंञ्जारी सुत जीवित पाये जब सच्चा भगवान ॥ ६ ॥

कुमारी—सांचा समरथ जग प्रतिपालक व्यापक सकल जहान।
ऋषभदेव परम पद पावन बदन जलायो जान।
थे कँवरां परच्यो देखोज्यो परस्यूं पाछा आन।
सुत मजारी जीवित पावो तो लीजो सच मान ॥ ७ ॥

प्रह्लाव-मानूंगा सच परतख देख्यां परस्यूं आकर नार।
मैं आऊं जब नाव खोलजे शीतल करके अगार ॥
जीवित मजारी सुत नहीं पाया तेरी करू खुवार।
नाथू कहे धमकाय कंवरजी पहुंचे राज दरबार ॥ ८ ॥

वचन कुमारी का—अकेली विनती करती है

लावणी—रगत जान की

सेर—हे परमेश्वर आज मुझसे भई भारी भूल है।
भूल के परताप पश्चाताप की उर शूल है ॥
भूल सुधारन सर्व शक्तिमान जीवन मूल है।
तव दया पावन पुंज मैं खिले अबुज फूल है ॥

झड़—इस न्याव कच्चे बर्तन में बिल्ली ब्याई।
मो रही न मुझको याद आग सिलगाई॥
महाराज भूल या मेरी सुधारो जी॥
अर्ज हमारी सुण मजारी बाल उबारो जी॥ टेर॥

एक ब्रह्म मृत्तिका रूप सकल घट घट में।
जग दर्श रहा है भेद केवल बनगट में।
महाराज भरम को भरम भयो भारी।
राव रंक नर नार नपुसक छवि न्यारी न्यारी॥
है कल्पित मिथ्या सपना वत् परगट में।
दृढ़ भाव से शत दर्शाय फसे नटखट में।
महाराज विषय सुख लख इन्द्री हारी।
काम क्रोध मद लोभ मोहादि ठग करते ख्वारी॥

सेर—जीव अल्पज्ञताई से भूल जावे न्याय है।
भूल से ही भूल आपो बने देह जड़ आप है।
जड़ बुद्धि से लगे स्वारथ करे मूरख पाप है।
पाप को डर भयो मुझको जभी दिल सताप है॥

चौपाई—ताप भय हरिहर निवारा। निगुन सगुन नभ घन ज्यूं पियारा॥
एक अनेक लघु दीर्घ दीवारा। जड़ चेतन चेतन जड़ द्वारा॥

झड़—मुनि बाल अखिल लागे डूबन गोपद जल में।
हरि हो विशेष अवतार उबारे पल में।
महाराज दया वैसे ही उर धारो जी॥
अर्ज हमारी सुण मजारी बाल उबारो जी॥ १॥

पर ब्रह्म के प्रतिबिम्ब माया मे आये।
पुरुषोत्तम हिरण्य गर्भ विराट कहाये।
महाराज समष्टि सृष्टि बनी विशाल।
उन स्वरूप से सजे विषय इन्द्रिय सुर दिग्पाल।
फिर जीव तेजस विश्व के अग दरसाये।
भिन्न सो वृष्टि सृष्टि नाम से गाये।
महाराज सगुण ब्रह्म खेलन कई दिन ख्याल।
उद्भिज खानी से लख चौरासी संचा दीना ढाल।

सेर—कर्म से कर करम मानस पाया जड़ देह स्थूल है।
पशु नर सुर खाद्य सरजे, अन्न तृण फल फूल है।

परघात कर आमिस भखे सो मनुष्ज निशिचर मूल है।
संग्राम कुम्भी पाकादि ऋण करे कोट वसूल है।
चौपाई—पाप माफ नही करे यम राई। चित्रगुप्त बही दे दिखलाई॥
संकट हरन करन सुखदाई। दीन बन्धु गोपाल सदाई॥

झड़—जब ध्रुव तप करने लागा था बालापन में।
प्रभु अति प्रसन्न हो रक्षा कीनी बन मे।
महाराज शोक यो मेरो निवारो जी॥ अर्ज०॥ २॥

तुम कई ऊबारे नाथ दीन दुख हारी।
मै कहाँ तक महिमा गाऊं नाथ तुम्हारी।
महाराज डूबते कुंजर करी पुकार।
तज खगराज पयादे आये गज को लिया उबार॥
पृथ्वी को ले गयो हिरन्याक्ष बलधारी।
तब वराह रूप धर हत्यो दैत्य अहंकारी।
महाराज भूमि को लाये डाढ पर धार।
मेटियो शोक श्री व्रह्माजी को फिर सरज्यो ससार॥

शेर—व्रह्मा रची जग पालना करणी हरी अखत्यार है।
मजारी सुत के लिये ये आपकी ही पुकार है।
काल जीह्वा सुची पावक तेज तव अगार है।
तू बचावे तो बिल्ली सुत कौन सकता मार है॥

चौपाई—भक्त हेत कई धरे अवतारा। युग-२ के मांही करतारा॥
मच्छ हो जल से वेद निकारा। ये ब्रह्मा को ज्ञान उचारा॥

झड़—भस्मासुर दाना शिव पर घात विचारी।
प्रभु धार सती का रूप मोहनी डारी।
महाराज अगन शीतल कर डारो जी॥ अर्ज०॥ ३॥

कल राज कंवर प्रह्लाद देखने आसी।
जो मंजारी सुत जीवित वे नहीं पासी।
महाराज मेरे को पकड़ देवेंगे त्रास।
राजा लोग की उल्टी रीति हो रहा जीव उदास॥
फिर नाम आपको पल के मांही छुडासी।
सब लोक मांयने होसी तुम्हारी हांसी॥
महाराज करू मै बार बार अरदास।
आप जानते सबके दिल की घट घट मे प्रकाश॥

शेर—अंर्तयामी सांवरा शीघ्र ही सुधि लीजिये।
मजारी के सुतों की अब नाथ रक्षा कीजिये॥
नींतर लजेगो विड़द तेरो ना त्रास ज्यादा दीजिये।
परच्यो दिखाके पापियो को सहाय जन की कीजिये॥

चौपाई—गुरु नन्दलाल ज्ञान धन पाया। ज्ञान मान घट में दरसाया॥
गान तान का गुण सिखलाया। सो उस्ताद गुलाब कहाया॥

झड़—कहे दरजी नाथूराम प्रत्यक्ष प्रभुताई।
जठरा अग्नी उर करे गर्भ की सहाई॥
महाराज इसी विध बिरद विचारो जी।
अर्ज हमारी सुन मजारी बाल उबारो जी॥ ४॥

वचन प्रह्लाद का कुमारी से

शेर—नाव दिखला खोल के तिरिया हमारे सामने।
बच्चा बिल्ली का बचे तो सच्चा जाणूं राम ने।
नींतर दिलाऊं सजा करड़ी भजा रिपु का नाम ने।
जभी डर हो राजद्रोही ढीठ लागे तमाम ने॥

वचन कुमारी का प्रह्लाद से

ढीठता ना करी हरी कूं भजा भूल सुधारने।
देखो कुंवर मैं नाव खोलूं ना दगा सरकार ने।
और बरतन सब पकाया अवा की अंगार ने।
बच्चा बिल्ली का बचाया सच्चा सरजन हार ने।

प्रह्लाद का कुमारी से
पद न० १

लुल लुल लांगू पांय कुमारी म्हारी सतगुरु हे॥ टेर॥
सुता छा मोह नींद मे री जग सपने मे लुभाय।
जोर से हेला देय के हमको दिया जगाय॥ कुमारी॥ १॥
परतक परच्या राम का मुझको दिया दिखाय।
धरम पथ सुझवा दिया मन का भ्रम मिटाय॥ २॥
महिमा कही भगवान की ए सच्ची ज्ञान की माय।
बात प्रभु के ध्यान की हिरदे दिवी जमाय॥ ३॥

बाल बच्चे मंजार के जी देख सुमति गई आय।
नाथूराम प्रह्लाद के राम रमे मन मॉय ॥ ४ ॥

प्रह्लाद अकेला
पद न० २ गजल रेखता

जगत मे सार भगवाना, यही हम निश्चय कर जाना,
मंजारी पुत्र अग्नि से बचा को सके देव दाना।
देख परच्या ये ईश्वर का भजन करना ही दिल ठाना ॥ १ ॥
मिथ्या पितुमात सुतदारा राजधन धाम पुर थाना।
लगे जब काल का घेरा छोड़ सब एकला जाना ॥ २ ॥
सदा नहीं रहे काया माया मूढ़ करते है अभिमाना।
फूल मत देख तन गोरा अन्त मिट्टी में मिल जाना ॥ ३ ॥
तजो मन कामादि शत्रु इसी मे होय अज्ञाना।
भजो मन ओम अविनाशी सजो वैराग्य का बाना ॥ ४ ॥
मनुज तन है रतन रूपी फेर ऐसा नही पाना।
मुक्ति बेशक मिले नाथू सदा गोविन्द गुण गाना ॥ ५ ॥

माता प्रह्लाद से

रटता मुख राम राम, आया सुत मेरे धाम,
ऐरे नादान जाम कौन भरमाया है।
दैत्य वश अरि हरी तासे कहा प्रीत करी।
विष्णु भक्त परापरी, तात को न भायो है ॥
कुल की मर्यादा त्याग दूजे पथ मती लाग,
याही सो लगे दाग, कहाँ से सीख आयो है।
नाथू कहे पकड़ हाथ पुत्र को समझाय मात,
मान प्रह्लाद बात, मेरी कोख जायो है ॥

जवाब प्रह्लाद का माता से

किसे कौन जाया मात, आप मे समाया आप,
मेरा सुत मेरा बाप ये तो भ्रम जाल है।
सकग जगत् का जो तात, मात वो ही है साक्षात्,
उलट पुलट जीवजात, अनादि की चाल है।
झूठी मोहमाया तज, सच्चा एक विष्णु भज,
सदा ये न सुख समझ, समझ का सवाल है।

नाथू कहे प्रह्लाद बात मै तो नही भरम्यो मात।
मन बस्यो साक्षात् दीन को दयाल है।।

वचन माता कयाधू का प्रह्लाद से
राग सोहनी मालकोश

तोहे कुण भरमायो, विष्णु मन भायो, थारे लाडला।। टेर।।
मुझको दे बतलाय लाल तोहे कौन धूर्त भरमायो।
नाम राम को रटतो रटतो महल हमारे आयो।
अपने कुल में गोविन्द को गुण लाल कोई नही गायो।
हाय तोहे शिक्षा या कौन दई, कांई इसी में सार बात तू समझ लई
तज कुल की मर्याद आज क्या रट पकड़ी प्रह्लाद,
ध्यान दिल यो ही दृढ़ायो।। विष्णु।।

प्रह्लाद माता से

पूरब पुण्य जाग्या माता भ्रम भाग्या, होग्या चाँदणा।। टेर।।
भाग्या भ्रम सब मेरा मन का घट मै भया उजाला।
परचा मिला राम का सच्चा खुला हिया का ताला।
उस ही राम नाम की माता हरदम फेरु माला।
हां ये मै तो श्याम चतुर्भुज ध्यावता।
और सकल संसार सुख नही चावता।
स्वप्न रूप ससार माता जी है सच्चा करतार।
मेरा मन उनसे लाग्या।। माता।। २।।

माता प्रह्लाद से

लाग्या मन कर्त्ता मे तेरा कुण दीना यह ज्ञान।
दैत्य वश को बैरी विष्णु मत धर उसको ध्यान।
हिरण्यकश्यपु पिता तुम्हारो शूरवीर बलवान।
हाँ रे वो तो सब पृथ्वी पर राज करे।
जिनसे इन्द्रादि देव दैत्य सारा डरे।
सारा सुख आराम मिला थांरे क्या माधव से काम।
जन्म मोटे घर पायो।। विष्णु।। ३।।

प्रह्लाद माता से

मोटा घर ईश्वर का जग में जाने सकल जहान।
राज देखकर भई बावरी कछु नहीं सोचे ज्ञान।
सदा सरीसी रहे न सम्पत्ति क्यों करती अभिमान।
हाँ ए मन गर्व करे धन माल का
यह सारा ससार चारा है काल का
धरा तोलते वीर जिन्हो का रया न अमर शरीर।
जरे ज्यों दीपक लाग्या ॥ ४ ॥

माता प्रह्लाद से

दीपक लाग्या जरे लाड़ला तू मत ना भय मान।
काल बली से निर्भय कीना दे ब्रह्मा वरदान।
तेरे पिता का तेज देखकर यम भी हो हैरान।
हाँ रे सब सृष्टि ब्रह्मा रचावता।
वांका कयोड़ा वाक्य व्यर्थ नही जॉवता।
क्या यम की औकात ब्रह्म की झूठी करते बात।
पितामह विधि कहायो ॥ विष्णु ॥ ५ ॥

प्रह्लाद माता से

पितामह ब्रह्मा कहलायो राम सदा अविनाशी।
जो तू करे मोद ब्रह्मा का ये भी तो मर जासी।
तप बल से अधिकार मिले है सो सतलोक निवासी।
हाँ ये सब का पति चेतन जगदीश है।
ज्याने रटे इन्द्रादिक देव अजादी ईश है।
आदि पुरुष भगवान जानकर करूं उसी का ध्यान।
ज्ञान घट गहरा छाग्या ॥ ६ ॥

माता प्रह्लाद से

क्यां को ज्ञान छा गयो तेरे लगसी कुल के दाग।
घर मे हाण लोक मे हांसी गयो कुसगत लाग।
चक्रवर्ती को बालक होकर क्यो धारे वैराग।
हां रे तने कुण साधु बहका दियो।

कांई केशव परमानन्द दिखला दियो।
छोड़ पिता को नाम करे तू मुनियाँ को सो काम।
राम तोहे कहां दर्शायो ।। ७ ।।

प्रह्लाद माता से

दर्शाये घट-२ के मांही जिनकी जोत अपार।
तू भूली माया मद मांही खुले नहीं भरम किंवार।
मुझको तो रटने दे ईश्वर हो जाय बेड़ा पार।
हां ऐ ज्याने रटकर ध्रुव अक्षत भया।
सनकादिक से सत मुकत केई गया।
तज सब मन की खोट ओट ली उतरन अघ की पोट।
सकल माया मोह लाग्या ।। माता० ।। ८ ।।

वचन राजा का रानी कयाधू से
कवित्त

अमर है सवाग भाग, करो सदा अनुराग,
फल रहे सुख बाग स्वर्ग को सो वास है।
बली है भरतार नार, आज्ञाकारी पुत्र चार,
दास दासियाँ अपार माया को निवास है।।
त्रिलोकी पर हुक्म थारो, चवदा भवन राज सारो,
दियो विधि अधिकारो, भोग हव विलास है।
नाथू कहे सर्व सुख. काहू को नांय दुख,
आज रानी चन्द्रमुख, क्यों भयो उदास है।।

वचन रानी का राजा से
कवित्त

भया है उदास मुख, कहा कहूं श्याम दुख,
और सारा मिला सुख फिकर एक छायो है।
उसी फिकरहु की बात कछु नहीं कही जात,
रात प्रात मेरो चित्त शोक मे समायो है।।
आज्ञा मे पुत्र चार, वश हू की रखे सार,
पांचवो सुकुमार, प्रह्लाद लघु जायो है।
नाथू कहे पाटरानी, पति आगे मधुर बानी,
दिन २ शिशु हो अज्ञानी, फिरतो भरमायो है।।

वचन राजा का रानी से
राग मालकोश सोहनी

बैठी कुम्हलानी, चिन्ता के आनी, रानी जीव में ॥ टेर ॥
के चिन्ता मन आनी रानी मुख फीकाई छाई।
कमी नहीं किण बातरी स थांरे राज भोग प्रभुताई।
हिरण्यकश्यपु से पति तिहारे फिर कें की दुखदाई।
रानी थांरे कांई दुख छायो जी।
आज क्यों चन्द्र वदन कुमलायो।
सदा हसमुखी नार मेरे से करती प्रेम अपार।
आज क्यों उतर्‌यो पानी ॥ १ ॥

वचन रानी का राजा से

कछु कही न जावे आवे पिव सोच कवर प्रह्लाद को ॥ टेर ॥
लघु पुत्र प्रह्लाद सो थारो दिन २ बिगड़्‌यो जावे।
सोला वरस को होवण लाग्यो कुल की राह न चितावे।
हांजी ओ तो उन्मत्त की ज्यों विचरे।
मुख से नई नई बातां उचरे।
पूछूं घणो लडाय बात वो कछु की कछु कह जावे।
सुणत दिल मेरो दुखावे ॥ आवे ॥ २ ॥

वचन राजा का रानी से

कैसे दुखावे जिगर लाल को बे की बात बनावे।
हो घोड़े असवार कँवर नित सैर करण ने जावे।
ऐसो कुण मेरे स निर्भय सुत को दे बहकावे।
हां जी वो क्या नई बात उचारतो।
कह दो सारा हाल कंवर अब चले कौन सी चाल।
जतन में करूं सयानी ॥ ३ ॥

वचन रानी का राजा से

जतन करो तो करो कंवर यो छोड़ी कुल मर्याद।
जोगारम मन भायो, हो गयो पर धर्मी प्रह्लाद।
राज काज तज करे रात दिन वो विष्णु को याद।

हाँ जी वो तो नारायण पद प्रीत करी।
लोक बड़ां की लाज रीत दूर धरी
मिल्यो राम को दास ज्ञान दे कियो मोह को नाश।
सदा गुण हरि को गावे ॥ ४ ॥

राजा रानी से

गावे गुण अरि का सुन रानी दीनो कोई बहकाय।
मुझे खबर पड़ जावेगी तो देऊँ उसे मरवाय।
तीन लोक चवदा भवनां में दिवी दुहाई फिराय।
हाँ ये सब इन्द्रादिक मोये सुमरे।
कोई नहीं नाम राम को उचरे।
मिल जावे रिपु भक्त जिनो को सजा दिलाऊँ सख्त।
दशा कर दूं मनमानी ॥ ५ ॥

रानी राजा से

मनमानी कर सको आप पर खबर पड़न की नांही।
घर कपूत वेश्या ने वरजे प्रीतम होते कांइ।
धमका के शिक्षा दे सुत को समझावो घर मांही।
हाँ जी म्हे तो समझायो बहु भांति से।
दे ज्ञान आसुरी नीत प्रीतवत शान्ति से।
ध्रुव ज्यूं हठ कर श्याम जपत है आठो याम श्रीराम।
नाम छोड़न नहीं पावे ॥ ६ ॥

राजा रानी से

छोड़न पाय नहीं नाम बैरी को दया नहीं धारूंगा।
हाल सुणत भई रीस उसी को बिना मौत मारूंगा।
कैसा ही प्यारा क्यूं न होय मैं पूत बिना सारूंगा।
हाँ ये म्हारे चार पुत्र बल धारी।
निशिदिन माने आज्ञा हमारी।
ले बैरी को नाम बाम वो पुत्र भयो बेकाम।
गिणु नहीं मैं घर हानी ॥ ७ ॥

रानी राजा से

हानि हुवे पुत्र कूं म्हारे होय मोटो संताप।
पूत कपूत होय तोहि ममता राखे माई बाप।
लकड़ी टूटे न सांप मरे सो जनत बिचारो आप।
हाँ जी म्हारो प्यारो सुत प्रह्लाद छ।
हाँ जी इनकू मारत बहुत विषाद छ।
शुभ मुहुर्त्त दिखलाय दीजियो पठशाला पठवाय।
विद्या से राम भुलावे ॥ ८ ॥

वचन राजा का गुरु शुक्राचार्य से

जोशी जी महाराज आप कुल गुरु हमारे।
कं बालक पौशाल पढ़न कू आत तिहारे।
शुभ मुहूर्त्त कोई देख आप पतड़ा में ढाओ।
राज कुंवर प्रह्लाद उसे सब विद्या पढ़ाओ
साम दाम दण्ड भेद नृप नीति सर्व सिखाय दो।
वैरी को ले नाम सो जियां कियां छुड़ाय दो ॥

शुक्राचार्य राजा से

रहो चिरजी राज श्री महाराज तिहारो।
मैं कुलगुरु अनादि विद्या को काम हमारो।
राज कुंवर प्रह्लाद जिन्हे चटशाल ले जाऊँ।
चतुराई के साथ सारी विद्या सिखलाऊ।
हुकुम आप को सिर धरूँ जो श्रीमुख फरमाइया ॥
पकड़ हाथ प्रह्लाद का चटशाला मे लाइया ॥

वचन गुरु का प्रह्लाद ने

अब तुम विद्या पढ़ो प्रह्लाद करलो कक्को बारह खड़ी याद।
विद्या पढ़ो कुंवरजी हाथ से जिण सूं आछ्या दीखो।
पहली कक्को बारह खड़ी पढके पीछे सीधो सीखो।
विद्या से पंडित कहलाओ अक्षर पट्टी लिखो ॥ १ ॥ ॥

वचन प्रह्लाद का गुरु से

गुरुजी पट्टी लिखदो राम, नहीं कोई और विद्या से काम।
राम नाम पट्टी पर लिख दो और झूठा संसार।
षट् शास्त्र चारों वेदों में ईश्वर भक्ति सार।
सतगुरु भेद बताइया सांचा राम नाम आधार॥ २॥॥

गुरु प्रह्लाद से

राम नाम ले स्वामी मोडा, थारी कांई पड़ी कुबाण।
बड़ाराज का पुत्र कहावो पूर्व वंश पिछाण।
मेरो सीख मानले लाला हो जावे गुणवान॥ ३॥॥

प्रह्लाद गुरु से

है गुणवान पुरुष सोई जग में जो भजता भगवान।
राज पाट धन जोवन दारा, दो दिन का मेहमान।
कामी मूर्ख के दाय न आवे नारायन को ध्यान॥ ४॥॥

गुरु प्रह्लाद से

ध्यान धरत नारायण को महामूर्ख हो वनवासी।
राजकंवर अणपढ रेवे तो जगा मे होवे हांसी।
बड़ो होय नृप—नीत न सीखे फिर पीछे पछतासी॥ ५॥॥

प्रह्लाद गुरु से

पछतासी नर अन्त समय जो रटे न विष्णु श्याम।
यम किंकर को घेरो लागे अन्य विद्या न आवे काम।
भव सागर से पार लगावे है नौका हरिनाम॥ ६॥॥

गुरु प्रह्लाद से

नाम हरि को मत लेवो थांरा कुल को बरी राम।
पिता तुम्हारो शूरवीर है डरता देव तमाम।
तुझे काल का भय छ कांई रह निर्भय सब याम॥ ७॥॥

प्रहलाद गुरु से

निर्भय राम मरे सब जोधा सदा न कोई भरोसा।
बनगट वीर नष्ट सब होते अखण्ड एक जगदीशा।
नाथू कहे दृढ़ भक्ति लख गये दूजे काम मुनीशा॥ ८॥

वचन प्रहलाद का बालकों से
गजल कव्वाली

सुनो विद्यार्थी भय्यो पढो हरिनाम सुखराशि॥ टेर॥
देव दुर्लभ देह पाने को यही है पंथ अविनाशी।
मिटे सब काल का झगड़ा फेर नहीं जावो चौरासी॥ १॥
यदि तुम जानो विद्या से सकल जग हो सुखी जासी।
सो तो प्रालब्ध के बल से बिना पढियाँ ही फल जासी॥ २॥
देखो दुःख कोई नहीं चाहता स्वत ही आय गल फांसी।
यतन करता न सुख आता लाखो पच के मर जासी॥ ३॥
दैव आधीन अनित्य सुख को करो क्यो परिश्रम अभिलाषी।
कहे प्रहलाद जन नाथू ब्रह्म विद्या अमर वासी॥ ४॥

वचन शुक्राचार्य का विद्यार्थियों से

बतलाओ बालो कांई पढ़े प्रहलाद।
स्वर व्यजन का हिसाव संख्या कौन विद्या करी याद॥ १॥
अक्षर सीख्या शीघ्र बताऊं जाति धर्म मर्याद॥ २॥
नाथू कहे गुरु मन चिन्ता कैसे मिटहि विवाद॥ ३॥

प्रहलाद गुरु से

गुरु पट्टी मे लिख दो राम राम राम॥
विनवे बालक सुनो गुरूजी चरणा करूं प्रणाम॥ १॥
सब वेदो का सार यही है अन्त मे आवे काम॥ २॥
मूल छुड़ाओ डाल गहावो कार्य न बने छदाम॥ ३॥
विद्या और लगे नहीं आछी राच्यो मन हरिश्याम॥ ४॥
नाथू कहे मानस तन लाहा सुमर्‌या विष्णु नाम॥ ५॥

गुरु राजा से

कर पकड़ प्रहलाद का मै भूप तुम पे ला दिया।
टेढा अति सुत तिहारा बहुत मै समझा दिया।
सारी मेरी पौशाल का उल्टा शिशु भड़का दिया।
सुधारो तुम्ही इसे अब आपको समला दिया।

राजा गुरु से

गुरुजी महाराज तुमहो ज्ञान में पारस मणी।
पारस लोह प्रहलाद को क्यों न करो कचन कणी ॥
एक बालक ना पढ्यो मन में अकड करता घणी।
जान लो पौशाल तुमरी बालकां ठगवाँ तणी ॥

गुरु राजा से

नृप ना पढ़ें तुम्हारा जाया म्हारा गहरा मगज पचाया।
नहीं पढे प्रहलाद कछु भी बहुतेरा समझाया ॥
जसे काली कमली ऊपर चढे न रंग चढ़ाया।
यो कोई पुरब लो हरिजन श्री विष्णु मन माया ॥

राजा गुरु से

पांडे माल खैर का खाया पढाणा कठिन पराया जाया।
वेद व्याकरण छन्द शास्त्र खुद पढ़ना छिटकाया।
झूठा पुराण किस्सा सुनाकर दान पुण्य करवाया।
गुरू जजमानी हमसे करके दान घणेरा पाया ॥ १ ॥

गुरु राजा से

गुर जजमानी दान दक्षिणा ब्राह्मण कर्म कहाया।
हो कल्याण दान देने से झूठा कियाँ बताया।
सिवी हरिश्चन्द्र नृग राजा का जग माहीं जस छाया ॥ २ ॥

राजा गुरु से

यश कल्याण होय तपस्या से जो जन जूण तपाया।
वेद विद्या को लोप कर्यो कर पोप पंथ की माया।
मेहनत करो नहीं लड़कां पर खाली पर दबाया ॥ ३ ॥

गुरु राजा से

मेहनत करी मोकली दिनभर लड़का कई पढ़ाया।
राजकुंवर प्रहलाद आपका मूण्डा आज दिखाया।
चटशाला के बाल जनों को भक्ति पंथ दिखाया ॥ ४ ॥

राजा गुरु से

चटशाला को सूनी छोड़ो क्यां का गुरु कहाया।
दिया बिगाड़ सभी लड़कां ने कीना दुश्मन दाया।

गुरु राजा से

मै तो भक्ति नही सिखाता है कर्त्ता की माया।
बढ़ता पाटी देय हाथ में अक्षर मांड बताया।
बालक ने सिखावणो सोरो पत्थर पे न बसाया ॥ ६ ॥

राजा गुरु से

पत्थर कुंवा की चाट घसीजे डोरी सदा चलायां।
हरदम बैठ घुकावे अक्षर बालक पढ़ें सवाया।
सूनो छोड़कर आपस मांही करे बाल चित चाया ॥ ७ ॥

गुरु राजा से

सूना पलभर छोड़ा नांही बहुत विधि से पढ़ाया।
राम नाम मांडे पाटी पर और अक्षर नहीं आया।
कहे नाथू नही दोष गुरां का मेहर करी रघुराया ॥ ८ ॥

हिरण्यकश्यप प्रह्लाद से

बनारे प्रह्लाद बान, जा गुरु की पाठशाल।
लिखवा के वरण माल कौन विद्या सीखी है।
वेद स्मृति पुराण, व्याकरण ज्योतिष ज्ञान,
काव्य छन्द भेद गान, तान कहा तीखी है।।
शास्त्र हैं राजनीति अस्तर विद्या अमीत,
जैसे इन्द्रादिजीत मेरी विजय दीखी है।
नायू कहे हिरणा कुश बता लाल होय खुश।
मेरे दिन बीच गुम होय जो विधि लिखी है।। ९ ।।

प्रह्लाद राजा से

लिखी है विधाता भाल, विष्णु की शक्ति विशाल,
राम नाम वर्णमाल बीच मे सुमेर है।
वेद को ना पायो अन्त स्मृति का है केई पथ,
शास्त्र पुराना ग्रन्थ बहु घेर घुमेर है।
ज्योतिष जोग सिद्धि रूप, राग काव्य है अनूप;
युद्ध शास्त्र विद्या भूप धरम जाति लेर है।
नायू कहे यू प्रह्लाद घूमे काल रहे याद,
सीख जन क्या बुनियाद, विद्या को अति ढेर है।।

राजा प्रह्लाद से

जाके चटशाला, गुरु पे तू लाला, क्या विद्या पढ़ी ।। टेर ।।
शुभ मुहूर्त्त दिखलाय कंवर तोय भेजा था पौशाल।
स्वर व्यंजन को सीख किया फिर किस विद्या पर ख्याल,
चवदा विद्या निधान होवे सो चक्रवर्ती का बाल।
चक्रवर्ती का बाल होय सरनाम जी।
करे जिन्दगी भर मौज ऐश आराम जी।। १ ।।

वचन प्रह्लाद का

बावन मे जानी, विद्या वरदानी, भक्ति राम की ।। टेर ।।
चार वेद षट् शास्त्र पुराना सब विद्या का सार,
अर्ध श्लोक सीख चट जाना, विष्णु जग आधार।
ब्रह्म सत्य मिथ्या जग का सुख मृग तृष्णा जलधार।

मृग तृष्णा जलधार चबेना काल का,
मोक्ष हेत लिये शरणा दीनदयाल का ।। बाबल । २ ।।

वचन राजा का

बन्द मोक्ष है मन की ग्लानि कर अज्ञानी-पीव ।।
सम्यक विचारवान ने दीखे अपने आप में जीव ।
मूढ़ राज-सुत दीवाना सेवा करता हो असिव ।
करता होय असिव भरम मे भूलिया ।
विष्णु नास्तिक पुरुष कहां लख फूलिया ।। जाके ।। ३ ।।

प्रह्लाद

होय नास्तिक लोक जिन्होंने सारा दरसे कामी ।
है विष्णु सर्वज्ञ सर्वेश्वर चौदह भुवन का स्वामी ।
घट २ में प्रकाश जिन्हों का पूरण अन्तर्यामी ।
पूरण अन्तंयामी पतित उधारना ।
करे विपत में सहाय सदा दुख टारना ।। ४ ।।

राजा

थारे कौन सो दुःख मिटानो मुझको दे बतलाय ।
सात द्वीप नव खंड में मेरी रही प्रभुता छाय ।
मो से अधिक विष्णु की प्रभुता तुमको कियां लखाय ।
तुमको कियां लखाय हो गयो बावलो ।
क्या दिखी अनोखी चीज तुझको सांवलो ।। ५ ।।

प्रह्लाद

चीज अनोखी सबसे चोखी नित्य मुक्त सवराज ।
उस माधव की परम कृपा से सरे मनोरथ काज ।
जगतपति की होड़ करो मत चक्रवर्ती हो आज ।
चक्रवर्ती हो आज, काल मिट जायगा ।
काल गति बलवान न बचने पायगा ।। ६ ।।

राजा

बचणे किस विधि पावां नहीं ब्रह्मा का वरदान,
रात दिवस और बारह मास मै जम का लगे न बान।
सुर नर असुर नाग बनचर से निर्भय हमारा प्राण।
निर्भय हमारा प्राण मार सकता नहीं।
तुझे मराऊं दुष्ट हुक्म दे के सही ॥ ७ ॥

प्रह्लाद

वीर वैष्णव डरता नाँही होगी हुकम अदूली।
रग रग मे व्यापक है विष्णु चाहे चढ़ा दो सूली।
बेकसूर हरि भक्त सतायाँ जगत डार सी धूली।
जगत डारसी धूली पाप बढ़ जायगा।
उमर जुल्म की क्षीण आखिर पछतायगा ॥ ८ ॥

हिरण्यकश्यप जल्लाद से

सामर दैत्य ले साथ तुरत जल्लाद सिधावो।
गिरफ्तार प्रह्लाद करो झट सूली चढ़ावो।
सूली से बच जाय कुंजर पग से चिथवाओ।
फिर जीवे तो शीस रोस कर खंग चलाओ।
कटे नहीं तो सिन्धु में पत्थर बांध डुबाय दो।
नाथू कहे हिरण्यकश्यपु इण सुत को मरवाय दो ॥

जल्लाद राजा से

हुक्म सिर पर धार के जाता हूँ नृप आज मै।
कर कंद मारू कुंवर कू नित नमक खाऊं राज मै।
सुत मराना है बुरा कैसे करूंगा ये काज मै।
कर सलामी भूप से कही रानी को भाज मै ॥

जल्लाद रानी से

रानी तिहारे पुत्र पर कोप अति राजा किया।
शीघ्र सूली चढ़ा देवो हुक्म हमको दे दिया।

फिकर कियाँ क्या हुंवे विधना भाल ऐसा लिख दिया।
भेज दो प्रह्लाद को सग वज्र का करके हिया॥

रानी जल्लाद से

वज्र हिया कसे करू' यह पेट का फरजंद है।
सताता है फिकर मुझको क्या रची गोविन्द है।
सुत को मरावे पिता होकर सो बड़ा दुःख कन्द है।
गम करो जल्लाद पल भर करू' कोई प्रबन्ध है।

रानी राजा से

अर्ज करू' जोड़ हाथ मान लो जी प्राणनाथ,
ऐसो हुकम एक साथ सुत पे ना चलाओ जी।
पूत हो कपूत भ्रात, हेत रक्खे तात मात,
प्यारा पुत्र हुये घात, कर नों सुख पाओ जी।
बाल की बराबर बाल होना नांहीं भुआल।
रीझिये दयालपाल, बड़ा थे कहाओ जी।
नाथू कहे रानी नम राजा तुम राखो गम
एक दम यह जुल्म शिशु पे ना जनाओ जी॥

राजा रानी से

राखू गम कैसे बाम, पुत्र तेरो है निकाम।
माने ना हराम नाम बैरी को लेवे जी।
पड़ी या के खोटी बाण कुल की गमावे काण,
लोक हांसी घरे हाण नेक नॉय लेवेजी।
आक को न भलो बूट इमरत की छुड़ावे घूंट।
उखाड़ कपूत खूट आखर दुःख देवे जी।
नाथू कहे हिरणाकुश मनमांही धार गुस।
बबूल काटे सभी खुश होकर पंथ वेवे जी॥

जबाब रानी का राजा से

पिववी गम खावो, बालक पर कोप करावो थे मती।
सुत पर कोप करो मत इतना अर्ज हमारी मानो।
पूत कपूत जगत में होता या मन मांही जाणो।

जद को बैर भयो दिल में लड़कर करस्यूं मदचूर।
बैर नहीं भूलता, उण शत्रु का नाम लेय शिशु फूलता
जरना रखी न जाय मुझे नहीं रिपु भजने की चाय।
रीस क्यूं दूणी दिलावे ।। ४ ।।

रानी राजा से

दूणी रीस मती चित आणो क्षमा रखो दिल मांही।
घर की हाण लोग की हांसी इसी धारणां नांही।
सुत को मार्‌यां बैर न निकले समझ लेवो मनमांही।
थांसू अधिक ध्यात छो ज्याने हत्यो पल मॉय,
ज्याने हत्यो पल मॉय बात मानो सही।
विष्णु शक्ति अपार कोई जीते नहीं।
थे वो रीस बुझाय पुत्र ने फिर से दूं समझाय।
हुक्म पर खमा रखावे।

राजा रानी से

खमा घणी मै राखी रानी अब नहीं राखी जाय।
मैं तो मेरी जाण पुत्र को बहुत दियो समझाय।
घड़े चीकटे छांट पड़े ना अपनो ध्यान लगाय
थारे मन विश्वास है तो समझा देनी और।
के तो समझ जायसी नीतर सूली चढ़सी भोर।
जोर कोई ना चाले, सौ बातां की बात हुक्म मेरा ना टरे।
दोय घड़ी की देर फेर समझाल्यो इस बेर।
फेर प्रह्लाद न आवे ।।

वचन रानी का प्रह्लाद से
गजल रेखता कव्वाली

अरे हट छोड़ दे बेटा करे मत बाप से खटा ।। टेर ।।
कहा तू मान ले मेरा होय मत ऐसा तू ढेटा।
छोड़ दे राम की रटना इसी में काल का फेटा ।। १ ।।
वह व्यापक अलख अगोचर का बताया कौन तोय पेटा।
चतुर्भुज रूप धर विष्णु कहाँ प्रत्यक्ष होय भेंटा ।। २ ।।
बहुत तोय कष्ट से पाला मास नौ गर्भ में लेटा।
करे अब मन को वैरागी हेत क्यों जननी से मेटा ।। ३ ।।

मार डालेगा निर्मोही पिता से सिर झुका हेटा।
कहे नाथू कयाधू माँ लगेगा इसी हठ चेंठा ॥ ४ ॥

वचन प्रह्लाद का

मत बरजे मेरी माय हरि को भजवा दे ॥
धन्य धन्य है ध्रुव की माता दीना ज्ञान बताय ॥ १ ॥
उसी ज्ञान से भज ध्रुव हरि को लियो अटल पद पाय ॥ २ ॥
तू माता है बड़ी बावरी उलटो राम छुड़ाय ॥ ३ ॥
मारणिया है कुण हरिजन को झूठा भय दिखलाय ॥ ४ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे विष्णु करसी साय ॥ ५ ॥

जल्लाद का वचन

माता पिता का वचन लोपे सो पापी सतान है।
पाप के परताप मरता होत तब जवान है।
दोष हमें देना नहीं तव पिता का फरमान है।
सूली चढ़ो प्रह्लाद देखें कहां तेरा भगवान है ॥

प्रह्लाद जल्लाद से

व्यापक है भगवान सब में विश्व भर का मूल है।
पेड़ विराट दिग्पति डाला पात जग फल फूल है।
आयु जल रक्षा करें रवि काल ही बातल है।
हरि हुक्म से हाले पत्ता क्या कर सके ये सूल है ॥

लावणी रगत लंगड़ी

चल जल्लाद चढ़ा दे सूली तेरा काम यही करने का,
पितु क्या धमकावे धमक से विष्णु भक्त नहीं डरने का ॥ टेर ॥
एक समय दरखत पर बैठे चातक चातक की नारी।
भूमि पे शिकारी तीर तके नभ में बाज करे गुंजारी।
दोऊं तरफ लखि काल दम्पत्ति खग सुमिरे श्री बनवारी ॥
अहि डसे व्याध को छुटे शर बाज गयो तत्क्षण मारी ॥

शेर

जलती अग्नि के बीच में बचे बिल्ली का बच्चा।
न्याव बरतन आंच बल से भिन्न भिन्न सब ही पचा।
अनोखी ईश्वर गति का ख्याल वहाँ दरसा सच्चा।
जिस मांडे ब्याई बिलाई रह गया सो ही कच्चा ॥
तोड़—दीनानाथ दयाल बचावे सो मार्‌या नहीं मरने का ॥ १ ॥

पूर्व ध्रुवजी पांच बरस के जा बन मांही तप कीना।
ओम नमो भगवते वासुदेव नारायण मुख जप लीना।
हिले इन्द्रासन डरे सुरपति डारे विघ्न सहे परबीना ॥
लख दृढता जनकी दयाकर हो प्रसन्न दर्शन दीना ॥

शेर—खुशी हो ध्रुव को हरि राज अटल पदवी दयी।
बैकुण्ठ के द्वारे निरन्तर चमकता तेजोमयी।
अजामिल के अन्त में काल की बाधा भई।
सुत हेत नारायण भजे यम पास पल में कट गई ॥

तोड़—कर सके कौन बिगाड़ जिन्हों के जोर प्रभुपद शरणे का ॥ २ ॥

मार्कण्डेय की बारा बरस की आयु लिखी थी बे माता,
मुनि को भई ज्ञाता जपने लगे निश दिन शिव २ जग त्राता।
प्रगटे आशुतोष लिंग में जारे काल जन सुख दाता।
भये ऋषि चिरंजी जिवाये फिर मृत्यु शास्त्र ज्ञाता ॥

शेर—दुर्वासा अम्बरीष को त्रास जब देने लगा।
सुदर्शन का कोप लखके त्रिलोकी डरता भगा।
गज को पकड़्यो ग्राह जल में दूर रहे निज कुल सगा।
टेरे हरि तारे करी पून्य पूरबला जगा।

तोड़—ओम नमो हरि हर जप जग में दुख दारिद्र हरणे का ॥ ३ ॥

वर्जी नाथूराम भरोसे जन प्रह्लाद चढे सूली।
हो के सुदर्शन चक्र से खल गर्दन कटी ज्यूं मूली।
हिरण्कश्यपु ले गिरी पटके झेले गोद लगे नहीं धूली।
फिर डारे सिन्धु में प्रभु प्रताप रहे जल पर झूली ॥

शेर—गरूडासन राजे विष्णु वरुणासन हरि भक्त हैं।
आत्म निरूपण की कथा भई परस्पर उस वक्त है।
विष्णु ना दरसे घमण्ड से नृप सुणी आत्म मुक्त है।
नन्दलाल गुरु गुलाब का ज्ञान भक्ति युक्त है।

तोड़—निश्चय लिया जान प्रभु का ध्यान पंथ भव तरणे का ॥ ४ ॥

वचन होलिका का

कवित्त—ब्रह्मवर प्रताप भ्रात, नृप पशु न करे घात,
शस्त्र से न छिदे रात, प्रात बारा मास है।
समर में कर दकाल, जीते असुर दिग्पाल,
दैत्य इन्द्र हो भूपाल, स्वर्ग सुख विशाल है।
रानी शील रूपवान, आज्ञावान बली सतान,
पाटन गढ़ को सुल्तान मुल्तान देश वास है।
नाथू कहे ढूंढा भाण, दरसे ना दुःख निशान,
भान समान तेजवान, मुख क्यों उदास है।

हिरण्यकश्यपु का वचन

मुख उदास हू को हाल भयो है भगिनी कराल
बांस बेड़ा ज्वाल मिसाल वंश आग लागी है।
कीना मैं कोटि उपाय, लाय नहीं बुझने पाय,
चिन्ता रही छाय आय बलाय हाथ लागी है।
सारो सुख को समाज, लखाये दुखरूप आज,
भूल मझधार जहाज, बली थके सागी है।
नाथू कहे हिरणाकुश कांटा रहे दिल में घुस,
वढ्यो बबूल दुख उस मुख उदासी लागी है॥

होलिका का वचन

बन्धु के थांरे दुख छायो जिनसे रवि सो मुख कुम्हलायो।
छायो संकट कौन भ्रात तोय पूछे बात मा जाई।
रूपवान रानी पतिवरता पुत्र सभी बलदाई।
काया निरोग दिव्य भोग स्वर्ग के देव करे सेवकाई॥
असुर राज सब मित्र तिहारे भूतल फिरे दुहाई॥

हिरण्यकश्यप

बाई एक घर में भयो बबूल जिसकी निशिदिन चुभती शूल।
असुर मिताई राज बड़ाई विरथा संपत्ति सारी।
घर में भयो बबूल मूल बढ़ शूल बड़ाई भारी।
भयो घुमेर कटे नहीं काट्यो मोटी भई कुलारी।
लोक दिखाऊँ ठंडी छाया कंटक करत खुवारी ॥ १ ॥

होलिका

करे खुवारी क्यों कर थारी हुई सींचन की भूल,
क्यों न बतावे विश्वकर्मा ने कारीगरां को मूल,
चढा खराद रवि को सम कीनो सज्ञा मन अनुकूल।
फिर भी उसे बुलाय झड़ा दो कठिन बबूल की शूल।
बन्धु कुण सो सकट छायो ॥ २ ॥

हिरण्यकश्यप

शूल मूल कटवाने की अक्कल हमको याद,
विश्वकर्मा खुरदरो सूर्य कियो भव्य चढा खराद।
भातु विश्वकर्मा को ही दादो बबूल पूत प्रह्लाद।
मार्‌यो किसको मरे न बैरी हारे दूत जल्लाद ॥ ३ ॥

होलिका

दूत जल्लाद हाथ से क्यों प्रह्लाद मरावे भाई।
सबसे छोटो ललित लाड़लो क्या करी तेरी बुराई।
जो मुख से हरिनाम रटे तो तुमरो क्या हलकाई।
शिव ब्रह्मा तो तुमको ही प्यारा हरि से कहा लड़ाई ॥ ४ ॥

हिरण्यकश्यप

विष्णु बराह बन मारे भ्रात को दैत्य वंश को बैरी।
उसको भजन करे सो सुत तो कदर घटावे मेरी।
बैर बन्धु को लेणु चाहीजे बता राय क्या तेरी।
यो कुल में अरि भज भयो प्रबल हुई लाड में देरी ॥ ५ ॥

होलिका

देर भई जिण स्यूं दुख बढ़ग्यो होनहार बलवान।
बाखड़ गऊ पति बेमुख नारी, कपूत दुःख के खान।
तेरी मेरी एक सलाह मै करती अग्नि स्नान।
ले बैठूंगी गोद कँवर को जल जासी कुसहान॥ ६ ॥

हिरण्यकश्यपु

जल जावे प्रह्लाद अग्नि में जद हो जिये सीलाई।
कपूत सुत व्यभिचारण नारी मरे होय सुखदाई॥
जल्दी बहना अग्नि स्नान कर हर दुःखदाई।
नहीं जल्यो प्रह्लाद तो भगिनी रहसी बोत हलकाई॥ ७ ॥

कयाधू होलिका से

ढूंढा बाई उठ आया, फूल्यां पतासा लाया,
भोला शिशु न बिलमाया, करा मन धीजो है।
भुआ भाव को प्रसाद लेके मोद से प्रह्लाद,
बैठो गोद विष्णु याद करके बहु पतीजो है॥
भ्रात की भरमाई बात मीठी कर लगाओ गात,
कीजो ना विश्वासघात, छोटो हो भतीजो है।
नाथू कहे भाभी नम, दया भाव राखो तुम,
कीजो नां जाल जुलम लाडलो भतीजो है।

होलिका कयाधू से

भाभी कहूं नीति नांय, लोक रीत वेद गाय,
भतीजो तीजो कहाय, भ्रात निज प्यारो है।
मेरे शीश पड़े पहाड़ इत कुवो उत खाड,
दैत्य वश को कुल्हाड़ लाडलो तिहारो है।
पूर्व पाप को प्रताप भोगनो है मोय सताप,
बेटा को मरावे बाप, अजब होनहारो है।
नाथू कहे ढूंढा आज, भूवा ढूढ़ सफल काज,
होरी होली चिता साज अग्नि स्नान धारो है।

रानी होलिका से

किरपा राखीजो बाई मारीजो मती प्रहलाद ने ॥ टेर ॥
दैत्यवंश को नान्हो दीपक म्हारो सुत प्रह्लाद
गोद बिठा बिलमाया दे के मिष्ठ उजल परसाद ॥
भ्राता की भरमाई मत कीजो कूट करम जल्लाद,
भ्रमे साठी बुद्धि नाठी थांरा भ्राता लीजो मान,
ठाने नारायण से वैर विधि बर से अभिमान,
विष्णु शक्ति अपार भक्त हित कहूँ धरे औतार।
ज्ञान घट तुम धारी जो ॥ बाई ॥ १ ॥

होलिका रानी से

भावज भई भोली होणी होली सो होली जहान में।
मारण तारन हाथ विधि के नहीं किसी का जोर।
जाति करम धर्म निज रखना मोह ममता को तोड़।
हिरण्यकश्यपु भ्रात बालिसम कोई बल्लभ नहीं और ॥
कैसे साठी बुद्धि नाठी भाभी पिव की बताय।
नारी पतिव्रता के तो पति ही प्रभु कहाय।
तू क्या जाने गति राव हरि से क्यों रखता दुर्भाव।
बोल मत अटपट बोली ॥ भावज भई ॥ २ ॥

रानी होलिका से

अटपट बोली आत घात लख सुत की लागे तीर।
कैसी सती पतिव्रता होवे छूट जाय सब धीर।
तुमहो अभी कवारी बाला, क्या जानो पर पीर।
बड़े भाई की सिखाई आयी चतुराई धार।
कैसी भूआ हो भतीजो लख रही जार।
एक घर डाकिन टाले, बड़ेरी बाड़ ही खेत रुखाले।
ज्यूं ही कुल रखवाली ज्यो ॥ किरपाराखीकोज्यो ॥ ३ ॥

होलिका रानी से

रखवाली भाई की भयां बहु भावज भतीजा होय।
बबूल थोरादि तरुवर के बाड़ करे नहीं कोय।

बिन सींच्यां बढ़ कांटा बिखरे जाल्या सुख भर सोय।
थारे चार पुत्र आज्ञा कारी बलवान।
कैसे कुल द्रोही शिशु प्यारो हो जान।
मत पाले वैश्नवी सांड तेरे को करवा देलो रांड।
अकल गई है डोली ॥ भावज भई भोली ॥ ४ ॥

रानी होलिका से

डोली अकल जबही मै डरती थे करो ज्ञान विचार।
बबूल थोरादि रखे सयानि बाड़ बने रखवार।
कटक मूल गुलाब फूल प्रहलाद है खुशबूदार।
सांड गऊ भक्त ने पाल्यां राजी रहे गोपाल।
इनको ख्यार्‌यां से होवे जंग दुष्काल।
पूर्व पुन्य हो नष्ट दुष्टताई से राज हो भ्रष्ट।
पाप से डरता रीज्यो ॥ किरपा राखी जो ॥ ५ ॥

होलिका रानी से

पाप कर्म से डरना सबको यह वेदों में गाई।
होनहार बस होय जीव सब सुध बुध रहे बिसराई।
मै तो आग स्नान करूंगी याही भाग्य लिखाई।
प्यारी कौन कम राजी विधि जानी नहीं जाय।
पुन्य मान दुखी सुखी पापी दर्शाय।
मै मेरो कर्त्तव्य आज करूं पूरा हो चाहे काज अकाज।
करे मत व्यर्थ ठठोली ॥ भावज भई भोली ॥ ६ ॥
लियो गोद प्रह्लाद ने मन मे मोद अपार।
मेरो कुछ बिगडे नहीं ओ जल होसी छार।
ओजलं होसी छार भ्रात को काज सरंगो।
अब तक बचतो रयो अबै बेमौत मरंगो।
अग्नि ज्वाल पर जा चढ़ी, लीला करी करतार।
दहन भई चट होलिका लीन्हो भक्त ऊबार।

हिरण्यकश्यपु

जली होलका देख के झाल उठी मन मांय।
अग्नि से तो बच गयो अब बचने का नांय।
अब बचने का नांय मारणे ताँय खड़ग मै धारो।

या कृपाण बलवान इन्द्र का मान मर्दने वारी।
इसी चोट की ओट रखण कुण सोट लगोट संवारी।
ओट रखनियां ही लोट पोट होय एक चोट के द्वारी॥
झड़—अग्नि सब भक्षी माला, जाले क्यों नहीं बन ख्याता।
किया लोह का खम्भ ताता, लगा इनके निज गाता।
देखूगा कैसे करे रक्षा तेरा बली विधाता॥ १॥

प्रह्लाद हिरण्यकश्यपु से

चौबोला—बली विधाता है सदा, सहायक दीनदयाल।
गो गरीब जन पालने कहलाये गोपाल।
कहलाये गोपाल काल दिग्पाल हुक्म सब पाले।
उस विष्णु के हुक्म बिना नहीं पात वृक्ष का हाले।
यदि स्वार्थी देह अभिमानी घाव दुर्बल के घाले।
बुरी दीन की हाय खाल अज लोह भस्म कर डाले।
झड़—न्याय यमपुर थम्भ ताते, चोर जारों को चिपाते।
हमें खम्भ ये न जलाते, चालते चींटे दिखाते।
भरी खम्भ के बाथ नाथ प्रताप चन्दन दर्शाते॥ २॥

हिरण्यकश्यपु

पुनि पुनि रिपु प्रताप तू मुझपे रया बखान।
ऐसा प्रतापी देव तो छिप २ करे क्यों त्राण॥
चौबोला—छिप २ करे क्यों त्राण आन सन्मुख क्यों नही रणसाजे।
शार्दूल मै गरजूं भूपर वो नभ घन ज्यूं गाजे॥
बरस ओला ज्यूं बरस देवे तो समर दुंदुभी बाजे।
शूरा शस्त्र चला सहन करे कायर छोड़ रण भाजे।
झड़—सिन्धु तोय डारत आया, कुंजर स्यूं तुम्हें बचाया।
आत्मा बोध बताया, वचन सुने दरसो न काया।
वीर हो तो क्यों डरे मेरे से, दरसे क्यों न जग राया॥ ३॥

प्रह्लाद का भजन तिताला

बापू आपा बिसर गया मै बड़ में।
काम क्रोध मद लोभ मोहादि ठग डारे अंधे खड में॥ १॥
विष्णु २ को लखे वैरी ममता करी चाम हड़ में॥ २॥

सोचे तो चिंटी से विधि तक विष्णु ही एक समाधिगढ़ में ॥३॥
खण्ड पचकोस नेह दृग सुधकर देखा उसे किल्ले चढ़ में ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे श्रुति सार तत् लिया पढ़ में ॥ ५ ॥

हिरणकश्यप प्रह्लाद से

क्या दियो दिखावे मूढ़ सूरज को ।
जन्म दिया जिनका गुरु बनता धारे नहीं कुछ कुल लज को ।
जो तू कहता विष्णु विश्व है क्यों नाना बनाना पड़े अज को ॥ २ ॥
जो तू कहे हरि अलख न दरसे कई बेर देखा गरुड़ गजको ।
श्याम रूप रहे जल में अकेला आयो खुद दौड़ तारण गज को ॥ ४॥
दर्जी नाथू कहे हिरणाकुश सुर शिर धरे मेरी पदरज को ॥ ५ ॥

वचन प्रह्लाद का

जग राया डरता नहीं करता है इन्साफ।
जब तक पूरब पुन्य है तब तक अघ की माफ ॥
तब तक अघ की माफ साफ ये लिखी पुराणां मांही ।
इसलिये करते देर सेर अंधेर उसी घर नांही ॥
अन्त में हो अवतार भक्त या स्मृति धर्म के तांही ।
दे दुष्टों को सजा कजा की करे हरिजन पर छांही ॥
झड़—यदि प्रभु निराकार है सकल जग का आधार है ।
नीति प्रीति विचार है इसलिये ही साकार है ।
अदभुत रूप धर कई भक्त हित आते बारम्बार है ॥ ४ ॥

हिरण्यकश्यपु

बारम्बार जन कारणे निराकार नहीं आय ।
आय जाय सो सगुण है, एक-देशी कहलाय ॥
एक-देशी कहलाय राम त्रिगुणातम सुर अधिकारी ।
जिनमे शिव ब्रह्मा देवासुर रहे समदृष्टि निहारी ॥
विष्णु दैत्यवश का बैरी सुरपति का हितकारी ।
याते हरि तज भज शंकर विधि दुर्मति मिटे तिहारी ॥
झड़—नींतर मैं इस कृपान से मारूंगा तोहे जान से ।
अर्ज करले भगवान से, लड आ मुझ बलवान से ॥
आ गया तेरा अंत उतरता क्यों नहीं वो आसमान से ॥५॥

प्रह्लाद

उतर आय आसमान से सो क्या व्यापक नांय।
भेद लखावे मूढ़ को विधि हरिहर के मांय॥
विधि हरिहर के मांय मिलन के तांय प्रेम अति सेरा।
खण्ड २ माने पूरण को ये दुर्भाव है तेरा॥
भेद बणगटी वस्तु एक है दरसे मिटे अन्धेरा।
विश्वासी को सब जग दरसे विष्णु एक बडेरा॥
झड़—तेरे मन भई जुदाई, प्रभु से चाये लड़ाई।
तेरी ये सार्दू लाई उस पे चले न राई॥
तो में मों में खड्गखम्भ में प्रगट्या लख भय खाई॥६॥

हिरण्यकश्यपु

भय खाऊं अरि से नांही सन्मुख करस्यूं जंग।
चाहे आवो बण नर रिपु या पक्षी पशु सिंह।
या पक्षी पशु सिंह वराह हयग्रीव कच्छ मच्छ कोई।
करूं डटकर सग्राम खड्ग से अभय किया विधि सोई॥
क्या अदभुत छवि धर आ सकता झूठा डरावे मोहि।
भ्रम से जड़ खम्भे में सालगराम सूझता तोहि॥
झड़—पत्थर को पोप पुजावे अन्धो श्रद्धा कहलावे।
ढोंग यहाँ चलने न पावे, स्तम्भ में विष्णु बतावे।
लो में मारूं मुष्टि खम्भ में क्यों नही परगट आवे॥७॥

प्रह्लाद

मुष्ट लगत ही खम्भ में शब्द भयो घनघोर।
रूप नरहरि धर हरि प्रगटे खम्भा फोर॥
प्रगटे खम्भा फोर भोर के भानु तोर भगवाना।
दिखाजोर कमठोर समर में अजमा ले वरदाना॥
नहीं नर पशु पक्षी नटवर अद्भुत धारे बाना।
अधिक महीना भये पुरुषोत्तम लख ये काल निशाना॥

झड

जाके दृढ़ भक्ति रांची, झूठ वस्तु भई सांची।
सत्य पर सत्य बुधनाची, हो जावे वे सत्यवाची।
भिड़ हरि से बन शूर दूर क्यों भगो लाय मन काची॥ ८॥

हिरण्यकश्यपु

काची मन आयी नहीं साँची सूरता जान।
देख रहा हूं वार मै पेंड बदल अस्थान॥

चोबोला

पेंड बदल अस्थान तान कृपान ताक बाऊँगा।
एक चोट में लोट पोट नरसिंह कर जय पाऊँगा॥
इनका शोणित से बंधु का तर्पण करवाऊँगा।
वार भाग्यवश नांय लगे तो मर सुर पुर जाऊँगा॥

झड

रखण विधि के वरदाना, सजा रिपु अदभुत बाना।
खाय कल्पित तन खाना, आत्मा अमर बखाना।
ये ही ठान दृढ भिड़ा हरि से जसे मल्ल बलवाना॥

प्रह्लाद

भिड़े मल्ल ज्यूं पकड़े हरि ज्यू मृग को मृगराज।
अधर जंघो पर धर विभु किये कोप अति गाज॥
किये कोप अतिगाज भाग गये आन असुर समुदाई।
तलखण्डे बिच सध्या अमय विधि वचन सत्य अखराई॥
नख से चीर शरीर बिरोली आंत करी चतुराई।
दर्जी नाथू कहे हिरण्यकश्यपु समर वीर गति पाई॥

झड

पुष्प सुरगण बरसाया, शान्त हरिजन अपनाया।
भक्त को तख्त बिठाया, कयाधू सत बरताया॥
उगणीसौ सत्तर डीडवाने, ख्याल प्रह्लाद का गाया॥ १० ॥

आरती नृसिंह भगवान की

ओऽम् जय नृसिंह भूरा
अद्भुत रुप बनाये समरथ सिद्ध पूरा ।। टेर ।।
निराकार जगे ज्योति लजे कोटि शूरा ।
सिद्धि से सगुण स्वयंभू माया सग जूरा ।। १ ।।
काच प्रकृति मांही ब्रह्म प्रतिविम्ब ठूरा ।
ईश जीव बीजातम, भये जग अकूरा ।। २ ।।
मूल विराट डाल दिक्पति तरु खानी चातूरा ।
फल औतार कहावें, काटन कर्म कूरा ।। ३ ।।
दूध, मक्खन, तेल, तेला, सांठन रस बूरा ।
ज्यू सर्व व्यापक दर्शन, जड़ खम्भा फूरा ।। ४ ।।
आधा अंग धरे नर का, आधा सिंग शूरा ।
विधि वचन पालन को नरहरि वपु - क्रूरा ।। ५ ।।
प्रात रवि ज्यू प्रगटे ववल वंश वमचूरा ।
हिरण्यकश्यप तन फारन, कीना नख छूरा ।। ६ ।।
आरती दीप धूपादि केशर कपूरा ।
पेड़ा भोग लागे झालर नोपत रण तूरा ।। ७ ।।
नाम देव कुल नाथू गा गुण, होवे दुःख दूरा ।
देव पुष्प बरसावे, मन वांछित पूरा ।। ८ ।।

। इति ख्याल भक्त प्रह्लाद का ।

विभिन्न सम्वाद, स्तुति

एव

ललित लीला-काव्य

(समीक्षा)

कवि जन्मता है, बनाया नही जाता है। कविवर नाथूराम जी का काव्य चिन्तन रात दिन चलता रहता था। जन्म से कवि होने के कारण व खाते-पीते, सोने-जागते और चलते फिरते शब्दो की जोड़ तोड़ करते ही रहते थे। यदि कोई लेखक मिल गया तो उससे लिखा लिया, अन्यथा वह सारी दिमागी कसरत अतपंट पर अंकित हो जाती थी। कविवर की साहित्यिक प्रतिभा का नवनीत इन्ही फुटकर रचनाओ मे मिलता है : मानसिक परिपक्वता की स्थिति में रचित ये सम्वाद साहित्य मे बेजोड है। उनकी एक रचना 'राम बाली सम्वाद' 'हरि यश गीतमाला भाग २' मे प्रकाशित हो चुका है, परन्तु निम्न-लिखित रचनाएँ अर्थाभाव से प्रकाशित न हो सकी :—

१) अगद रावण सवाद
२) हिरण्यकश्यप प्रह्लाद सम्वाद
३) रम्भा शुक सम्वाद
४) शिशुपाल देवर भाभी सम्वाद
५) शिशुपाल पाण्डव सम्वाद
६) गीता ज्ञान बत्तीसी
७) देवी गीता अष्टकी
८) नृसिह वीरभद्र सम्वाद
९) हरिहर एकता पच्चीसी
१०) श्री राम शम्बूक सवाद
११) शवरी शिव लीला
१२) अवतारो की लावणी

ये रचनाएँ कविवर के जीवन दर्शन का निचोड है। कई पुराणो, उपनिषदो आदि आर्ष ग्रन्थो के श्रवण-मनन से कविवर ने कथानक को हृदयगम कर उसे अपनी साहित्यिक प्रतिभा रूपी पारस से सोना बना दिया था। कवि ने 'राम बाली सवाद' तो कई सभाओ मे स्वय गाकर भी सुनाया था। छपा हुआ होने के कारण बहुत से व्यक्तियो को वह सवाद याद भी था, इसलिये रसज्ञ जन कवि द्वारा किए गए उस कविता पाठ का आनन्द लेते थे। उनको इतनी आख्यायिकाएँ, अन्तर्कथाएँ तथा

पौराणिक प्रसङ्ग याद थे कि उनकी रचनाओ मे इनकी भरमार रहती थी। विद्वान लोग ही उन अन्तर्कथाओ के जानकार होने से सम्वादो का पूरा आनन्द लेते थे।

रामचरित मानस मे राम-बाली सम्वाद, अङ्गद रावण सम्वाद, रावण हनुमान सम्वाद, लक्ष्मण परशुराम सम्वाद आदि सफलतापूर्वक वर्णित है. परन्तु मारवाडी भाषा मे आम जनता में तर्कों से युक्त सम्वादो का अभाव था, जिसकी पूर्ति कविवर ने अपनी प्रतिभा से की है। उन्होने कवित्त और छप्पय छन्दो मे ही विषय वस्तु का पूर्ण निर्वाह किया है। कही भी कृत्रिमता न्ही आ पाई है, क्योकि कविवर का स्वय का जीवन, खान-पान, बोल-चाल; रहन-सहन कृत्रिमता से विहीन था। इसीलिये कविवर की शैली इतनी आडम्बरहीन विकसित हो सकी थी।

अंगद रावण सम्वाद

यह ४४ कवित्त का सम्वाद है। श्री राम के दूत बनकर अङ्गद रावण के दरबार मे गए हैं वहाँ उन्होने रावण को कई प्रकार से समझाया है कि सीताजी को लौटा दे। रावण द्वारा जिद्द करने पर उन्होने अपना पराक्रम पैर रोप कर प्रदर्शित किया है। रावण और अङ्गद के प्रश्नोत्तर इस भाँति है :—

अंगद का प्रश्न

फणीन्द्र क्या भुजंग सो, क्या ऐरावत मतग सो, क्या नदी जल गंग सो, क्या खग खगराई है।
कामधेनु गऊ समान, क्या पारस है पाषाण, क्या कल्प वृक्ष आन, वृक्ष की नांई है॥
ऐसे राम नांहि नर, काल तेरा जाण खर, बाजीगर काटे सर, होत क्या बड़ाई है।
नाथू कहे अंगद कीस, हे रावण छोड़ रीस, सिया दे नवाय सीस, अभी तो भलाई है॥

रावण का उत्तर

बके मत बता दे बात, भिड़सी को मेरे साथ, नार-शोकी तेरो नाथ, तेहि दुख दुखी भाई है।
तू सुग्रीव नदी कूल, कटणा ज्यो वृक्षमूल, विभीषण के लग्यो शूल, भयभीत सदाई है॥
जाम्बवान बूढो जट, नलनील शिलावट, थां में एक निश्चय भट, लंका जिन जलाई है।
नाथू कहे लकाधीश, युद्ध करूं धार रीस, सिया दूं न जीतो कीश, करे कुण बुराई है॥

इस प्रकार एक दूसरे के तर्कों को अपने पने व्यग्य बाणो से काटते हुए रावण और अगद का मारवाडी भाषा में यह सम्वाद है। यह सम्वाद पढने से इतना आनन्द नही आता जितना सुनने से आता है।

हिरण्यकश्यप प्रह्लाद सम्वाद

५८ छप्पय छन्दो मे रचित यह सम्वाद कविवर के श्रेष्ठ सम्वादो मे से एक है। इसका कथानक सुविख्यात है—हिरण्यकश्यप द्वारा अपने विष्णुभक्त पुत्र प्रह्लाद को कष्ट दिया जाना, उसे विभिन्न उपायों से मारने की चेष्टा करना, होलिका दहन, नृसिंह भगवान का अवतार, हिरण्यकश्यप का बध। प्रारम्भ मे कविवर सम्वाद की सफलता हेतु एक दोहा मगलाचरण हेतु देते है :—

सिद्धि-सदन, करि-वर-वदन, एक-रदन, गणराज।
रगण सगण गण टाल के, दीजे बुद्धि शुभ काज ॥

कविता मे अवांछित गण न आने पावे, इसके लिये कविवर गणेशजी की वन्दना करते है। मर्यादा में बन्धे हुए एक रस सिद्ध कवि का यह कदम सर्वथा उचित है। आजकल की उच्छृ खल काव्य रचना के मु ह पर यह एक करारा तमाचा भी है। बिना गण मिलाए, बेसिरपैर की रचनाये लिखने वाले आजकल के तथाकथित कवि बड़ी हास्यास्पद तुकबन्दी करते है, जिसे वे कविता का नाम देते है।

ऐसी तुकबन्दी जीवन के किन शाश्वत मूल्यो की प्रेरणा देती है, भगवान ही जाने। कविवर ने कथावस्तु, शब्द, छन्द आदि मे कोई स्वच्छन्दता नही बरती और सत्साहित्य ही रचा, तभी उनका साहित्य अजर अमर है।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ॥

सम्वाद की बानगी देखिये—

हिरण्यकश्यप का प्रश्न

इधर आव प्रह्लाद आज सन्मुख हमारे।
मै पूछत हूँ तोय ध्यान क्या जँचा तुम्हारे ॥
पढने को चटशाल लाल भेजा था तुमको।
सो क्या विद्या पढी भेद बतला दे हमको ॥
चार वेद षट् शास्त्र विद्या पढ हो शास्त्री।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि ॥

प्रह्लाद का उत्तर

चार वेद षट्शास्त्र सम्मति आदि पुराणा।
सभी ही का सारांश अर्ध श्लोक में आना ॥
ब्रह्म सत्य जग मिथ्या जान मन धारण कीन्हा।
यह मै विद्या पढी सफल होवेगा जीना ॥

और विद्या सब अविद्या, हरि भक्ति विद्या खरी ॥
नाथू कहे प्रह्लाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥

इस प्रकार भावों से भरा हुआ और सरसता से सना हुआ सम्वाद साहित्य प्रेमियो के लिये रसास्वादन की वस्तु है ।

रम्भा-शुक सवाद (षोड़सी)

१६ छप्पय छन्दो का यह छोटा सा सम्वाद योग वल की महत्ता बतलाता है। श्री शुकदेव मुनि के तपोवल से जब इन्द्रासन डोल उठा तो देवराज इन्द्र ने अपनी शिरोमणि अप्सरा रम्भा को मुनीश्वर का तप भंग करने हेतु भेजा। रम्भा ने शुक मुनि को कई सरसब्ज बाग दिखलाए, परन्तु मुनि के प्रबल ज्ञान और वैराग्य के सामने उसकी एक न चली और वह अपने उद्देश्य मे असफल होकर, मुंह की खाकर लौट गई।

रम्भा का वचन

पलक खोलकर देख लेवो जी छवि मुनीश्वर।
महासुखों की खान खड़ी मै परी मनोहर ॥
काम केलि हित खूब वर्षा ऋतु मघवा कीन्हीं।
फूले खुशबूदार सघन बन समय नवीनी ॥
इसी वक्त नव यौवन नर नाहीं भोगी तिया ॥
नाथू कहे रम्भा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया ॥

शुक का उत्तर

देखण लायक रूप एक विष्णु नारायण।
छवि सागर भगवान ललित अंग परम परायण ॥
जिनके दर्शन हेत कई सुरनर मुनि ज्ञानी।
नारी निन्दनीय लखतज भए बनवासी ध्यानी ॥
जतन कर उस प्रभु का मनुष्य सुमिरन ना किया ॥
नाथू कहे यों शुक मुनि हे परी, जिनका धृक् जिया।

इन्ही भावो को लिये हुए यह सम्वाद षोडसी आद्योपान्त शिक्षाप्रद है और पुनः पुन. पठनीय है।

शिशुपाल-देवर भाभी सम्वाद

बत्तीस कवित्त छन्दो मे रचित यह सम्वाद करीब ४० वर्ष पहले कविवर ने दो पात्रों के मुख से गवाया था। लालबाग नामक स्थान पर सध्या समय कई नागरिक

भ्रमणार्थ एकत्रित होते थे और वहाँ के बाबा पूरनदासजी अच्छे संगीतज्ञ थे। उस स्थान पर कविवर ने यह सम्वाद बुलवाया था और जहाँ मात्रा भग होता था, वहाँ हाथोहाथ ठीक भी कर दिया था।

इसका कथानक श्रीमद्‌भागवत से लिया हुआ है। कुनणपुर राजा की कन्या रुक्मिणी का स्वयम्बर होने वाला था। भगवान कृष्ण उस स्वयम्बर में जाकर रुक्मिणी का वरण करना चाहते थे। इधर कृष्ण का प्रतिद्वन्द्वी शिशुपाल भी रुक्मिणी को ब्याहना चाहता था। शिशुपाल की भाभी बडी चतुर थी। उसने रग ढग देखकर निष्कर्ष निकाल लिया था कि रुक्मिणी किसी हालत मे शिशुपाल को वरण नही कर सकती। अतः उसने शिशुपाल को सलाह दी कि रुक्मिणी की आशा छोड दो। उन्ही दोनो का यह सम्वाद है। अन्त मे वही हुआ कि शिशुपाल को मुँह की खानी पडी।

सम्वाद शैली का उत्कृष्ट नमूना देखिए —

शिशुपाल का वचन

कुनणपुर भींव द्वार, दुलवी है उम्मेदवार, रूप गुण अपार देख, भाभी मन लुभावेगो।
जोय के ठिकाणो नीको, पठायो है कुँवर टीको, मगलाचार की तींको, आनन्द घणो आवेगो।
सुनी एक बात और, सुन्दर हित बाँध मौर, आवेगो माखन चोर, महिमा क्या पावेगो।
नाथू कवि कहे जोड़ शिशुपाल कर मरोड़, मांग दूँ नहीं छोड़ कैसे रणछोड ब्यावेगो॥

भाभी का उत्तर

कुनणपुर भींव द्वार, लला हरि उम्मेदवार, कमलावतार वाको जस जग में छावेगो।
वो तो है अनादि कंत, वोहि सर्व शक्तिमन्त, महिमा है अनन्त जांको पार कौन पावेगो॥
मेरे से छोटी बहन, वरो रूप भरी मैन, टीको पा फेर चेन, जबहि तोय आवेगो।
नाथू कवि कहे जोड भाभी बुझावे टेक छोड, रुक्मण पै न बाँध मौड, रणछोड ब्यावेगो॥

इस प्रकार अनोखी कल्पना शक्ति की उडान भरते हुए, अपने अपने तर्को को पुष्ट करते हुए शिशुपाल और उसकी भाभी का सम्वाद ३२ कवित्त छन्दो मे चलता है। नीति रस मे सराबोर कुछ पक्तिया वास्तव मे सभी के लिये माननीय है —

कूप मे पसारे पाँय, अग्नि में कर चलाय,
अम्बर मे पत्थर बाय, सो तो दुख पावेगो।
जाणकर जहर खाय, चालणी में दूध दुहाय,
करमां ने दोष लाय, मूर्ख सो कहावेगो॥

शिशुपाल पाण्डव सम्वाद

३२ कवित्त छन्दो मे रचित यह सम्वाद कल्पना की ऊंची उड़ान, तर्को की अकाट्यता, पौराणिक उपाख्यानो का प्रसगानुकूल समावेश एव शब्द चयन की सार्थकता के कारण बहुत अच्छा बन पडा है। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे सर्व सम्मति से कृष्ण को

हो प्रधान पूज्य महापुरुष के रूप में मान्यता दी गई तो चन्देरी नरेश बौखलाया। कृष्ण से उनका वैमनस्य था ही, अतः वह कृष्ण के इस सम्मान को सहन नही कर सका और गालिया बकने लगा। श्रीकृष्ण उन गालियो की गिनती करने लगे, क्योकि उन्होने उसकी माता को पहले वरदान दिया था कि शिशुपाल के सौ अपराधो को वे क्षमा कर देंगे। जब शिशुपाल ने सौ गालिया बक दी और युधिष्ठिर के मना करने पर भी नही माना तो श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का सिर धड से अलग कर दिया। यही प्रसङ्ग कविवर ने अपनी मनोग्राही शैली मे शिशुपाल और युधिष्ठिर के सम्वाद के रूप में निम्न प्रारम्भिक कवित्तो द्वारा दिया है :—

शिशुपाल का वचन

राजन् धर्मावतार, अर्जुन भीम जोधार, जाणे माद्रीकुमार, शास्त्र के सार ने।
ऐसे ज्ञानी होय सेर, यज्ञ की होती वेर, मान लियो बड़ो गैर गूजर इस गँवार ने॥
क्या कुसगत का असर, या भए बुद्धि बिसर, कीन्हीं या घसर पसर धर्म को बिगारने।
नाथू कहे शिशुपाल हे पाण्डव महिपाल, नन्दलाल पशुपाल पूजे केहि कारने।

युधिष्ठिर का उत्तर

हे चन्देरी धरापति, ना अयोग्य बात रत्ती, कुजबान बोलमती, ऐसे सरदार ने।
वसुदेव को फरजन्द, जदुकुल बीच चन्द, सन्तन के सुखकन्द, प्रिय संसार ने॥
इन सिवा पूजा जोग, बता और कौन लोग, देने सुरानन्द भोग, भजन भव विकार ने।
नाथू कहे कुन्तीलाल, चुप रह शिशुपाल, नन्दलाल विश्वपाल पूजे एहि कारने॥

एक सुनिश्चित कथानक की सीमा मे रह कर छन्द के नियमो मे आबद्ध होकर खण्डन-मण्डन विधि से सम्वाद लिखना कितना कठिन कार्य है, इसको आज के तथाकथित कविगण नही अनुभव कर सकते, क्योकि आजकल ऐसा कोई बन्धन नही है। कविता (तथा प्रत्येक) क्षेत्र मे स्वच्छन्दता का वातावरण है। परन्तु कविवर के युग मे स्वच्छन्दता नही थी। इसीलिए प्रतिभावान जन्मजात कवि हुए बिना सम्वाद शैली अपनाना वास्तव मे कठिन कार्य था। कविवर ने सफलतापूर्वक इस विधि को अपनाया, यह प्रशसनीय कार्य था। सम्वाद का उपसहार कितना प्रभावोत्पादक बन पडा है —

पूरा गुनाह भया खल, पूरा ले निन्दा-फल, आता है चक्र चल, तेरा सिर उतारने।
कं तो शमशेर फेर, डटे नाथ चक्र सेर, खूब पाल्यो भाव वैर, मुनि शाप धारने॥
भयो दुष्ट को विनाश, ज्योति जीव उड़ो आकाश, कियो कृष्ण सुख वास,
जन्म को सुधारने।
नाथू कहे कुन्तीलाल, चुप रह शिशुपाल, नन्दलाल विश्वपाल, पूजे एहि कारने॥

गीता-ज्ञान-बत्तीसी

"समता, त्याग सिखावनि, हरि मुख की बानी, सकल शास्त्र की स्वामिनि, श्रुतियो की रानी" गीता की व्याख्या सन्तो, आचार्यो, और विद्वानो ने अपने अपने सिद्धान्तानुसार की है। रामानुज भाष्य, शकर भाष्य, विनोबा का गीता प्रवचन, लोकमान्य तिलक का कर्मयोग-शास्त्र आदि सैकडो ग्रन्थो मे गीता-ज्ञान-नवनीत हमारे लिए उपलब्ध है। कविवर नाथूराम जी ने भी अपनी भावना एव सिद्धान्तानुसार गीता के महान ज्ञान को ३२ हरिगीतिका छन्दो मे निचोड़ दिया है। कविवर ने गीता के अध्याय ३ (कर्मयोग), अध्याय ४ (ज्ञान कर्म सन्यास योग) तथा अध्याय ५ (कर्म सन्यास योग) में प्रतिपादित दर्शन को महत्वपूर्ण माना है और इन्ही को आधार मान कर अपनी साकार उपासना पद्धति की उपादेयता बतलाई है। दर्शन शास्त्र उन व्यक्तियो के लिए शुष्क विषय है जो शास्त्रो की गहराई मे नही पैठे हैं। कविवर ने इसको अपने ढग से सरल करके समझाया है :—

बन्दौं गुरु नन्दलाल उर दिए ज्ञान जो करें सम हरन।
जग भूप बरसे अनूप अनाम दिव्य गुण अप्परन॥
गुण प्रभाव बहु राव रकादि स्वभाव चराचरन।
स्वप्नवत् भासे असत् सत् सत्य भाव मतान्तरन॥

जिस प्रकार भगवान ने अपना विराट स्वरूप अर्जुन को दिखाने के लिए उसको दिव्य चक्षु दिए :—

न तु मा शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्य ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्॥

उसी भाँति कविवर नाथूराम जी ने अपने 'गीता ज्ञान बत्तीसी" रूपी नेत्रो द्वारा समाज को गीता का गहन तत्व समझाने का प्रयत्न किया है।

देवी गीता अष्टकी

डीडवाना का पाढा माता मन्दिर देवो के सिद्ध पीठो मे से एक है। इसका उल्लेख कविवर ने अपनी एक प्रकाशित लावणी में भी किया है। आठ कवित्त छन्दो में कविवर ने देवी गीता का ज्ञान सरल भाषा मे जन साधारण को दिया है। उन्होने देवी के महामाया स्वरूप का मनन किया है —

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हिसा।
बलादाकाष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

प्रथम कवित्त देखिए —

सच्चिदानन्द सोह ॐ ऐ ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा सिद्ध मन्त्रमणि दियम्बा है।
जप तप बल भर प्रभुता षट् सिद्धि अठ, चित्र काव्य कला नट, प्रकृति आलम्बा है॥

विराट् हिरण्यगर्भ पुरुष, स्वामी मानादि सर्वस, होय दृष्टा दृष्टी दरस, मिले ज्यों लोचुम्बा है।
"नाथू"नामदेववंशी, तिहारे ही अंशा अंशी, क्यों रुलाय करा हँसी, तेरा हाथ लम्बा है॥

इसी प्रकार अन्य सारे कवित्त देवी की स्तुति से भरे पड़े है और ज्ञान के अजस्र स्रोत हैं। कविवर ने फलश्रुति भी लिखी है :—

देवी गीता अष्टकी, पढ़ सुण करज्यो विचार।
नाथू शुद्ध मति घट लखे, भगवती का दीदार॥

नृसिह-वरभद्र सवाद

२० कवित्त छन्दो मे रचित यह सम्वाद नृसिहावतार के समय का है। जब भगवान ने नृसिह रूप धर कर अत्याचारी हिरण्यकश्यप को मार कर भक्त प्रह्लाद की रक्षा की, उसके बहुत देर बाद तक भगवान का कोप शान्त नही हुआ था। वे बार बार सिंह गर्जना कर रहे थे और विलम्ब से आने के कारण भक्त से क्षमा याचना सी कर रहे थे। शिवजी ने भगवान का वह संहारी रूप देखकर विचार किया कि भगवान स्वय ही सारा सहार कर देंगे तो मेरे पास करने को क्या बच रहेगा। अत: उन्होने अपने विश्वासी दूत (गण) वीरभद्र को नृसिह के पास क्रोध शान्त करने हेतु भेजा। यह वही वीरभद्र था जिसे शिवजी ने दक्ष यज्ञ मे सती के जल जाने के बाद यज्ञ-विध्वंस हेतु भेजा था।

समाचार जब शंकर पाए।
वीरभद्र करि कोप पठाए॥

वीरभद्र ने नृसिह भगवान के पास जाकर उनसे शान्त होने की प्रार्थना की। उस समय का यह वार्तालाप है। प्रारम्भ के दो पद देखिए :—

वीरभद्र का प्रश्न

बन्दौं पद नारायण, शान्त पुण्डरीक नयन, पराए औगुण सहन, शक्ति तव अपारी है।
गौ गरीब जुलम घोर, करते डाकू चोर, आय नृप खुफिया तौर करते खल ख्वारी है॥
ज्यो ही धर्म भक्त हेत, अन्त मे अवतार लेत, दुष्टो को दण्ड देत, नीति अनुसारी है।
नाथू कहे वीरभद्र, हे हरि शत समुद्र, हते फार देत उदर, अब क्यो रीस धारी है॥

नृसिह भगवान का उत्तर

सृष्टि रचे विधि वाल, पहले स्वप्न सचा ढाल, पीछे काम काला घाल, विवाहे नरनारी है।
मैं घन हो करूँ पाल, चातक मुख बूँद डाल, पुनि दूध कूच विशाल, करे मोह महतारी है॥
नाती काल करे चट, ज्यो विदारे जीर्ण पट, ऐसा मेरा भेष नट, मूरख दे विसारी है।
नाथू कहे नरहरि, धर्म भक्त जीव री, ताकी वीर होय अरि, यूँ अब रीस धारी है॥

हरि-हर-एकता-पच्चस

कविवर द्वारा रचित इस सवाद-शृ खला की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी यह पच्चीसी है जो भाव पक्ष तथा कलापक्ष दोनों दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ है जब कविवर अपने स्वजातीय सन्त "भक्त नामदेव" (भक्तमाल) ग्रन्थ की रचना कर रहे थे, उस समय हरि-हर एकता का प्रसग आया हुआ था। भक्त नामदेव सात वर्ष के थे तभी वे भगवान पाडुरग के सामने "हरिहर" नाम जपते हुए नाचते थे। उनकी उत्कट भक्ति देखकर भगवान भी "हर हर" नाम जपते हुए उनके साथ नाचने लगे। क्योकि भगवान अपने मुख से अपना नाम कैसे लेते ? भक्त नामदेव ने उनसे "हरि हरि" बोलने को कहा तो भगवान ने कहा कि "हरि हर" एक ही नाम के दो रूप है, उनमें किंचित मात्र भी भेद नही है।

यः केशव भजति निन्दति नीलकण्ठम्,
यो वा शिव भजति निन्दति वासुदेवम्।
शास्त्रोक्तितस्तु शिवकेशवयोरभेदात्,
स्वामिद्रुहाविति न सद्गतिमाप्नुयाताम् ॥

(जो कोई श्री विष्णु भगवान की भक्ति करके श्री महादेव की निन्दा करता है, अथवा श्री महादेव की भक्ति करके श्री विष्णु की निन्दा करता है, उन दोनो को परम गति प्राप्त नही हो सकती, क्योकि शास्त्रानुसार दोनो मे भेद नही है; केवल उन दोनो के उपासको ने भेद मान लिया है।)

"श्री रामचरित मानस" मे भी भगवान राम के वचन हैं —

शिव द्रोही मम दास कहावे।
सो नर सपनेहुं सुख नहीं पावे ॥

डीडवाना मे वैष्णव सम्प्रदाय के दो बडे मन्दिर है जब कि शैव सम्प्रदाय की कोई बडी गद्दी नही है। अधिकतर श्रीसम्पन्न लोग वैष्णव मत ही मानने वाले है, अतः वैष्णवो और शैवो मे कोई गलतफहमी न हो, इस दृष्टि से कविवर ने हरिहर एकता बढाने के लिए ये पच्चीस कवित्त अलग ही रच दिए हैं। ये कवित्त कविवर के जीवन की परिपक्व अवस्था मे लिखे गए थे, अत कविवर के समग्र जीवन-दर्शन का निचोड इनमे है, यह निर्विवाद बात है।

कविवर ने "गर्ग सहिता", 'श्रीमद्भागवत", "हरिवश पुराण', "शिवपुराण" आदि का हवाला देकर यह पच्चीसी रची है जो साहित्य की एक अक्षय निधि है। प्रथम कवित्त देखिए

शंकर कल्याण करन, विष्णु विश्व पोषण भरण, नमो युग चरण, ईश भंजन भर्व कूप है।
जगन्नाथ, विश्वनाथ, सारंग सर शूल हाथ, गवर श्याम गात साथ, श्री उमा अनूप है ॥

कैलाशी बैकुण्ठवासी, गीतादि गुणराशि, भुजग गग सग अंग, दोऊ देव भूप है।
नाथू कहे भेद वादी, वृथा करे खण्ड मण्ड, हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्मरूप हैं॥

श्रीराम-शम्बूक सम्वाद

१६ छप्पय छन्दो की यह षोडसी श्रीराम एव शूद्र शम्बूक का वार्तालाप चित्रित करती है। रामराज्य मे एक ब्राह्मण का नौजवान पुत्र मर गया। ब्राह्मण उस लाश को लेकर राजदरबार मे आया और अर्ज की कि राम राज्य मे अन्याय बढ जाने से ही पिता के सामने नौजवान पुत्र की मृत्यु हुई है। राजा ही काल का कारण होता है। राजा कालस्य कारणम्। "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवसि नरक अधिकारी।" राजा के पाप का फल प्रजा को भोगना पडता है। राम ने यह सुनकर पता लगाया कि राज्य में कहाँ अन्याय हो रहा है। अन्त मे जासूसो द्वारा पता लगा कि शम्बूक नामक एक शूद्र सदेह स्वर्ग जाने के लिए वृक्ष से उल्टा लटक कर तपस्या कर रहा है। राम स्वय वहाँ गए और शम्बूक से बातचीत की :—

राम का वचन

निर्जन बन के बीच बड़े दरखत की शाखा।
चरण बाँध कर सीस अधो लटकाए राखा॥
औंधा झोंटा खात कष्ट बहु होता तन में।
भूखा प्यासा अड़ा, लगी क्या आशा मन में॥
बता नाम वर्ण हाल सब, नहीं सिर कट हो दूर ये॥
नाथू कहे श्रीराम तपसी, क्यों किए कर्म करूर ये॥

शम्बूक का वचन

पुष्प विमान मे बैठ राम चहुं दिशि फिर आए।
क्या पूछो निज निज उन्नति हित विश्व उमाए॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरादि सब तप से त्राता।
देह सहित सुर पुर जाने को अंग तपाता॥
शम्बुक नामी शूद्र हूँ क्यों कफगी गुण सूर ये॥
नाथू कहे तपसी रघुवर यो किये कर्म करूर ये॥

शबरी-शिव लीला

लघु ख्याल

लोकश्रुति के अनुसार एक बार शिवजी कैलाश छोडकर तपस्या हेतु अन्यत्र गए। पीछे से पार्वती एक भीलनी (सुन्दर स्त्री) का रूप बनाकर उनको छलने आई। उसने

शिवजी का तप खण्डित कर दिया और शिवजी उससे प्रेम की वार्ता करने लगे। शिवजी ने उसे कहा कि तुम हमारे साथ कैलाश चलो। वहाँ पार्वती को मैके भेजकर दोनो साथ रहेगे। भीलनी के वेश मे पार्वती ने कहा कि बैल पर बैठते डर लगता है। शिवजी उसको अपने कन्धो पर बैठाकर कैलाश लाए और पार्वती को पुकारा कि एक अन्य स्त्री को तुम्हारी सहेली के रूप मे लाए है। पार्वती अपनी माया से कुटी मे पहले ही जा चुकी थी। उसने आवाज दी कि उस सहेली को ले आओ। शिवजी ने कन्धा खाली पाया। तब उनको पता लगा कि वास्तव मे पार्वती ही थी जो भीलनी बनकर उनके प्रेम की परीक्षा लेने आई थी।

इसी आशय का एक पद भी कविवर ने "हरियश गीतमाला" भाग १ मे लिखा है 'हाँ भीलनी बन शिव प्यारी, छल लीना शकर त्रिपुरारी।'

यह लघु ख्याल सगीतज्ञ गुलाबचन्द दर्जी की सहायता से राग रागिनियाँ जमाकर कविवर ने रचा है। आरम्भिक कवित्त देखिए —

शंकर सुत रटूँ तोय, सुमति वर दीजो मोय, आज काज सिद्ध होय, ये ही वर चाहता हूँ।
शारदा गुण हिये डाल, अवगुण और कुमति टाल, बालक लख करो पाल, अष्ट प्रहर ध्याता हूं॥
नन्दलाल ज्ञानवान, गुरु का मै धरूँ ध्यान, महफिल दरम्यान आन इलम आजमाता हूं।
नाथू कहे शक्तिमात, भीलनी बनाए जात, छल लीन्हा विश्वनाथ, लीला सो ही गाता हूं॥

१५ पृष्ठो की यह रचना लावणियो मे रची गई है। अन्त मे "जय शिव अविनाशी" शीर्षक से शिवजी की एक आरती दी गई है।

अवतारो की लावणी

भारतवर्ष की रत्नगर्भा वसुन्धरा कभी भी नर रत्नो से खाली नही रही है। देवता भी यहाँ जन्म लेने को तरसते है।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

भगवान स्वय "धर्मसस्थापनार्थाय" आवश्यकतानुसार यहाँ अवतार लेते है और कई आदर्श एव मर्यादाएँ कायम करके महाप्रयाण करते है। इसीलिए कविवर लिखते हैं—

दरशे अनेक बणगटी भेष नर नारी।
नटवर नाटक में पार्ट सजे खिलदारी॥
महाराज विश्व अद्भुत रचधारी जी।
प्रभु आपहि कर्म बताय देन फल हो अवतारी जी॥

प्रस्तुत लावणी रचने के लिए कवि ने धर्म शास्त्रो का गहन अध्ययन, श्रवण, मनन किया है। महाभारत, भागवत्, वेदान्त एव पुराणो की गहराइयो मे जाकर उन्होने युगयुग में होने वाले भगवान् के अवतारो का साधिकार वर्णन किया है। स्वायम्भू,

स्वरोचिस, तामस, रैवत, चाक्षुस, एव वैवस्वत मनवन्तरो मे होने वाले अवतारो का सुन्दर चित्रण किया गया है। भविष्यत् आठवे सावर्णी मनवन्तर की तो इतनी विशद व्याख्या की गई है कि इसके दक्ष सावर्णी, ब्रह्म सावर्णी, धर्म सावर्णी, रुद्र सावर्णी, इन्द्र सावर्णी आदि मे घटित होने वाली घटनाओ को पढकर कवि की प्रतिभा निखर कर हमारे सामने आती है और हमे इसके लिए दाँतो तले उँगली दबानी पड़ती है। कविवर ने "पुरुष सूक्त" के "ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत्" मन्त्र का भावानुवाद निम्नलिखित भाँति किया है :—

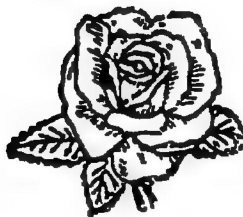
विराट के मुख ज्ञान दिव्य तन ब्राह्मण षट्कर्मी बने।
भुज रजोगुण रक्त वपु रजपूत रक्षा हित जने॥
उर सतोगुणी गवर पोतेदार बनिया बिणजने।
पग तम से कारे शूद्र सेवक कर्म लिखते नृप कने॥

प्रत्येक युग मे होने वाले अवतार का पूरा इतिहास, कारण एव फलितार्थ इस ढग से लिखे गए है कि पाठक की रुचि बराबर बनी रहती है। सरल भाषा मे अवतारो के कार्य बताए गए है और अन्त तक उनका सही सिलसिला रक्खा गया है, जैसे :—

अठारहवाँ धन्वन्तरि अमृत कलश ले प्रगटे।
जबरदस्ती दैत्य छीना अमीघट पीवन डटे॥
देवता बिलखे रहे जब दीनबन्धु को रटे।
उन्नीसवां बन मोहिनी आए, खलों का तप घटे॥

इस प्रकार कविवर ने अवतारो का सांगोपाग वर्णन करके सिद्ध किया है कि गहन अध्ययन विना कोई व्यक्ति साधिकार नही लिख सकता। बड़े परिश्रम से तैयार की हुई यह लावणी मनन करने योग्य है। अन्त मे २४ अवतारो का नाम देते हुए एक कवित्त भी दे दिया गया है, जिससे यह लावणी अपने मे एक पूर्ण कृति है।

इसके अतिरिक्त कविवर के कितने अन्य सम्वाद, पद, भजन आदि कहाँ कहाँ पर दबे पडे है, भगवान को ही पता है।



अवतारों की लावणी

नमो सच्चिदानन्द ज्योति ज्यूं रही नभ जूप है।
निर्गुण रवि शशि सगुण तारा जीव माया निशि रूप है।
आदि पुरुषावतार चौबीस तन्मयी अग अनूप है।
विराट माया शक्ति सत रज तम गुणातम भूप है॥
दरशे अनेक बणगटी भेष नरनारी।
नटवर नाटक में पार्ट सजे खिलदारी॥
महाराज विश्व अद्भुत रचधारी जी।
प्रभु आपहि कर्म बताय देन फल हो अवतारी जी॥ टेर॥
हिये खम्भ ब्रह्म बहु सचा चित्र विशाला।
रच उद्भिज रज वीरज विषम विधि ढाला॥
महाराज चौरासी लख नरमादी जी।
महाराज कर्मगति भीनी बना दी जी॥
पर करम भरम कर पुर्जा बिगड़ कुचाला।
जब नारायण अवतार सुधी करे पाला॥

शेर—विराट के मुख ज्ञान दिव्य तन ब्राह्मण षट् कर्मी बने।
भुज रजो गुण रक्त वपु रजपूत रक्षा हित जने॥
उर सतोगुणी गवर पोतेदार बणिया बिणजने।
पग तन से कारे शूद्र सेवक कर्म लिखते नृप कने॥

चौपाई—उच्च वर्णो बर नीचो दुलारी।
जाति जमी कई हुन्नरकारी॥
नीच पिता और उच्च महतारी।
सुपच सहित चर्म कठकारी॥
निज जाति कर्म पतिव्रत दया सुखदायक।
पर हुन्नर चोरी व्यभिचार हत्या दुखदायक॥
महाराज रूप धर अधम-उधारी जी॥ प्रभु० ॥ १ ॥
दूजा ब्रह्मा के मानस पुत्र निरंजन।
भए सनन्दन सनत्कुमार सनातन॥
महाराज ब्रह्मचर्य वो अखण्डित पाल।
आतम तत् उपदेश दिया परमारथ पथ पर चाल॥

तीजा अवतार ब्रह्म ऋषियों में नारद मुनि।
ये पच रात्र अगम्य बनाए हरिजन॥
महाराज बजाते महती वीणा रसाल।
देव काज करे घूम हर जगह झगड़ा देते डाल॥

शेर—दक्ष प्रजापति सुता मूर्ति धर्म ऋषि नामावरी।
तार घर आखातीज चौथा नरनारायण देह धरी॥
घोर तप दोउ किए भेजी इन्द्र उर्वशी परी।
प्रभु रची लाखो उर्वशी, जब उर्वशी लज्जा मरी॥

चौपाई—लख वर्ष धर्मी जन स्वराजी।
डिगी नीति दण्ड कथे ब्रह्माजी॥
ब्रजावतार बन किए जग राजी।
उस कुल पृथु यश नौबत बाजी॥
प्रथम स्वयंभू मनु शतरूपा रानी।
कर्दम वरी देवहूति, कपिल भए ज्ञानी॥
महाराज सांख्य विद्या प्रचारी जी॥ प्रभु०॥ २॥

स्वायम्भू मनवन्तर में रुचि नामा॥
प्रजापति बरी आकूति सुख धामा॥
महाराज ताके अवतरे यज्ञ भगवान।
राणी दक्षिणा वर पैदा किए वामदेव सन्तान॥
उस मनु के बाद खुद इन्द्र बने अभिरामा।
सब दैत्य मार करि जग की सहाय गुण ग्रामा॥
महाराज प्रजापति सुत पाके अस्थान।
माता प्रश्नी गर्भ अवतरे सोही नवमां जान॥

शेर—ये ही प्रभु अवतार ध्रुव को राज अटल पदवी दई।
दूजे स्वारोचिस मनवन्तर कथा है वरणी नई॥
वेदशिरा ऋषि तात मात तुषिता के उर भई।
दसवां विभु रूप प्रगटे विभूति जग छा गई॥

चौपाई—ये प्रभु भए बाल ब्रह्मचारी।
सहस अठ्यासी मुनि शिष्य द्वारी॥
तीजा उत्तम मनु समय शुभकारी।
धर्म तात सूनरता महतारी॥
ताके भए ग्यारहवें सत्यसेन भगवाना।
संग सत्यवादी देव विशेष बखाना॥
महाराज इन्द्र सत्जित हितकारी जी॥ प्रभु०॥ ३॥

चोथे तामस मनवन्तर के माहीं।
हरि मेघा पिता मा हरिणी के हित ताहीं ॥
महाराज बारहवां हरि अवतार विख्यात।
गज को ग्राह से छुड़ाय मुक्ति दी लिखी भागवत बात ॥
पचम रैवत मनवन्तर में गुसाईं।
सुभृत पिता वैकुण्ठा मां पड़ो पाई ॥
महाराज तेरहवां वैकुण्ठा जग त्रात।
वैकुण्ठ देवता सहित रमा वैकुण्ठ रचा दर्शात् ॥

शेर—उस रमा वैकुण्ठ के जय विजय अनुचर भए।
सनकादिकों के शाप से दो पुत्र दिति के हो गए ॥
हिरण्याक्ष ले गए भू रसातल विधि करतब जल में बहे।
जब विधाता करी विनति खुद प्रगटे करुणामये ॥

चौपाई—भादवा सुदी तीज हरद्वारे।
वाराह रूप चौदहवां धारे ॥
जाय रसातल दुष्ट सघारे।
पृथ्वी लाय अज कारज सारे ॥
पन्द्रहवां नृसिंह सुद वैशाख चौदस ने।
मुल्तान पुरी हो मार्‌यो हिरणाकुश ने ॥
महाराज प्रह्लाद के सब दुख टारी जी ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

अब छठे चाक्षुस मन्वन्तर की गाथा।
वैराज सुमति माता हित जगन्नाथा ॥
महाराज सोलहवें भए अजित भगवान।
क्षीर समुद्र मथाया देकर सुर-असुरों को ज्ञान ॥
मन्दराचल मगवाए देव कर साथा।
नेता अहि को पूंछ देवता, असुर गहे माथा ॥
महाराज सुदी वैशाख पूनम शुभ जान।
भए सत्रहवां कमठ पीठ धर गिरि को फूल समान ॥

शेर—अठारहवा धन्वन्तरि अमृत कलश ले प्रगटे।
जबरदस्ती दैत्य छीना अमीघट पीवन डटे ॥
देवता बिलखे रहे जब दीनबन्धु को रटे।
उगणीसवां बन मोहिनी आए, खलों का तप घटे ॥

चौपाई—दैत्य मोहिनी रूप निहारा।
भए कामवश मति भ्रम सारा॥
सौंप सुधा घट वचन उचारा।
बाँट सुन्दरी नीति अनुसारा॥
कर छल चतुराई देवों को अमी पाया।
खल वेईमानो का परिश्रम विफल गँवाया॥
महाराज देव करी जय जय कारी जी॥ प्रभु०॥ ५॥

दिन अस्त होत ब्रह्मा जी सुख भर सूता।
मुख सेती निकल रहे वेद ज्ञान अद्भूता॥
महाराज दैत्य वह ज्ञान ले गया चोर।
सुद चैत्र तीज मच्छ होय बीसवाँ, असुर हना कमठौर॥
सत्य व्रत को दिखाई पहले आप प्रभूता।
दिये वेद ब्रह्म को रचन ज्ञान प्रसूता॥
महाराज पिता नाभि मनु के तप जोर।
मरुदेवी के भए फागुन सुद ग्यारस ऋषभ किशोर॥

शेर—ब्रह्मचर्य गृहस्थ आश्रम साज फिर बन में गए।
योगी परमहंस हो वैराग्य सिखलाते भए॥
अनुसूया अत्रि ऋषि पति पूज फल लीन्हे नए।
बाइसवां मगसर सुदी पूनम जन्म त्रिगुणमये॥

चौपाई—दत्त चौबीस मत लिए आह्लादा।
त्यागी विषम वारुणी उन्मादा॥
यदु अलर्क भुज सहस प्रह्लादा।
मुक्त चतुर्नृप ताके प्रसादा॥
वे अत्रिपूत अवधूत ज्ञान प्रचारा।
अद्वितीय ब्रह्म लखाय किए निस्तारा॥
महाराज दत्त की महिमा अपारी जी॥ प्रभु०॥ ६॥

तेईसवाँ ब्रह्मयज्ञ से निकले हयग्रीवा।
श्रुतिहित मारे खल मधुसूदन बलसींवा॥
महाराज चौबीसवाँ हंस रूप सरनाम।
जड़चेतन का किया निरूपण बता भक्ति निष्काम॥
वर्तमान सातवाँ वैवस्वत मनु जगवीवा।
कश्यप पति भक्ति अमी अदिति पीवा॥
महाराज भादो सुद बारस बावन नाम।
जन्मे अदिति कोख पच्चीसवाँ मध्यान्हा सुखधाम॥

शेर—उपेन्द्र छल बल पठा सुतल खुद बणे दरपाल जी ॥
श्री रक्षा दक्षिणा दई चौमासे की शर्त घालजी ॥
जमदग्नि पितु मा रेणुका के गर्भवीर विशाल जी ।
छब्बीसवाँ परशुराम जन्मे तीज अक्षय बाल जी ॥
चौपाई—कोप यज्ञ हुते क्षत्री अनारी ।
मारे परशुधर इक्कीस वारी ॥
पुलस्त्य कुल भये भूप सुरारी ।
रावण से खल हतन मुरारी ।
नृप दशरथ कौशल्या की कुक्षा ।
भए सत्ताईसवाँ राम देन फल मुक्षा ॥
महाराज चैत्र सुदी नम शुभ वारी जी ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

मुनि पाराशर से सत्यवती के उर में ।
अवतरे अठाईसवाँ वेद व्यास द्वापर में ।
महाराज भारत भागवत वेदान्त पुराण ।
आप चिरजी होय बनाए करण विश्व कल्याण ॥
घुसो महा अनीति कौरव कसादि असुर में ।
वसुदेव देवकी हित प्रगटे मधुपुर में ॥
महाराज गुणतीसवाँ सर्व शक्तिमान ।
भादवा बदी आठें निशि जन्मे कृष्णचन्द्र भगवान ॥

शेर—गया देश में जिन पिता घर कलि लगते अवतरे ।
तीसवाँ भगवान बुद्ध आसोज सुद दशमी खरे ॥
सुर-वदिकों का यज्ञ छुड़ा के दया मत कायम करे ।
कलि अन्त मुरादाबाद शम्भल ग्राम कल्कि तन धरे ॥
चौपाई—सो धर्म यश द्विज के हितकारी ।
भए कई बार फिर होगे अगारी ॥
मोर म्लेच्छ हो तुरंत असवारी ।
सो इकतीसवाँ प्रभु असि धारी ॥
भविष्यत आठवाँ मनवन्तर सावर्णी ।
पितु देवगुहे से मात सरस्वती बरणी ।
महाराज अवतरे बलि सुख कारी जी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥

सो सार्वभौम बत्तीसवाँ पुरन्दर पुर को ।
लेके दे बलि को इन्द्र करे पति सुर को ॥
महाराज दक्ष सावर्णी नवां मनुराज ।
आयुष्मान पिता अम्बधारा माता के सारण काज ॥

फिर ऋषभ तेतीसवाँ हो अवतार धर्म के धुर को ।।
अद्भुत इन्द्र को पद दे अमरापुर को ।।
महाराज ब्रह्म सावर्णी दशवाँधिराज ।
विश्वपिता विसूचि माँ घर प्रगटे जग के ताज ।।

शेर—विश्वक्सेन चौतीसवाँ अवतार होगा सही ।
शम्भु नाम इन्द्र की सहायता करसी वही ।।
धर्म सावर्णी मनु में मात वधरता कही ।
पितु आर्य को अंश हो धर्म से पाले मही ।।

चौपाई—रुद्र सावर्णी बारहवाँ मनु में ।
सत सहसैं सुनरता तनु में ।।
पैंतीसवाँ स्वधामा जन्मे ।
पाले मन्वादि दस ही दिनों में ।।
··· सावर्णी मनु सर्वेश्वर ।
····· से वृहती में औतरे योगेश्वर ।।
महाराज इन्द्र दिनपति सुखकारी जी ।। प्रभु० ।। ९ ।।

चौदहवाँ इन्द्र सावर्णी मनवन्तर में ।
पितु सत्रायण मात बिताना उर में ।।
महाराज वृहद्भानु सैंतीसवाँ होय ।
कर्म काण्ड का करे निस्तारा दे नास्तिकता खोय ।।
ऋषि बालखिल्य डूबे गोपद के जल मे ।
की सहाय विशेष हो इन्द्र हत्या हरी पल में ।।
महाराज रूप गिन सकता नहीं कोय ।
मुख्य अवतार चौबीस ही माने छः प्रभुताई जोय ।।

शेर—श्री मोहिनी, वावन, हरी परशुराम, कल्कि, नृसिंह, गरम ।
नारद वाराह, बुद्ध, व्यासजो हयग्रीव हैं धारी धरम ।।
यज्ञ, धनवन्तरि, राम, पृथु, यज्ञ, शील, ऋषभ, मूर्तिज, कूरम ।
कुमार, कपिल, दत्त मच्छ, हंसा, ध्रुव यति ज्ञानी परम ।।

चौपाई—स्वरूपावतार श्री कृष्ण अनादि ।
पूर्ण कला छऊँ प्रभुता जनादि ।।
महाराज कथा हरि भक्त पियारी जी ।। प्रभु० ।। १० ।।

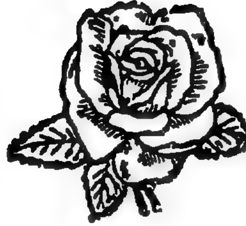
कवित्त

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
हसा दत्त मच्छ आन, सनकादि कपिल ज्ञान, वैराग्य नरनारायण, ऋषभ कच्छ कृपाल है।

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
ध्रुवर धन्वन्तरि राम, यज्ञ पृथु यशधाम, तेज कल्कि परशुराम, हरि नृसिंह भाल है॥

१७ १८ १९ २० २१ २२ २३
धर्म वाराह बुद्ध व्यास, नारद हयग्रीव खास, वामन मोहिनी पास श्री छवि विशाल है।

२४
कहे दर्जी नाथूराम कृष्ण छऊँ प्रभुताधाम, बीस चार रूप नाम, दीन के दयाल है॥



अंगद रावण संवाद

स्वर बिजनी

कवित्त—करतहूं मै प्रणाम, राजा लंकेश नाम,
सुरारि हो बलधाम पुलस्त की पुन्याई है ॥
ऋषि वश जन्म आन कीनो शिव ब्रह्म ध्यान,
ताहि से ले वरदान दिग्विजय पाई है ॥
कीनो यो अपयश सो राजमद या मोहवश,
आये राम बाणकस अतुल बली भाई है ॥
नाथू कहे अंगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ १ ॥

खड़े लोकपाल द्वार करत है मोसे जुहार,
सिगरे ससार बीच फिरति मम दुहाई है ॥
एक नर की नारी क्या हरी हैं कई पिछाड़ी,
करत हूं मन धारी सो मेरी जबराई है ॥
कपि ले राम मनुष्य आयो है धार धनुष,
काढूंगो मन की गुस अब ही बख आई है ॥
नाथू कहे लङ्काधीश जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २ ॥

गरब करे मत लंकेश सुनले उपदेश शेष
या ते अदेश द्वेष रहे नांहि राई है ॥
वाली का मित्र जान, देऊं हितकर ज्ञान,
नर नारी मती मान, सीता जग माई है ॥
तृण मुख समाय शब्द गाय गाय गाय कर,
त्राय त्राय जाप राम दीन सुख दाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ३ ॥

घणो मत वके नीच, रह रे टुक मुख भींच,
हमारो सभा के बीच टिग्गो क्या लगाई है ॥

सरव गुणां को निधान, पण्डित में विद्वान,
ताकू शठ देत ज्ञान, सरम ना आई है॥
को बाली कब को मीत, गावे क्यों वृथा गीत,
यां से क्या राम जीत-जाने की जचाई है॥
नाथू कहे लङ्काधीश जुद्ध करूँ धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है॥ ४॥

चराचर पति हरि, भक्त हेत देह धरी,
तांको कौन जीते अरि, अजीत श्रुति गाई है॥
मै अंगद, राम-दूत बाली कपीन्दर का पूत,
पिता का था तेज बहुत, ज्यां की जग बड़ाई है॥
आप करते आखेट, हुई होगी कभी भेंट,
प्रीति वो आज मेट, सुधि क्यों भुलाई है॥
नाथू कहे अंगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ ५॥

छ मुझको याद बाल भया एक कपि-पाल,
ताका तू अंगद लाल, निज ही क्या अन्याई है॥
उस बाली का होय पूत, तपसी का कहाये दूत,
ऐसा पूत से तो ऊत, रहणा सुख दाई है॥
बैरी पद सेवे खल, लीनों जस तो असल,
बता बाल की कुशल बके क्यों वृथा ही है॥
नाथू कहे लका धीश जुद्ध करूँ धार रीस
सिया द्यूँ न जीतो कीस करे कुण बुराई है॥ ६॥

जसीला दश कन्दर बसे जहां बाल बन्दर,
दस दिनों अन्दर, जाके सुध पाई है॥
राम द्रोही की कुशल होई सो कहीं सकल,
मै तो जन्म सफल हेत धारी सेवकाई है॥
दुर्भाव तिही दिलअन्दर, बसे ना श्री रामचन्दर,
कर्म फल लिये कपिन्दर ज्यों तव मृत्यु आई है॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ ७॥

झगड़ के तीनों लोक, जीत लिया बली विलोक,
मृत्यु सहित देव लोक, रखे कैद मांई है॥

वांस वीड़ा मे अनल, जैसे तू उपज्यो खल,
अरे कुल-घाती बिटल, क्या ये गुमराई है ॥
व्याध की ज्यो रच के जाल, मार लियो बली बाल,
उस नरकी तूं वेख्याल करता या बड़ाई है ॥
नाथू कहे लंकाधीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ८ ॥

टलते भव-भय तमाम, ताही तो रटत नाम,
सारे सबका काम राम, संतन सुखदाई है ॥
सेऊँ मै जान मालिक, ताको कहें कुल घातक,
आप बने बंश पालक, कैसी मूढ़ताई है ॥
बेरा अंध या जबान, बोले नही कोई अज्ञान,
छते नैन बीस कान दस मुख ते गाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ९ ॥

ठठाई और टेढ़ाई निज स्वामी की बड़ाई,
करत रह सदाई बन्दर जात की सफाई है ॥
स्वामी हित द्वार-द्वार नाचत है लज्यादार,
अति प्रेम धार लार करत सेवकाई है ॥
अगद तेरा वाक् गर्व सहूं जान नीति धर्म,
दूत हत्या ओ अकर्म, रीसयो डटाई है ॥
नाथू कहे लंकाधीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ १० ॥

डटे रीस जांकी चट, आपसे लख बलि भट,
धर्म शीलता तो शठ तेरी जग छाई है ॥
चोर ल्यायो तू परनार दूत रक्षा ली निहार
कुबेर को भृत्य मार नीति या जणाई है ॥
लख नकटी बूची बहन, धर्म जान करी सहन,
देखत ही खमा नैन, धारी तें धीराई है ॥
नाथू कहे अङ्गद कीश हे रावण छोड रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ११ ॥

ढब से कर मूढ बात, मेरा जश जग विख्यात,
दिग्गज किसी तपसी साथ करत ना लड़ाई है ॥
वर जोड़ो भीड़ूं जाय मम सीना गजचवाय,
दन्त टूटते खिराय मूली की नांई है ॥

ऐसा मै रावण नाम, राजा हूँ बलका धाम,
मेरे से ले संग्राम, विजय कौन पाई है॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूँ धार रीस।
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है॥ १२॥

तरक हो रावण चीन, रावण मैं सुण्या तीन,
तामें कौन मति हीन, तू रावण राई है॥
एक रावण को पकड़ बांध्यो सहस बाहुधर,
ल्याये पुलस्त छुड़ाकर, करा नम्रताई है॥
दूजा रावण को निहार, बाली रख्यो खाक धार,
तीजा बली द्वार मार, बालकों की खाई है॥
नाथू कहे अंगद कोस हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ १३॥

थर-थरे शेष व्याल डोले धरा चले चाल,
ऐसा मै महिपाल, रावण और नाँहि है॥
ले शिव सहित गिरि, उठायो ज्यों कमल करी,
शोभा भई उस घड़ी वर्णन में आई है॥
सिंधो शम्भो अम्बर कंज रूपी मेरा कर,
धाम राजे गौरी वर, हस छवि छाई हैं॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूँ धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है॥ १४॥

दसानन वसा लोटी, ताते बुद्धि भई खोटी,
अपणें ही मुखों से मोटी, बात तें बणाई है॥
उठाणे से अंग मार, बीर ना कहावे जार,
लादे खर बोझ अपार, होत क्या बड़ाई है॥
नरोत्तम श्रीराम, तासे द्रोह करे अलाम,
हीणी भई है कलाम, काल गिरह आई है॥
नाथू कहे अंगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ १५॥

धमकी दे नौऊँ गिरे, दाबे खाट पाया तरे,
कुवां मांय लटक्यो करे, काल दीनताई है॥
एक सिन्धु लांघ कीश, आयो है तिहारो ईश,
भुजा बल सिन्धु बीस तिरणां कठिनाई है॥

जुद्ध में हो आरूढ़, कई वली गया बूढ़,
मोसे लड़ आके मूढ़, काऊ को चलाई है॥
नाथू कहे लंका धीश, जुध करूँ धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है॥ १६॥

नहीं आवे तुझे लाज, हाथों का रखे मिजाज,
पुनः पुनः मम आगे आज, करता तू बड़ाई है।
गयो थो मिथिलेस पान, लग्यो उठाने कबान,
दब्या हाथ, गई शान, हाँसी वां कराई है॥
वो पिनाक तोड़ राम, वैदेही विवाही बाम,
बता तेरी भुजा काम, कौन जगह आई है॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ १७॥

पशु सुण शम्भु लिये, हाथां सिर काट दिये,
अग्नि में हवन किये, धार सूरताई है॥
अगन कुण्ड माँहि पेख बांच लिया भाल लेख,
नर के हाथ मृत्यु देख, हंसी यों आई है॥
बूढ़ो भयो ब्रह्मा बर, लिख्या लेख भूल कर,
नर से ना सकू मर, खाण यो सदाई है॥
नाथू कहे लंका धीश, जुद्ध करू धार रीस,
सियां द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है॥ १८॥

फणीन्द्र क्या भुजंग सो, क्या ऐरावत मतग सो,
क्या नदी जल गग सो, क्या खग खगराई है॥
काम धेनु गऊ समान, क्या पारस है पाषाण,
क्या कल्प वृक्ष आन, वृक्ष कोसी नाँई है॥
ऐसे राम नांय नर, काल तेरो जाण खर,
बाजीगर काटे सर, होत क्या वड़ाई है॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है॥ १९॥

बके मत बता दे वात, भिड़सी को मेरी साथ,
नार शोकी तेरो नाथ, तिहीं दुख दुखी भाई है॥
तूं सुग्रीव नदी कूल, कटणा ज्यो वृक्ष मूल,
विभीषण के लात सूल, भयभीत सदाई है॥

जाम्ववान बूढ़ो जट, नल नील सिल्लावट,
एक थामे निश्चय भट, लंका जिण जलाई है ॥
नाथू कहे लंका धीश जुद्ध करूं धार रीस,
सियां न द्यू जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २० ॥

भणो सांचा क्या सुरारि, सच कपि लक जारी,
मेरे मन शका भारी, गप्प सो लखाई है ॥
लघु वन्दर के छोटे, जार गये देश मोटे,
सो सुग्रीव के छोटे दर्जे का सिपाई है ॥
विन आज्ञा जारा शहर वो तो नहीं आया फेर,
डरे मत मनाय खैर, बाँट यह बधाई है ॥
नाथू कहे अंगद कीश हे रावण छोड रीस,
शिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ २१ ॥

मरकट तूं लवाली, कैसो भयो ऐसो जाली,
वाली तो झूठ कुचाली, कबु ना चलाई है ॥
क्या तपस्यो केरी लार, रह करके तू गवार,
मिथ्या वोलणों अपार, सीख्यो लपराई है ॥
क्या वानर क्या वो राम, क्या डरूँ हो सग्राम,
उनकी हमारी अलाम, जोड़ी ना लखाई है ॥
नाथू कहे लंकाधीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २२ ॥

ये तो वात कही रीत, गावें ज्यों निगम नीत,
ब्याव और वैर प्रीत समान की सराई है ॥
या तो राम बिड़द जोय, दया कर पठाया मोय,
समझाने राजा तोय, समझ कुशलाई है ॥
यदि राम तोसे जंग, किये नहीं शोभा रंग,
ज्यो मेंढक ने मारे सिन्ध होत ना बड़ाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ २३ ॥

रीति तव सिंघ की अव, जाणली मैंने सव,
वैरिन से ठानी जव, करणी मित्राई है ॥
रिपु जोर देख डरे, सो वातां यूही करे,
पछतातो रण लड़ें, मरे भय खाई है ॥

जा कह दे तव राम ने, ना भिड़यो जावे सामने,
तो चल्यो जा निज धाम ने, क्यो बाम ने मगाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूं धार रीस
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २४ ॥

लडबे की तेरे दिल, दीखत है ज्यादा खल,
तब ही तो तूं पल-पल, करता गुमराई है ॥
चोर और जार शठ ढ़ोर डाकू नार-हठ,
ज्ञान से न माने लठ बाजे सुखदाई है ॥
बन्दर की होय झपेटां, गाल लगेगी चपेटां,
निकलेगी तेरी ऐंठां, धारी क्यों ढेटाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ २५ ॥

वनोखा तूं ज्यांके पाण, बोलता है कर गुमान,
ज्यां की अच्छी तरह जान, ली मै वीरताई है ॥
पिता जोय गुण हीनो, देसुटो देय दीनो,
फेर दुख अति कीनों, हरी मै लुगाई है ॥
नार विरह मे दुख्यारो पुनि भय हमारो न्यारो,
अब ले कप्यां को सा रो, आयो कर चढाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २६ ॥

शिव विष्णु निन्दा कान, सुणणी ना चाहिए जान,
लागेगो घात समान, पाप श्रुति गाई है ॥
राम निन्दा तै खल करी मेरे मन रीस भरी,
हत्तल मारे कपी केहरि, ज्यों भूकम्पाई है ॥
मुरारि के क्रीट गिरे, खट तो खल शीश धरे,
ले हम च्यार फेंके परे जहां पर रघुराई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ २७ ॥

घट कपि घूम मारो, पकडो रे मम जोधारो,
भूमि पे पछाड़ मारो, आज्ञा मम या ही है ॥
वड़े-वड़ वीर जावो, सब कपियो को खा जावो,
जीते हुए पकड़ लावो, जो वे दोऊं भाई है ॥
अरे कपि महा क्रूर करता यां क्यो फितूर,

क्या तेरी मृत्यु ऊर जरूर अब आई है ॥
नाथू कहे लका धीश जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ २८ ॥

सर्म नांई तुझे आत, बेफेमी बनात बात,
क्या तुझे सन्नीपात ब्याधी बहकाई है ॥
देख के ताकत मेरी, छाती नायं फटी तेरी,
रे शठ गेरी क्यों पेरी ऐसी निठुराई है ॥
है कोई ल्याकत वान, राघव को पकड़े आन,
जिन अकेले जन स्थान, खर सैन्य खपाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ २९ ॥

हम तो से ल्याकत वान देख्या है कई अज्ञान,
क्या तूं तुच्छ जीव आन, ताकत मोय दिखाई है ॥
कुवाक बोले बेशरम, बसीठी का नांय धर्म,
दूत का तो परम धर्म, रखना नम्रताई है ॥
कर्त्तव्यता तेरी जोय, अभी मार देता तोय,
आयो तूं दूत होय, या ते गम खाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ३० ॥

अरे धर्मी लज्जावान, तेरी खमा की तो आन,
बखान के हनुमान, शोभा यूं सुणाई है ॥
रावण का पूत मारा, दाढ़ी मूंछ सैं उजारा,
तो भी दूत जान मारा, नाँहि मान राई है ॥
चालणी ज्यो होकर वाक, बोलत है किसे नाक,
मर जा रे जहर फांक, जीणा धूल खाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश, हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ३१ ॥

आज तू बनचरण, चाहता है तेरा मरण,
सिंघ की कुचरणी करण लाग्यो कर ढिटाई है ॥
ढिटाई के मद छाय बाप को हो गयो खाय,
मुझे धूल क्या बताय, तेरी घल खाई है ॥
मेरी वीरता को हर, जाने काट होम्या सर,
प्रसन्न हो दीन्या वर, सदा तन सहाई है ॥

नाथू कहे लंकाधीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यू ं न जीतो कीश करे कुण बुराई है।। ३२ ।।

इसी बात को गुमान, थांरे है बहुत अज्ञान,
माथा होम्यां तू ं किरसाण, बर-बर मोय गिणाई है ।।
इन्द्र जाली अग-अग, काट के दिखावे भंग,
जरे भ्रम से पतंग, होत ना बडाई है ।।
बाप को खा भयो पुष्ट, अब खाऊ ँ तुझे दुष्ट,
कहे तो अभी मारू मुष्ट, रीस मुझे आई है ।।
नाथू कहे अगद कोश, हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश, अभी तो भलाई है ।। ३३ ।।

ईश की कृपा से घात, कर सके क्या पशु जात,
मैंने सब देवां हाथ, सेवा यू ँ कराई है ।।
सूर्य रसोई वारो, पवन देत बुहारो,
मेघ माली पणिहारो, चन्द्र की रोशनाई है ।।
करते है स्तुति विधाता, दाणो दले बेमाता,
दरश देन शिव आता, ऐसी प्रभुताई है ।।
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करू ँ धार रीस,
सिया न द्यू जीतो कीश करे कुण बुराई है ।। ३४ ।।

उतांरू प्रभुता सभी, कौतुक मै करके अभी,
राम आज्ञा बिन दबी रीस मार खाई है ।।
नींतर दसु ं माथा छेत, लंका में मिलाय रेत,
सीता मन्दोदरी समेत, ले जाऊं बरिआई है ।।
दिखाऊ ँ जो ऐसा हाथ, तो भी ना बड़ी बात,
ज्यों मुर्दे के करे घात, होत क्या बड़ाई है ।।
नाथू कहे अगद कीश, हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ।। ३५ ।।

ऊमा के गोलो मू ंज, पराय बल से गू ज,
जबानो से ज्यादा झूझ, करता अकड़ाई है ।।
रे शठ तू ं और राम, सुग्रीवादि कपि जाम,
चढ़ आवे सुर तमाम, तो भी ना बुराई है ।
साक्षात सिंघ रूप, जीत्यो में मुरारि भूप,
ताको तू कहे बेवकूफ, कैसी मत भुलाई है ।।

नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करें कुण बुराई है ॥ ३६ ॥

ए सब चवदा प्राणी जान, जीवत मुरदा के समान,
जामें तेरी भी अज्ञान विरती मोय लखाई है ॥
अति कामी अति क्रोधी, सदा रोगी श्रुति विरोधी,
पर आसी तन असोधी, निन्दा करे पराई है ॥
मद वसी महा किरपन, अति मूढ़ महा-निरधन,
हरि-देव द्रोही मन, आलसी सदाई है ॥
नाथू कहे अंगद कीश, हे रावण छोड़ रीस
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ३७ ॥

ऐश्वरता हमारी, स्वर्ग से ही बड़ी भारी,
काम क्रोध चक्र धारी, राखे अधिकाई है ॥
नाती सवा लाख पूत, मेघनाद से मजबूत,
वश करोड़ राजपूत, कुम्भ करण भाई है ॥
स्वयम् को बल अपार, कई बली गये हार,
मुझसे लड़े शस्त्र धार, काहु की चलाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करूं धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ३८ ॥

ओरे बली सहस्रार बाहु बल द्वार,
कैसे तू बल छिपार, राख्यो कर नीचाई है।
कुटुम्बी का कठ बल बता दे रे मुझे खल,
रोपू पग सभा थल, देवे को हटाई है
जो तुमरे जोधार, रोप्यां पग देवे उखार,
तो मै जाऊं सिया हार, फिर ही रघुराई है।
नाथू कहे अगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया ने निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ३९ ॥

औगुणी पशु की जात, कसी बोले बड़ी बात,
जरा नहीं सकुचात, कैसो घमण्डाई है।
कुंजर से जोद्धार, पुष्प ज्यों उठावे पहार,
इतका इत दे उतार क्या पग की कठिनाई है ॥
देत ही हुक्म शेर, गया देख तेरा पेर,
अभी उठा पछाड़े फेर, क्यांरी गुमराई है ॥

नाथू कहे लकाधीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यूं न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ४० ॥

अश तब जोधांरा को, निकल गयो सारां को,
जैसे चन्द तारां को, भानु दे हटाई है ॥
इन्द्र जीत आदि खल, खो दिया पच के बल,
मेरा रहा है अचल, प्रभु की प्रभुताई है ॥
किसके बल मति मन्द हो रह्यो मदअंध,
भज रे श्री रामचन्द या ते कुशालई है ॥
नाथू कहे अंगद कीश हे रावण छोड़ रीस,
सिया दे निवाय शीश अभी तो भलाई है ॥ ४१ ॥

अःसो काम अचल रोप्यो, सो तो मै जान लियो,
कोई देव प्राण गयो, तांकी सकलाई है ॥
ठहर रे मरकट जरा, इतना क्यो गरब भरा,
अभी उठा द्यू पैर तेरा, या में क्या बडाई है ॥
कोऊ देव मम आगे, कछु नांय जोर लागे,
तेज देख डर भागे, जीते समुदाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ४२ ॥

ऋषि केश राम हरि, ताका पांव पकड अरी,
जब खूनी होय बरी, मिटे दुखदाई है ॥
मेरे पांव गहे तोर उबारो नहीं होवे चोर,
मै तो रामजी के जोर वीरता दिखाई है ॥
गूलर फल-सी लंका, तोर खाय कपि बंका,
बजे जीतहु का डका हरि की जै लखाई है ॥
नाथू कहे अगद कीश, हे रावण छोड रीस,
सिया दे निवाय शीश, अभी तो भलाई है ॥ ४३ ॥

लिर-लिर करतो लवार, फिरबोकर यां की लार,
क्या मुझे ताना मार, वीरता दिखाई है ॥
चल्यो जा स्वामी द्वार, सुण ले ये समाचार,
आयो भेद लेण धार मन मे कपटाई है ॥
सौ बातों की बात, चढ़ावा सारे साथ,
हार-जीत विधि हाथ लड़्यां जग बड़ाई है ॥
नाथू कहे लका धीश, जुद्ध करू धार रीस,
सिया द्यू न जीतो कीश करे कुण बुराई है ॥ ४४ ॥

अथ रम्भा शुक संवाद

पोडसी

पलक खोलकर देख लेवो जी छवि मुनीश्वर।
महा सुखों की खान खड़ी मै परी मनोहर॥
काम केलि हित खूब वर्षा ऋतु मघवा कीनी।
फूले खुशबूदार सघन बन समय नवीनी॥
इसी वक्त नव यौवन नर भोगी नाँही तिया॥
नाथू कहे रम्भा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ १॥

देखण लायक रूप एक विष्णु नारायण।
छवि सागर भगवान ललित अग परम परायण॥
जिनके दर्शन हेत कई सुर नर मुनि ज्ञानी।
नारी निन्दनीय लख भये बनवासी ध्यानी॥
यत्न कर उस प्रभु का मनुष्य सुमरण ना किया॥
नाथू कहे यो शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ २॥

यत्न शील तिय अंग कुच आदि वस्तु सब!
वीय आहुति से आनन्द फल परतक ले जब।
कहो न निंदनी नार देख कर लुभे बनवारी।
करी हिये को हार लीन्ह सो वहन हमारी॥
युवती रतन हिये ना सजी रति भोग यज्ञ ना किया॥
नाथू कहे रम्भा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ ३॥

कहे कांच को रतन नरक-घर को यज्ञ शाला।
तरु सुखावे बलि हरे ज्यो नर तप वाला॥
श्री विष्णु उर रखी तो ना समर्थ को दूषण।
ज्यो भये गल मे गरल रतन शिवजी के भूषण॥
परतक कलेजा काढणी रक्त नखा भोगी तिया॥
नाथू कहे शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ ४॥

नख मेंदी से रचित नार डाकनी बताओ।
या ते तुम हो तरुण शिशु सम नीरस लखाओ॥
मच्छ मृग खजन नैन बैन पिक भौंहें बंकी।
गज गमनी झकार बिध्या लचकनी सिंह लंकी॥
कंचु गुंजी में ढ़के कुचधन कर नहीं बिलसिया॥
नाथू कहे रम्भा परी, हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ ५॥

कचु डाब कुच पहाड़ लहु के बिच काम लुटेरा।
भौंह दृग बाण चले हरे जीव नर केरा॥
सिंह कटि सर नाग मृग गति माँहि हाथी।
उजड़ विपिन सो सब तन नारी को उपजाती॥
इस्यो भयानो बदन वन लख नर फिरते भरमिया॥
नाथू कहे शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ ६॥

ना वन युवती तन विधि रचि नव यौवन वारी।
माली काम करे सैन सुमन सरसे उपकारी॥
गुल गुलाब युग गाल तिल के फूल ज्यों नासा।
दाड़ूं दंत लब बिंब अम्ब हिचकी रस स्वाशा॥
कुच नींबू हद दाख वो यह बाग फल ना चाखिया॥
नाथू कहे रंभा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ ७॥

सुफल बाग सतसग ज्ञान तरू लता सुभक्ति।
हरि जश महकत पुष्प अमर फल जीवन मुक्ति॥
गुरू माली उपकारी बचन गुल से करे सैना।
सत्य बाग दिखलाय खिलावे फल सुख देना॥
तज अमीफल तिही चिमन का तिय तन विष फल चित्त दिया॥
नाथू कहे शुक मुनि हे परी जिनका धृक् जिया॥ ८॥

विष फल नहीं है नार भोगने योग्य पदार्थ।
भागे नर की भूख मोहिनी रूप निहारत॥
द्विती बरणी तरुणी कपोल मुख भर नर चाखे॥
घेवर, कचौरी, गोल गिदोड़ा लख परी नाखे॥
ऐसी दिव्य बदनी तिरिया निरख सुख नही भोगिया॥
नाथू कहे रंभा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ ९॥

दिव्य तो हरि-तन, तिये को ज्यों पारा चढ़ रोपियो॥
मृग जल वत सुख भ्रम से कछु को-कुछ ही निपियो॥

घवर द्वित आदि उपमा दे तीय गालन।
जिनमें रक्त भर ढके चर्म पर जिमि कसायन॥
मस-हारी ज्यों कामी नर युवती रूप सराहिया॥
नाथू कहे शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ १० ॥

लाखों सरावे लोग सराने योग्य है नारी।
जिनकी सुन्दरता पर मोहित हो ब्रह्मचारी॥
मलियागिरी तन चन्द मुखाम्बुज हितनर आसक।
रस ले जुदे - जुदे होके अली चकोर बासक॥
कोमल कमल सी गोरी अग स्पर्श कर सुखना लिया॥
नाथू कहे रंभा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ ११ ॥

कमल चंद मलिया गिरी उपमा फबे प्रभु तन॥
बासक भंवर चकोर बने रह मुदित मुनि जन॥
नारी कोमल दो-मुखी नागन सी दरसावे।
उसे अधो मुख अड़े नीच विषय बहु भावे।
काम विष गहलीज नर जीवत गुवावे मरसिया॥
नाथू कहे शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ १२ ॥

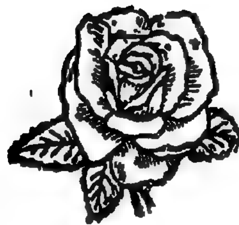
नाग जहर चूसन को बेनी नाग हमारी।
पय से अमोल कपोल हस नर के हितकारी॥
अमल कमल दल नैन नासिका दीपक ज्योति।
अमूल आभरण बसन उजल नख बेसर मोती॥
ऊ च कूंच दड़ी रमण मल तिल के गाल न चूमिया॥
नाथू कहे रंभा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया॥ १३ ॥

चूमन मलन को न चीज गाल कुच दोऊं कफरासी।
चेरा पे तिल श्याम रग कालो लग जासी॥
कहे कमल दृग नाक दिया जिमी गौडरू सेडा।
अधर चुंबकी जीभ उदर आदि भरी नर मन भेडा॥
पर मूत्र बरफ तिय अंग नर नर की चाह मुख लिया॥
नाथू कहे यो शुक मुनि, हे परी जिनका धृक् जिया॥ १४ ॥

आंख खोल तो लखो नरक या स्वर्ग निवासी।
मल मूत्रन की देह मेरी मत जानो ज्ञानी॥
सोना सुगन्धित की पुतली हो सचे ढरे ज्यों।
तेज पुंज तन स्तन सुधा कलश खरी ज्यों॥

पीपल पत्र सी मनोमयी योनि न लाँघी बन पिया ॥
नाथू कहे रम्भा परी हे मुनि जिनका धृक् जिया ॥ १५ ॥

ऐसो मनोमय बदन चिन्ह सब करने वारी।
तेज़ पुंज की रूप नारी हम अब ही निहारी ॥
पहली होती खबर जनम तो उदर तिहारे ॥
सुधा कलस सम हृचल चूम सुख होतो हमारे।
खर खाज सम रस भग में नर ले जिमि अस्ति में कुतिया ॥
नाथू कहे यों शुक मुनि हे परी जिनका धृक् जिया ॥ १६ ॥



अथ नरसिंह वीरभद्र संवाद

कवित्त—वन्दो पद नारायण, शान्त पुण्डीरक नैन।
पराये ओगुन सहन शक्ति तव अपारी है।
गौ गरीबों पर घोर जुल्म करे डाकू चोर।
आय नृप खुफिया तोर करते खल ख्वारी है।
ज्यों ही धर्म भक्त हेत अन्तिम औतार लेत।
दुष्टों को दण्ड देत, नीति अनुसारी है।
नाथू कहे वीर भद्र, हे हरि सत समुद्र,
हतेफार दंत उद्र, क्यों अब रीस धारी है॥ १॥

सृष्टि रचे विधिवाल, पेली स्वप्न संचा ढाल,
पीछे काम काला घाल, विवाहें नर नारी है।
मैं घन हो करूं पाल, चातक मुख बून्द डाल,
पुनि दूध कुच विशाल, करे मोह महतारी है।
नाती काल करे चट ज्यों विदारे जीरण पट।
ऐसा मेरा भेष, नट मूरख दे विसारी है।
नाथू कहे नर हरि धर्म भक्त जीवजरी।
ताको वीर होय अरि यूं अब रीस धारी है॥ २॥

भक्त द्रोही युगां अन्त, होते आवते सावत,
ताहि मार पीसे दन्त, डरपे संसारी है।
कतली मामले की चाल या नई लागे कराल,
लख कोपे अन्य भुवाल, सबको लगे खारी है।
इसी नीति को पहिचान, भेजे हमें शिव भगवान,
नाती या साथी मान, तेरो हितकारी है।
नाथू कहे वीरभद्र हे हरि सत समुद्र
हते फार दंत उद्र क्यो अब रीस धारी है॥ ३॥

सुधारा हित नगड़ा, मेरा क्या करे भंगड़ा,
काल बेल्या भूत संगड़ा, खुद ही खाक डारी है।
हितंसी भय विलोक, स्वार्थी मरे क्या शोक,
रचूं फिर सती लोक ल्याकत हमारी है।

सच्चिदानन्द रूप सुरती बखाने अनूप
मोपे कोपे अन्य भूप काहू को चिकारी है।
नाथू कहे नर हरि धर्म भक्त जीव जरी
ताको वीर होन अरी यू अब रीस धारी है॥ ४॥

देह बने भूले तुम सत्य शक्ति रूप सम,
चित पद ब्रह्मा तम आनद मदनारी है।
शेष तुमी त्तमी माँग, मांग के तो करे सांग।
गुरू लगा भगे जांघ, निजो खिज उघारी है।
पंदा प्रलय नेम खण्ड, करे शिशु ज्यों घमंड,
ख्यारे चींटियां जोय चड आग ढकी छारी है।
नाथू कहे वीरभद्र, हे हरि सत समुद्र।
हते फार दंत उद्र, क्यों अब रीस धारी है॥ ५॥

ढकी आग दूं बुझाय, मेघ अग मैं बरसाय,
चींटियों की सहाय, गरज ज्यों गुजारी है।
कच्छ मच्छ हय ग्रीव, यज्ञ वाराह शक्ति शिव।
है शुभांदि कुजीव, मारे किलकारी है।
देख मोहनी को नूर, मदनारी मद चूर।
कहा गुरू बने कूर, कछु न चमत्कारी है।
नाथू कहे नर हरि, धर्मभक्त जीव जरी
ताको वीर होन अरि यो अब रीस धारी है॥ ६॥

चमत्कारी ब्रह्मा सग हुए तेरा बहुत जंग।
प्रगटे ज्योतिर्लिंग, सो सत अवतारी है॥
पानी बुझानी कृषान ना शम्भु विष जरान।
वो रीझे विधि संतान, जनो नाभ नारी है।
अनर पख गहे हाथी, शारदूल सिन्ध घाती।
सोचो कर्तव्यता सुहाती जाती अनुसारी है॥
नाथू कहे वीरभद्र हे हरि सत समुद्र
हते फार दंत उद्र अब क्यों रीस धारी है॥ ७॥

तपो बल जोर सोर, जाति और की हो और।
कैसे कंथ बने अघोर इति अनुचारी है॥
मै दियों अंगली बंट जार्यो विष नील कठ
सुत को सुत नागो ठठ पूजे लज बीडारी है॥

अवर पख शादूल, लिंग ज्यो तूं ही स्थूल,
आयो तो भिड़ले फूल मत कर बकवारी है ॥
नाथू कहे नर हरि, धर्मभक्त जीव जरी,
ताको वीर होन अरि यों अब रीस धारी हैं ॥ ८ ॥

भिड़ने का ना हुक्म, सरम सालग लिंग सम ।
भगसम्भ भानु रम भावे जग सारी हैं ॥
सतो गुण की बड़ी बात, रही सही भृगु लात ।
दधीची पर चल्यो घात, चली क्या तुम्हारी हैं ॥
दक्ष यज्ञ करो याद, बचे प्राण शिव प्रसाद ।
इति लीला रूप आद, वो नर तू नारी हैं ॥
नाथू कहे वीरभद्र, हे हरि सत् समुद्र
हते फार दंत उद्र क्यों अब रीस धारी हैं ॥ ९ ॥

ब्रह्मा को बात मान दक्ष दिलाये प्राण,
हम हीरा चोट खान भृगु पर सवारी ह ।
दधीची मोहि सन यों, तभी इन्द्र बज्र भयो ।
यों ही दुर्वासा को गयो, मान भक्त द्वारी हैं ॥
नपुंशक मदनारि हमें माने सो गँवार ।
रुद्र लड़े एक बार विजय भई हमारी है ॥
नाथू कहे नर हरि धर्म, भक्त जीव जरी ।
ताको वीर होन अरी यों अब रीस धारी हैं ॥ १० ॥

प्रकृति विजय जान, मति करे अभिमान ।
यहां नहीं रहत सम्मान, कई बार जीत हारी हैं ॥
पुरूष शम्भु यक्ष होय, देव मद डारे खोय ।
दुर्वासा त्यारे तोय, जन्मा दस बारी हैं ॥
चहना पर पड़ो तूल, दधीची मार्‌यो फूल ।
कच्छ वाराह ज्यों त्रिशूल, खाया हो उजारी हैं ॥
नाथू कहे वीरभद्र, हे हरि सत समुद्र
हते फार दंत उद्र, क्यों अब रीस धारी है ।। ११ ॥

त्रिशूल से तेरे सवाल, सुण उठे मेरे झाल
भक्त हेत जन्म ज्वाल, सही कई बारी है ॥
इत मुंज स्वामी जोर, ऐंठ बोलते बेतोर
जाने मही खंभ फोर, प्रकट्यो असुरारी है ॥

प्रकृति पुरुष चाठ, चक्र से ई शूल काट
आज बनूं महा सम्राट, कला प्रलय कारी हैं
नाथू कहे नर हरि, धर्म भक्त जीव जरी
ताको वीर होन अरि, यों अब रीस धारी है ।। १२ ।।

सहस्त्र कमल नैन चौढ़ पायो चक्र उसी ठोड़,
उनका बाघम्बर ओढ़ उनपे सरदारी है!
तेरो सुत करी आंट, ताको लियो सीस काट
सन्तपुरी आंधी बांट, पुजीजे पुरारी है।
भूठो सतो गुणी मेलो, जभी सिंधु में अकेलो
देह गर्व खोय देलो, सम्राटी सारी है।।
नाथू कहे वीर भद्र, हे हरि सत समुद्र
हते फार दंत उद्र, क्यों अब रीस धारी है ।। १३ ।।

स्वार्थ आयो लेन, बोले राज द्रोही बैन
पकड़ा मै गेर एन, छुड़ाये को जोधारी है।।
भष्मासुरादि आगे, तम ठेकादार भागे,
ब्रह्म हत्या ले अभागे, फिरे हो भिखारी है।।
मारे ज्यासे पालनवाल, बड़ो मान जपे माल
मेरो तप चक्र छाल सिंह क्रोधाकारी है।।
नाथू कहे नर हरि, धर्मभक्त जीव जरी
ताको वीर होन अरी, यों अब रीस धारी है ।। १४ ।।

काल दुखी ईश ध्याना, सुखी काम दाम आना
देख्या भष्मासुरी ताना, रण छोड़ा मुरारी है ।।
घूमे ब्रह्म हत्या लेन, कामी को शोभा देन,
मारे जल धरादि मेन, सुर चिन्ता निवारी है।।
मोय पकड़ा नीति छाड़, भय सेमे शक्ति बाढ़
लडाले पोत्र लाड कंसा लड़वारी है।
नाथू कहे वीर भद्र, हे हरि सत समुद्र
हते फार दंत उद्र क्यों अब रीस धारी है ।। १५ ।।

बहुत लाड्यो चढ़ियो नाथ, घाले मुह ठोडी हाथ
पोता लड़े दादा साथ, कलि मति बिगाड़ी है ।।
तीतर को गहे बाज, ले उड़े पक्षी राज,
जाने नांहि खग राज, किस की असवारी है।।
उछल के चढूंगा कंध, जभी माने मदअंध,
तुम माया जाल बन्ध, भये शिव अनारी है।।

नाथू कहे नर हरि, धर्म भक्त जीव जरी।
ताको वीर होन अरी, यों अब रीस धारी है॥ १६॥

अब नारीपने को आंठी, करी साठी बुद्ध नाठी
बूज्यो चात खात बाटी, जब यह पुरषकारी है॥
पेली कली हो में तात, व्यापो चाह्यो पोत्र घात,
सिंघ की जनाई जात, नर नीति बिसारी है॥
केती हम खाई गम, समझायो नम नम,
तो भी नहीं जाण्यो तुम, किसको गुण जारी है॥
नाथू कहे वीर भद्र, हे हरि सत समुद्र,
हते फार दंत उद्र, क्यों अब रीस धारी है॥ १७॥

गम क्यों खाय, दिखा तेज, केती तमोगुणी नेज,
निकाल दूं सब गुमेज, कुण दी अधिकारी है॥
शत अस रजो गुण, अंसा अंसी तमोगुण,
शत में ही लीन हून, श्रुतियां उचारी है॥
याद रखी ज्यादा मिट, लड़ेंगो तो जागो मिट,
मुख फार जाऊं गिट, चली नख कटारी है॥
नाथू कहे नर, हरि; धर्म भक्त जीव जरी,
ताको वीर होन अरि, यों अब रीस धारी है॥ १८॥

नख चलाते कटक, दिये छोड़ भूमि पटक
फेर अड़े जटा चटक, झटके बहुवारी है॥
दादा हेत तुम पांती, लोनी बांट होय नाती,
पीछे भली ले लो थाती, शिव तो अविकारी है।
तम रज सत मत, सुक्षम हो मिले नचित,
स्थूल तीन गुण संत, एक पे लट भारी है॥
नाथू कहे वीर भद्र, हे हरि सत समुद्र,
हते फार दंत उद्र क्यों अब रीसधारी है॥ १९॥

भारी भय नेक तुम, धार भले रूप सम,
लीनू हर धन तुम, दर्शाई दिवारी है॥
जुदे २ स्थूल गुण, ठीक लादना कानून,
मिल चले युक्त हून, ज्ञानी बेगारी है॥
स्वप्न दृष्टा ज्यो सर्वेश, स्वप्न सिंह सर्भेस,
स्वप्न द्रष्टा मे प्रवेश, जान होय सुखयारी है॥
नाथू कहे नर हरि धर्म भक्त जीव जरी.
ताको वीर होन अरी, यो अब रीसधारी है॥ २०॥



अथ शिशुपाल पांडव संवाद

सतगुना बत्तीसी

कवित्त :—राजिन धर्मावतार अर्जुन भीम जोधार,
जाने माद्री कुमार शास्त्र के सार न।
ऐसे ज्ञानी होय सेर यज्ञ की होती अवेर,
मान लियी बड़ो गेर गुजर इस गवार ने॥
क्या कुसगत का असर या भये बुध बिसर,
कीनो या घसर पसर धर्म को बिगारने॥
नाथू कहे शिशुपाल हे पांडव महिपाल,
नंदलाल पशुपाल पूजे केहि कारणे॥ १॥

हे चन्देरी धरा पति ना अयोग बात रत्ती,
कु जबान बोल मति ऐसे सरदार ने।
वासुदेव को फरजन्द जदु कुल बीच चन्द,
सन्तन के सुख कद, प्रिय ससार ने॥
इन सिवा पूजण जोग बता और कौन लोग
देने सुरानन्द भोग भंजन भव विकारने॥
नाथू कहे कुन्ती लाल चुप रह, शिशुपाल
नन्दलाल विश्वपाल पूजे एहि कारणे॥ २॥

पशुपाल को विश्वपाल, कहो ठीक नहीं सवाल,
खुशामदी हो भूपाल, छोड़ी धर्म कार ने।
था कहना शस्त्र धारी ने, या भीष्म ब्रह्मचारी ने,
कै गुरु द्रोणाचारी ने, कै व्यासावतार ने॥
कहा योग्य नट सॉंगी कामली की पहर आंगी,
कामण्यां पै भीख मॉंगी कियो ग्वाली कार ने।
नाथू कहे शिशुपाल हे पांडव महिपाल,
नन्दलाल पशुपाल पूजे केहि कारणे॥ ३॥

ईश्वर का देख करम कीजे ना भूप भरम,
ना खुशामदिये धरम, माने सत सारने।

राजा पिता मुनि गुरु, सखा सम धरम धुरु,
वासुदेव कद तरु, मान्या जगाकारने ॥
डाली थल पान फूल, हरे होय सींचे मूल,
मूढ़ नर रहे भूल प्रभु का दीदार ने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ ४ ॥

प्रभु का तत्व रूप जाणते हो तुम्ही भूप
और सब बेवकूफ आये तब बारने।
वृद्धों का मान मार छोटा को दो अधिकार।
ना लाजम वाके द्वार आणा सरदार ने ॥
जानके सुभाव राव, आवीया करके चाव,
दिखाते ये बरताव धार अनाचारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ ५ ॥

नहीं अनाचार लेश करे मती वृथा बेस,
आये न्यूतोड़े नरेश देखन समाचार ने।
मान औरों का बढाय, तेरा क्या दिये घटाय,
क्यों रहे हो खिजलाय, आज विघ्न डारने ॥
हम क्या की नई बात, ये विष्णु साक्षात,
शिव ब्रह्मा रात प्रात भजे ई मुरार ने ॥
नाथू कहे कुन्ती लाल० ॥ ६ ॥

शिव ब्रह्मा इसे ध्यान कहो आ खिलाफ बात,
करते हो पक्षपात उलटो प्रचारने।
ईश्वर तो निराकार ओ दीखे मनुषाकार
वो निर्गुण, निर विकार भोगे यो विकारने ॥
वो मै जुदा सभी ठोर यो केवल रह्यो ढोर,
कोन गुण मिले और, मान्यो प्रभु जारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ ७ ॥

राजा मत बढ़ा बेर, चोर और ढ़ोर गेर,
बता रह्यो बेर बेर पूरण अवतारने।
धरम हेत निराकार धारे स्व इच्छाकार
लीना है ये अवतार भजन भू भारने ॥
ये निर्गुण निरविकारा सभी माँय रहे न्यारा
जामें गुण मिले सारा, सोचो तत् सार ने ॥
नाथू कहे कुन्ती लाल० ॥ ८ ॥

सोचा सार जो करतार हरा चाहे भूमि भार,
पल पूरे करे छार प्रलय ससार ने।
धरमा धरम का विचारा, स्वतः सिद्ध होय सारा
वेदो ने अजब उचारा देना फल चार ने ॥
ऐसा सर्व शक्तिवान छोड़ ब्रह्मानन्द ज्ञान
आवे क्यों गरभाधान भोगन भव विकार ने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ ९ ॥

भव विकार भोगे आन माया बसी जीव अज्ञान
जाने ना नर समान महान तेज धारने।
ईश्वर जन्म की खान भक्त इच्छा मुख्यमान
भक्त हेत तजे कान्ह प्रभुता के द्वारने॥
भक्त हेत करे राम वेदों से अधिक काम,
ब्रह्मा से ही प्यारो श्याम, लखे भक्ति धार ने।
नाथू कहे कुन्ती लाल० ॥ १० ॥

ब्रह्मा जी रचे जगत, जिनसु ही प्यारो भक्त,
कहो बात मनोयुक्त, तज नीति सारने।
नेति नेति वेद गाय, योगी नहीं पार पाय,
ऐसे को दिये ठहराय, गोप के कुमार ने ॥
ईश्वर का धर्म, क्या पाले यो बेशर्म,
कामी ज्यों किये कुकर्म, भोगी पर नारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ ११ ॥

ईश्वर के कुण पराई, उसकी सब प्रभुताई,
गोप्यां गोपुर से आई, बढाने को प्यार ने ॥
कुकर्म ये जाण मती, गोप्यां भज्यो भाव पति,
करी रती रह्यो जती, गति दिवी नारने ॥
वेद कहाँ पावे पार, ईश्वर की गत अपार,
भक्त ही जाणकार, हरी का दीदार ने ॥
नाथू कहे कुन्ती लाल० ॥ १२ ॥

तुम ही हो भक्त अति, जाणो श्याम रूप जती,
कहे भूप भेड़ मती, हम तो गहे सार ने।
क्या कोई बिना ज्ञान, पूजे पत्थर हरि जान,
पा सके है निधान, प्रभु का दीदार ने ॥
असम्भव रहे मनाय, प्रतक को दे झुठाय,

पीतल को सोना गाय, भुलाते सुनारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ १३ ॥

कसोटी लगाये बिन सोना क्या रहत भिन्न,
ज्यो ही भरम तेरे मन समझे नहीं सार ने ।
भावना हो भरपूर, पत्थर मांही है जरूर,
प्रतिमा में पूजाय नूर, प्रेमी नर नार ने ॥
प्रह्लाद ने प्रीत करी, खंभ में बतायो हरि,
नर हरि जीव धरी, प्रगटे उधारने ।
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ १४ ॥

खम्भ प्रगट्यो नर हरी, ज्यांकी क्या निश्चय परी,
आही कोई गप धरी, पुराना कथ गारने ।
वेदों की मरजाद लोप, नवा ग्रन्थ रच्या पोप,
मूर्ति पुजती रोप, ठगने ससार ने ॥
पति चित्र छवि पाय, कामातुर हेत लाय,
भाव सिद्ध हो तो आय, क्यों नी सुख नारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ १५ ॥

ना प्राकृत नर गति चित्र में समान जती,
साधारण जाण मती, जग सरजन हारने ।
मुर्ति मे व्यापे राम, इचरज को कहां काम,
चराचर वासी श्याम गावे करतार ने ॥
वेदो का अर्थ खास, पुराणों में कह्यो व्यास,
तीन वाक दिये भास, धर्म को प्रचारने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ १६ ॥

रोचक भयानी वानी, मानते है मूढ प्रानी,
हम तो यथार्थ ज्ञानी, छोड़ दें असार ने ।
पाप पुण्य सभी करे, दुख सुख भोग भरे;
जीवा जूण ज्योंहो मरे, लेके अवतार ने ॥
तप से तो जीव ईश हो सके विस्वाबीस
कैसे हो यो जगदीश, सागे मोह जार ने
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ १७ ॥

जगदीश यो हैं अनादि, तपसे क्या हुआ बादी,
तप से तो जीवादी, पाये मोक्ष द्वार ने ॥

नित्या नन्द माया परे, जन्म रहे कज तरे,
ख्याली भेसे भाव धरे, बरते ज्यों व्यवहार ने ॥
बाल बेवा गोली खाय, भ्रमता घर बताय,
ज्योंहीमत दोष लाय, स्वतन्त्र करतारने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ १८ ॥

स्वतंत्र है वो करतार, क्यों फिजूल रहे उचार,
रहता है चोकीदार, उग्रसेन बारने।
इसे कहो ईश्वर तुम, हरगिज नहीं माने हम,
प्रथम तो जात कम साधवी विचार ने ॥
गुजरी दी जन्म घूटी, गोपियां को छाछ लूटी,
ग्वालों की छाक जूठी, खातो दिन गुजारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ १९ ॥

जूठी और अछूताई प्रभु के या भिन्न नांई,
भाव भरा भात खाई, भावे सो मुरार ने।
कृष्ण को ईश्वर रूप, माने कोई ना बेवकूफ,
होयगी खराबी भूप, भोगे दुख द्वार ने ॥
नाना को बली समान, भक्त जान रखो मान,
रहे जशोदा स्थान गोप कुल उधारने,
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ २० ॥

गोप कुल क्या उधारा बशी बजाय छल गारा,
बेहकाई पर दारा मोही शर्म बारने ॥
रच माया इन्द्र जाली, इन्द्र पूजा मेट डाली,
मिठाई सब आप खाली पुजा दियो पहार ने ॥
कोई कहे जादु वश, कोई कहे नन्द अश,
वर्ण शकरो निःसंस, जण्यों ई मुरार न ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ २१ ॥

वर्ण शकर की गारी, हरि को मत दे अनारी,
लगत है अति खारी, सिधरे सरदार ने ॥
उत्तम ही जशोदा धाय, उत्तम ही देवकी माय,
ता पर मत दोष लाय, निन्द करतार ने ॥
धरम की सभा के मांय, हरि निन्दा कीजे नांय,
घोर दंड निन्दक तांय, लिख्यो नीति कार ने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ २२ ॥

निन्दक है वो प्राणी अण होती कहे काणी,
हम तो सांच सांच बाणी, लगे यों उचारनें।
हां या बात है जरूर सांच को बखाण्यों सूर,
लागत है अति करूर सारा संसार नें॥
हम इती बात क्या यो करी ना कमजात,
फेर क्यो निन्दक बतात सत बोलनहार ने॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ २३ ॥

बस बस सांच थारी, रहणं दे मतहारी,
हातां मत बा कुल्हाड़ी अपणं पग ध्यारने।
एक नहीं बात अपणों ही गीत गात,
क्या तुझे सन्नीपात छायो मत बिगारने।
अंगुली दे ब्याल मुख, कुछ नहीं पावे सुख,
होवेगो अति दुख छेड़ेमत न्हार ने।
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ २४ ॥

यो साल्यो कब को न्हार, मम आगे सतरा बार,
भाज गयो मान हार, झेल्यो ना प्रहार ने॥
जू जला दिखाय राय कोई भालू ने डराय,
हमको नहीं भय आय जाण इस न्हार ने॥
सामों नहीं झांके नीच सिर झुकाय बैठ्यो बीच
रह्यो है, लकीरां खींच डरतो जीव उबारने॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ २५ ॥

हां हां खींचे है लकीर, जबही तोय बरज्यो बीर,
अखीर की लकीर तीर होगी तोहि मारने।
तेरी मात सौ गाली कृष्ण से माफ कराली,
गिणे है सो बनमाली, अपणों प्रण उबारने॥
सौ सेती एक बाध नहीं सहेगे अपराध,
करलीजे दिल मे याद प्रभु का करार ने॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ २६ ॥

सौ से अधिक दूंगा गाल, देखूं क्या करे ग्वाल,
मेरो नाम शिशुपाल जीतूं मै इसवार ने॥
मेरी मां थी डरपोक, खमा मांगली बेहोश,
जब ही थो तानां मोस मोसे जोधार ने॥

काट दो लकीर तीर, डाट दो समरि नीर,
मारल्यो अहीर बीर, लेके तलवार ने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ २७ ॥

ऐसी तलवार शूल कृष्ण पे दिखाय फूल,
ब्याहन गयो जब कहां भूल गयो हो तलवार ने ॥
मेरे कहे पर दाना, इतना क्यों रोस आना,
भाभी छा दिया ताना, जब ना कियो खार ने ॥
वो ही यो कृष्ण कान्ह कुनणापुर देश आन,
मार तब जान आन लेग्यो वर नार ने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ २८ ॥

धरके कहां लेग्यो नार, कंवारी पर डाको मार,
लेग्यो छो जादू डार, मोह चोकीदार ने ॥
मै चढ्यो रीस खाय, जब जरासंध आय,
क्रोध दीनो थो बुझाय, छीन हतियार ने ।
नींतर मार जादव दल हटा सारो कृष्णबल,
ल्यातो पकड़ उसी पल हल मूसलधार ने ॥
नाथू कहे शिशुपाल० ॥ २९ ॥

हल धारी जादु भूप, दोनों ही दीपक रूप,
आज्ञा सम कई बेवकूफ गहन गये उगारने ।
सभी भये अग भंग, जीत सकेन कोई जग,
चाहे क्या तु पतग, अपनो अग जारने ॥
काल को नचाये नचे हिरदे नहीं ज्ञान जचे,
जैसे दवा नांय पचे सख्त बीमार ने ॥
नाथू कहे कुन्तीलाल० ॥ ३० ॥

बीमारी किसके प्रान, हम तो बली तेज वान,
छो क्या थे तुच्छज्ञान बढं न मान गारने ।
जाने जो श्रुति का जप, माने ना पुराण गप,
नचावे क्या काल रूप, कपता लख करार ने ॥
मै हूं रणछोड़ नांय भागूं रण बीच मांय,
क्या रणछोड़ मेरे तांय गुना गिणे मारने ॥
नाथू कहे शिशुपाल हे पांडव महिपाल,
नन्दलाल पशुपाल पूजे केहि कारने ॥ ३१ ॥

पूरा गुना भया खल ले पूरा निन्दा फल,
आता है चक्र चल तेरा सिर उतार ने।
केती समसेर फेर डटे नाय चक्र सेर,
खूब पाल्यो भाव बैर मुनी साप धारने॥
भयो दुष्टताको नाश ज्योती जीव उड़ी आकाश,
आय कृष्ण मुख वास कियो जन्म सुधारने॥
नाथू कहे कुन्तीलाल चुप रहे शिशुपाल,
नन्दलाल विश्वपाल पूजे एहि कारने॥ ३२॥



हिरण्यकश्यप प्रह्लाद संवाद

छप्पय

दोहा :—सिद्धि सदन, करि वर वदन, एक रदन गण राज।
रगण सगण गण टाल के दीजै बुद्धि शुभ काज॥
छप्पय :—इधर आव प्रह्लाद आज सन्मुख हमारे।
मै पूछत हूँ तोय ध्यान क्या जचा तुम्हारे॥
पढ़ने को चट साल लाल भेजा था तुमको।
सो क्या विद्या पढ़ी भेद बतला दे हमको॥
चार वेद षट् शास्त्र विद्या पढ़ हो शास्त्री॥
'नाथू' कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ १॥

चार वेद षट् शास्त्र सम्मति आदि पुराणा।
सब ही का सारांश अध श्लोक में आना।
ब्रह्म सत्य जग मिथ्या जान मन, धारण कीना,
ये मै विद्या पढ़ी सफल होवेगा जीना।
और विद्या सब अविद्या हरि भक्ति विद्या खरी,
'नाथू' कहे प्रह्लाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ २॥

क्या हरि भक्ति खरी समझली होय दिवाना।
विद्या बिन नर जन्म जीव-का पशु समाना॥
विद्या से रह मान लोग पण्डित वर माने।
विद्या से ही वेदारथ को सम्यक जाने॥
हृदय बीच धारण करो विद्या सुख की बेलरी,
नाथू- कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ३॥

सुख दुख की तो बेल भाल रची किस्मत् विधि वर।
सो बिन विद्या फलै देय सजोग ऋतु पर॥
मै सुख दुख सम जान तजो भोगन आसक्ति।
पण्डिताई सनमान भये नहीं मिलती मुक्ति॥
सारांश देखा वेद में हरि भक्ति ही नीसरी,
नाथू कहे प्रह्लाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ४॥

कहा नीसरी सार हीन है बुद्धि तुम्हारी।
दियो फक्कड़ बहकाय जचे ना सीख हमारी॥
तू तो बिगड़या खैर मंद था भाग्य तिहारा।
चटशाला के शिशुवन को क्यों मूढ़ बिगाड़ा॥
पुरवासी सब करत है तेरी निंदा मुख परी,
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ५ ॥

निंदा करते मूढ़ पाप के होते भागी।
सत्गुरू मिलिया मोय हमारी किस्मत् जागी॥
मै बिगाड़्या नहीं दैत पुत्रों को राया।
अति हित कारक मनुष्य जन्म का कर्म बताया॥
हरि भजन के कारणे सुर दुर्लभ देही धरी,
नाथू कहे प्रह्लाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ६ ॥

बार-बार तू क्या हरि को मूढ़ सरावे।
ऐसा क्या-ही हरि भक्ति में अद्भुत सुख पावे॥
परतक सुख तो राज लक्ष्मी भोगन मांही।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष भी आमें नाहीं॥
त्रिलोकी का राज ले भोग सुख संपदा खरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि॥ ७ ॥

राज लक्ष्मी लोभ नही हरि कुं छिटकाऊँ।
धर्म, अर्थ और काम मोक्ष वो मै नहीं धाऊँ॥
चतुर पदारथ राज भोग सपने वत जाना।
यदि परतक भासे तो बिष्णु रूप समाना॥
उस विष्णु पद चित्त लगा रहत है हृदय धरि।
नाथू कहे प्रह्लाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ८ ॥

हरदम हरि को भजे गिणें नहीं मूरख मुझको।
ऐसा उम विष्णु से भय क्या हो रहा तुझको॥
सात द्वीप नौ खण्ड पृथ्वी पे मेरी दुहाई।
क्या मेरे से अधिक लखो हरि घर प्रभुताई॥
त्रिलोक मे नहीं करणियो मेरी कोई बराबरी,
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ९ ॥

तेरी बराबरी आज दिवस कोई नहीं करता।
सदा नहीं स्थिर राज, आखिर सब ही नर मरता॥

छिन-छिन बीती जाय जिमी अंजली का पानी।
काल वृषभ का चारा है ये सकल पिरानी॥
घबरात चित्त दर्शात जग जन्मांत सो जाती मरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ १० ॥

मरे जाय संसार मुझे वर ब्रह्म दीना।
बिधि सरजित सब जीव रूप से निरभे कीना॥
बारह मास दिन-रात में मोहि न काल ग्रासे
ना शस्त्र से छिदुं तेज लख जम भी नासे॥
मेरी शरण गहे हो अमर विधि से करवादुं बरी,
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ११ ॥

बरी मुसायब करे झूंठ आखिर को हारे।
निश्चय दश का नाश जतन नर विरथा विचारे॥
काल गति बलवान् विलक्षण जानी न जावे।
छिन में शस्त्र सरूप वक्त अद्भुत करि आवे॥
हरि भजे से काल का मिटे भ्रमना परी,
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ १२ ॥

कैसे हरि को ही भजे काल भय होवे भजन।
हरि हर विधि समान हुए प्रण बस उत्पन्न॥
या ते अनित जड़ रूप त्रिगुणा तम हो सूझा।
निर्गुण नित्यानन्द खास ईश्वर रह दूजा॥
हरि की कछु ना अधिकता माया पुरूष मुरती धरी,
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि॥ १३ ॥

को माया को पुरूष कोन त्रिगुण ॐ कारा।
कौन खास बे खास ईश्वर न्यारा-न्यारा॥
जो देखे कर गौर ओर कोई नही परमात्मा।
चीटी से विधि तलक वो ही है विष्णु आत्मा॥
निर्गुण तणा स्वभाव ये ॐ माया विस्तरी।
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ १४ ॥

माया विसतरी ॐ दरश दृष्टा होय नाहि।
दरस दरसना एक रूप दरसे जग माँहि॥
जो तूं कहता विष्णु रूप है यह जग सारा।
तो होते चतुर्भुज रूप सरब एक ही उणियारा॥

निगुण सगुण का अयं है दो माया सरासरी।
नायू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि ॥ १५ ॥

नामारय भये दोय, दोय नहीं ईस कहावे।
निगुण सगुण घट रहित सहित ज्यू श्रुतियां गावे ॥
सरब चतुर्भुज रूप जरूरत बिना वनावे ॥
तो हो नाना रुप विभूति काहू जनावे।
दृष्टा दृष्टी दरस सब वो ही है पीताम्बरी,
नायू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यो भजता हरि ॥ १६ ॥

पीताम्बरी है दरस दरसनासी मत भज रे।
मै तोय आत्म ज्ञान बताऊँ सोहि समझ रे ॥
आत स्वास सो कह जात ही अहम भासे।
सो हम शब्द चितार सदा सो हम प्रकाशे ॥
पाखण्डी की सीख ले मत बन न वो मतान्तरी।
नायू कहे हरिण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि ॥ १७ ॥

मतान्तरी मुनि आदि जिन्हे वेदान्त बनाया।
तिन्हीं का सिद्धान्त हिये मे दृढ़ जमाया ॥
सो हम आदि नाम गुणा कर वेद जचाया।
सो विष्णु मॅहि घटे और कोई र्नाहि लखाया ॥
उनका रूप तुम ना लखो मुझको ये मालूम परी।
नायू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यो भजता हरि ॥ १८ ॥

भयो अनोखो ज्ञान-वान नूतन मतवारो।
मेरो ही पुत्र कहावे बनत है गुरु हमारो ॥
मुझे कहे नहीं जानुं, विष्णु रूप विपेखा।
तैं तो सुना है नाम मैंने आँखों से देखा ॥
अग कालो भृगुलता लगी सो नहीं धा भी भरी।
नायू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि ॥ १९ ॥

यहा नहीं धा भी भरी, बड़ो की यही बडाई।
पर अवगुण गुण जान राखते हिये समाई।
घन तन चतुर्भुजा दिक कई भगतन हित धारा।
शुद्ध सच्चिदानन्द रूप हरि का अविकारा ॥
शुद्ध सच्चिदानन्द घन प्राण परमात्म परी।
नायू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ २० ॥

सद चित् आनन्द रूप प्रतक तो तूँहि आत्मा
फिर क्यों माने असत्य भूल दूसरा परमात्मा ॥
जैसे स्वप्न में सपन दृष्टा निज मूल न' जाने ।
मिथ्या स्वप्न के जीव, ईश्वरादि सत माने ॥
मूढ राज सुत कहत है ज्यों दीवान की नौकरी ।
नाथू कहे हरिण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि ॥ २१ ॥

दीवान सेवा किया राज सुत बुद्धि बढावे ।
बुद्धि बढ़े ही निज कर्त्तव्य कर नृप पद पावे ॥
अंतः करण त्रिदोष, चपल, छलता, जड़ बुद्धि ।
भक्ति ज्ञान निष्काम कर्म से हो चित शुद्धि ॥
भक्ति सगुण की होत है सुगम कहत सास्तरी ।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ २२ ॥

भक्ति सगुण की चाहे तो कर' रे प्रभु शिव की ।
भोला करे कल्याण मिटावें बाधा जिव की ॥
विष्णु मेरा रिपु बडा दम्भी अभिमानी ।
करे देवों की सहाय दैत्य कुल की नुकसानी ॥
वाराह बण हिरण्याक्ष को मारा जबसे भया अरि ।
नाथू कहे हरिण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि ॥ २३ ॥

अरि मित्र का भाव हरि सपने नहीं आने ।
शिव विष्णु में, अंतराय कोई मूरख जाने ॥
देव दैत्य का मनोभाव करतब हो जैसा ।
स्वतः रूप दरसाय फल भुगतावे तैसा ॥
वह समदरसी सूर्य सम परसे प्रकृति अनुसरी ।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ २४ ॥

रे,रे शठ् हठ कहा करत इतनी लपराई ।
बालक तुमको जान बहुत-सी मै गम खाई ॥
मेरा तेज हथियार कोप का खोफ न खाता ।
मेरे सामने मेरा रिपु को सुमर सराता ॥
तेरी मृत्यु अब आय के सिरहाने ही खरी ।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि ॥ २५ ॥

मुझे मारने हार कोई भी न जग मांही ।
या ते मुझको तात, किसी का भी भय नांही ॥

मृत्यु भय होता है दूसरे से प्रमाणा।
मैंने द्वैत तज विश्व रूप एक विष्णु ही जाना ॥
हरि को हरि मारे कहा आग आग से कब जरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ २६ ॥

आग क्रोध की जगत बचन तेरे यह सुन-सुन।
वा में कर रिपु कीरत घीरत डालत है पुनः-पुनः ॥
अभी तेरा सब हरि पने का घमण्ड मिटाऊँ।
दिग्गज सम गजराज छोड़ पग कुचल मराऊँ ॥
छोड़या वह मारे तुझे महा मदमाता करि।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप् पुत्र क्यों भजता हरि ॥ २७ ॥

करि रूप गणपति जान मै वंदन करता।
विनायकेश्वर शीघ्र सकल विघ्नों को हरता ॥
शांत हुआ मोहि देख खिजा फिर महावत लावे।
निकट हमारे आत कांप थर-थर चिल्लावे ॥
क्या यह गज मारे मुझे इनको दीसे केसरी।
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ २८ ॥

कहा केसरी दर्शन को गज रोगी होगा।
रोग वसी चिरलाय भागता उल्ट अजोगा ॥
देवो दूत को हुक्म तुरन्त सूली दे मारे।
सामर दैत्य बलवान् भूमि पर पटक पछारे ॥
चढ़त पार हो बदन के देख तेज इसका खरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप् पुत्र क्यों भजता हरि ॥ २९ ॥

चढत सूल पर हरख फूल-सी भई बिछावन।
आखिर टूटी वार सहा करि हरि हिमायत ॥
दैत्य तना प्रहार प्रभु परताप ही डटिया।
ये ले चाल्या चक्र शीश सामर का कटिया ॥
देख प्रभु की सामरथा ऐसा है वो चक्करी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ३० ॥

चक्री चक्र चलाय अचानक चाकर मारा।
गई पुरानी, टूट दाव की घस गई धारा।
होली बहन पर देव शस्त्र का जोर न चाले।
करती अग्न स्नान तुरत ही तुझको जाले ॥

अब अग्नि से ना बचे सेन में उसको करी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि ॥ ३१ ॥

सेन करत गई बैठ पकड़ कर भुजा भवानी।
चिता चिणाय धरि आग शीघ्र करने मनमानी ॥
दक् दक् दक् मर मेघ अग्न सी जगी ज्वाला।
सर्व व्यापी भगवान शुचि सुत लख करि पाला ॥
एक दिन जलती आग में यों ही मंजारी ऊबरी।
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ३२ ॥

अग्नि से गये उबर होलिका भस्म रास है।
अब जाना तें कोई शत्रु का खास दास है ॥
जन्मे मेरे वंश विनाशक तू खल जैसा।
बांस वीड़ा में अग्नि कठिन कुलहाणी वैसा ॥
तोय मारे बिना ना रहूं अभी गिराऊँ चढ़ गिरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि ॥ ३३ ॥

हरे-हरे सत जोजन गिरि ले बाबुल डारे।
केशव आये दौड़ गोद ले भूमि उतारे ॥
देख यह तात, भक्त वत्सलता उस भगवत की।
ऐसे ही करते सहाय सदा ही शरणागत की ॥
वृथा परिश्रम क्यों करो या देह प्रभु शरणे परी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ३४ ॥

कब तक रहेगा शरण देखता मैं ही तमाशा।
मारे बिन ना रहूं जभी तक घट में साँसा ॥
निश्चय करके होय गया तूं मेरा बैरी।
गाफलता से हो गई प्रबलता तेरी ॥
अब डारूँ चल सिंधु में वहां को तारे तरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्प पुत्र क्यों भजता हरि ॥ ३५ ॥

डारत सिंधु माँय नाव ले प्रभु पधारे।
भव सागर दे तार कछु इनसे नही वारे ॥
कहा जल्दी है तात, वरुण है परूण-परायण।
आत्म निरूपन करे गरुड़ राज्य नारायण ॥
सरवर से ही उबारिया जैसे जल डूबत करि।
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ३६ ॥

जल से लिया उबार आया होगा बन मलिया।
बाते रही सुणीज दीखता क्यों नहीं छलिया॥
रहे शठ विष्णु पास बता तूं आतमज्ञानी।
मैं देऊँ आतम ज्ञान होय जब विष्णु ध्यानी॥
कहा विधि मोहि जान के ठानो यह मसखरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप् पुत्र क्यों भजता हरि॥ ३७॥

नहीं मसखरी तात फेर भक्ति की माला।
कैसे दीसे हरि तोय ज्ञान दृग तम का जाला॥
स्थूल देह कोई लख आतम शिक्षा तुम देते।
सो विष्णु तो पच कोसी पारगत रहते॥
पच कोटि खड गढ़पति मिले भक्ति वीरता दृढ़ भरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ३८॥

तेरा स्वामी गढ़ पतिया विष्णु के आड़ा।
कौन-कौन पच कोस पर रूप कोटा गाड़ा॥
एक चोट में ही कोट का ओट करदूं चूरण।
फिर रिपु हत कर भ्रात ऋण से होऊँ ऊऋण॥
प्रथम कोट तू ही दरसत आयी गदा तुझ पर हरी।
नाथू कहे हिरणकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ३९॥

दलन हमारे बदन गदा का भये सौ टुकड़ा।
मुझको मारे तात चुकीजे नाहि थुकड़ा॥
अन प्राण मय मन विज्ञान आनन्द मय आदि।
भगति गदा कर रेवणु यह ही पच उपादि॥
भगति नाम सब विश्व लख विष्णु ही है चरा चरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यो भजता हरि॥ ४०॥

ऐसी भगति मूढ सिखा पामर पाथरने।
चक्रवर्ती हम वीर रखे नौकर चाकर ने॥
अरून्धती ज्यों एक आत्मा श्रुति गावे।
तो फिर पंच कोशादि झगड़ा वृथा पसावे॥
भेद अति दुखी अंध पाकर अंध की लाँकरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि॥ ४१॥

अध वही मल-मूत्र देह की करे अहमता।
मेरे तो प्रहलाद पणे की लेस न ममता॥

देह अभिमानी कु'हि अवश्य कर्तव्य है सारा।
स्थूला रून्धति उपमा रहस्य श्रुति का न्यारा॥
देह आत्मा मान्या रूके परम पुरुषार्थ धरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ४२॥

अक्रिय आतम हेत पुरुषारथ से क्या मतलब।
सनिक विचारे परापत आपसे-आपहि है सब॥
जो तुझ मे प्रहलाद पणा अहकार नही है।
तो फिर विष्णु भजने में ही सार नहीं है।
वैराग्यों के काम की विष्णु भक्ति दलिदरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ४३॥

रमा दलिदर करम जोग सब ही को मिलता।
हरि भजन परताप सुख आनन्द फल फलता॥
भगत प्रीत की रीत सहायता हरि की दरसन।
रहे धर्म मरजाद प्रभा भगति की सरसन॥
धर्म सनातन बहु बढे फरकत खगपति की फरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ४४॥

गरूड़ ध्वजा फरकाय हमारी चाहता नकशी।
अब जाना तू है शत्रु का पूरन पक्षी॥
तुझे मारने मॉय बहुत देरी मे डारी।
इन्द्र मान—मरदनी खड़ग में अभी संवारी॥
चिप ताते खम्भ दृढ हो देख झुकात या बोजरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ४५॥

ताता खम्भ यम धाम चिपावे हरि वेमुखने।
करे हत्या सग भोग-सी वे महा दुख ने॥
जो तुम कहत अग्नि तपत खम्भा यह लोह का।
इन पर चीटी चले फेर हम कु क्या धोखा॥
प्रभु प्रताप शीतल भया बाथ खम्भ के मे भरी।
नाथू कहे प्रहलाद् ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥४६॥

बार-बार तू वैरी का बल कहे मुझ आगे।
ऐसा प्रतापिक् है तो क्यों मेरा डर लागे॥
छिप-छिप करता सहाय मेरे सम्मुख नही आता।
अब बता इस वक्त कहाँ है तेरा विधाता॥

खड्ग चमकती तो ये देख धरा थर थरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप् पुत्र क्यों भजता हरि ॥ ४७ ॥

धरणी तो धर्रराय भूप की देख अनीति।
उमर जुलम की क्षीण आखिर हो जाय फजीती ॥
क्या पूछे हर वक्त हर जगह हरि कायम है।
तोमें,-मोंमे; खड्ग्-खम्भ; में भी इसी दम है॥
अंत पर अवतार ले परमेश्वर परापरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ४८ ॥

जड़ खम्भे मे चेतन पद माने मति भोरा।
पत्थर सालिगराम पुजाते जगत् ठगोरा॥
जो तू कहे अवतार अनन्तर जरूर होगा।
तो फिर इन सा अन्त कौन सा करूर होगा॥
खम्भ मे है तो प्रकट बज् मुष्ट मेरी परी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप् पुत्र क्यो भजता हरि॥ ४९ ॥

परी खभ पर मुष्ट भई गम्भीर आवाजे।
घररर घररर प्रलय काल के घन ज्यो गाजे।।
दृढ़ भाव से झूठ चीज सच्ची हो जावे।
तो सच पर सच का भाव कियां अचरज क्यो आवे ॥
प्रात. रवि ज्युं प्रगटे जड़ खंभे मे नर हरि।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यो भजता हरि ॥ ५० ॥

खूब हुआ है आज हमारा चित्त का चाया।
मेरा भ्रात का रिपु हमारे सन्मुख आया॥
अभी खेल शिकार सिंह चरम करूं शिव अर्पण।
इसके सोणित से करस्यू बन्धु का तरपण॥
तोहि सायक समेत शठ् मारता हूं इस घरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यो भजता हरि ॥ ५१ ॥

इस घडी तूं सन्निपात बादी मे बकता।
जबही इण शिव को छाल काढ शिव ऊपर ढकता॥
इनसे रमे शिकार कहां ल्याकत है तोरी।
चित्त भागणो चाहे लाज-वश करे मुख जोरी॥
तरपण करण हिरणयाक्ष के भेजेंगे तोय, मैं बरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि ॥ ५२ ॥

अरे बैरी तु देख हमें कोई मार सके ना॥
शिव हो चाहे, हरि ब्रह्मा वर टार सके ना॥
जो मुझ देह का प्रारब्ध फल हो चुकेगा।
तो कोई अद्भुत काल जोग आकर डसेगा॥
वीर हम भागे नही क्या तुम देखो कायरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ५३॥

कायरी नहीं तो इधर-उधर काहे को फिरता।
ऋणी खड़ा है पास कर्ज फिर क्यों नहीं भरता॥
अब तक तुझको परालब्ध की खबर परी ना।
टले न विधि वर काल रूप प्रभु भये नवीना॥
पुरूषोत्तम महिना भये अद्भुत हो लीला करी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ५४॥

लीला स्वप्न सी देख नहीं डर पावे मन में।
देख रहा हूँ वार गमन कर दिशा गगन में॥
वार लगते ही धार कोप खाण्डा फटकारू।
एक चोट में लोट-पोट नरसिंह कर डारूं॥
वार भाग बस ना लगे मरके जाऊ सुर पुरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ५५॥

बैर भाव हरि से कर, मर सुरपुर पाओगे।
तो फिर जग में नामवरी क्या कर जाओगे॥
कछू नहीं बिगड़ा हाल छोड़ दो द्रोह प्रण सारा।
एक बार कहो विश्व-रूप एक विष्णु ही प्यारा॥
दीन बन्धु लख दीनता बख्सेंगे जीवन जरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि॥ ५६॥

रिपु कने हो दीन जीव तो धिक् जीवन में।
वीरों का तो भजन नाम कट मरियां रण में॥
जो मेरे लिए काल जोग नूतन यो करहि।
तो कल्पित देह मरे आत्मा कबहुं न मरहि।
यह ठान दृढ़ रिपु पर झुका देख भट जोरावरी।
नाथू कहे हिरण्यकश्यप पुत्र क्यों भजता हरि॥ ५७॥

लख जोरावरी पकड़ लिए जैसे मृगराजा।
तल-खँडे पर अधर गडुले नृसिंह गाजा।।
भल महिने बीच समै जान जब संध्या आई।
नख शस्त्र तन फाड़ डाक्टरी विद्या लगाई।।
स्वर्ग गये पितु देह तज, सुर बरसाई फुलझरी।
नाथू कहे प्रहलाद ज्ञानी पिता यों भजता हरि।। ५८।।



श्रीराम शंबूक संवाद

चोबगो

छप्पय छन्द :—निरजल बनके बीच बड़े दरखत की साखा!
चरण बांधकर सीस अधो लटकाये राखा !!
औंधा झोटा खात कष्ट बहु होता तन में।
भूखा प्यासा अड़ा लगी क्या आशा मन में ।।
बता नाम वर्ण हाल सब, नहि सिर कट हो दूर ये।
नाथू कहे श्रीराम तपसी, क्यों किये करम करूर ये ।। १ ।।

पुष्प विमान पै बठ राम, चहुं दिश फिर आये ।।
क्या पूछो निज २ उन्नति हित विश्व उमाये,
ब्रह्मा विष्णु महेश, सुरादि सब तप से त्राता।
देह सहित सुरपुर जाने मै अंग तपाता ।।
शंबूक नामी शुद्र हूं क्यों कफगी गुण सूर ये ।।
नाथू कहे तपसी रघुवर यों किये कर्म करूर ये ।। २ ।।

कफगी नीति युक्त शुद्र हो तें तप करिया ।।
टूटी धर्म मरजाद विप्र का बालक मरिया ।।
देह सहित नर इन्द्रलोक कोई गया न जाता।
हठ धर्मो बली नृग त्रिसंकु ज्यों गति पाता ।।
तरक्की स्वधर्म से पर हुन्नर पातक पूर ये ।।
नाथू कहे श्रीराम तपसी, क्यों किये कर्म करूर ये ।। ३ ।।

पातक पूर पर हुन्नर, अगर होते धनु धारी,
तो अन करमी ब्राह्मण, भी दण्ड के अधिकारी ।।
- पर द्रोह बलि नृप त्रिसकु अगति पाई ।।
मै ताप्यो निज तन क्यों द्विज के सुत दुखदाई ।।
फंद चौरासी काटने नर तन हुआ मढूर ये ।।
नाथू कहे तपसी रघुवर यों किये करम करूर ये ।। ४ ।।

लख चौरासी फंद कटे, सत तत्व ज्ञान से।
तत्व ज्ञान होय, दया सील अद्वैत ध्यान सें।।
करे रावण का नाश, परशु धर की गति मारी।
पर पैसा से बूठे, ब्राह्मण ले ससारी।।
पद से ऊँचा होत लगे मुख सिर चोटां धूरये।
नाथू कहे श्री राम तपसी, क्यों किये करम करूर ये ।। ५ ।।

मुख उर भुज पद रूप जगत को कीकर माने ।।
भिन्न भिन्न परतक चिन्ह मनुष्य सब एक समाने ।।
भुज सिर हो सके नांय, करम गुण न्यारा न्यारा ।।
क्षत्री विश्वामित्र भये ब्राह्मण तप द्वारा।
उनका तपवल देख के ठाना मै गरूर ये ।।
नाथू कहे तपसी रघुवर यों किये करम करूर ये ।। ६ ।।

विश्वामित्र भृगुनद का जल मंत्रित बदलोजा ।
जव क्षत्री ब्राह्मण कुल मे भये उल्टन बीजा ।।
वपु से ही क्या चातुर बरणी होते पैदा।
छोटा मोटा अंग रग गुण करमों भेदा ।।
जाति करम पतिव्रत दया शुभ भोज धर्म मशहूर ये ।।
नाथू कहे श्री राम तपसी, क्यों किये करम करूर ये ।। ७ ।।

ऐसे वंधन से रहते नर दीन सदाई।
नृप के गुप्तचरों ज्यों पुरषाधीन लुगाई ।।
ब्रह्म के मुख उर भुज पद होना सपने मांही।
कलपित मान तो गरभा से ठहरे नांहीं ।।
सिद्धि से भये तो अब क्यो योनी पर नूर ये।
नाथू कहे तपसी रघुवर यो किये करम करूर ये ।। ८ ।।

योनि पर होय नूर स्थूल प्रकृतिमद है।
वृह्मविराट अहंकार रूप मुख उर भुज पद है ।।
फिर वरण से मुख उर भुज चरण से होता।
गुण करमो से नांय, नांय गुण करमां सोहता ।।
वाप छते सुत ना मरे सुखी निज धर्म चतुर ये ।
नाथू कहे श्री राम तपसी, क्यों किये करम करूर ये ।। ९ ।।

ऐसी धर्म मरजाद मनी, सत जुग मे सब तन ।।
मान्धाता वंवते शुद्र तपे मरे न द्विज जन।

कुण मतंग चेली थी, झूठे फल तुम खाये।।
मेरे भजन से कैसे विघ्न ये लख खिजराये।
गुण करमां जाती वरण माने रघुवर शूर ये।।
नाथू कहे तपसी रघुवर क्यों किये करम करुर ये ।।१० ।।

गुण करमां माने जाते, जग की आदि में।
लागू हुआ कानून धर्म की अहलादी में।।
पूर्व पड़े दुष्काल शुद्र तपे तुमसा न कोई।
साधू, बने मतंग भीलनी प्रेमां होई।।
सँदेही सुर पुर लिये करता हर मगरूर ये।
नाथू कहे श्री राम तपसी, क्यों किये करम करूर ये ।। ११ ।।

हर मगरूरी मान लगाओ ब्रह्म हत्या है।
मुझ करतूत से विप्र पूत मरे सबूत क्या है।।
ना नीचा मुख लटक भरी ज्यों विष फुकारा।
ना चले अदिठ चक्र, मूठ सर शब्द इशारा।।
कनकातम तापे सुधी मने किसका न कसूर ये।
नाथू कहे तपसी रघुवर यों किये करम करूर ये ।। १२ ।।

कसूर परतक पग काटो लगे बिलखे मूंडा।
ब्रह्म जीव जग एक लखे सोचे तत ऊंडा।।
तेरो करतब चक्र मूठ बिष से भयानो।
दशरथ सर सरवण उर हो तब को के तानो।।
बिन रिसपत नृप नौकरी तप सुधि कर अघ चूर ये।
नाथू कहे श्री राम तपसी क्यों किये करम करुर ये।। १३ ।।

नौकरी तपसी की उच बरणी राखे भ्राता।
क्या हो बिलखे मुखसुख कंटक काढ दांता।।
रज पद छाई होतो, करे जिम्या से दूरी।
जब सब जग अंग की अपनायत दरसे पूरी।।
नीच कहे आधार को फैला ढोंग फितूर ये।
नाथू कहे तपसी रघुवर यों किये करम करूर ये ।। १४ ।।

नीच ऊँच जग ब्रह्म रूपमें सपने नांहि।
खान पान गुण करमां से मानी श्रुति मांहि।।
बिन माने मानस वेह में पुसता भर जावे।
बेवा व्याव अन्य किसब आपत्ति बरियां गावे।।

इस वक्त कुछ आफत नहीं सब सुखी पथ मंजूर ये
नाथू कहे श्रीराम तपसी क्यों किये कर्म करुर ये ॥ १५ ॥

सबको पथ मंजूर यही तो स्वीकृत हम को।
बेसक सजा देवो नाथ शीघ्र लाजम जो तुमको।
बाप पहले ना मरे, पुत्र वधु हो नहीं बेवा॥
ऐसा सनातन धर्म प्रतक फले गत संदेहा।
बक्सो मुक्ति पद अरज सुन अंतिम राम हजूर ये।
नाथू कहे तपसी, रघुवर यों किये करम करुर ये॥ १६ ॥



शिशुपाल देवर भाभी संवाद

कवित्त :— कुनण पुर भींव द्वार, दुलवो है उम्मेद वार,
रूप गुण अपार देख, भाभी मन लुभावेगो।
जोय के ठिकानों नींको, पठायो है कुंवर टीको,
मगलाचार की तींको, आनन्द घणो आवेगो ।।
सुणीं एक बात ओर, सुन्दर हित बान्ध मोर,
आवेगो माखन चोर, मैमां क्या पावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
मॉग थ्यूं नहिं छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। १ ।।

कुनण पुर भींव द्वार, लला हरि उमेदवार,
कमलावतार वांको जश, जग मैं छावेगो।
वो तो है अनादि कन्त, वोहि सर्व शक्ति वत,
महिमा है अनन्त ज्यां को पार कौन पावेगो ।।
मेरे से छोटी बहन, वरो रूप भरी मेन,
टीको पा फेर चेन जबहि तोहि आवेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बांध मोड़, रण छोड़ ब्यावेगो ।। २ ।।

भावज तोय सयानी जानी, बात करती है दीवानी,
त्याग गग पानी कौन तलैयां में न्हावेगो।
घर बैठ्या लक्ष्मी आय, कैसे थ्यूं अब गवाय,
हानी घर जग हँसाय, ऐसी कौन चावेगो ।।
गुवाल को बताय भय कैसी खोटी सीख देय,
ऐसी सीख लेय मरद काज क्या बनावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड,
मॉग थ्यूं नहीं छोड, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। ३ ।।

बणे नहीं तेरो काज, होयेगो उल्टो अकाज,
भोत कयां आज तो नाराज होय जावेगो।
अभी तो नहीं हाँसी हान, देवर ले लियो मान,
प्रभु को न पुरुष जान, पीछे पछितावेगो ।।

ब्रह्मा के ब्रह्माणी, सोहे शंकर के भवानी,
हरि के महारानी जोड़ो टूटणें न पावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड,
रूक्मण पै न बाँध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ॥ ४ ॥

त्रिया जात कही बेगम, ज्ञान की कुछ गम,
क्या मै गुवाल से भी कम, अकाज बन जावेगो ।
नंद को किशोर, कैसे माने ईश रूप तोर,
मोर मुकुट वारो जोर, नृप को क्या पावेगो ॥
धेन को चराने वारो, बीन को बजाने वारो,
गोप्यां को नचाने वारो, शस्त्र क्या चलावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड,
'माँग द्यू' नहीं छोड़, कैसे रण छोड़ ब्यावेगो ॥ ५ ॥

लीला पुरूषोत्तम राय कीनी वृज मांय जाय,
वांकी लीला गाय सों अनै वर पावेगो ।
बाल पने बीच कान्ह, पूतना के हरे प्राण,
अब तो भगवान चक्र बाना पर चलावेगो ॥
नख पर गिरि राज धारयो, इन्द्र हू को मान मार्‌यो,
बृज को उबार्‌यो, सो विष्णु ही कहावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बाँध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ॥ ६ ॥

पूतना को करे वध, वीरता होई रद्द,
सूरसा मे आय हद, पदवी नाँय पावेगो ।
लघु गोवंधन पर्वत, उठायो मिल ग्वाल सरवत,
ज्यांसु कान्हो क्या गरवत, बड़ो ना कहलावेगो ॥
इन्द्र को गयो मान, वो तो नांय शक्ति वान,
हमारे सन्मुख आन, जीत कहाँ 'जावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
मांग द्यू' नही छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ॥ ७ ॥

कुँवर करे गरब भारी, कहां मति गई थारी,
गरब हारी मुरारी को गरब ना सुहावेगो ।
कंसादिक कैसे वीर, लीला कर डारे चीर,
ऐसे रणधीर कैसे वीर ना कहलावेगो ॥

शंख चूड़ यक्ष मार, चुड़ामणी ली निकार,
समरथ सब प्रकार, हरि खगवर चढ़ आवेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रुक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ।। ८ ।।

रणछोड़—रणछोड़, बारम्बार करे भोड़,
रणछोड़, रणमोड़ कैसे बन जावेगो ।
मामा को मार, बैठ्यो घर में शूरवीरी धार,
अकेलो लख यक्ष मार, कहा वो सियावेगो ।।
जरासंघ का भय मान, रणछोड गयो कान्ह,
जल में बस्यो जान आन मान फिर गमावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड,
सॉग द्यू नहीं छोड़, कैसे रणछोड ब्यावेगो ।। ९ ।।

मान-अपमान जीत, गोविन्द के यों नहीं गीत,
भक्तां की प्रीत, बड़े रीति सों चलावेगो ।
अम्बरीष हित गरभवास, लियो दान बलि पास,
कई एक निभाये दास, फिर भी निभावेगो ।।
जरासध सतरा बार, आयो छे मान हार,
द्विज हित गये रण बिसार, निर्बल कुण बतावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड भाभी बुझावे टेक छोड,
रुक्मण पै न बॉध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ।। १० ।।

निर्बल नहीं तो बलवानी, कैसे लखू दधीदानी,
गूजर्यां पर तोफानी, कर कहॉ गरबावेगो ।
कदम चढ्यो चीर चोर, अबला को सताई भोर,
लम्पटी को जोर काम जुद्ध में न आवेगो ।
काल यवन आगे पीठ, भाग्यो दे चुराय दीठ,
रूप कालो कीट कहॉ सुन्दर मन भावेगो ।
नाथू कवि कहै जोड़, शिशुपाल कर मरोड,
मॉग द्यू नहीं छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। ११ ।।

जनमे ये ललाम, नाग नाथ भये श्याम,
छवि अभिराम देख काम भी लजावेगो ।
जगत् में उजागर, है ऐसो नटवर नागर,
रूप को सागर लख रुक्मण मन लुभावेगो ।।

भागे काल यवन आगे सेज ही मुचकद जागे,
डरकर नहीं भागे मूढ़ कहां तू भगावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रुक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ॥ १२ ॥

भाग्यो छो सतरा वार, आसी फेर हिम्मत धार,
करूंगो ललकार, ग्वाल फेर भाग जावेगो ।
मेरो जी जानत है, वो नाम सुणत भागत,
क्या गूजर की ताकत जुद्ध राजा से रचावेगो ॥
कैसो मेरो पराक्रम, भाभी तुझे नांय मरम,
जरा सुभाव कियां गरम नोखण्ड कँपावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
मांग द्यूं नहीं छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ॥ १३ ॥

बड़ो बोल प्रभु छाजे, थोथो चीणों वृथा बाजे,
पहली घणा गाजे सो कहां बरसावेगो ।
फूफी को दी जबान, राखी पत वांकी कान्ह,
अब के नहीं भागे आन कोड सब पुरावेगो ॥
मथुरा अवतार लीना चतुर्भुज स्वरूप धार,
दाना दल सहार, भार भूतल को मिटावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रुक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड ब्यावेगो ॥ १४ ॥

जन्म्यो भुज चार धार ज्यांको रही गुण उचार,
मेरो अधिकार जहार कैसे छिप जावगो ।
प्रगट्यो अवतार धार, तीन नैन हाथ चार
मै राजन को सिरदार, चेरो वो कहावेगो ॥
समरथ मात जायो, तो गोकुल क्यों ध्यायो,
उर गूजरी दूध पायो कैसे वीर अश आवेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड, शिशुपाल कर मरोड,
मांग द्यूं नहीं छोड कैसे रणछोड ब्यावेगो ॥ १५ ॥

तप जशोदा नन्द कीनों, तांको वरदान दीनों,
पुत्र होय रीनों तांको विश्व जस गावेगो ।
तौसे मिल्यो वैन वारो, मिट्यो जन को अधिकारो,
काल वो तिहारो, सच्चो जोतषी कहावेगो ॥

उग्रसेन भक्त जान, नाना को रखे मान,
चेर ना अज्ञान शीष ब्रह्मा शिव निवावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड भाभी बुभावे टेक छोड,
रूक्मण पं न बांध मोड, रणछोड ब्यावेगो ॥ १६ ॥

मूर्ख तू भोजाई, कैसी करे ग्वाल की बडाई,
मेरी प्रभुताई की होड कौन लगावेगो।
अमूल्य वसन गहना, सुन्दर यों देख नैनां,
चित्त पिक बैना को खुशी होय जावेगो ॥
ताही को बडो भाई, कियो चाहे बेन्याई,
भिवरानी को जॅवाई और ना सुहावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड, शिशुपाल कर मरोड,
मॉग ध्यू ं नहीं छोड कैसे रणछोड ब्यावेगो ॥ १७ ॥

राणी रूक्मण कवर मूढ़, भेद नाहीं जाने गूढ़,
भीव है प्रेमारूढ़, कृष्ण को ही चावेगो।
पूरब की सुन अनूप, रूक्मण थी सियारूप,
धार्‌यो पण जनक भूप धनुष कौ खिडावेगो ॥
सो ही वरे सीया बाम, साध्यो रघुनाथ काम,
वो ही राम कृष्ण नाम काम यों बनावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड भाभी बुभावे टेक छोड,
रूक्मण पं न बॉध मोड, रणछोड ब्यावेगो ॥ १८ ॥

पुरानी कमान राम तोड वरी सिया बाम,
अब पडयो हमसे काम तेज क्या दिखावेगो।
देखू गोशाला को सांड, कैसो लडे समर मांड,
कैसे सिंह डाढ में सु काड के ले जावेगो ॥
कुनणपुर चारों मेरा, कोट करू सेना डेरा,
रूक्मणी तो कठिन, बडन शहर में ना पावेगो ॥
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
मॉग ध्यू ं न छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ॥ १९ ॥

चराचर में रमे राम, वासुदेव तांको नाम,
विलक्षण गत गुण ग्राम, रूकने नहीं पावेगो।
नरसिंह है कराल काल, जाने ना शिशुपाल ख्याल,
धोखे जेवरी के ब्याल गहते डस ज गो ॥

हरि को प्रिय जगत मांय, सनकादिक सरनिवाय,
रावण ज्यों चित चलाय फजीती करावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रुक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ।। २० ।।

समरथ हो दशकन्धर ना पातो जय रामचन्द्र,
जीता यो कपीन्द्र बांको यां कौन जितावेगो ।
रावण घर भेद फूट्यो विभीषण निज भ्रात रूठ्यो,
मो घर शिव तूठ्यो, सदा सम्पत रखावेगो ।।
जरासंघ चाचो, राउ मेरे से स्नेह सांचो,
दन्तावर भ्रात पाछो, मेरो हित चावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
मांग चूं न छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। २१ ।।

कपीन्द्र बलवान्, बाली हत डारे एक बाण,
अजीत बल निधान को न हरावे जितावेगो ।
विभीषण पहचान, हरि सरणागत पड्यो आन,
लंका वरदान दी अचल सुख पावेगो ।।
सुग्रीव हनुमान, को राख्यो जस दास जान,
सम्पति मिजमान मूढ गरव के गुमावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रुक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ।। २२ ।।

वीरता के कहा हाल, माच्यो नाद काल चाल,
व्याध की ज्यों रच्यो जाल, यां न चाल पावेगो ।
निन्यानव नरेश दौड़ आये हैं बांह चोढ,
घगनी दल जोड़ चढ़े शेष थर थरावेगो ।।
सराय जादुकुल मझार, राज को न अधिकार,
कहां पक्षधार लार, मांग जान लावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ शिशुपाल कर मरोड़,
मांग चूं न छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। २३ ।।

गरुड़ पन्नग पकर परे, पलक में बहु रूप धरे,
दीपक मनभ जरे देखर ज्यों जलावेगो ।
कुबेर शिव गण के क्रोड़, छप्पन करोड़ जादव जोड़,
अर्जुन भीम जोधा-जोर जान मांय ल्यावेगो ।।
शिव नेम नाथ, ज्ञान शेष रूप साथ,
इन में इन कौन हाथ, भूमन मचकावेगो ।।

नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बाँध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो ।। २४ ।।

जादवां को जुराकाल, कुन्ती सुत भोले बाल,
जरासंध महिपाल ग्वाल बाँध ल्यावेगो ।
प्रसन्न शिव शंकर, है गणपत को लम्बो उदर,
पक्षवर इन्द्र को कछु ना बसावेगो ।।
नेम नाथ मोड, क्यों युद्ध में फुड़ाई मोड,
दाऊ को क्रोध एक दन्ताधर पुरावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
माँग ध्रू न छोड़, कैसे रणछोड ब्यावेगो ।। २५ ।।

ताहि को करत याद, निरबन्द हो सत साध
सायक को सके बांध वांको कौन पावेगो ।
अरे अज्ञान, बोत चमकत है कर गुमान,
उडगन शशि-भान की जात क्या छिपावेगो ।।
पराये के ओर-सोर मूछ ना मरोड़ ढोर,
अपंगो क्या दौड़कर गिरवर चढ़ जावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बांध मोड़ रणछोड ब्यावेगो ।। २६ ।।

बदन नहीं पाय, कैसे ऊखल के बांध्यो जाय,
वीरता गुण गाय डरे ताको कुण सतावेगो ।
गावोरी गीत गार, देवां बहु नेग-चार,
अजन दे सवार बेग सुगन सध जावेगो ।।
दामोदर गोपाल की शक्ति ना सके चाल,
बांके भोपाल देख काल भी डरावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड, शिशुपाल कर मरोड़,
माँग ध्रू न छोड, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो ।। २७ ।।

वृक्षन को तारन श्याम, दामोदर कहाये नाम,
तो तमाम भूप सैन्य भूमि पे गिरावेगो ।
ले चाल्यो सुहाग नार, दे चाल्यो नेगचार,
हल से रेख सार राम मूशल परणावेगो ।।
एक चूडे वारी कार, फुडावेगी लख हजार,
घर-घर में देगी गार, घेरियाँ गवावेगो ।।
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बांध मोड, रणछोड़ ब्यावेगो ।। २८ ।।

भावज हट दूर शठ, जांको चट मान घट,
बोल अट पटे फट्यो दिल तोंसें को मिलावेगो।
असुभ मति भाखो, अंजन काठो कर राखो,
थांको होतब है म्हाको सो सांचो हो जावेगो॥
समरथ है भगवत, तो असुरन् की करसी गत,
हारू नहीं हिम्मत पण मेरो घट जावेगो।
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
माँग द्यू ँ न छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो॥ २८॥

कूप में पसारे पांय, अग्नि में कर चलाय,
अम्बर में पत्थर बाय, सो तो दुख पावेगो।
जाणकर जहर खाय, चालणी में दूध दुहाय,
करमां न दोष लाय, मूर्ख सो कहावेगो॥
सूझी क्या बुराई हाय, काल के सन्मुख जाय,
कथ को ले जाय, मेरो सुहाग सुख गमावेगो॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो॥ ३०॥

मेरी तो निकासी होय, भावज तू रही रोय,
कोई ना सरावे तोय, सारो जुग बुरावेगो।
कायरपणो रखे शरीर, कछु नांय धरे धीर,
चली जात बेपीर वीर लेवा नहीं आवेगो॥
दमघोष हु को जायो, भूपन में हूं सवायो,
लाडी हित उमायो सो क्या काज ना बनावेगो॥
नाथू कवि कहे जोड़, शिशुपाल कर मरोड़,
माँग द्यू ँ न छोड़, कैसे रणछोड़ ब्यावेगो॥ ३१॥

जाऊ मै बाप धाम, आज्यो तुम बना काम,
देखन मै आऊँ बाम, कैसी बर लावेगो।
चाहत शठ चकोर, उड चन्दा को लेऊँ तोर,
जीवत हर भूषण चोर, मणि को क्या पावेगो॥
पश्चिम में उगे भान, पडे शीश भूपर आन,
तो भी ना अज्ञान, काग हंसनी बर आवेगो॥
नाथू कवि कहे जोड़ भाभी बुझावे टेक छोड़,
रूक्मण पै न बांध मोड़, रणछोड़ ब्यावेगो॥ ३२॥



हरि हर एकता पच्चीसी

कवित्त

शंकर कल्याण करण, विष्णु विश्व पोषण, भरण
नमो युग चरण, ईश भंजन भव कूप है ॥
जगन्नाथ, विश्वनाथ, सारंग सर सूल हाथ,
गवर श्याम गात साथ, श्री उमा अनूप है ॥
कैलाशी बैकुंठ वासी, गीतादि गुण राशी,
भुजंग खग संग अंग, दोऊ देव भूप है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खड मड,
हरि हर तो एक ही, अखण्ड ब्रह्म रूप है ॥ १ ॥

शिव सहस्त्र नाममें, विष्णु का मिले नाम,
विष्णु सहस्त्र नाममें, शिव का सुख कूप है ॥
नामाकार भेद दरसे, नामार्थ से अभिन्न जैसे,
एक स्वर्ण के भूषण, हार चॉप चूँप है ॥
षट ऐश्वर्य परम, दोनों के समान जान,
गुणातम भगवान, युग ईश्वर ना पूज है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मंड,
हरि हर तो एक हो अखण्ड ब्रह्म रूप है ॥ २ ॥

हरि वंश विष्णु पर्व, सवासो अध्याय देखो,
मारकंडे प्रति प्रश्न, ब्रह्म का अनूप है ॥
स्वप्न मै मन्द्राचल पास, कमल पै निवास किये,
देखे शिव विष्णु भेष, बदले तद रूप है ॥
बैल पं सवारी, चर्म शूल धारी गिरधारी,
द्वि पीत सजे, गरुड़ासन पशूप है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है ॥ ३ ॥

गर्ग संहिता के अश्व मेघ खण्ड की गुण चालो—
सर्वी अध्यायता कथा अनूप है।

कृष्ण और महादेव निज २ मुखों से आप
परस्पर की एकता बखानी जगभूप है ।।
शिवभक्त विष्णु नमो, विष्णु भक्त शिव को नमो,
राखे दूर भाव सो, पड़े नरक कूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है ।। ४ ।।

भागवत में विष्णु की नाभीसे जन्मे विधि,
तांकी भृकुटी से भये शंकर अनूप है ।।
बृह्म से बृह्म जीत, जीव से जीव होत,
न्याय पे प्रत्यक्ष जाता, पुत्र पिता स्वरूप है ।।
या ते माधो उमाधो में नीत सेन द्वैत दरसी
या लख वितरकी को होना पड़े चूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मंड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है ।। ५ ।।

अनुसूइया के सत वशी, प्रसन्न भये तीनों देव
बोले कछु मांग सती, मांगा वर अनूप है ।।
ईश्वर ज्ञान धन जन्म लो हमारी कोख
जनमें तभी त्रिगुणात्म दत्त तब रूप है ।।
तीन शीश देह एक ईश्वर अवतार मणि
प्रत्यक्ष प्रमाण यह जावे कहाँ छूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करें खड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप है ।। ६ ।।

कोई कहे आदि ईश बाद जीव हो सो ठीक
निज निज प्रभु की आदि कहे मुनि भूप है ।।
निरपक्ष तो आद होना चाहिये पैदा करण
पालक की जरूरत पड़े आखिर में पशूप है ।।
प्रत्यक्ष से जन्मते ही स्वास चलत लगत काल,
पोखे दूध साथ पाते, त्यो आदि अनूप है
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खड मंड,
हरि हर तो एक ही अखड ब्रह्म रूप है ।। ७ ।।

कई नर कहते हैं ईश्वर, अद्वैत अज दोतीन
ईश कहे श्रुति विरोधी गयूप है ।।

सो उनका कहना सच ईश्वर है एक
वो ईश्वर सत् चित आनंदी अनूप है ॥
सो शिव विष्णु में घटे आन घटे नाँय
उस पद को समझणा कठिन बडो गूप है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप है ॥ ८ ॥

विष्णू नाम व्यापक, को न होय व्यापक
चतुर्भुज व्यापक सत्ता, करो निराकर निरूप है ॥
ज्यों पय में घृत व्यापक, माखन भया मिले नॉय,
तपत तेज पुंजाकार, अविकारी अनूप है ।
ज्यों ही शिव सुखाकार, व्यापक सर्वत्र जान
एकानन पंचानन मापक सुर भूप है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मंड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप है ॥ ९ ॥

तत्व की देह गेह, कर्म चिमनी चित्त तेल
आशा बत्ती जीव ब्रह्म, जोत रही जूप है ॥
आयु काच ओर काल, वायु चोट लगने को
कूख कच टूटत आव, हो अंधार गूप है ॥
वो ईश्वर चेतन जोत, शिव विष्णु जग में सम,
अधिक तेजी भयो तप से, दोऊ सर भूप है ।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मड,
हरि हर तो एक ही अखड ब्रह्म रूप है ॥ १० ॥

सतो गुण स्वेत रग, तमो गुण रग श्याम,
ज्वाला में धूम्र जैसे, अधार कार धूप है ॥
बाहिर तम श्याम वरण, राखे असुर हतन,
दृग भीतर कारो तमो, नील कठ लाल भूप है ॥
अंबस शुद्ध सत्व धारे, विष्णु जग पालन हेतु,
गोरे वरण सतोगुणी शंकर सुख कूप है ॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप है ॥ ११ ॥

शिव पुराण बीच स्वर सहिता बाईस अध्याय
में श्लोक चौथा कहा अस मुनि-भूप है ॥

शिव नैवद्य का दरश से ही मिटे पाप,
खाने से सहस्र गुण फल देते पशूप है ।।
यों ही कही विष्णु के प्रसाद की पुराणों माय
रुची हेत महिमा बखानी अनूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मंड,
हरि हर तो एक ही अखड ब्रह्म रूप हैं ।। १२ ।।

उस विदेश्वर सहिता के तेईसवीं अध्याय लखो
लिंग चढ्यो द्रव्य लेने कह्यो ना ऋषि भूप है ।।
यो ही विष्णु देवादिक, अघर्यो द्रव्य मान्यो नष्ट
अर्चक सिवाय ले जो, भ्रष्ट होते बेवकूफ है ।।
सालिगराम ज्यों तुलसी, शिव के चढ्यां, मोक्ष
कही हरि हर प्रसाद तज्यां नरक कूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप हैं ।। १३ ।।

गिरजा को अंश तुलसी, विष्णु को प्रिय भई,
विल्व पत्र कमला जान, लुभे पशूप है ।
हरि पैदा करी गगा शकर के चढी अंग
सो निर्माल्य पीती, जग छूटन भव कूप है ।
लिंग के प्रसाद की, ग्लानी क्यों करो मूल,
शिव सालग दोनो, शुद्ध वरने मुनिभूप है ।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खड मंड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप है ।। १४ ।।

एक समय लक्ष्मी, शिव दर्शन हेत गई
गोरां लख आसन दे, पूजी चढ़ा धूप है ।।
रमा कहे भिक्षुक कहां, गोरा कहे वलि द्वार
पुनि रमा पूछो कहां गये, ज्यों पशूप है ।
गोरा कहे गोकुल गोप, पूछो गिरि-चर कहा
कही गोरा गोवर्धन पे विचरे वृज भूप है ।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप हैं ।। १५ ।।

देवी भागवत के छठे स्कद बीच अठारवीं
अध्याय में रमा कहे यो अनूप है ।।

हे शिव मैंने सत्य जाना तुम नारायण एक तुल्य
श्रीमुख से कही आप विष्णु विश्व भूप है ।।
या ते कछु संशय नांय भेद त्याग भजते हम
दोनों कल्याण करण शकर सुख कूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मड,
हरि हर तो एक ही अखंड बृह्म रूप हैं ।। १६ ।।

भगवत की भक्ति में पतिव्रत भाव घटे नहीं,
जीव ईश्वर को पुरुष वर्णे मुनि भूप है ।।
प्रतिव्रता भी जेठादिक् सेवा से बड़ाई पाय,
काम प्रीति पर नर से किया नरक कूप है ।।
एक पति पांच अंग पांचोंसयों कहा दोष
द्रोपदी भी पति व्रता कहलाई अनूप हैं ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मंड,
हरि हर तो एक ही अखंड ब्रह्म रूप हैं ।। १७ ।।

अनन्य शैव विष्णु के रहे न जुदा जुदा,
पूजे हर के हिये हरि, हरि हिय हर अनूप है ।।
सींचत सभी पीपली को दोनों तरू एक साथ
काट्यां एक पाप दोनों पूज्यां धर्म खूब है ।।
एक ही विराट के रवि शशि दृग जुदा लखे
भजे चकोर उल्लू होय अध चूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खंड मंड,
हरि हर तो एक ही अखड ब्रह्म रूप हैं ।। १८ ।।

शम्भू और विष्णु में अंतराय कछु नांय
जाने जाकी जैसी मति लाया तूप है ।।
ज्यों एक गुरु के दोय शिष्य एक एक पग सेवे
वांट कोनो द्रोह होकर बेवकूफ है ।
एक पग काटत शठ एक पग चापत हट
भक्ति प्रेम नांय ज्यांके कपट भरियो गूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मंड
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप हैं ।। १९ ।।

त्रिशूल चिन्ह विष्णु शीश धनुषा कार शिव के भाल,
विष्णु परम शैव शिवजी विष्णु भक्त भूप हैं ।।

ईश्वर गुरु भागवत की समान ही सेवा कही;
फिर भी एक पूजन पुष्ट करते बेवकूफ है ।।
हरि हरे संचित पाप हर हरे मनोताप,
ऐसो हरि हर जात जीके जाप कलिमल धूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप हैं ।। २० ।।

नर्वदेश्वर शिश्मु कहे गडिका गल्लिका सुत
अंड कोष देव मूर्ति बतावें बेवकूफ है ।।
अनिंदी माया ब्रह्म दोनु पद भक्त हेत
प्रगट भये स्वतः जलमें स्रष्टा घड तद रूप है।
माया सालिगराम गोल बृह्मांडाकार जान
बृह्म जोत बाण लम्ब लोय ज्यों अनूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है ।। २१ ।।

जलहरि शक्ति भग शिव लिंग को उपस्थ
माने देव चिन्ह कैसे विसय लोलूप है ।।
विषयों की गाथा लख विद्वत मत नशे बके
सुर चिन्ह को निन्द हसे पडने नरक कूप है ।।
योनि भूमि जलहरि लख हरि विश्वाधार
लय अग हो सो लिंग जो नमे शिव अनूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप हैं ।। २२ ।।

काशी उज्जैन हरद्वार पुरी शिव की तीन
मथुरा अवध द्वारका को विष्णु ही भूप है ।।
कांची पुरी सौर दोनु भी बताई वेद
अर्द्ध २ सेवक सेव्य सेव चढ़ा धूप हैं ।।
ब्रह्मा भगवान जान दोनों कु ही समान
देव साडी तीन २ पुरथा दिवी सूप है ।।
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप हैं ।। २३ ।।

सरभो उपनिषद बालमीक शिव विष्णु की
पुराणो में कई जगे कथा ही अनूप है ।।

बड़ाई छोटाई हार जीत सेव्य सेवकाई
दोनों को परस्पर में जणाई मुनि भूप है॥
मित्र माधो उमाधो की लीला अद्भुत जाण
करते है कुभाव सो पड़त नरक कूप है॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खण्ड मंड,
हरि हर तो एक ही अखण्ड ब्रह्म रूप है॥ २४॥

युग नृप ये जीयो बणिक दोऊ कर से कर जुहार
बताये सम दोऊ पूछे जब खिजाय भूप है॥
ज्यों ही शिव विष्णु मो बराबर मान्या कुशल
पूजा दोऊ दूना फल देत सुर अनूप है॥
घटाकरण दक्ष ज्यों दुर्भाव कर होगे भ्रष्ट
श्वान ज्यों मत की पख करते बेवकूफ है॥
नाथू कहे भेदवादी वृथा करे खड मड,
हरि हर तो एक ही अखड ब्रह्म रूप है॥ २५॥



गीता ज्ञान बत्तीसी

(हरि गीतिका)

वन्दौं गुरु नन्दलाल उर दिये ज्ञान जू कुरु तम हरन।
जग भूप दरसे अनूप अनाम अरूप दिव्य गुण अप्परन॥
गुण प्रभाव बहु राव रंकादि स्वभाव चराचरन।
स्वप्न वत् भाषे असत् सत सत्य भाव मतान्तरन॥ १॥

नमो ॐ ए ह्रीं क्लीं श्रीं सच्चिदा नन्द पूरन।
सम चन्द्रमा अमि पन्द्रमा मुख रन्ध्रमा पी आफूरन॥
प्रभुता षठ सिद्धि अठ बल चित्र काव्य नटता ढुरन।
सोलह कला फूला फला रहे भला ले जग चुरन॥ २॥

चित सार सिद्धि द्वार वाक् साकार माया मक्करन।
नर नार नपु साकार नाहीं, सब होनहार जादूगरन॥
अठ बीस जाल निकाल लघु विशाल ख्याला सुध्धरन।
दायें अश के हंस सूक्ष्म-स्थूल वश नामा वरन॥ ३॥

जग अनादि भेद वादी कर्म लाद क्या करे निरन।
समर्थ कारीगर खिलारी, न न्याय कारी चह अवतरन॥
मैथुनी औलाद अनादि तो क्यों उपाधि वंध्या हींजरन।
क्यो भोग जोग भव रोग तन उद्योग औषध नीवरण॥ ४॥

अनुमान प्रमाण जान हो जग भान अमान नूतन जिरन।
सामग्री कारीगरी स्वतः धरी जन दुस्तरन॥
याते एक चेतन कोई सिद्ध गन शक्ति मंदरन।
होना अवश्य बताय बल वश खेल विलस होय नसवरन॥ ५॥

फल त्याग कर्म निज किये अकरम पद परम धर्म अम्मरन।
निरक्षर फल चतुर्लक्ष रचे जग अक्षर सुर वरन॥
जभी शिव जिव अजिव सजीव पिव क्लीव कहे व्याकरन।
नितर करम कर तीर्थ कर न काट पाते नटवर चरन॥ ६॥

सामान मैथुन खान विन कोई जान सके बन मतरन।
बसि नीद मनु रच स्वप्न जनु दीसे न अनु जुड बीकरन॥
स्वप्न दृष्टा सूं प्रतिष्ठा सिद्धि निष्ठा की विस्तरन।
क्या अचंभ कुटुम्ब हो जगदम्ब नरसिंह ज्यू खम्भ फरन॥ ७॥

बने आद विनसे बाद माने अनाद खर पुच्छ पक्करन।
खा दुलाती भिन्न जमाती सुराज घाती दुःख भरन॥
नर देवाधार सुख शयनागार परिवार हो नारी उरन।
नर नारी बहु परिवार किये करतार सोहू विचित्तरन॥ ८॥

सोचूं तो उत्पन्न पोषन लहे जन चेतन अम्बे सींवरन।
विधि नाभ नल विष्णु हाचल शिव मुख गल रवि शशि नेतरन्।
वेणि व्याल जग माल दृगपाल तारे जड़ि अम्बरन॥
सिर गणपति दे शुभ मती पदतल गति पशु निश्चरन॥ ९॥

सगुण विकृति पुरुष प्रकृति बीजाकृति सूक्ष्म धरन।
हिरण्य गर्भ विराट सर्व तरु दर्व स्थूल नामावरन॥
महतत्व अहकार सत् रज तम वर्त जीव पर आवरन।
हों चौदह सुर इन्द्रिय विषय पुर प्राण उर अन्तः करन॥१०॥

शब्द स्पर्श रूप रस गध मोक्ष द्वारे पट जड़न।
स्थूल बन चहु लगे फेलन गगन पवन बनि जलधरन॥
ओत प्रोत ब्रह्म जोत बल जड होत शान्त भट झगड़न।
लोभ काम क्रोध आम मोह नाम मद मच्छरन॥ ११॥

खान उद्भि द्वार पंकज सम जरायुज नारी नरन।
ब्रह्म एक विवेक भेष अनेक बणगटि सींवरन॥
अल्प विशेष शक्ति प्रवेश बद जीव जगेश चित सूतरन।
ज्यू अगन भट सब रसद घट परविष्ठ षट रस उबरन॥ १२॥

बेपति सती प्रसूति ज्यू विभूति लम्बोदरन।
सामग्री कारीगरी विधि हर हरि करतब करन॥
तेंहि प्रताप पुण्य पाप फल जग बाप मां के सचाधरन।
तिय तन राचे एक सांचे नित नये खीचे चित्तरन॥ १३॥

श्री राधा रूप अनूप ज्योति जुप रहि दृग शशि हिरन।
मणि दीप अंजन निरञ्जन तम भजन रवि कोया किरन॥

श्याम गौर दिव्य उर' सब प्रभु पोर उलट विचित्तरन।
घट बढ कला पक्ख कृष्ण शुक्ला करे उजला सब नभ चरन ।। १४ ।।

शिशु मुकुन्द मुख चन्द मुसकन मद प्रिय भांई परन।
अखे बट् दल नील मणि झल लखे प्रबल नेह अम्मरन ।।
पद अंगुष्ठ प्रिय मिष्ठ चुम सन्तुष्ट ख्याला खेलरन।
या नन्द घर देखि दिगम्बर सोचत सकट पर चले चरन ।। १५ ।।

गोपाल शक्ति ज्वाल बिगरे ख्याल औतरे सुध्धरन।
नृप गुप्तचर ज्यू बीज तरुवर का चरित्र पवित्तरन ।।
शुंभ निशुंभ चंड मुंड महिषादि बंड चामुण्ड चरन।
त्रिपुरारि मदनारि मुरारि कोई असुरारि खल संहरन ।। १६ ।।

फिर शिशु स्वभाव ख्याला बनाय रज खाय पोंछे सिध्धरन
मुख फार दिखा ससार मां को मोह-जार किये छिप खेलरन।
कसादि खल मारे मसल पिवि दावानल अहि मद गरन
विधि बच्छ किशोर हर लखे और नसे इन्द्र जोर कर गिरधरन ।।१७।।

सर्व-ग्यान-घन भगवान् तन बहु शक्ति बन गुण आगरन
निर्गुण सगुन सब जाय बन रह भिन्न ज्यू शून्य अप्परन।
रोम कोटि जग नाम रूप लख अल्पज्ञ सर्वज्ञ बीसरन
समष्टि उद्र समुद्र वृष्टि शूद्र ब्राह्मणादि बरन ।।१८।।

बने बनाय नहिं काय नव लहराय माय उदाहरन
दिव्य ज्योति जुप्यों भाषे छू्प्यों बहुरूपिया आवरन।
स्वप्न इन्दरजालि सुनर चित्र मन्दर कठपूतरन
होरी दिवारी न्यारी न्यारी अविद्या जारी वरन ।।१९।।

मिला 'जुदा जिव शिव सुदा जग बुद्बुदा ज्यूं सागरन
अद्वैत भाव पुनीत तुरियातीत मुक्त नित्त जागरन।
परतीत द्वित को द्वित भ्रम रिपु मीत भाव तिन्ही आचरन
लट भृंग प्रेमी तरग मिले पतग अरिदीपक जरन ।।२०।।

कनक एक विवेक करिये अनेक बनगटि आभरन
विषम दूषण भाष "भूषण" सम ज्ञान तूषण सूबरन।
बेसरम लुभ मूढ़ भरम मनस्या करम कर फन में परन
प्रारलब्ध स्थूल बन मूल भूल 'फल' फूल सूल मग बीचरन ।।२१।।

बन गोपी गोप बहु ओप लज्जा लोप अनगहि लरन
लख राश गति अद्भुत जति सती रति-पति सरमां मरन।
आपी भोगि-भोग स्वप्न ज्यू भोग रोग अजरहि जरन
निद्रा अविद्या कृतद् विद्या बृह्म विद्या करनीवरन ॥२२॥

द्रौपदी वेश परवेश कीन्ह विशेष सकी नही ऊघरन
नृग भूप किरकिट कूप किय दिव्य रूप निज ठोकरन।
द्विज गुरु कुमार मरिया जिवार दिये कर उदार रख जन परन
तिहिं कहे नरक जिहिं टिरक कर कुतरक्क हटि असुधाचरन ॥२३॥

मुक्तानन्द हित बहु फन्द छन्द परबन्ध पथकर्म आचरन
कई प्रकार सुख द्वार कर निरधार वरणे शास्तरन।
कही आना जाना जगत माना कही मिटाना जनम मरन
मुख्य मुक्त नाम स्वतन्त्र श्याम सर्वज्ञ आराम अकरन करन ॥२४॥

चेतन प्रकाश टुक जड़ निवास कूटस्थ खास पद बीसरन
भूलभुलैया का तमेसैया करे कन्हैया निरन्तरन।
धर अज्ञान पुन फँसे जान चहु खान चौरासी धरन
जग तमासा चौसर कासा देव पासा युत फिरन ॥२५॥

नरखान नारी जान उत्तम रखान कठिनेमाचरन
कन्यादान विधान कहे भगवान् एकबार बरबरन।
जाति करम पतिव्रत-धरम दया परम शुद्ध अन्न नीगरन
ना परे अकाल पितु पहली लाल मरे बेवाबाल इस पुन परन ॥२६॥

फल चार के अधिकार हो नरनार सुत-पुर बासरन
सत् जुगि रिवाज श्री राम राज सुखिया समाज रहिनिरतरन।
मरियाद भद्र सुपनखां सूद्र रावण कर छिद्र दड दुस्तरन
पर हुनर मासारी गुनर बद कुनर पुनर जनम भरन ॥२७॥

क्षत योनी नार जा पर परिवार जड़ पशुजार शकर बरन
जन ऋण चुकन पशु दीन बन जिह्व से पिवन जल कूकरन।
अदृश्य राय कर नित न्याय दरसे कहाय बलि निरडरन
महा प्रलय काल ना मिटे कृपाल गग ताल भेद भरी गागरन ॥२८॥

नारायन कज नैन करा सैन शेष फन सेंसरन
योग निद्रा रूप इन्द्रा स्वप्न सुंद्रा रच शिघ्घरन।

दिखाय छिपाय सुलाय रिझाय रमाय खुश हो जीगरन
ज्ञाना मोद के होद हो विश्व विनोद साधे तत्सादरन ।।२९।।

वारह अगुल पीत भूतल जल सुकल सोडष नीसरन
हरि अष्ट अंगुल दिष्ट वायु स्पष्ट चार अग्नि अरुण।
श्याम सुन सुखमन पल छिन लख सोहं सीवरन
प्राण मन विज्ञान आनन्द जान अन्न-मय आदरन ।। ३० ।।

दिव्य ज्ञान दिये भगवान, अर्जुन मान लगे खल से लरन
हंस सूक्षम अमर नभ सम। लख स्थूल नामात्तम मरन।
गुरु पितृ भाई आतताई मरणराई दुख जरन
छत्री करम रण हो धरम मरियाँ परम पद सुख भरन ।।३१।।

श्रुति ज्ञान गीता ज्ञान मनुजी बखान छन्द हरि गीतरन
कर पाठ सिद्धि आठ सम्पत्ति ठाठ काठ ज्यूं अघ जरन।
सुचिकार "नाथू" उचार पुण्पपदहार हरि उरधरन
विरद जोय खुश होय दो फल मोय दर्शन नेतरन ।।३२।।



देवी गीता अष्टक

दोहा :—बन्दौ गुरू नन्दलाल पद अन्तर तिमिर निवार।
देवी गीताष्टक रचूं जो फलदायक चार॥

छंद मनोहर —सच्चिदानन्द सोह ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै।
विच्चे स्वाहा स्वधा सिद्ध मत्र मणि वियमा है॥
जप तप बल मट, प्रभुता-घट सिद्धी-अठ।
चित्र काव्य कला नट, प्रकृति आलम्बा है॥
बिराट हिरण्यगर्भ पुरूष, स्वामी मानावि सरस।
होय दृष्टा दृष्टि दर्श मिल ज्यों लोचुम्बा है॥
नाथू नामदेव वशी तिहारे ही असा असी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है॥ १॥

रही कई लीला कर अस्ति गिर रोमतर।
जोड़ा विधि नाभ सर अंगकुच पय कुम्भा है॥
कर पव सुरगी पताल बेणी शेश गणेश माला।
नेण रवि शशि गाल शिव मुख लव बिंबा है॥
पूज दुर्गा नव रैन कलप तरू काम धेन।
इच्छा फल देत मेन रति लगी बम्बा है॥
नाथू नामदेव वंशी तिहारे ही अंसा अंसी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है॥ २॥

ना नर नारि नपुंषक, खुशी आ सो हो अबक।
भोग भोगनी कलंक रहे भिन्न अचम्भा है॥
राधा कृष्ण योग निष्टा, इन्द्रजाली स्वप्नदृष्टा।
भानु जल बीच तृष्टा, रमा प्रतिबिंबा है॥
देह बनावटी द्वीत, दृढ़ भाव रिपु मीत।
द्वीत द्वीत को प्रतीत मिथ्या बढ कुटबा है॥
नाथू नामदेव वशी तिहारे ही असा अंसी।
क्यो रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है॥ ३॥

सूना तम मेघ गगन जड़ वायु उर अगन।
बीज धरा सहित सगन घटा वारि बम्बा है।।
आदि उद्भिज रवानी मिला विषम रज पानी।
संचा चौरासी बनानी बीज ज्यों कदम्बा है।
ज्यादा कम सत्ता शुद्ध ईश जीव सुक्षम बुद्ध।
नाम स्थूल रूपा युद्ध मद विषै विलम्बा है।।
नाथू नामदेव वंशी तिहारे ही अंसा असी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है।। ४।।

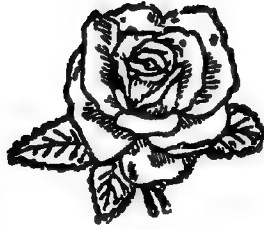
गुण क्षमा श्रम पति व्रत जाति क्रम।
शुद्धभोग दया धर्म सत जन कसुम्बा है।।
होट से जल घासारी पीत जीभ से मांसारी।
सिंह विषै एक वारी अन्य ऋतु पै रम्बा है।।
पशु से ही नर अज्ञान चौर जार आमिष खान।
अछूत मसान गर्भाधान मर बर बर लटूम्बा है।।
नाथू नामदेव वंशी तिहारे ही असा असी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है।। ५।।

ऋणी २ के जन्माय फल पूरब कर्मा पाय।
तीव्र उपाय शीघ्र फलाय यश अयश थम्बा है।।
बहु बिगड़े दिब विभूति घर सुधारे प्रसूति।
कभी गर्भ आ सपूति कभी फाड़ खम्बा है।।
शुभ निशुम्भ चंड मुंड महिसासुरादि खण्ड।
किय हो काली चामुण्ड, गौरी साकम्बा है।।
नाथू नामदेव वंशी तिहारे ही अंसा असी।
क्यो रुलाय करा हंसी तेरा हाथ लम्बा है।। ६।।

सुदर्शण सत व्रत अरध बीज जपे भक्त।
मान अपनाये शक्त सो मेरे अवलम्बा है।
फसे पग कीच बीच धोवो आप काड खींच।।
पाले त्यारे जैसे सीच अम्बू कट तूम्बा है।
अजामेल गज की टेर शीघ्र सुणी अब अंधेर।
गेर रही मेरी बेर पाते अवलम्बा है।।
नाथू नामदेवं वंशी तिहारे ही असा असी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है।। ७।।

पोराणिक चमत्कार के वे दिखाये बार-बार,
अंधी सरदा भक्ति धार दीन सके किंबा है।
सर्वज्ञ सर्व शक्तिमान तेरीमद मुस्कान॥
बसो मेरे नैन आन सच्चो जगदम्बा है।
नींतो पापी पावन गग झूठा मच्छ कच्छ भू-पग॥
हंस गरूड़ बैल सिंह, ते किया नितम्बा है॥
नाथू नामदेव वशी तिहारे ही असा असी।
क्यों रुलाय करा हँसी तेरा हाथ लम्बा है॥ ८॥

दोहा :—देवी गीता अष्टकी, पढ़ सुण कर जो विचार।
नाथू शुद्ध मति घट लखे, भगवती का दीवार॥



शिवरी शिवलीला

वचन शिवरी का
कवित्त

शंकर सुत रटूं तोय सुमति वर दीजो मोय
सिद्ध काज आज होय ये ही वर चाहता हूं।
शारदा गुण हिये डाल अवगुण और कुमतिटाल
बालक लख करी पाल अष्ट प्रहर ध्याता हूं॥
नन्दलाल ज्ञानवान गुरुका में धरुं ध्यान
मैफिल दरम्यान आन इलम अजमाता हूं॥
नाथू कहे शक्तिमात भीलनी बनाये जात
छल लीना विश्वनाथ लीला सो ही गाता हूं।

राग जंगला

करने निर्गुण ध्यान सदा शिव वन जाते॥
ऋषि नारदादि ध्याई, सो रटूं शारदा माई,
गणनायक सदा सहाई, वेदन विच महिमा गाई,
गुरुनंदलालजी दीना ज्ञान, जिन पर शीष निवाते।
सदा शिव वन जाते॥ १॥

मुक्ति का साधन दोई, वहिरंग अंतरंग सोई,
सुर गुण ब्रह्म ध्यावे कोई, वहिरग साधना जोई
करे अतरंग तत्व पिछाण सत शास्तर गाते
सदा शिव वन जाते॥ २॥

पहले समदम गुण साधे, विषयो से मनको वांधे
हिरदे सतनाम अराधे जव रूप ब्रह्म का लाधे
सोहम् शब्द का होत बखान बिरला इसमे रम पाते
सदा शिव वन जाते॥ ३॥

जो इसी ध्यान को चाहते, सो वन खण्डीमें जाते,
आसन एकांत जमाते फिर शून्य समाधि चढ़ाते
श्वास खींच नभ चोढे प्राण अखण्ड आनन्द पाते।
सदा शिव वन जाते ॥ ४ ॥

विधि शिव हरि पुरका सुख है, सो सारा सुख यह दुक है
आखिर सब सुख वह दुख है सुख नित्यानन्द का मुख है,
कहां लग उनका करूं बखान भोग्याही बन आते।
सदा शिव वन जाते ॥ ५ ॥

अंग में शिव भस्म रमाई, मृगछाला बगल दबाई,
अहि की कोपीन बनाई, वन जाने की ठहराई,
कहे नाथू बूझे शक्ती आन कहां भगवान सिधाते।
सदा शिव वन जाते ॥ ६ ॥

वचन पार्वती का शंकर से

दोहा :— करजोड़ के शक्ति कहे सुनजो सर्जन हार।
बाघम्बर मृगछाल ले कीना किधर विचार॥

चौ० — प्रभुजी कीनाकिधर विचार आज सो हमें बतावो जी
तजके सुख कैलास वास वन कैसे करावोजी।
प्रभुजी क्या विधि विष्णु लोक जाणको लग्यो उमावोजी
जो जावो वैकुंठ हमे भी संग लेजावो जी ॥ १ ॥

वचन शंकर का पार्वती से

सत्यलोक वैकुण्ठ की अभिलाषा भई नांय।
अखण्ड तपस्या करन की भई इच्छा मन मांय॥
गौरांजी भई इच्छा मन मांय आज वन मांही जावां,
वांही बैठ एकान्त समाधी ध्यान लगावां।
गौरांजी प्राणायाम चढाय अलख का दर्शन पावों।
आप रहो कैलास मास षट् पीछे आवां ॥ २ ॥

वचन पार्वती का शंकर से

हमको तज-कैलास-में आप चले वन मांह।
ऐसी तपस्या करन की कहा जची मन मांह

प्रभुजी कहा जची मन मांह् आप सवजग के स्वामी
हो नित्य जीवन मुक्त परम योगीश्वर नामी,
सुर नर मुनि तोय ध्याय आप सवके सुखधामी,
आप तपस्या करन चले क्यो अन्तर्यामी ॥ ३ ॥

वचन शकर का पार्वती से

अन्तर्यामी रुप लौ निराकार सतदेव।
शेष इन्द्र हरि हर विधि सव करे उनकी सेव
गौरांजी सव करे उनकी सेव वही सव जग के सांईजी,
धरने उनका ध्यान हम जावां वन मांहीजी,
विना तपस्या तेज ओज वढता है नांईं जी,
तप से शक्ति वढे करां तप जिसके तांईजी ॥ ४ ॥

वचन पार्वती का शकर से

करियै तप कैलाश मे क्यो जावो वन मांय।
घर वैठां क्या हे प्रभु तपस्या होती नांय ॥
तपस्या होती नांय यहां पर दुख है कांई जी,
प्रभुजी यहां ही करो तुम ध्यान कहा है वनके मांईजी
प्रभुजी माने जांही ब्रह्म देत फल भजते जाहीं जी,
घर वैठे क्या योग तपस्या सधती नांई जी ॥ ५ ॥

वचन शकर का पार्वती से

घर वैठा से सुन्दरी तपस्या तो हो जात।
घर मे चित चचल रहे वनमे थिरता पात
गौरांजी वनमे थिरता पात ध्यान एकान्त मे आछो
एकाग्र मन होय लगे भगवत मे सांचो,
गौरांजी घर वैठां मन रहे सदा विषयन मे रांचो,
कर तपस्या वन मांह् फेर आउंगो पाछो ॥ ६ ॥

वचन पार्वती का शकर से

पुनि पुनि वन वन कर रहे मानो न मेरा लेख
वन जा कैसो तप करो सो मै लूंगी देख ॥

चौबेला :— प्रभु जी सों मै लूंगी देख करो तप कैसे जाके,
प्रभु जी माया मोहनी रूप बड़ो ही कहुं समझाके।
प्रभु जी कई तप करने गये आखिर दी नीत डिगाके,
प्रभु जी श्रृंगी ऋषि ले आद छोडिया नचा २ के ॥ ७ ॥

वचन शकर का पार्वती से

माया नचाय सकल को सच कही गौरांनार।
त्रिलोकी के मांयने माया का विस्तार ॥

चौबेला :— गोरांजी माया का विस्तार जाया मोह जगसारा,
मै त्रिलोकी ईश रहूं माया से न्यारा।
गौरांजी जानो नही क्या आप नाम मदनारि हमारा,
है इन्द्रियाँ वश मांय सदा चित है अविकारा ॥ ८ ॥

भजन

तज कैलास शिव वन मांही आये ॥ टेर ॥
तज कैलास शिव वन में, ध्यान करन चित चाया,
निर्मल नीर तीर सुरसरि की देखी शीतल दरखत छाया ॥ १ ॥

तप करने की उत्तम जागां लखि शंकर हरखाया,
मृगछाला को बिछा महेश्वर वृढ आसन एकांत लगाया ॥ २ ॥

श्रवण नासिका मुख निरोधकर प्राणायाम चढाया,
ध्यान लगाकर देखा सुना मै सर्वमयी ब्रह्म एक ही लखाया ॥ ३ ॥

झिलमिल ज्योति रूप देखके परमानन्द पद पाया,
तन मन की सुधि भूल सदाशिव अनुभवी निर्गुण ध्यान सगाया ॥ ४ ॥

ऐसी अखड समाधि लगाके वन षट् मास बिताया।
नाथू कहे इधर शिवप्रिया रचन लगी है अपनी माया ॥ ५ ॥

वचन पार्वती का
लावनी

शेर :— प्राण पति बन गये त्याग के कैलास जो।
अजहू न आये ध्यानकर बीतन लगे षट मास जो।

भरतार को घर लाने की दिल में भई अभिलाष जी,
छल बलकर घर ल्यावस्यूं अब जायके प्रभु पास जी।
छवि अपार तन धार नार मैं सब श्रृगार बनाती हूँ।
शिव प्राण पति को छलन मै भिलनी बन के जाती हूँ ॥टेर॥
मज्जन कर मुख चद लगाके सुगध अग अनगवाली,
मोतियन की मांग भर भाल पर टीकी लाल जुलफ्यॉ काली।
भोहें कबान नैन खंजन से अंजन की रेखा डाली।
हिचकी पें तिल है हास्य मद अधर पीक रच रही लाली॥

शेर :— गौरे २ हस्त पे माणक रंग मेंदी रची।
असल जरकस रेशमी पोशाकां पहनी अच्छी।
घाघरा गहरा गेरू का कांचली कछु कस खची।
सिर अमोलक सुरग सारीकि नारी जड़ रही सची।
लग रहो चित्त उछाव अबे शिव मनरजन चित चाहती हूँ॥ १॥

रतन जड़ित आभूषण धारे सिर बोर सांकली जड़ी न्यारी।
भुज पै बाजूबंद गले में चन्द्र हार तिमन्या भारी।
नथ बेसर शोभित नाकन मे दन्तचूंप हवसे न्यारी।
करण झूमरा झलकत कटि कदोरा मनहारी॥

शेर :— डुलड़ी तिलड़ी पंच लड़ी अमूल्य मोलांकी लडी
चूड़ी बंगड़ी गोखरू हतफूल गजरा मूंदड़ी।
बारह आभूषण सोवणा चमकती मणियॉ जड़ी।
साज ऐसी बनी सुन्दर विधाता वाली घड़ी॥
सिंह लंकी गति हस चाल गजराज की आज लजाती हूँ॥ २॥

करके गवन सघन बन आई जहां शिवशकर करते ध्यान,
रची मै माया हो गई बसत ऋतु वन के दरम्यान,
वर्ण वर्ण की घटा छटा हद मन हरणी छाई असमान,
चमके चहुं चपला बरसती बूंदां हरसते सुमन बान॥

शेर :— नाना तरह के पुष्प खिल रहे अति खुशबूदार जी
भूरि भूरि ले कली रस अलि कर रहे गुंजार जी।
मोर पपैया कोयल शब्द करत सुप्यार जी।
मन्द मन्द सुगंध शीतल पवन की बहार जी॥
कर पायल झंकार बेग निज पिव का ध्यान डिगाती हू॥ ३॥

नदलाल गुरू बाल जान के हो कृपाल उर ज्ञान दिया,
घट भया उजाला खुला, भ्रम ताला प्याला प्रेम पिया,
गुलाबचन्द दर्जी करी मर्जी जब गाने का पन्थ लिया।
नाथू कवि कहे गुरू का नाम लेत हो सुफल जिया।

शेर :— गुरू साधु दोउ बड़े हो ज्ञान के प्रताप से
जाति की करे भ्रांति सो मूढ डूबे पापसे।
गुरू से रख हेत सुगरा छुटते भव तापसे,
सीख गुण बदले मिजाजी सो ना जनम्या बापसे ॥
गवर कहे कर हाव भाव मै शिव को आज रिझाती हूँ ॥ ४ ॥

वचन शिव जी का

दोहा :— हे सुन्दर तू कौन है क्यों फिरती बनमांय।
रूपवान तेरे जिसी हम कही देखी नांय ॥

चोबोला :— प्यारी जी हम कही देखीनांय स्वर्ग लोकों के मांही।
अद्भुत मोहनी रूप छवि मै बरणू कांई,
प्यारी जी काम वाम विधि धाम वाम तेरे सी नाहीं
ऐसो कोमल अग फिरो वन में किण तांई ॥ १ ॥

वचन भीलणी का

दोहा :— मै बनमाही डोलती पति काज महाराज।
आप हमे क्यों पूछते ध्यान छोड़ मुनिराज ॥

मुनि जी ध्यान छोड़कर आज आप क्यों हमें निहारो।
हम तो अबला बाम श्याम तज गयो हमारो,
मुनिजी मै फिरती निज काज ध्यान तुम करो तुम्हारा।
हमें देखकर कहा आप तप योग बिसारा ॥ २ ॥

वचन शिवजी का

दोहा :— योग तपस्या भूल गये सुन पायल झंकार
भौंहे कबाण दृग बाण तक अब करती क्यू पार।
प्यारी जी अब करती क्यो पार नार मै सुध बुध भूला,
देख मोहनी रूप ध्यान दृग मेरा खुला।

प्यारीजी चम्पकली रस लेन चित्त भवरा होय फूला
ऐसा रूप रस हेत सकल तन मन कबूला ॥ ३ ॥

वचन भीलणी का

दोहा :— कहा बात मुख से कहो मुनि ज्ञानी सिरताज।
मै अति मन शर्मावती तुम्हे न आवे लाज ॥
मुनिजी तुम्हे न आवे लाज बात मै पूछण आई।
मुनिजी कब मेरा घर आय कंथ जब हो सुखदाई ॥
मुनिजी मै पतिव्रता नार और नरको नहीं धाई।
मुनिजी पर नर से कर प्रीत नार सो नरकां जाई ॥ ४ ॥

वचन शिवजी का

दोहा — नर्क मे जावे नार सो करे पर नर से प्यार।
शिव पर लागू हो नही शिव सबका भरतार ॥
प्यारी जी शिव सबका भरतार नेह कर जीव सुख पाया।
गोप्यां तज निज कंत कृष्ण से हेत लगाया ॥
प्यारी जी मिली जोत में जोत नरक कर कछु यन दाया।
ना समर्थ को दोष वेद में ऐसा गाया ॥ ५ ॥

वचन भीलणी का

ना समर्थ को दोष है सत्य कही मुनि नाथ
अधम जात मै भीलणी कंसे बने सगाथ।
मुनिजी कंसे बने संगाथ नाथ दिल मांही विचारो।
घरां आपके नार मान क्या रहसी हमारो ॥
मुनिजी गगा गौरजा जंग मचा दुख करसी भारो,
इस दुविध्या के मांय मेरो ना होत गुजारो ॥ ६ ॥

वचन शिवजी का

पीहर पठाद्यू गौरजा जटा बंधरहे गंग।
पटराणी तुमको करू निशिदिन राखू संग।
प्यारीजी निशिदिन राखू संग चलो मत करो अंवारी
मेरे पुर कैलाश भोग सुख सम्पत भारी।

प्यारी जी करो रात दिन ऐस रखूँ प्राणन से प्यारी।
सामर्थ्य के क्या जात-पाँत बुद्धि नही हमारी ॥ ७ ॥

वचन भीलणी का

तूमतो जल्दी कर रहे चलने की मुनिराय।
बैल चढू ँ तो डर लगे पाली चल्यो नही जाय।
प्रभुजी पाली चल्यो नही जाय दूर कैलाश तिहारो।
कोमल मेरा पाँव बात दिल माँही बिचारो।
प्रभुजी ऊँचों आपको धाम बने नही चलनो हमारो'
मै जाऊँ मम गेह आप कैलाश पधारो ॥ ८ ॥

वचन शिवजी का
दादरा

मेरे खांदे चढो शर्मावो मती।
हरे नाजुक बदन अमीर है कोमल तिहारा पांव।
राह चले छाला पड़ें साँची कहो छो वाम।
पाली चलके ये पाँव दुखाओं मती ॥ १ ॥
तेरा अनूप रूप की शोभा कही न जात,
रति रम्भा परी छबि देख शरमात,
चित चोरी अबे शरमावो मती ॥ २ ॥
तेरो मुख चन्द्र सो चकोर मारे नैन,
मद २ हास्य बोल कोकिल से बैन,
दूणा २ ये मैन जगावो मती ॥ ३ ॥
सिह लंकी नार गति हंस की लजात,
चाल सग कैलास होय रास रंग रात।
अब ज्यादा थे देरी लगावो मती ॥ ४ ॥
नाथू कहे शिव भीलणी कधे चढाई खास।
शीघ्रता से चाल कर पोछ गये कैलाश,
लख लीला यह कोई भुलावो मती ॥ ५ ॥

वचन शिवजी का

दोहा :— चट कपाट को खोलके गिरजा आओबार।
शिव तप कर घर आइया लाया अनोखी नार।
गौरांजी लाया अनोखी नार छवि वरणीनहिं जावे।

अदभुत रूप छटा तो देख्यॉं ही बन आवे,
गोरॉंजी बांहर आवो बेग देर अब नॉंय लगावो।
निरखो नेक नई नार सदाशिव यों फरमायो॥

वचन पार्वती का

दोहा :— चट उतर पट खोलिया पलट रूप कहे गौर।
हमें दिखावों अब प्रभु कहॉं नार नई और।
प्रभुजी कहा नार नई ओर अनोखी सुन्दर लाया
प्रभुजी मोय देखने को चाव आज अति चित ललचाया।
कौन वृक्ष की छांह उसे बैठाकर आया।
जोड़ २ कर हात गौर हंस वचन सुनाया।

वचन शिवजी का

दोहा :— शिव सभाली खध पै सुन्दर पाई नांय।
सोचत मन में कहा भयो क्या उड गई नभ मॉंय
गौरांजी वो उड़ गई नभ माय बड़ा यह अचरज छाया।
गौरॉंजी पल २ आवे चित भई क्या हरी की माया।
गोरा जी थी ऐसी हद रूप प्रभा का पार न पाया।
गौरॉंजी ना जांनू हरी आप मोहनी फिर बन आया॥

वचन पार्वती का

क्षमा करी जो गणपति मम अवगुण सुर भूप
निज दासी ने धारियो भीलगा तणो स्वरूप।
प्रभु जी भीलणी तणों स्वरूप अनोखा भेष बनाया
हे मदनारी देव आपको कैसा रिझाया।
भूल तपस्या ध्यान मेरे में लीव लगाया।
आप छली मोहे छोड़ भीलणी में बिलमाया।
क्षमा २ प्राणेश मम भिलणी तणो विनोद।
मै दासी हॉंसी करी सिरफ बढ़ाणे मोद॥
निर्विकार हो तुम सदा सत् चित् आनन्द धाम।
अविनाशी अजरा अमर पूरण ब्रह्म अकाम॥
शिव गिरजा आनन्द से सदा बसै कैलाश।
ध्यान करो मंगल रहे पूरण हो अभिलाष॥
गुरू मिल्या नंदलाल जी हिये किया प्रकाश।
दर्जी नायू यश कथे पुर डीडवाने दास॥



आरती

जै शिव अविनाशी प्रभु जै शिव अविनाशी
विश्वनाथ सर्वोत्तम अद्‌भुत सन्यासी।
ॐ हर हर हर महादेव ।। टेर ।।

सत चित आनन्द रूप निरजन निर्गुण प्रकासी
सत् ब्रह्मा चित विष्णु तुम आनन्द राशी ।। १ ।।

त्रिगुणी सिद्धि शक्ति महामाया दासी।
शारद लक्ष्मी ऊमा वल्लभ विश्वासी ।। २ ।।

सूक्ष्म स्थूल चराचर जगकी पैदासी।
तव प्रताप स्वप्नवत होय रहे भासी ।। ३ ।।

जीव अलपज्ञ देह मदसे नाना भोगे चौरासी।
आशुतोष भक्ति बल अमर लोक बासी ।। ४ ।।

ब्रह्म वेद शर आनन धारो लीला विलासी
निराकर त्रिगुणातम अद्वैत तत् खासी ।। ५ ।।

दर्जी नाथूराम कृष्णादि रुप के अभिलाषी
करत नीराजन विधि से काटो यम फांसी ।। ६ ।।



श्री नामदेव मंगल

(भक्त माल)

की

समीक्षा

तुलसिहारविजितकन्धर, कटितटेविलसत्तड़िदम्वरम् ।
मकरकुण्डलमण्डितसत्कट, नमत विट्लमच्युतमुत्कटम् ।।

पण्ढरपुर के भगवान श्री विट्ठल (श्रीकृष्ण) इस ग्रन्थ के आराध्यदेव है, जिनमे अनन्य भक्ति रखकर कविवर नाथूराम दर्जी के वंश (छीपा दर्जी) के भक्त नामदेव अमर हो गए और कविवर को यह ग्रन्थ रचने की प्रेरणा व अनुकरणीय जीवन चरित्र की गौरव गाथा दे गए। श्री विट्ठल की मूर्ति, विट्ठल का नाम, विट्ठल की जयजयकार और विट्ठल की नगरी पण्ढरपुरी के निरन्तर श्रवण, मनन और निदिध्यासन से नामदेव विट्ठलमय हो गए थे। नामदेव की दृढ श्रद्धा हो गई थी कि श्री विट्ठलमूर्ति चैतन्य है और वही सच्चे भगवान है। भक्त नामदेव उन कटि पर हाथ रखे ईंट पर खडे पण्ढरीनाथ विट्ठल भगवान के ध्यान मे मस्त रहते थे। पण्ढरपुर मे लेने मे और देने मे विट्ठल का ही नाम लिया जाता है। विट्ठल के नाम से ही सारे कार्य करने होते है, इस प्रकार विट्ठल नाम रूपी सुख का लेन देन वहाँ चला करता है, जिससे सम्पूर्ण कार्य भगवान का स्मरण करते हुए ही करने की शिक्षा मिलती है। वहाँ भक्तभावन भगवान अपने भक्तो की सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण कर देते है। जो इन पण्ढरीनाथ के दर्शन करते है, उनको ये पुरुषोत्तम कभी नही भूलते। इस प्रकार का ब्रह्मानन्द अन्यत्र कहाँ है? पण्ढरपुर क्षेत्र भगवान के सुदर्शन चक्र पर बसा हुआ है। जो लोग हरिबोधिनी और हरिशयनी के दिन भगवान के दर्शन के लिए उत्कण्ठित रहते है, त्रिलोकेश्वर चक्रपाणि भगवान ईंट पर खड़े उनकी बाट देखा करते है। श्रुति के लिए अगम्य देव पण्ढरपुर मे अति सुलभ है। उनका रूप मधुर है, उनका नाम मधुर है, उनका यश मधुर है—उनका सब कुछ मधुर ही मधुर है। यही भक्त नामदेव की विट्ठल-उपासना का रहस्य है।

भक्त नामदेव की उपासना का यही रहस्य हृदयगम करके कविवर ने ग्रन्थ रचना का लोकोपकारी कार्य प्रारम्भ किया :—

श्री राधारमण श्याम, षट् ऐश्वर्य सिद्धि धाम, वृद्धि विनायक काम, कर माधव मनाऊँ मै।
विष्णु यश तेज भान, शील शम्भु नन्द ज्ञान, बृह्मा धर्म श्री भगवान, शारदा सराऊँ मै।।
आदि पुरुष भूमां अश, चौदह देवता अवतंश, बृाह्मण गुरुवर वंश, नन्दलाल ध्याऊँ मै।
कह नाथूदर्जी दास, बसे पण्ढरपुरी ग्राम, ताके भए पुत्र नामदेव यश गाऊँ मै।।

भक्त-प्रवर की पावन गाथा गाने के लिए कविवर भगवती से भी विनय करते है कि वह काव्यरचना मे सहायक हो तथा कोई दग्धाक्षर आने न पावे। आज के तथाकथित कवि विचार ही नही करते और न जानते भी है कि दग्धाक्षर क्या होता है और कहाँ पर आना या न आना चाहिए। काव्य मनीषियो द्वारा प्रतिपादित काव्य सिद्धान्त के अनुसार अनुचित स्थल पर दग्धाक्षर के प्रयोग से कवि धर्म, कवि कृति और पाठको की मति, सबका क्षय हो जाता है। इसीलिए कविवर नाथूराम जी का भगवती-वन्दन का आदर्श समस्त कवि-समाज के लिए अनुकरणीय है —

करो भगवती महर पहर सब रहो हिए के मांही।
शुभ गण वर्ण मिलाय छन्द में मुद मगल के ताहीं।।
मै अबोध बालक जग जननी पिंगल पढियो नांहीं।
दग्ध अक्षर दुर्गुण दुख टालो पुनि पुनि बन्दौं पाही।।

कथा का प्रारम्भ भक्त पुण्डरीक के इतिहास से होता है, जिसकी मातृ-पितृ भक्ति के प्रभाव से भगवान श्री कृष्ण एक ईट पर खड़े रहकर कमर पर एक हाथ रक्खे भक्त पुण्डरीक की प्रतीक्षा करते रहे। आज भी उसी भाव भगिमा मे भगवान श्रीविट्ठल के रूप मे पण्ढरपुर मे प्रतिमा होकर खड़े है। पुण्डरीक ने प्रतीक्षारत भगवान से कोई स्वार्थ का वरदान नही मांगा, अपितु कलियुग मे कामी जीवो के उद्धार का मार्ग पूछा। भगवान ने बताया कि माता पिता की भक्ति जैसी तुमने की है, उसके लिये यह स्थान तुम्हारे नाम से पण्ढरपुर कहलायगा। जो नर तुम्हारा अनुकरण करेंगे, वे मुझे प्रिय होगे। कविवर ने उपरोक्त शिक्षाप्रद प्रसग देकर वर्तमान युग के उन व्यक्तियों पर छोटा कशी की है, जिनके हृदय मे माता-पिता के प्रति लेशमात्र भी भक्ति नही है।

तुलसीदास ने मानस को एक प्रवन्ध काव्य वनाया है, जिसमे अवधी भाषा मे चौपाई व दोहा छन्दो का आश्रय लेकर कथानक को मन्द मन्द किन्तु नियमित चाल से चलने वाली सरिता के समान गतिशील बनाया है, परन्तु कविवर नाथूराम जी ने विभिन्न राग रागिनियो के पदो की भरमार से ग्रन्थ को एक महासमुद्र बना दिया है, जिसमे ज्वार उठते है और बैठ जाते है, लहरे अत्यन्त ऊँची हो जाती है तथा बाद मे पानी यथावत् हो जाता है। इस प्रबन्ध काव्य मे इतने गेय पद है कि स्वर-ज्ञाता एव स्वर-साधक कलाकार ही ग्रन्थ का आनन्द ले सकता है और इसमे आपादमस्तक निमज्जित हो सकता है। सयोग शृ गार का एक पद देखिए —

राग आसावरी

आज मोसे कहा जी छिपाओ प्यारी, थारे संग रमे गिरधारी ॥ टेर ॥
तेज चन्द्र मुख छाय साँवरे नैन चकोर निहारी।
खिले दाड़म ज्यूं दाँत बत्तीसी हो रहे हर्ष अपारी ॥ १ ॥
यश दुध लाल गाल गुल पर फुल अधर बिम्ब छवि न्यारी।
सो रस लीना खीर सांईं बन हुस कीर अलि भारी ॥ २ ॥
सती आनन्दी दृढ वैराग्य कुच रामेश्वर मदनारी।
लंका जीतन पूजे कर कमलों नख भए चन्द लीला री ॥ ३ ॥
विखरे जरी पट निश्चय खुली है श्री सुन्दरिये पिटारी।
कहाँ वो धर्म कर पद की मेहदी ज्ञान गवर दे सारी ॥ ४ ॥
छऊं प्रभुताई भक्ति कला कौशल सोलह सिनगारी।
दरजी नाथू कहे कृष्ण हित अजु अंखियों मतवारी ॥ ५ ॥

जहाँ रसराज शृंगार का प्रसग कवि की सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि तथा वर्णन शैली से छूट नही सकता वहां भक्ति का प्रसग भी कवि की लेखनी से भक्ति रस का मनोहारी गेय पद सर्जन करा देता है। हनुमान जी की एक स्तुति पढिए :—

पारवा राग

मारुत सुत गुण गान करे निज मुख से श्री भगवान ॥ टेर ॥
महावीर मुद मंगल करना, सकल अमंगल महा मद हरना।
केशरीनन्द यतिवर सुभ वरणा, शम्भु अंश हनुमान ॥ १ ॥
रवि सुत दुख भंजन परधानी, अंगद संग सिया सुध आनी।
मारे अहिरावण अभिमानी, लक्ष्मण जीवन प्राण ॥ २ ॥
कपिवर वाली सुत युवराजा, अवतरे नामदेव सिरताजा।
ताके मंगल मय करो काजा, पूरब प्रीत पिछाण ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम सराता, बजरंग जग में उप-विधाता।
बल बुद्धि रिध सिध के दाता परोपकारी सुजान ॥ ४ ॥

कथा प्रसंग मे जहाँ कोई स्थल आता है कि अपना जीवन-दर्शन भी जनता के लाभार्थ प्रस्तुत किया जाय, कविवर ऐसा अलभ्य अवसर हाथ से नही जाने देते हैं। पुण्डरीक का मातापिता के प्रति व्यवहार देखकर हर कोई जान सकता है कि घोर कलियुग आ गया है। परन्तु कवि द्वारा कलियुग का वर्णन देशप्रेम का जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत करता है। "अध्यात्म रामायण" मे कलियुग का वर्णन इस प्रकार है :—

विप्रा लोभ ग्रहग्रस्ता माता पितृ गुरुद्रुह ।
धनार्जनार्थमभ्यस्त विद्या मद विमोहिताः ॥
स्त्रियश्च प्रायशो भ्रष्टा भर्त्रवज्ञान निर्भया. ।
श्वशुर द्रोह कारिण्यो भविष्यन्ति कलौयुगे ॥

[कलियुग में ब्राह्मण लोभ रूपी पिशाच से ग्रसित, माता पिता व गुरू द्रोही, धनोपार्जन करने के लिये विद्याध्ययन करने वाले और अहकारी होगे। स्त्रियाँ प्रायः भ्रष्टा, पति की आज्ञा उल्लघन करने मे निर्भय तथा सास ससुर से द्रोह करने वाली होगी।]

'रामचरित मानस' के उत्तर काण्ड मे १० दोहो और ५० चौपाइयो मे कलियुग का विशद वर्णन दिया हुआ है :—

अबला कच भूषन भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ न धर्मरता। मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥
कलिकाल बिहाल किए मनुजा। नहि मानत कोऊ अनुजा तनुजा ॥
नहि तोष विचार न शीतलता। सब जाति कुजाति भए मंगता।

नामदेव के अभग पदो में भी कलियुग का वर्णन इस प्रकार है :—

कुण्डलिया

धर्माधर्म विचार नही, इहि कलियुग के तौर।
स्त्री बैठे पलग पर, माता भरती नीर ॥
माता भरती नीर त्रिया शृंगार बनावे।
फटे पुराने वस्त्र मात पितु को पहरावे ॥
नामदेव कह गए होयेंगे ऐसे करमा।
कलि महिमा है यही छांड़ देवे सद्धर्मा ॥

कवि नाथूरामजी ने इस ग्रन्थ में कही भी कलियुग को नही कोसा है, अपितु इसका प्रभाव भारत देश की पराधीनता के रूप मे हुआ है, यही दुख कवि को साल रहा है। धर्मनीति का क्षय होने से राजाओ मे परस्पर विद्वेप वढा और फूट पड गई। पृथ्वीराज ने सयोगिता के कारण सबसे वैर बांध लिया, भाई जयचन्द को भी दुत्कारा जिससे यवन इस देश मे आए और इस पर आसानी से अधिकार कर लिया :—

प्रथम चरण कलियुग धस्यो, धर्म नीति गई छूट।
मै बड़ विषयाशक्ति से, पड़ी हिन्द मे फूट ॥
आर्य राज वियोगिता, भई संयोगिता नार।
आसुरी मति पर-मुल्क को, भयो भारत अधिकार ॥

देश की परतन्त्रता के विषय मे अपनी दो टूक सम्मति निर्लिप्त भाव से देने के बाद कविवर एक अन्य ज्वलन्त समस्या को लेते है कि वर्णो में श्रेष्ठ कौन ? ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी उस विराट पुरुष के अग है जो "पुरुष सूक्त" मे वर्णित है :—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद, बाहू राजन्य कृत· ।
उरु तदस्य यद्‌वैश्य पद्‌भ्या ७ शूद्रो अजायत ॥

कविवर ने जाति को जन्म से भी माना है और कर्म से भी माना है, परन्तु जाति का अहकार करने वाले मूढ होते है, यह निर्विवाद है ।

कई बार जाति जन्म से, कई बार गुण कर्म जोर ।
गुण जाति को घमण्ड कर, मूढ व्यर्थ करे झोड़ ॥

कविवर के मत से जातियो की उत्पत्ति इस प्रकार हुई है :—

विराट गोरे ज्ञान मुख से ब्राह्मण तन उपजाया ।
वर्ण उत्तमता रहने खातिर प्रभु षट् कर्म बताया ॥
भुज रज से भए लाल क्षत्रि जन धर्म तीन भोलाया ।
उर सत पीत वरण महाजन तीनहूँ कर्म सराया ॥
पग तम गुण से शूद्र जो कारे नृप के दास कराया ॥

प्रत्येक वर्ण का रग प्रतीकात्मक है, जो कविवर की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है । ज्ञान का रग श्वेत होता है, क्योकि यह अज्ञानान्धकार का विलोम है, वीरता का रग लाल होता है जो रक्त का ही रङ्ग है । लक्ष्मी (सोना) का रङ्ग पीला होता ही है । श्रमिकों को धूप आदि मे काम करना ही पडता है अतः शरीर मे श्यामता आवेगी ही । कविवर द्वारा यह सुन्दर वैज्ञानिक विवेचन किया गया है । त्रिगुणो की परिधि मे भी यदि इन वर्णो को बांधने का विचार किया जाय तो ज्ञान इन त्रिगुणो से ऊँचा उठा हुआ होता है, इसलिए वह इनसे मुक्त है । शक्ति को रजोगुण समन्वित माना है, धन को सतोगुण युक्त तथा श्रम को तमोगुण-मण्डित बतलाना सर्वथा उचित है ।

वर्णाश्रम व्यवस्था पर कविवर ने जो अभिमत प्रतिपादित किया है, वह उनके गीता अध्ययन पर आधारित है । गीता महान कर्मयोग शास्त्र है । इसके सिद्धान्त प्रत्येक कसोटी पर खरे उतरे है और विश्व भर के मनीषियो ने इसकी गहराइयो मे जाकर अपना मत-सम्मत व्यक्त किया है । गीता मे प्रत्येक वर्ण द्वारा किए गये कर्त्तव्य को उसका "स्वभावजम्" गुण माना है, अर्थात् जो व्यक्ति ज्ञान देने (ब्राह्मण कर्म) का काम करेगा उसके लिए निर्दिष्ट कार्य "स्वभावजम्" होगे । वह उन्हे करेगा ही; उनसे विमुख नही हो सकता । रक्षा मे सन्नद्ध वर्ग को स्वाभाविक रूप से निर्दिष्ट कर्म करने होगे । समाज का भरणपोषण करने वाले व्यक्तियो को तत्तत्कर्म करने अनिवार्य है, अन्यथा समाज का ढांचा

विशृ खलित हो जायगा। इसी प्रकार परिश्रम का काम करने वाले वर्ग को स्वभावतया निर्दिष्ट कर्त्तव्य पूरा करना होगा। समाज मे समरसता तथा समन्वय रखने हेतु चारो प्रकार के कार्य योग्यतापूर्वक सम्पन्न होने चाहिये। यही कविवर का अभिमत है जो सकीर्णता से विल्कुल ऊपर उठा हुआ है। गीता का सर्वमान्य सिद्धान्त ही हमारे लिए ग्राह्य है —

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणै ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौच क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्य युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम् ॥४३॥
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मक कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
— गीता अध्याय १८

इसके पश्चात् कविवर नाथूरामजी ने अपने पूर्वजो की उत्पत्ति का "नानापुराण-निगमागमसम्मत" वर्णन किया है। जिस समय परशुरामजी पृथ्वी को क्षत्रियो से निर्वीज कर रहे थे, उस समय हैहय नरेश सहस्रार्जुन के पाँच शेष पुत्रो (शूरसेन, शूर, धृष्ट, वृष्णि और जयध्वज) मे से प्रथम दो बडे पुत्र क्षत्रिय कर्म छोड कर अपने हाथो मे लिए हुए धनुष वाणो की गज कैंची व सुई बनाकर वकदालभ्य ऋषि के आश्रम मे छिप गए और परशुराम के कोप से बच गए। छिपने से वे "छीपा" कहलाए और दर्जीपने का काम शुरू कर दिया। भक्त नामदेवजी (और स्वय कविराज भी) उसी वकदालभ्य गोत्र के छीपा दर्जी है। यह ऐतिहासिक तथ्य है, जिसका वर्णन "वृहत् रामायण" और "हरिवश पुराण" मे सप्रमाण मिलता है। त्रेतायुग में उसी गोत्र मे आदि पुरुष "यदुसेठ" हुए, जो क्षत्रिय वर्ण के होते हुए भी शिपी (छिपी) जाति के नाम से प्रसिद्ध थे। इनका उपनाम रेडंकर था। ये श्रीक्षेत्र कन्हाड के समीप कृष्णा नदी के तीर पर नरसीवामणी नामक गाँव मे रहते थे और कपडा वेचने का धन्धा करते थे। ये अत्यन्त सरल प्रकृति के सदाचारी एव पण्ढरपुर के भगवान श्री विठ्ठल के एकनिष्ठ उपासक थे। उन्ही की छठी पीढी मे भक्त नामदेव कार्तिक शुक्ल एकादशी, रविवार, स० १३२७ विक्रमी मे हुए। नामदेव सरीखे परम भागवत का जन्म ऐसे ही पुनीत कुल मे हुआ करता है। यह सारा वश ही भगवान पाडुरग का एकनिष्ठ उपासक था। कवि की लेखनी से भगवान की एक सुन्दर स्तुति पढिए—

वन्दौं पांडुरङ्ग, निशिदिन ॥
छवि निरखत मेरा मन मौहित हो, वारूं कोटि अनग ॥ १ ॥
शिला ईट से अधम उधारण, पद पंकज भई गग ॥ २ ॥
क्रीट मुकुट मकराकृति कुण्डल, पट भूषण घन अग ॥ ३ ॥
कह नाथू दर्जी हरि सेठ ज्यु मिले हरि रूप उमग ॥ ४ ॥

नामदेव जसे भक्त शिरोमणि सन्तान के पैदा होने से ही कुल का उद्धार होता है यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। कविवर नाथूजी तभी अपनी अमर वाणी मे कहते हैं :—

जननी जणे तो भक्त जण, जैसे ध्रुव प्रह्लाद।
सातों कुल तारे तिरे, जन माने आह्लाद॥
सुख सम दुख दे गर्भ मे, मा शिक्षा ले सीख।
पर पूत क्या पालने, जाय पेट में दीख॥

बालक नामदेव दो वर्ष के थे तभी विठ्ठल नाम का उच्चारण करने लगे :—

नामदेव दो वर्ष के, बोले विठ्ठल नाम।
पाँच वर्ष के पढन को, गए गुरु के धाम॥

नामदेव के मुख से कविवर ने विठ्ठल की प्रथम स्तुति कहाई है, वह एक अच्छा गेय पद्य है :—

श्रीधर गिरधर धरणीधर हरि जय बनवारी, जय-जय॥
माधव श्रीमधुसूदन मुरारी यादव केशव कृष्ण बिहारी,
काली मद मर्दन कंसारी, जय जय॥ १॥
नारायण निरगुण अविकारी, परमेश्वर ईश्वर अघहारी,
पांडुरग विठ्ठल शुभकारी, जय जय॥ २॥
रुकमण रमणा लीलाधारी, वासुदेव विश्व अधारी,
विष्णु विश्वम्भर अधम उधारी, जय जय॥ ३॥
भूमि भगवन भवभय हारी, पूर्णकला प्रभु जग विस्तारी,
नाथू दरजी है बलिहारी, जय जय॥ ४॥

नामदेव की भक्ति इतनी निश्छल थी कि उन्होने भगवान की मूर्ति को पाषाण की मूर्ति नही समझा था बल्कि साक्षात् सच्चिदानन्द घन परमात्मा माना था। अत बालक नामदेव को नाचता देखकर भगवान भी उसके साथ नाचने लगे।

अन्तर्यामी भक्त की. मनोकामना जोय।
बालक बन संग नाचते, परमानन्द गये होय॥

नाचते समय नामदेव का 'हरि हरि' बोलना, भगवान का 'हर हर' बोलना, तथा अन्त मे दोनो की एकता प्रतिपादित करना बडा हृदयग्राही प्रसग है, जिसे कविवर ने "हरिहर एकता पच्चीसी" विषयक २५ मनहरण छन्दो मे अलग ही लिखा है जो भावपक्ष और कलापक्ष दोनो दृष्टियो से अच्छा बन पडा है। उसका वर्णन अन्यत्र किया गया है।

भक्त नामदेव ने भगवान को नवेद्य अर्पण किया, उसे कविवर ने राग सारंग, राग गर्वी, राग विणजारी तथा राग गजल कव्वाली मे चार पदो मे प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार नव-प्रसूता गाय का प्रथम दूध नामदेव ने भगवान को अर्पण किया :—

नामदेव की भक्ति दृढ, अन्तर्यामी जोय।
गर्म पात्र पय शीघ्र ही, पी लीना खुश होय॥

राग विहाग मे कविवर द्वारा लिखित सुन्दर पद देखिये, जो सूरदास के वात्सल्य रस के गेय पदो के समकक्ष है, इसमे कोइ सन्देह की गु जाइश नही है।

पियो नी पय प्यारे पाण्डुरग॥
घर ब्याई गऊ को प्रथम लायो दूध भर के उमग॥ १॥
शुद्ध सुधा सम मिश्री मिलाई, क्यू नटते नरसिह॥ २॥
शीतकाल से गरम दूध मे, तेजी बढती अग॥ ३॥
हस रूप शिक्षित मोय कीन्हा, नीर खीर लख सग॥ ४॥
करो कृपा कहे नायू छीपा, पड़े भजन ना भग॥ ५॥

जव नामदेव नौ वर्ष के हुए, तो दाम सेठ ने उनके यज्ञोपवीत सँस्कार एव विवाह का विचार किया :—

करा जनेऊ संस्कार विधि सगपण का इन्तजामा।
ज्यादा शिशु हरि रग मे रहेगा कैसे गृहस्थ मे थामां॥

इसलिये स्वय भगवान ने एक धनिक सेठ का रूप धर कर वेदर ग्राम निवासी गोविन्द सेठ (बावूराव वहादुर) की कन्या राजाबाई से नामदेव का वैवाहिक सम्बन्ध तय किया। विवाह की तैयारी, वनडा वनडी के गीत, लग्न लिखाना, हल्दी चढाना, हल्दी के गीत, विनायक गान एव वृद्धि विनायक पूजन का वर्णन करने मे कविवर ने गेय पदो के द्वारा प्रसगानुकूल भावाभिव्यक्ति की है :—

राग श्याम कल्याण

वेगा म्हारे आज्यो जी श्रीगणराज॥
रणत भँवर गढ वासी विनायक, सब देवन सिरताज॥ १।
मूषारुढ हो ऋद्धि सिद्धि सागे, लाज्यो गरीब निवाज॥ २॥
मोटा नाक रखने सुंडाला, तुमको सबको लाज॥ ३॥
कह नायू छींपा भक्तां के, सकल सुधारो काज॥ ४॥

राग सोरठ

बेगा म्हारे आज्यो जी श्रीगणराव।
म्हारे घर नामदेव को ब्याव ॥ टेर ॥
वृद्धि विनायक मगल दायक, करके कृपा भाव ॥ १ ॥
छऊँ प्रभुताई युत भगवाना, अधम उधारी सुभाव ॥ २ ॥
निर्धन के धन निर्बल के बल, करुणा के दरियाव ॥ ३ ॥
विघ्न विडारण भक्त उबारण, पार लगाना नाव ॥ ४ ॥
कह नाथू छीपी कुलदेवा, कीज्यो आनन्द उछाव ॥ ५ ॥

कविवर ने जहाँ शृ गार एव भक्तिभावना के पद लिखने मे अपनी लेखनी सार्थक की है वहा बना-बनी को सनातन-धर्म की शिक्षा देकर कवि धर्म का निर्वाह किया है। साहित्यकार समाज का प्रतिबिम्ब होता है। लोक कल्याण की भावना से सामयिक सीख देना उसका परम कर्त्तव्य है :—

(तरज—म्हारी नाव ने डुबावोला काई जी)

बना कर अनीत लड़काई जी म्हाने ताना दिरावोला काँई जी ॥ टेर ॥
बना शील दयागुण पढवा, क्यों न जावो गुरु के पाँई जी ॥ १ ॥
बना सुनो रामायण क्यों ना, एक नारी व्रत के तांई जी ॥ २ ॥
बना जाती धर्म को पालन, लीजो गीता की छांई जी ॥ ३ ॥
बना स्वदेश सेवा करने, क्यों न लेवो अपनी डांई जी ॥ ४ ॥
बना पर नारी को तक के, क्यों बिगड़ो पशु की नांई जी ॥ ५ ॥
बना पर हुन्नर कर दीखो, कम जाति द्रव्य लुभाई जी ॥ ६ ॥
बना दुखा दुजे के दिल को, क्यों रूठवाते जग सांई जी ॥ ७ ॥
बना छींपी नाथु गावे, शिक्षा ज्यु ध्रुव की माई जी ॥ ८ ॥

भगवान की आज्ञा से स्वयं हनुमान जी ने बैल बन कर वर नामदेव को वधू के द्वार तक पहुँचाया तथा भगवान ने दोनो ओर पूरी वैवाहिक तैयारी करा दी। स्वयं भगवान भी वहाँ पधारे।

सोलह सहस्र सौ आठ प्रिया, सज सोलह शृ गार।
सोलह कला के संग भई, सोलह आना त्यार ॥
मान वढावन् भक्त के, चले श्री पांडूरग।
नामदेव विवाह को, होय रयो परम उमग ॥

एक ओर वधू राजावाई के उबटने के गीत हो रहे है, दूसरी ओर वर नामदेव के उबटने के गीत स्वय सत्यभामा आदि पटरानियो द्वारा गाए जा रहे है।

श्री नामदेव हरिजन बनड़ा पर बहु धन वारो ए ।। टेर ।।
सवागण गोणा सती जना है, लाडला पांडुरंग रे घना है,
नामा रूठ्या मुश्किल मना है, बना है बना निहारो ए ।। १ ।।
बोले भीमसुता मृदु बानी, आओ सोलह सहस्र सब रानी,
करो न्योछावर निज निज पानी, खुलो कुबेर भडारो ए ।। २ ।।
हीरा मोती पन्ना जंवार, मणियां मोहरां रत्न कलदार,
रुपैया टक्का बेशुमार, भर भर मूठां उछारो ए ।। ३ ।।
नाथू दर्जी चित्त उमावो, मोर छड़ी की झड़ी लगावो,
दीन जनो का दरिद्र मिटावो, रहसी सुयश अपारो ए ।। ४ ।।

इसके पश्चात् फेरो का विशद वर्णन, आरत्या के कई पद, हथलेवा के गीत तथा कँवर कलेवा के गीत, हैं :—

राग ठुमरी अथवा सोरठ

थे तो ल्यो नामाजी लाडू । थारे सग श्री रग पांडू ।।
थे तो ल्यो नामा जी जलेबी । खुश होवे अम्बा देवी ।।
थे तो ल्यो नामा जी पेठा । शोभा देखो आंगन बैठा ।।
थे तो ल्यो नामा जी घेवर । राजा बाई का सिर सेवर ।।
थे तो ल्यो नामा जी सीरा । परखो हिये सो हरि हीरा ।।
थे तो ल्यो नामा जी लपसी । खुश होवे शकर तपसी ।।
थे तो ल्यो नामाजी चावल । रुचि ले जगदीशा साँवल ।।
थे तो ल्यो नामाजी इमरती । सब जाणो धर्म समरथी ।।
कहे नाथू छींपी नामा । अवतार भक्त गुण ग्रामा ।।

कविवर नाथूराम जी इतने सूक्ष्म-दृष्टा है कि विवाह की छोटी से छोटी लौकिक विधि भी उनकी दृष्टि मे बच नही सकती । वे भली भाँति जानते है और ध्यान भी रखते है कि जिस समय जो नेगचार होते है वे सबके सब लेखनी बद्ध हो । भक्त नामदेव जी जैसे वर के शुभ विवाह मे नेगचार जितने हो सो थोडे है और लेखनी की सार्थकता है कि उनका वणन किया जाय । औरतो ने वर नामदेव जी को पहेलियाँ भी पूछी, जिसका नमूना निम्न भाँति है —

दोय बाप को लाडलो जी वाला, दाई उनके माय ।
हस्त दोय पग तीन है जी वाला, नख तो बीस लखाय ।।
(उत्तर :—श्रीकृष्ण)

मोम का मन्दिर बीच मे जी वाला, आसन आग बिछाय ।
माखन को मुनि बैठियो जी वाला, पिव उणियार लखाय ।।
(उत्तर :—गर्भाशय)

दधि रिपु हरि कर लख शिव शंके कपित सिन्धु दुलारी हो राज।
सुर भए मगन असुर लजखाने दिए जसुमति को मुरारी हो राज ॥
(उत्तर :—झेरणा)

गोरे पुरुष प्रसूती गोरी नर को उर भयो भारी हो राज।
दाई पेट पलार शिशु काढे नर को हो गयो नारी हो राज ॥
(उत्तर :—दूध, दही, मक्खन)

उपरोक्त पहेलियाँ जहाँ कल्पना की ऊँची उड़ान के साथ साथ भाव गाम्भीर्य प्रधान है, वहां शब्दालकार की झड़ी से ओत प्रोत है। कविवर ने गेय पदो के माध्यम से इस प्रबन्ध काव्य को राजस्थानी साहित्य की एक बेजोड़ एवं अमर कृति बना दिया है। विवाह मे प्रसगानुकूल गाली-गीत गाए जाते है वह सब पद-रचना कविवर ने की है, छोडा कुछ भी नही है। माडे की स्त्रियाँ वर के मातापिता को लक्ष्य करके कह रही है, उस भावना को कविवर ने अपने भक्ति रंग से सराबोर कर दिया है :—

राज जँवाई जी रे बाप घणेरा। बाप घणेरा त्रिताप लुटेरा ॥ टेर ॥
म्हारी सगी तन शील उबटना, एक बाप होय सगुण प्रगटना,
सगा रे बाप थारे निर्गुण कपटना ॥ १ ॥
म्हारी सगी सदाचार स्नाना, एक बाप थारे विधि भगवाना,
सगा रे बाप आदि पुरुष पुराना ॥ २ ॥
म्हारी सगी जी रे सुजस टीको, एक बाप थारे हलधर नीको,
सगो जी बाप कँवर नन्द जी को ॥ ३ ॥
म्हारी सगी गुण सोलह सिनगारा, एता बाप थारे टोटा क्यां रा,
नाथ छींपी जन बलिहारा ॥ ४ ॥

कविवर ने मेहदी के गीत देने मे भी भूल चूक नही की है, बल्कि प्रसंगानुकूल ऐसे गेय पद देकर जहाँ स्त्री समाज के लिए आदर्श गेय साहित्य का सर्जन किया है, वहाँ पातिव्रत धर्म की उच्च भावना प्रस्तुत करते हुए युग निर्माणकारी कार्य किया है। कविवर स्वय एक अच्छे सगीतज्ञ थे और पदो की राग रागिनी स्वय बैठा कर आडम्बर हीन शैली मे भावाभिव्यजना करते थे। मेहदी का एक गीत देखिए :—

मेहदी उत्तम सोवे हाथ, पतिव्रता रग रांची।
निरखो निरखो जी सजन कर ख्यांत प्रीत किसी की सांची ॥ टेर ॥
मेंहदी सहित शृंगार सवागण बनी सजे नव सात ॥ पतिव्रत० ॥
गोरे हस्त मनोहर जड़िया माणिक सुबरन पात ॥ पतिव्रत० ॥
सुर्ख रग टुक श्यामता सोहे कवल पै भंवर लुभात ॥ पतिव्रत० ॥
लाली लग्न लखा लसकरिया कृष्ण भक्ति लखात ॥ पतिव्रत० ॥

सावित्री अनुसूया द्रौपदी के राची मेंहदी दिन रात ।। पतिव्रत० ।।
दर्जी नाथूराम सिया रट चारों फल मिल जात ।। पतिव्रत० ।।

विवाह मे स्वय भगवान पाँडुरंग विट्ठल विद्यमान है और वर पक्ष एवं कन्या पक्ष दोनों के योग क्षेम का पूरा ध्यान रखते है। बड़े भात के दिन कोठ्यार की मिठाई चूहो के हाथ लग जाती है तो भगवान अपनी माया से आनन फानन मे कोठ्यार भरपूर कर देते हैं। नामदेव जैसे भक्त शिरोमणि के विवाह मे भगवान के लिए कुछ भी अदेय या असम्भव नही है। जहाँ भगवान अपनी पटरानियो सहित विद्यमान है, स्वय मेघ जल सेवा कर रहे है, परम विद्वान एव भक्त श्री नारद जी भात छुड़ाने की विधि पूरी कर रहे हैं, उस बारात का क्या कहना ?

मेघ माली जल पावन ठाढे, मगल गीत सब नारी।
शीघ्र भात छुडावन उठे नारद शिक्षा कारी ।।
कह नाथू छींपी दोऊ कुल होय रही जय जयकारी।
सुनो भात छुड़ाणी वाणी लोक रीति सुखकारी ।।

यह "भात छुडाना" कविता पाठ मैने कई बार नामदेव समाज में एवं अन्यत्र भी सुना है। सन् १९३९ मे इन पंक्तियो के लेखक के विवाह मे भी स्वय उपस्थित होकर कविवर नाथूराम जी ने अपने श्रीमुख से यह "भात छुड़ाना" सुनाया था। ३० चौपाइयो मे रचित यह कविता सक्षिप्त रूप मे बानगी हेतु नीचे दी जाती है। इच्छुक व्यक्ति मूल पुस्तक देख कर पूरी कविता लिख लें।

खुले सीरा बिन गुठली मेवा। बंधे गंठजोड़ा हथलेवा ।।
खुली लापसी घी झर झरती। बंधे वेणी लट खूब सूरती ।।
खुले चावल चीनी घी केशर। बंधे गाल गवर नक वेशर ।।
खुले लड्डू मिठाई पाँचू। बंधे दोऊ कुचन कस काँचू ।।
खुले बालूशाही घेवर। वंधे समदण सब अग जेवर ।।
खुली फीणी भयो घी पावड़ो। बंधे सगी कटि लेंगो नाड़ो ।।
खुली जलेबी गहरा रस की। बंधी नखशिख नारी बस की ।।
महाप्रसाद भक्तन को दीजो। नाथू दर्जी की सुधि लीजो ।।

जेवनार के समय महिलाओ द्वारा गाये जाने वाले १५ पद कविवर ने रचे है और भिन्न भिन्न राग रागिनियों मे पद रच कर वैवाहिक मगल गीतों की शृ खला में प्रशंसनीय अभिवृद्धि की है। रसज्ञ जन उनको पढें और आनन्द प्राप्त करे। बारात के विदा होने के समय पहरावणी एव जान जुहारी का वर्णन भी कवि ने किया है तथा विदाई के तीन सुन्दर गीत भी दिए है।

इतरो मायत कुल प्रेम छोड़र बाई सिद चाल्या जी ॥
कन्या बिछुड़न के विध रचियो बिलखे जनक गिरि हेम ॥ १ ॥
आयो सगा रो नवल बनो लेग्यो करा सत नेम ॥ २ ॥
निभणो दुर्लभ धर्म विदेशां कामादिक ठग बेम ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे रहो सदा कुशल क्षेम ॥ ४ ॥

इस ग्रन्थ के एक तिहाई भाग मे भक्त नामदेव के शुभ विवाह का विशद वर्णन किया गया है। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस मे शिव पार्वती विवाह वर्णन के बाद फलश्रुति लिखी है —

यह उमा शम्भु विवाह जे नर नारि कहहि जे गावही।
कल्याण काज विवाह मगल सर्वदा सुख पावहीं ॥

अथवा रामविवाह के पश्चात् फलश्रुति अंकित की है :—

उपवीत ब्याह उछाह मगल सुनि जे सादर गावहीं।
वैदेही राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥

उसी भाँति कविवर नाथू जी ने भी भक्त नामदेव व राजाबाई के शुभ विवाह प्रसग की निम्नलिखित फलश्रुति दी है :—

नामा राजा ब्याह काज सब घण आनन्द उमंग।
पढसी सुणसी करसी कृपा विट्ठल पांडुरग ॥

यह ग्रन्थ लौकिक भाषा में "नामदेव को ब्यावलो" के नाम से प्रसिद्ध है। नामदेव समाज मे और अन्यत्र भी मैने यह ब्यावला बाँचा जाना सुना है। कविवर स्वय एक सगीतज्ञ वक्ता को साथ लेकर डीडवाना के आसपास के पन्द्रह बीस गावो मे गए भी थे और अपनी उपस्थिति मे यह ब्यावला बंचा कर जनता मे इसका प्रचार किया था।

ज्यो ज्यो नामदेव की भक्ति की महिमा बढने लगी, लोग उनसे जलने लगे। उन्होने नवाब के पास जाकर चुगली खाई :—

मूर्ति को दूध पाया, सुनने में आया, जड़ में खुदा ठहराया,
जग को भ्रमा रहा है ॥
पय पीये न रब होय पत्थर, कोई लाग धरी अन्दर, दुनिया को सच दिखा कर
टका कमा रहा है ॥

नवाब के सिपाहियो ने एक मृतक गाय लाकर नामदेव के द्वार पर छोड दी और गौ-हत्या का इलजाम लगा दिया। इधर नामदेव की दासी जन्ना पर मन्दिर के आभूषणो

की चोरी का इलजाम दिया गया। नामदेव की भक्ति के प्रताप से मृत गाय जी गई और आभूषण भी मन्दिर में ही मिल गए। नबाब के महलो मे आग लग गई, तब "नबाब नमिया भक्त पद, पावक बुझ गई शीघ्र।" नबाब ने उनको पलंग भेंट किया। निस्पृह भक्त ने उसे चन्द्रभागा नदी मे डाल दिया। भक्ति के रग मे रगे हुए व्यक्ति को सांसारिक वस्तुओ के अधिक सग्रह से क्या वास्ता ? लोगों ने पुनः नबाब को चुगली खाई कि भेंट दिए हुए पलग को नदी मे डालकर नबाब का अपमान किया गया है। नामदेव ने अपनी भक्ति के प्रताप से कई जड़ाऊ पलंग नदी मे से निकाल कर नबाब के सामने प्रस्तुत कर दिए। नबाब ने भक्तराज से क्षमा माँगी।

नामदेव मे अब ऐसी निष्ठा पैदा हो गई थी कि सर्वत्र भगवान ही दिखाई देते। वे जहाँ कही रहते, जिस किसी भी चीज को देखते, उनको भगवान के सिवा अन्य कुछ नही दीखता था। एक समय उनकी कुटी मे आग लग गई। आग एक तरफ थी। नामदेव प्रेममस्त होकर दूसरी ओर रक्खी वस्तुओ को भी आग मे फेंकने लगे और कहने लगे, हे प्रभो, आज तो आप लाल लाल लपटो से लपलपाते हुए आए। सारी चीजो को ग्रहण कीजिए।" यो कह कर नामदेव नाचने लगे। कुछ देर मे आग बुझ गई। नामदेव कुटिया बिना हो गए। भगवान ने स्वय मजूर बन कर उनकी छान छवाई। उस समय नामदेव घर पर नही थे।

गोरी सी लुगाई नर सांवलो सो करसणीबानो कामलीवारो।
हाथ दाँतलो छायल्यो बल्यां शीश उन्ही के हो सिर-मारो॥
कह्यो आन भेज्यो छै नामो जगां पूछ लगे बाँधो प्यारो।
नाथू कहे गोणा नाम से, छा गयो छप्पर वो ही तिहारो॥

इस प्रसग मे कविवर ने नाम के मुख से भगवान की स्तुति मे एक गेय पद कहलवाया है जो पठनीय है और भक्ति की पराकाष्ठा होने के नाते अभिनन्दनीय है :—

राग कालिंगडा

यो छान को छवैयो मोटो रे सजनो॥ टेर॥
मेहनत तन मन धम ले पहली फिर जन पर करे ओटो रे।
कारीगर सरनाम जगत में बड़ो लालची खोटो रे॥ १॥
बदन सहित वसुधा सर्वस ली बलि घर बन कर छोटो रे।
फिर किंकर ज्यू खट्यो द्वार पर लिए हाथ में घोटो रे॥ २॥
तिलोक चन्द घर हाली रखतो खातो घनेरो रोटो रे।
अन्तर्यामी गोकुल वालो नन्द महर को ढोटो रे॥ ३॥
उन पा छपरो चाह छवायो गुरु पद रज में लोटो रे।
तज आलस श्रुति धर्म पालो गिनो न परिश्रम टोटो रे॥ ४॥
नाथू कहे छींपी नामा जब मिटयो भरम को गोटो रे।
घट में भयो उजालो जब से लग्यो ज्ञान को झोटो रे॥ ५॥

भक्त नामदेव तथा भगवान विट्ठल मे इतना तादात्म्य स्थापित हो गया था कि उनका सम्बन्ध शरीर और आत्मा जैसा हो गया था। ईश्वर प्रेम की प्रबलता, भावना की तीव्रता और सर्वस्व अर्पण के द्वारा भगवान विट्ठल नामदेव से एकाकार हो गए। दोनो साथ साथ नाचते, वार्तालाप करते और उन दोनो मे एक प्रकार का प्रेम-कलह सा चलता। यही कारण था कि दीपावली के पर्व पर रूप चतुर्दशी के दिन भगवान विट्ठल नामदेव के घर स्नान करने तथा भोजन करने गए और अपने सिंहासन पर नामदेव को बैठा गए। नामदेव भगवान की आज्ञा भूल कर भक्तो द्वारा अर्पित नैवेद भी खाने लगे। भगवान के वापिस लौटने पर नामदेव ने सिंहासन खाली नही किया। भगवान ने बड़ी मुश्किल से उनको मनाया। भक्त और भगवान का ऐसा पारस्परिक सौहार्द्र वेदो के लिए भी अगम है, साधारण मानवो की तो बात ही क्या ?

नामदेव के एक समकालीन सन्त ज्ञानेश्वर भी थे जो आपे ग्राम निवासी ब्राह्मण विट्ठल एव रुक्मिणी के पुत्र थे। विट्ठल के पुत्र निवृत्ति, ज्ञान एव सोपान तथा पुत्री मुक्ता बाई थे। ब्राह्मणो की सभा ने इस परिवार को न्याति से बाहर कर दिया था, परन्तु ज्ञानेश्वर की महान भक्ति एव ज्ञान के कारण सब ब्राह्मणो को झुकना पडा था। पडितो ने एक भैसे के डडा मारा तो उसकी चोट ज्ञानेश्वर के शरीर पर उभर आई। ज्ञानेश्वर ने भैसे से भी वेद की ऋचाएं बुलवा दी थी। एक ब्राह्मण चाग देव को भी ज्ञानेश्वर ने चमत्कार दिखाया और उसको पैसठी विद्या का अर्थ बताया। फिर ज्ञानेश्वर नागनाथ औढिया निवासी विसोवा खेचर से दीक्षा लेने गए। विसोवा खेचर ने उनकी परीक्षा ली तो ज्ञानेश्वर ने अपनी पीठ को इतना तपा लिया कि उसकी बहन मुक्ता बाई ने पीठ पर रोटियाँ सेक ली। विसोवा खेचर ने ज्ञानेश्वर को सौ टच सोना देखकर दीक्षित कर दिया। ऐसे ज्ञानेश्वर सन्त मण्डली साथ लिए हुए नामदेव के घर आए।

उस सन्त मण्डली मे भक्त गोरा कुम्हार भी था। ज्ञानेश्वर का इशारा पाकर वह प्रत्येक सन्त के पास जाकर मिट्टी के घडे की परीक्षा करने की मुद्रा मे चुटकी से सन्तो के सिर पर प्रहार करता। जब नामदेव के सिर पर गोरा कुम्हार ने चुटकी मारी तो नामदेव विगड गए और गोरा को डाँटा। गोरा ने निर्णय दे दिया :—

शुन गोरा कही ज्ञानेश्वर को सब ज्ञानी गुण येला।
नामदेव कच्चा बिन गुरु का पास न ज्ञान अधेला॥

ज्ञानेश्वर ने नामदेव से कहा कि बिना गुरु के नाम नही होता, इसलिए जल्दी गुरु बनाओ। नामदेव के पिता ने भी यही राय दी। नामदेव ने भगवान विट्ठल के सामने भक्तिपूर्वक कीर्तन करके भगवान को प्रसन्न कर दिया। भगवान ने भी निर्णय दिया कि बिना गुरु के तुमको ब्रह्मज्ञान नही हो सकता।

भो ब्रह्म ज्ञान गुरु बिन हो नहीं सकता वेद पुकारी।
इस कारण तुम करो कोई सत् गुरु दुर्मति मिटे तुम्हारी॥

नामदेव ने कहा कि मेरे गुरु आप ही हो। आपकी अपेक्षा अन्य कोई व्यक्ति मुझे क्या ज्ञान देगा। भगवान ने कहा :—

सूरज चन्द अग्नि आदि की बड़ी ज्योति उजियारी।
सो प्रकाश न करे आत्म को वह आतम आधारी॥
सो आतम सर्वोत्तम निर्गुण में जग सर्जन हारी।
उसे जान गुरु दीक्षा ले के नित्य रमत अधिकारी॥

नामदेव ने पुन. शका प्रकट की कि मैं आपको पूर्णतया जानता हूं। मुझे कोई अन्य गुरु बनाने की क्या जरुरत है ? एक जन्म में आप हंस थे तब मै सनत्कुमार हुआ। आप नृसिह बने तब मै प्रह्लाद था। आप राम थे तब मै अगद था। आप कृष्ण रूप में अवतरित हुए थे तब मैं उद्धव रूप में आपकी सेवा में था। इस जन्म में भी आप विट्ठल हो तो मैं आपका दास नामदेव हूँ। भगवान ने पुन. नामा को यही कहा कि बिना सत्गुरु किए गति नही है।

यस्य नास्ति गुरुः कश्चित यो गुरु नव सेवते।
स महापातकी ज्ञेयो न स दर्शनमर्हति॥

विट्ठल भने नामा तुझे नहीं आतम का ज्ञान।
पाँच जन्म क्या सहस्र जन्म जाना नहीं कल्याण॥
ब्रह्म रूप चीन्हे बिना जन्म जन्म के मांय।
सत्गुरु किए की तत लखे, तत बिन गति होय नॉय॥

फिर भी भगवान ने नामदेव से कहा कि तुम कल वेणुनाद स्थान पर भक्त सॉवता माली के साथ जाकर बैठना। मै आऊँगा, मुझे पहचाना। यदि तुम पहचान लोगे तो तुम्हे गुरु बनाने की आवश्यकता नही है। अगले दिन भगवान एक मलग फकीर (सॉई) के रूप मे कफनी सेली ऊँची टोपी लगा कर झोली लिए हुए कुतिया (कामधेनु) को लेकर आए। भगवान ने कुतिया को दुहा जिसमें से भैस से भी अधिक दूध निकला। एक फूटे पात्र में रोटी चूर कर खाने लगे। नामदेव को भी भगवान ने रोटी खाने का आग्रह किया। नामदेव उस यवन को छूने से डर कर मन्दिर में भग गए। भगवान ने कहा कि वह यवन मैं ही था। अगले दिन भगवान एक पठान सिपाही के रूप में अस्त्रों शस्त्रों से सज्जित होकर आए। नामदेव ने समझा कि यह मुझे बेगार मे पकड़ लेगा, अतः डर कर मन्दिर मे भाग गये। भगवान ने कहा कि वह पठान मैं ही था। अन्तिम बार भगवान रुक्मिणी सहित मलेच्छ के रूप मे आए। भैसे पर एक लडका लड़की भी लाए। वहाँ अग्नि जला कर हांडी मे मुर्गी डाली, भैस भी डाली, लड़का लडकी भी डाल दिया। फिर भी नामदेव भगवान को न पहचान सके और डर कर मन्दिर मे भग गए कि कही मुझे भी हॉडी में न पका ले।

तीनो परीक्षाओ मे असफल होकर अन्त मे नामदेव ने गुरु बनाने का निश्चय किया। भगवान उसको स्वय अपने साथ लेकर उसकी गठरी स्वय उठा कर, ओढ्या नागनाथ निवासी परम भगवद्भक्त एव ब्रह्मज्ञानी विसोबा खेंचर के पास ले गए। गुरुवार अमृत सिद्धि योग मे गुरु वनाने का निश्चय किया। विसोबा ने सर्व प्रथम नामदेव की सहन शक्ति की परीक्षा ली। वह एक कोढी बन कर शरीर में तेल चुपड़ कर जूते पहने शिवलिंग पर पैर रख कर लेट गया। अबोध नामदेव ने उसे बुरा भला कहा। तव विसोवा ने कहा कि मैं वृद्ध हूँ। मेरे पैर शिवलिंग पर से हटा दो। नामदेव ने उसके पैर जहाँ रक्खे, वही शिवलिंग हो गया। फिर विसोबा ने कहा कि मेरे गले मे रस्सा वाँध कर ले चल, तब दीक्षा दूंगा। फिर विसोवा ने उसे सिर पर बैठाकर ले चलने को कहा। जव नामदेव उसे ढो कर चले तब विसोबा ने अपनी काख मे दो फोड़े पैदा करके उनको फोड दिया जिससे सारी रस्सी (मवाद) नामदेव के कपड़ो पर गिर पडी।

खेचर को आई दया, नामा को दुखी जॉन।
कही आँख निज मीच लो, तुम बालक नादान॥

नामदेव से आँखे वन्द करा कर विसोबा खेचर ने उसे दीक्षा दी। बारह प्रकार से नामदेव के शरीर व मन को तपा कर कचन कर दिया। यह योग साधना का प्रसंग है जो कविवर की सिद्धहस्त एव रस-सिद्ध लेखनी से बेजोड बन पड़ा है। कविवर नाथूराम जी ने धर्म ग्रन्थो के श्रवण मनन के द्वारा योग की ऐसी विधि वर्णित की है जो विरले ग्रन्थो में ही उपलब्ध है। इस प्रसग की पक्तियाँ जिज्ञासु साधको के हितार्थ उद्धृत कर रहा हूं :—

तभी विसोवा नामा को मन खींच शक्ति प्रचारी।
(१) प्राण अपान की गति उल्टा कर पवन रुकाई सारी॥
(२) वह जालन्धर बन्ध इत्यादि आसन लगाए भारी।
(३) अरध उरध की वायु उल्टाई प्राण अपान सग कारी॥
(४) उन्मनि मुद्रा दसवे द्वार जहा आशा तृष्णा जारी।
सिद्ध समाधि चढाय मिटा दी काल बली की ध्यारी॥
उस ब्रह्माण्ड मे लख परमानन्द दुर्गति सकल निवारी।
(५) मूल कमल दलादि वताए सुकमल पत्र हजारी॥
(६) षट चक्र दो अक्षर दिखाए हस रूप अविकारी।
(७) भँवर गुफा में धँसा त्रिवेणी नहा दिए अघहारी॥
(८) मेरु दण्ड या गोल हाट से लौटा दिए उतारी।
(९) हृदय कमल पर लाय दिखाए विष्णु चतुर्भुज धारी॥
(१०) स्वर्ग इक्कीस मृत्युलोक सप्ततल गिरि सरोवर वारी।
शक्ति देवी आदि देव को दरशाए शुभकारी॥
(११) बावन मात्रा ओम छवि दिखलाई प्यारी।
(१२) स्थूल सूक्ष्म कारण लखाए आतम राम आधारी॥

उपरोक्त भांति योगिक क्रिया बतलाकर उसे पूर्ण रूप से दीक्षित करके विसोबा ने पूछा कि हे नामा, मैं कौन हूं और तुम कौन हो ? नामा को अब सही ज्ञान हो गया था अत. वे बोले :—

नामो कहे गुरुदेव से, जग माया मही ख्याल।
एक सच्चिदानन्द सत् गुरु शिष्य झूठा जाल।।

इसके पश्चात् कविवर ने नामदेव के मुख से गुरु महिमा के दो भजन कहलाए हैं। दूसरा पद एक निर्गुन होरी का है जो मीरा तथा कबीर की निर्गुण होरी से किसी भी प्रकार कम नही है :—

सतगुरु मिलकर बरजोरी खिलाई निर्गुण होरी ।। टेर ।।
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तीनों गुणपतियों की पोरी।
उड़त अविद्या छार जिन्हों से चकाचौंध मति बोरी।
भई सो शुद्ध करी मोरी ।। १ ।।
ज्ञान गुलाल दया को केसर कृपा किस्तूरी घोरी।
तुरिया महल में सम पिचकारी रग भर मन पर ढोरी ।।
अचल कीन्हा कमठोरी ।। २ ।।
दश प्रकार के अनहद बाजा सुर तनु रत रस भोरी।
ऐसे अनोखे गान तान पर गन्धर्व सिन्धु किशोरी ।।
वारे गए लाखों करोरी ।। ३ ।।
दीपक में काजर ज्यों दरशे श्याम राधिका गोरी।
नाथू नामदेवजी फगवा पाया रुचि भर झोरी ।।
विडम्बना मेटी कठोरी ।। ४ ।।

नामदेव की विनय सुनि, कहे खेचर खुश होय।
शिष्य कारज तब सिद्ध भया, अब भ्रम व्याप न कोय ।।

नामदेव को ब्रह्मज्ञान होने के बाद बिठ्ठल, नामदेव, खेचर सब मिल कर भोजन करते हैं और एक दूसरे के मुंह मे ग्रास देते हैं। इसके बाद सभी अपने घर जाते हैं, भगवान मन्दिर मे विराज जाते हैं।

एक बार दाम सेठ ने नामदेव को सागोले ग्राम में पैसा उगाहने को भेजा। लौटते हुए माणक नदी के तट पर ग्राम माजरा मे नामदेव ठहरे और रसोई बनाने लगे। भगवान कुत्ते के रूप में आकर नामदेव की रोटियाँ ले भगे। नामदेव घी की कटोरी लेकर पीछे भगे कि भगवन् रोटियो को चुपडाते जाओ। बिना घी के आपका पेट दुखेगा।

ऐसी बात सुन हँसे हरिजी रूप धार प्रभु चारा ।।
बोले नामा से कैसे पिछाणे मेरा पद अविकारा ।।

नामदेव कहे गुरुप्रताप से लखा अलख दीदारा।
यह सुन प्रभु नामा संग ध्याये पुरसे भोजन सारा॥
भक्त और भगवान परस्पर करके बहु मनवारा।
लेते देते ग्रास सरस नर-नारायण अवतारा॥

भक्त नामदेव और सन्त ज्ञानेश्वर साथ साथ तीर्थयात्रा को गए। रास्ते मे नामदेव ने एक ब्राह्मण का मृत शिशु जिवा दिया। नाग नाथ मन्दिर मे शिवलिंग के दर्शन किए और नृत्य करने लगे। उनकी कमर मे बन्धी हुई उनकी दोनो जूतियाँ अगोछे से खुलकर मन्दिर मे गिर पडी। पुजारियो ने नामदेव को धक्के देकर बाहर निकाल दिया। जब उनको पता लगा कि नामदेव एक ब्रह्मज्ञानी सन्त है तो पुजारियो ने उनसे क्षमा याचना की। इसके बाद दोनो भक्त तीर्थयात्रा करते हुए प्रभास, द्वारिका आदि अन्यान्य मोक्षपुरियो के दर्शन कर कोलायत (बीकानेर) मे आए। दोनो को प्यास लगी थी। पास ही एक कुआ था, परन्तु वह सूखा था। ज्ञानेश्वर सिद्धि प्राप्त योगी थे। उन्हो ने लघिमा सिद्धि के द्वारा कुएँ के भीतर जमीन मे प्रवेशकर जल पी लिया और नामदेवजी के लिये जल लेकर ऊपर आ गये। नामदेवजी ने वह जल नही पिया और बोले "क्या मेरे विठ्ठल को मेरी चिन्ता नही है ?" भगवान तो भक्त की सेवा का अवसर ढूँढा करते हैं, फिर ऐसे समय वे कैसे चूकते ? भगवत्कृपा से कुवा जल से भर कर बह निकला। भक्त के प्रेम बन्धन का प्रभाव देखकर ज्ञानेश्वरजी आश्चर्य चकित होकर नामदेव के पैरो पड गए।

एकबार एकादशी के जागरण में एक ब्राह्मण को आधीरात को प्यास लगी। नामदेव जल लेने बावडी पर गए। उसमें एक ब्रह्म राक्षस (प्रेत) रहता था। नामदेवजी सबमे भगवान देखते थे। उन्हो ने उस प्रेत को भी विटठल ही माना और कीर्तन करने लगे।

आए मेरे लम्बकनाथ आदि पुरुष कहाने वाले॥ टेर॥
अनादि निर्गुन निराकार स्वयम्भू हिरण्यगर्भ धार;
बीज ज्यूँ होते वृक्षाकार रूप विराट दिखाने वाले॥ १॥
बलि छलन पावन प्रवीण मांगी तीन ही पंड जमीन,
नापन बढ गए भक्ताधीन इन्द्र के शोक मिटाने वाले॥ २॥
प्रभु के पग पाताल नभ माथ, मोटे कई योजन में हाथ;
भारत अर्जुन सम साक्षात् वपु विराट बनाने वाले॥ ३॥
नाथू नामदेव कृत दास पक्का विट्ठल का विश्वास;
सब घट व्यापक रमा निवास जन की आश पुराने वाले॥ ४॥

उपरोक्त स्तुति सुनकर प्रेत भगवद्रूप मे परिणत हो गया। नामदेवजी के मन में तो वह पहले भी भगवान ही था।

एकबार एक सेठ तुलादान करना चाहता था। उसने नामदेव को दान ग्रहण करने को कहा। नामदेव बोले, "इस तुलसी के तोल जितना धन दे दो।' उस साहूकार

का सारा धन भी कम रहा। इस प्रकार नामदेव ने उस साहूकार का गर्व खण्डन किया यही हाल सत्यभामा का हुआ था। सत्यभामाजी ने भगवान के बराबर सोना तोल कर नारदजी को धन देना चाहा; परन्तु वह सारा धन कम रहा। अन्त मे भगवान एक तुलसी दल से तुल गए थे।

नामदेवजी के चार पुत्र नारायण, महादेव, गोविन्द और विट्ठल हुए और एक कन्या लिम्बा बाई भी हुई। पुत्रो के विवाह क्रमश लाडाबाई, गोडाबाई, येसूबाई और सांखरा बाई से हुए।

उन पुत्रों के विवाह में विट्ठल दिए पट भूषण दानी।
कह नाथू हरिभक्त की महिमा कब तक जाय बखानी ॥

एक भागवती पण्डित परीसा ने व्यास गद्दी से नामदेव की निन्दा की। नामदेव ने कुछ नही कहा। अन्त मे जनता का रुख देकर उसे नामदेव से क्षमा याचना करनी पड़ी। नामदेव ने उसका दिया हुआ पारस पत्थर नदी मे फेंक दिया। फिर नामदेव ने नदी में जाकर कई पारस दिखाए।

नामदेव ने प्रण किया कि सौ करोड अभगपद भगवान की स्तुति मे लिखें। सत्ययुग मे आयु चार सौ वर्षों की थी, जबकि कलियुग में एक सौ वर्ष की आयु है। कहते है, नामदेव ने पद रचना करने मे रातदिन एक कर दिया। कई पद तो स्वय कृष्ण और रुक्मिणी ने लिखे ताकि भक्त का प्रण पूरा हो। फिर दूसरे जन्म में नामदेवजी ने तुकाराम के रूप मे अवतरित होकर ये अभग पूरे हुए। भगवान ने सरस्वती को नामदेव जी की जिह्वा पर बैठाया, तभी अभगपद पूरे हुए और शतकोटि अभगपद रचने का प्रण भी पूरा हुआ।

नामदेवजी ने अपनी भक्ति के बल से कई तथाकथित ब्राह्मणो का उच्च जाति होन का गर्व खण्डित किया। उनके सत्सग से रांका बाका दम्पति भी प्रसिद्ध सन्त हुए। मुक्ता, निवृत्तिनाथ, बटेश्वर, चांग, ज्ञानेश्वर आदि समकालीन भक्तगण एक एक करके देवलोक को सिधाए। तब नामदेव जी ने ब्रजयात्रा की। वृन्दावन मे उन्होंने पद गाकर भगवान को रिझाया। फिर अठारह वर्ष तक पजाब में रह कर हिन्दी तथा पजाबी मे कई पद रचे। उनके पद गुरु ग्रन्थ साहब में भी मिलते है। वहाँ से नामदेवजी हरिद्वार गये और ज्वालापुर मठ का निर्माण कराया। गुरुदासपुर जिले के घोमान गाँव मे ठाकुर-द्वारा बनवाकर भगवान श्री पांडुरग की प्रतिमा स्थापित करवाई। वहाँ आज भी नामदेवजी की चरण पादुकाओ का चिह्न स्थापित है। वहाँ के हस्तलिखित ग्रन्थ मे नामदेव कृत भजन उपलब्ध है।

अस्सी वर्ष की अवस्था मे (संवत् १४०७ श्रावण सुदी १३) नामदेवजी बैकुण्ठलोक को सिधारे।

यह ग्रन्थ कविवर द्वारा सवत् १८८४, पोष के शुक्ल पक्ष मे रचा गया और इसका प्रथम सस्करण सन् १९४७ में "हिन्दू सन्देश मुद्रणालय, जोधपुर" मे मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।





अथ नामदेव मंगल

मंगला चरणम्

दोहा—दाता आदि पुरुष को, ओम रूप सुख धाम।
सिद्ध सदन गज वदन पद वन्दौं आठो याम। १।

कवित्त—श्री राधा रमण श्याम, षट् ऐश्वर्य धाम,
वृद्धि विनायक काम, करता तव मनाऊँ मैं।
विष्णु यश तेज भान, शील शम्भु नन्द ज्ञान,
ब्रह्मा धर्म श्रीमान्, शारदा सराऊँ मैं॥
आदि पुरुष भूमा अंश, चौदह देवता अवतंश,
ब्राह्मण गुरुवर वंश नन्दलाल ध्याऊँ मैं।
कहे नाथु दर्जी दाम, बसे पण्ढरपुरी ग्राम,
ताके भये पुत्र नामदेव गुण गाऊं मैं॥

(तर्ज सभा मे मेरा तूही करेगा निस्तारा)
भजन गणपति

गजानन्द मेरा बेड़ा लगा दीजे पार।
नदिया गहरो नाव पुरानी अटक रही मँझधार॥ टेर॥
श्रीगिरिजा के नन्द विनायक, शिव वैराग्य सुमन सुखदायक,
ब्रह्मा धर्म सभी के सहायक, विष्णु यश अपार॥ १॥
तेज भानु शशि रूप तुम्हारा, भूमा वृद्ध विनायक प्यारा,
भादो सुदी चौथ अवतारा, छऊँ प्रभुताई धार॥ २॥
भगत विनय सुन श्रवण विशाला, औगुन सहन करो दुन्दाला,
रखो जन लज्जा सुन्डाल्या, दन्त दैत्य भयकार॥ ३॥

विघ्न मूल मूसे चढ़ी डाटो विराजो देखि भावको पाटो,
फल चारौं कर से प्रभु बांटो, रिध सिध के भर्तार ॥ ४ ॥
नन्दलाल गुरु की भई मरजी, करे उन्मेद या नाथू दरजी,
पापी पावन सुनिये अरजी, वरणें हरि गुण सार ॥ ५ ॥

कवित्त—हंसा दत्त मच्छ आन, सनकादिक कपिल ज्ञान,
वैराग्य नर नरान ऋषभ कच्छ कृपाल है।
ध्रुवर धन्वन्तरी राम, यज्ञ पृथु यशधाम,
तेज कल्की परशुराम हरी नरसिंह भाल है।
धर्म वराह बुद्ध व्यास नारद हयग्रीव खास,
वामन मोहनी रास श्री को विशाल है।
नवे दरजी नाथूराम कृष्ण छऊँ प्रभुता धाम,
बीस चार रूप नाम दीन के दयाल है।

दोहा—नाथू दरजी बीनवे रहे, डीडवाने शहर।
नामदेव मंगल रचे, करो भगवती महर ॥ १ ॥

राग—मारू-चौबोला

करो भगवती महर पहर सब रहो हिये के माहीं।
शुभगण वर्ण मिलाय छन्द में मुद मगल के ताहीं।
मै अबोध बालक जग जननी पिंगल पढ़ियो नाही।
दग्ध अक्षर दुर्गुण दुःख टालो, पुनि पुनि बन्दौं पाही ॥

अथ कथावर्णन राग—मारू

वन्दौं गुरु नन्दलाल पद, ब्राह्मण कुल प्रकाश।
भक्त मणि पुण्डरीक का प्रथम रचूं इतिहास ॥ १ ॥
प्रथम रचू इतिहास, वास डिंडोरी बन में जाके।
विप्र वश अवतश अंश बलदेव खान सुषमा के ॥ २ ॥
मात सत्यवती नाम गुणायुत जन्नु नाम पिता के।
प्रथम वर्ष कर यज्ञोपवीत सुत दिये चटशाल बिठा के ॥ ३ ॥
सोलह वर्ष मे वेद विद्या पढ़ सीखे धर्म वर्णा के।
वृद्ध होय मायत भोलाये घर का भार परणाके ॥ ४ ॥
था पण्डित पुण्डरीक दिये कछु कलियुग मति भरमाके।
कछु कर्कशा नार मिली खल जोवन रहे लुभा के ॥ ५ ॥

मूरख नार को लाड लडायो इतर जाय घमण्डा के।
नाजुक वन अमीर की बच्ची झाड़ू देत कर थाके॥ ६॥
पुण्डरीक उस नारी कहे दुख दे मायत गुण ढाके।
दरजी नाथू कहता ऐसी नारी लक्षण सकुचा के॥ ७॥

भजन चाल रसिया (तर्ज—माखन की चोरी छोड कन्हैया मैं समझाऊँ तोय)

ईश्वर नहीं किसी को दीजे ऐसी निठुर कर्कशा नार। टेर।
जाति कर्म पतिव्रत पंच-यज्ञ, स्वप्न न पर उपकार।
अपनी ऐस आरामी खातर रक्खे कंत से प्यार। १।
चाकी चूल्हा घर का धन्धा करत पड़े बेमार।
साँची शिक्षा देय गुणी जन लड़ने को हुशियार। २।
सास ससुर से काम करावे ज्यूं नौकर हो लार।
टुक धन्धा में चूक पड़े तो करती कलह अपार। ३।
देश वेश तज नखरा करती नई-नई फैशन धार।
झीणी धोती पहर अदब करे घूंघट बड़े निकार। ४।
भरता को कमजोर पीठ तक करले शठ व्यभिचार।
गर्भ हत्या करती नहीं डरती जनती पर परवार। ५।
कंस समान दोगला जण के देती वंश बिगार।
श्राद्ध, दान, पुन निष्फल जावे देवे पितर धिक्कार। ६।
नार कुपातर के संग से दे सज्जन धर्म विसार।
दरजी नाथूराम कृष्ण पद चीत्यां होय उद्धार। ७।

दोहा—वृद्ध मात पितु हो दुखी, सब घर के कर काम।
तो भी पेट भर अन्न नहीं, बस्तर ढकने चाम।

राग—मारू

बस्तर ढकने चाम याम आठों ही कष्ट में खोते।
पुण्डरीक कर्कशा नारी निर्भय सुख से सोते।
नेक टहल में सुस्ती लख के बोल का शेल चुभोते।
काम न हो तो मरो बूढलो पड़े२ क्यो रोते।

दोहा—बेटा बहू की त्रास से, सोची यह पितु माय।
जीरण तन तजणो भलो, तीरथ यात्रा जाय।

राग—मारू

तीरथ यात्रा जान ठान मन रजा पुत्र से लीनी।
काशी यात्रा कठिन जाय कई संग उन्हीं की कीनी। १।
पुण्डरीक की नार को मालूम पड़त कही मत होनी।
कहाँ गये बुढला बुढली जब कन्थ कथा कह दीनी। २।
बोली नार घर काम करे कुण में नाजुक रंग भीनी।
चलो तीर्थ आपां चढ़ि घोड़ा लेस्यां ऐस नवीनी। ३।
नार कहे चट हो तैयार धन लेके बहु शौकीनी।
चढ़ तुरंग दोऊ चले बेग से पहुंच रसोई कीनी। ४।
अश्व टहल बरतन कुण मांजे बोली नार मलीनी।
हे पति बूढा बूढी को बुलाओ रखो अपने आधीनी। ५।
भोजन सट्टे रहे टहलवा इसमें कहा अमीनी।
दर्जी नाथू कहे पुण्डरीक मान लई परवीनी। ६।

दोहा—पुण्डरीक पितु-मात को, बुला भोलाये काम।
चलत टहल करते वहीं, दम्मत्ति ले आराम।

राग—मारू

दम्पति ले आराम शाम की वक्त मुनि घर आये।
वहाँ कूकट स्वामी का आश्रम डेरा सभी जमाये। १।
बना रसोई भोजन करके निशि विश्राम कराये।
पुण्डरीक को नींद न आई बैठे नैन खुलाये। २।
इतने मे दो स्त्री आई गन्दा वेष बनाये।
कूकट स्वामी की टहल दर्श से हो गये रूप सवाये। ३।
यह अचरज लख पुण्डरीक के मनमें विस्मय छाये।
पूछे हाल नम्रता करके देव्यां खीज हटाये। ४।
दूर रहो निर्दय तैने द्विज कुल में दाग लगाये।
नारी विषय में लोलुप होकर मातु-पिता को सताये। ५।
जग जननी गंगा जमुना हम तुम से पापी न्हाये।
हो मलीन कूकट दर्शन से दिव्य बनी सुख छाये। ६।
कह पुण्डरीक कौन ये कूकट किस पुन बड़पन पाये।
दर्जी नाथू कहे कृपा कर गंग यूं हाल सुनाये॥ ७॥

पद राग रसिया—तर्ज ' माखन की चोरी छोड

माता-पिता ईश्वर ज्ञानी परतक करता महा उपकार॥ टेर॥
सुर दुरलभ मानुष की देही देन पदारथ चार।
जिनके रज-वीरज से ही नौ महिने मे तैयार॥ १॥

दे दूध अचल, मल मूत्र धो, घृणा करें नहीं तार।
कठिन कष्ट से करे पालना कैसा नेह अपार ॥ २ ॥
लख मशीन चाकर सम बरते ऐसे मायत उदार।
उसी कृतघ्नी को कीड़ा, काटे नरक द्वार ॥ ३ ॥
जन्म-जन्म चौरासी में शठ ऋण ना सके उतार।
तीरथ पुण्य किया सोई निष्फल मृत्यु लारो लार ॥ ४ ॥
जननी जनक के उपकारों को समज्यो श्रवण सार।
ले कावड़ में तीरथ कराये नभ मण्डल अधिकार ॥ ५ ॥
पतग दिया ग्यं जरो न ज्यादा कामिनी हेत अगार।
पूर्व भये पुण्डरीक महाश्वेता पर मोय होय खुवार ॥ ६ ॥
दूजे जन्म वैषम्पायन हो फिर उनसे कियो प्यार।
वही महाश्वेता श्रापदे, कीन्हो कीर दुख्यार ॥ ७ ॥
पुत्र नार कई बार मिल जावे मुश्किल जन्म देवार।
दर्जी नाथू कहे पितु मात की सेवा जन्म सुधार ॥ ८ ॥

दोहा—गंग जन्म पुण्डरीक को, कहे कथा विस्तार।
कूकट स्वामी महात्मा, श्रवण के अवतार

राग मारू

श्रवण के अवतार सार सुन पूर्व जन्म की कहानी।
शील रूप गुण नार जिन्हों के सुख था स्वर्ग समानी ॥ १ ॥
त्याग तुच्छ भोगे को आज्ञा अन्ध माया की मानी।
कावड़ में बैठाय पयावे तीरथ कराये ज्ञानी ॥ २ ॥
लगी पिता को प्यास पथ रख चले भरन को पानी।
दशरथ नृप आये शिकार को शब्द वेधना वानी। ३।
श्रवण घट भरता सर छोड़े जनके लग्यो अचानी।
राम उचारत सुनी भूपति, आरत नर की वानी।
निकट आय पहचान्यो राजा लगे बहुत पछतानी।
श्रवण कही होनी सो हो पितु मात की चिन्ता आनी ॥ ४ ॥
प्यास मरत उनको जल पावो जा रघुपति पुनवानी।
आवे जोग तुम्ही फल पावो विधिगत जाय न जानी ॥ ५ ॥
ले घट चले अवध नरेशा अन्धन ढिग चुप छानी।
विन बोले जल पिये नहीं द्विज गुप्त बात प्रगटानी ॥ ६ ॥
पुत्र मरण सुन श्राप दिये हैं, रे शस्त्र-अभिमानी।
मेरे ज्यूं तू सुत वियोग में जाजे स्वर्ग दु:ख दानी ॥ ७ ॥

अन्त समय पितु भक्ति की, इच्छा श्रवण चितानी।
सो कूकट स्वामी हो कीन्ही, भक्ति भयो पूज्य ध्यानी ।। ८ ।।
हम सब तीरथ पतित उधारन ये हमरे कल्यानी।
इनकी ज्यूं तू भक्त मायत का बन, तज कर नादानी ।। ९ ।।
दे सच्चा उपदेश देवियां भई दो अन्तरध्यानी।
दरजी नाथू कहे पुण्डरीक मन ज्ञान भयो निरवानी ।। १० ।।

दोहा—माता पिता के चरण नम, क्षमा करो अपराध।
पुण्डरीक सेवक बने, भक्ति प्रेम अगाध।

राग मारू

भक्ति प्रेम अगाध साध रहे सेवा श्रवण की नांई।
निज घोड़ा पै चढ़ा तात को आप पयादे पांई ।। १ ।।
माता को घोड़ी चढाण कही करो नार सेवकांई।
तिरिया बोली मै अति कोमल प्यादी चलन न पाई ।। २ ।।
जब पुण्डरीक योग शिक्षा से पत्नी को समझाई।
इसी भांति डिडोरे बन में पीछे गये चट आई ।। ३ ।।
उसी स्थान मल्लिका अर्जुन भेख अमृतेश्वर राई।
काशी क्षेत्र में ठहरे आके पा भक्ति प्रभुताई ।। ४ ।।
सर्व तीरथ या कुंडल तीरथ किये कृष्ण कन्हाई।
दैत्य डिडोरा मार बनाये रमणीक बन हरियाई ।। ५ ।।
उस उपवन में भांति-भांति के वृक्ष फूल फल छाई।
मडली सहित पुण्डरीक पधारे भीमा नदी सुहाई ।। ६ ।।
घुरसल नाम ग्राम में बसिया मा पितु सेव सदाई।
इष्टदेव प्रत्यक्ष लख अपना पूजे प्रेम अधिकाई ।। ७ ।।
करा स्नान ठाकुर ज्यू अरचे ले पद तीर्थ सराई।
भोजन जिमा दे पान करावे सैन शय्या बिछाई ।। ८ ।।
पुण्डरीक पितु का पद चांपे मात की टहल लगाई।
द्वादश वर्ष बीत गये ऐसे भई भक्ति की बड़ाई ।। ९ ।।
सब तीरथ दर्शन को जाए मान पवित्र ताई।
गंगा गोदावरी जमुना नर्मदा रही सरस्वती माई ।। १० ।।
देख तपस्या पुण्डरीक की डरे इन्द्र सुर राई।
भीमा शिव के धाम आय के खुश कर विनय सुनाई ।। ११ ।।
हो प्रसन्न महादेव शीघ्र भागीरथी बुलाई।
पुण्डरीक प्रण खण्ड करो तुम गरज-गरज डरपाई ।। १२ ।।
पुण्डरीक डर भक्ति भूले सिधु देवो वहाई।
शिव आज्ञा ले गंगा गरजी तिरलोकी कम्पाई ।। १३ ।।

जल थल स्वर्ग निवासी सारा भये भयभीत अकुलाई ।
पुण्डरीक दृढ़ भक्त मायत का शंक करी नहीं राई ।। १४ ।।
जटाशंकरी देख भक्त का तेज आप सकुचाई ।
ज्यादा गरजूं तो मोय श्रापदे पूरण भक्त दिखलाई ।। १५ ।।
भयकर गंग भाग दोय जन्म का होय करी जन सहाई ।
अब तक जल दर्श वहां परतक नाथू महिमा गाई ।। १६ ।।

दोहा—भक्ति बड़ी पुण्डरीक की, लख नारद ऋषिराज ।
खुद आए घर सजन के, सारण मनके काज ।

वचन पुण्डरीक का—तर्ज : मुकट धारी दर्शन दिखाना पड़ेगा

धन मेरे भाग नारद ऋषि आये ।। टेर ।।
धम धुरन्धर परम पुरन्दर पर उपकारी दयाल कहाये ।। १ ।।
महती वीणा वजे प्रवीणा गन्धर्व गुण से कृष्ण रिझाये ।। २ ।।
पच रात्री ग्रन्थ वैष्णवी रच कई भक्तो को मुक्त पठाये ।। ३ ।।
दरजी नाथू नमः हे स्वामी प्रभु दर्शन के हेतु लुभाये ।। ४ ।।

दोहा—पुण्डरीक कर जोड़ के, नारद पद शिर नाय ।
कैसे कुण्डल तीरथ ये, चन्द्रभागा मुनिराय ।

राग मारू

चन्द्रभागा मुनिराय हुए जिहि भॉय कथा कहो सारी ।
जब नारद लगे कहने सुनो पुण्डरीक भक्त व्रत धारी ।। १ ।।
एक समय इन्द्र गौतम घर गए तिरिया हितकारी ।
भूमि डसन रिपु शशि बन बोल्यो मुनि चले गंग किनारी ।। २ ।।
पीछे छल कर रमे अहल्या सो भई कलकित नारी ।
गंगा हाल कहे गौतम से न्हाय गए चट द्वारी ।। ३ ।।
श्राप दिए ऋषिराज कोप के जब तीनों को भारी ।
पत्थर नार, भग सहस इन्द्र तन, चन्द्र कुष्ट होय कारी ।। ४ ।।
पाय श्राप तीनो घबरा करी मुनि से शिष्टाचारी ।
खमा करो ऋषिराज किसी विध मिटसी त्रास हमारी ।। ५ ।।
कृपा कर मुनिवर वर दीना अहल्या राम उधारी ।
इन्द्र कपट तन ईट तिहारो राजे विट्ठल विहारी ।। ६ ।।
जब होगी उद्धार तिहारी हो दिव्य नेत्र हजारी ।
शशि कुण्डल गंगा तीरथ मे न्हात देह दिव्य धारी ।। ७ ।।

जब सिंधु सुत न्हाये जहाँ भई गंगा चन्द्र आकारी।
चन्द्रभागा नाम जभी से पाये गंग महतारी॥ ८॥
कुण्डल रख यहाँ कृष्णचन्द्रजी मारे दैत्य सुरारी।
याते कुण्डल तीरथ भया है महातम पुण्य अपारी॥ ९॥
फिर कही नारद इन्द्र ईंट तुम रख पुण्डरीक सवारी।
आवे कृष्ण तुम्हारे द्वारे तव आसण देय सुधारी॥ १०॥
इन्द्र ईंट पर अधम उधारण बिराजेंगे अघहारी।
विट्ठल नाम उसी का रखना महिमा होय तुम्हारी॥ ११॥
सुरपत का सब श्राप मिटेगा होय पूरण अधिकारी।
दरजी नाथू कह नारद गए गऊ लोक सिधारी॥ १२॥

दोहा—डिडोरी बन कृष्ण जी, आए थे जिन भाँत।
कथा पुरातन कहत हूं, सुनो सज्जन चित शान्त॥

राग थारू

सुनो सज्जन चित शान्त भ्रान्त तज अद्भुत कृष्ण कहानी।
द्वापर अन्त द्वारका पुरी में बिराजे सारंग पानी॥ १॥
आई राधिका चित्त मिलन की प्रभु अभिलाषा आनी।
भुगत्यो श्राप सौ वर्ष बिछोवो मिली है राधा रानी॥ २॥
व्रज तज हम यहाँ बसे जभी से गोप्यां सब अकुलानी।
अति आतुर बृषभान नन्दनी तपे हिमालय कानी॥ ३॥
गऊ लोक चलने का हुआ समय हे प्रिये सुख खानी।
ये इच्छा अन्तर्यामी की अर्धांगिनी सब जानी॥ ४॥
दिव्य रूप धार कर लीला आई पथ अस्मानी।
आय कृष्ण के जाँघ बिराजी जैसे इन्द्र इन्द्रानी॥ ५॥
प्राण प्रिये लख प्रसन्न भये हरि पूछे कुशल मृदुवानी।
हास विलास कर आपस में रास की बात चितानी॥ ६॥
इतने में रुक्मनी पधारी कृष्ण करी न सनमानी।
नेम विरुद्ध जानि रूष्ट हो चली तप करण भवानी॥ ७॥
डिडोरी बन मे आय बिराजी धरत ध्यान निरवानी।
कुछ दिन बाद कृष्ण को आई याद रमा महारानी॥ ८॥
व्याकुल होय चले ढूंढन को छोड़ भोग राजधानी।
प्रथम हेरी मथुरा गोकुल मिली न प्रिया सयानी॥ ९॥
बाल रूप धर गवाल लेगये कुननपुर सहलानी।
वहाँ न लगा कुछ पता ढूंढते बन डिडोरी दरम्यानी॥ १०॥
छोड गऊ गवालों को वहाँ पर खोजे अकेले वियानी।
मिली एक स्थान पर बठी भीम सुता ज्यू ध्यानी॥ ११॥

योगी रूप धर के योगेश्वर चितकर प्रीत पुरानी।
दर्जी नाथू कहे कृष्ण ज्यू प्रिये मीन बिन पानी ॥ १२ ॥

तर्ज : नाटक की—वचन रुक्मणी का

जाओजी जाओ तुम परनार को निहारन वाले ॥ टेर ॥
लम्बे शिर बारन नाले, भगवां पट धारन वाले,
रावण से स्वांगी छलिया सीता को ख्यारन वाले ॥ १ ॥
साधु बनकर चतुराई, कैसी वृन्दा बहकाई,
बेशक बहुरूप्या तुम हो जादू के डारनवाले ॥ २ ॥
अत्रि की नारी द्वारे, त्यागी बन तीनों पधारे,
कपटी लख कीना तुमको आंचल के चुंघारन वाले ॥ ३ ॥
बली घर बन गये छोटे, भूमि नापन भये मोटे,
खोटे बाना धर माल लोगों के उतारन वाले ॥ ४ ॥
कहता यों नाथू दर्जी, जितने जगमे छल गर्जी,
ठगते साधु बन ढोंगी, पाखण्ड को पुजारन वाले। ५ ॥

पद . तर्ज—मनवा नही बिचारी रे

बदी से डरते रहना रे।
नहीं पाप की माफ नतीजा दिख रहा ननारे ॥ टेर ॥
मूढ़ता रोग अल्पायु निर्धनता नृप फद फहना रे।
ना कही जीवबो सतयुग बाल बेवा पितु डाको डेनारे। ॥ १ ॥
गौतम नार सुरेश सग कियें आधी रैना रे।
शिला ईंट होय सहस्र भगन्दर लगे रज बहनारे ॥ २ ॥
खोये कुटुम्ब धन इज्जत रावण सब भाई वहनारे।
सालगराम कृष्ण किये वृन्दा बाल का लेणारे। ॥ ३ ॥
विप्र मोय मरा घर जिनका श्राप जा लेणारे।
होय सुवरता भोगे ज्यू रवि शशि ग्रहणारे ॥ ४ ॥
चित्रा जार सौ तिरिया बिगाड़ी कर कर सैनारे।
वह दिव्या होय खपा सोपतो रही अचेनारे ॥ ५ ॥
द्विज सुत मरे शूद्र तपसे कह रामायन बेना रे।
धन मर्यादा पुरुषोत्तम दण्ड शूद्र को देनारे ॥ ६ ॥
पकड़ा कसाई को गऊ करसे द्विज ऋण पेनारे।
कटा सदन कर निज पति मारे तिरिया बन धेना रे ॥ ७ ॥
कर्म गति बलवान है प्रेरक नारायेनारे।
वड़े बड़े फल भोगे बुद बुदा नर झट ढेनारे ॥ ८ ॥

दूजा धर्म मद खो मत सत की जहाज का खेनारे।
वेश्या भांड जिमाय डोबका सहारा न लेता रे॥ ९॥
जाति कर्म पति व्रत दया सुधी स्वर्ग का गेणारे।
पर हुन्नर व्यभिचार हत्या दुःख नर्क का सहनारे॥ १०॥
अधम उधारन नाम को सेतु बांध के बहना रे।
तरे अजामिल ज्यूं ही नाथू राम का कहना रे॥ ११॥

दोहा—गूढ़ प्रिये के बचन सुन श्रीकृष्ण मुसकाय।
निज स्वरूप धर कर पकड़, लीनो शीघ्र मनाय॥

राग मारू

लीनी शीघ्र मनाय लाय उर सुन्दर भीम दुलारी।
चले घूमते डिंडोरी बन में पुण्डरीक के द्वारी॥ १॥
पुण्डरीक सेवे मायत ज्यूं रग विभीषण पुजारी।
स्नान कराये गंगा जल से चन्दन गंध लीलारी॥ २॥
बेसन सना नैवेद्य चढावे करे विनय मनवारी।
धूप दीप से करे आरती आचमन गगा झारी॥ ३॥
खाटी हर्डे लोंग इलायची चूरन पान सुपारी।
दे पिता को करे परिक्रमा लख गिरिजा त्रिपुरारी॥ ४॥
सुत भक्ति जोके पितु ध्यान से निगाह पसारी।
हे सुपुत्र तेरे हित द्वारे ठाड़े कृष्ण मुरारी॥ ५॥
देख श्याम छवि पुण्डरीक धरी ईंट इन्दु अगारी।
विराजो इसपर आप हे भगवन करहुं टहल तुम्हारी। ६।
शयन करा पितु की पग चम्पी पुण्डरीक व्रत धारी।
दर्जी नाथू कहे प्रभु ढिग आये करन सत्कारी॥ ७॥

तर्ज—मुकुटधारी . वचन पुण्डरीक का

नमो श्री विठ्ठल अधम उधारा॥ टेर॥
आज घड़ी धन भाग हमारे द्वारे आये हिन्द सितारा॥ १॥
छऊं प्रभुता युत पूरण कला धर दीन बन्धु यदुकुल अवतारा॥ २॥
नारद मुनि के सत्य वचन भये सफल जीवन किये श्याम हमारा॥३॥
घर धन्धा वस देर हुई है माफ करो हरि अवगुण सारा॥ ४॥
पतित तिरे सोई कृपा कीजो दर्जी नाथू-दास तिहारा॥ ५॥

पद—राग तरंग-जगदीश हरे अग०

क्या पतित पावनी शक्ति है गोविन्द तुम्हारे चरनों में ॥ टेर ॥
विरजा पग धोकर गंग भई, तिरलोक में महिमा छाय गई।
महालक्ष्मी की आशक्ति है गोविन्द तुम्हारे चरणों में ॥ १ ॥
जिन पद पकज की धूरि परी, पति श्राप से शिल्ला नार तरी।
खेवटियो खोजी भक्ति है, गोविन्द ॥ २ ॥
उमगी जमुना धोने को चरन शकटासुर मान्यो धन्य मरण।
काली लई निर्भय सुगति है, गोविन्द ॥ ३ ॥
वो लात कूबरी गुण आइ वृन्दा तुलछी हो सुखपाई।
अठचालीस चिन्ह की विभक्ति है, गोविन्द ॥ ४ ॥
पर धेनु छीन नृग दान करे गिरगट होके अन्ध कूप परे।
पद परसत पाई मुक्ति है, गोविन्द ॥ ५ ॥
कह दर्जी नाथू इन्द्रादि सुधरे सुरनर कई अपराधी।
अघजारण ज्योति जुगती है, गोविन्द ॥ ६ ॥

दोहा—वचन पुण्डरीक का सुन खुश भये भगवान।
गगन गिराकर बोलिया मांग भक्त बरदान ॥ १ ॥
पुंडरीक भगवान से रहे यों अर्ज गुजार।
कलि मे कामी जीवों का कहो सुगम निसतार ॥ २ ॥
अरथ शत्रु है धर्म को मुगती के रिपु काम।
वर्ग विचाररु देखिये निश्चय नाथूराम ॥ ३ ॥
गोरां ढिग सिंह मावसी मूषा गणपत धाम।
हरि हर मिले अहि गरूड़ संग रहे खुश नाथूराम ॥ ४ ॥
नीति प्रति सुद्ध भगति से कर ग्रहस्थ मे काम।
सुगम चतुर फल पात है निश्चय नाथूराम ॥ ५ ॥
कह विष्णु पुंडरीक से तुम भक्तन सिरताज।
श्रवण ज्यूं पितु मात को पूजे नित द्विजराज ॥ ६ ॥

राग—मारु

पूजे नित द्विजराज काज शीघ्र होसी सफल तिहारे।
सपूत नर मायत को पूजे नारी कंथ पियारे ॥ ७ ॥
सो नर नारी भक्त शिरोमणि बसही धाम हमारे।
होय प्रख्यात श्रवण अनसूया सम जग बीच सितारे ॥ ८ ॥
तेरे नाम से ग्राम पण्ढरपुर धाम सरनाम हो सारे।
विट्ठल नाम जप अष्ट याम जन तमाम अघ को जारे ॥ ९ ॥

ये तीरथ हो द्वारावती तुल लाखों पतित को त्यारे।
पूजो पांडुरग सदा रख रूक्मणि की छवि सहारे॥ १० ॥
दे वरदान प्रभु गये द्वारका रूक्मणि बचन उचारे।
हमसे राधा का हरि ज्यादा कैसे रखे अधिकारे॥ ११ ॥
बोले कृष्ण वृषभान नन्दिनी सोलह कला शृंगारे।
तेज ज्ञान वैराग्य धर्म यश श्री प्रभुता छऊं धारे॥ १२ ॥
भक्ति रूप लीलादेवी ये अगणित जग विस्तारे।
इनके हिये हरदम बसता ज्यूं दीपक अञ्जन कारे॥ १३ ॥
सुणत सवाल रूक्मणि मन सोचे भगती तेज अपारे।
अब भगती इनसे करूं ज्यादा होय बस सरजन हारे॥ १४ ॥
एक समय रूक्मणि पय ताता कनक कटोरे न ठारे।
शीघ्र पिलाये राधेजी को करके हित मनुहारे॥ १५ ॥
पग चम्पी करने लगी प्रभु को कर मन मोदजु भारे।
दर्जी नाथू कहे कृष्णजी दरद होय सिसकारे॥ १६ ॥

राग—माड

जी चांपू कर कमलों से फिर क्यू होवे राजरे पीर॥ टेर ॥
हरिजन राखे हिरदा माहीं पदपंकज बलबीर।
फिर क्यूं दर्द बताओ सांवरा दासी हाथ अमीर॥ १ ॥
कृष्ण कहे पर हिरदे राखे राधा सुघड़ सुधीर।
ताकुं तातो दूध पिलायो लगे ज्यूं अग्नि-तीर॥ २ ॥
लज्जित हो रूक्मणि यू बिनवे भय लीला तासीर।
पद सेवा की शीघ्रताई में बन गई या तकसीर॥ ३ ॥
दृग सरोज से परस चरन को धोवे अँसुवन नीर।
नाथू के स्वामी भक्ति दीज्यो राधे सम अक्सीर॥ ४ ॥

राग—माड

म्हारा सांवरिया सरदार थाने घणी जी खमा॥ टेर ॥
तामस मत्त महादेव का राजस बस ब्रह्मा।
भ्रगुलता सही हिरदे ज्याने कौन देवं उपमा॥ १ ॥
विष आंचल दिये पूतना जो नी आप अमा।
दुष्ट भाव भजन को कीना सुकृत बही में जमा॥ १ ॥
सीता की निन्दा कर धोबी मथुरा में जन्मा।
पट मांगत कटु भाषत दीनी सायुज मुक्त धमा। ३ ।
सौ गुनाह शिशुपाल को बगसे जीव जोति में समा।
वालमीक ऋषि भये रट के उलटा ररा ममा॥ ४ ॥

उत्तम जग में जीव करी शठता अवतो कलि का समा।
दरजी नाथू की पत प्रभु राखो बारम्बार नमा ॥ ५ ॥

दोहा—खमा खमा कर रूक्मणि, सुख फरमाये श्याम।
सेवा तज अन भवन जा, आप किया आराम ॥ १ ॥
उसी वक्त श्री राधिका, आई मोहन पास।
नूपुर सुन जागे प्रभु, कीना रास विलास ॥ २ ॥
शुभ हो तरण वास में भेली भई सब नार।
ढंग राधे का देख कर, करती हास बिहार ॥ ३ ॥

राग आशावरी—तर्ज : नाथ कैसे गज को फंद छुडायो

आज मोसे कहाजो छिपावो प्यारी,
थारे संग रमे गिरधारी। टेर।
तेज चन्द्र मुख छाय सांबरे नैन चकोर निहारी।
खिल रहे दाड़ यु दत बत्तीसु हो रहे हर्ष अपारी ॥ १ ॥
यश दूध ताल गाल गुल पर फुलअधर बिम्ब छबि न्यारी।
सो रस लीना खीर सांई बन हस कीर अलि भारी ॥ २ ॥
सती आनन्दी दृढ़ वैराग्य कुछ रामेश्वर मदनारी।
लंक जीतन पूजे कर कमलों नख भये चव लीलारी ॥ ३ ॥
बिखरे जरी पट निश्चय खुली है श्री सुन्दरिये पिटारी।
कहा वो धर्म कर पद की मेंहदी ज्ञान गवर दे सारी ॥ ४ ॥
छऊँ प्रभुताई भक्ति कला सोलह सिणगारी।
दरजी नाथू कहे कृष्ण हित आजु अँखिया मतवारी ॥ ५ ॥

भजन ताल दादरा

प्रिया प्रीत की रीत बता दो नई।
ज्यासे रीझे श्री भगवान दई ॥ टेर ॥
तुम राधे जब तप क्या जो किया ऐसा रूप अनूप विधाता दिया।
त्रिभुवन के स्वामी मोह लिया तव आगे नाचे था था थई ॥ १ ॥
कहे बिछुड़ मिली मे अहीर लली, तुम राजसुता छबो संचे ढली,
खिल रही है सभी ज्यु कमल कली, अलि श्याम सदारहे तुमरे मई ॥ २ ॥
सब पटरान्यां कर जोड़ कहे, दृग खजन खुले पिंजरे मे रहे,
लख कृष्ण पिया को शीघ्र गहे फिर कोयल जीभ पै पाल लई ॥ ३ ॥
भणे नम्र भाव वृषभान कन्या, मोय देत बड़ाई सबं जण्यां,
पटराण्यां आठो सिद्धि वण्यां अठ कौशल नेकी खूब छई ॥ ४ ॥

दरजी नाथू यह अरज मेरी, बिनवे पटराण्यों सरण तेरी,
हम सबको बनालो आप चेरी नित देखे अदा प्रीतम की सई ॥ ५ ॥

दोहा

लख विनोद रणवास में, हंस बोले भगवान।
कैसे झगड़ा प्रेम का, कर रही हो सुख मान ॥ १ ॥
खमा २ पटरानियों, कर बोली मृदु बेन।
धन नट खट नटवर तेरा, किन भक्तन सुख देन ॥ २ ॥
कृष्ण कहे सब भक्त तुम, हनुमत नेह निष्काम।
राम बने हम आत तब, सिया बनो कोई बाम ॥ ३ ॥
सतभामा को सुन्दरता, भक्ति का अभिमान।
सुदर्शन के बल घमण्ड, बहु गति के हरियान ॥ ४ ॥

राग मारू

बहु गति के हरियान कृष्ण भगवान गर्व परहारी,
कही गरूड़ को हनूमत आनो हम बने अवध बिहारी ॥ १ ॥
दी आज्ञा चक्कर को ठाड़े रहो द्वार रखवारी,
मेरी आज्ञा बिन आने न देना किसको महल मंझारी ॥ २ ॥
पूछे खगेश गन्ध मादन गिरि जहां कपी बलधारी,
कहे खगेश चलो राम बुलावे बैठो पीठ हमारी ॥ ३ ॥
कहे कपि आप सिधारो मै भी आता लारो लारी,
रूठ गरूड़ पीछा फिर उड़िया नभ पथ पंख पसारी ॥ ४ ॥
सीताराम छबि अभिलाषी बली एक छलांगो मारी,
आत कृष्ण दर रोके चक्र जब किये कंगन कर धारी ॥ ५ ॥
सतभामा बन सकी न सीता बनी श्री भीम दुलारी,
रामसिया के दर्श पाय बजरंग मन हर्ष अपारी ॥ ६ ॥
ले मोदक मारूती चलदिये रखा चक्र कर द्वारी,
नाथू राम भने फिर आज्यो नामा भक्त हितकारी ॥ ७ ॥

भजन राग पारवा—तरज नही सूखे दूध का दन्त

मारुत सुत गुण गान करे निज मुख से श्री भगवान ॥ टेर ॥
महावीर मुद मगल करना सकल अमंगल मोह मद हरना।
केशरीनन्द जतिवर शुभ बरणा, शम्भु अंश हनुमान ॥ १ ॥
रवि सुत दुख भञ्जन परधानी, अंगद संग सिया सुध आनी,
मारे अहिरावण अभिमानी लक्ष्मण जीवन प्राण ॥ २ ॥

कपिवर बाली सुत युवराजा, अवतरे नामदेव सिरताजा,
ताके मगलमय करो काजा पूरव प्रीत पिछान ॥ ३ ॥
दरजी नाथूराम सराता बजरंग जग में उपविधाता,
बल बुद्धि रिद्ध सिद्ध के दाता, परोपकारी सुजान ॥ ४ ॥

तरज ध्याऊँ मैं श्री गणराज निसदिन

मगल मूर्तो काज में फुर्तो सुर्तो से मूर्तो सुजान, निसदिन ॥ १ ॥
दीन के बन्धु किरपा के सिन्धु यश इन्दु तप भान, निसदिन ॥ २ ॥
दु ख में सहायक सुख वर दायक रघुनायक पद ध्यान, निसदिन ॥ ३ ॥
नाथू दरजी करता अरजी, करो मरजी शुभ ज्ञान, निसदिन ॥ ४ ॥

दोहा—लाखों पतित उधार के, कृष्ण गये गऊ लोक ।
बद्री बन उद्धव चले, प्रभु के वचन बिलोक ॥ १ ॥
प्रथम चरण कलियुग धस्यो, धर्म नीति गई छूट ।
मै बड़ बिषयासक्ति से, पड़ी हिन्द में फूट ॥ २ ॥
आर्य्य राज वियोगता, भई सयोगिता नार ।
आसुरी मति पर-मुलक को, भयो भारत अधिकार ॥ ३ ॥
बद्री बन प्रगटे प्रभु, कही उद्धव समझाय ।
धर्म हटावे बादशाह, शिक्षा दो तुम जाय ॥ ४ ॥
गाधी राज के वश में, छींपी वामा सेठ ।
ताकी नार गोणा सती, गर्भ परगटो पेठ ॥ ५ ॥

भजन राग टोडी—तरज : हमारा प्यारा हिन्दुस्तान

सनातन धर्म हिन्द सुखधाम ।
जिनके हित अवतार होत है भगवद् भक्त तमाम ॥ टेर ॥
जाति कर्म पतिव्रत दया शुद्ध भोज धर्म सरनाम ।
पाप मूल हत्या अभक्ष पर हुन्नर जार हराम ॥ १ ॥
दैवयोग समाजी बिगड़े जप व्रत तावो चाम ।
शुद्धि करके रखे एकता उन्नति का इंतजाम ॥ २ ॥
मै बड़ विषयासक्ति अज्ञानी परद्रोही बेकाम ।
घाले फूट भारत मे लागे परदेश्यों का डाम ॥ ३ ॥
भाग हीन विपरीत कर्म कर आर्य हुये गुलाम ।
पूर्व तप बल असुर धनी हो तोड़े धर्म के पाम ॥ ४ ॥
गऊ गरीब दुःखी लख प्रगटावे आतमबली घनश्याम ।
दे शिक्षा असुर को थरपे श्रुति धर्म गुण ग्राम ॥ ५ ॥

धर्म प्रताप स्वतन्त्र मुक्ति भोगे शुभ धन काम।
दरजी नाथू राम कृपा से होवे सब आराम ॥ ६ ॥

दोहा—उद्धव कहो पर हुन्नर से दूषित जाति होय।
नाथ मो कुल उधरे किमि, कहो कथा सब मोय ॥ १ ॥
कृष्ण कहे आफत समय, बचे पर हुन्नर धार।
शुद्ध आचरण दृढ़ रखे, होय न वर्ण बिगार ॥ २ ॥
कोई कहे जाति जन्म से, कोई गुण कर्म स्वभाव।
जन्म से जात की उत्पति, गुण कर्म से ठहराव ॥ ३ ॥
कई बार जाती जन्म से, कई बार गुण कर्म जोर।
गुण जाति को घमण्ड कर, मूढ़ व्यर्थ करे झोड़ ॥ ४ ॥
प्रतिबिम्बा नन्द देखने, सत्‌चित आनन्द रूप।
मकड़ी ज्यूं तन्तु रचे, बने बहुरूप्या जग भूप ॥ ५ ॥

राग मारू

बहुरूप्या जगभूप खिलाड़ी अद्‌भुत्‌ विश्व बनाया।
आदि अंश त्रिगुणातम हरिहर ब्रह्म कहाया ॥ १ ॥
दिग्पति सुरपति सबको ओहदा जुदा-२ समलाया।
विराट गोरे ज्ञान मुख से ब्राह्मण तन उपजाया ॥ २ ॥
वर्ण उत्तमता रहणे खातर प्रभु षट् कर्म बताया।
भुज रज से भये लाल क्षत्रि जन धर्म तीन भोलाया ॥ ३ ॥
उरसे पीत वरण महाजन तीनहूं कर्म सराया।
पगतम गुणसे शूद्र जो कारे नृप के दास लखाया ॥ ४ ॥
चार वर्ण से सरा नहीं जब लोम विलोम विहाया।
नीच मातवर ऊँचतात सग शिल्पी जात सुत ज्याया ॥५॥
ऊँच मांय वर शूद्र व्याह के कुल अछूत फैलाया।
जाति कर्म पतिव्रत दया सुद्ध भोज धर्म श्रुतिगाया ॥ ६ ॥
पर हुन्नर व्यभिचार हत्या खल अशुधाचार बिसराया।
आदि कल्प इसमुजब जातियाँ धर्म सनातन भाया ॥ ७ ॥
द्विज सुतमरे शूद्र तप करता जब था धर्म यश छाया।
निज जाति मर्यादा पाली शूद्र मार रघुराया ॥ ८ ॥
जो निज जाति मान रखे सो छूवे न कर्म पराया।
दरजी नाथू कहे उसीका बढ़ता भाग सवाया ॥ ९ ॥

दोहा—दूजे कल्प की यह कथा, जो उत्पन्न भई जात।
ब्रह्म मरीची पुत्र के, कश्यप सुत विख्यात ॥ १ ॥

राग मारू

कश्यपसुत विख्यात जिन्हों के रवि सुत कला प्रकाशी।
सूर्य सुत मनु राज जिन्हों से सूर्य वश पैदासी॥ १॥
ब्रह्म पुत्र अत्रि के नेत्र से भये चन्द्र छबि राशी।
शशि तारा के सग से ज्याये बुद्ध देव विलासी॥ २॥
बुद्ध व्याहे इला नारी को पुरूरवा सुत भये खासी।
चन्द्र वश रवि वश के क्षत्रि भये आनन्द अभिलाषी॥ ३॥
वरी पुरूरवा परी उर्वशी गन्धर्व लोक निवासी।
उस पुरूरवा नृप कुल भये जन्नू महा तपसी बनवासी॥ ४॥
श्री गगा पीगये चुल्लू भर जान्हवी नाम निकासी।
जन्नु वश भये गाधी कन्या सत्यवती गुणराशी॥ ५॥
सत्यवती बरी रीचक ऋषि सुत जमदग्नि सन्यासी।
जमदग्नि जी बरी रेणुका पूजे पिव ज्यु दासी॥ ६॥
उसी रेणुका के उर प्रगटे परशुराम अविनाशी।
बालपणे वन गये तप करने भये प्रसन्न कैलासी॥ ७॥
हैहय वशी राजा अर्जुन महिष्मति पुरवासी।
दरजी नाथू कहे दिये वर दत्तात्रेय उदासी॥ ८॥

दोहा—सब क्षत्रियों के अधिपति, सुमर दत्त भगवान।
सहस्रबाहु बल सिद्धि ले, भये तेजस्वी महान॥ १॥

राग मारू

भये तेजस्वी महान् ठान अभिमान निडर बन जावे।
विचरे पवन समान सब जगह गति रुकने नहीं पावे॥ १॥
एक समय जमदग्नि के आश्रम गये भागवत गावे।
साढू समझ सत्कार किये मुनि कामधेनु बुलवावे॥ २॥
सेना सहित कीन्ही मिजमानी नृप मन मोद न मावे।
भावी बस चित चल्यो गऊ पर लालच गला कटावे॥ ३॥
कामधेनु छीन के जबरन राजा घमड सिधावे।
आकर निज नगरी में निर्भय गहरी मौज उड़ावे॥ ४॥
परशुराम पै जमदग्निजी योग से हाल पुगावे।
मालुम पड़ते शीघ्र घर आये परशा धनुष उठावे॥ ५॥
कोप चले ज्यूं सिह हाथिन पर महिष्मति पुर जावे।
सहस्र अक्षौहिणि रिपुदल काटे जब नृप बहुत रिसावे॥ ६॥

सहस्त्र बाहु शस्त्र धर भिड़िया ऋषि भट को यों डरावे।
क्यू क्षत्रियों से लड़ता भिक्षुक नाज पुण्य को खावे ॥ ७ ॥
बोले परशुराम करे धाड़ा क्षत्रि वश लजावे।
दरजी नाथू कहे विप्र जब शस्तर हाथ समावे ॥ ८ ॥

दोहा—भये गर्व कर चक्र नृप क्रोधी हैहय राव।
गर्व हारि विष्णु बने, भृगुनंद तेज सुभाव ॥

राग मारू

भृगुनन्द तेज स्वभाव चाव दोऊ भट के रण को भारी।
करे विवाद युग जैसे भिड़े गरूड़ अहिकारी ॥ १ ॥
परशुराम कहे द्विज गऊ हरना पूरी पावणचारी।
बाड़ खेत ज्यू कृतघ्नी भई नीच मति थारी ॥ २ ॥
सहस्त्रबाहु कहे पृथ्वी पति हम वस्तु सकल हमारी।
क्या क्षत्रियों से करे सामना चूरमा दाल अहारी ॥ ३ ॥
दाल चूरमा चखना सूरमा डल चूरमा करूं जारी।
विश्वामित्र बड़ ब्रह्म तेज लख नमै वशिष्ट अगारी ॥ ४ ॥
मार उड़ाय स्वर्णमय चिड़िया वत्तगुरू शिक्षा धारी।
विश्वामित्र वशिष्ठ से हारे प्रभुता सिद्धि अपारी ॥ ५ ॥
प्रभुता सिद्धियां मद हिरनाकुश जब नृसिंह खभ फारी।
श्राप पाप को फल लगे मोड़ो तब मै धरी कुठारी ॥ ६ ॥
विप्रवेष शस्तर पर पेशा करे सो अधमाचारी।
तज स्वकर्म उज्जल कुल दरशे दोगला कलंककारी ॥ ७ ॥
वेशक दोगलो जाणो जब तक तेरी करूं न ख्वारी।
कड़बी ज्यूं सहस्त्र अक्षोहिणि कटि फिर काटूं अबारी ॥ ८ ॥
चून के चाकर हते दो भुजी मै हूं सहस्त्र भुजधारी।
तौसे पोप बीस भुज दशकध घर रखे नित दिवारी ॥ ९ ॥
रावण कामी से द्विज दूजा छेड़ना ओटी अंगारी।
पाप को खडन धर्म को मण्डन नारायण गति न्यारी ॥ १० ॥
नारायन गति मै सब जानूं बलि घर गयो छलगारी।
यहाँ छलछिद्र चले नहीं तुम्हरा करले वार दो चारी ॥ ११ ॥
मेरो वार भये सहस भुजन को आसड़ सके न निकारी।
पहलो वार कर चाव पुराले नहीं हो नर्क द्वारी ॥ १२ ॥
नर्क न जावे युद्ध तीरथ मर शूर वीर बलकारी।
यह लो सहस भुजन को शस्तर समलो परशाधारी ॥ १३ ॥

सह लिया परशा धर अब तुम समलो बेर हमारी।
ये ले काटी बबूल डाल ज्यूं घमडी भुजा हजारी ॥ १४ ॥
भुजा कटी तो लड़ूं मस्तक सं ज्यू महागज बल धारी।
झपट केशरी ज्यूं धर परशा लिये शठ शीश उतारी ॥ १५ ॥
मरे सहस्त्रबाहु सब क्षत्रिय भागे कुल परवारी।
दरजी नाथू राम गऊ ले पहुंचे अपने द्वारी ॥ १६ ॥

दोहा—भृगुनन्द पितु जमदग्नि को, कामधेनु दी लाय।
सहस्त्र बाहु दल हनन को, दीनो हाल सुनाय। १।
सुनत वचन करुणा मय, जमदग्नि कह आप।
अल्प गुनाह से क्षत्रियकुल, हत सुत कीन बहु पाप ॥२॥
क्षमा शील ब्रह्म ज्ञान से, ब्राह्मण पूज्य कहलाय।
पुत्र क्रोध वश अघ कियो, शुद्ध हो तीरथ जाय ॥ ३ ॥
आज्ञा पितु की मान के, चले तीरथ परशुराम।
प्रायश्चित अकरम को करे, फिर २ हरि हर धाम ॥४॥
पीछे सहस्रार्जुन सुत, लख अवसर कर रीस।
निश्पापी जमदग्नि का, काट ले गये शीश ॥ ५ ॥
तीरथ कर परशुरामजी, आये अपने द्वार।
पिता मरण को हाल सुन, किन्हों क्रोध अपार ॥ ६ ॥

राग—मारू

कीन्हों क्रोध अपार धार प्रतिज्ञा धनुष टंकारे।
मानो प्रलयकाल में शम्भु ज्वाल के नेत्र उघारे ॥ १ ॥
मात रेणुका छाती पीटी इक्कीस बेर पुकारे।
इक्कीस बेर निक्षत्रीकरण का मन दृढ सकल्प धारे ॥२॥
सोध २ के खल-क्षत्रियन को बिना मौत ही मारे।
करन निक्षत्री कुरुक्षेत्र रक्तकुंड नव हृद कीने भारे ॥ ३ ॥
बृहत् रामायण लिखा राम के, भय से क्षत्री हारे।
भाग शरण ली च्यवन ऋषि को क्षत्री वरण बिसारे ॥४॥
च्यवन ऋषि वस्तर सूई दे, सीवण बैठाये द्वारे।
परशुराम लख दर्जी क्षमा करी, वह क्षत्रि कुल सारे ॥५॥
हरिवश पुराण में देखो सहस्रबाहु दुलारे।
बचे पांच ये शूरशेन और शूर भी भय के मारे ॥ ६ ॥
धनुष बाण की गज कैंचियाँ, सूई बनाय बिचारे।
बकदालब्ध मुनि आश्रम जा छिप रहे उनके सहारे ॥७॥
पता लगाये परशुराम जहां ले परसा ललकारे।
बोले भयातुर ना क्षत्री हम छिपे है सीने वारे ॥ ८ ॥

ज्यादा त्रास करी भृगुनन्दन बकदालभ्य फटकारे ।
उसी बंश के दरजी नाथूराम के यश विस्तारे ।। ९ ।।

भजन : तर्ज—भजले राम नाम की बानी : बचन बकदालभ्य ऋषि का परशुराम से

धन बल विद्या रूप अभिमाना । टेर ।
इन्द्र सहस भग घटे बढ़ शशि ग्रसे राहु भाना ।
बजरग भूल कुबेर लंक बिन भये सूकर काना ।। १ ।।
हिरणाकुश हिरण्य मधुकैटभ सहस बाहु राना ।
हम हर कर धन दाम छोड़ गये नाम ना निशाना ।। २ ।।
शम्भू अफसर काल सिपाही यमपुर बड़ थाना ।
पकड़ा जायगा मोड़ा बेगा सभी देव दाना ।। ३ ।।
ब्रह्म गरीबनिवाज अनादि नीति निधाना ।
एक खिलाफ मुसायब हो तो करदे जुरमाना ।। ४ ।।
एक से एक अधिक चतुरानन रचे तेजवाना ।
नमिया बगस गर्व्या छीने प्रभुता भगवाना ।। ५ ।।
अर्जुन से कुल भी क्षत्रिय हरि चन्द पुण्यवाना ।
भले बुरे नृप का जग में यश अपयश रहजाना ।। ६ ।।
काम क्रोध मद लोभ मोह वश आपो न भुलाना ।
जान पराया का गल काटे पडे खुद कटवाना ।। ७ ।।
भये क्षत्री छीपा दरजी नाथूराम ध्याना ।
तो भी ख्वारे क्षत्री कुल हो तब रिपु बलवाना ।। ८ ।।

दोहा—तप बल बकदालभ्य के, लख समझे भृगुनन्द ।
शान्त होकर चल दिये, गिरि मयन्द सुखकन्द ।। १ ।।
त्रेता युग उस क्षत्रिय से, छींपा दरजी वश ।
गाधी कुल वर यदु भये, सोई वश अवतंश ।। २ ।।

राग—मारू

सोही वंश अवतंश जिन्हों में अश प्रभुको आयो ।
यदु ने रेड़े करण सेठ जो भाट वही बतलाये ।। १ ।।
गाधीपुर कन्नौज से चल श्रीक्षेत्र कनाड़ निकटाये ।
कृष्णा नदी किनारे कोले नरसिंहपुरी बसाये ।। २ ।।
नरसीब्राह्मणी ग्राम रहे कपड़े का विणज चलाये ।
उस यदु के थी पतिव्रता नारी ताके यश जग छाये ।। ३ ।।
यदु सेठ भक्तवोला खूब विट्ठल पगध्याये ।
विट्ठल दया से पुत्र भये हरि सेठ ज्यूं नाम धराये ।। ४ ।।

बड़े होय हरि विद्या पढ हरि भजन चितलाये।
हरी भक्त की बुद्धि मानी गुण चिमन सेठ सराये ॥ ५ ॥
चिमन सेठ सौ नट के अपनी कन्या उसे विवाहे।
नारी सती बायजा बाई पति पद नेह लगाये ॥ ६ ॥
होत विवाह हरी सेठ का हरि पद ध्यान लगाये।
चले असाड़ में विट्ठल यात्रा चन्द्रभागा में न्हाये ॥ ७ ॥
पाण्डुरग पुण्डरीक के दर्शन कर मन में हरषाये।
रहे पूनम तक प्रभु उत्सव में आ निज पुर सुख पाये ॥ ८ ॥
या बिध काती अषाडी यात्रा दृढ़ व्रत कर गुण गाये।
पितु यदु सेठ गये सुरपुर को भई नार सती तन ताये ॥ ९ ॥
मायत बिछोवा हरी सेठ लख मन में बहु अकुलाये।
दई गत समझ धीर धर घर का धर्म से काम चलाये ॥ १० ॥
कछु दिन बाद पुत्र भये जिनके नाम गोपाल कढाये।
पांच वर्ष को पठा चटशाला विद्याभ्यास कराये ॥ ११ ॥
वर्ष पन्द्रहवें सुत गोपाल का हरष से विवाह कराये।
माधव सेठ कोडे की कन्या गगा सग विवाहे ॥ १२ ॥
कछु दिन बाद बायजा बाई स्वर्ग गई यश छाये।
हरि सेठ ना फिकर किए कुछ प्रभु पद में चितलाये ॥ १३ ॥
सुत गोपाल को घर दुकान का सभी काम सम्हलाये।
भये गोपाल को दो सुत गोविन्द दूजें रघु कहाये ॥ १४ ॥
हरि सेठ दो बेर यात्रा करते साल सवाए।
वृद्ध भए जब शिशु गोपाल को कहि ये नेम कराए ॥ १५ ॥
सुत बरजत खुद गए पण्डरपुर हरिपद शीश नवाये।
कहे नाथू दरजी हरि सेठ जो अन्तिम शब्द सुनाये ॥ १६ ॥

भजन—राग : येमल की ठुमरी

बन्दौ पांडुरग निशदिन ॥ टेर ॥
छबि निरखत मेरा मन मोहित हो, वारूं कोटि अनग, निशदिन ॥ १ ॥
शिला ईंट से अधम उधारण, पदपकज भई गग, निशदिन ॥ २ ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, पटभूषण घन अग, निशदिन ॥ ३ ॥
कहे नाथू दरजी हरि सेठ ज्युं मिले हरि रूप उमग, निशदिन ॥ ४ ॥

दोहा— भक्ति लख हरि सेठ की, मिले ज्योति में ज्योत।
यात्रियों के अचरज भयो, धन छीपी जन मौत ॥ १ ॥
हरि सेठ की मृत्यु का, हाल यात्री आय।
कहे गोपाला सेठ को सुन, दुःख भरे विलखाय ॥ २ ॥

फिर गोपाल बस लोभ के, गये विट्ठल को भूल।
धन माया को सग्रह कर, रहे विणज में फूल ।। ३ ।।
कछ्छ दिवस के मांयने, निज नारी लघु पूत।
दोऊ स्वर्ग सिधार गये, प्रभु माया करतूत ।। ४ ।।
जब निज पितु के बचन को, चिंतवन कर गोपाल।
विट्ठल रूठ ये दुःख दिये, अब भजहूं सब काल ।। ५ ।।
विद्या पढ़ा गोविन्द को, किये बहुत हुशियार।
रेणक भोजक की लाडली, रासा बाई नार ।। ६ ।।

राग मारू

रासा बाई नार द्वार सुसराल में आय सियानी।
सब घर काम सम्हाल करे हित धर्म चले कुलवानी ।। १ ।।
सेठ गोपाल पुत्र एक गोविन्द की लख बुद्धिमानी।
धन्धा सौपकर सब दुकान का आग बने हरि ध्यानी ।। २ ।।
गोविन्द सेठ करे काज नीति से, पूजें प्रभु नित ज्ञानी।
दो सुत भयऊ बड़े नरहरी नाम सेठ गुणवानी ।। ३ ।।
लघु शिशु का था नाम जिवाजी, सो शिशु भजे बिनानी।
मन्दिर ठाकुर बना माटी के काढ़ जुलूस निशानी ।। ४ ।।
पत्थर झांज बजाय पालकी सजा भजे प्रभु बानी।
बड़े भये सब विद्या पढ़ली, लख गोविन्द खुशियानी ।। ५ ।।
आत दीवाली चले पढरपुर, कुटुम्ब सहित को ठानी।
तब तिरिया नटी विट्ठल यात्रा, निज तन व्याधि जानी ।। ६ ।।
आरत रासा बरजे पति को, सो गोविन्द नही मानी।
बड़े पुत्र नरहरि सग ले गये, पूजे सारग पानी ।। ७ ।।
तब रासा ले गई जीवा को, गई पीहर हैरानी।
थोड़े ही दिन बाद आ गई, उसीकी मृत्यु भयानी ।। ८ ।।
खबर भई गोविन्द सेठ को, दैव गती बलवानी।
आ सुसराल दोऊसुत लेकर धाये पुर अगवानी ।। ९ ।।
कुछ दिन बाद दोऊ पुत्रन को, व्याहे बड़े ठिकानी।
मुरदजी माणक की लिम्बा कन्या, शील गुण खानी ।। १० ।।
सो व्याही नरहरि कुंवर को, भई बड़ी सेठानी।
पाण्डे कामेजी की पुत्री, जीवाजी को बिहानी ।। ११ ।।
पिता साथ पुण्डरीक यात्रा सुत नरहरि पुन्यवानी।
लख उच्छव काती आसाढ़ मे विट्ठल दर्श लुभानी ।। १२ ।।
कुछ दिन बाद नरहरी सेठ के दाम पुत्र सुख दानी।
उग्रसेन अवतार हरी जन मायत भक्त विज्ञानी ।। १३ ।।

विद्या पढ़ी प्रवीण भये निज धर्म नीति पहिचानीं।
कुटुम्ब सहित नरहरी यात्रा, करन गये परवानी ॥ १४ ॥
बीमार नार भई वारस को पति हरि चिन्ता आनी।
दाम सेठ शिशु को दे शिक्षा दम्पति भये निर्वानी ॥ १५ ॥
हो चिन्तातुर दाम सेठ गये, घर मामा सुनो कहानी।
दामाजी को ले गये आकर, दु ख की बात भुलानी ॥ १६ ॥
दामा सेठ को सुघड़ भक्त लख, गोमा सेठ कल्यानी।
सौदागर निज कन्या गोणा, व्याह दिये धनवानी ॥ १७ ॥
अल्प दिवस में भई कन्या, बाई शील गुणवानी।
फिर सुत की अभिलाषा कर बसे, पढरपुर रजधानी ॥ १८ ॥
शिशु हित पूजे विट्ठल देवा, ठूंठे दया निधानी।
गोणा गर्भ उद्धव जी आया, भगति, ज्ञान, बखानी ॥ १९ ॥
सुन कहे पुरजन इन उर हरिजन, यह है भक्त निशानी।
कहे नाथ दरजी कुल पावन जाने संत भवानी ॥ २० ॥

दोहा—जननी जने तो भक्त जन, जैसे ध्रुव प्रह्लाद।
सातौं कुल तारे तिरे, जग माने आह्लाद ॥ १ ॥
सुख सम दुःख दे गर्भ में, मा शिक्षा ले सीख।
पैर पूत क्या पालने, जाय पेट में दीख ॥ २ ॥

भजन (तर्ज : जय रघुराई जय जय)

रिझ कर निज वर गर्भवती हो जिनकी जग में जय २ ॥ टेर ॥
पत हित जपती द्रौपदी वारी, अनसुइया पत राखी भारी,
दत्त गण ब्रह्म ज्योति में नारी लय लय ॥ १ ॥
सीता को सुवरन ज्युं ताई, कुल समेत खपे रावण राई,
लव कुश सुत की बड़ी बड़ाई छय छय ॥ २ ॥
पर नर अंश कस जनमावे, जिन से बंध्या भली कहावे,
जार शिशु से प्रण हो जावे खं २ ॥ ३ ॥
क्या विप्राणी क्या क्षत्राणी, क्या सेठाणी क्या शूद्राणी,
पति व्रत पाले सोई भवानी है है ॥ ४ ॥
सुहागिन वद हो बेवाशिल्ला, वेश्या सुख ले जन जन खिल्ला,
वर वर जम दे घाणी पिल्ला, भय भय ॥ ५ ॥
दरजी नाथू कहे विज्ञानी, व्यभिचारी नर नारी अज्ञानी,
पुनि २ मरते पाय जवानी, वय वय ॥ ६ ॥

दोहा—गोदावरी गंगा निकट गगा खेड़े ग्राम।
शूद्रवरण हरिजन बसे, जांका दम्भा नाम ॥ १ ॥

राग—मारू

जांका दम्भा नाम करूड़ीं बाम पतिव्रत धारी।
दम्पति भगवत भक्त बड़े ज्यू विदुर, विदुर की नारी ॥ १ ॥
बीते वर्ष अनेक, पण्डरपुर करत जातरा भारी।
सुत बिन दुखिया होय गई विट्ठल से अर्ज गुजारी ॥ २ ॥
पांडुरग स्वप्न में वर दिये होगी एक दुलारी।
वो कन्या है जनम-२ की पूरी भक्त हमारी ॥ ३ ॥
सो तेरा कुल त्यारे जिनकी पूर्वकथा सुन सारी।
सतयुग पद्मिनी नाम की दासी थी प्रहलाद पियारी ॥ ४ ॥
त्रेता युग भई मन्थरा, अगद जन हितकारी।
द्वापर मे कुब्जा भई सो उद्धव की शिक्षा धारी ॥ ५ ॥
अब कलियुग में जन्ना बाई नामदेव के द्वारी।
भक्त दर्श सत संग सेव से जाये दुविधा सारी ॥ ६ ॥
नामदेव जन्ना देवी का परम्परा व्यौहारी।
समझ भक्त पहुंचाना वहां ही महिमा बढ़े तुम्हारी ॥ ७ ॥
प्रभु आज्ञा खुश भये दम्भा, कन्या भई अवतारी।
बड़ी होत घर दाम सेठ को अर्पण करी कु वारी ॥ ८ ॥
दाम सेठ कर पालन पोषण कन्या तुल्य निहारी।
नाथू दरजी नामा पद से, जन्ना आय पधारी ॥ ९ ॥

दोहा—दाम सेठ का बामका, उत्तम ऐसा वंश।
लिखी भागवत में कथा, पुरबा कुल अवतंश ॥ १ ॥

राग—मारू

पुरवा कुल अवतश बड़ी तेजस प्रसूती चाली।
वो पीढ़ी दुष्यन्त भये नृप, राज-ऋषि बलशाली ॥ १ ॥
विश्वामित्र सुता शकुन्तला महारूप गुण वाली।
गन्धर्व विवाह कर सुत जनवाये, भरत सिंह बलशाली ॥ २ ॥
भरत प्रतापी भूप यज्ञ कर, भरत खण्ड प्रतिपाली।
ताके सुत भए भरद्वाज तव, चले गोत्र परणाली ॥ ३ ॥
भरद्वाज पीढ़ियो में क्षत्री, ब्राह्मण भए शुचाली।
गोमा सेठ भये इस वश में वर उमा मत वाली ॥ ४ ॥
गोमा सौदागर की कन्या गोणा विधि घड ठाली।
दाम सेठ पति अंश युक्त सुत, दीन्हो भेज वनमाली ॥ ५ ॥

सम्वत तेरह सौ बीस सात, पर भयो वर्ष विशाली।
थी कार्तिक सुद एकादशी रवि वारी सूर्य उजाली।। ६ ।।
रोहिणी नक्षत्र अरु शुभ मोहरत थे, जन्मे भक्त कृपाली।
सनतकुमार अवतार जान के, आये देव दिग्पाली।। ७ ।।
गायन करे गन्धर्व रम्भा बजा दुन्दुभि ताली।
कहे नाथू दरजी कुल दरशे, पूर्ण भई खुशियाली।। ८ ।।

भजन राग टोडी—तर्ज : हमारा प्यारा हिन्दुस्तान

सवागन सती की कूख निहार।
उत्तम नामदेवजी जन्मे, क्षत्री छींपा उदार।। टेर।।
नाभा कृत मेना जन्म नाम को, कह्यो चरित्र सार।
ग्रन्थ मराठी से थे अनभिज्ञ भक्तमाल कर्त्तार।। १ ।।
विधवा सुत हरी अंश से, वरणे टीका कार।
चन्द्र मैथिलो नाता खण्डन बातां कही विस्तार।। २ ।।
पूर्व पति तजि दुखी कु वरी भई विध्या यों नार।
अधम बाल बेवा नियोग सुत, यू प्रभु तोड़े कार।। ३ ।।
नामा जन्म ग्यारासौ साके पतिव्रत को अधिकार।
सम्वत् सतरासौ टीलाजी पुर्नविवाह प्रचार।। ४ ।।
देह नामदेव आतम सुमति, मरे पति अहकार।
याते घट में ब्रह्म ज्ञान हो नामदेव अवतार।। ५ ।।
सज्जन कही इसी कथा को, कर भावार्थ विचार।
झिवरी कुन्ती सी प्रसूत कह, बढ़े कलुष व्यभिचार।। ६ ।।
भक्ति विजय में लिख दरसायो, नामा सीप मंजार।
सीपां में मोती ज्यूं समझो, छींपा कुल सरदार।। ७ ।।
नन्हे लाल बलदेव जी वर्मा जबल पुरी निर्धार।
शोध मराठी ग्रन्थ किए शुद्ध हिन्दी में तैयार।। ८ ।।
दाम सेठ के गाधि गोत्र भरद्वाजी गोणा नार।
दम्पति योग विट्ठल कृपा से, प्रकटे सनतकुमार।। ९ ।।
नभ में सुरगण आंगन पुरजन करते मंगलचार।
कहे नाथू दरजी कुल पावन, नाम भक्त बलिहार।। १० ।।

भजन—तर्ज : पीलो रगाओजी वचन जन्ना दासी का

आज श्री विट्ठल तुमको ढूढे सेठ दामाजी, खुशियां मनाओजी।
शुभ मुहूर्त उगो सूरज सोना को अब तो, शया से जल्दी उठो सेठ, दामाजी।। १ ।।
जागे पूरब पुन्य वांटो बधैया धन मोहरा को भर भर मूठो सेठ, दामाजी।। २ ।।

हां घी शक्कर गिरी गूंद मंगावो, लाडु सधाओ सठवा सूठ सेठ, दामाजी ॥ ३ ॥
गीगा के नानेरे पगल्या भेजो सेना सरीसो पंथी लूटो सेठ, दामाजी ॥ ४ ॥
कहे नाथू दरजी कुल पावन धन गंगा जल बूढो सेठ, दामाजी ॥ ५ ॥

भजन ढोलकियो का ढाढी से

ले चलो ले चलो पिया दिन आज बधाई को है भलोजी ॥ टेर ॥
मचल रही ढाढणियां सारी नारी सब मिलकर भारी हल्लो जी ॥ १ ॥
दाम सेठ आनन्द भयो लेस्यां बधाई बाजू बध छल्लोजी ॥ २ ॥
जच्चा रो जरकस वेस ही लेस्यां और दुशालो मखमल रो जी ॥ ३ ॥
चन्द्रहार व तिमण्यो लेस्यां प्यारो शोभा देवेलो म्हारो गलो जी ॥ ४ ॥
कह नाथू छींपा कुल हरिजन प्रगट भये सोई फूलो फलो जी ॥ ५ ॥

तर्ज—हे प्रभु आनन्द दाता

दाम सेठों के द्वारे भक्त बधैया बहु बटे।
क्या कमी किस बात की श्री पांडुरग जिसके पटे ॥ टेर ॥
नाई दाई डाढ़ी ढोली भक्त बिरुदावलि रटे।
चाय चिते सो पाये धन की बांधत पोटां फटे ॥ १ ॥
कीर्ति सुन आये भिक्षु वीर दानी ना हटे।
धूम घणी दे ऊम मोरा सूम लख दिल में कटे ॥ २ ॥
इन्द्र विश्वामित्र वावन विप्र जाचक बन डटे।
शिवि वलि हरिश्चन्द्र दधीची कर्ण से नाहीं बटे ॥ ३ ॥
धर्म को रस गहन लखणो लम्पटि सट् जीभ सटे।
कलि में विक्रम से यश जगदेव लेंगे सिर सटे ॥ ४ ॥
आय नइया सिन्धु जल बिच फेंकता कांई घटे।
नहीं फेंके तो कृपण की किश्ती ने देवे उलटे ॥ ५ ॥
पूजे न्हावण बैठी गोणा, ओढके पीलो पटे।
गोद भरी जच्चा जसोदा मोद भरी सी छवि छटे ॥ ६ ॥
नार मंगल चार कर सुत सूरज उदये प्रगटे।
कहत नाथू छींपा कुल पावन भये, पातक मिटे ॥ ७ ॥

दोहा—न्हावण विधि से पूजिया, किये दसोठण दाम।
पटरस भोजन जीमिया, खुश हो हेती तमाम ॥ १ ॥
नाम करण करवावते, वड़ उत्सव के साथ।
पण्डित टेवा बांच के, बोले रटगण नाथ ॥ २ ॥

जन्म लगन नक्षत्र शुभ, ग्रह इष्ट बलवान।
सत्य कोटि प्रभु पद रचे, करे खुशी भगवान॥ ३॥
सुर वर दानी शिशु भये, नामदेव धर नाम।
नाम रटो जगतारने, नाम दिव्य गुण ग्राम॥ ४॥
नामदेव का अघ हरे, नाम कलि सुख धाम।
नाम प्रताप दिखावसी नाम होय सरनाम॥ ५॥
नवें वर्ष में लगन हो, आयु चौगुनी बीस।
परच्या दे नृप मद हरे, गुरुजन शुभ आशीष॥ ६॥
दामा घर उत्सव यहां, सुर मुनि बामा जोय।
गरभी कामा फिरत सब, सुत नामा सो होय॥ ७॥
दाम सेठ प्रसन्न भये, सुन द्विज बचन प्रमान।
विदा किये खुश विप्र को, दिये घण धन दान॥ ८॥
नाम देव दो वर्ष के, बोले विट्ठल नाम।
पांच वर्ष के पढ़न को, गये गुरु के धाम॥ ९॥

राग मारू

गये गुरु के धाम भक्त निष्काम बसे चटशाला।
कहे गुरु लिख ओम् नमः सिद्धि पाटी पर तुम लाला॥ १॥
नाम देव श्री विट्ठल लिखत ही, खिजे गुरु तत्काला।
क्यों ओम् नमो सिद्धि नहीं लिखता हट करते बाला॥ २॥
तब नाम कहे सिद्धि है ओम् नमो विट्ठल कृपाला।
गुरु सट ताके शासन देने भये सवाला॥ ३॥
नामो कहे गुमान करे क्यों ताड़न हो उजियाला।
तभी अविद्या मिटत ज्ञान हो दरशे घट गोपाला॥ ४॥
सुन भक्त के भाषण दूजे काम गये तज शाला।
पीछे सब शिशुवन को नामा लगे जपावन माला॥ ५॥
प्रह्लाद भये जब दैत्य सुतन को पाठ राम का घाला।
सुन हिरनाकुश सुत को ताड़े तजे न दीन दयाला॥ ६॥
सात वर्ष के हो नामा जी बजा स्वर्ण की ताला।
विट्ठल नाम का करे कीर्तन होय प्रेम मतवाला॥ ७॥
सुनी तोतली बानी पांडुरंग मन माहि खुशियाला।
नित पद गाते भये प्रभु आगे नृत्य करे कर झाला॥ ८॥
भयो हर्ष हिय पिये हरी यश अमृत का प्याला।
कह नाथू छींपा कुल भूषण हो नामा भक्त विशाला॥ ९॥

(तर्ज—जय रघुराई जय जय) वचन नामदेव का

श्रीधर गिरधर धरणीधर हुरी जय बनवारी, जय जय ।। टेर ।।
माधव श्री मधुसूदन मुरारी यादव केशव कृष्ण बिहारी,
काली मद मर्द कसारी जय जय ।। १ ।।
नारायण निर्गुण अविकारी, परमेश्वर ईश्वर अघहारी,
पांडुरग विट्ठल शुभकारी जय जय ।। २ ।।
रुकमण रमण लीलाधारी, वासुदेव विश्व आधारी,
विष्णु विश्वम्भर अधम उधारी, जय जय ।। ३ ।।
भूमि भगवन भव भय हारी, पूर्ण कला प्रभु जग विस्तारी,
नाथू दरजी हे बलिहारी, जय जय ।। ४ ।।

दोहा—नामदेव हरि कीर्तन करत विट्ठल के द्वार ।
चित चाही कोई शोभनी, हुये आनन्द अपार ।। १ ।।
अन्तर्यामी भक्त की, मनो कामना जोय ।
बालक बन सग नाचते, परमानन्द गये होय ।। २ ।।
नाम देव हरि हरि जपे, हरि हरि रटते जाय ।
आप नांव अपणो भज्या, हमतो है देह मांय ।। ३ ।।

वचन विट्ठल का—इसी चाल मे

विषधर शशिधर, गगाधर हर जय मदहारी, जय जय ।। १ ।।
त्रिलोचन त्राता त्रिपुरारी, त्रिताप मोचन त्रिशूलधारी,
त्रिगुणातम त्रिलोक उधारी, जय मद हारी जय २ ।। २ ।।
शिवशंकर स्वामी शुभकारी, भुजग भूषण अंग हजारी,
बाघम्बरी विभूति सवारी, जय विषधारी जय २ ।। ३ ।।
श्रीमधुसूदन अमर अधिकारी अजर अखंड ज्योति उजियारी,
भृ ग भूतेश्वर जन भयहारी, जय शशिधारी जय २ ।। ४ ।।
भुवनेश्वर भगवन ओकारी, विश्वनाथ कैलाश विहारी,
नाथू दरजी है बलिहारी, भव भय हारी जय जय ।। ५ ।।

दोहा—नाम कहे हरि बाल से, मैं रटूँ हरि हरि श्याम ।
तुम हर हर हर रट रहे, सो किसका हर नाम ।। १ ।।
नामदेव से कहे हरि, हर महेश महादेव ।
सुर नर मुनि ससार सब, करत इन्हों की सेव ।। २ ।।
नाम कहे यह इष्ट मम, बतलायो है मात ।
वह तुम्हरो को इष्ट है, बतलाओ सच बात ।। ३ ।।

कहे हरि मेरा इष्ट तो, नील कंठ भगवान।
अल्प भजन जन करत ही, शीघ्र देय वरदान॥ ४॥
नामो कही जब इष्ट तब, छोड़ रटो मम इष्ट।
तब कहे हरि तेरा हरि, ना शिव से परतिष्ठ॥ ५॥
चीर चोर गोपी रमण, माखन लूटे श्याम।
शिव शम्भु मद हारी है, पूरण जगके काम॥ ६॥
हरि मुख निन्दा सुनत ही, नामदेव गये रूठ।
गुरू द्वार जा बैठिया फेरी निन्दक लख पूठ॥ ७॥
जब हरि लगे मनावन, जाय भक्त के पास।
नाम देव मनता नहीं, किन्हों मुंह उदास॥ ८॥
तू हरि निन्दा क्यों करी, मै हर निन्दी नाहिं।
घोर नरक श्रुति कहत है, हरि हर निन्दक ताहिं॥ ९॥
हंस बोले हरि जन क्षमा, करो क्रोध को त्याग।
अब तू कह वोही करूं, रखो सदा अनुराग॥ १०॥
ऋद्धि सिद्धि दासी करूं, मुक्ति लुटाऊं पाय।
अमर लोक बसवाय दूं सहस फणी की छांय॥ ११॥
वचन सुने भगवान के, नामो मन हरसाय।
और भक्त प्रभु नाचते, जन नाथू बलि जाय॥ १२॥

भजन राग कल्याण : तर्ज—ताड्यु गत अहिक

अजी छम छम नाम देव संग नाचे विट्ठल राजा॥ टेर॥
घन तन मुकुट कुंडल पीताम्बर भूषण दिव्य सुजाता।
श्वेताम्बर गौरांग भक्त वर देखत रवि शशि लाजा॥ १॥
झूम झनन् झन् झनन् नन् नन् झांझे, नूपुर छनन् नन् नन् बाजा।
तनन् नन् नन् तम्बूर शब्द होवे घोर घनन् नन् नन् गाजा॥२॥
सनन् नन् वेगी विमान चढ़ाये, सुर गण सजे समाजा।
फनन् नन् नन् फूल झड़ी कर आये, तुरत तड़ित तर ताजा॥३॥
कह नाथू छींपा नाम रटे जैं हरि सारे सुकाजा।
हरि फिर भजते जय हर हर बम बम, भव के भय भाजा॥४॥

दोहा—नामो खिज हरि से कहे, क्यू जप हर हर बार।
काम यहां हर क्या अही, श्री विट्ठल दरबार॥ १॥
फिर हरिजन समझावते, हरिहर दो पद एक।
पूछ जाय तब तात को, जाने गूढ़, विवेक॥ २॥
नामदेव निज घर गये, पूछे पितु से ज्ञान।
जनक दाम हरि हर विषय, करन लगे व्याख्यान॥ ३॥

राग—मारू

करन लगे व्याख्यान ध्यान दे, सुनो पुत्र हितकारी।
आदि पुरुष भगवान बनाये, त्रिगुणातम शुचि कारी ॥ १ ॥
नाना बाना जगत सजे, सीवे नित फेशनदारी।
विधि छांटे हरी सींव सजोवे, अरु हर जीर्ण उद्धारी ॥ २ ॥
कार्य बढे जब भयऊ दिग्पति जुदे-जुदे अधिकारी।
सर्वेश्वर हरि हर है एक देह छबि न्यारी न्यारी ॥ ३ ॥
बार श्याम तन लख्यो तमो गुण खल दल खण्डर हारी।
भीतर कारे तमो गुण मृत्यु नील कण्ठ त्रिपुरारी ॥ ४ ॥
जग पालन विष्णु मन उज्ज्वल, क्षमा सतो गुण धारी।
गौर वर्ण सुत रूप सदा शिव, सन्तन शुभकारी ॥ ५ ॥
भूषण भुजग विभूति त्रिलोचन, शृंगी चन्द लिलारी।
कुण्डल क्रीट किंकिणी कौस्तुभमणि मुरली मन हारी ॥६॥
मृग चर्म बाघम्बर रुण्ड माला, पीताम्बर धारी।
माकण्डेयध्रुव जन अखण्ड किए, दो भगवत भय हारी ॥७॥
विष्णु पदी कन्या वरी गिरिचर, राखे जटाधारी।
शिव सुत वाहन पांखन मुकुट, सजे गिरिधारी ॥ ८ ॥
राग द्वेष रहित युद्ध लीला, युग युग मे करी भारी।
कई बार हरि से हारे शिव, डरे शम्भु अवतारी ॥ ९ ॥
राम रामेश्वर पूजे कई बर, शंकर रटे खरारी।
विष्णु भाल तिलक त्रिशूल मम, शिव सिर धनुषाकारी ॥१०॥
माधव भीलनी संग रीझ गये, भंग भोज मदनारी।
राधा रमण तुलसी प्रिय माधव, प्रभु बाल ब्रह्मचारी ॥११॥
मथुरा अवध द्वारका पति हरि, हर उज्जयिनी द्वारी।
काशी सहित कांची आदि है पुरी सरकारी ॥ १२ ॥
अद्‌भुत गति लख खण्डन मण्डन, कर दुर्भाव अनारी।
एक गुरु के दोऊँ शिष्य, पग सेवा बाँटे रारी ॥ १३ ॥
पतिव्रत भक्ति एक इष्ट की, उत्तम श्रुति उचारी।
जेठादिक निष्काम से सेवा, भली कहावे नारी ॥ १४ ॥
हिया पीपली सम प्रभुताई, देव पच इकसारी।
पूजें नेम युत भक्त मणि ज्यू दुर्गति पाकर होय दुखारी ॥१५॥
चींटी से विधि तलक रूप, शिव विष्णु मई ससारी।
कह नायू छीपा कुल दामा; भक्त के हो उजियारी ॥१६॥

पद राग कल्याणी : तर्ज—तुड्यो गत अहिके

हरि हर दरिद्र परिहर बरोकर अमित अधम त्यारे ॥ टेर ॥
त्रिलोचन त्राता त्रय गुण त्रिपुरारी त्रिताप हारे।
कमल नयन मुद दाता मुरारी भय भंजन वारे ॥ १ ॥
अम्वरीश दधीचि दोऊ भये भक्त प्रभु के भारे।
शिव विष्णु जन भेद भाव कर फिरते मारे मारे ॥ २ ॥
मार्कण्डेय ध्रुव अखण्ड भये भज रुद्र ही श्री प्यारे।
घन्टाकरण दत्त दुर्गति लख दुर्गति बिसारे ॥ ३ ॥
राग द्वेष त्याग विश्वम्भर विश्वनाथ के द्वारे।
कर प्रणाम कहे नाथू छींपा मिटे कष्ट सारे ॥ ४ ॥

रगत लावणी लगडी

नरहरि सुवर्णकार भक्त पण्ढरपुर में शिव ध्यान किया।
दिखा एकता हरि हर की तब पांडुरग कल्याण किया ॥ टेर ॥
एक पति युत भक्ति प्रेम का स्पष्ट भावार्थ लियो यह जान,
नारी भावना रखे ब्रह्मदृढ़ छूटे नर देह अभिमान।
साधन सुगम ब्रह्मचर्य का मोहे न नारी को नारी आन,
दास भाव से रहे अलगता पति रति में सती हो गलतान।

शेर—वनवास में लुभ राम पै सखी भाव मुनि गोया भये।
कृष्ण से रम रास आखिर ज्योति मांहि रम गये।
इस रहस्य में ना लखे करते द्वेष मतभेदी नये।
अकड़ रावण वक्ष ज्यूँ दाजे, प्रभु आयुध अग्निमये।

मिलाप—घटाकरण सम सोनी जन लख खेल विचित्र भगवान किया ॥ १ ॥
कोई भेद वादी की शिक्षा जची सोनी के मन माहीं।
अनन्य शिव को रटत है नित धाम बिट्ठल जाय नाहीं।
सज्जन एक करधनी चाही पांडुरंगजी के तांही।
माप तोल के हेम क्षिये तब भक्त हाठ घड़ते जाहीं।

शेर—परमाण मुजब कटी किंकणी जन कर दई तैयार जी।
सेवक सजाने लगे प्रभु के बढ़े अंगुल चार जी।
पीछी दई जब काट दी फिर पहनाई जो सुधार जी।
काट्यां घटे जोड़्यां बढ़े श्रम किये बहु बार जी।
मिलाप—भेद भाव मत खण्डन करने शिव सेवक हैरान किया ॥२॥दिखा०।

जाति कर्म अहंकार धार मन भेद भक्त गये हरि मन्दिर,
निज नेत्र मून्द कर लगे नापने श्री विट्ठल की कटि सुन्दर।
करत स्पर्श नर हरी लखाये पंचानन भोले चन्दर।
जब खोले लोचन तब दर्शिया पांडुरंग मठ के अन्दर।

शेर—परशते दर्शात शिव, चक्षु खोले फिर वही।
अचरज करे माधो ही माधो भिन्न दरश क्यों नहीं।
गूढ़ तत्व विचार अपना मूढ़ मन समझा कहीं।
हरी हर आतम अभिन ब्रह्म है परतक परमाना सही।
मिलाप—सर्व सिद्धान्त शिरोमणि अद्वैत घट जन के प्रभु ज्ञान दिया ॥ ३ ॥

आतम सोनी त्रिगुण संचा भये ब्रह्म रस किये तन हार।
ज्ञान हथौड़े काम क्रोध आदि को निकाले तपा विकार ॥
मन बुद्धि कची से लीना रामनाम अद्भुत धन सार।
गम थैली धर पार मार्ग गये विष्णु भक्त स्वर्णकार।

शेर—भेद भक्ति एकदेशी करत जाँकि न मुक्त है।
घटाकाश या मठाकाश सर्वदा बन्धन मुक्त है।
महाकाश पूरण प्रभु सुवरण असंख्या जगत् है।
स्वर्ण कला युत मान सुवरण भजे स्वर्णो भक्त है।
मिलाप—नन्दलाल गुरु के शिष्य नाथू दरजी सत व्याख्यान किया ॥ ४ ॥

लावणी—रगत (तर्ज : मोरध्वज से राजा जग मे)

श्रीनारायण ब्रह्म परायण अरचा अवतारी।
श्री रंग प्रभो पांडुरंग की कथा चमत्कारी ॥ टेर ॥
नौजवान नर धनुर्दास एक करे पहलवानी।
अजामील सम विषय वश भये वेश्या मन मानी।
गिनका गहे रंग मन्दिर जा निरखत नूरानी।
उलटे पांव दोऊं कर पकड़े गवनत पिछवानी।
जग निन्दा का ख्याल नही है निज बल अभिमानी।
चन्द्र चकोर ज्यूं इक टक देखे त्रिय मुख मुसकानी।
नार नदी बैतरणी बूड़त घट कामी प्राणी।
लख करुणा करी विनवे रंग रामानुज ज्ञानी।
हे प्रभु पतित उधारण इन पर करो महरबानी।
अमित सुन्दिरियाँ दिखा मनोहर कर निज पद ध्यानी।

झड़—यतिराज की अरजी मानी, दिखा मोहनी मूर्ति बिनानी।
धनुर्दास दिल भक्ति दृढ़ानी, दीन बन्धु ऐसे धनुपानी।
जन के अघहारी ।। १ ।।

विष्णु चित्त ज्यूं विप्र नारायण रग ध्यान धरता।
देव देवी और अप्सरा रूप पर नहीं निगाह करता।
वा वनिता निज वहन से बोली हद मम सुन्दरता।
देखे क्यू नहीं विप्र नारायण बड़े बड़े मरता।
कह भामिनी हरिजन पर तेरा जादू ना चलता।
रूप गुमानण मति डिगावन कीना अर्पण वरता।
भगवां सज गई छलन भक्त ढिग नैम काज सरता।
कही मात तुम चाव बिगाडी, मम तुम दुःख हरता।
शीत ऋतु में वारिस बरसे नारी तन ठरता।
शरण जान द्विज पास ली अग्नि मिले घी पिघरता।

झड़—व्यसन लगा नट घर गई गिनका, प्रेमा दुखी चित लख प्रभु जन का।
नौकर हो दे थाल कचन का, काम पूर्ण करे भक्त भक्तन का।
राज्य किये ज्यारी ।। २ ।।

मगल वेडा गांव में श्यामा ललिकाना पातर।
रभा उर्वशी रूप नवबाल गायन गुण चातर।
जननी चाहती पुरष मिलावण धन कमावण खातर।
माता की वेश्या वृत्ति पर घृणा कर बनी सुपातर।
फिर अम्मा कहे एक पुरुष वर दुःख पासी नातर।
बोली कान्हुं मोसम दर्शन स्वार्थी जग मातर।
सुन भक्तो का भजन गई पण्ढरपुर भक्ति सातर।
पुण्डरी नाथ का दर्शन कर वण रही कृष्ण करुणा कातर।
चाहे कान्ह को पकड मगाणी नेदेर पति छातर।
गहत सिपाही छूट दर्श मिस जा मन्दिर आतुर।

झड़—करी वीनती द्रौपदी नाई, भये कृपालु शेष के सांई।
तजि कान्हा देह मन्दिर मांई, मिलीब्रह्म ज्योति मुक्ति के ताईं।
गये खल झख मारी ।। ३ ।।

ग्राम कनाड़े ब्राह्मण सुत वहु शकू साध्वी बाई।
सास ससुर पति निठुर मिजाजी बहुत सताते ताईं।
क्षमाशील दृढ़ काम करे घर भगती अधिकाई।

विट्ठल यात्रा करन गई सग चली यात्री सहाई।
खाली घट लख नदी पड़ौसिन घर चुगली खाई।
सास खिजाय भेज बेटे को पकड़ा मगवाई।
बांधि खम्भ के कसी सती को बहु मन अकुलाई।
आरत गज सी पुकार सुन हरी सखि बन कर आई।
आप खम्भ के बंध कर विट्ठलपुर शकू को पठवाई।
वा दर्शन कर मरी पुरी में रुकमणि फिर जीवाई।

झड़—खोले द्विज बधू रूप मुरारी, घर धन्धा किये शकू हितकारी।
आत शकू मिल गये गिरधारी, नाथ दरजी सही उचारी शकू हकीकत सारी।

दोहा—दाम पितु शिक्षा दई, नाम देव लई मान।
भेद त्याग दृढ भाव से, भजे विट्ठल भगवान ॥ १ ॥
दाम सेठ इक दिन गये, बिणजी कोपर ग्राम।
नामा को समझा गये, पूजा विधि तमाम ॥ २ ॥
दूजे दिन गोणा सती, कर भोजन तैयार।
भोग लगावन भेजिया, नामा को प्रभु द्वार ॥ ३ ॥
पूजे देव स्वच्छ प्रेम से, ले भोजन को थाल।
विट्ठल मन्दिर आय के, पूजे विधियुत बाल ॥ ४ ॥

राग मारू

पूजे विधियुत बाल सत्य ही श्री प्रभु ने सब जाना।
शुभ स्नान षोड़सोपचार धूप दीप कर नाना ॥ १ ॥
धर नैवेद्य थाल चौकी पर, हित से सब पकवाना।
अरचा रूप प्रभु ना जीमें, करी विनय सुर ज्ञाना ॥ २ ॥
सिंहासन से उतर, लगावण भोग प्रभु चट आना।
अन्य ग्राम को गये पिता मम घर नही कोई सयाना ॥ ३ ॥
जब माता भेजे मोहि, ठाकुर शीघ्र ही भोग लगाना।
बाट निहारे मैया मेरी श्याम प्रसादी पाना ॥ ४ ॥
तात हाथ से सदा जीमते, मोय मलीन ही माना।
नित्य ज्यू भोग लगाओ आके, दीन बन्धु भगवाना ॥ ५ ॥
मुझ कर से यह भोग अरोगो, नाहीं कृपा निधाना।
तो तेरे दर पर कर दूंगा मेरी देह कुरबाना ॥ ६ ॥
अहो सच्चिदानन्द, अच्यूतानन्द मुकुन्द नट बाना।
कमला कंत कृष्ण कंसारी केशव करण कल्याना ॥ ७ ॥

पुण्डरी नाथ पुण्डरी लोचन, पंढरपुर जन प्राणा।
पांडुरग पतित के पावन शीघ्र ही कृपा कराना॥ ८॥
हे समदर्शी चूक देर कछु भई गुनाह बख्शाना।
कल जल्दी लाऊँ शुचि भोजन, करज्यो रुचि अनुमाना॥ ९॥
दाम पिता नित धरते पाते भोग योग लख नाना।
उनके घर के षटरस हैं यह मै उनका सन्ताना॥ १०॥
यदि शास्त्र युत बनी न सेवा, हूं बालक अज्ञाना।
तद्यपि गज शिवरी को तारन बिड़द जोय अपनाना॥ ११॥
मेरे कर का भोग न पावो माता देगी ताना।
भक्त वश अभक्त भये सुत, उत्तम जन्म लजाना॥ १२॥
गाधिज विश्वामित्र गोत्र ये क्षत्री बड़ा घराना।
राज ऋषि और ब्रह्म ऋषि हैं भक्त कई कुल माना॥ १३॥
आते ही जनक खिजै ना दोगे अरचा के परवाना।
है विष्णु भक्ति बिन होगा व्यर्थ ही जन्म गवाना॥ १४॥
कहे नाथू छींपा नामा यों झुर झुर लगे बिलखाना।
आरत हरन दीन के बन्धु मूरति में मुसकाना॥ १५॥

पद राग सारग

मोपे थारी क्यूं इतनी नाराजी; कहदो कर के गगन आवाजी॥
पतित उधारण कीर्ति जाहिर, गणिका स्वर्ग विराजी।
लोक प्रथा देखन में आवे, पापी फिरे मिजाजी॥ १॥
पति श्रापित शिला अहिल्या, करी पावन हो राजी।
सुत नारायण सुमिर सुखी भयो, अजामील सो पाजी॥ २॥
कियो अलीन मोय अति हीन दीन लख, तुम बने अकाजी।
पीछी सुध लीनी ना अब तक, निज पण की नहीं लाजी॥ ३॥
हम कठपुतली तुम बाजीगर, सरजी हो जगबाजी।
जितना नाच नचाया तो, क्या नहीं हाजरी साजी॥ ४॥
बोलो ना रूठे क्या करते, गरीब ठट्ठा बाजी।
बिलखत नाथूराम मायत ढिग हँसते लोग समाजी॥ ५॥

राग गर्भी तर्ज : गजरा बेचन वाली नादान

रुचि रुचि जीमो रुकमणी श्याम, भोजन आके॥ टेर॥
तोड़े राखे चोखे चाखे शिवरी के फल राम,
मगन भये पाके॥ १॥
माखन खवैया ब्रज के कन्हैया क्या गिट पाक तमाम,
गोवर्धन छाके॥ २॥

कुरु के घी का असन लगे फीका, खाय विदुर के धाम,
छाल कर लाके ॥ ३ ॥
छिपाते छिपाते सुदामा का भाता छीना श्याम,
मुट्ठी भर खाके ॥ ४ ॥
षट्रस भोजन नाथू छींपा धरते खुश हो नाम,
थाली भर लाके ॥ ५ ॥

राग बिणजारी

हे भूमा विट्ठल भगवाना, अब जल्दी भोग लगाना ॥ टेर ॥
माधव मधुसूदन मुरारी, मोहन मुकुन्द मन हारी,
मुरली मुख मधुर बजाना ॥ १ ॥
गोपाल गोवर्धन धारी, गोविन्द गोपी हितकारी,
ग्वालों संग छाके खाना ॥ २ ॥
कंसारी कला धर पूरण, केशी काली मद चूरण,
केशव कमला पति कान्हा ॥ ३ ॥
कह नाथू छींपा नामा, खुश होय कृष्ण घनश्यामा,
कर कृपा दया निधाना ॥ ४ ॥

पद राग गजल कव्वाली

राजीव लोचन रमा रमण रिझाने दर्श न दूजा ॥ टेर ॥
तूही रैयत राजा राजन, तूही महालक्ष्मी साजन।
तूही भोजन भोज भजन है तूही भगवन चतुर्भुजा ॥ १ ॥
तूही आकाश और जल थल है तूही वायु अनल बल है।
तूही तरु कल्प अचल है तूही फल दल फूल तरबूजा ॥ २ ॥
विचित्र हैरान मै बालक आप मायत हो जग पालक।
लोक परलोक के मालिक कौन तिहारी विधि है पूजा ॥ ३ ॥
कहे नाथू छींपा चेरा यह तन मन धन है सब तेरा।
तुम्हें खुश करने को मुझको विश्व में कोई नहीं सूझा ॥ ४ ॥

दोहा—नामदेव विनती करी, आरत होकर जोर।
अब जो भोग अरोगो ना, प्राण देऊँ सिरफोर ॥ १ ॥
नाम देव दृढ़ भावना, अन्तर्यामी जान।
गोवर्धन ज्यूं प्रगट भये, जीमे सब पकवान ॥ २ ॥
अल्प असन रहे थाल में, नामो कही रिसाय।
मै भूखो बहु बेरको, कुछ तो जूंठ रखाय ॥ ३ ॥

जूंठ छोड़ हरिजन लिए, हंस बोले भगवान।
भक्त गुप्त रखी बात यह, सके नहीं कोउ जान ॥ ४ ॥
नाम देव कहि मान के, प्रभु पद शीस नवाय।
आय लौट घर आप के, मनमांही हरषाय ॥ ५ ॥
खाली थाली देख के, बोली गोणा माय।
नामदेव नैवेद्य सब, दीनों किसे खिलाय ॥ ६ ॥
नामदेव कहि मात से, प्रभु पाये सब भोग।
सुनत मात अचरज करे, बात यह हँसने योग ॥ ७ ॥
दाम सेठ चट ग्राम से, उसी वक्त गये आय।
विट्ठल भोग की सुन कथा, कर अचरज मुस्काय ॥ ८ ॥
दाम पिता कहे पुत्र से, कैसे जीमें श्याम।
कल हमको दिखलावना, चल विट्ठल के धाम ॥ ९ ॥
दूजे दिन नैवेद्य दे, नामदेव के हाथ।
भेजा विट्ठल पूजने, दाम सेठ गये साथ ॥ १० ॥
नामदेव सामग्री ले, पहुंचे विट्ठल धाम।
शास्त्र विधि पूजा करी, बहु हित से प्रणाम ॥ ११ ॥

राग— मारू

बहुत हित से प्रणाम श्याम के धरे नैवेद्य अगाड़ी।
विनय करी कर जोर लगावो भोग शीघ्र बनवारी ॥ १ ॥
किस विध जीमूँ बोले विट्ठल नूतन बाल पुजारी।
छिप के पितु तब दाम सेठ जो रहे हैं आज निहारी ॥ २ ॥
ताके सामने ना आरोगूँ बात हो जावे जारी।
मानुष या अर्चावतार की सेवा न्यारी न्यारी ॥ ३ ॥
सुनकर बोले नामदेव तुम कपटी हो गिरधारी।
जाना आज पाखण्ड पुजाणी लीला नाथ तुमारी ॥ ४ ॥
मुझ को दर्श देने को राजी पितु हित करो इनकारी।
झूठा हमें डालने खातिर करते हो छलगारी ॥ ५ ॥
सुन ऐसे वचन नाम के हंस दिये कुंज बिहारी।
दाम सेठ को दर्शन दीन्हा भोग लगाय मुरारी ॥ ६ ॥
दाम पिता कही नामदेव को भगति धन्य तिहारी।
भगवत का दर्श करा करी अँखिया सफल हमारी ॥ ७ ॥
दाम सेठ नट श्याम सुन्दर को करि प्रणाम बहुवारी।
भक्त पुत्र दे किये कृतारथ जयजय अधम उधारी ॥ ८ ॥
नामदेव का हाथ पकड़ घर लाय कथा कही सारी।
सुण खुश होय लगा उर सुत को सुख माने महतारी ॥ ९ ॥

कहि नाथू छींपा कुल भूषण नाम देव अवतारी।
समझ मात पितु मगन भये है करते विनय अपारी ॥१०॥

दोहा—दाम सेठ घर एक दिन, ब्याई कपिला गाय।
दसवें दिन न्हावण करा, शुद्धि भवन कराय ॥ १ ॥

राग—मारू

शुद्धि भवन कराय दाम निज बाम से बात कराई।
नूतन पदारथ अर्पण करने विट्ठल नेम सदाई ॥ १ ॥
याते पहले दूध भोग प्रिय प्रभु के देवो चढ़ाई।
तात मात की बात सुनत भई नामा मन उमगाई ॥ २ ॥
गर्म दूध चूल्हा पर धरियो हित से गोणा माई।
नामदेव को बिठा रुखाली अम्मा बाहर सिधाई ॥ ३ ॥
मां को देख नामदेव जी कीन्ही या चतुराई।
गर्म दूध को पात्र पकड़ कर गमछा सू लियो उठाई ॥ ४ ॥
जाय शीघ्र मन्दिर में पांडुरंग मुख दिये लगाई।
विनय करी घर ब्याई गऊ को दूध पीवो यदुराई ॥ ५ ॥
उष्ण दूध लख प्रभु मुख फेरे जन मन चिन्ता छाई।
नित की ज्यू प्रभु भोग न लेते क्या मम चूक लखाई ॥ ६ ॥
हे प्रभु पय करोगे पान ना, तज कर वत्सलताई।
तो फिर मै दूध खान की काढ़ू राम दुहाई ॥ ७ ॥
मुझ अजान बालक की मालिक मानो सेवकाई।
कहे नाथू छीपा कुल नामा भक्त लेय अपनाई ॥ ८ ॥

भजन : राग—बिहाड

पियोनी पय प्यारे पांडुरग ॥ टेर ॥
घर ब्यायी गऊ को प्रथम लायो दूध भर के उमंग ॥ १ ॥
शुद्ध सुधा सम मिश्र मिलाई, क्यूं नटते नरसिंह ॥ २ ॥
शीत काल में गरम दूध से तेजी बढ़तो अग ॥ ३ ॥
हंस रूप शिक्षित मोय कीना नीर खीर लख सग ॥ ४ ॥
करो कृपा कहे नाथू छींपा, पड़े भजन ना भंग ॥ ५ ॥

पद : राग—बरवा

सॉवरियो मोयो रे रगीली नथवाली हरी हस नरसिंह ॥ १ ॥
सकर्षण शिव शेष के साई, समदर्शी श्रीरंग ॥ २ ॥

पगत्पायशी यमुना तट रमणा यदुकुल कमल पतंग ।। ३ ।।
कहे नाथू छींपा कुल भूषण वारू कोटि अनंग ।। ४ ।।

दोहा—नामदेव को भक्ति दृढ़, अन्तर्यामी जोय।
गर्म पात्र दूध शीघ्र ही, पी लीना खुश होय ।। १ ।।

राग—मारू

पीलीना खुश होय, लगाकर लौय, नमै पद नामा।
पकड़ कर उष्ण ठॉव कपड़े से आप चले निज धामा ।। १ ।।
पीछा घर पातर चूल्हे पर लखिया गोणा बामा।
पूछे पुत्र से दूध कहां गये कहि भक्त अविरामा ।। २ ।।
हे माता वो दूध बिट्ठल को पाये कर प्रणामा।
कहे तात तुम कैसे ले गये गर्म दूध का ठामा ।। ३ ।।
पकड़ साफी से नाम कहे ले गये बिट्ठल के धामा।
पात्र लगाये मूरति के मुख पी गये श्री घनश्यामा ।। ४ ।।
करुणा भरी जननी तब बोली मुख से रामा रामा।
किया लड़कपन लाल न सोचे प्रभु का मुख मुलामा ।। ५ ।।
कर अन्देशा गोणा गई मन्दिर जिस दिन सत भामा।
श्री रुकमणि आदि पूछते प्रभु को कर नमा नमा ।। ६ ।।
मुख में स्वामी दर्द भयो तब कही अन्तर्यामा।
बाल भक्त गर्म पय पाये छाला पड़े जीभ चामा ।। ७ ।।
बोली भीम सुता पीवणू दावानल बल धामा।
सदा न उष्ण पय दर्जे न पाद राधे उर आने यामा ।। ८ ।।
रमा रमण की चरचा हो रही गोणा लगी हरियामा।
विनय करत प्रभु उत्तर दीना तब सुत का ये कामा ।। ९ ।।
क्षमा मांग प्रभु से घर आई, गोणा कर विश्रामा।
सुत को शिक्षा दे पति आये खोला भेद तमामा ।। १० ।।
नव वर्ष के नामदेव भये जब ठानी मन दामा।
करा जनेऊ सस्कार विधि सगपन का इन्तजामा ।। ११ ।।
ज्यादा शिशु हरि रंग मे रहेगा कसे गृहस्थ में थामा ।। १२ ।।
भक्त भने करो विवाह नामा को मै भयो दीन सुदामा।
बोले बिट्ठल दिन तीजे लगन काती का आसी सामा ।। १३ ।।
दामा को वर दे प्रभु सजिया खीन खाफ का जामा।
धोती जरकसी दिव्य भूषण सज सारी लगामा ।। १४ ।।
पहुँचे बेदर नगर सदाव्रती गोविन्द सेठ मुकामा।
बाबू राव बहादुर पदवी है हकूमत नौसो ग्रामा ।। १५ ।।

जिनके राजा बाई कन्या सुन्दर ललित ललामा।
नाथू छींपा नामा हित प्रभु मांगे बचन मुलामा।। १६ ।।

दोहा—बाबू राव ढिग जा करी, श्रीपत राम ही राम।
पास बैठ कही जन लिये, लल्ली राजा नाम।। १ ।।

राग—कव्वाली

कृष्ण के भक्त को कन्या विवाह देना मुनासिब है।।
देव दुर्लभ तन मानुष का पूर्वले पुण्य से पाते।
संग सज्जनों के भजनों का लाभ लेना मुनासिब है।। १ ।।
बहत चौतरफ में गगा पतित पावनी देवी।
पुजीजे पूरण कला पुरी में जहाँ रहना मुनासिब है।। २ ।।
बड़े पुण्यवान की पुत्री प्रभु का प्रीतम वर पाये।
सभी धनियों हरिजन का चरण सेना मुनासिब है।। ३ ।।
कहे नाथू छींपा नामा श्री विट्ठल का प्रेमी है।
सुपातर से सम्बन्ध करके सुभग बहना मुनासिब है।। ४ ।।

पद इसी चाल मे

भागीरथ राम से सुत हो घराना वाही उत्तम है।
चतुर वर्णो में कुलवाना ठिकाना वो ही उत्तम है।। टेर ।।
अनुसूया सुनीति सी माता दत्तात्रेय पुत्र ध्रुव से हो।
पिता उत्तानपाद अति समाना हो वो ही उत्तम है।। १ ।।
विवाहित पति पत्नी सग से प्रसूति श्रेष्ठ श्रुति गाये।
अधिक उनसे भी श्री गोविन्द को रिझाना वो ही उत्तम है।।२।।
नियोगी जार वर्ण शकर अधम सतान वेद वरने।
श्री विदुरजी जैसा भक्त समाना हो वो ही उत्तम है।।३।।
कन्यादान दे जम्मू सगर राजा हुआ वह फूल से।
पिया नही पानी पुत्रि का, विहाना वो ही उत्तम है।। ४ ।।
वैर और विवाह प्रीति तो बराबर के से ही करनी।
कहे नाथू लगन नीका लिखाना वो ही उत्तम है।। ५ ।।

वचन बाबूराम का विट्ठल से

दोहा—श्रीमान् कौन हो तुम यह, कहते सतयुग बात।
कुलीन घराना केवल, पूछत धन की जात।। १ ।।

भजन तर्ज नाटकी

सुनो मेरे प्यारे छल का कहना अकेले रहना,
सुनो मेरे प्यारे अभी का घराना बड़ा कहलाना टकों की लार।
सुनो मेरे प्यारे अभी का···॥ टेर ॥
चोरी करो जारी करो और नीच रुजगारी करो,
पूंजी जोड़े सो सिरदार ॥ १ ॥
चाहे बूढ़ा चाहे फूट्टा, चाहे गुंडा चालुंडा,
धनी लख ब्याहे दे कुमार ॥ २ ॥
लोग चाहे हँसी करो, चाहे बेटी बेच वेश्या करो,
मायत बाजे साहूकार ॥ ३ ॥
जीते जी चाहे मजा करो, झूठे नरकों से ना डरो,
ऐसे हो गये शिक्षादार ॥ ४ ॥
हरि माया अद्भुत है कैसी, दुःख पाते हरिजन हो पैसी,
सुन धर्म पे मारे कुठार ॥ ५ ॥
नाथू दरजी हो सत सरजी कलि बुध से हो खल खुद गर्जी,
जाते हाय जमारो हार ॥ ६ ॥

राग पद इसी चाल में बचन विट्ठल का

सुनो मेरे प्यारे टकों का मोही, भगतों का द्रोही होते है ख्वार ॥ टेर ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का जी···
हिरणाकुश दुर्योधन रावण, दुष्टदुशासन रखी धरावण, घुस घुस गये यम द्वार॥१॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का··
चन्द्र हास त्रास खुद भ्रष्ट भये धृष्ट बुध अनिरुद्ध को ल्यो चितार ॥ २ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का···
द्रव्य वल कुलवानी कर्ण जैसे दानी मान गये भारत में हार ॥ ३ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का··
चोरी जारी अन्य पेशा, कन्या विक्रय हत्या जैसा, कुकर्म जन्म विगार ॥ ४ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का··
दूजे जन्म रोगी रंक वेवा वांझ नपुसक परतक नरक निहार ॥ ५ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का··
तन मन पुत्री धन देके सेवो हरिजन रघुगन सम सुखियारा ॥ ६ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का·।
नाथू छींपा नामदेव अवतारी ज्यूं राम देव जाको फल मिले चार ॥ ७ ॥
सुनो मेरे प्यारे टकों का···।

दोहा—दाम सेठ श्रीमान् है, पण्डरपुर निज ग्राम।
उनका खास गुमाश्ता, हमारा बिट्ठल नाम ॥ १ ॥

राग मारू

हमारा बिट्ठल नाम तुम्हारे धाम काम इस आया।
पडित बुलाय मिलावो टेवा विधि करे चित चाया ॥ १ ॥
कसे धनो बराति ठिकाना चाहते बाबूराया।
जानो चार कोटि बहु वाहन भूषण वसन मन भाया ॥ २ ॥
दाम सेठ सुत नाम देव का दिन दिन भाग सवाया।
छाछ बेटी मांगन की एव ना वेद पुराण गाया ॥ ३ ॥
ऐसा बचन बिट्ठल का सुनके बाबूराव घबराया।
निज गादी को छोड़ प्रभु को आदर कर बिठाया ॥ ४ ॥
बोले मधुर मुनीम आप से जिन घर अपरम्माया।
नौसे गांव का मोल तुम्हारे मुदड़ी हीरा लखाया ॥ ५ ॥
ऐसे धनी से सगपण करते मेरा दिल सकुचाया।
दान मान बड़े सेठो का होना कठिन दर्शाया ॥ ६ ॥
बोले विट्ठल तुम गोविन्द सेठ हो उत्तम कुल में जाया।
नौसे गांव का कामदार तुम बाबूराव कहाया ॥ ७ ॥
साठ मुनीम बही खाता सम्हाले एक से एक अधिकाया।
लाखा उपर लेख निचा ले काची कांई लाया ॥ ८ ॥
मंद हास मनमोहन की लख बाबूराव मुसकाया।
शरम सगां की होय सगोंने रखज्यो प्रेम बहु दाया ॥ ९ ॥
विप्र बुला कर वर कन्या की कुंडली योग मिलाया।
अनबूझ सावा बसन्त पचमी शुभ जोशी बतलाया ॥ १० ॥
पॉच दिवस का किया वायदा लग्न लिखाय दिलाया।
ब्याव मुकर कर नामदेव का पीछा विट्ठल सिधाया ॥ ११ ॥
बाबूराव दस लख रुपया का खर्च सामान मंगाया।
मेदा शक्कर घृत किराणा अन्न कोष भरवाया ॥ १२ ॥
करत तैयारी सभी ब्याव की मांडे मण्डप छाया।
बदरवाल मोत्यां की झालर नाना रत्न झिलकाया ॥ १३ ॥
मंगल गात सुन्दरी नौछावर करते ढ़ोल घुराया।
बेदर नगर की आत कामणियां सब शृंगार सजाया ॥ १४ ॥
कह नाथू छींपा नामा के ब्याव का उत्सव सराया।
राज कवर राजा बाई को वाने विठाय हरषाया ॥ १५ ॥

भजन (तर्ज : प्रभु लेना खबरिया गरीबन की)

वनी गवर भवानी को ध्याया करो ।। टेर ।।
ज्यांसु सुहाग अमर वर पाया करो ।
दक्ष हेमादि द्वारे जन्म कई बर धर सती ।
अज अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक एक पूजे शिव पति ।
ऐसे पतिव्रत नेम निभाया करो ।। १ ।।
जनक के फूल बाग मे जगदम्ब को पूजी सिया ।
एक पत्निव्रत धारी राम से पाये पिया ।
चारो फल बर्दानी रिझाया करो ।। २ ।।
वनी बनकर रुक्मणिजी अम्बिका पूजन गई ।
शिशुपाल से दुर्जन हटा श्री कृष्ण की रानी हुई ।
देवी भक्ति चित्त में बढ़ाया करो ।। ३ ।।
भगवती का ध्यान गुण से बनो सुन्दर देवियां ।
पोराणी पहराण सज तज विदेशी पट ऐबियां ।
छींपा नाथूराम गुण गाया करो ।। ४ ।।

बचन स्त्रिया का मगल गाना (तर्ज नादान गजरा वाली)

ये वनी, नादान, सुर ज्ञान बड़ कुलवाली सत धर्म तनातन पालिज्यो ।। टेर ।।
वनी सतियन अनुसूइया को रटिये, अतिथि को भिक्षा घालज्यो ।। १ ।।
वनी सती सिया व्रत रखिये, दुर्जन पर धुरी डालज्यो ।। २ ।।
वनी सती सावित्री बनज्यो, पति की यम बाधा टालज्यो ।। ३ ।।
वनी सती दमयन्ती भजिये आपत्ति मे शील सह्मालज्यो ।। ४ ।।
वनी श्री रुक्मणि गुन गुनिये, दूज वर को विमुख निकालज्यो ।। ५ ।।
वनी नाथू दर्जी गावे ऐ पिव की आज्ञा मे चालज्यो ।। ६ ।।

तर्ज : वनी थारा बाबाजी न कीजो लग्न लिखावराया री

वनी कथा रामायण की सुणज्यो शोभा चोखी लीज्यो ये रायारी ।।टेर।।
वनी सासु सुसरा पग चांपीज्यो, मायत जाणीज्यो ये रायारी ।। १ ।।
वनी थारा पिवने प्रभु मानीज्यो दुःख में साथ रहीज्यो ये रायारी ।। २ ।।
वनी मन धीरज सन्तोषी ज्यो, माया से न लुभीज्यो ये रायारी ।। ३ ।।
वनी सुत नेह देवर से राखीज्यो, कड़वी मत भाखीज्यो ये रायारी ।। ४ ।।
वनी घर साधु ने भिक्षा दीज्यो, छलिया से न पतिज्यो ये रायारी ।। ५ ।।
वनी दुर्जन वासा से न डरीज्यो, सावत शील राखीज्यो ये रायारी ।। ६ ।।
वनी नाथू शिक्षा अमीरत पीज्यो, जस कर जुगमें जीज्यो ये रायारी ।। ७ ।।

तर्ज : बनी य थारो दुलीचो लू गा को

बनी ये थारी शरम रखी अनुसूइया सी।
द्रोपदी सियासी जांसु रहे कीर्ति सुवास ।। टेर ।।
बनी ये नगन शीशु कर चुंघाया ये त्रिगुणातम रख पास ।। १ ।।
बनी ये कैसा चीर हरि बढ़वाया ये भये कोख मदनास ।। २ ।।
बनी ये सीताराम बिछड़या पाया ये सही रावण की त्रास ।। ३ ।।
बनी ये नाथू दरजी यश गाया ये सुन सती का इतिहास ।। ४ ।।

तर्ज ए मा मैं क्या जानूं कामण

ए माँ मै क्या जाणू कामण ऐसा दिल लाग्या।
कामण विट्ठल धुन बल लाग्या, कामण ब्रह्म सगुण बल लाग्या।
कामन पूरब पुनबल लाग्या। ए माँ मै क्या जाणू ।। टेर ।।
कामण अनुसूइया अत्रिका, तोड़न मत भये हरि क्षत्री का,
पतिव्रत कामण की शक्ति का, मिलिया तेज ब्रह्म भक्ति का,
बालक रूप भये त्रिगुणातम कैसे निका फल लाग्या ।। १ ।।
कामण सावित्री सत्यवान, कैसा गाढ़ा जाहर जड़ान,
दृढ़ता लखके यम भगवान, दिनो ताही अखण्ड वरदान,
सास सुसर पति भक्ति का जग में सयश उज्जवल लाग्या ।। २ ।।
जिस कामण से एक पति नेम, रख शिव भक्ति का सा प्रेम,
सदा मनाती कुशल क्षेम, सोहत्ती जैसे सुगन्धित हेम,
सारे रोम रोम के मांही जादू के तुल्य लाग्या ।। ३ ।।
कहता दरजी नाथू राम, सिया सम निभहि आठो याम,
मुक्ति धर्म अर्थ और काम, सारी सिद्धियाँ होय गुलाम,
खुश होय लिखते विधि कलाम, मधुरे मूल मगल लाग्या ।। ४ ।।

तर्ज · बना थारो बगलो कितीक दूर

बना नर जन्म का कांई व्रत सार सांची
शिक्षा दिज्यो जी अधम उधार।
बनी नारी जन्म को सोई व्रत धार अच्छी
गति लीज्यो जी प्यारी वर नार ।। टेर ।।
बना आदि धर्म को कैसो सदाचार
भिन्न भिन्न किज्यो जी वेदा अनुसार ।। १ ।।
बना नर जन्म, बनी जाती धर्म धन
दिया उपकार शरम रखिज्यो ये अंग को अपार ।। २ ।।

बना चुप रहुं गज घूंघट निकार
कैसे बन आवे घर जाती सत्कार ॥ ३ ॥
बनी मुख वाणी मत नीचा से उधार,
गुप्त अंग ढाको हे काठो पटधार ॥ ४ ॥
ऐसी जग में भई लज्जादार
कुण २ रखेजी धर्म विचार ॥ ५ ॥
बनी अनुसूइया की बना वार्ता चितार।
द्रोपदी भी छली मद दीना चटगार ॥ ६ ॥
बन नर, बना कहे नाथू कथ शुचिकार,
बनी जती सतियों की लेवो बलिहार ॥ ७ ॥
बना नर जन्म ..

दोहा—दाम सेठ तीजे दिवस गये हरि मन्दिर मांय।
विनय करी कर जोर के, नामदेव के तांय ॥ १ ॥
कहां प्रभु सगपन किये, नामदेव का आप।
प्रण पालन भगवान तुम, हो भंजन त्रिताप ॥ २ ॥
विट्ठल कहे वेदर नगर, गोविन्द सेठ सुजान।
पांचवे दिन ब्याव कन्या, जावो सजवा जान ॥ ३ ॥
दामो फिर प्रभुसे कहे, पैसा ना मुझ पास।
बैल तुरग रथ ना मिले, कैसे पहुंचे दास ॥ ४ ॥
श्रीमन्त समन्धी बड़ा, पंचम दिन ठहराव।
बैल एक प्रभु देय तो, जाऊं करने विवाह ॥ ५ ॥
जब मुसकाय विट्ठल कही, घर आसी एक बैल।
नामा को सजवाय के, घर का जाज्यो गेल ॥ ६ ॥
दाम सेठ घर आ कहे, नारी को समाचार।
नाम देव के लगन को, उत्सव मनाओ द्वार ॥ ७ ॥

राग—मारू

उत्सव मनावो द्वार हरष कर मंगलाचार गवावो।
विट्ठल कृपा से दिवस पांचवे नेड़ा निकले सावो ॥ १ ॥
वेदर नगर चालणो पडसी गोविन्द सेठ घर ठावो।
हल्दी हाथ सात सवागण तेल बान चढ़वावो ॥ २ ॥
पीठी उबटन कर नामा तन बनडो खूब बनाओ।
पांडुरग को ध्यान राख श्री सिद्ध गणेश मनाओ ॥ ३ ॥
मगल वचन सुण गोणा और जन्ना के मन भयो उमावो।
बोली स्वामी कुंकुम पत्री लिखो तुम देके बढ़ावो ॥ ४ ॥

पहली लिख श्री वृद्ध विनायक ऋद्धि सिद्धि सहित बुलाओ।
पुन. ये विनती करो प्रभु विट्ठल को ले पटरान्या आवो ।। ५ ।।
तीजा शुभ सन्देश कल्याणी नान्देरे पठवावो।
स्वजाति सज्जनों के पीला चावल कर पुगवावो ।। ६ ।।
सुन सती बचन दाम सेठ कही तुम संगीत शुभ गावो।
लिखू पत्र शुभ इष्ट मित्र सब मोपे शीघ्र ही कृपा करावो ।। ७ ।।
बेदर नगर आज्यो परबारा करके चित उछावो।
भक्त वत्सल की दया दृष्टि हो शुभ सकुन मनावो ।। ८ ।।
कह नाथू छीपी हरित्त जम गाकर लेहो सब लावो।
मनुष्य जन्म को योही फल है चारों पदारथ पावो ।। ९ ।।

भजन : राग—श्याम कल्याण

बेगा म्हारे आज्योजी श्री गणराज ।। टेर ।।
रणत भँवर गढवासी बिनायक सब देवन सिरताज ।। १ ।।
मूषारूढ हो रिद्धि सिद्धि सागे लाज्यो गरीब निवाज ।। २ ।।
मोटा नाक रखने सून्ड्याला तुमको सबको लाज ।। ३ ।।
कह नाथू छींपो भगतां के सकल सुधारो काज ।। ४ ।।

राग इमन कल्याण तर्ज—दर्शन बिन अँखिया तरसे

गणपत आइयो रणत भँवर से। गणपत० ।। टेर ।।
मुसन पर चढ विघ्न निवारण वर ले शम्भु गवर से ।। १ ।।
कुण्डल किरीट मुकुट पर उज्वजल सोहे छबि जेवर से ।। २ ।।
धूप दीप नैवेद्य आरती करे रिद्धि सिद्धि चँवर से ।। ३ ।।
नाथू दरजी करता अरजी श्री गिरिजा के कँवर से ।। ४ ।।

तर्ज—श्री गणपति महाराज आज तुम रखिलो हमारी लाज

श्रीगणराय कर सहाय आय प्रभु सारो हमारे काजा ।। टेर ।।
मूसा वाहन गुपतगामी बुद्धि विधाता अन्तर्यामी।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि के स्वामी रणत भँवर के राजा ।। १ ।।
एक रदन गज बदन विशाला शोभा सदन मदनरिपु लाला।
कलिमल कदन हरण कुशाला रखन भक्त की लाजा ।। २ ।।
अग्रेसर जग मे तूं ही सूझा, वरदायक तुमसे नहीं दूजा।
वासुदेव निज व्याव में पूजा लखदेवन सिरताजा ।। ३ ।।
नाथू दरजी नामदेव कुल अर्जो करे पद पंकज में लुल।
मरजी करा गिरधारी जीतुल, बजे आनन्द के बाजा ।। ४ ।।

पद राग—सोरठ

बेगा ह्मारे आज्यो जी श्रीगणराव।
ह्मारे घर नामदेव रो ब्याव ॥ टेर ॥
वृद्ध विनायक मगलदायक करके कृपा भाव ॥ १ ॥
छऊं प्रभुताई युत भगवाना अधम उधारो सुभाव ॥ २ ॥
निर्धन के धन दुर्बल के बल करुणा के दरयाव ॥ ३ ॥
विघ्न बिडारण भक्त उवारण पार लगाना नांव ॥ ४ ॥
कह नाथू छींपी कुल देवा कोज्यो आनन्द उछाव ॥ ५ ॥

दोहा—श्री गणपत को ध्याय के देवी देव मनाय।
बुला सुहागण सुन्दरी गोणा बना गवाय ॥ १ ॥

सनातन धर्मशिक्षा—तर्ज—म्हारी रेल ने डिगाओला काईजी

बना कर अनीत लड़कांई जी ह्माने ताना दिरावोला कांईजी ॥ टेर ॥
बना शील दयागुण पढबा क्यों न जावो गुरु के पांईजी ॥ १ ॥
बना सुणो रामायण क्यों ना एक नारी व्रत के तांईजी ॥ २ ॥
बना जाति धर्म को पालन लीजो गीता की छांईजी ॥ ३ ॥
बना स्वदेश सेवा करने क्यों ना लेवो अपनी डांईजी ॥ ४ ॥
बना पर नारी को तक के क्यों बिगड़ो पशु की नांई जी ॥ ५ ॥
बना पर हुन्नर कर दीखो कम जाति द्रव्य लुभाई जी ॥ ६ ॥
बना दुखा दूजे के दिलको क्यों रूठवाते जग सांईजी ॥ ७ ॥
बना छीपा नाथू गावे शिक्षा ज्यू ध्रुव की मांईजी ॥ ८ ॥

तर्ज—अटरिया गिरा रे कबूतर बल खाय

दम्पति की शोभा पति पत्नी व्रत ताज ॥ टेर ॥
सुण सुणरी बनी नई फेशन अग साज।
नहीं नहीं रे बना बढ़त छिनाला हो मोहताज ॥ १ ॥
सुण सुणरी बनी विषय हित विवाह रिवाज।
नहीं नहीं रे बना मनुष्य धर्म की आवाज ॥ २ ॥
दम्पति, सुण सुणरी बनी नारी नर इसकी साज।
नही नहीं रे बना करन प्रसूती समाज ॥ ३ ॥
सुण सुणरी बनी कोई पुत्रादि अन्दाज।
नही नहीं रे बना पशु भी ऋतु पर त्यागे लाज ॥ ४ ॥
सुण सुण री बनी लड़कों से मिले कोई राज।
नहीं नहीं रे बना कर्षा न गँवावे वृथा नाज ॥ ५ ॥

सुण सुणरी बनी सुत हित करे पिव नाराज।
नहीं नही रे बना मूल से प्यारो लागे ब्याज ॥ ६ ॥
सुण सुणरी बनी योतो पर नर से सरजा काज।
नहो नहो रे बना जाया कपूता कुल लाज ॥ ७ ॥
सुण सुणरी बनी झूठी कुल धर्म की लाज।
नहीं नहीं रे बना तिरे शुभ पुत्र सू जहाज ॥ ८ ॥
सुण सुणरी बनी सती को सतावे कलिराज।
नहीं नही रे बना नाथू छींपी के पति ब्रजराज ॥ ९ ॥

तर्ज बना रेन पोडी रे

बना नीत आछी रे, नीत आछी प्रीत सांची जी,
ओजी थारां रघुवर सारेला काज ॥ बना० ॥ टेर ॥
बना ने सम दम को जरकस जामो सोहेजी।
ओजी सिर ब्रह्म बुद्धि को ताज ॥ बना नीत० ॥ १ ॥
बना कर स्वदेश सेवा की मेंदी राची जी।
ओजी जस भूषण जड़े पुखराज ॥ बना नीत० ॥ २ ॥
बना के हरि भक्ति दुशालो खीनखांपी जी।
ओजी बारे नैना अजन लाज ॥ बना नीत० ॥ ३ ॥
बना के दया धर्म को टीको भाल नीको जी।
ओजी मुख बीडो मधुर आवाज ॥ बना नीत० ॥ ४ ॥
बना जन छींपी नाथू गुण गावे जी।
ओजी सत्य ज्ञान को सुमरण साज ॥ बना नीत० ॥ ५ ॥

दोहा—रघुवर इच्छा देख के, मारुति आये पास।
विनय करे कर जोर के, क्या आज्ञा श्रीनिवास ॥ १ ॥

राग—मारू

क्या आज्ञा रमा निवास दास चरणों का खड़ा दरबारी।
क्या मुझ सारु काज आप कहो खुश हो सारग धारी ॥ १ ॥
बोले राम नाम देवा हित बनो शिव वाहन उधारी।
बींद चढ़ा के बेदर नगरी जावो होत अवारी ॥ २ ॥
कह बजरग सत जोजन सिन्धु लांघ के लका जारी।
अक्षय कुमार आदि वध कीना इन्द्रजीत गये हारी ॥ ३ ॥
लाय सजीवन दी लक्ष्मण को कर द्रोणा गिरि धारी।
पेठ पाताल हतो अहिरावण तव प्रसाद खरारी ॥ ४ ॥

भ्रात नहिन प्रम कन्धे बिठाये देख भये सुखियारी ।
कंमे बंन्त बन उमी पुष्ठ चढे कुण कलि मे अधिकारी ॥ ५ ॥
मण हरि बन्धा भक्त वचन मे ज्यो विभीषण की बारी ।
किया लंकेश उमीको कुल हन पाई मदद तुम्हारी ॥ ६ ॥
बाबा भोला नामदेव जन अगद का अवतारी ।
पूज्य चित युवराज चढाये घट नही महिमा अपारी ॥ ७ ॥
पड़िया भड़ा बेल तन धर कर मन हनुमान विचारी ।
मिन कियो वेष क्या गिरके दाम सेठ के द्वारी ॥ ८ ॥
उठन उठायो दाम सेठ के कई थापा मुक्की मारी ।
दाम सेठ को हेलो दिना आये शिशु सुणत पुकारी ॥ ९ ॥
नामो पूछ गहे सींग कान को दामो दी ललकारी ।
दोऊ लागे तो भी ना ऊठे जब नायन की शिशु धारी ॥ १० ॥
थर थर कांप उठे हम बजरग निज शक्ति परचारी ।
ठाढे भये नन्दी ज्यू शिव हित कपि भक्त हितकारी ॥ ११ ॥
प्रसन्न भये मन दाम सठ चट विवाह की करत तैयारी ।
कह नाथू छीपी नामा की अद्भुत बनी असवारी ॥ १२ ॥

दोहा – नामा जन्मते धन सभी, बाटे दामा सेठ ।
होय सुदामा जो गये राम भरोसे बैठ ॥ १ ॥
नामदेव बाने बिठा, हल्दी लावत मांग ।
हरि भक्त के विवाह होत, विचित्र सांग ॥ २ ॥
निर्धन के धन है सदा, भक्त वद्धल भगवान ।
नामदेव मगलकरण, विट्ठल कृपा निधान ॥ ३ ॥

राग—गरबो भजन . गजरा बेचन वाली नादान

म्हाने हल्दी रो रग सुरग निपजे मालवे ॥ टेर ॥
गुलाब लाल रा बापूजी मातार मन उमग ॥ १ ॥
हल्दी बाट जन्मा दासो पूर्व पुन्य प्रसंग ॥ २ ॥
पेमर गेवट मन हरप घट नामदेव के अग ॥ ३ ॥
कह नाथू छीपी कुल पावन सहायक पाण्डुरग ॥ ४ ॥

राग सोरठ—तर्ज : नामदेव बैठे उबटण

नाम देव बैठे उबटण मे, उबटण तन मन मेल ॥ टेर ॥
शील क्षमा का उबटण भक्ति रो महकत तेल ॥ १ ॥
आयो प्यारा विट्ठल निरखन्यो थां निरख्या सुख मेल ॥ २ ॥

आवो प्यारा हरिजन निरखल्यो थां निरख्यां सुभ खेल ॥ ३ ॥
आवो सारा कुटुम्बी निरखल्यो थां निरख्यां रहे मेल ॥ ४ ॥
आवो तारा शीश निरखल्यो थां निरख्यां छबि छेल ॥ ५ ॥
कहृ नाथू छींपो कुल नामा भये भक्ति रा पटेल ॥ ६ ॥

पद राग ठुमरी—तर्ज : रायजादो उबटणो

तूकर नाम देवा उबटणो ब्रह्मचर्य विष्णु भक्ति तणो ॥ टेर ॥
इस उबटण तेल फुलेल छणो तन्दुरुस्ती धनतर वेद भणो ॥ १ ॥
मन माता भगनी रो कोड घणो जाका शिक्षा मगल गीत सुणो ॥२॥
जन्ना बाई से सत्सग को गनो जाको आज सफल भयो दासी पणो ॥३॥
रुक्मणि विट्ठल कर बनवावे बनो चढे रूप मदन से लाख गुणो ॥४॥
पट राम कबीर तानो तनो नानु गोमू कल्याणी रग सनो ॥५॥
सुभ गाडो पु जाब भक्त धनो थारे सेनो खिजमत गार बनो ॥६॥
कहृ नाथू छींपी नामा से जनो शिशु जबही जग में उचापणो ॥७॥

पद राग—तर्ज : न्हायल लाडला

न्हायले नामदेवा न्हायले हो थारा पगल्या रे
पास गगा बहे ॥ टेर ॥
जठ प्यारो नामदेवो न्हायसी जी,
जठ ब्रह्मा जी सावित्री ले पधारसी जी ॥१॥
जठ प्यारो नामदेवो न्हायसी जी,
जठ शिवशंकर पार्वती ले पधारसी जी ॥२॥
जठ प्यारो नामदेवो न्हायसी जी,
जठ गणपत ले ऋद्ध सिद्ध पधारसी जी ॥३॥
जठ प्यारो नामदेवो न्हायसी जी,
जठ पांडुरग रुक्मणी ले पधारसी जी ॥४॥
ज्यांका जस नाथू दरजी गावसी जी,
जठ भगतां रा काज ठाकुरजी सुधारसी जी ॥५॥

दोहा—नामदेव बनडो बन्यो, होय बैल असवार।
बेदर नगर ब्यावन चला, ज्यों शिव हेम द्वार ॥ १ ॥
तात मात जन्ना सहित, चले नामा संग साज।
नामदेव बेदर नगर, पहुंचे ब्याहन काज ॥ २ ॥

राग मारू

पहुंचे ब्याहन काज आज श्री बाबूराव के बागां।
बागवान भणे कौन कहाँ के जावो किस अनुरागां॥ १॥
दास सेठ कहे रे वा पुण्डरपुर तोर नदी चन्द्रभागां।
बाबूराव कन्या ब्याहन हित आया सम्बन्धी लागां॥ २॥
बगिया सींचण चट फटकारे कलक देण बड़ भागां।
हटो यहां से कंगला कहीं के जोडी न हंसा कागां॥ ३॥
माली शीघ्र जाय कही मांड़े जहां होय रही रंग रागां।
वारा भुई न्याय सजवावे बांधक मुसल पागां॥ ४॥
माली बचन सुण बाबूराव के उठा कलेजे न्याना आगां।
ल्याय दिखाये चारू मानुष बैले चढे डोभागां॥ ५॥
गोविन्द बाबू भणे क्यों आया बाल दिये इस जागां।
हमतो लग्न विट्ठल को दीना ईज्जत गमाते नागां॥ ६॥
हो शोकातुर गये बाबू घर मन हो तरग अयागां।
दास सेठ डर चले बस्ती में कर चिन्ता कहा अब भागां॥ ७॥
गो सिंह को सग कैसे बने क्या मरे डूब तडागां।
फाट गये आकाश थे गली कैसे लगती धांगां॥ ८॥
वाह रे विट्ठल फँसा बडन से आपन आये सागां।
भक्त वत्सल होय लगे उडावण हाथां धुरी परागां॥ ९॥
धर्मशाला जा डेरा दीना सोना गले सवागां।
कह नाथू छींपी भक्तां हित आवो नीतर तन त्यागां॥ १०॥

देश सोरठ राग

सांवरा प्यारा आज्योजी बेगा आज थांसे आया ही सरेला काज।
सांवरा आज्योजी॥ टेर॥
हो दत्त हंस कपिल सनकादिक कियो आत्म अन्दाज।
नर नारायण ऋषभ देवजी नारद मुनि सिरताज॥ १॥
प्रशनी गर्भा हो प्रभु दीने, ध्रुव को इब छल राज।
हरि रूप कर गज को उबारियो पॉय पयादे भाज॥ २॥
यगन्या इन्द्रहित दैत्य सहारे फिर खुद भये सुरराज।
पृथु पृथ्वी से बीज निकाले बान्धी जाति रिवाज॥ ३॥
हो हयग्रीव हय दैत्य संहारे मधुसूदन महाराज।
लाये वेद मच्छ होय मारे शंका सुर को मिजाज॥ ४॥
वराह रूप धर धरा उघारी सर्जन सृष्टि समाज।
जन प्रहलाद हितं नरसिंह बनके प्रगटे खम्भ से गाज॥ ५॥

कच्छ अवतार धरे मन्दरा चल पर हित गरीब निवाज।
रतन निकाल यथार्थ बांटे देवा की पूरब लाज॥ ६॥
आनी सुधा घट करन धन्वन्तरी अमर लोक इलाज।
पाये सुरन को मोहे असुरों को रूप मोहनी साज॥ ७॥
बलिदानी पाताल पठाये हो बावन छल बाज।
परशुराम निक्षत्री कीनी ऋषिवर भये महाराज॥ ८॥
रामदेवा की कैद छुड़ाई बांध समुद्र में पाज।
व्यास वेदान्त पुराण बनाये पूर्ण कला वृजराज॥ ९॥
बुद्ध दयालु वीर हो कल्की रखन भारत की लाज।
कह नाथू छीपी हरिजन की पार लगाओ जहाज॥ १०॥

तर्ज—श्रीकृष्ण हमने तुमको बंशी बजाते देखा

श्री विट्ठल हमने तुमको बिगड़ी बनाते देखा॥ टेर॥
हिरणाकुश खिजाया, प्रह्लाद को सताया,
खम्भे में नरसिंह राया, सन सन सताते देखा॥ १॥
श्री हो राम कपिले सारे, लका पुरी सिधारे,
वहां पे ही विजय नगारे, दनदनाते ही देखा॥ २॥
कौरव सभा मे नागे, सती को उघाड़न लागे,
अद्भुत चिर तागे, प्रभुता जनाते देखा॥ ३॥
गर्मी तपे तो वर्षा, वर्षा पै सर्दी सरसा,
ठड पै बसन्त बरसा, आनन्द मनाते देखा॥ ४॥
कहता है नाथू दरजी, भक्तों की पूरण गर्जी,
सुदामा पै कीनी मर्जी, मन्दिर चिनाते देखा॥ ५॥

राग—सोरठ : भजन

विट्ठल वाला आयाँ ही बिगड़ी बने॥ टेर॥
तुमरी रजा से बेदर पहुंचा बाबूराव कने।
श्रीमान लख हाल गरीबी कड़वा बोल्याजी मने॥ १॥
भागी पुरुष का सब कोई संगी गरीब की कौन सुने।
गरीब नवाज दीन के बन्धु तुम कोई श्रुति भने॥ २॥
सच है निर्धन को दुनिया मे कोई नांय गिने।
कह नाथू छीपी भक्तांरी अब है शरम तने॥ ३॥

राग—माभ

हमें तो भरोसो भारी थारो भगवान ॥ टेर ॥
जन्मतही करवायो पय पान, दन्त आवत दिया अन्न तृण दान ॥ १ ॥
विष्णु विश्वम्भर धाता सुजान, सर्वाधार जगजीवन प्राण ॥ २ ॥
भक्तांरा भीड़ी करुणा निधान, दीन दयाल गावे वेद पुराण ॥ ३ ॥
कहे नाथू छींपी जन के मान, कीज्यो प्रभु नामा के मगल आन ॥ ४ ॥

राग—कालगडा

विट्ठल कहाँ विलम्यो ले ओटोरे ।
कहां सोलह सहस्त्र मेला पुन पुनः जाके लोटो ॥ टेर ॥
कहां शेष पर सुख फरमायो लेत नींद को झोटो ॥ १ ॥
कांई अमोलख भूषण खरीदे रेशम साड़ी गोटो ॥ २ ॥
कहा हमारी बेर तिहारो पड़्यो खजाने टोटो ॥ ३ ॥
ऐतो सरतन नहीं तो हेरियो क्यों यो सम्बंधी मोटो ॥ ४ ॥
मुख छिपाय रह गयो पण्डरपुर मोय धोखो दे खोटो ॥ ५ ॥
सीख्यो दगो देवणो, हटाणे जालन्धर को सोटो ॥ ६ ॥
कह बली को पाठ पठावन बढियो रूप धर छोटो ॥ ७ ॥
दाम सेठ सुत दास मै स्वामी तू नन्दजी को ढोठो ॥ ८ ॥
कह नाथू दरजी नामा को काम यो आप परोटो ॥ ९ ॥

तर्ज · परशु पीच आवन की ज्यो कही

रतिवर सुख जन को न चाहो हरि निठुराई कैसी है तेरी ॥ टेर ॥
शम्भु को विष रमा वरी खुद बलि पाताल दिये टेरी ॥ १ ॥
रचो स्वयम्वर नारद मुनि को, शूपनखां आई ब्याहन को,
हँसी उड़ाई बहुतेरी, नकटी उसे करा गेरी ॥ २ ॥
भूमि भार शेष फिर पोढो रखते पास गरुड़ बेरी ॥ ३ ॥
लक्ष्मी वामा पुरुष आप खुश मौज कर जिन्दगी केरी ॥ ४ ॥
कह नाथू छींपी नामा मंगल में करते रह देरी ॥ ५ ॥

पद इसी चाल मे

प्रभु सूत्रधार हम नाट्यकार मरजी अनुसार ही खेल करा ॥
सद धर्म करा बद कर्म करा कुल शर्म करा चाहे फेल करा ॥ १ ॥
सन्मान करो अपमान करो कल्याण करो मति जेल करा ॥ २ ॥

तन जेर करा मन सेर करा जन बेर करा गन मेल करा ।। ३ ।।
हमारी जो घटे तुमरी सो घटे नाथू छींपी रटे कांई केल करा ।। ४ ।।

दोहा—विट्ठल पोढे महल में श्री रुक्मणी साथ ।
नामदेव की विनय सुन जगे पुण्डरी नाथ ।। १ ।।

राग मारू

जगे पुण्डरीनाथ गाथ पुलकात चित उमगाई ।
धोती रेशम की कोर अगरखी खीनखांप सजवाई ।। १ ।।
स्वर्ण कड़ा कडोरा डोरा मूंदड़ी रतन जड़ाई ।
सिरमेंदील जरतुरी किलगी सेली हदी सुहाई ।। २ ।।
तुरग सवार हो बार भये जब पाय लिया भरणाई ।
क्षमा क्षमा कर राणी रुक्मणी बोली मुसकाई ।। ३ ।।
छांन चुपके कहाँ साँवरा कीनी आप चढाई ।
भूमि भार क्या भीड भक्त पै धम के आग तवाई ।। ४ ।।
कहे विट्ठल नामदेव लग्न की कु कुमपत्नी आई ।
जास्यां बेदर नगर जीमस्यां षट्रस पच मिठाई ।। ५ ।।
भूल गये प्रभुता के सुख में करदी देर वृथाई ।
कारज पर पूगा नही तो घट जावे भक्त बडाई ।। ६ ।।
सुनत बचन फिर कही रुक्मणी धन्य धन्य यदुराई ।
इष्ट मित्र कुल छोड अकेला जाणे की ठहराई ।। ७ ।।
बसे द्वारका बलदाऊजी ठाड़े आप के भाई ।
सोलह सहस्र अष्ट पटराण्यां उनकी कौन सहाई ।। ८ ।।
यह सम्वाद सुनत सत्यभामा भाषन कर चतुराई ।
माखन चोर ज्यों कंसे अकेला चाले मुख छिपाई ।। ९ ।।
कृष्ण सत्यभामा की बात सोलह सहस्र सुनपाई ।
कहे नाथू छींपा सब सजके प्रभु संग चलन उमाई ।। १० ।।

राग—सोरठा मलार भजन

नामा भक्तरे ब्याव माँहि आज म्हाने हो ले चलो श्री वृजराज ।। टेर ।।
सत्या सत्यभामा कालदी जामवंती भरी लाज ।
भद्रामित्र बिदा लक्ष्मणा रुक्मणी सिरताज ।। १ ।।
सोलह सहस्र सौ आठ पटरान्यो हाजिर भई सजसाज ।
चन्दा ढिग तारा ज्यूं चमके किरत्याँ को सो समाज ।। २ ।।

गास्यां गीत प्रीतकर जनपर करस्यां रीत रिवाज।
नेग चार सवागनियांका नामदेव के काज ॥ ३ ॥
लेस्यां पग लागणा समदण से गा गाली सुरसाज।
कहे नाथू छीपो भक्तांकी पार लगेगी जहाज ॥ ४ ॥

राग पद इसी चाल मे

नामा भक्तरो व्याव छै अनूप चालो तो बणाल्यो सेठानी स्वरूप ॥ टेर ॥
गोविन्दसिंह राव बहादुर है नौ सौ गांवरो भूप।
हिम से माल खरीदा गहरा मंदा शक्कर तूप ॥ १ ॥
दाम सेठ रोकड़ की कूची गये मेरे को सूप।
विलखे भक्त मुझ बिना अगाड़ी काज करूं तदरूप ॥ २ ॥
नामदेव के सासरिये में प्रभुता रखजो छूप।
हाँस वचन समधीका सुनकर सरमाज्यो मुख चूप ॥ ३ ॥
जल्दी करो तैयारी सारी रथ बैला गई जूप।
देर हो गई दूर है बेदर चढने लागी धूप ॥ ४ ॥
कहे नाथू छींपी भक्तां का धुन रहता है गूप।
लोक दिखाऊ बात पर रीझें मूढ़ गिरे अन्ध कूप ॥ ५ ॥

दोहा—सोलह सहस्र सौ आठ प्रिया, सोलह सज शृंगार।
सोलह कला के संग भई, सोलह आना त्यार ॥ १ ॥
सोलह सहस्र सौ आठ की, सोलह कला के साथ।
सोलह सज छड़ी छत्र चंवर, सोलह मुख जैं हाथ ॥ २ ॥
हरि भक्तांरे कारणे, गवने साज सजाय।
प्रभु इच्छा लखी सूचना, करे नारद ऋषिराय ॥ ३ ॥
चहु चपलासी सुन्दरी, धन सम कमला कंथ।
स्व तुरग सजके चले, बेदर नगरी पंथ ॥ ४ ॥

भजन नारद का

लगन लागत ही मगन भया मन नारायण तत्सत है रे बाबा ॥ टेर ॥
यह ससारी अद्भुत भ्रम का कर्त्ता अद्भुत गत है रे बाबा ॥ १ ॥
भये है भरम-भरम को भारी आदि जुगादि लत है रे बाबा ॥ २ ॥
नर नारी जन चोरासी तन भेद यह लीला कृत है रे बाबा ॥ ३ ॥
कहे नाथू छींपी भ्रम तज के भज सोही हो भगवत रे बाबा ॥ ४ ॥

राग खमाच वचन रुक्मणि का विट्ठल भगवान से

थोडा धीमा हाँको जी रथ भगवान् ॥ टेर ॥
सब शृंगार सज कर हम आइ खुशी लग्न को मान ॥ १ ॥
पवन वेग तुरी हाँकत हिलका लागत हिया डरान ॥ २ ॥
नामदेव के विवाह का मगल किस विध होवे गान ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे मझलां ले चलो जान ॥ ४ ॥

वचन विट्ठलका रुक्मणी से

धीमा कसे हाँका ए रुक्मणी नार, धीमा कैसे हाँका० ॥ टेर ॥
बेदर नगरी दूर घणी है लग्न को होत अंवार ॥ १ ॥
दाम शेठ सुत नामदेव जन ठाडो करत पुकार ॥ २ ॥
अवसर पर पूगां नही नामा रूठ करे तकरार ॥ ३ ॥
दरजी नाथूराम पियारे भक्तां हित अवतार ॥ ४ ॥

दोहा—मान बढावन भक्त के, चले श्री पॉडुरग ।
नामदेव विवाह को होय रयो परम उमग ॥ १ ॥

राग—मारू

हो रयो परम उमग सग ले आठ सहस्त्र सौ रानी ।
विट्ठल सेठ भेष खुद कीना सुन्दरी या सेठानी ॥ १ ॥
नारद कहे से सुरपती आज्ञा कर नर पोशाक सजानी ।
हो वाहन असवार पधारे इन्द्र सहित इन्द्रानी ॥ २ ॥
तेतीस कोटि देव सिधारे गन्धर्व परी अगवानी ।
धाये सत्यलोकी हसारूढ ब्रह्म साथ ब्रह्मानी ॥ ३ ॥
साठ हजार ऋषि ले सागे आये शम्भु भवानी ।
दस लख लेय मूसा सिधाये गणपत ऋद्धि सिद्धि दानी ॥४॥
छप्पन कोटि यादव ले गवने हलधर मूसल पानी ।
नारद शारद बीन बजाते गाते कथा पुरानी ॥ ५ ॥
उतरे सुरगण गगन मण्डल से छिपे रवि सन्ध्या समानी ।
शोभा देत सुरगण थल आवत ज्यो तारा अस्मानी ॥ ६ ॥
पहुचे बेदर नगर दलमल शेष देख दल ज्ञानी ।
छप्पन कोटि दस लाख सठ सहस्त्र तीन से गिनती आनी ॥७॥
धर्मशाला जा मिले भक्त से कृष्ण और महारानी ।
प्रथम दर्श कर जन्नादासी चरण पड़ी अकुलानी ॥ ८ ॥
करुणा कर जगदम्ब जन्ना को अपने हिये लगानी ॥

कनक चूड़ चोली जरकस की कृपा कर पहरानी ॥ ९ ॥
धोती जोड़ा मदील सोनारी कठी प्रभु बक्षानी ।
फिर दागीने कितने चाहिए कहे कृष्ण मृदुवानी ॥ १० ॥
जन्ना जोर कर २ विनय प्रभु करो भक्त सन्मानी ।
कहे नाथू छींपी भक्त तुम हो सदा कल्यानी ॥ ११ ॥

भजन . वचन जन्ना बाई का

आये आये जी सावलसाह भक्ता कारणे जी ॥ टेर ॥
नामा भक्त की भक्ति बढाई, बड़े ठिकाने करी सगाई ।
भेजे बैल चढाई ससुर के बारने जी ॥ १ ॥
माली हाल गरीबी चीना बाबू बाग रहणे नहीं दीना ।
धर्मशाला में रीना रात गुजारने जी ॥ २ ॥
दीन के हेत दयाल पधारे देवी देव जानी ले लारे ।
खुश पुरजन भये सारे उच्छव निहारने जी ॥ ३ ॥
कह नाथू छींपी पूसण जन्ना कर बगसे पट भूषण ।
लाये गणपत मूसन बिघ्न बिडारने जी ॥ ४ ॥

दोहा — विलम्ब से आये लख हरि नामदेव गये रूठ ।
विट्ठल कर मनावणा, आठो सिद्धि ठूठ ॥ १ ॥

राग—बिहाड तर्ज—थ्यानीडा जगना

प्यारो नामो तो मने ना मना रहे जी दीनानाथ । टेर ।
मदील जरकस जामा भूषण धरे सुहाय कनेना ।
भोला भक्त रूठिया कैसे मुख से कछु भनेना ॥ १ ॥
कहे नामदेव हठ प्रभु मेरा देखा बाल पनेना ।
जब तो गर्म दूध प्रभु पिये फिर भी विनय सुनेना ॥ २ ॥
सुनली विनय शीघ्र मै आयो भूलूँ घड़ी तनेना ।
जान सजाता देर भई बिन जान बड़ाई बनेना ॥ ३ ॥
जानत हो क्या जगत स्वार्थी गरीब को कोई गिनेना ॥
कह नाथू छींपी बिन तपिये कचन तेज जनेना ॥ ४ ॥

वचन नामदेव का राग—हमीर
तर्ज . मोय बिन फन तन मन डसगई बन

मेरे आठो याम सुख धाम शाम के नाम को आसरो ॥ टेर ॥
ना चाहिये जरकस पट भूषण सुन्दर सासरो ।
दरसे नीलकण्ठ फल विषय विष के ग्रासरो ॥ १ ॥

मोह असुर मन लख मोहनी की मुख मंद हांसरो।
खोये अमृत सागर से निकसायो खासरो॥ २॥
जाच्यो लगन दाम पितु चित कर भये सन्यासरो।
चाह नहीं मोय कामरूप यम फंद है फांसरो॥ ३॥
कह नाथू छींपी कुल जन्म्यो प्रण करे दासरो।
मुझको भक्ति दे तूही रह रसियो रासरो॥ ४॥

पद इसी चाल मे वचन कृष्ण का

पाले गृहस्थ धर्म से हरि भजे सो ही साधु जन पूरा॥ टेर॥
काम रूप संग्राम क्षेत्र नर नारी दल रूरा।
ऋतु पै रति युद्ध करो जिन्हीं से हथलेवा जूरा॥ १॥
जती सती संग फिरे देखता देव कई झूरा।
मुक्त द्वार मानस तन पावन कटे कर्म कूरा॥ २॥
पर उपकार प्रसूती शुचि हो करते भट भूरा।
धन्य उसी का आना बजाय गये जीत कारण तूरा। ३।
मांग खान धरे सांग भागते कायर ज्यूं दूरा।
दरजी नाथूराम कहे वे है झूठ फितूरा॥ ४॥

दोहा—मदन रिपु गिरिजा बरी, वेद रजा परमांण।
गंगा धर विष पी गये, नील कंठ भगवान॥ १॥
धरम नीति युत ब्याह से, कछु नहीं होय बिगार।
एक पति पत्नी व्रत रखे मिले पदारथ चार॥ २॥
प्रभु मनावत भक्त को, आये कुल को त्यार।
नानो भरियो मायरो, बहन आरत्या दार॥ ३॥
प्रभु रूठे कोई ना मिले, तूठे सब अनुकूल।
नाथू कर लगे मूल तो, जुदे न दल फल फूल॥ ४॥
दाम शेठ आज्ञा दई, आये सेन निहार।
हरी डाली कर ले चले, मांडे बधाई दार॥ ५॥

भजन तर्ज जवारो मोरी माना नाही रे

धना भक्त सगारा जान बधाओ सेना नाई जी॥ टेर॥
क्यू जी ख्वास जाति का कर्म लग्न की करो सूचना।
क्यू जी हरी डाली ले हाथ सुकन यह मांडे पूछना।
समदी लख हर्षित हुए दे रुपया सिर पाग।
समदन गारी गात हास रस मन मे भर अनुराग।
बना की सुभग बधाई जी॥ १॥

पधू जी धन साधु सत्कार, द्वार पर बहुत हिलाया।
पधू जी नायन नगर दार, करत होगी चित चाया।
आप मगांग ग्याग हो यया देवो इनाम।
वचन गेम मत मानज्यो कहता नाथूराम।
नाम रट पावो बडाई जी ॥ २ ॥

दोहा आभूषण पट साज कर, दास सेठ श्रीमत।
मिलनी करन श्रीमंत सूँ, चले सग भगवन्त ॥ १ ॥

राग मार

चले सग भगवत मत हित बने मुनीम बनवारी।
सोलह सहस्र अष्ट पटरानी सजी जान हद सारी ॥ १ ॥
गाम गाम जाय कर कीनी बाबूराव के द्वारी।
विट्ठल सेठ पिछान के बोले बाबूराव पद धारी ॥ २ ॥
इतने गाथो वराती सम्बन्धी कोन ये सग तुम्हारी।
उत्तर दीना श्री विट्टल कुल सेठानी यह हमारी ॥ ३ ॥
तुम्हारे सागे मुनीम ज्यू दिगपति है गुमाश्ता भारी।
श्रीमान दास सेठा के हम सब आज्ञाकारी ॥ ४ ॥
य द्रो बाबूराव बहादुर नौ सौ गांव अधिकारी।
भेंटो सम्बन्धी पाया बरावर कर-२ खातर दारी ॥ ५ ॥
गुण विट्ठल का वचन निहारी समधी नजर पसारी।
तीन कोस तक झुड वराती निज घर पावण चारी ॥ ६ ॥
बाबूराव लगे थर २ कांपन कहा देऊ जान उतारी।
लाग्यो फिकर इज्जत को दिल भई मूर्छा की बीमारी ॥ ७ ॥
मोई-२ सेठ कुटम्बो उठा किये हुशियारी।
गोविन्द सेठ पद राजा बाबू यू कांई हिम्मत हारी ॥ ८ ॥
मेरा माल खरीद धरा है फिर आ सके बाजारी।
कन्या विवाह में धन लाग्योडो मिले चोगणो अगारी ॥ ९ ॥
पूर्ण दान कर उत्तम सागर लग चाई साठ हजारी।
ऐसी धर्म की देखी बेटी बेचे नर्की अनारी ॥ १० ॥
विवाह का मालिक वृद्ध विनायक चिन्ता हरसी सारी।
शीघ्र पूजोगन मगन गुरु करो होत लग्न की अवारी ॥ ११ ॥
सुनके वचन धीरज धर बाबू भज गनपत शुभकारी।
चौट पीना चांवल जाति में आये कई न्यूत्यारी ॥ १२ ॥
पीठी हल्दी कर आदि भेजी नामदेव हितकारी।
तेल बान वनी के चढाये गान सुवागण नारी ॥ १३ ॥

दोनूं तरफ ही बना बनी के विवाह की होत तंयारी।
कह नाथू छींपी कुल मणिके जस मुद मगलकारी ॥ १४ ॥

दोहा—सिह विषय सत्पुरुष बचन, हट हमीर फल केल।
फले एक वर इस लिये, चढे नारी तन तेल ॥

पद राग हमीर तर्ज—मैं तो जोगन बनूंगी तुम्हारे लिये

वचन सवागणियो का मॉडा की तरफ से ॥ टेर ॥
बनी नीकी बनो ब्याहन के लिये, ज्यूं फूले धरा श्रावण के लिए ॥ १ ॥
धन मोज जाति के कर्म किए, लक्ष्मी सी छबि छावन के लिए ॥ २ ॥
ऋतुपै पति संग लो काम हुआ जण ओर सकुल पावण के लिए ॥ ३ ॥
मुद मुक्त अन्त सत्लोक बसो सृष्टि पै हुक्म चलावन के लिए ॥ ४ ॥
कह नाथू छीपी धन जन्म जभी शुभ चारों फल पावन के लिए ॥ ५ ॥

दोहा—नाम देव को उवटणो, पटराण्यां के हाथ।
होत प्रेम प्रभाव से, आनन्द मगल गात ॥

पद इसी चाल मे तर्ज—मैं तो जोगन बनूंगी

श्री नामा बने है नवल बना, मोय लागे सखीरी प्यारा घणा ॥ टेर ॥
ब्रह्मचर्य सनत्कुमार पना हरि भक्ति शिरोमणि ज्ञान घणा ॥ १ ॥
श्रुति सार रकार मकार छना, चटशाल प्रह्लाद समान भना ॥ २ ॥
अगद ज्यूं गुण कहे शेष फना, उद्धव ज्यू ध्यानी सुख मना ॥ ३ ॥
बीजे भक्ति ज्यूं खेत धना, निपजे चारो फल मुक्त कना ॥ ४ ॥
कहे नाथू छींपी नामा तना, जस गावत थारी दासी जन्ना ॥ ५ ॥

दोहा—नाम देव तन उवटणो, करा स्नान सजे साज।
धोती जामा रेशमी, सिर मदील जरी ताज ॥ १ ॥
करण कुण्डल कचन कड़ा, डोरा जड़े पुखराज।
नामदेव छवि देख के, काम देव रहे लाज ॥ २ ॥
उच्चैश्रवा सम तरग पर, भये भक्त असवार।
गोणा माता हॅचल दिये, शोभा शेष अपार ॥ ३ ॥
सुहागनेग पटराणियाँ करे, गान शुभ गीत।
कियो नामा को आरत्यो, आऊ वहन पुनीत ॥ ४ ॥
दुलवा पर करे वारणा, सब देवा की नार।
सफल जन्म जन्ना करे, नामा रूप निहार ॥ ५ ॥

पद : राग तर्ज—कूने उगर की पीनेरे

श्रीनामदेव हरिजन बनड़ा पर बहु धन वारो रे ॥ टेर ॥
सवागण गोणा मती जना हैं लाडला पाँडुरंग रे बना है,
नामा रूठ्या मुश्किल मना है बना है बना निहारो ए ॥ १ ॥
बोले भीम मुता मृदुबानी आवो सोलह सहस्र सब रानी,
करो न्योछावर निज निज पानी, खुलो कुबेर भण्डारो ए ॥ २ ॥
हीरा मोती पन्ना जवार, मणिया मोहरा रत्न कलदार,
रुपया टक्का बेशुमार, भर २ मूंठा उछारो ए ॥ ३ ॥
नाथू दरजी चित्त जमावो, मोर छड़ी की झड़ी लगाओ,
दीन जनों का दरिद्र मिटावो, ऐसी सुयश अपारो ए ॥ ४ ॥

दोहा—जान चढ़ी हरि भक्त के, चले देव सब साथ।
नाना बावल जाति गण, मुखिया पुण्डरी नाथ ॥

राग—मारू

मुखिया पुण्डरी नाथ हाथ ले धन रोकड़ की थैली।
करे निछावर भर २ मूठा लूटे प्रजा होय मेली ॥ १ ॥
हनुमान अगवाड़ी हो चपड़ास नाम की लेली।
भक्तवत्सल भगवान की जय धुन माज गये बद फैली ॥२॥
नृत्य गायन कर गन्धर्व किन्नर रम्भा उर्वशी छेली।
अनहद बाजा बजे अगाऊ मधुरी राग सुरेली ॥ ३ ॥
घूमत हाथी बाँके बराती बात करे मन मेली।
देखे जान सरावें गोखाँ खड़ी कई अलबेली ॥ ४ ॥
दुलवा सहित पहूंचे सब जानी बाबूराव की हवेली।
कह नाथू छींपी नामा निरखे सुन्दर सखी सहेली ॥ ५ ॥

भजन : तर्ज—तू करिये समदण आरत्यो जी

सुन्दर राजा बर रा उबाँ दुखे पाव,
तूं कर हे समदण आरत्यो जी ॥ टेर ॥
थारे आरतियाँ में श्री विट्ठल को नाम ॥ १ ॥
थारे आरतियाँ में मोक्ष धर्म धन काम ॥ २ ॥
इस आरतियाँ मे खुश होसी धनश्याम ॥ ३ ॥
यो आरतियो सुन गावे नाथूराम ॥ ४ ॥

पद : तर्ज—बना तोरण आय बिराज्योरे गज कामणियो

बना कामण करबा आईजी सज कामणियां,
बना नेह को डोरो ल्याई जी गज कामणियाँ ।। टेर ।।
शेर मत की पाल बाँधू, गेर मत की चाल बाँधू,
बाँधू धर्म सदा सो जी अज ब्राह्मणियाँ ।। १ ।।
दम्पति के मन प्रेम बाँधू, एक पति पत्नी नेम बाँधू,
बाँधू कुल मर्यादा जी लज ग्रामणियाँ ।। २ ।।
पूर्ण तेरा इष्ट बाँधू, रीति प्रीति शिष्ट बाँधू,
बाँधू जस कह नाथूजी भज नामनियाँ ।। ३ ।।

भजन राग—तर्ज

ऐसा कामण नेमी नामदेव न सोवे, उबा इन्द्रादिक सुर जोवे राज ।। टेर ।।
नेमी कामण रघुवरसा लख पर नारी नहीं मोवे।
पर नारी नही मोवे जारण शूर्पणखा पत खोवे ।। १ ।।
नेमी कामण से पंच यज्ञ फल बीज धम का बोवे।
बीज धर्म का बोव जिनसे कलिमल मन का धोवे ।। २ ।।
नेमी कामण से सुर अवतारी लव कुश से सुत होवे।
लव कुश से सुत होव जिनको सुयश मोती पोवे ।। ३ ।।
कह नाथू छीपो कामण बिन मूरख छाछ बिलोवे।
मूर्ख छाछ बिलोवे वह तो भव मे नाव डुबोवे ।। ४ ।।

भजन : तर्ज—बन की लता लागे प्यारी

नीको आरत्यो संजोय नामदेव के कारण ।। टेर ।।
हाँ ऐ एक तो सती जती जायो दूजो गाधी कुल ।। १ ।।
हाँ ऐ एक तो बाल ब्रह्मचारी दूजे हरि पद जोय लोय ।। २ ।।
हाँ ऐ एक तो रूप रंग रूड़ो दूजे भूषण पट सोय ।। ३ ।।
हाँ ऐ एक तो सोलवों सोनो दूजा महक कसबोय ।। ४ ।।
हाँ ऐ एक तो नाथू यश गावे दूजो परमारथ होय ।। ५ ।।

दोहा—सामेला तोरण तलो, नग से भीतर पेठ।
पूरब मुख चवरी कने, बना बनी गये बैठ ।। १ ।।
ब्रह्म सृष्टि आदि रची, अविद्या मूल की साख।
संचा चातुर खान से, किये चौरासो लाख ।। २ ।।

किये चौरासी लाख काम अविलाख रूप नर नारी।
कला सोलाई बद जीव जुगल्या हो जग विस्तारी॥ १॥
वासुदेव सकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध चतुर खिलारी।
चौसर विश्व दैव पाशा कर सरजन की दिल धारी॥ २॥
लाख वर्ष के बाद जीवाँ की डिग्री नीत विकारी।
श्वेत केतु की महतारी ने पकड़ी एक अनारी॥ ३॥
प्रभु रजा से सुतय क्रोध भयो लगी ऋषि को खारी।
मानस तन स्यार पेटा की सद्गति से फल चारी॥ ४॥
सोलह कला युत मुक्त धर्म भो सोलह सस्कारी।
सोलह आना अर्थ व्यवहारा काम सोलह शृंगारी॥ ५॥
अपनी कन्या देनी और को लेनी पर की दुलारी।
सो भी शुद्ध कर वेद मंत्रों से हवन विधि व्रत द्वारी॥ ६॥
उतम नेम यह कन्या दान का दिवि जाय इकवारी।
अबला भोग पुरुष तन भोगी ज्यू जीव देह आ धारी॥ ७॥
ब्याहित पति पत्नी के सग से उत्तम कुल अवतारी।
जब परतक बिरजावतार होय राजनीति पर चारी॥ ८॥
उसी वश मे बेणु भूप होय धर्म मर्यादा बिगारी।
उस नृप को हत ऋषि तन मथ फिर किये पृथु यशकारी॥ ९॥
बांधी धर्म मर्यादा पीछी प्रजा भई सुखियारी।
उसी सनातन धर्म रीति से होत लग्न शुभकारी॥ १०॥
लात पात आदि दोषो से रहित यो शाहो विचारी।
नामदेव राजा कंवरी को मगल विधि अनुसारी॥ ११॥
गनपति दिग्पति नव ग्रह पूजे खुश भये देव अपारी।
गरुड़ अहि के अन्तर पट कर सुर करे जय-२ कारी॥ १२॥
प्रगटे शम्भु नरसिंह भांति आदि ब्रह्म खम फारी।
दाहणे भाग पुरुष बनाये वाम की वाम कुमारी॥ १३॥
जभी नार वामे अग बैठन ब्याह में प्रथा निकारी।
प्रेम नेम दृढ़ रखन करावे अग्नि देव अगारी॥ १४॥
जिन्दगी मे दम्पति व्रत खड के पर नर नार हो प्यारी।
निश्चय कुंभी पाक मे ताकु अग्नि कोप धिक्कारी॥ १५॥
सिया राम ज्यूं अखण्ड सत्य व्रत नेह रखे सदाचारी।
कह नाथू छींपी कुल भूषण जोड़ी पर बलिहारी॥ १६॥

गजल तर्ज—आया करो इधर भी मेरी जान कभी कभी

मै आऊ वाम अंग बना, दो सात बचन जभी ॥ टेर ॥
प्रथम ऋतु अनुसार चाहिए खाना पहनना।
दूजे मेरी सलाह से खरचो धन बढ़े तभी ॥ १ ॥
तीजा यज्ञादि कर्म देव पूजन सग रक्खो।
चौथा विदेश जात चिन्ता घर की हो सभी ॥ २ ॥
पचम पशु आदि लेन देन पूछ कर करो।
षष्टम् सहेली बीच मान मारो ना कभी ॥ ३ ॥
सप्तम तजो परनार को जान जैसी शूर्पनखा।
कहत नाथू राम सीयसी कीर्ति छबि ॥ ४ ॥

गजल इसी चाल मे

मै देऊ वाम अग बनी, वो सात बचन तभी ॥ टेर ॥
प्रथम बित अनुकूल करो खाना पहनना।
दूजा पर की होड़ हट कीजे ना कभी ॥ १ ॥
तीजा मेरी आज्ञा मुजब बर्ताव नित करो।
चौथा अश्लील गीत गात कीजे ना बेढबी ॥ २ ॥
पचम पर घर पति बरजत ना जावणा।
छठा दूती कुनार कुसंग छोड़ना सभी ॥ ३ ॥
सप्तम सिया दमयन्ती ज्यों रख शील को बचा।
कहत नाथू छीपी कुल मणिरूप हो छबि ॥ ४ ॥

दोहा—दुलवा दुलवी परस्पर, कर रहे बचन मजूर।
वामे अग बिराजी बनी, दाहिणे बना गुण पूर ॥

राग—माड़

दाहिणे बना गुण पूर हूर इन्द्र से नूर बरसाते।
राजा कँवरी नामदेव रति काम देव दरसाते ॥ १ ॥
गठ जोड़ा कर जुड़ा विधि से सज्जन लख हर्षाते।
वेद मन्त्र से अग्नि देव में घृतादि सरसाते ॥ २ ॥
सप्त पदी युत भँवर भारिया भरता कहाते।
अग्नि देव के सात परिक्रमा नेम का प्रेम कराते ॥ ३ ॥
नामदेव सग राजा कंवरी शोभा खूब सजाते।
मानो प्रदक्षिणा ध्रुव मण्डल के रोहिणी चन्द्र घुमाते ॥ ४ ॥

लगन सस्कार शुद्ध दम्पति कुंवार दोष उतराते।
ज्यूँ शिव शक्ति की प्रतिमा को प्राण प्रतिष्ठा जताते ॥ ५ ॥
कुल पिरोथ भाट जागा कथ सुयश छन्द में गाते।
गाधिज सदा व्रत गोत्र के शाखोच्चार सुनाते ॥ ६ ॥
ब्रह्माणी लग्न भये श्रुति युत दुन्दुभी देव बजाते।
कह नाथू छीपो कुल मणिका मगल मनाते ॥ ७ ॥

दोहा—हथलेवो छूटत समय, मायत दे धन दान।
शिव सेवक हित खर्च ज्यू, दिये पुत्र होय मान ॥

राग आसावरी टोडी तर्ज—चले गये दिनके दावनगी

सुघड़ बनो जीत्यो २ जी जीत्यो ढोल घुड़ाय ॥ टेर ॥
यो भव सिन्धु अथाग है रिपु गढ़ कठिन लखाय।
नेम प्रेम की पाज से पार फतेह हो जाय ॥ १ ॥
शक्ति आदि पुरुष की अर्द्धांगिनि कहाय।
मेल रहे जरा सिन्धु ज्यू विजय जगत में पाय ॥ २ ॥
राम रावण को वध कियो सिय को दुख मिटाय।
सीता महा रावण हत्यो रघुवर की करी सहाय ॥ ३ ॥
सावित्री सत देख के यम सब सुख बगसाय।
त्रिगुणातम शिशु बन गये मान अनुसूइया माय ॥ ४ ॥
ब्याहित पति पत्नी तनु कन्या वर विधि ब्याय।
कह नाथू छीपी कुल भूषण धर्मपाल तिर जाय ॥ ५ ॥

दोहा—नामदेव राजा बनी, पहुंचे सब जनवास।
नृत्य गायन कर अप्सरा, ज्यू वृन्दावन रास ॥

भजन : तर्ज—मोटर की सेर करादे २ बालमा रे

ईश्वर से प्रीत लगाले लगाले मनुवा रे। ईश्वर ॥ टेर ॥
सुर दुर्लभ नर देह को कर्त्तव्य करके लाभ उठाले उठाले मनुवा रे ॥ १ ॥
भँवर सग मे कोट भँवर होय खुश्बो को मोज उड़ाले उड़ाले मनुवा रे ॥ २ ॥
कह नाथू छींपी भक्त सम चारों पदारथ पाले पाले मनुवा रे ॥ ३ ॥

भजन : तर्ज—लहर दार विछुडो

प्रताप विष्णु भक्ति को, सब वेद पुराण स्मृति माहि गायो सा सांवरिया। टेर।
ध्रुव पद लीनो मुक्ति को, वैकुण्ठ के दरवाजे तें जस छायो जी सांवरिया ॥ १ ॥

कुमार ज्योति जगती को, कर दर्शन घट के माहि आनन्द पायोजी सांवरिया ॥ २ ॥
प्रह्लाद विश्व विरक्ति को, मन दृढ़ कर भज नरहरि को खम्भ प्रगटायो जी सांवरिया ॥३॥
फद भूठो विषयाशक्ति को, कह नाथू छींपी नामदेव यश भायोजी सांवरिया ॥४॥

भजन : तर्ज—नीचे कमंद लटकाजारे

हरि बड़े भक्त हितकारी रे मत भूले मना ॥ टेर ॥
कोई पूर्व पाप प्रगटावे जब विपत भक्त पर आवे।
जब आरत अर्ज सुनावे जी, देवे बिगड़ी बना ॥ १ ॥
गज डूबत प्यादा धाये द्रौपदी की चीर बढ़ाये।
नरसी के भात भराये जी, पाये मोती घना ॥ २ ॥
सुदामा द्विज के द्वारा दिये तदुल आनी धारा।
जांका कचन का चौबारा जी, जड़े हीरा पन्ना ॥ ३ ॥
कह नाथू छींपी नामा, भये प्रेमा श्री घनश्यामा,
किये मगल पूर्ण कामा जी, भये उत्सव घना ॥ ४ ॥

भजन तर्ज—काहे को डालो हो रग श्याम मेरे सुन बन्शीवारे

काहे को चिन्ता करे मन बावले हरि जग को पाले। काहे को ॥ टेर ॥
देही देई जिन देही दई है नाम विश्वम्भर देव रे समदृष्टि न्हाले ॥ १ ॥
दन्त नहीं जब दूध दियो लब दन्त होयत तृण नाजरे निपजा बरसाले ॥ २ ॥
कण कीड़ी को मण कुञ्जर को अनड़ पंख नभ पातरे सातु सुण्डवाले ॥ ३ ॥
दरजी नाथूराम भरोसे ईश्वर घर पके खीचरे बिन उरे उकाले ॥ ४ ॥

भजन : राग—जोगिया
तर्ज : रस मजा तिहारी बोली मे

फल चतुराई हरि की भक्ति में ॥ टेर ॥
धर्म रूप नारद बजरंगा पाई मौज विरक्ति में ॥ १ ॥
नार सुदामा की धनवन्ती भई तन्दुल की जुगती में ॥ २ ॥
कामानन्द छबी को ब्रज बनिता मोहन की आसक्ति मे ॥ ३ ॥
दरजी नाथूराम स्वर्ग ध्रुव ले परमानन्द मुक्ति में ॥ ४ ॥

भजन : राग—माड

तर्ज—काई थारो मायलो रे गोपाल

थारी गत अद्‌भुत जी गोपाल छिन में करो कंगाल निहाल ।। टेर ।।
बलि यज्ञ कीना स्वर्ग लेन को पठा दिये पाताल ।
सुदामा टूटी टपरी ज्यों कंचन महल विशाल ।। १ ।।
रावण या कौरव दल बांके क्या पाण्डव कपि भाल ।
धर्मानन्द सुग्रीव के पड़ी रण में जयमाल ।। २ ।।
दाम शेठ छीपा कहाँ कहाँ बाबू भोपाल ।
उत्सव भयो शिशु लगन को रुक्मणी कृष्ण मिसाल ।। ३ ।।
छीपी नाथू विनय सुनिये दीन दयाल ।
कृपा पात्र कभी मोय करो शरणागत प्रतिपाल ।। ४ ।।

पद राग ठुमरी की

तर्ज—नेनारा लोभी किंकर आऊ थारे पास

नन्दजी का लाला कीकर जाना थारा खेल ।। टेर ।।
कहाँ दामा से छीपी जन कहां बाबूराव पटेल ।। १ ।।
नाम देव को दुलवा बना कर भेजे बिठा कर बैल ।। २ ।।
बिगरी बात जब आय सुधारी सुर जानी ले गेल ।। ३ ।।
निर्गुण रूप से सब जग व्यापे ज्यू तिल मांही तेल ।। ४ ।।
जीब कठपुतली आप नचाते बण नटवरिया छेल ।। ५ ।।
प्रिय पुत्र हित जैसे मायत शिक्षा दे दु.ख झेल ।। ६ ।।
सगुण रूप धर भक्तां को सग रमत मेटन मन मेल ।। ७ ।।
दर्जी नाथू राम पियारे ये सिद्धांत अपेल ।। ८ ।।

तर्ज भजन नाटक की . डगरिया मे डर लागे

ना जानूं प्यारे सांवरिया नजरिया में क्या क्या भरे ।। टेर ।।
कौरव कसादि पतग ज्यूं कोप कटाक्ष जरे ।। १ ।।
विष जल से गौवें मर जीवी कैसा अमो झरे ।। २ ।।
प्रेम दिवानी ब्रज बनिता भई जादू जुलम करे ।। ३ ।।
दर्जी नाथूराम भक्त के दुःख दरिद्र हरे ।। ४ ।।

भजन राग काफी

तर्ज—राम गुण गायले रे जब लग

माधव मोय दीजिये हो यह उत्तम उपहार ।। टेर ।।
अधम पशु पक्षी कीटादि मध्यम सुर नर नार ।
बुझे न काम आग भोगन से तृष्णा बढ़े अपार ।। १ ।।
ब्याहित पति पत्नी व्रत धारी अंश से तन अविकार ।
मिले मुक्त पद मनीश योनि सजे धर्म आचार ।। २ ।।
जाति कर्म पतिव्रत दया मिटे कलिमल अँधियार ।
दर्पण से शुद्ध हृदय दर्शे अन्तर्यामी दीदार ।। ३ ।।
अद्वितीय हो समता अमृत पी छक ले ही उद्गार ।
दर्जी नाथूराम कृष्ण पद सुमिरे बारम्बार ।। ४ ।।

दोहा—नारद शारद अप्सरा, गात भये परभात ।
कँवर कलेवा पधारिया, प्रेमी जन ले सात ।। १ ।।
गादी मखमल की बिछी, चन्दन चौकी थाल ।
बिराजे नामा विट्ठल भज, पाते असन रसाल ।। २ ।।
नाम पच भगवान का, लेते पच गिरास ।
बारे सोलह सज सालिया, गीत गात रस हास ।। ३ ।।

भजन तर्ज—मैं तो सुती हती चट जगी रे मन राधे मोहन

राग ठुमरी अथवा सोरठ

थे तो ल्यो नामा जी लाडू, थारे सग श्रीरग पांडू ।। टेर ।।
थे तो ल्यो नामा जी जलेबी, खुश होवे अम्बा देवी ।। १ ।।
थे तो ल्यो नामा जी दोठा, होय सफल हमारी गोठा ।। २ ।।
थे तो ल्यो नामा जी पेठा, शोभा देओ आंगन मे बैठा ।। ३ ।।
थे तो ल्यो नामा जी पेड़ा, नरसिह के भोग लगेड़ा ।। ४ ।।
थे तो ल्यो नामा जी घेवर, राजा बाई रा सिर सेवर ।। ५ ।।
थे तो ल्यो नामा जी फीणी, ज्यामें गहरा घृत चीणी ।। ६ ।।
थे तो ल्यो नामा जी बरफी, दया दृष्टि हम तरफी ।। ७ ।।
थे तो ल्यो नामा जी सीरा, परखो हिये से हरि हीरा ।। ८ ।।
थे तो ल्यो नामा जी लपसी, खुश होव शकर तपसी ।। ९ ।।
थे तो ल्यो नामा जी चावल, रुचिले जगदीशा सॉवल ।। १० ।।
थे तो ल्यो नामा जी इमरती, सब जाणो धर्म समरथी ।। ११ ।।
थे तो ल्यो नामा जी साग नीका, सब गहरा मसाला घोका ।। १२ ।।
कह नाथू छींपी नामा, अवतार भक्त गुण ग्रामा ।। १३ ।।

भजन राग मांड : तर्ज—डीगी मे दीना नाथ

श्रीराजा बाई रा श्याम नामाजी म्हाने प्यारा लागोजी ॥ टेर ॥
गाधिज कुल के भूषण जी प्रिय गोविन्द घर सिजमान,
सोना में मिल्यो सुहागो जी ॥ १ ॥
छींपी सदा व्रत कुल में जी भये सीपी मोती,
उर लाल माल सुवर्ण तागो जी ॥ २ ॥
सुजस तिलक सिर सेवरो जी ब्रह्मचर्य धोती कोर,
जरकशी भक्ति बागो जी ॥ ३ ॥
कह नाथू छीपी धन नामा धन दाम शेठ घर दीप,
पुन्य पूर्बलो जागो जी ॥ ४ ॥

तर्ज : मुकट धर मोर कारे काना दोय दोय बापन को जाम

कॅवर नाम देव जी वो म्हारी पाली रो अर्थ बताय ॥ टेर ॥
सूरज चन्द्र तारा नहीं जी बाला आग न दीप जलाय।
बिन मेथुन नित जग रचे जी बाला किस प्रकार दिखाय ॥ १ ॥

-सपना

नार एक हो नवल सदा जी बाला बर-२ बूढा ब्याय।
प्रसूती अपरम भई जी बाला तो भी बांझ कवाय ॥ २ ॥

-शिव पार्वती

बांझ नार को जी बालको बाला पौढ़े चोवट आय।
चन्द अमावस रेन को जी बाला देख देख हरसाय ॥ ३ ॥

-गणेश

दोय बापन को लाड़लो जी बाला दाई उनके माय।
हस्त दोय पग तीन है जी बाला नखतो बीस लखाय ॥ ४ ॥

-श्रीकृष्ण

मोम का मन्दिर बीच में जी बाला आसण आग बिछाय।
माखन को मुनि बेठियो जी बाला पिव उणियार लखाय ॥ ५ ॥

-गर्भाशय

दोय मुख जिह्वा एक है जी बाला तीन नैन खटपाय।
सकल लोक भॅवतो फिरे जी बाला नार न सन्मुख जाय ॥ ६ ॥

-शुक्रतारो दादुरारूढ़

हस चढे गज के हरी जी बाला गिरी दोय मृग अहि थाय।
कोयल कीर कपोत की जी बाला भार मराल समाय ॥ ७ ॥

स्त्री अग

अरुण नहीं है पांगलो जी बाला सिर नहीं केतु कहाय।
राम रावण नहीं सिया हरे जी बाला नाथू दरजी बनाय।। ८।।

-अगरखी

भजन : तर्ज—मोय पत उठ्यो न बेठ्यो जाय

मोय सत पद को अर्थ बताओ जब जाना सुघड़ अवतारी हो राज।। टेर।।
चतुर चन्द्र मिले एक ठोरा सूरज सुता की किनारी हो राज।
चार चार कीर कपोत कोयल रहे आठ चकोर निहारी हो राज।। १।।

-राधाकृष्ण

दधि रिपु हरि कर लख शिव शके कंपित सिन्धु दुलारी हो राज।
सुर भये मगन असुर लजखाने दिये जसुमति को मुरारी हो राज।। २।।

-भेरणो

गोरे पुरुष परसूती गोरी नर को उर भयो भारी हो राज।
दाई पेट पलार शिशु काढे नर के हो गई नारी हो राज।। ३।।

-दूध-दही-माखन

एक नित कन्या पाँच पति वर बरते बारी-२ हो राज।
सीता के सम दावा रखती ना कोई द्रुपद दुलारी हो राज।। ४।।

-बुद्धि

पान फूल चालीस वृक्ष एक बीस उन्ही के डारी हो राज।
सुघड़ पुरुष क्यो काटे हुये ना पागा ईश किवान्डी हो राज।। ५।।

-रावण

मात प्रताप एक दिन कीनी गज नव सिह असवारी हो राज।
दर्जी नाथूराम कृष्ण पद परसत घटे उजियारी हो राज।। ६।।

-गणेश

भजन तर्ज—बाल बाजे बसरिया अथवा मुकटधारी दर्शन दिखाना पडेगा

राज जँवाई जी रे बाप घणेरा, बाप घणेरा त्रिताप लुटेरा।। टेर।।
म्हारी सगी तन शील उबटना एक बाप होय सगुण प्रगटणा,
सगारे बाप थारे निर्गुण कपटना।। १।।
म्हारी सगी शुद्धाचार स्नाना, एक बाप थारे विधि भगवाना,
सगारे बाप आदि पुरुष पुराना।। २।।

म्हारी सगी सिर सत की आँटी, एक बाप थारे रूप विराटी,
सगो बाप लक्ष्मी पति खांटी ॥ ३ ॥
म्हारी सगी रे सुजस टीको, एक बाप थारे हलधर नीको,
सगोजी बाप कंवर नन्द जी को ॥ ४ ॥
म्हारी सगी रे दृग लाज अंजन, एक बाप थारो राम निरजन,
सगो जी बाप मुनि जन मन रंजन ॥ ५ ॥
म्हारी सगी पति नेह तिलचूमा, एक बाप थारे भगवत भूमा,
सगीरे बाप रमे रूमे रूमा ॥ ६ ॥
म्हारी सगी मिसी शान्त स्वरूपा, एक बाप थारे विश्व के भूपा,
सगा रे बाप विभु परम अनूपा ॥ ७ ॥
म्हारी सगी मृदु भाषण बीड़ा, एक बाप थारे हरै पीड़ा
सगो जी बाप करै सखि सग क्रीडा ॥ ८ ॥
म्हारी सगी उर धीरज माला, एक बाप थारे दीन दयाला,
सगा जी बाप थारे श्री गोपाला ॥ ९ ॥
म्हारी सगी कसी करुणा की कांचु, एक बाप थारे बेदां वांचु,
सगा रे बाप परमेश्वर पांचू ॥ १० ॥
म्हारी सगी कर मेंदी घर सेवा, एक बाप थारा श्री वासुदेवा,
सगारे बाप थारे श्री महादेवा ॥ ११ ॥
म्हारी सगी पुन घूम घूमालो, एक वाप थारे डूंढ डुंढालो,
सगो रे बाप वृध सूंड सुंड्यालो ॥ १२ ॥
म्हारी सगी सुलच्छ बिच्छिया बाजे, एक बाप थारो नरसिंह गाजै,
सगो रे बाप बावन छवि छाजै ॥ १३ ॥
म्हारी सगी देशी जरकसी सारी, एक बाप गोवर्द्धन धारी,
सगा रे बाप द्रोपति हितकारी ॥ १४ ॥
म्हारी सगी दिव्य समतार गहना, एक बाप थारे पुंडरीक नयना,
सगो रे बाप करै शेष सयना ॥ १५ ॥
म्हारी सगी के धर्म का चूड़ा एक वाप थारो रघुवर रूड़ा,
सगा रे बाप थारे प्रिय कानूड़ा ॥ १६ ॥
म्हारी सगी गुण सोलै सिणगारा, एता बाप थारे टोटा क्यांरा,
नाथू छींपी जन वलिहारा ॥ १७ ॥

भजन : तर्ज—मेंहदी हद राची

मेंहदी उत्तम पलि हाथ पतिव्रत रंग राची
निरखो निरखो जी सजन कर ख्यांत प्रीत किसी क सांची ॥ टेर ॥
मेंहदी सहित शृंगार सवागण वनी सजै नव सात ॥ १ ॥
मेंहदी गई पीव आधीना मेंहदी अर्थ विख्यात ॥ २ ॥

नारी स्वतन्त्र होके पलटे गिरगट योनी जात ॥ ३ ॥
गोरे हस्त मनोहर जड़िया माणिक्य सुवर्ण पात ॥ ४ ॥
सुर्ख रग टुक श्यामता सोहै कमल पे भवर लुभात ॥ ५ ॥
एक पिव पद रति पोषण सुखी गृहस्थ सती कहलात ॥ ६ ॥
लाली लग्न लखा लस्करिया कृष्णा भक्ति लखात ॥ ७ ॥
सावित्री अनुसूया द्रौपदी के राचो मेंहदी दिन रात ॥ ८ ॥
दरजी नाथूराम सिया रट च्यारों फल मिल जात ॥ ९ ॥

पद तर्ज—ओ जी नणदोई

श्री रघुवर सा पालो व्रत दोई, औतारी कहावो प्यारा नणदोई ॥ टेर ॥
रिझाने को आवे अन्य नार कोई, शूर्पनखा सी रहे मुख धोई ॥ १ ॥
बचन देवो जो पालो दृढ़ होई, बैरी को भी जानो मित्र जन सोई ॥ २ ॥
सीता सम जानो राजा निज जोई, उत्तम गृहस्थी विधि देव तोई ॥ २ ॥
कहे नाथू छीपी भक्ति बेल बोई, चारो फल पावे जस कसबोई ॥ ४ ॥

दोहा—कवर कलेवा रुचि किये, हितकर हाथ धुवाय ।
पान सुपारी प्रेम की, पावत सुमुख रचाय ॥

राग मारू

पावत सुमुख रचाय महल ले जाय सलाह ली भाखी ।
सच सच कहो कवर जी बातां जो हमने सुन राखी ॥ १ ॥
पांडु रग के अश आप को कहती दुनियां आखी ।
मात को काज सरयो न तात से विट्ठल री अभिलाखी ॥ २ ॥
देव रूप से कैसे जानी आये शिव से खाखी ।
धन्य तव जननी सीप ज्यू जने तोसे मोती लाखी ॥ ३ ॥
नाम देव हॅस कहे लाडलो सच तुम अनुभव दाखी ।
आदि अंश हम है विट्ठल के वेद पुराणा साखी ॥ ४ ॥
बेदर पुरजनी चाहत पर धनी जैसे शहद मोमाखी ।
पहली हमरी करी नहीं खातिर अब लीजो रस चाखी ॥ ५ ॥
बोली फिर सुन्दर मुख कानी कदर विट्ठल मुनि मांकी ।
सगपन करके मुख लखोना शोभा घटे सगां की ॥ ६ ॥
छोड़ पिछली कक्षा ललाजी कहो कछु काम कला की ।
वाप की ज्यो वैराग्य भक्ति रत कैसे व्याह सला को ॥ ७ ॥
भने नाम देव वैरागी शिव गवर वरोना तलाकी ।
अधिक कोक शास्त्र की शिक्षा द्यो तुम भवन भलाकी ॥ ८ ॥

ऋतु पर रति कर जति सती गति ले श्री पति कमला की।
कृष्ण प्रीत रीत हम जाने लख व्रत सखी अबला की ।। ९ ।।
ऐसे हास प्रेम की शिक्षा गाथा कर मन चाकी।
कह नाथू छींपी नामा की निरखे हर्ष भर झांकी ।। १० ।।

दोहा—बाबूराव आज्ञा दिवी, खुलवावो कोठ्यार।
करो तैयारी भात की, सब सामान तयार ।। १ ।।
कोठ्यारी कोठ्यार को, खोल सम्हाले जाय।
सामग्री मूसा भखी, कही मालिक को आय ।। २ ।।
दस लख के सामान को, चूहा गये डकार।
बाबू राव घबरा गये, हा हा करत पुकार ।। ३ ।।

भजन

तर्ज · डरी मे देख के दाना

करी यह क्या हरी माया मेरा सभी बड़पन घटवाया।
प्रथम धन मद मेरे छाया अधिक धनी समधी बुलवाया ।। टेर ।।
जनेती लाखों बन आया उतारन डेरा नहीं पाया।
पूरना पानी कठिन जाना जिमाना कैसे भगवाना ।। १ ।।
माल दस लख का खरीदाया भात हित कोठा भरवाया।
गुप्तचर खाली कर दीना, लखूं में चूहा कब कीना ।। २ ।।
किया अपमान दामा का, मिला फल बुरे कामां का।
खता अब माफ कर मेरी सदा शिव शरण मैं तेरी ।। ३ ।।
रुकम कुवर की नांई लख्यो ना प्रभुगति सांई।
श्री महादेव बमभोला करो चट मेहर का झोला ।। ४ ।।
विघ्नहर गनपति ध्याता, दया करो सर्व सिद्धि दाता।
लग्न के गज वक्तर मालिक, गौरी के बालक जन पालिक ।। ५ ।।
हँसेगो मोय जग आखो, द्रौपदी ज्यो इज्जत राखो।
गोविन्द, दास की अरजी, सुनो झट कह नाथू दरजी ।। ६ ।।

पद राग मालकोश . तर्ज—दिन नीके बीते

श्री वासुदेव तुम देव, देव महादेव सब ध्याते हैं ।। टेर ।।
भगवत भक्तन को प्रभाव, नहीं जान्यो छींपी बाबू राव।
रुकम कवर ज्यूं पछताव कर, अब ये अरज सुनाते हैं ।। १ ।।
माया तेरी प्रबल नाथ, सुर असुर मुनि जन सारे साथ।
पद पाय भूल सब नमै माथ, नर जीव अल्पज्ञ कहाते हैं ।। २ ।।

काम क्रोध मोह लोभ युक्त, हरिभज तोय सो होय मुक्त।
शिशुपाल गोपी अर्जुन से भक्त, कई पापो से छूट जाते है ॥ ३ ॥
कह नाथू छीपी गोविन्द, हरि भक्तों से कीनों सम्बन्ध।
ताकी पत रक्खो मुकुन्द, नांतर हरि विरद लजाते है ॥ ४ ॥

दोहा—शंकर की विनती सुनी, विट्ठल मन्द मुसकाय।
काम धेनु सुर वृक्ष को, दीना हुक्म बुलाय ॥

राग—मारू

दीना हुक्म बुलाय श्री गनराय मुरारी।
छप्पन भोग छत्तीसू व्यन्जन छिनमें भये तैयारी ॥ १ ॥
तीस कोस में देव बराती बैठी लेन सवारी।
भये अटूट भंडार मांडा में खुश भये लख कोठ्यारी ॥ २ ॥
सुवर्ण पात्र जान हित आणे खास कुबेर भण्डारी,
बेदर नगर के सेठ मुसद्दी पुरसे कर मनुवारी ॥ ३ ॥
मेघ माली जल पावन ठाडे मगल गात सब नारी।
शीघ्र भात छुडावन उठे नारद शिक्षाकारी ॥ ४ ॥
कह नाथु छींपी दोऊं कुल के होय रही जय-२ कारी।
सुनो भात छुडाणी बाणी लोक रीति सुखकारी ॥ ५ ॥

अथ भात छुडावणो—चौपाई राग रामायण की

ब्रह्म विष्णु शिव सुतगण शारद। नमो गुरु नन्दलाल विशारद ॥ १ ॥
सुमति भक्ति युक्ति शुभ पाऊ। कह नाथू छीपी गुण गाऊं ॥ २ ॥
दाम शेठ पडरपुरी छीपा। ता सुत नामदेव कुल दीपा ॥ ३ ॥
गोविन्द सेठ बेदर नगरी का। बाबूराव बहादुर पदवी का ॥ ४ ॥
ज्यां घर रूपा रति ललि जाई। नाम जिन्हीं का राजा बाई ॥ ५ ॥
बन मुनीम करी विट्ठल सगाई। नाम देव की भक्ति बड़ाई ॥ ६ ॥
दाम सेठ तुरत ब्यावन आये। देव रूप जानी बहु लाये ॥ ७ ॥
बाबू राव घर हर्ष बधाई। शास्त्र विधि कन्या परणाई ॥ ८ ॥
बैठी जान जीमणे सारी। बांधे भात विलास विचारी ॥ ९ ॥
खुले कोठ्यार परोसे कर से। छूटे भोजन पातल पुरसे ॥ १० ॥
जग जीमे हरी भोग लगावे। सो भोजन बरणे नहीं पावे ॥ ११ ॥
बन्धे नेम प्रेम सिरताजा। बंधे पाजरी लाज रिवाजा ॥ १२ ॥
खुले सीरा बिन गुठली मेवा। बंधे गण्ठजोड़ा हथलेवा ॥ १३ ॥
खुली लापसी घी झर झरती। बंधे बेणी लट खूबसूरती ॥ १४ ॥

खुले चावल चीनी घी केशर । बन्धे गाल गवर नक बेशर ॥ १५ ॥
खुले राम खीचडी रसाला । बन्धे बोर जड़ाऊ झाला ॥ १६ ॥
खुले भात जौ दाल स्वरूपा । बन्धे यूं दांतन में चूपा ॥ १७ ॥
खुले पान बीडी मुख लाली । बन्धे कर्णफूल तिहुं बाली ॥ १८ ॥
खुले लड्डू मिठाई पांचू । बन्धे दोऊ कुचन कस कांचू ॥ १९ ॥
खुले बालूशाही घेवर । बन्धे समदण सब अंग जेवर ॥ २० ॥
खुली इमरती रस भरी मीठी । बंधे गलसरी माला दीठी ॥ २१ ॥
खुली फीणी भयो घी पापड़ो । बन्धे सगी कटि लहगो नाड़ो ॥ २२ ॥
खुली जलेबी गहरा रस की । बन्धी नख शिख नारी बसकी ॥ २३ ॥
खुले पापड़ पकोड़ी पूड़ी । बन्धे पूंची चम्मक चूड़ी ॥ २४ ॥
खुले केर फोफली फलियाँ । बन्धी छल्ला फूल उंगलियां ॥ २५ ॥
खुले हवेजी कड्डी लूंजी । बन्धे पूंजी के वश मूंजी ॥ २६ ॥
खुले रायता साग सलोना । बन्धे जीव माया का टोना ॥ २७ ॥
खुले दाल कचोरी भुजिया । बन्धे विषयों में रत सुजिया ॥ २८ ॥
खुले भात अरोगो विट्ठल । देवीदेव जानी जब रुचि दिल ॥ २९ ॥
महा प्रसाद सब भक्तन दीज्यो । दर्जी नाथू की सुध लिज्यो ॥ ३० ॥

दोहा—रुचि-२ जानी जीमते, गात सुन्दरियां गीत ।
विनोद वारांगी परस्पर, करत बढ़त बहु प्रीत ॥

भजन

तर्ज : सुण समधण चतुर

श्री नीका सज्जन आज आया मिजमान ॥ टेर ॥
गाधिज गोत्र उत्तम समधीका.सगी कुल भारद्वाज ॥ १ ॥
दाम देख के लुभ घर आई सर्यो न रति में काज ॥ २ ॥
गोणा नाम सरनाम भई जब गई पण्ढरपुर भाज ॥ ३ ॥
विट्ठल से नेह कर सुत जाये नामदेव ऋषि राज ॥ ४ ॥
बड़ा सगांरी बडी बडाई कहता आवे लाज ॥ ५ ॥
कह नाथू छींपी कुल पावन किये भक्तन सम साज ॥ ६ ॥

भजन : इसी चाल मे

लख समधण चतुर सुजान पूरो मन रलिया ॥ टेर ॥
बेदर नगरी बसने वाली काहे की करो अब कान ।
देख पर धनी विट्ठल रीझती खूब किया सम्मान ॥ १ ॥

मोटो भवन तुम्हारो समधन सभी सम्हावे आन ॥ ३ ॥
हम भक्तन पन साध चुके है तुम साधो सुख मान ॥ ४ ॥
बाबू राव गोविन्द की पत्नी खुशी करो सब जान ॥ ५ ॥
कह नाथू छीपी कुल भूषण नव से लटो सुथान ॥ ६ ॥

भजन माडा की तरफ से . राग गाली तर्ज—नाजुक नारी

श्री महालक्ष्मी अवतार बिट्ठलजी की प्यारी चपल चतुर बहु शृ गारी ॥ टेर ॥
चोर जार लबार लुटेरा जुवारी ।
कई धनी बनादे त्याग हरदम कृपण द्वारी ॥ १ ॥
कवि जन हरि जन जति सति धर्माचारी,
जासे द्वेष रखे दिन रात बनाने दुराचारी ॥ २ ॥
सीता हो मृग छाल पै चाही यारी ॥
तज राम लक्ष्मण की कार करण गई खल ख्वारी ॥ ३ ॥
वोही रावण शिशुपाल बींद बण गयो भारी ॥
फिर रुक्मणि जी घनश्याम साथ गई कुंवारी ॥ ४ ॥
वही रिझा कर योही पटराणियां सारी ॥
तजाई नरकासुर सोलह सहस्र नारी ॥ ५ ॥
कहे नाथू छीपी सज्जन ले बलिहारी ।
अब बेदर नगर दो त्यार रूप रम्भा वारी ॥ ६ ॥

तर्ज—हरमल बेठी रे आगणे बिछु० । ताल—हाली राग बारवा

गयो शिशुपालो वीरण मे ।
भगी क्यों पड़ी रण धीरण मे ।
देखो कांई चंगा, धारो क्यूं नी तेगां, आडा फिरो बेगा,
कोई दोड़ो रे बनीने गवाल्यो लेग्यो ॥ टेर ॥
भावज को कहणो भयो सांचो दिल मे कटारो सो बेग्यो ॥ १ ॥
बड़ा कँवार भीष्म राजा को पीछी ल्याणे को केग्यो ॥ २ ॥
रुक्म कँवर पाछो नही आयो फद कौन से फेग्यो ॥ ३ ॥
दन्ताधर और ठाड़े जरासन्ध जा बिच धोखो देग्यो ॥ ४ ॥
नाथू के स्वामी रुक्मण परणे, शिशुपालो बिलखत रेग्यो ॥ ५ ॥

पद राग जय जयवन्ती

या सुण लीज्योजी साँवलसा म्हारी प्रेमरसभर गार ॥ टेर ॥
दो वापन के पुत्र कहाज्यो क्या कहु जात तुम्हारी ।
योगी जन खोजत नहीं दर्श फिरे ग्वालिन की लारी ॥ १ ॥

वधु अधर सरस मधु इक लखे मुक्ति मधु बिसारी।
पय कपोल हित हंस बने तट खीर सांई बलिहारी ॥ २ ॥
अर्द्धांगिनी राधे को तज के करी दासी से यारी।
चोर जार सरदार शिरोमणि तदपि बाल ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥
त्याग पूरणी नई नित चाहो जिमि भंवर फुलवारी ॥ ४ ॥
सो तुम्हरी लक्ष्मी दयी हम घर ल्यो बहु कूवरी कंवारी ॥ ५ ॥
सहस्त्र भगिन्द्र ईंट रुचि बैठे पुण्डरीक के द्वारी।
दरजी नाथू पतित उधारण आदत अधिक तुम्हारी ॥ ६ ॥

भजन राग गाली तर्ज—वावो मोलोए विराजे ए

मूसारूढ़ हसी का गोटा छे घूमे पाताल में घोटा छे।
सुन्दर पूछे श्रीगनराजा जी शिशु थारा कैसे मोटा छे ॥ १ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
शिर मोटा बुद्धि कोटां छे, सुलक्षणी मात का ढोटा छे ॥ २ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
सुन्दर पूछे श्री गनराजाजी कान तेरा कैसा मोटा छे ॥ ३ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
कान मोटा नही खोटां छे ए भक्तारी रिपोटां छे ॥ ४ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
सुन्दर पूछे श्री गनराजा जी नाक तेरा कैसे मोटा छे ॥ ५ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
नाक मोटा मुख शोभा छे ए केइ विवाह परोटा छे ॥ ६ ॥
मूसारुढ़ हसी का गोटा छे०।
सुन्दर पूछे श्री गनराजाजी दांत थारा कैसे मोटा छे ॥ ७ ॥
मुसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
अद्वितीय ब्रह्म सुहाग दाताये करे दैत्यों का दन्त मोटा छे ॥८॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
सुन्दर पूछे श्रीगनराजाजी हाथ थारा कैसे मोटा छे ॥ ९ ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
कर चारों फल दायक हैं पूजे ज्यां का हरे टोटा छे ॥ १० ॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
सुन्दर पूछे श्री गनराजा जी पेट थांको कैसे मोटा छे ॥११॥
मूसारुढ़ हंसी का गोटा छे०।
जन अवगुण को समा वणिया ये गुण निगमागम रोटां छे ॥१२॥
मूसारुढ़ हसी का गोटा छे०।

सुन्दर पूछे श्रीगनराजाजी पॉव थारा कसे मोटा छे ।। १३ ।।
मूसारुढ़ हसी का गोटा छे० ।
पॉव पतित पावनिया ए दरजी नाथू सजनो के ओटा छे ।।१४।।
मूसारुढ़ हसी का गोटा छे० ।

तर्ज—वावा शाबास लगरो वादरो भो पाल्यो

वावा शाबास समधण गोरी नन्दन मोया जगत सेठ,
जीरे जोर सारी जिमांई है जान ।। टेर ।।
पहली ना गणेश ध्याया जभी रुष्ट होया, पठा मूसा तत्काल,
धारी थोथी करो साल, माल खा किए मैदान ।। १ ।।
अब खुश किए विनायक; वृद्ध निज जोया,
चूहा सभी बिल मजार ठेल भर दिया भण्डार ऋद्धि सिद्धि से भवान ।।२।।
ऐसा गजानन देव दलिदर खोया, अब मांगो वरदान
इच्छा होवे सो सुजान, मति शंको भयमान ।। ३ ।।
दर्जी नाथू रामकृष्ण प्रेम बीज बोया; पूरे मनड़ारी आस
होसी, नवे मास, थारे प्यारी शुभ सन्तान ।। ४ ।।

पद तर्ज—आछो वावूडा ऐ घर मे पालीयो

आछो यशोदा कीनी कोख को ये अटो सटो ।। टेर ।।
महर नन्दजी को कुल तो गोरो गटो ।
सो दिखेना सांवरो ए किण उणियार हॉक ज्यूँ घन घटो मटो ।। १ ।।
फेर कवायो अम्बर चोरटो ए मक्खन चटो ।
टेर बसरिया बुलाई पास मे ब्रज की नार हाक बनके नटो खटो ।। २ ।।
शहर मथुरा जा देख्यो कूबरी को चटो मटो ।
ठहर वहीं पै दीनो पूतना को दूध हांक हत गज हटो कटो ।। ३ ।।
मेहर करी नाथू दरजी भक्त पै दिन रात रटो ।
पहर उनके कर वस्त्र लूट किए अधम उधार हांक मेटन खटो पटो ।। ४ ।।

भजन जान की तरफ मे तर्ज—सुन्दर फूल गुलावी गोरी २

सुन्दर मानस दे चारो फल की पोरिये ।। टेर ।।
पावे सोही पीव से लगावे नेह डोरी ये ।
सगा सनेही वारी झिझट, भारी कर मस जाय अनारी,
चोरी जारी पर हुन्नर ओरी ये ।। १ ।।

दया पति जाति व्रत कर्म दिन राती, किए सुख पाती दुनिया
पावे गति ज्यूं शंकरगोरीये ॥ २ ॥
ब्रह्म पुरुष एक गाया, नारी माया ज्यं जीवात्म काया,
नाना भोगत कोरी कोरीये ॥ ३ ॥
देह एक म्यान समानी, खांडा प्राणी दोई पसिया शैतानी,
मानी किसमत फोरीये ॥ ४ ॥
परन्या बाद लुगाई झूठी मिठाई, शिव निरमाल्य की नांई,
सेवे सिवावे अधम फिटोरीये ॥ ५ ॥
अमृत फवि कृषाना गग समाना लागन पातक ताना
जल मे पकज ज्यूं पथ अघोरीये ॥ ६ ॥
दर्जो नाथू गाई शिक्षा भाई हिये जमाई,
सोई खेती सतमत की सुरग होरीये ॥ ७ ॥

भजन राग—गाली : तर्ज—पति की सेवा करना०

सदा सनेही सहाय परमेश्वर माने ॥ टेर ॥
सुणज्यो सगां सनेही नारी, सुन्दर सच्ची शिक्षा गारी,
सुण ज्यो चित्त लगाय ॥ १ ॥ सदा०
एक ही ब्रह्म है पुरुष अनादि, जग कलिपत या माया मावि
पिव सेव्या सुख पाय ॥ २ ॥ सदा०
तज के आदि शिरका श्याम, लेवे अन्य बणगट से काम,
ज्यां की पत उड जाय ॥ ३ ॥ सदा०
सत साई से राखे प्रेम, निभावे नारी धर्म को नेम,
नाथू जन जस गाय ॥ ४ ॥ सदा०

भजन राग सारग—तर्ज गाली की

व्याहन आवे विट्ठल सा महिमा धन्य तुम्हारी।
होके सगुण अगुण अगारी ॥ टेर ॥
कुंती भुवा भरम गमायो जाया करण कुमारी।
बहन सुभद्रा अर्जुन सग मे बिना ब्याही सिधारी ॥ १ ॥
रीझे न नारी नारी के मुख लख लुभे नर पै बहु नारी।
जबही नारी बेव धर्म को प्रभु को शोक अपारी ॥ २ ॥
मोहनी हो अमृत घट लीना मोहे असुर अनारी।
गिरजा बनकर भस्मासुर को नाच नचाये भारी ॥ ३ ॥
कोटि मदन सम छबि मुनि मोहन युवती को बहु प्यारी।
जभी ऋषि वन मे राम रूप पै रीझ भये व्रजनारी ॥ ४ ॥
खुद चाहो नर भक्त से ज्यादा नारी भक्ति प्यारी।

अधरामृत कपोल मक्खन लगे हाथ गेंद दोय न्यारी ।। ५ ।।
राधे हित बन गये मालनियां मनिया रनियां सनारी ।
डलिया जोवत बसि देखी सखियां गुलचा मारी ।। ६ ।।
गोपी लाज ढक हस्त मांग पट दिए कर जुड़ा बिहारी ।
लग्न मग्न नग्न भये रीझो साग विदुर घर वारी ।। ७ ।।
सागी बण त्रिगुणातम चाह्यो अनुसूइया को उधारी ।
वो पतिव्रता करी सातरी जब कीनी महतारी ।। ८ ।।
शकु बदले घर खम्भ बन्धे पति खोलन सेवा करी सारी ।
रुक्मणि गेल छुड़ाई पठाई मरी जिवायबो द्वारी ।। ९ ।।
काना पातर बुलाई बेदर नृप नौकर के लारी ।
दर्शन के मिस गई मन्दिर मे गायब करी मुरारी ।। १० ।।
विप्र नारायण भक्त मोह गिनका तजे धन छीन निहारी ।
रग थाल दे नेह करा प्रगट शर्मा खोट निकारी ।। ११ ।।
दास सगा सग आए सावरा जब गाते रस गारी ।
द्यो भक्ति उपहार क्षमा कर कह नाथु सुचिकारी ।। १२ ।।

पद तर्ज—कदर मेरी ना जानी

महारानी कदर तेरी हम जानी ।। टेर ।।
तू ही रुद्रानी तू ही इन्द्रानी तू ही लक्ष्मी हरि धाम इन्द्रपुर इन्द्रानी ।। १ ।।
चार खान से योनी चौरासी एक संचे सरजाय नित नई नूरानी ।। २ ।।
रमा रुक्मणि बाल जीत वर शिव वर सेमयो काम पुत्र रति खुश मानी ।। ३ ।।
दस पुत्र एक २ कन्या सोलह सहस्त्र सौ आठ सुन्दर जन खुशियानी ।।४।।
दर्जी नाथू राम-कृष्ण जप सोलह कला अवतार सगुन सारग पानी ।। ५ ।।

भजन जान को तरफ से
तर्ज—बगल मे आजा ये

प्रभु भक्त सनेही जान शरण मे आजा ए ।। टेर ।।
सुणज्यो सुरत सुन्दर वारी, समझावों रागरस गारी,
पूरा प्रीत चितार पियारी, शरण मे आजा ए ।। १ ।।
काना पातर परी उणियार, बेदर नृप सुख तुच्छ विचार,
तन मन श्री विट्ठल परिवार, शरण मे आजा ए० ।। २ ।।
जोवन मिजाजन बेदर नार, मत खो विषय काट तन सार,
परसो पारस अधम उधार, शरण मे आजा ए० ।। ३ ।।
अनुसूइया पतिवृता सिरताज पारख करी, त्रिगुण महाराज,
उनसो कठिन राखणी लाज, शरण में आजा ए० ।। ४ ।।

पति और मित्र भाव की भक्ति, परहित समझ कियां ही मुक्ति,
झूठी विषयों की आशक्ति, शरण में आजा ए० ॥ ५ ॥
प्रेमा भक्ति को अधिकार, बन में राम को रूप निहार,
लुभ कर मुनि बने ब्रजनार, शरण मे आजा ए० ॥ ६ ॥
मक्खन चोर चीर का ख्याल, दिगम्बर त्यागी पथ विशाल,
वैसे ही विदुरानी का हाल शरण मे आजा ए० ॥ ७ ॥
सत सग लखिये रास विलास, लीना गेंद समझ पद हास,
पूरे परमानन्द दिल आस, शरण में आजा ए० ॥ ८ ॥
शकु हित बन्धे खम्भ के श्याम, भक्त के आठों याम गुलाम,
विप्र नारायण किए निष्काम, शरण में आजा ए० ॥ ९ ॥
कहता दर्जी नाथू राम, भक्त डिडवाना बसे शुभ ग्राम,
पंडरपुर अघमोचन धाम, शरण में आजा जाए० ॥ १० ॥

भजन माडा की तरफ से ' राग सोरठ

सब है जानी भक्त मुरारी सुण लोज्यो जी रस गारी ॥ टेर ॥
धन महादेव मदनारी, थाने भिलनी लगी पियारी।
नन्दा भक्तन के द्वारे, शकर बन सेठ पधारे ॥ १ ॥
विष्णु त्रिलोकी के राजा, सती बृन्दा से छल साजा।
मिलके त्रिगुणातम देवा, लखि अनसूइया की पति सेवा ॥२॥
धन इन्द्र देव बड़ भागी, भये सहस्त्र भग अनुरागी।
धन सुरगुरु भावज प्यारा, शशि कुल उन्नत किये दारा॥ ३॥
धन नारदजी ब्रह्मचारी, हरी रूप से सुन्दरी निहारी।
देव देवा विप्र नारायण, कर मौज पडे रग पायण ॥ ४ ॥
लख कुमुद बलि रग भीनी, रिझ नीलन शर्ता कीनी।
डाका करके सत जिमाये, श्री हरी लुटीज के अपनाये ॥ ५ ॥
लख धनुर्दास तिये लोभा, दिखलाई तोहि रंग शोभा।
रंग पाण्डु रग भगवाना, जैसे ही भक्त बखाना ॥ ६ ॥
कर नर हरि किसब सनारी, लखिया हरि हर इकसारी।
धन सेनजी जाती नारी, ढाइसो कन्थ पियारी ॥ ७ ॥
लिये शरण गए को उबारी, कहां तक मै कहूँ विस्तारी।
पण पतित पावन गिरधारी, त्यार नाथू सुचिकारी ॥ ८ ॥

दोहा—कहे नरहरि जाति की सब उत्तम श्रुति गाय।
बेदर नारी सनारि बन, हरी हर एक लखाय ॥ १ ॥
कहे सेन मम जाति को, लाखो धनी जजुमान।
क्या ढ़ाई सौ गिने, बेदर नारी सुजान ॥ २ ॥

वचन नारद का तर्ज—रगीली नथवारी।

हरि हर बिलमाया एक सुन्दर रस गालन से ॥ टेर।
नारी धर्म घाघरो सोहे, कंचू क्षमा कृश काय दया के दुशालन से ॥ १ ॥
जाति करन्थ की कर मेंहदी कीर्ति बीड़ी रचाय, प्रसन्न मुख लालन से ॥ २ ॥
दृढ़ सत मत पर कारण छुवे पति भक्ति छकनार सदा व्रत पालन से ॥ ३ ॥
दर्जी नाथू राम कृष्ण जन आये तुम्हरे धाम मुदित जयमालन से ॥ ४ ॥

दोहा—गारी प्रेम की परस्पर, गात मुदित नर नार।
जानी रुचि सब जीमिया, हुई खूब मनवार ॥ १ ॥

राग—मारू

हुई खूब मनवार त्यार कर दीनी पान सुपारी।
बाबूराव पहरावनी कीनी दीनी जान जंवारी ॥ १ ॥
ब्राह्मण भाट कमीण चुकाये देके द्रव्य अपारी।
चले बारठ बिरदावली गाते द्विज आशीष उचारी ॥ २ ॥
अबीर गुलाल सुरग उड़ाये इतर खुशबूदारी।
गोणा दाम कहे समधीजी धन्य करी खातिरदारी ॥ ३ ॥
विट्ठल रजा भई देवी देव सब जाते निज २ द्वारी।
नभ पथ यान बैठ चले दश उड़गण बीज उजियारी ॥ ४ ॥
हिंगलू ढोल्या सिर्ख पथरना भूषण बसन दे भारी।
सीख दई राजा बाई को ओल्यू गात महतारी ॥ ५ ॥

भजन माडा की तरफ से : तर्ज ओलयूडी लगायर।

ओजी वाईरा बालमिया मार्ग मजला हालो जी प्यारा ॥ टेर ॥
सिद्धवत रटो सिद्ध गनपतजी पथ विघन भय टालोजी प्यारा ॥ १ ॥
श्री विट्ठल रुक्माई जी भक्त वत्सलता पालो जी प्यारा ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति दिग्पति शुभ-दिग हालो जी ॥ ३ ॥
रविशशि उडगन सप्तऋषि रखे घट प्रगट उजालो जी ॥ ४ ॥
नाथू राम कृष्ण के शरणे दाम कंवर लगे वालो जी ॥ ५ ॥

पद तर्ज—कोयल बाई सिध चाल्या

इतरो मायत कुल प्रेम छोड़र वाई सिध चाल्या जी ॥ टेर ॥
कन्या विछुडन के विधि रचियो विलखे जनक गिरि हेम ॥ १ ॥
आयो सगारो नवल वनो लेग्यो करा सतनेम ॥ २ ॥

लिभणो दुर्लभ धर्म विदेशां कामादिक ठग बेस ।। ३ ।।
नाथूराम श्याम के शरणे रहे सदा कुशल क्षेम ।। ४ ।।

तर्ज—अम्बा मोरीये मे तो काल सासरे जाऊँ

मै आज किसो बिध जाऊँ अम्बा मोरीए ।। टेर ।।
मै नौ महिना रीनी, जन्मत जननी गोद मे लीनी,
हित से लालन पालन किन्हीं, राखी सोरीये ।। १ ।।
म्हारी प्यारी सखी सहेली, तजकर कैसे रहूं अकेली,
जिण सग गुटियां झिरमट खेली, पूजी गौरी ये ।। २ ।।
मै मायत के अनुकूलिया फिरती द्वार गली परफुलिया,
अब दुख होत तजत घर डुलियां नवल किशोरी ये ।। ३ ।।
दर्जी नाथू राम पियारे, गुडिया खेलन सफल निहारे,
पावे ज्यू प्रतिमा के पुजारी प्रभु की पोरी ये ।। ४ ।।

दोहा—बाबू राव निज रथ जुपा, तुरग सोहणा तेज ।
बिठा सुता वर रक्षणा सेनापति सग भेज ।। १ ।।

राग—मारू

सेनापति सग भेज ओलन्दी शुभ नायन दी लारी ।
बिदा होत सब चले पण्डरपुर भजते श्री गिरधारी ।। १ ।।
आत विट्ठलपुर फौजदार कहो कहां हवेली तुम्हारी ।
दाम सेठ आते चट उतरे झोपड़ी के दरबारी ।। २ ।।
बाबूराव के कामदार सुदामा छान निहारी ।
रोस खाय मन लोटे पीछे हो घोड़े असवारी ।। ३ ।।
करे कल्पना ठाकुर कहस्यु मालिक की गति सारी ।
कैसे दरिद्र के घर कन्या बहादुर होके डारी ।। ४ ।।
इधर नामदेव भक्ति महिमा हो रही नगर मंजारी ।
हिन्दू धर्म की बढ़ती लख के लगी यवन को खारी ।। ५ ।।
जा नवाब पा चुगली खाई झूठी तुकस निकारी ।
दामा छीपो का सुत नामा करे ढोंग प्रचारी ।। ६ ।।
राम रहीम एक माफिक है नवाब साहब उचारी ।
कह नाथू छीपी नामा तो प्रगटे जग हितकारी ।। ७ ।।

वचन सिपाही का नवाब से

गजल

हुजूर छींपी नामा यह ढोग जमा रहा है ॥ टेर ॥
मूर्ति को दूध पाया सुणने मे हाल आया।
जड़ मे खुदा ठहराया, जग को भ्रमा रहा है ॥ १ ॥
पय पीये न रव होय पत्थर, कोई लाग धरी है अन्दर,
दुनियां को सच दिखाकर, टका कमा रहा है ॥ २ ॥
बुलवाय गुस्सा अना के करामात ल्यो जना के।
वो क्या फकड़पना के, भण्डा समा रहा है ॥ ३ ॥
नाथू कहे सिपाही हजरत करो सुनाई।
काफिर कुरानशाई, इज्जत गमा रहा है ॥ ४ ॥

जवाव नवाब का इसी चाल मे

गजल

तुम्हारी इस मुखबरी से छेड़ो न रव बन्दे को ॥ टेर ॥
न जानू फक्कड़ कोई पूरा खूदा का होई।
भय लगता है मोई ख्यारू न किसी धन्धे को ॥ १ ॥
अगर तेरी सलाह से, खेटा करू भला से।
बेमुख पड़ू अल्ला से, कुण देवे दर गधे को ॥ २ ॥
तोय मालूम है वद फेली तो खयाल रखना बेली।
आखे दिखादो पहली छींपी के छल छन्दे को ॥ ३ ॥
कहता यह नाथू दरजी बादशाह की ऐसी मरजी।
छल कीना वो मुखरजी कीना अदम फन्दे को ॥ ४ ॥

दोहा—वन से गऊ की लाश ले, गये नामा घर रेन।
कपाट सहारे खड़ी करी, जुल्मी हत्या देन ॥ १ ॥
निद्रा से नामा जगे, चल पड़े गगा सनान।
कपाट खोलत गऊ पडी, गहे सिपाही आन ॥ २ ॥

वचन सिपाही का नामदेव से

राग—रेखता कव्वाली

जुल्म यह क्यो किया काफर गऊ को मार दी लाकर ॥ टेर ॥
जगत मे भक्त कहाता है फकत तूं ढोग दिखाता है।
वड़ा जुल्मी अन्याई है, कुत्तू कपटी कसाई है ॥ १ ॥

खून तूने किया भारी मुकदमा तुमपै है जारी।
मेरी गऊ वेगुनाह मारी करूँ अदालत मे ख्वारी॥ २॥
तुम्हे कीना गिरफ्तारी चलो हजरत के दरबारी।
कहे नाथू छीपी जनको, कचेड़ी लेगये ताड़न को॥ ३॥

बचन बादशाह से सिपाही का

कव्वाली

सलामत देखो नामे ने सितम ये जुर्म कर डारे॥ टेर॥
विचारी ठड की मारी रात गऊ जा खड़ी द्वारे।
उसी को मार लाठी की कतल का कर्म कर डारे॥ १॥
अगर समझो गलत मेरी तो दरयाफत करा लीजे।
गवाह साबूत है पक्के सभी मालूम कर डारे॥ २॥
छींपी के द्वार पर अब तक पड़ी है वो मरी गैया।
बगुला भक्त हिन्दुओ का बड़ा अधर्म कर डारे॥ ३॥
कायदा देख कर हिन्दगी जल्द करड़ी सजा दीजे।
कहे नाथू भक्त नामा को जुल्म झूठे फँसा डारे॥ ४॥

जबाव नवाव का सिपाहियो से इसी चाल मे

मिसल ये देख कर तुमरी सजा देनी मुनासिब है॥ टेर॥
खातिर हो चुकी हमको गवा साबूत है पक्की।
बिल्कुल गऊ इन्होने मारी सच कहनी मुनासिब है॥ १॥
हुक्म यही सुनाता हूं देख हिन्दी किताबों से।
गऊ बध करने वाले को सूली सहनी मुनासिब है॥ २॥
अगर वो दार चढ़ने से करे इनकार नालायक।
तो फिर कलमा पढ़ा सुन्नत करा देनी मुनासिब है॥ ३॥
कहे नाथू छीपी इजाजत ये दिवी नाजम।
मिलावो मुझसे नामा को बात बेणी मुनासिब है॥ ४॥

बचन नामदेव का नवाब से

गजल ताल दादरा

हजरत पना क्यो वेगुनाह गरीबों पै गुसा कर लिया॥ टेर॥
ये सिपाही आपके जुल्म झूठा घर दिया॥ १॥
हम हिन्दू गऊ पूजते हर्गिज न ऐसा छल किया॥ २॥
नाथू कहे हुक्म सूली का गजब तुम सिर दिया॥ ३॥

जबाब नबाब का

तर्ज—श्याम सुन्दर ब्रज भी

क्या सफाई करत काफिर ढोंग तेरा सब जान लिया ।। टेर ।।
मै भी सुना पूरा फक्कड़ है देखा तो पहचान लिया ।। १ ।।
करामात दिखला मद रख कोम बाबत तान दिया ।। २ ।।
कहे नाथू यो नबाव हुक्म दीना सुनीति छान दिया ।। ३ ।।

पद—बचन नामदेव का

न जाने हजरत हम कोई करामात ।। टेर ।।
करामाती होते तो क्यु करते छीपी किस्ब दिन रात ।। १ ।।
साधु घर आये को जिमावे प्रभु पूजे प्रभात ।। २ ।।
झूठा जुल्म सिपाही दीना न भली बात ।। ३ ।।
नाथू कहे नामो नबाब से बिना गुनाह क्यू घात ।। ४ ।।

जबाब नबाब का इसी चाल मे

हट यहां से काफिर पाखण्ड तेरा चौड़े आया ।। टेर ।।
करामात नहीं तो क्यु जुलमी ढोंग लगाया ।। १ ।।
छीपी होकर मूरति पूजा किसने तुझे बताया ।। २ ।।
प्रतिमा को पा दूध लाग से जगमें पांव पुजाया ।। ३ ।।
कलमा पढ या सूली चढ़ ले हुकम फिरे न कराया ।। ४ ।।
मिलना जुलना खाना पहरना करले जो चित चाया ।। ५ ।।
नाथू कहे यों नबाब खिसिया नामा मात ढिग आया ।। ६ ।।

दोहा—श्री नामदेव भक्त के, दासी जन्ना नाम ।
दर्शन कीर्तन करण को पांडुरंग के धाम ।। १ ।।

राग—मारू

पांडु रग के धाम काम में फुर्सत हो नित जाती ।
आठों याम घनश्याम नाम गुण ठाकुर द्वारे गाती ।। १ ।।
ज्ञानेश्वरी गीता का पाठ वह करती उठ प्रभाती ।
मानसी सेवा कर विट्ठल की कुबरी ज्यों ही रिझाती ।। २ ।।
श्री गोविन्द लख पूर्ण प्रेमा सखु बाई की भांति ।
सखीरूप से घर का कारज करवाते दिन राती ।। ३ ।।

ऐसे भगवद्भक्त के ऊपर आफत ऐसी आती।
ज्यू सुवर्ण को तावत तावत लाली छबि दर्शाती ॥ ४ ॥
एक दिन हरि के रत्न गये चोरी पुरी भई विख्याती।
अचक शुबह किया जन्ना को पूछे खिज बहु भांति ॥ ५ ॥
जन्ना कहे मै नहीं चुराया शपथ श्याम की खाती।
पुजारियो को विश्वास न आया करी बहुत उत्पाती ॥ ६ ॥
गिरफ्तार करवाई राज में ले गये पकड़ खल घाती।
उसी वक्त नृप नीति चोरों को सूली दिलाई जाती ॥ ७ ॥
उधर नामदेवजी पे जुल्म है इत जन्ना बहकाती।
दर्जी नाथू राम भक्त के विट्ठल सदा सगाती ॥ ८ ॥

वचन नामा का माता से तर्ज—नागजी की

हाँ ये माताजी अब क्या करूँ विचार ए मोपे झूठो दूषण आइयो ए ॥ टेर ॥
हां ए माताजी मरी गऊ रखी द्वार ए घर झूठो,
जुल्म लगाइयो हो माताजी। हांओ माता जी० ॥ १ ॥
हांए माताजी बादशाह मिसल निहार ए झूठ,
ऐसो हुक्म सुनाइयो हो माताजी। हां ओ माताजी० ॥२॥
हां ए माताजी या तो चढनो दार ए के कलमा,
पढनो चाहिए हो माताजी। हाँ ओ माताजी० ॥ ३ ॥
हां ए माताजी नाथू रचि करतार ए मै उनके ही
चरण चित लाइयो हो माता जी ॥ ४ ॥

वचन नामदेव की माता का

हां ओ लालजी मै क्या कहूँ उचार रे सुन हाल पड़ी हूँ फिकर में हो लाल जी ॥ टेर ॥
हां ओ लालजी समझाती वारम्वार रे मत भक्ति प्रगट इकन्त मे हो लालजी ॥ १ ॥
हां ओ लाल जी भक्त प्रशंसा निहार रे मूढ़ दुष्ट जल्यां करे जिगर में हो लालजी ॥२॥
भोलेपने परचो जार रे आयो जालमियां के पकड़में हो लाल जी ॥ ३ ॥
हां ओ लाल जी कलमा पढ्या बिगार रे दुख सूली चढ्या शिखर मे हो लाल जी ॥४॥
हां ओ लाल जी राम रहीम इकसार है नहीं लाभ हो मरिया मकर में हो लाल जी ॥५॥
हां ओ लाल जी जाति से बिगड़्यां ना सरे रे पण बिधिना लिखी क्या कर्म में हो० ॥ ६ ॥
हां ओ लाल जी नाथू कहे सुचिकार रे नहीं लाभ हो ज्यादा जिकर में हो लाल जी ॥ ७ ॥

राग सोरठ की लूर तर्ज—एरी मे मुरली

एरी मा फिकर करे मत नेक, मरना जीना हाथ हरी के होना है दिन एक ॥ टेर ॥
छाणस किया बिन सजा करी नृप न्याय किया नहीं नेक।

न्याय करणिया अन्तर्यामी उनको सकल विवेक ॥ १ ॥
दीन बे-दीन कभी नहीं होऊँ सकट पड़ो अनेक।
मुझे भरोसा है भगवत् का वोही रखेलो टेक॥ २ ॥
हिरनाकुश प्रह्लाद भक्त को दियो गिरिवर से फेंक।
अधर गोद में झेल्यो विष्णु चला न खल का धेक ॥ ३ ॥
झूठा दोष मुगलों का सुन के होत कलेजे छेक।
नाथू नामो प्रभु को बीनवे गऊ ढिग मस्तक टेक ॥ ४ ॥

बचन नामदेव का अकेला कहता है
लावणी रगतलगडो

ज्यों जमुना तट गोयें जिवाई ज्युं या धेनु जीवावोजो।
हे करूणानिधि लग्यो हमारे झूठी कलंक मिटावो जी ॥ टेर ॥
सतयुग माँही वराह रूप धर धरा डाढ पर लाये धार।
विधि को दुःख मेट्यो दैत्य हिरण्याक्ष मार सर्जो ससार।
धर्यो कुमारी ध्यान मजारी सुत अग्नि से लिया उबार।
प्रहलाद के कारण दुष्ट मारण लीन्हो नृसिह अवतार।
रखी कयाधू की टेक अनेका एक या मेरी निभावो जी ॥ १ ॥
मच्छ रूप धर वेद डूबता काढ ब्रह्म को लाय दिया।
हयग्रीव रूप धर दैत्य मधुया हयग्रीव हटाय दिया।
कमठ होय मद्राचल धारे रतनाकर को मथाय लिया।
अमी लाभ धन्वन्तर मोहनी हो देवों को पाय दिया।
वो ही हे करूणाकर स्वामी इस गऊ पर छिड़कावोजी॥ २ ॥
साँन्दीपन सुत जीवत कर दिये धन्य दक्षिणादी सुख दानी।
अर्जुन की प्रतिज्ञा हेतु द्विज पुत्र जिवाये धनु पानी।
साधु वैश्य विक्रम भुवाल ज्युं आयो जुलम यो अनजानी।
बेगुनाह बादशाह करावे हिन्दवाणी में तुरकानी।
मरने का डर नही दयालु मिथ्या दोष मिटावो जी ॥ ३ ॥
नन्दलाल यों गुरु गुलाब को शिष्य कहे नाथू दरजी।
हरि करी सजीवन गऊ को उसी घड़ी सुन कर अरजी।
नामो कही कुटिल को ले गऊ कुपित देख खल गयो डरजी।
बच्छ हित डकराती चमकाती धेनु गई धणी घरजी।
मरी गऊ जीवीं जाण सेठ चले खारज करावन दावोजी ॥ ४ ॥

दोहा—नामदेव हित गऊ जीवी, इत भये हर्ष अपार।
उत जन्ना लख सूली को, हरी से करी पुकार ॥

वचन जन्ना का : राग विहाग

विट्ठल या क्या तुम्हारी है मरजी, टेरी बेरी फन्द उरझी ।। टेर ।।
हरिजन दुखिया दुर्जन सुखिया माल खाय मुखबरजी ।
गरीवनिवाज राज के माँहि गरीब जन की सुनो अरजी ।। १ ।।
लगा चोर को जगा साय को करे मामला फरजी ।
साहुकार तो पकड़ा जावे चोर है फिरत निडर जी ।। २ ।।
क्या मुझ दासी की हरि मृत्यु सूली रूप मे सरजी ।
शरणागत प्रतिपाल श्याम को प्रतिज्ञा न की हरजी ।। ३ ।।
झूठी वदनामी फिकर दिल ना जीवन की गरजी ।
भक्त वत्सलता लजे श्याम की याहीते हिय लरजी ।। ४ ।।
सुजस पावन नामदेव जन गावे नाथू दरजी ।
ताकी सहचरी जन्ना विनवत सूली पिघरजी ।। ५ ।।

दोहा—व्यर्थ भक्त ख्यारत लगी नवाव महलाँ आग ।
हाय २ वेगम करे कौन हाय गई लाग ।। १ ।।
वहुत वुझाई ना वुझी, भयो नवाव को ज्ञान ।
सच्चा धर्म है हिन्दु का, परचा लख लिए मान ।। २ ।।
नवाव नमिया भक्त पद, पावक बुझ गई शीघ्र ।
नाम देव की छान को, करन दिखायो विप्र ।। ३ ।।

वैश्य वाक्य—हजरत गऊ मेरी कल मरी, नामो जिवाई आज ।
नाथू कहे वादशाह, सुण गहे भक्त पद भाज ।। ४ ।।

वचन वादशाह का : नामदेव मे राग भीमपलासी गजल ताल दादरा

ओलिया साहव माफ करो इस हाल की मोय खवर ही नहीं ।। टेर ।।
आडम्वर नांय दिगम्वर से तुम पैगम्वर ऊँचे नम्वर ।
वेगुने सताये गुल्म तुम्हे इत सखा जुल्म जवर ही नहीं ।। १ ।।
मोय देवो रजा अभी डालू वजा कुफरो को पजा देऊँ वोल सजा ।
वुला दूं कजा चखा दू मजा छल सीखेगा कोई लवर ही नहीं ।।२।।
मुझे आय गुस्सा चुगलो पै इसा नीचो पै घिसा करूँ खोटी दशा ।
कच्चे वच्चे को देऊं घाणी पिसा कोई छोड़ू खुदाना कवर ही नहीं ।। ३ ।।
टोपी उतार दी कदमो पे डार हो गुनेगार लाचार हुआ ।
ल्यो धन अपार जागीर त्यार कहे नाथू नटे से सवर ही नहीं ।। ४ ।।

इसी चाल में बचन नामदेव का नवाब से

लाचार हुओ क्यों नबाब पना कछ्ु आपको या में खता ही नहीं ॥ टेर ॥
कर्ता ही मुख्य करता सब का बन्दा सुख दुःख देता ही नहीं ।
बिन हुक्म अनेक विवेक करो हिलता है एक पत्ता ही नहीं ॥ १ ॥
खुश रहता यू ही कहता तुम्हें लेता मै किसी को मता ही नही ।
लाग रहे हित हरि पद नित टुक बित में चित रता ही नही ॥ २ ॥
चिलवाऊ सजा किसे देके रजा सठताई मेरा मत्ता ही नही ।
मात्र जीवाधम एक परमातम दूजे को दर्श सत्ता ही नहीं ॥ ३ ॥
करो होस किसी का दोष हुआ मोको रोश ये राई जता ही नही ।
नाथू कहे नामा सामा नमना नृप को फबता ही नही ॥ ४ ॥

बचन बादशाह का नामा से

नमना खुदा के नूर को चाहिए सकल इन्सान ने ।
रइयत राजा एक सा रब घर लिखा कुरान ने ।
रत्नों का मच भेंट लिये सर्व सुख फरमान ने ।
नाथू कहे नवाब भेजे मजूर खट पहुंचान ने ।

बचन नामा का मजूर से

शेर—आइये नदी चन्द्र भागा सुनो भैया बात ये ।
बिरथा क्यों बोझ्या मरो खो डार जल तब हाथ ये ।
मै कहूँ ज्यू ही करो नृप मच ना हम चाहत ये ।
नाथू कही नामों जदी खट डार करी विख्यात ये ॥ १ ॥

जवाब सिपाही का नवाब से

शेर—नबाब साहेब ढोलिया दिये फिजूल गिवार ने ।
ज्यू बन्दर को कण्ठा रत्न बगसिया दातार ने ।
नदी मे डलवा दिया खोट रगो निवार ने ।
नाथू कहे मजूर नृप सेना गिने सरकार ने ।

बचन नबाब का सिपाही से

शेर—चुगली करो तुम औलिया की सजा पावोगे सही ।
कैसी क्षमा इस भक्त को कछ्ु खता मानो नहीं ।

मुखवर कहे चल देख लो नदी में ढोल्या वहीं।
गाढी जमावण नबाव के कसम रब की खा कही ॥

दोहा—नबाव बगसा ढोलिया, सो नदी मांहि गिराय।
नामदेव पितु मा सहित चले निज घर की राह ॥ १ ॥
देव योग अग्नि जली, जली पुरानी छान।
नामदेव स्तुति करे, लख अग्नि मिजमान ॥ २ ॥

बचन नामदेव का अग्निदेव से—तर्ज हंस कर

रूचि जीमो अग्नि भगवान आप की सब प्रभुताई है ॥ टेर ॥
अग्नि तृण का जानो चबीनी बसन रूई के मेवा।
चीनो पाट कपाट पकवान थुणियां पच्च मिठाई ॥ १ ॥
भोज अभोज का ना ही विचारा महा अघोरी पंथ तिहारा।
सप्त जीभों से चाट छान के लगी मलाई है ॥ २ ॥
काम धेनु कल्पतरु द्वारे भये लगन में भोजन सारे।
छके देव सुख मान विट्ठल की हुई बड़ाई है ॥ ३ ॥
याते वहां तुम रह गए भूखे या अजीर्ण से चाहते लूखे।
खाण्डव दरम्यान अर्जुन ज्यू करी मिताई है ॥ ४ ॥
कह नाथू छींपी या नामा जब पावक प्रगटे घनश्यामा।
तजे भूत छबि भान अग्नि यूं खुद यदुराई है ॥ ५ ॥

भजन अग्नि भगवान का इसी चाल मे

धन्य नामदेव तू मोय ॥ टेर ॥
जन प्रहलाद सी प्रीति तुम्हारी परा भक्ति तू पाई हमारी।
तेरा सरीसा भक्त जगत अभी कोई नाहीं है ॥ १ ॥
निजपद मेरा निराकार है सर्वोतक श्री विश्वाधार है।
दूजा सगुण स्वरूप फक्त भक्तों के तांई है ॥ २ ॥
जो जन जहां याद मोय करता तहां प्रगट मन आशा भरता।
तेरी इस भक्ति से कृपा होती याही है ॥ ३ ॥
नाथू कहे यो श्री भगवाना शीघ्र भये है अन्तर्ध्याना।
भई छान की छार अग्नि की या पहुनाई है ॥ ४ ॥

दोहा—छान जरी निज देख के, आरत गोणा माय।
नामदेव शिशु को कहे, ग्रहित बहु समझाय ॥

राग—मारू

ग्रहित बहु समझाय जान बन खण्ड से सुत ल्यो भारो।
ग्रहे बाल करे कोई तीर्थ ज्यु हरि भजवो थारो ॥ १ ॥
थारी भक्ति से ठीक है लाला कहनो मान हमारो।
घर बिन पत नही नर नारिन को किस विध चले गुजारो ॥ २ ॥
छोटो मोटो कच्चो पक्को चाहिये ग्रहस्थ के सहारो।
बिन आश्रम धूप वर्षा ऋतु शीत में दु ख अपारो ॥ ३ ॥
भूषण वसन बर्तन अन्नादिक कहां मे धरॉ विचारो।
याते कहां से आनो मूंजादि थुणिया छान छवारो ॥ ४ ॥
श्री नामदेव कहे माता से चिन्ता सभी बिसारो।
तन मन धन मै प्रभु को जानूं दुःख सुख कुछ भी डारो ॥ ५ ॥
नभ छप्पर पृथ्वी आंगन विधना सर्जन हारो।
बने बनावे यो घर आदि बृक्षन सो मत म्हारो ॥ ६ ॥
व्यवहारिक सुदामा जैसे घर बनवास्यां थारो।
जाऊ आज बन आक मूंजको काटूं धार कुलारो ॥ ७ ॥
फिर कोइ नीको छान छवेयो आश्रम कर ही प्यारो।
यूं कह नामदेव चले बन खण्ड मूंजो आक ऊखारो ॥ ८ ॥
कटते अर्क दूध निकसायो जब ऊंगली चीर निहारो।
खून आत करुणा दिल आई पट्टी हित पट फारो ॥ ९ ॥
आक त्याग सूखा मूंजो ले सिर धर भार सिधारो।
धूप से आरत हो तरू छाया सूतो तज फन्द सारो ॥ १० ॥
नाम देव पितु मात सहित कुल सोच्यो बहु दुखियारो।
कह नाथू छीपी भक्तां हित जाग्यो मुरली वारो ॥ ११ ॥

बचन रुक्मणी का भगवान से राग—श्याम कल्याण

क्षमा-२ स्वामी करुणा निधान ॥ टेर ॥
चमक उठे क्यों शेष शय्या से ज्यूं गज हित भगवान ॥ १ ॥
क्या सेवा मे चूक हमारी क्या कोई दुःख जन आन ॥ २ ॥
ओजक झट पट कमल मडासो धरयो करसनी पहरान ॥ ३ ॥
नाथू कहे रुकमण कर जोड्या पद नम पूछ बखान ॥ ४ ॥

पद बचन रुक्मणी से भगवान का इसी चाल मे

रुक्मणी हमारो एक दुःखी दास ॥ टेर ॥
क्षत्री छीपो कुल भूषण सुन्दर पण्डर पुरी निवास ॥ १ ॥
ज्यां को घर अग्नि चर लीनो हमें विश्वास ॥ २ ॥

प्रिय सुत दुःखी लखी उर आवे पितु ज्यू देऊँ दिलास ॥ ३ ॥
वो जन वन सर भारो ल्यायो धूप से भई तन त्रास ॥ ४ ॥
अति मन से आरत होय करतो आश्रम प्रति अर्दास ॥ ५ ॥
नाथ कहे हरि ज्यां घर छाऊ पूरां उसकी आस ॥ ६ ॥

राग मलार बचन रुक्मणी का तर्ज —म्हारे आगन०

नामा भक्त के छान हितकारी म्हाने ही ले चालो राज बिहारी ॥ टेर ॥
कलयुग में छींपी कुल भूषण भक्त भयो रणछोड़।
ऐसे हरिजन को देखन के पुनि २ हम को कोड ॥ १ ॥
सुदामा को गृह बनायो विश्वकर्मा को पठाय।
ऐसो क्या छींपी प्रिय भगवन् खुद घर चिणबा जाय ॥ २ ॥
कारीगरी करोगे कैसे कर कमलों से श्याम।
आज्ञा आपकी पालू गी मैं चिणतां सुन्दर धाम ॥ ३ ॥
सुत सपूत प्रिय तात से ज्यादा मात के दिलको होय।
नाथू कहे रुक्मणी जन हित अर्ज गुजारां तोय ॥ ४ ॥

बचन भगवान का लक्ष्मी से

नामा भक्त के छान छवाणी चालो तो रूप छिपाल्यो रमा राणी ॥ टेर ॥
इचरज क्या द्विज भक्त भये को छः कर्म जाति लार।
भयो भक्त रुजगारी कुल कलि ज्यां को धन अपार ॥ १ ॥
जग में खटे ना रुप मोहनी लक्ष्मी जी तव साज।
कोटि चन्द्र सी छवि तिहारी पिछण्यां सरे न काज ॥ २ ॥
झट करन्द तली, छाजलो ले के करल्यो गवारी भेख।
चलो बन नीतर सत्यभामा करती समता देख ॥ ३ ॥
नाथू कहे हरि बने धना से कर्मा सी श्री बाम।
ले बल्ला चले चट खग तज फिर आये नामा के ग्राम ॥ ४ ॥

बचन भगवान का

करल्यो कमला दर्शये थक नामो रह्यो।
सोय सर भरो सिर धर चल्यो घर नामा को होय ॥

बचन रुक्मणी का

आज्ञा आपकी धार शिर भारो लियो उठाय।
नाथू कहे लक्ष्मी पति सहित भक्त घर आय ॥

बचन भगवान का गोणा से राग—सारंग मलार

गोणा ठौर बता दे हमको अब हम छावें कठे सी छान ॥ टेर ॥
छायाँ सूतो है थारो डावड़ो घरल्या ढल्यां तावड़ो।
मोय भेजो घर को जाण, गोणा ठौर बतादे० ॥ १ ॥
ल्याय बलियाँ मूजो आता मूंज बाट लेवाला हाथां।
त्यार सभी सामान, गोणा ठौर बतादे० ॥ २ ॥
म्हारे लार घराली आछी छान बधासी साची माची।
कसाबंध घुलवान, गोणा ठौर बतादे० ॥ ३ ॥
दर्जी नाथू कहे झट बाना बतलाये निज स्थल ठिकाना।
छाते छप्पर भगवान, गोणा ठौर बतादे० ॥ ४ ॥

दोहा—माता कुशल क्षेम की, श्री लक्ष्मी नार।
भक्तां हेतु प्रभुता छिपा, प्रभु जट बाणी उचार ॥

राग मारू

रागमारू :—प्रभु जट वाणी उचार रहे ज्यूं छपरा छावण वारो।
सुन २ ये खेमा की माऊ अैठ बिछा सर भारो ॥ १ ॥
उस आंगन छावोला छपरो मेल मिला झट सारो।
थुणिया सिलवर मलयागिरिके शोभा सुगन्ध अपारो ॥ २ ॥
कहे रमा प्रेमा का बावा बातां पहली सुधारो।
कती करोला लम्बी चौड़ी नाप के छान बिचारो ॥ ३ ॥
बीस हाथ नापी लख चोड़ी लम्बी तीस निहारो।
कस्सा बध छपरा का काठ कई दिन करत गुजारो ॥ ४ ॥
दिन गुजारण थुणिया थे रोपी मै कियो छप्पर तैयारो।
पकड़ उठावो छाओ गाढ़ी उड़े न आत अधारो ॥ ५ ॥
छाई छान बांध नामा की काज भक्त को सारो।
चालो घरां करो मत देरी जन को फिकर निवारो ॥ ६ ॥
नाथू कहे लक्ष्मी नारायण पुरी वैकुण्ठ सिधारो।
नामो जाग चितवत सर भारो बेपरवाई पधारो ॥ ७ ॥

दोहा—नामा निज घर जावता, मिले सिपाही आय।
कहे नामदेवा से चलो, बादशाह अभी बुलाय ॥ १ ॥
बचन सिपाही का सुना, नामदेव मुसकाय।
शीघ्र उसी के सग चले, गये नबाब पे आय ॥ २ ॥

बचन नवाब का नामदेव भक्त से

शेर—ओलिया सा ढोलिया किये नजर जो रात ने।
सो पीछा प्रसाद दो हम चाहत खैरात ने।

तुमको नया बना दूंगा दिखा सुथार सुजात ने।
नाथू कही नृप यों जभी नामो पिछाणी बात ने ।। १ ।।

बचन नामा का

शेर—हजरत हमारे सग चलों चन्द्रभागा तीर जी।
ले आइये नदी मे पड़् योड़ा ढोल्या जड़् योड़ा हीरजी।
नाथू कहे नृप ल्याय संग नामा धस्यो जा नीर जी।
दिखाये कई काढ़ झट ज्यूं द्रौपदी का चीरजी।।

बचन नामदेव का तर्ज नाथ हमको भूल बैठे क्या

पिछाणो हजरत तुम्हारा कौनसा पर्यक है ।। टेर ।।
आप दीना सो इनामत धरे रक्खा था नीर में।
मांगा जब हाजिर किया लेलो अबे क्या शक है ।। १ ।।
तुमने दिया था ढोलिया खूब रत्नों का जड़ा।
वैसा ही इस गंग बिच मोय दिख रहा अशका है ।। २ ।।
कहां तक दिखाऊ काढ़ कर तुम को पलंग यहां बहुत है।
नाथू कहे नामो जबे नृप पद नमे ज्यूं रक है ।। ३ ।।

बचन नबाब का नामदेव से इसो चाल मे

बाबा नामदेवजी धन्य ये करामात है ।। टेर ।।
धराये नाम देव सो देव साक्षात है।
सत गुरु खुद जान नाम रक्खा धन्य तुम्हारी मात है ।। १ ।।
पहली की सिद्धि भूल गये बेवकूफ हमारी जात है।
दिखलाई लका मूदड़ी ज्यू भूल कोसी बात है ।। २ ।।
मच दिखाया मंच बस जाना बलि विख्यात है।
ज्यू कपि को मुनि मुद्रिका गिरी हेम गोरखनाथ है ।। ३ ।।
उपदेश दो कदमां पड़ू दिल दास होना चात है।
नाथू कहे यू बादशाह मोय त्यारणा तव हाथ है ।। ४ ।।

गजल बचन नामदेव का बादशाह से तर्ज : तैने बशी मे

हजरत तुम्हे ज्ञान आया मेरा जिया जानता है ।। टेर ।।
पांव परो मत सादो फकीरी हम तुम एक ही माया ।। १ ।।
दिल अन्दर दीदार अक्ल से खोजो कहां जो समाया ।। २ ।।

खुद ही खुदा जुदा मत जाने खुद पन तज दे राया ॥ ३ ॥
नाथू कहे नामो दी शिक्षा प्रभु करेगा दाया ॥ ४ ॥

बचन नामदेव से बादशाह का

तुम हो खुदा की दूजी काया मेरा जिया जानता है ॥ टेर ॥
या पेगम्बर बलि हो रसूला नाम ही देव धराया ॥ १ ॥
क्या तारीफ करूं मुसंद की रब छिन में दर्शाया ॥ २ ॥
रखना रहम रात दिन मुझ पर सत उपदेश दृढाया ॥ ३ ॥
नाथू कहे नम भूप विदा किये नामा निज भवन सिधाया ॥ ४ ॥

बचन नामदेव का गोणा से राग बिहाग

छान ये मैया कौन छवाई ॥ टेर ॥
धूपातुर सो के उठ आयो सर भारो कोई लेग्यो चुराई ॥ १ ॥
देख छायोड़ी पूछू तुमसे कौन करी या हव चतराई ॥ २ ॥
मलियागिरि मू ग्या सी बलियां बातां कसणमें कारी गराई ॥ ३ ॥
सुदामा के हित ज्यू हरि जी क्या विश्वकर्मा हाथ बनाई ॥ ४ ॥
नाथू कहे नामो छप्पर छवारो कैसो छो कहा गयो दे बताई ॥५॥

बचन गोणा का नामदेव से : भजन इसी चाल मे

क्या पूछे शिशु तुम्ही भेज्यो छवारो ॥ टेर ॥
गोरी सी लुगाई नर सांवलो सो करसणी बानो कामली बारो ॥ १ ॥
हाथ दांतली छायल्यो बल्यां शीश जिन्हों के हो सर भारो ॥ २ ॥
कह्यो आन भेज्यो छ. नामो जगां पूछ लगे बांधण प्यारो ॥ ३ ॥
नाथू कहे गोणा नाम से छा गयो छप्पर वोही तिहारो ॥ ४ ॥

बचन नामा का गोणा से . राग—कालगडो

माता धन्य भाग है तेरो ॥ टेर ॥
मै तरु छाया सोय रह्यो थो नॉय किसी को फेरो ।
लक्ष्मी हरि आया है, निश्चय पायो दर्श भलेरो ॥ १ ॥
हा परिश्रम प्रभु कितनो उठायो छप्पर छायो मेरो ।
देख वत्सलता जगत्पति की, बने भक्त को चेरो ॥ २ ॥
नेछा से नर के नारायण चित बसत है नेरो ।
सेवक बण्यो रहत है सहायक, माधव सांझ सवेरो ॥ ३ ॥

ऐसे हरि को भजे नहीं मूरख धृक जीनो जिण केरो।
नाथू कहे नामा के पड़ोसी पूछे छान को बेरो ॥ ४ ॥

बचन पडोसी का नामा से

कौन यह छपरो छायो नामाजी ॥ टेर ॥
थुणिया रग रंगीली शोभित बाता खूब कसाया ॥ १ ॥
सुर रमणीक मनोहर जागां देखत चित्त लुभाया ॥ २ ॥
कहने को यह छान छबि लख मणिमय भवन लजाया ॥ ३ ॥
कौड़ीधज के ब्याव में मण्डप ऐसा नजर नहीं आया ॥ ४ ॥

पद बचन नामदेव का पडोसी से : राग—कालगडा

यो छान को छवैयो मोटोरे सजनो ॥ टेर ॥
मेहनत तन मन धन ले पहली फिर जन पर करे औटो रे।
कारीगर सरनाम जगत में बड़ो लालची खोटो रे ॥ १ ॥
बदन सहित वसुधा सर्वस्व ली बलि घर बनकर छोटो रे।
फिर किंकर ज्यूं खड्यो द्वार पर लिए हाथ में घोटो रे ॥ २ ॥
तिलोकचन्द घर हाली रखतो खातो घनेरो रोटोरे।
अन्तर्यामी गोकुल वालो नन्द महर को ढोटोरे ॥ ३ ॥
उनपा छपरो चाह छवायो गुरु पद रज में लोटो रे।
तज आलस श्रुति धर्म पालो गिनो न परिश्रम टोटोरे ॥ ४ ॥
नाथू कहे छींपी नामा जब मिट्यो भ्रम को गोटो रे।
घट में भयो उजालो तबसे लग्यो ज्ञान को झोटोरे ॥ ५ ॥

भक्त चोखा महार की कथा

दोहा—मंगलबेड़ा स्थान में, चोखामेला नाम।
मृतक जानवर बस्ती के, ढोना उसका काम ॥

राग—मारू

ढोना उनका काम धाम विट्ठल के निसदिन जाता।
एक बर देख श्री नामदेव को पांडुरंग गुण गाता ॥ १ ॥
सतगुरु मान भगवान भक्त भये दृढ़ भक्ति रंगराता।
हरि महा द्वार यात्री पद रज शीष चढ़ा हर्षाता ॥ २ ॥

हरदम नाम कीर्तन प्रेम करके विट्ठल रिझाता।
चोखा महार को रत्न हार तुलसी माला दी दाता ।। ३ ।।
निशिभर चोखा को हरि मन्दिर रखत होत प्रभाता।
पट खोलत चट देखे सेवक कहीं यह भूषण चुराता ।। ४ ।।
बोले अर्चक हीन जाति हो जरा नही सकुचाता।
रत्न हार छीन दिये धक्का बचन कठोर सुनाता ।। ५ ।।
लख अपमान भक्त का जन्ना बोली आत्म ज्ञाता।
कैसे नीचता रही कृष्ण पद प्रेमी गंगा नहाता ।। ६ ।।
पुण्डरी नाथ जिनके हित नीचा कर्म में मदद दिलाता।
कई बर संकट आये इन पर सहाय करी जग त्राता ।। ७ ।।
चोखा महार की नार सोयरा भक्त प्रभु की विख्याता।
ज्यां की प्रसूती मे करी सेवा सखी बन विश्व विधाता ।।८।।
चोर सखे को आ मन्दिर हरी जेवर खुब पहनाता।
नाथू राम भक्ति से अछूत कई मुनि बाहन पद पाता ।। ९ ।।

दोहा—सेनापति बेदर नगर, बाबू राव ढिग आय।
राजा की सुसराल को, हाल कहे मुसकाय ।।

राग—मारू

हाल कहे मुसकाय बहुत दुःख पाय मालिक से सारा।
नीका घर बर हेर्या कन्या के होके चतुर सरदारा ।। १ ।।
मोटा नाम दाम सेठ का, टोटा घर में अपारा।
ग्राम २ घर २ फिर बेचे लेके माल उधारा ।। २ ।।
नफा सारु अन्न आणे जन्ना लाय ई धन का भारा।
टूटी छान सगी गोणा करे भोजन शुद्धाचारा ।। ३ ।।
तुलसी का बिड़ला बड़ा में सागपत्र अधिकारा।
ये नवेद्य नित धरे विट्ठल दर हित चित से मनवारा ।। ४ ।।
निश दिन गुण २ तन्दुर बाजे झांझन का झनकारा।
नृप गायन करे ठाकुर आगे प्यारा जंवाई तुम्हारा ।। ५ ।।
गणगोरी सी राजा हित क्या नाम देव उणियारा।
लक्ष्मी दरिद्री का सा जोड़ा रचे न सिरजन हारा ।। ६ ।।
सुनी सम्बन्धी घर की हकीकत गोविन्द सेठ उचारा।
आए लग्न मे धनी बन जो कहाँ गये बिट्ठल साहूकारा ।। ७ ।।
कह प्रधान बिठवा मुनीम गये मग में ही काढ़ किनारा।
पूछा पण्डरपुरी मे सब को कोई न बताया द्वारा ।। ८ ।।
सुन मन्त्री की बात रोष भर बाबू राव दुःख धारा।
मम पुत्री किस रग दिलाई कहां के विट्ठल छलगारा ।। ९ ।।

चलो सेनापति सग हमारी लावो तुरंग हमारा।
जाय पण्ढरपुर खोजे विट्ठल को कहाँ तक रहेगा फरारा ॥१०॥
ऐसी ठान प्रधान के साथे बाबू राव सिधारा।
करके गवन पवन ज्यू आये चन्द्र भागा किनारा ॥ ११ ॥
नामदेव मुक्ता मणि ढोल्या वहां धरे पहले अपारा।
टूटे फूटे मोती रत्नो का कण बिखरे ज्यू निहारा ॥ १२ ॥
चमकीली भूमि लख दोऊ करे आपस में विचारा।
क्या मग भूल अन्य पुर आया क्या जवरीन ल्यारा ॥ १३ ॥
आगे पांव बढ़ा चट पहुंचे देखा अजब चोबारा।
विस्मय भये सुदामा की ज्यू निरख छान सुख सारा ॥ १४ ॥
नामदेव जी देख ससुर को शीघ्र ही ढोल्या ढारा।
पलग सेठ बैठ गोविन्दजी विट्ठल नाम चितारा ॥ १५ ॥
दाम सेठ चट पाण्डुरग को हेला जोर से मारा।
कह नाथू छीपो कुल पावन प्रगटे जग हित कारा ॥ १६ ॥

दोहा—विट्ठल सगां सूं हँस कहे, दाम को हम गिरफ्तार।
जसुमति ज्यू फिर चाहत क्या, समधी जागीरदार ॥

राग · विणजारी

जय श्री विट्ठल अवतारा बदौ पद बारम्बारा ॥ टेर ॥
अग खीनखाप का आगा, सिर पाग पेंच दिये खांगा, चमके जर तार सितारा ॥ १ ॥
रेशम किनार कटि जोरा, हेम कड़ा कडोरा डोरा, जड़े हीरा रत्न अपारा ॥ २ ॥
हो भक्त वत्सल भगवाना, धरते हरि नाना बाना, कई जन के कारज सारा ॥ ३ ॥
गुण सागर श्याम सलोना, सोहते ज्यू सुगन्धित सोना, अद्भुत प्रभु रूप तुम्हारा ॥ ४ ॥
जग मोहनी माधव माया, ब्रह्मादिक भरम भुलाया, हम कैसे पावों पारा ॥ ५ ॥
दरजी नाथू कहे स्वामी, तुम पतित पावन सरनामी, द्यो पद सरोज का सहारा ॥ ६ ॥

पद तर्ज—रघुवर कौशल्या के लाल मुनि

सुनिये विनती विट्ठलनाथ लाखों अधम उधारन वाले ॥ टेर ॥
भगवत गति अद्भुत जाने क्या मन मति करतूत प्यारा।
लख धन नारी प्रसूत विष्णु नाम बिसारन वाले ॥ १ ॥
कीज्यो माफ खता भगवान दीज्यो हमें अभय वरदान।
रीज्यो खुश नित कृपा निधान लोक परलोक सुधारण वाले ॥ २ ॥
मेरी कन्या राजा नाम, सम्हालो भक्त हेतु घनश्याम।
दासी रखिए आठों याम, चारो फल परचारन वाले ॥ ३ ॥

कह नाथू छींपी कर जोर, बसिया ननां नन्द किशोर।
रख शुभ दृष्टि मेरी ओर, आवागमन निवारन वाले ॥ ४ ॥

दोहा—नाम देव घर विट्ठल, हुआ दर्शन उम्मेद।
कहे हरिजन अपनाऊँ, करो न कोई भेद ॥ १ ॥
कह विट्ठल गोविन्द तुम, महा भक्त पुनवान।
भक्त को कन्या ब्याह के, लिये यश हेम समान ॥ २ ॥
गावे नित नाथू कवि, छीपी भक्त नन्दलाल।
नाम देव मगल करण, पांडू रंग कृपाल ॥ ३ ॥
बाबू राव प्रभु चरण नम, हरि भक्ति वर पाय।
मन्त्री सहित बेदर चले, कन्या दई सम्हलाय ॥ ४ ॥
नीपा पोती रंग सुरग, घर घर नामा जोय।
पूछे मात से नगर में, यह क्या उत्सव होय ॥ ५ ॥

राग—मारू

यह क्या उत्सव होय बताओ मोय सत्य महतारी।
गोणा मात कहे नामदेव सुन बड़े त्योहार दीवारी ॥ १ ॥
नरकासुर को मार मनाई खुशियाँ श्री बनवारी।
याते शुभ स्नान कर नूतन बसन सजे नर नारी ॥ २ ॥
रूप चतुर्दशी नाम जगत मे हुआ इसी से जारी।
महालक्ष्मी रूप पुजोजे शाम को मगलकारी ॥ ३ ॥
सुन अम्मा की बात नामदेव बोले आप विचारी।
ल्याऊँ प्रात श्री पांडूरग को स्नान सेवा हितकारी ॥ ४ ॥
जननी की ले रजा नामदेव चले विट्ठल के दरबारी।
विनय करी प्रभु चलो मज्जन हित मम घर पावण चारी ॥ ५ ॥
बोले ठाकुर वक्त पूजन का आवे लोग पुजारी।
कैसे चलना होय लाड़ले इस दम सग तुम्हारी ॥ ६ ॥
अति आग्रह कर गहे नामा जब भगवान उचारी।
मेरे सिहासन तुम रहो ठाडे हम जावे तब द्वारी ॥ ७ ॥
रहो अचल सेवक करे सेवा मक्खन मिश्री मनवारी।
मुख ना हलाजे बाल भक्त खुल ज्याली पोल हमारी ॥ ८ ॥
दे शिक्षा नामा को आसन बिठा चले गिरधारी।
मिले पथ दामाजी सामा आये जान अबारी ॥ ९ ॥
दाम संग चल श्याम कथा कह नामदेव की सारी।
आये भक्त गृह हरषी गोणा कीनी शीघ्र तैयारी ॥ १० ॥

परम पति लख स्नान कराये लेकर गगा भारी।
निज आचल से पोंछ अंग पहनाये पट जरतारी ॥ ११ ॥
जन्ना दासी चरचे चन्दन कुबरी ज्यूं खुशबूदारी।
धूप दीप कर भोग धरे षट् रस कचन की थारी ॥ १२ ॥
रुचि जीमे भगवत सत ज्यू व्रज में कुंज बिहारी।
कहे नाथू जन्ना दिया बीड़ा डोडा लौंग सुपारी ॥ १३ ॥

भजन तर्ज—लखपतिया म्हारो

मोय जन्मा जन्म भगवान् सॉवरिया थारी दासी राखो जी ॥ टेर ॥
सोने का गड़वा भर गगा जल सदा ही कराऊँ जी स्नान ॥ १ ॥
केशर चन्दन अष्ट गन्ध से पूजू पट भूषण सजान ॥ २ ॥
विदुरानी जी भाव से जिमाऊँ षटरस कर पकवान ॥ ३ ॥
कत्था चूना लौंग सुपारी देवो बना के बीड़ी पान ॥ ४ ॥
सतयुग पदमा त्रेता मन्थरा द्वापर कुबरी सुजान ॥ ५ ॥
दामा की कन्या होय कलि मे आई पण्डरपुर स्थान ॥ ६ ॥
पूर्व प्रह्लाद अगद उद्धव के संग से भये कल्यान ॥ ७ ॥
नामदेव घर अब भई जन्ना निशदिन तुम्हरो ध्यान ॥ ८ ॥
दर्जी नाथू भक्त सगत से होय भक्ति तत्व ज्ञान ॥ ९ ॥

दोहा—भक्त भवन उत्साह से, खुश हरि चले उमंग।
उत सेवक जन आइया, मन्दिर पांडू रंग ॥

राग—मारू

मन्दिर पांडूरंग ढग से पूजे श्रुति अनुसारी।
मक्खन मिश्री दे मूर्ति मुख दर्शक रहे निहारी ॥ १ ॥
विट्ठल रजा भूल लगे खाने नामा मुख विटवारी।
विस्मय भये दार्शनिक जन ज्ञानी करी बलिहारी ॥ २ ॥
गये लोग सब जब हरि आ कहि नामो को दोफारी।
छोड़ो आसन मेरा नामा जानी भक्ति अपारी ॥ ३ ॥
कह नामो हठ ठोर न छोडू क्या बल करो मुरारी।
भक्त वत्सल हो भक्तां लारे ना गिने कोई अनारी ॥ ४ ॥
जात बरन कुल को ठिकानो निर्गुण निरूप खरारी।
भक्त भजो जब प्रगटो ठाकुर नीतर शून्य आकारी ॥ ५ ॥
नामदेव की गूढ कलह लख चुप रहे विश्वाधारी।
तब नामा तज दिये सिंहासन राजे सारग धारी ॥ ६ ॥

नामदेव करजोर नमे सिर गये निज भवन सिधारी।
कह नाथू छींपी कुल प्रगटे भक्त मणि अवतारी ॥ ७ ॥

तर्ज—कैसी बासुरी

माता विट्ठल से मै झगड़ा कीना डट डट के ॥ टेर ॥
हरि आसन दे मोय यहां आये, तुम पूजा करि असन जिमाये,
वहां मै मक्खन मिश्री खाये गट गट के ॥ १ ॥
यहां पुजाय प्रभु मन्दिर आवा, मॉगा आसन जब भये दावा,
मै भी फटका खूब सुनावा नट नट के ॥ २ ॥
हार विभु लाचारी किन्ही, तब मै इन्द्र ईंट तज दीनी,
फिर पदकज बलैया लीनी रट २ के ॥ ३ ॥
कह नाथू छींपी जन नामा, भक्त वत्सल पूर्ण घनश्यामा,
वासी है सुख राशि रामा घट घट के ॥ ४ ॥

भजन : तर्ज—जादू डार

नामो तेरी भक्ति से विट्ठल हमें उद्धार गयो रे ॥ टेर ॥
घर आज सुमति सी जानी, ली पूजा रुचि मिजमानी,
भिलनी विदुरानी ज्यूं जन्म सुधार गयो रे ॥ १ ॥
वो मायत के अधिक अपनायत, रखता है पूरी हिमायत,
जस गावत श्रुति शारद, अधम कई तार गयो रे ॥ २ ॥
तुम पर है कृपा अपारी, रखता नित टेक मुरारी,
कई कारज मगल कारी, तुमरो सार गयो रे ॥ ३ ॥
कह नाथू छीपी कुल पावन, प्रगट शिशु श्याम रिझावन,
भक्तों हित बन हरि बावन, जस विस्तार गयोरे ॥ ४ ॥



ज्ञानेश्वर कथा

दोहा—गोदावरी के उतरी तट पर है आपे ग्राम।
बच्छ गोत्री ब्राह्मण विट्ठल ताकी रुक्मणि बाम ॥

राग— मारू

ताकी रुक्मणि बाम आलन्दी वरो ससुर के द्वारी।
विट्ठल पथ कही गग स्नान को जाओ कह दिया नारी ॥ १ ॥
खुश होय विप्र काशी जा श्रीपाद की शिक्षा धारी।
सुन रुक्मणि दु ख मान खोज पति गुरू से करी लाचारी ॥ २ ॥
स्वामी जी कही पुत्रवती हो हँसी जब विप्र दुलारी।
मालूम होत श्रीपाद विट्ठल को गृहस्थ की रजा उचारी ॥ ३ ॥
तज सन्यास गृहस्थ भये द्विज हुये चार अवतारी।
श्री निवृतिनाथ, ज्ञान, सोपान देव ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥
चौथी मुक्ताबाई अद्वितीय ब्रह्म को जानन वारी।
ब्रह्मा विष्णु महेश सहित महामाया विभूति द्वारी ॥ ५ ॥
पिता दोष जाति बाहर किये कैसे शुद्धि संस्कारी।
इन दुःख तात ली नीर समाधि सती हुई महतारी ॥ ६ ॥
चारों भक्त मायत का तपलख पुरजन दया विचारी।
पेठण जा शुद्धि पत्र लेवाजो पालाये हमें स्वीकारी ॥ ७ ॥
बड़े होय चतुर जन पेठण जाके अर्ज गुजारी।
ब्राह्मण सभा कर कही गांव में भागवत के अनुसारी ॥ ८ ॥
देह हमता जग लाज त्याग करे नीचों को नमस्कारी।
मानो आज्ञा क्षमा करी सुन बात ठट्ठा की खारी ॥ ९ ॥
पूछें हँस नर नाम बताये ज्ञान देव उद्धारी।
जब मुसकाये कई लख भसा ज्ञान बोझ लद भारी ॥ १० ॥
ज्ञानेश्वर भणे बेशक हम महीषा दोऊ इक सारी।
जब मूढ सॉट मारी भैंसे के लगी संत पिछवारी ॥ ११ ॥
भक्त पीठ लख चिह्न कोरड़े फिर हम कहे अनारी।
तुम्हरे सम भैंसे से बुलावो मानो शक्ति तुम्हारी ॥ १२ ॥
महीष पीठ कर धरे ज्ञानेश्वर वेद की ऋचा पुकारी।
ये पर्चा लख शुद्धि पत्र दिये बहुत करी सत्कारी ॥ १३ ॥

कई दिन बाद आलन्दी आये स्वागत करे नर नारी।
निवासी रहे ग्रन्थ बनाये कई ब्रह्म शिक्षाकारी॥ १४॥
चांग देव द्विज ताँबे क्षेत्र में रहता योगा चारी।
ज्योतिष जो चौदह सौ वर्ष की जाणी बात अगारी॥ १५॥
होय ज्ञानेश्वर सतगुरू हमरे सच लख चित्त बिचारी।
कागज लिखता शंका भई दिये कोरा पठा अहँकारी॥ १६॥
मुक्ता बाई जो कोरे पत्र को शिष्य आगे फटकारी।
चौदह सौ वर्ष रहे कोरा बिन गुरु हुई न उजारी॥ १७॥
ज्ञानेश्वर पेंसठ ओली मे उत्तर लिखे ततसारी।
शून्य ब्रह्म तुम आत यहाँ बनो परमानन्द अधिकारी॥ १८॥
उत्तर पत्र ले चल चेला दिये गुरु पद श्रद्धा धारी।
सिंह सवार अहि चाबुक ले चेला चौदह सौ अगारी॥ १९॥
आये आलन्दी उस दम चारो बहन भाई करी त्यारी।
बैठे चबूतरे सहित चले सिद्ध गर्व मद हारी॥ २०॥
बाग से उतरे चांग देव नमे ज्ञानेश्वर से अपारी।
पेंसठ ओली के अर्थ पूछीये बोले गुरु उपकारी॥ २१॥
चौदह सौ चेला मे कोई बलिदान जो करो आज्ञाकारी।
ये सवाल सुन भये शिष्य सारे गुरु गुमराई बिसराई॥ २२॥
चाँग देव ब्रह्म विद्या सीखण भयो बलि चढ़ण तैयारी।
ज्ञान देव पेंसठ का अर्थ बताया किया सुखियारी॥ २३॥
पुन गये मुक्ता बाई के ढिग न्याती थी उसबारी।
पीछे घिर गये चाँग देव को शिक्षा दीवी कुमारी॥ २४॥
चौदह सौ वर्ष को जरठ भयो है ओजुन भ्रमणा जारी।
नर नारी देह जड़मती तज भज चेतन अविकारी॥ २५॥
नाग नाथ ओढिया निवासी द्विज रहे वेदा चारी।
नाम बिसोवा खेचर लख ज्ञानेश्वर जस उजियारी॥ २६॥
आये दीक्षा लेन जबरी ज्यू सुवर्ण परख निहारी।
कुम्भ न्याय कर शीतल सिद्धि से केलड़िया खड़डारी॥ २७॥
मालूम होत ज्ञानेश्वर अपनी पीठ तपाई अगारी।
मुक्ता बाई भ्रात पीठ पर रोटी लीवी उतारी॥ २८॥
सोलवो सोनो जान बिसोवा खेचर अर्ज गुजारी।
पुनः पुन पद नमे दीक्षा हित सो पान देव दिये त्यारी॥२९॥
फिर ज्ञानेश्वर तीर्थकरण चले बहुरी भक्त ले लारी।
किये पण्डरपुर विट्ठल दर्शन लिये नामदेव सुचिकारी॥ ३०॥
कहृ नाथू छींपी नामा को तत्व लखाण मुरारी।
ध्रुव माता ज्यू शिक्षा दिरावन चाहे गर्व निवारी॥ ३१॥

गोरा कुम्हार की कथा लावणी रमत बसीकरण

कृष्ण भक्तों का विचित्र कर्म देख ना कीज्यो कोई भ्रम ॥ टेर ॥
पडरपुर चन्द्र भागा की नार, तेरे ढोकी में गोरा कुम्हार,
हुआ सब भक्तों में अधिकार सम्वत तेरा सौ सीस परचार ।

दोहा—करत केशव का कीर्तन, जाते मग्न मन होय ।
नन्हा बच्चा दब कर मरिया, बोली नार चिढ़ होय ।
मोय ना स्पर्श करना चर्म ॥ १ ॥

गोरवा सील व्रत लीना, वश हित सोच नार कीना,
विवाह भगनी से कर दीना, राम बाई तन रंग भीना ।

दोहा—ससुर कही छोटी कन्या; बरतो बड़ी समान ।
फिरभी गोरवा दृढ़ व्रत कर, भजे विट्ठल भगवान ॥
ज्ञान घन पाल सदा व्रत धर्म ॥ २ ॥

एक निशि नार बांई दांई, दोऊ सुती बिच ले साई,
कंथ को जाण नींद मांई जगाने रेन मेन तांई ।

दोहा—एक एक कर गहे कामणी, निज २ कुच लिये डार ।
निद्रा खुलत पति, निज कर काटे, व्रत को खड विचार ॥
नार दोऊ पीहर गई तज शर्म ॥ ३ ॥

भतीजे वहू वण कमला श्याम, वाहन खच्चर ले किया घर काम,
दुरुस्त दोऊ आणी कर २ वाम, ऐसे सकट में सहायक राम ।

दोहा—ज्ञानदेव सतसग लिए, आये कई भक्त समेत ।
लिये मुक्ताबाई थपि लख भाखी जनघट परखन हेत ॥
कह नाथू नामा तन नर्म ॥ ४ ॥

दोहा—सुदश वर्ष नामा भये, भक्तो में सरनाम ।
सत मण्डली मे गये गोरा कूमठ धाम ॥

राग—मारु

गोरा कूमठ धाम भक्त निष्काम हो रहे भेला ।
आतमगुरुजी करत निरूपण सुनते चातुर चेला ॥ १ ॥
उद्धव वोध कृष्णार्जुन सम्वाद का हो रया हेला ।
नामदेव लख ज्ञान देव कही तोड़ने भरम झमेला ॥ २ ॥
आतम ज्ञान कही नामा को या तो कछु मन मेला ।
सेन दई गोरा कुम्हार को परखत सत नवेला ॥ ३ ॥
मरे जिवावण त्रिकाल दर्शी सब सिद्धि जस फेला ।
सतगुरु किये विन वो नहीं पावे परमानन्द का गेला ॥ ४ ॥

भरम भागवत पढ़ वेद शास्त्र शुद्ध चित नित कर छेला।
नम्र भाव सतगुरु पद सेवे सोई लावा लेला ॥ ५ ॥
गोरो कहे मैं कैसे जानूँ घड़ा मिट्टी का ढेला।
जब भने सतगुरु भाँति थापी से करो खेला ॥ ६ ॥
ज्ञाना मद की आज्ञा पाकर गोरा उठें अकेला।
मध्यमा उँगली मोड़ सभी सिर दे घट किया उजेला ॥ ७ ॥
और भक्त गम्भीर धीर धरि लगे नामा को सेला।
बोले खिज कूमठ का घट लख करता यहां बद फेला ॥ ८ ॥
सुन गोरा कही ज्ञानेश्वर को सब ज्ञानी गुण पेला।
नाम देव कच्चा बिन गुरु का पास न ज्ञान अधेला ॥ ९ ॥
जब ज्ञानेश्वर कही नामा को किस गुरु के घर खेला।
नामो कहे गुरु कहते किस को यह बतलाओ पेला ॥ १० ॥
बोले योगेश्वर गुरु बिन नुगरा ज्यूं खर शूकर बेला।
उसका मुख देख्यां लगे पातक यम नर्का में ठेला ॥ ११ ॥
अब भी गुरु कर आना नामा जब सन्मान होवेला।
ज्ञानदेव का बचन बाण सम नाम देव उर भेला ॥ १२ ॥
बिलखे मुख घर आये नामा पूछे पिता न हेला।
कहे हाल नामा सत्संग के गुरु से कहा बनेला ॥ १३ ॥
दामो कही गुरु अलख लखावे ज्यूं तिल मांही तेला।
नांमो कहे अलख श्री विट्ठल नित देह दर्शन मेला ॥ १४ ॥
कही तात जा पूछ विट्ठल को वे सत् शिक्षा देला।
कह नाथू छींपी नामा जी जा हरि आगे टेला ॥ १५ ॥

चौपाई—जय विट्ठल श्री पांडूरंगा। सत् चित आनन्द रूप अभगा ॥ १ ॥
पुण्डरीक नाथ श्री घनश्यामा। सेवत पद रुक्मणी सत्यभामा ॥ २ ॥
सकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध। वासुदेव व्यह चतुर भुजायुद्ध ॥ ३ ॥
राम कृष्ण केशव कंसारी। दामोदर गोवर्द्धन धारी ॥ ४ ॥
मुरली धर मधुसूदन माधव। मोहन मुकुन्द मुरारी यादव ॥ ५ ॥
भूमा विराट ब्रह्म दिव्य प्रभा। आदि पुरुष हरि हिरण्य गर्भा ॥ ६ ॥
दिनपति मनपति गनपतिदिगपति। जनपति धनपति यदुपति जगपित ॥७॥
हरि धनवन्त्री प्रश्नी नन्दा। परशुराम श्रीराम गोविन्दा ॥ ८ ॥
नर नारायण यगन्या बावन। कछ मछ वराह विभुजन पावन ॥ ९ ॥
कह नाथू छीपी जन नामा। बसही प्रभु उर आठो यामा ॥ १० ॥

दोहा—नामदेव करी कीर्तन श्री विट्ठल के द्वार।
भगत प्रेम मे मगन हो, हर्षे हरि अपार ॥

साक्षात् प्रगटे प्रभु, ज्यूं खम्भ में नरसिंह।
नामा नम कहने लगे, लख दिव्य पांडूरंग।।
जप तप तीरथ यज्ञ व्रत, कर मुनि दुर्लभ पाय।
सो प्रभु मेरे भजन पर, खुश हो प्रगटे आय।।
नामदेव इस लाभ में, सौ गुने हर्ष बढ़ाय।
प्रभु चरण मस्तक नवे, सिर कर धरे यदुराय।।

राग—मारू

सिर कर धरे यदुराय पीठ थपकाय कहा गिरधारी।
नामदेव तू आज कीर्तन किये बहु आनन्दकारी।। १ ।।
इस भजनानन्द बाद स्वरूपानन्द का बन अधिकारी।
मो ब्रह्म ज्ञान गुरू बिन हो वही कहता वेद पुकारी।। २ ।।
इस कारण तुम करो कोई सत् गुरू दुर्मति मिटे तुम्हारी।
यह सुन नाम देव कही दिल से मूढ़ पच्च वोही अगारी।। ३ ।।
चुपका लख नामा को शिक्षा दे हरि बारम्बारी।
गुरू बिन मन इन्द्री अतीत पद पावे न कोई ब्रह्मचारी।। ४ ।।
नामदेव कहे मेरे तुम सिवा कोई गुरू ना बनवारी।
विट्ठल भने मै कौन हूँ नामा क्या छवि जानी म्हारी।। ५ ।।
नामो कहे तुम रूक्मणि रमणा प्रत्यक्ष प्रगट मुरारी।
मेरे पिता यह ज्ञान बताया धन्य तन मुनि मन हारी।। ६ ।।
तुलसी माल विशाल दृग पंकज दया दृष्टि अपारी।
मन्द हास कटि हाथ धरे इन सिवा कौन छवि न्यारी।। ७ ।।
बोले विट्ठल रूपते वर्णा सोई सगुन साकारी।
सो एक देशी मच्छ कच्छादि धरूँ कई हर वारी।। ८ ।।
श्याम रूप तू जान लियो पण तत पद सके न निहारी।
याते तू मत जानी विट्ठल नहीं व्यापक ससारी।। ९ ।।
सो सत् चित आनन्द स्वरूप नित घट २ में अविकारी।
जो स्वरूप पहचान के हित सुत गुरू करो अवतारी।। १० ।।
विणजारे के बैल फिरे जो शक्कर गुण दल भारी।
चारा चरत भ्रमे वृथा ही ज्यूं गुरू बिना अनारी।। ११ ।।
नामो भने वह कौन रूप तव बतलावो विस्तारी।
पांडुरग कहे सुन नामा रूप वह सूक्ष्म दीदारी।। १२ ।।
सूरज चन्द्र अग्नि आदि की बड़ी ज्योति उजियारी।
सो प्रकाश न करे आत्म को वह आत्म आधारी।। १३ ।।
सो आत्म सर्वातम निर्गुन मै जग सर्जन हारी।
उसे जान गुरु दीक्षा ले के नित्य रमति अधियारी।। १४ ।।

नामो सोच कहे पूर्व जन्म से जानूं तुम्हें बिहारी।
प्रथम सनत्कुमार हुए हस चरणां चित धारी॥ १५ ॥
दूजा में प्रहलाद भया जब हरि प्रगटे खम्भफारी।
तीजा अगद युवराज बना तब देखे राम वपु धारी॥ १६ ॥
चौथा आप कृष्ण ढिग भये मै उद्धव आज्ञाकारी।
कह दर्जी नाथू नामा अब तुम विट्ठल हितकारी॥ १७ ॥

दोहा—विट्ठल भने नामा तुझे, नही आतम का ज्ञान।
पांच जन्म क्या सहस्र जन्म, जाना नही कल्याण॥
ब्रह्म रूप चीन्हे बिना, जन्मा जन्म के मांय।
सतगुरू किये की तत् लखे, तन बिन गति होय नांय॥
नामो कहे प्रभु जाण ने, चिन्ह हमारे पास।
बेशक आवे वेष धर, कोई रमा निवास॥
बोले विट्ठल विश्व के, आवेंगे वपु धार।
समझूँगा ज्ञानी तुम्हे, पहिचाने दीदार॥
माली सांवता सग कल, जा थल वेणुनाद।
वहाँ आऊँ मै रूप धर, बात या रखना याद॥
विट्ठल सिंहासन बिराजिया, नामा गये निज द्वार।
समझ सॉवता घर गये, दोनो किए विचार॥
सुबह होत नामो कहे, जा सांवता माली घरे।
देखो माली विट्ठल कैसे, गुरुजी घिस पिस करे॥
चलो वेणुनाद देखे, क्या प्रभु बाना धरे।
नाथू कहे नामा गये, बन्दर सी छवि लख डरे॥

लावणी रगत छडी
राग भैरवी ; तर्ज—रसियो रामा है

कच्छ मच्छ हयग्रीव हस बावन बराह नरसिंह बने।
सोई नामा के शिशु हठ भक्ति मद खण्डन को मलग बने॥ टेर॥
कफनी सेली ऊँची टोपी लगा के किस्ता दण्ड लिया।
भिक्षा की झोली कांधे धर हुक्का हाथ प्रचण्ड लिया॥
काम धेनु को कुत्ती बनाई रूप ज्यों काक भुसंड किया।
घर घर टुकड़ा मॉग सवाल करे यह सब पाखण्ड किया॥
जान सके ना कोई ससारी श्री ठाकुर इस ढग बने॥ १॥
वेणुनाद थल समीप आत ही नामदेव लख घबराया।
कहन लगे मन विट्ठल की बरियांयम सम यहां क्यों आया।

जावत निकट फकीर साँवता माली देख दिल हरषाया।
नामो कहे गांव का रास्ता पीछे छोड़ किधर ध्याया।
कहे मलग मोय भूख लगी है रोटी खा मन चग बने ।। २ ।।
नामा सांवता पास वृक्ष के जा डडा कुंडा डाला।
बहन मलग कहन लगे तुम्हरा कहा नाम जाती बाला।
माली सांवत नाम बताये छींपो नामदेव लाला।
बोले फक्कड़ सॉवता नहीं सोता पी मोसूं प्याला।
भक्ति नही देव की क्यू तू नामदेव उमग बने ।। ३ ।।
खाली नामा है तूं नामा क्या तूं हुक्का पीता है।
नामा नट कहे हिन्दू दिल में यवनों को नहीं छीता है।
करी मनुवार हुक्के की सांवता हो तैयार जग जीता है।
फिर रोटी चुरी तव्बर दिये कुत्ती दूध अमीता है।
गऊ भेंस से कुत्ती अधिक लखि नामा नहीं भ्रम भंग बने ।। ४ ।।
बोला फक्कड़ लो नामा निवाला जब नामा मुख फेर लिया।
करि मनुवार सांवता की हरि परख शीघ्र पास आ हर्ष किया।
माली खाने चला टूक जब नामदेव यो ज्ञान दिया।
यवन हाथ का भोजन कर क्यू धर्म गमावे फूट हिया।
माली नामा हाथ झटक चट जीमे टुकड़ प्रभु सग बने ।। ५ ।।
दिये ओलिया ग्रास माली मुख नामा छी कर खिजलाया।
हिन्दु धर्म का क्या डर रक्खा भोजन यवन के कर खाया।
कहे मलंग माली नामा को जबरन खिलाओ कर दाया।
नामा डर के भगे धर्म के भय से दौड़ मन्दिर आया।
शीघ्रताई से वह फकीर भी आकर पांडू रग बने ।। ६ ।।
विठ्ठल भने क्यों कांपे नामा कोन तेरे को डरपाता।
नामा कहे बेटा फकीरड़ा एक हमें पकड़न आता।
रुक्मण कहे प्रभुजी तोहे बेटा कह कर बतलाता।
बोले भगवत जन से मेरा बीज वृक्ष सा है नाता।
पूछा हाल हरि नामा भाखे आज यवन कुसग बने ।। ७ ।।
सांई साथ सांवता खाना खाकर मुसलमीन हुआ।
मन्दिर लायक रहा न माली दीन छोड़ बेदीन हुआ।
मेरा धर्म बिगाड़न लगे मैं भाग प्रभु पद लीन हुआ।
भने नन्दलाल गुरु कर नामा तो चाहे परवीन हुआ।
दरजी नाथू राम-कृष्ण पद परसत पुलकित अंग बने ।। ८ ।।

दोहा—विठ्ठल नामा से कहे, सतगुरु कर भ्रम जाय ।।
माया मेरी अनन्त है, कोई लख नहीं पाय ।।

नामा विठ्ठल से कही, कब आये भगवान।
मै मायावश कब हुआ, हरि की नहीं पहचान॥
कहे विठ्ठल मै मलग बन, आया वेणुनाद।
काम धेनु के दूध का, कीना वहां प्रसाद॥

राग मारू

कीना वहां प्रसाद याद कर कैसी लीला दिखाई।
सतगुरु किये होत नामा तो लखते सब प्रभुताई॥ १॥
नामो कहे मै चूका एक बार दया करो यदुराई।
दूजा पधारो विट्ठल पिछानू कर के ध्यान बहुदायी॥ २॥
पांडूरग कहे नामा गुरु बिन कोई गति न पाई।
याते गुरु कर रीत पुरानी आदि से चली आई॥ ३॥
मान्धाता गुरु मच्छ अवतार मे कीना रूप लखाई।
कच्छ सहजानन्द वराह कक ऋषि गुरु कर लीवी बड़ाई॥ ४॥
नरसिह बना जब दुर्वाषा को गुरु करके गम खाई।
बावन ब्रह्म देव की शिक्षा ले कीनी चतुराई॥ ५॥
परशुराम किये शकर गुरु वशिष्ठ रघुराई।
कृष्ण हो सांदीपन घर कीनी चौदह विद्या की पढ़ाई॥६॥
सब अवतार मे हम गुरु करके रहे स्वरूप समाई।
याते गुरु किया ब्रह्म पिछाणे या मे ना हलकाई॥ ७॥
नामो कहे फिर आवो हरि ना तजिये निज ठुकराई।
न जानू तो अवश्य गुरु करुं ना बनिये मंगताई॥ ८॥
ऐसा कोल कर नामा हरि से सांवता सग लिवाई।
वेणुनाद थल जाके बैठे मग टक-टकी लगाई॥ ९॥
इनसे पांडूरग बदल तन बने पठाण सिपाई।
अस्त्र शस्त्र धर जरकस भूषण टेढी पाग झुकाई॥ १०॥
हो घोड़े असवार तेजी से यों ललकार सुणाई।
नामा दरजी को बेगार में पकड़ो करण सिलाई॥ ११॥
सुणत हांक डर नामा सांवता को के तो समझाई।
आत पठाण बेगार मे पकड़न चलो भाग चट भाई॥१२॥
बोले सांवता भाग्यो न जावे होवे भाग लिखाई।
तू भागे तो भाग सुणत चट नामो भगे भय खाई॥ १३॥
तुरी असवार लार लाग्यो धस्यो मन्दिर मे आई।
गोखे चढ़ देखे सांवता को कहे पठाण खिजलाई॥ १४॥
नामदेव श्री पांडूरग को कहा हाल घवराई।
वेटा एक चपड़ासी ले गये साँवता को वरीआई॥ १५॥

हँस विठ्ठल कहीं नामा बाहर देखो निगाह बढ़ाई।
कित सांवता को लेगे खां जी बेगार धमकाई॥ १६ ॥
देखो नामा माली अकेला पूछे भेद समझाई।
बोले सांवता नामा पागल जाने नहीं प्रभुराई॥ १७ ॥
लज्जित हो नामा हरि आगे चुप रहे चित झुकाई।
कह विठ्ठल क्यों उदास नामा गुरु कर हो सुखदाई॥१८॥
नामो कहे वे अस्त्र-शस्त्र कहां से लाये कन्हाई।
भली भई गिरफ्तार भये नहीं सुन रुक्मण मुसकाई॥१९॥
बाल भक्त को भोरी बात सुण खुद विठ्ठल फरमाई।
सब सामान भये मेरी शक्ति से गुरु बिन सकेन लखाई॥२०॥
नामो कहे तीजों फिर आवो सग ले भीम की जाई।
बेशक प्रभु पहचानूं अबके ज्यों सुत बाबल भाई॥ २१ ॥
बोले विठ्ठल जा अबके अकेला पदम ताल चित चाई।
कह नाथू छींपी जन हेतु लीला करे मन भाई॥ २२ ॥

लावणी रगत छोटी

गुरु भक्ति मण्डन हूट खण्ड न नामदेव जी का।
बन गये मलेच्छ रुक्मणि सहित हरि नौका॥ टेर॥
फटी मेली धोती पाग, चोला है पुराना।
हरि सजे आप रुक्मणी को यों ही जनाना।
टोकरे में हडी मुर्गी शीश उठाना॥
भैंसे पर छोरा छोरी चले मस्ताना।
गये पदमताल तज रास्ता पण्डर पुरी का॥ १ ॥
लख मलेच्छ आता नामा हाका मारा।
क्यों आता इधर क्या धर गये बाप तुम्हारा।
बोले विठ्ठल जोशीले बच्चे लबारा।
चुप रह रे यहां क्या तेरा बिगारा।
नामा डेर सोचा ये शठ दुष्ट मती का॥ २ ॥
नारी को नामा कही इधर क्यों आती।
बोली रुक्मण कारखाना जावु प्रभाती।
दिये डेरा डाल चट चूल्हे को सिलगाती।
हाँडी चढ़ाय भाजी हित पति बतलाती।
मुर्गी को रजा दी श्याम यदुकुल टीका॥ ३ ॥
हरि आज्ञा मुजब दोऊ मुर्गी हण्डी डाली।
ना भरी हडी ले हुक्म भैंसे घाली।

भैसों से न हुण्डी भरी करे क्या ख्याली।
हरि कहत दोऊ लड़के को मोसो काली।
ये लीला देख नामा का मुख भये फीका।। ४।।
रुक्मणि कहे क्या डालू भरी नहीं हुण्डी।
प्रभु सेन करत नामा की तरफ चली चण्डी।
घबराय के नामा भागा विट्ठल की मण्डी।
प्रभु प्रिय सहित मिले रूप त्याग पाखण्डी।
हे हरि छुड़ावो पेंडा मलेच्छनी का।। ५।।
नामा की बात सुन रुक्मण प्रभु से भाखी।
जन मोहे मलेच्छनी कहे कदर क्या राखी।
हरि कहे प्रिया तू जग जननी श्रुति साखी।
न अज्ञान शिशु की बोली पर दुःख दाखी।
कर गुनाह माफ कह जन नाथू छीपी का।। ६।।

दोहा—पांडुरग हंस कहत अब, नामा ले गुरु ज्ञान।
नाम कहे तीजी दफे, कब आए भगवान।
विट्ठल कहे मैं मलेच्छ बन, आया पद्म तलाव।
जिसे दुष्टा कहत सो, रुक्मणि सील स्वभाव।
यह सुन के लज्जित भये, नामा विनय सुनाय।
अब हरि जो आज्ञा देवो, लूंगा शीश चढ़ाय।
दीन वछल दुर्जन दमन, दोऊ दया निधान।
नाम देव मंगल भये, पांडु रंग भगवान।
कहे प्रभु नामा तू अब, सतगुरु करिये जाय।
नाथू कहे कौन करूं, दीजिए नाथ बताय।

राग मारू

दीजिये नाथ बताय आप पितु मात मोय मन भावन।
विट्ठल भने आवड्या ग्राम जहां नाग नाथ जग पावन।। १।।
है तीर्थ सरनाम गोदावरी गगा जी का न्हावन।
वहां विसोवा खेचर नामक भक्त शम्भु गुण गावन।। २।।
उसको सतगुरु बनाओ नामा दुर्मति दुःख मिटावन।
यह सुण नामा पांडु रंग पद नम के लगे घर जावन।। ३।।
प्रभु वियोग नामा के नैना झरे झल ज्यों घन सावन।
व्याकुल लख नामा को रुक्मणी लगी है दया करावन।। ४।।
कहे प्रभु से इस बाल भक्त संग जइयो दीक्षा दिलावन।
यह सुन विट्टल बुला नामा को कहियो धीर बन्धावन।। ५।।

नामो हर्ष सुन बोले धन्य हो नाथ दीन अपनावन।
घरॉ खबर दे आऊँ पीछा पड़ मायत के पायन॥ ६॥
ऐसी कह निज घर गये नामा नित क्रम किये प्रभु पावन।
दाम पिता से कहने लागे धाम गुरु के जावन॥ ७॥
गोदावरी तट नाग नाथ का धाम है लोक सरावन।
खेचर बिसोवा बसे महात्मा जीव का भ्रम मिटावन॥ ८॥
वहां जाने हित मग खर्चा दो प्रभु के भोग लगावन।
या सुन दाम सेठ कही शिशुपन है तुम्हारा डर पावन॥ ९॥
कैसे अकेला जाय सकोगे मारग दूर भयावन।
तेरी माता को संग ले जावो गुरु पद शीश नवावन॥ १०॥
नामो कहे संग बिट्ठल जासी श्रीमुख का फरमावन॥ ११॥
यह सुन दाम सेठ किये इचरज लगे मन में मुस्कावन॥ १२॥
दिये फलार द्रव्य कुछ खरचन नामा को पहुँचावन।
दाम सेठ गोणा और जन्ना आये मन्दिर भ्रम ढावन॥ १३॥
नामो भीतर जा कही विट्ठल चलिये गुरु बनवावन।
विनय सुनत उठ खड़े हुए हरि नामा लगे हर्षावन॥ १४॥
नामो कहे मम मायत ठाडे तुम्हे वेण भोलावण।
बोले प्रभु यांही बुलवाबो जब जन गये बुलवावन॥ १५॥
मन्दिर आने तीनों भक्त हरी छबि लगे दिखलावन।
कह नाथू छींपी कर दर्शन लगे पद शीश झुकावन॥ १६॥

भजन तर्ज—भजले राम नाम की वाणी

जय जय पांडूरंग मुरारी श्री थारी छबि की बलिहारी॥ टेर॥
पीत वसन घनश्याम वदन पर कोटि मदन वारी।
शंख चक्र गदाम्बुज शोभित चार भुजा धारी॥ १॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल रवि शशि उजियारी।
भाल तिरेखा मृग मद केशर चन्दन सुगन्ध कारी॥ १॥
श्री वत्स भृगु पद उर काला कौस्तुभ मणि न्यारी।
बाजु बन्द कर कड़ा कंडोरा नूपुर झनकारी॥ ३॥
कह नाथू छींपी दामा पर कृपा करी भारी।
नाम देव से सुत जन्मा नर सब पीढी त्यारी॥ ४॥
दोहा—हरि भक्तों को दरश दे, भये मूर्ति प्रवेश।
यात्री जन आने जगे, उत्सव दिवस विशेष॥

कथा कूर्म दास की

दोहा—कूर्म दास ब्राह्मण भये, हरिजन पैठण मांहि।
जन्म से ही उस भक्त के, हाथ पैर थे नाहीं॥

राग मारू

हाथ पैर थे नांहि विट्ठल दर्शन के ताहि उमाता।
मन्दिर बचती कथा भनक पड़ी पेट के बल वहां जाता ॥ १ ॥
आषाढ़ काती विट्ठल यात्रा महात्म्य सुन पुलकाता।
उसी वक्त चल पड़े रेंगता दिन मे कोस भर आता ॥ २ ॥
कोई हरि का लाल पड़े को अन्न जल आन खिलाता।
कहा इचरज देवयोग विपिन में अजगर आहार पाता ॥ ३ ॥
बीते चोमासा पैठण से लोहान तक गए थक गाता।
यहां से सात कोस पढरपुर कल सुर जगणी माता ॥ ४ ॥
या सोचे भक्त यात्री पहुंच सकूं न प्रभाता।
विनय पत्र दू पांडूरंग को बांच आय जग त्राता ॥ ५ ॥
यात्री जन कर चिट्ठी लिखा दी कूर्मदास विख्याता।
दीन दयाल सुध लीजिए मोरी सब घट २ के ज्ञाता ॥ ६ ॥
अहिल्या गीध गज गनिका खग अण्ड तारन विश्व विधाता।
किरपन हीन दीन को दर्शन दो और कछु नहीं चाहता ॥ ७ ॥
भक्त की पत्री ले चल्यो यात्री पहुंच्यो पण्ढरपुर प्राता।
पन्ढरी नाथ ढिग धरी पत्रिका सादर हरि मुसकाता ॥ ८ ॥
विलम्ब जान टुक कूर्म दास यूं पुनि पुनि अर्ज सुनाता।
दर्जी नाथूराम भक्त कचन को खूब तपाता ॥ ९ ॥

भजन : तर्ज—रस की बून्दा पड़े

पांडूरगा अब तो तूं ही आय दर्शन देजा हमे ॥ टेर ॥
विट्ठल यात्रा महातमा सुनके पेट के बल यदुराय चला चट रटत तुम्हें ॥ १ ॥
पेठण से रेंगत लोहन पहुंचे गये चौमासा बिताय आई सर्द समे ॥ २ ॥
यहां से ही सात कोस पडरपुर कैसे कल पहुंचे जाय, अपग अग बिना समे ॥ ३ ॥
गाये दामोदर दर्श मुनि दुर्लभ जल जल दूध मिलाय जावण जितना जमे ॥ ४ ॥
तो भी कूर्म अण्ड ज्यू पालो आय मेरे पितु माय रमा सग सदा रमे ॥ ५ ॥
भक्त कल्प तरु दीन के बन्धु गरीब परवर कहलाय सब अपराध क्षमें ॥ ६ ॥
करो अनाथ ज्यू लख माथे हाथ धर, नाथ पयादे पाय गवन कर छु मे छमै ॥ ७ ॥
नाथू नामदेव जनप्यारे कूर्म दास अपनाय पुनि पुनि शीष नमै ॥ ८ ॥

दोहा—यात्री दर्शन कर गये, सुनि हरि कूर्म पुकार।
नामदेव की गांठड़ी, ले चले नर तन धार ॥ १ ॥
जननो जनक जन्ना सहित, प्रभु पद शीश नवाय।
नामा को भोलाय के, निज घर गये हरषाय ॥ २ ॥

यज्ञ जप तप व्रत करे, मुनिवर कई कुलीन।
मिले कठिन तिनको, सोई नामा के आधीन ॥ ३ ॥
भाग्य सरावे भक्त को, मन माने अह्लाद।
नामा अधिक प्यारा भये, ज्यों नरसिंह प्रह्लाद ॥ ४ ॥
गुरु मिलान हरि भक्त को, किये संग प्रस्थान।
पुण्डरीक घर तक गये, रुक्मणी आदि पहुंचान ॥ ५ ॥
भोलावण दे भक्त हित, सब गये निज २ स्थान।
ज्ञानेश्वर मिले पन्थ में, तीनों किये पयान ॥ ६ ॥

कथा माली सावता की

दोहा—पंढर पुर से कोस पञ्च, अरण्य भेड़ी ग्राम।
बागवान रह परसवा, ताके नागिता बाम।

राग—मारु

ताके नागिता बाम पुत्र भये नाम सांवता माली।
हरि भक्ति का बाग लगाया सदा रहे हरियाली ॥ १ ॥
विट्ठल नाम कीर्तन सींचे सदा प्रेम जल नाली।
आतम अद्वितीय ज्ञान से खूब करे रखवाली ॥ २ ॥
गम की साट से हटा रहे पशु पछी कलि कुचाली।
धर्म अर्थ काम मुक्ति फल लेत अखण्ड रसाली ॥ ३ ॥
कूमदास से मिलन जात मग बोले विट्ठल ख्याली।
ठहरो ज्ञानेश्वर नामदेव यहाँ साँवता भक्त सुचाली ॥ ४ ॥
मिलने के मिस घर सांवता के जाय कही बनमाली।
दोय चोर मेरी गेल पड़े है छिपा लेवो तत्काली ॥ ५ ॥
माली सांवता चीर खुरपे से उर विट्ठल लिए घाली।
चादर ओढ़ सुखासन बैठे ध्यान समाधि झाली ॥ ६ ॥
ज्ञानदेव नामोजी आ कही कहां गए जग प्रतिपाली।
माली भने यहां है तो खोज ल्यो घर पड़ा खुला खाली ॥ ७ ॥
नामा भनै नही गेह में माली लिए सब ठौर समाली।
हम भी पूरे पागी पिटारे खोलो तब कर ताली ॥ ८ ॥
गूढ़ बचन सुन हँसे सांवता जोर की भयी खुशियाली।
नरसिंह ज्युं खम्भ चीर प्रगटे पेट से नाथ निकाली ॥ ९ ॥
तीनूं भक्त को ले हरि साथे कीने गवन उताली।
लोहनपुर जा मिले हरि उठा कूरम दास बेहाली ॥ १० ॥
दे दर्शन प्रभु कूरम दास हित प्रतिमा संचय ढाली।
ज्ञानेश्वर वहां रहे कूर्म के घट में करन उजाली ॥ ११ ॥

धामण गांव फिर टेर गाँव जा गोख से मिले ख्याली।
आगे बढे मग नामदेव लख थकित दया प्रभु पाली ॥ १२ ॥
कभी गोद ले कभी पयादे धीमा कभी उताली।
रात परत सग सेन करावे ऐसो प्रेम प्रणाली ॥ १३ ॥
या बिध बीस कोस पहुंचे आवडे तत्काली।
नाग नाथ के मन्दिर निकट एक घर दिये डेरा डाली ॥ १४ ॥
प्रात होत प्रभु कह नामा से हित की बात कृपाली।
गुरुवार अमृत सिद्ध जोग है गुरु किये हो उजियाली ॥ १५ ॥
इधर बिसोवा खेचर अन्तर्यामी सर्वज्ञ सुचाली।
जाना मोही बड़पन देने आये विश्व प्रति पाली ॥ १६ ॥
नामा की देखन आस्तिकता रूप किये बेहाली।
कुष्ट भरे तन घृणित रस्सी से दुर्गंध फेला डाली ॥ १७ ॥
चौपड़ तेल पग जूता पहने शिव लिंग धर रखवाली।
इधर विट्ठल कहे जा नामा खुले भ्रम की ताली ॥ १८ ॥
नामदेव मन्दिर घुसते आई दुर्गन्ध कराली।
जाना सड़ी लाश है यहां क्या करी बहु देखा भाली ॥ १९ ॥
आगे शिर्वालिग पग रख सुता खेचर रूप कपाली।
नामो बाल अजान देख कर घृणा दीनी गाली ॥ २० ॥
क्योंनी बाँझ रही रे कुष्टी दुष्टी तोय जनने वाली।
विश्वनाथ पग धर दिया नास्तिक मूढ़ कुचाली ॥ २१ ॥
सुण सुवाक्य बिसोवा हस के बोले कम-सवाली।
किसका छोकरा यहाँ क्यो आया बात बनाता काली ॥ २२ ॥
कहे नामदेव दाम सेठ सुत छींपी जात बिसाली।
शिव पिंडी पर पैर रखा तूं कौन है कुटिल खयाली ॥ २३ ॥
अलग हटा पग दर्श करण दे ये शिव हरे हम जाली।
बोले खेचर तू ही उठा पग रखदे दूर लवाली ॥ २४ ॥
देव और मुझ पर भी तेरा हो उपकार दुख टाली।
नामो कहे तव पापो के फल भरे तन कोढ़ कंगाली ॥ २५ ॥
नामा पग तो उठा दूर धरे जहाँ शिर्वालिग चाली।
फिरे चहुं तरफ दीखने लागे बहु लिंग रुंडमाली ॥ २६ ॥
नामा आखिर पग छोड़ा शिव बिन थल नहीं खाली।
चकित देख नामा को खेचर कही बहु टांग घुमाली ॥ २७ ॥
छोड़त पग दु:ख भये मेरे को नाँही दया सलाली।
नामो कहे मैं क्या करूं पग सग आवत शशि भाली ॥ २८ ॥
नामो कहे क्या खेचर तुम हो परखत घृणा भाली।
कैसे विट्ठल हो पागल बतायो गुरु रोगी त्रिकाली ॥ २९ ॥

ऐसे गुरु भी करणा पड़सी विट्ठल रजा सिर ठाली।
कह नाथू छींपी नामा को शिशु मति भोली भाली ॥ ३० ॥

भजन

स्वामी तुम पै आज में आयो लेने को उपदेश ॥ टेर ॥
गुरु महात्म्य श्री मुख से बखाणो पॉडूरग विशेष ॥ १ ॥
तव अंग कुष्टो विगड़यो दर्शे कैसे हर हो अन्देश ॥ २ ॥
आपकी करणी आप ही जानो मोय क्या कहो जी सन्देश ॥४॥
कह नाथू छींपी नामा नमे, मेटो जी का क्लेश ॥ ३ ॥

दोहा—खेचर नामा से कहा, रस्सा एक ले आव।
कन्ठ बाँध मोय ले चले, फिर गुरु दीक्षा पाव ॥
नामा कहे शिशु जान के, हसी करत हो आप।
गुरू बांध दीक्षा लेऊँ, या कहाँ का इन्साफ ॥
खेचर कही यहाँ तिमर है, खंवे चढाले बार।
नामो कहे कैसे उठे, तुमरे तन को भार ॥
तब खेचर कही रक्त बिन, तन पिंजर नहीं बोझ।
तब नामो खांदे चढ़ा, चलत गुरु की खोज ॥
खेचर निज दोऊ खाक में फोड़ा बना फुड़ाय।
रस्सी रक्त से भर दिये, नामो मन अकुलाय ॥
खेचर तज नामा दिये, हरि को दोष असान।
भृष्ट गुरु बतलाय के, कैसा किया हैरान ॥
फिर नामो उनसे कही, गुरु मन्त्र दो शीघ्र।
जा घर तन शुद्धि करूँ, व्याकुल हो रहे जीध्र ॥
खेचर को आई दया, नामा को दुखी जान।
कही आँख निज मीचलो, तुम बालक नादान ॥

राग—मारू

तुम बालक नादान ज्ञान दे करूँ घट मे उजियारी।
ऐसी सुन करी नामदेव निज आँख मीच अँधियारी ॥ १ ॥
तभी विसोवा नामा को मन खींच शक्ति प्रचारी।
प्राण अपान की गति उलटा कर पवन रूकाई सारी ॥ २ ॥
वह जालन्धर बन्ध इत्यादि आसन लगाये भारी।
अरध उरध की वायु उलटाई प्राण अपान संग कारी ॥ ३ ॥

उनमुनि मुद्रा दशवें द्वार जहां आशा तृष्णा जारी।
सिद्ध समाधि चढ़ाय मिटा दी काल बली की ब्यारी ॥ ४ ॥
उस ब्रह्माण्ड में लख परमानन्द दुर्मति सकल निवारी।
मूल कमल दलादि बताये सुकमल पत्र हजारी ॥ ५ ॥
षट् चक्र दो अक्षर दिखाए हंस रूप अविकारी।
भँवर गुफा में धँसा त्रिवेणी नहा दिये अघहारी ॥ ६ ॥
मेरु दण्ड या गोल हाट से लौटा दिये उतारी।
हृदय कमल पर लाय दिखाये विष्णु चतुर्भुज धारी ॥ ७ ॥
स्वर्ग इक्कीस मृत्यु लोक सप्ततल गिरि सरोवर वारी।
शक्ति दे दी आदि देव को दरशाये शुभकारी ॥ ८ ॥
बावन मात्रा ओम् छबि दिखलाई न्यारी।
स्थूल सूक्षम कारण लखाये आतम राम अगारी ॥ ९ ॥
बोले गुरु अब आँख खोल लख को है भीतर बारी।
नामदेव दृग उधार देखे गुरु तन तेज अपारी ॥ १० ॥
पूछे गुरु कौन हूं नामा कौन हो तम संसारी।
कह नाथू दरजी सच सब है नामदेव त्रिपुरारी ॥ ११ ॥

दोहा—नामो कहे गुरु देव से, जग माया मही ख्याल।
एक सच्चिदानन्द सत, गुरु शिष्य झूठा जाल ॥

भजन तर्ज—रघुवर कौशल्या के लाल

बन्दौं सतगुरु दया निधान आत्म ज्ञान बताने वाले ॥ टेर ॥
गोविन्द मिलवावे गुरुदेव, गुरु गोविन्द का जतावे भेव,
दोनों प्रभु पद की कर सेव, सच्चा पन्थ सुझाने वाले ॥ १ ॥
प्रथम विट्ठल भये कृपाल, मिलाया गुरुवर करण निहाल,
लखाया अलख पुरुष तत्काल, काल के जाल मिटाने वाले ॥ २ ॥
विष्णु सुवरण रुपी एक, बनिया भूषण विश्व अनेक,
निश्चय यही ब्रह्म विवेक, दुर्मति दूर नसाने वाले ॥ ३ ॥
नाथू नामदेव के दास, अब कोई छबि धरे रमा निवास,
आयेंगे कभी हमारे पास जानूं सृष्टि रचाने वाले ॥ ४ ॥

राग काफी तर्ज—होली की

सतगुरु मिलकर बरजोरी खिलाई निगु ण होरी ॥ टेर ॥
जागृत सपन सुषुप्ति तीनों गए पतियों की पोरी।
उड़त अविद्या छार जिन्हों से चकाचौंध मति बोरी।
भई सो शुद्ध करी मोरी ॥ १ ॥

ज्ञान गुलाल दया को केसर कृपा किस्तूरी घोरी।
तुरियामहल में सम पिचकारी रग भर मन पर ढ़ोरी।
अचल लीना कमठोरी ।। २ ।।

दश प्रकार के अनहद वाजा सूर तनु रत रम झोरी।
ऐसे अनोखे गान तान पर गन्धर्व सिन्धु किशोरी।
वारे गये लाखों करोरी ।। ३ ।।

दीपक मे काजर ज्यो दरशे श्याम राधिका गोरी।
नाथू नामदेव जी फगवा पाया रुचि भर झोरी।
विडम्बना मेटी कठोरी ।। ४ ।।

दोहा—नामदेव की विनय सुनि, कहे खेंचर खुश होय।
शिष्य काज तव सिद्ध भया, भ्रम न व्यापे तोय ।।

राग—मारू

अव भ्रम व्यापे न कोय तोय दी आज्ञा भवन पधारो।
गुरु रजा से कर प्रणाम चट नामो उलट सिधारो ।। १ ।।
पांडू रंग के पास आय नम भेद बतायो सारो।
श्री विट्ठल जन नाम देव को परसन बदन निहारो ।। २ ।।
मख युवराज महाराज कंवर मुख चूमत जान पियारो।
फिर हरि कहे नामा को वुला कर लाओ गुरु तुम्हारो ।। ३ ।।
नामा वुला चट लाये खेंचर को प्रभु मन मोद अपारो।
मिले परस्पर भोजन पाये कर २ बहु मनवारो ।। ४ ।।
युगल भक्त भगवान आपस मे करते पावण चारो।
इस परमानन्द की धारा में देहानन्द बिसारो ।। ५ ।।
फिर ले पान सुपारी कीनो सतसग को विस्तारो।
पुनि निज २ घर गवन जो करके जन को करो निस्तारो ।।६।।
पांडू रग ले नामदेव सग ज्युं पितु राज दुलारो।
बट सिद्धेश्वर होते वारसी लिये निज पुरी किनारो ।। ७ ।।
पढरपुर मन्दिर हरि ध्याये काज भक्त को सारो।
नामदेव जी घर गये अपने नाथूराम वलिहारो ।। ८ ।।

दोहा—नामदेव घर आइया, ले गुरु पैं ब्रह्म ज्ञान।
दाम पिता राजो भये, लख सुत सुगर सुजान ।।

राग—मारू

लख सुत सुगर सुजान श्री भगवान विट्ठल का प्यारा।
गृहस्थाश्रम के काज की शिक्षा दी नीति अनुसारा॥ १॥
बोले पिता गांव सांगोले पैसा रहा उधारा।
लाओ उगाय तकाबा करके जिनसे चले गुजारा॥ २॥
नाम देव सुन बात तात की ले बही खाता सारा।
मिती तिथी युत ऋणी लोगों का नाम हिसाब उतारा॥ ३॥
चल पहुंचे सांगोले ग्राम में ठहरे मामा के द्वारा।
ऋणियों से पैसा उगाय मातुल सुख संचारा॥ ४॥
पीछे तीसरे पहर चल दिये मग भये निशि अंधियारा।
किये आराम धर्मशाला में फिर चले होत सवारा॥ ५॥
पथ में भये मध्यान्ह क्षुधातुर कीना भक्त विचारा।
माणक नदी तट गांव माजरा देख गये बाजारा॥ ६॥
लाये आटा दाल रसोई करने कडा जारा।
चढ़ा दाल बनाये बटियां डाटे आग मही छारा॥ ७॥
फिर जल लेने गये नदी तट मौका विट्ठल निहारा।
करण परीक्षा नामदेव की श्वान रूप प्रभु धारा॥ ८॥
जाके रसोई ग्रास उठाके टिकिया मुख सिधारा।
शीघ्र आय नामाजी देखा जाना नन्द दुलारा॥ ९॥
घी की कटोरी लेकर पिछाड़ी भागे शब्द उचारा।
हे पांडू रंग बिना चोपड़े कैसे भोग लगे प्यारा॥ १०॥
बिगर घी के बटियां खाये दुखसी पेट तुम्हारा॥
या तो ठहरो नाथ जरा चुपड़ा देऊँ घृत नितारा॥ ११॥
ऐसी बात सुन हँसे हरि जी रूप धार कर-चारा।
बोले नामा से कसे पिछाणे मेरा पद अविकारा॥ १२॥
नामदेव कहे गुरु प्रताप से लखा अलख दीदारा।
यह सुन प्रभु नामा संग ध्याये पुरसे भोजन सारा॥ १३॥
भक्त और भगवान परस्पर करके बहु मनवारा।
लेते देते ग्रास सरस नर नारायण अवतारा॥ १४॥
पान बीड़ा खा चले वहाँ से पंडरपुरी सिधारा।
विट्ठल मन्दिर गए घर नामा नाथूराम बलिहारा॥ ५॥

भजन राग विहाग

विट्ठल की गति मति अगम अपार।
प्रीत करत जन को अपसावे निज प्रभुताई बिडार॥ टेर॥

आप विभूति रूप विश्व है नाना बाना धार ॥
खेलन खेल २ रचे ख्याली अद्भुत यो खिलदार ॥ १ ॥
भयो भ्रम को भ्रम भुलानो निज आत्म दीदार।
ताही चेतावन देन कर्म फल गुरु ईश्वर अवतार ॥ २ ॥
सेवक पर कृपा करे साची अप्रभुता धाम बिसार।
जिन जन पर हो परम दयालु करे भक्तन सरदार ॥ ३ ॥
नाथू नाम देव कुल भूषण किये कैसे उपकार।
ऐसे प्रभु तज विषयासक्त हो युग युग नरक द्वार ॥ ४ ॥

दोहा—नाम देव सत्गुरु किए, भये संतन सिरताज।
ज्ञानेश्वर संग में गए, तीर्थ, यात्रा काज ॥

राग—मारू

तीर्थ यात्रा काज धर्म की पाज बांधने वारा।
सुनो सज्जन दे काज भक्तों का जस है अधम उधारा ॥ १ ॥
तीर्थ करन संग नामदेव के ज्ञान देव मन धारा।
पांडुरंग दिये आय ज्ञानेश्वर मधुरे बचन उचारा ॥ २ ॥
चाहिये टहलवा यात्रा में देद्यो नामा भक्त तुम्हारा।
विट्ठल कही बा भक्तों में नामा भोरा बारा ॥ ३ ॥
तुम योगेश्वर सहायक रहियो नामा अधिक पियारा।
हरि आज्ञा ले चले ज्ञानेश्वर नामा छींपी दुलारा ॥ ४ ॥
तीरथ मग कमला कर द्विज सुत मरा जिवा दुःख टारा।
वहां से चले गये नाग नाथ मन्दिर शिव लिंग निहारा॥ ५ ॥
अत्याचार खण्डन किये अनुचित करन भक्ति प्रचारा।
कमर बधे में ढक रखो पनियां रटन लगे हुंकारा ॥ ६ ॥
नृत्य गायन कर प्रेम मग्न हो देह अभिमान बिसारा।
खुल पड़ी मोचड़ी हर मन्दिर से देखी शम्भु पुजारा ॥ ७ ॥
सोला धारी खिजने लगा बोला बचन कुफारा।
कहां का है तूं गंवार बिगाड़न लागा ठाकुर हमारा ॥ ८ ॥
जोड़ी बाहर फेंक लगे फिर आवन हर के द्वारा।
द्विज जन हीन बताकरी घृणा धक्का देर निकारा ॥ ९ ॥
नामदेव कही एक ब्रह्म का बने सकल संसारा।
काम रति छिप सब संग करते राम रटत क्यूं नारा ॥१० ॥
भेद वादी नहीं सुनी बात जब नामा करन उजियारा।
मन्दिर पीछे जाकर ठाडे आरत करत पुकारा ॥ ११ ॥
हरिहर एक रूप लख करते प्रभु के गुण विस्तारा।
कह नाथू छींपी नामा हित बर २ हो अवतारा ॥ १२ ॥

तर्ज—खटमल सोवा दे

शंकर दर्शन दे, गौरी वर शकर दर्शन दे,
गगा धर शंकर दर्शन दे, ब्रह्माण्ड का ईश्वर दर्शन दे ॥ टेर ॥
एक समय हरि ब्रह्मा लड़िया, जब प्रगटे लिंग अणघड़िया।
गरुड़ारूढ़ भूतल जाके, हसारूढ़ उड़ नभ थाके।
शिव बाण अनन्त लखाया, मै बड़ का बाद मिटाया।
हर लिग का अन्त न लाधा, सच बोल के विष्णु अराधा।
सत्यनारायण पद पाया, बिधि झूठ बोल पछताया।
द्वादश रवि सम लिंग जोति, हद नाग नाथ की सोहती।
हरि हर जाति न जुदाई, तो कर मेरी सुनवाई।
कह नाथू दरजी नामा, दर फेर होय चट सामा॥

तर्ज घूमर की . नैनारा लोभी

महेश्वर भोला कीकर गाऊं गुण द्वारे।
ओजी थारा ढीठ पुजारी धक्का मारे ॥ टेर ॥
मुझ छींपा को अधम बतावत खुद बने हिंद सितारे ॥ १ ॥
गाधिज कुल पैसा दरजी का तो भी ना ज्ञान विचारे ॥ २ ॥
भेदवादी की नहीं सम्प्रदा, फूट भारत में डारे ॥ ३ ॥
यदि पद त्राण की थी घृणा तो क्यू खेचर पग धारे ॥ ४ ॥
वही विसोवा खेचर बताये शिव तत जग माहीं सारे ॥ ५ ॥
कह दर्जी नाथू नामा के हरि हर जन सब प्यारे ॥ ७ ॥

बचन पुरजनो का चाल मोहना लगा गया नैना तीर

हे राम राम राम, मन्दिर क्यों धूज रहेरी थरररररररर ॥ टेर ॥
नरसिंह के अवतार समय ज्यूं खम्भ आज तमाम, अन्दर क्यो गर्ज रहेरी घररररररररर ॥१॥
ज्यूं ध्रुव तप से हिले इन्द्रासन त्यूं फिरता हरि धाम, सबको सूझ रहेरी सरररररररर ॥२॥
प्रभु सामा भजे भक्ति से नाम परच्या पूज रहेरी अरररररररर ॥३॥
कह नाथू छींपी पद गहे सब उत्तम जाति गुण ग्राम उतर मूझ रहेरी तररररररर ॥४॥

भजन राग सोरठ

नामा जी सहन कीज्यो ज्यू हरि भृगु पाद।
कियो बिन जाणे तुमसे विवाद।
भ्रान्त करी लख म्यान ज्यू हम भरमी ओलाद।

बाहर निकले मालूम हो गई है असली फौलाद।
सोई उत्तम कुल भक्त जन प्रगटे करे अहलाद।
उद्धव अगद समदरशी ये सनत कुमार प्रहलाद।
यह परचा संसार में आसी घणा दिन याद।
मन्दिर फिरे नन्दी भये पाछे लिंगी फिराये आद।
शिक्षा दे अन्य मजहबी को रखो धर्म मर्याद।
कह नाथू छींपी की यात्रा सुफल बटे प्रसाद।

दोहा—शिक्षा दे हरि भक्त को, ज्ञानदेव सगात।
नाम देव वहां से चले, करन तीर्थ विख्यात ॥

राग—मारू

करन तीर्थ विख्यात गात हरि गुण कई तीरथ न्हाये।
कपिल धाम हित मरु भूमि मे आवत भये तिसाये ॥ १ ॥
मांगा जल गुरु ज्ञान देव से पानी कहीं न लखाये।
ज्ञानदेव लख खाली कूप एक योग का बल प्रगटाये ॥ २ ॥
सिद्धि जोर से उतर कुए में कमण्डलु भरलाये।
नामदेश सिद्धि का पानी पिये ना ढोर बहाये ॥ ३ ॥
ज्ञानदेव किये फिर नामदेव जब विट्ठल को ध्याये।
निर्जन देश मे सूखे कुए में सेजं जल उसगाये ॥ ४ ॥
योग क्रिया से विमु भक्ति का रुतबा अधिक बढ़ाए।
फिर भी तपसी ज्ञानदेव पद नामा शीश नवाए ॥ ५ ॥
वहा से चल मुद्गलाचारी ब्राह्मण के घर आये।
उसके यज्ञ मे अग्र निवृत्ति नाथ के मान बढाए ॥ ६ ॥
उसी सत के गुरु कुल के महापुरुष दर्श कराए।
फिर नामा जी ज्ञानेश्वरादि को सेना घर लाए ॥ ७ ॥
भक्त मण्डली देखत सेना नाई मन हरषाए।
नाथू दरजी नामदेव सेवा से भाग जगाए ॥ ८ ॥

पद लावणी रगत लगडी—कथा सेन भक्त की

दु.ख मे हीन दीन के साथी हो तज बड़पन प्रभुताई।
धन जगदीश्वर सेन हित नृप सेवा करी बन नाई ॥ टेर ॥
बांदा गढ नापित कुल भूषण भये सेनजी अवतारी।
नगर नरेश्वर राम नृपति की करते खिदमत दारी।
गये पण्डरपुर नामदेव की सुनी कीर्ति लग्न गारी।
काम क्रोध मद त्याग कर शील भक्ति उरमें धारी ॥

शेर—तीर्थ करत ज्ञानेश्वर आदि भक्त कई लिए लारजी।
लग्न बधाई दिलाने नामा ले गए सेन द्वार जी ।।
सत मण्डली देख सेना खुश होय किए सतकारजी।
भूल्यो सेवा भूप की खिज भेजे जबर सरदारजी ।।

तोड़—बगल रच्छ्नी धर कवास का बाना पहुंचे रघुराई ।। १ ।।
कर मुजरा हरि करे हजामत राजा की किस्मत मोटी।
जल शांति का छिड़के अहकार को बांध दई चोटी।
चला वैराग्य कैंची साफ करी बगलें मिटाई गध खोटी।
काम क्रोध के काट नख भक्त की अटल रखी रोटी।

शेर—ज्ञान का दर्पण दिखाया दर्शे दिव्य दीदार जी।
शख चक्र गदाम्बुज लिए श्याम भुज धरे चार जी ।।
देख प्रतिबिम्ब विश्वम्भर का विस्मय भए सरकारजी।
पूछे सेन स्वरूप को पावेन प्रभु का पार जी।

तोड़—रजा मांग हरि अन्तर्ध्यान भए ऐसे सकट में सहाई ।। २ ।।
नामदेव करी सेन २ में समझ सेन ज्ञानेश्वर के।
चरण शरण गये गुरु कर पाये पद परमेश्वर के।
संत विदा कर गए सेन जी पहुंचे पास नरेश्वर के।
क्षमा मांगते देर हुई आज निमित विश्वेश्वर के ।।

शेर—राजा भने किस बात माफी अभी हजामत कर गया।
काच जल में प्रभु प्रतिबिम्ब दिखा के मन हर गया।
सेनो कही नृप मै न आया साधु सेवन पर गया।
मेरे बदले प्रभु पधारे भूप परसत तर गया।

तोड—खुश होय सेन को दी जागीरी राजा मन भक्ति भाई ।। ३ ।।
बोले सेन करो जाति कर्म स्वधर्म परम है परोपकार।
यजमान राम सम सेवो लख नावटिया ज्यूं नाईकार।
नामदेव नरहरि जन कुल सेवन से ही होता उद्धार।
महेश्वरी ज्यू वैश्य क्षत्री वर्णाश्रम का है अधिकार।

शेर—सुबह से दोपहर तक निज कर्म पद तज कीजिये।
फिर स्नान कर हरि ध्यान कर नर-देह लाहो लीजिए।
अभिमान काम के लोभ से पर हुन्नर चित ना दीजिए।
नन्दलाल गुरु उपदेश या हरि नाम अमृत पीजिए।
तोड—दर्जी नाथू राम भक्त सेना की महिमा सच गाई ।। ४ ।।

वार्ता—सेन भक्त को उद्धार कर ज्ञानेश्वरादि फिर कई तीर्थ किये।

दोहा—सेना भक्त उद्धार के, ज्ञानेश्वर गुण ग्राम।
नामदेवादि जन सहित, चल किए तीर्थ तमाम ।।

भक्त मण्डली सग लिए, पहुंच पंडरपुर आय।
दर्शन पंडरी नाथ का, कर गये घर हरषाय ।।
सखा भाव भगवान का, नाम देव धरि ध्यान।
एकादशी व्रत नेम से, करत भजन गुणगान ।।

राग—मारु

करत भजन गुण गान सनातन धर्म का मान बढ़ाता।
एक दिन व्रत की दृढ़ता देखन द्विज बन गए जग त्राता ।। १ ।।
मांगा अन्न का दान नाम देव घर पर जात प्रभाता।
नामदेव कही अन्न या पानी तिथी शास्तर गाता ।। २ ।।
जब हरि विप्र रूप कही हम से भूखा रहा न जाता।
या तो भोजन देवो भक्तवर कठिन कटे दिन राता ।। ३ ।।
कह छीपी नाथू नामा जो तुम ब्राह्मण गुण गाता।
दिन सत्सग रेण करो जागण पारण होत ही प्राता ।। ४ ।।

भजन राग जोगिया : तर्ज—नन्दजी का छैल म्हाने
वचन विप्र का नामदेव जी से

पुन्य होवे भक्त कछु देने से ।। टेर ।।
या हो धर्म सजे जप तप यज्ञ सुरथी के पथ बहने से ।। १ ।।
कौन तिर गये जीव पिछाड़ी या विध भूखा रहने से।
विधवा के हित कहे व्रतादिक शील रहे दुःख सहने से ।। २ ।।
अवश्य ही पर उपकार होत है सुधि भूखे की लेने से ।। ३ ।।
नाथू दरजी कहे द्विज तुम मानिये किसके कहने से ।। ४ ।।

वचन नामदेव का ब्राह्मण से इसी चाल मे

मती निन्दा करो द्विज ग्यारस की ।। टेर ।।
जप तप यज्ञ करने को कलि में शक्ति रही नहीं मानुस की ।। १ ।।
या ते धर्म रचे, व्रतादिक अघ मोचन मारग खुश की ।। २ ।।
उत्पन्ना एकादशी महातम कथा मणि है पारस की ।। ३ ।।
अम्बरीष दुर्वाषा आगे शोभा बढ़ाई व्रत जस की ।। ४ ।।
निगमागम के मत सब सांचे खण्डना करिये ना किसकी ।। ५ ।।
नाथू कहे नामा द्विज लड़ते आये पड़ोसी सुण उसकी ।। ६ ।।

बचन पडोसिन का

शेर—नामाजी इन भिक्षुओं से नाज हित नाहक लगो।
महा पातक अन्न दान दिए बेय कर काडो परो॥
छली भिक्षु मरे द्वारे भरम भरमी दिल भरो।
नाथू कहे ख्याली हरि वामन ज्यूं बानो धरो॥

गजल तर्ज—कालोने मुझको डस लिया

ना मैने नर हत्या करी महा जुल्म गजब किया।
विप्र विचारा भूख का मारे द्वारे आ गया॥
सेर नाज काज ही यमराज पुर पठा दिया।
एकादशी का धर्म न जाने कौन इसे जमा दिया॥
पूरब दिखाने भक्तपन अब कुलोभ गमा दिया।
नाथू कहे पुरजन नामा काठ चिता का चिणा दिया॥
जलने लगे ले लाश सग कमला पति ने हस दिया।

दोहा—भक्ति सोई सफल है, जाकर दृढ़ विश्वास।
मांग भक्त बरदान तू, पूरन करूं सब आस॥

म्हारो आवागमन निवारो चतुर्भुज भूलूं नहीं एकादशी॥ टेर॥
ऋतु पति बसन्त नदी पति गंगा अष्टकुलि गिरी मेरु पति।
सुरपति इन्द्र असुर पति रावण ज्यूं व्रतापति एकादशी॥ १॥
दानी करण, सत्य पति हरिश्चन्द्र राजा युधिष्ठिर साँच पति।
सिद्ध पति गोरख बलि पति हनुमन्त ज्यूं व्रतापति एकादशी॥ २॥
पत्र पति तुलसी पुष्प पति कमला केला नारेलों फलपति।
वन पति आम सुगन्ध पति चन्दन ज्यूं व्रता पति एकादशी॥ ३॥
चोपग पति धेनु तीर्थ पति माता देव विधाता लिख्या पति।
पुत्र पति श्रवण बन्धु पति लक्ष्मण ज्यूं व्रतापति एकादशी॥ ४॥
योगी पति नारद पीर पति मक्का थामा-तिलका पति ब्रह्मा।
देवल पति ध्वजा धर्म पति पावन ज्यूं व्रता पति एकादशी॥ ५॥
रजनी पति चन्द्र दिवस पति सूरज वेद सामवेद पति ब्रह्मा।
धनपति ओस घन पति मुद्गर ज्यूं व्रतापति एकादशी॥ ६॥
दीपक पति रेन पलंग पति सुन्दर भोगा सजोगा सुरापति।
निद्रा पति कुम्भ सुरगपति लोचन ज्यूं व्रता पति एकादशी॥ ७॥
पक्षी पति गरुड़ फनपति बासग नागर बेल मुखवास पति।
गज पति गयन्द उद्यम पति खेती ज्यूं व्रतापति एकादशी॥ ८॥

मुकुट पति राम बाण पति अर्जुन लंका शहर सब गढ पति।
पर दुःख विक्रम भक्त प्रति शम्भु ज्यूं व्रता पति एकादशी ॥ ९ ॥
धाम पण्ढरपुर शील पति सीता नगर अयोध्या पुरियांपति।
भणत नामदेव सुनो हो सारंगधर ज्यू व्रतापति एकादशी ॥ १० ॥

दोहा—तब इच्छा पूरण हुई, सर्व भांति कल्याण।
नाथू कहे यो कृष्ण जी, हो गये अन्तर्ध्यान ॥

तर्ज—नाटक को

आओ भाई प्रेमीजनों राम गुण गावो सुनो ॥ टेर ॥
ग्यारस के जाग्रण तणो पुराणों में महातम घणो ॥ १ ॥
जोबन छताँई रटणो होत हरि भक्त बनो ॥ २ ॥
निकमो है वृद्ध पनो मृत्यु को चाबण-चणो ॥ ३ ॥
नाथू जन नामो ज्यू भणो लोनो लाभज वो घणो ॥ ४ ॥

दोहा—ग्यारस के जाग्रण समय, हो गई आधी रात।
प्यास लगी द्विज भक्त को, चली शुद्ध जलकी बात ॥

राग—मारू

चली शुद्ध जल की बात मांज ले हाथ नामदेव झारी ॥ २ ॥
चले बावड़ी नीर भरण को भक्त मणि उपकारी ॥ १ ॥
उस बापी मे प्रेत रहत चट प्रगट करी किलकारी।
नामदेव उस भूत की देही देखी बड़ी भयकारी ॥ २ ॥
लगे डरावन नाम देव को रूप बढ़ाय अपारी।
ब्रह्म ज्ञान प्रताप मान लिए उसे गोवर्धन धारी ॥ ३ ॥
कर कठताल बजाय गाय गुण हरि का कलिमल हारी।
कह नाथू छींपी नामा नम करत स्तुति भारी ॥ ४ ॥

भजन तर्ज—रघुवर कौशल्या के लाल मुनि के

आये मेरे लम्बक लम्बे नाथ आदि पुरुष कहाने वाले ॥ टेर ॥
अनादि निर्गुण निराकार, स्वयम्भू हिरण्य गर्भ धार,
बीज ज्यू होते वृक्षाकार रूप विराट दिखाने वाले ॥ १ ॥
बलि छलन बावन प्रवीन, मांगी तीन ही पेंड जमीन।
नापन बढ़ गये भक्ताधीन, इन्द्र के शोक मिटाने वाले ॥ २ ॥

प्रभु के पग पताल नभ माथ, मोटे कई योजन में हाथ।
भारत अर्जुन साक्षात् वपु बिराट बनाने वाले ॥ ३ ॥
नाथू नामदेव कुल दास, पक्का विट्ठल का विश्वास।
सब घट व्यापक रमा निवास जन की आश पुराने वाले ॥४॥

भजन राग माढ तर्ज—बालो म्हारो साँचा रो सगातोरे

बालो म्हारो योगीराज कहावे जो परतक सिद्धि दिखावे ॥ टेर ॥
ना जाने निर्गुण पद में किस विध निर्गुन प्रगटावे ॥१॥
बण बाजीगर नटवरिया हद इन्द्रजाल फैलावे ॥ २ ॥
चतुर खान से योनि चोरासी लाख औपावे ॥ ३ ॥
काम रूप दम्पति से नित नये नूर बरसावे ॥ ४ ॥
धर्माधर्म दृढावन खुद कई रूप धरावे ॥ ५ ॥
सब जग सपना सम झूठो जाने साचो कर दरसावे ॥६॥
भूत भ्रम को बनके यो भ्रम को भरम डरावे ॥७॥
कह नाथू नामदेव स्वामी भूतातम विट्ठल लखावे ॥८॥

दोहा—नामदेव दृढ़ भावना, यों लख पांडू रग।
भक्त संग फल मुक्ति दी, प्रगट भूत के अग ॥

राग—मारू

प्रगट भूत के अग खम्भ में ज्युं नरसिंह मुरारी।
बोले विट्ठल धन्य नामदेव करी भूत में भक्ति हमारी ॥ १ ॥
नामदेव कर जोड़ नमे पद कृपा नाथ तुम्हारी।
हरी हंस अन्तर्ध्यांन भये चट चले नामा निज द्वारी ॥ २ ॥
पा हरिजन को तृप्त कीना बापी का शुद्ध वारी।
कर प्रभु नामा कीर्तन रेन जगाई सारी ॥ ३ ॥
भोर होत ही स्नान ध्यान कर किये नैवेद्य तैयारी।
भोग लगा विट्ठल के पारणा खोले भक्त पुजारी ॥ ४ ॥
तुला दान एक साहुकार धन दान को मद कर भारी।
कह नाथू छींपी नामा को सादर बुलाय उचारी ॥ ५ ॥

वचन सेठ का—राग कालिंगडा

स्वीकारो दान कछु नामाजी ॥ टेर ॥
तुला दान करूं वेद विधि से सुरपुर का सामाजी ॥ १ ॥

दान सुपातर को दियो आछो तुम हो गुण ग्रामाजी ।। २ ।।
यामें हमारा भला हो गया कहूं कर प्रणामा जी ।। ३ ।।
नाथू कहे यों सेठ जोड़ कर लागूं लुल पामाजी ।। ४ ।।

वचन नामदेव का सेठ से पद इसी चाल मे

साहूजी हम नही दान लिवैया ।। टेर ।।
दानपात्र हो ब्राह्मण जोशी निगमागम पढैया ।। १ ।।
हम छींपो मेहनत कर खावें पंचम वंश्य कन्हैया ।। २ ।।
हमरे लिये होय भला तुम्हारा तो हम नांय नटैया ।। ३ ।।
तोल बराबर तुलसी दल की लिख धरे राम कन्हैया ।। ४ ।।

वचन सेठ का : पद राग माढ गर्भी कालिगडा

नामाजी जन सुख राशी जी, करो क्या हमारी हाँसी जी ।। टेर ।।
तुलछी दल सम द्रव्य मेरे पा क्या मांगो परवीन ।
जैसे चक्रवर्ती पे मांगी भूमि पॉवडा तीन,
दीन दुर्बल भिक्षासी जी ।। १ ।।
कृपा करी हो लेन की तो ल्यो मुझ सारु दान ।
इसड़ो दान से कैसे रहसी हमारो मान ।
कहेला क्या पुरवासी जी ।। २ ।।
नाथू कहे यूं सेठ धर्यो एक पलड़े तुलसी पान ।
कनक मासो भर चोडण लाग्यो धरे एक तरफ सुजान ।
भारी लखि तुलसी जरासी जी ।। ३ ।।

वचन सेठ का : पद राग माढ गर्भी कालिगडा

सेठ हँसी मत मानो जी, तुलसी को महातम जानो जी ।। टेर ।।
लघु कांटा से पड़े नहीं पूरा बड़ी तुला दो तोल,
पतिव्रता वृन्दा है तुलसी ।
हलको न समझो मोल, या को बस श्री भगवानो जी ।। १ ।।
इन तुलसी दल लिख्यो नाम जिन बल तिर गये पाषाण,
कहो तीन पेंड धरनी सो लख बावन समान, जहान क्या देवे तानोजी ।। २ ।।
नाथूराम को तेज दे, तक पलड़े धरयो पान,
थोड़ो २ कर धरी सम्पदा उठी न तुलसी जान, दान दाता सरमानो जी ।। ३ ।।

बचन सेठ का नामदेव से : तर्ज—जास्या रे गोकुल के गाव

आवे आवे इचरज मोय अब राम जाणे कांई थे लिखियो
छु मन्तर तुलसी पान में रे आज ॥ टेर ॥
धरदी धरदी घरकी पूंजो तमाम अब राम जाणे नांहीं क्यू उठे
छः यो पालड़ो, तुला दान में रे आज ॥ १ ॥
कीनो २ सकल्प हाथ अव राम जाणे सुकृत केही फल से पत
रहसी के नाहीं जहांन मे रे आज ॥ २ ॥
उठ्यो उठ्यो सुकृत फल से नेक अब राम जाणे बराबर क्यों नहीं होवे
क्या शक्ति नाम निशान में रे आज ॥ ३ ॥
त्यारो त्यारो नामाजी परू पाय अब राम जाणे काहु विध होवेली
मेरी मुक्ति निर्वाण में रे आज ॥ ४ ॥
कहता कहता नाथू नमे सेठ अब राम, तब कृपा से
भक्ति व्यापक मुझ अज्ञान में रे आज ॥ ५ ॥

बचन नामदेव का . राग भीपाली तर्ज—बच-बच के चलना पाप से

तज २ रे तन अभिमान में ये झूठी है धन मायारे माया ॥ टेर ॥
पुत्र कलत्र मित्र स्वाथ किए अन्त में होत न सहाया रे सहाया ॥ १ ॥
जप तप दान व्रतावि करना जिनसे निर्मल काया रे काया ॥ २ ॥
राम भजन कर यही धन सच्चा सब शास्त्र में गाया रे गाया ॥ ३ ॥
नाथू कहे यू नामा सेठ से हर भज अवसर आया रे आया ॥ ४ ॥

दोहा—नाम महातम ग्रन्थ में गाये मुनिवर व्यास ।
नामदेव कहे सेठ सुन, पुरातन इतिहास ॥

राग—मारू

पुरातन इतिहास खासकर नाम की विपुल बड़ाई ।
एक समय द्वारका में आये श्री नारद मुनिराई ॥ १ ॥
पहुंचे हरि रणवास में लख सत्यभामा करी सेवकाई ।
सादर बैठ आसन ऋषिराया धर्म की कथा सुनाई ॥ २ ॥
बरबर मिले होय बस कर दो दान ये पति कन्हाई ।
ब्रह्मरिषि की उत्तम शिक्षा सत्यभामा मन भाई ॥ ३ ॥
कृष्ण कन्थ का दानकर दिये संकल्प मन्त्र पढ़ाई ।
तुला मगा पलने बैठाये श्याम रहे मुसकाई ॥ ४ ॥

इक तरफ हरि दूजे तरफ भूषण द्रव्य धरे समुदाई।
त्रिलोकी पति के सम दौलत सब धरी होण नपाई ॥ ५ ॥
सत्यभामा वित्त अमूल्य हार गई चित में चिन्ता छाई।
उदक्यो पति अनमोल लिए नृग गति श्रुति गाई ॥ ६ ॥
धर्म पाश मे फँस मन सोचा उत्तम अकल उपाई।
कियो रमा को ध्यान विनय युत जभी रुक्मणी आई ॥ ७ ॥
भीमसुता लखि नाम राम का तुलसी दल चढ़वाई।
फूल २ सम भये कमला पति लख प्रिये की चतुराई ॥ ८ ॥
नाम अधीन नामी से नाम की नित नूतन अधिकाई।
दरजी नाथू नामदेव जस नामदेव सरसाई ॥ ९ ॥

भजन गजल · तर्ज -हमारे ऋषिमुनि समझा गये है

पूजी पल्ले बांध मुसाफिर राम रतन धन कमा कमा के ॥ टेर ॥
बारवे किरोड़ दस ले जुम्मेवारी, मनुज जन्म की हाट मुनीमां।
आये हो तो करलो उन्नति साहुकारी, पत अपनी जमा २ के ॥ १ ॥
रोज नांवे खरच खाते मण्डता इक्कीस हजार छ सौ मिती बारी।
आलस विषय बस अन्य करम कर मूरख जाते गमा गमा के ॥ २ ॥
भोगी देव पशु पक्षी इस मुक्ति द्वार की करते आशा।
ताके हित निज जाति करम कर सम बुद्धि चित थमा थमा के ॥ ३ ॥
देश दूर मग खर्चा भारी साँवल सा को हिसाब देना।
दरजी नाथू राम भजे बिन दे रिणी बोझा समा समा के ॥ २ ॥

दोहा—ज्ञान सेठ को दे परम, नामा गये निज धाम।
परा भक्ति फल भोगते, चारों फल अभिराम ॥

राग—मारू

चारों फल अभिराम काम धन धर्म मुक्त ब्रह्म ज्ञानी।
कोक रीति ऋतु दान दिये राजा सती को सुख दानी।
कई दिन से प्रथम पुत्र भये नामा के कुलवानी।
सब लोगो के छायो आनन्द करी सब रीति पुरानी ॥ २ ॥
बारवें दिन श्री पांडूरंग जी सग आठों पटरानी।
सादर नामदेव पत्नी को दिए पट भूषण सजानी ॥ ३ ॥
गांव के इष्ट मित्र सब सम्बन्धी किए बधावा सुजानी।
दाम सेठ खुश पौत्र दशोठण कर दीनी मिजमानी ॥ ४ ॥

पूछे विट्ठल से नाम करण हित जन्ना बाई सयानी।
नामदेव सुत नाम नारायण धरे खुद सारग पानी ।। ५ ।।
इसके बाद फिर नामदेव के तीन पुत्र गुण खानी।
महादेव, गोविन्द और विट्ठल रखा नाम जग जानी ।। ६ ।।
पुन. भई कन्या लिम्बा बाई सुशीला स्वर्ग निशानी।
बड़े होते शिशु विद्या पढाई विष्णु भक्ति दृढ़ानी ।। ७ ।।
शुभ चारो पुत्रों का विवाह किये शास्त्र के प्रमाणी।
लाडा बाई गोडा ऐसू सांकरा बहु सुजानी ।। ८ ।।
उन पुत्रों के विवाह में विट्ठल दिए पट भूषण दानी।
कहे नाथू हरि भक्त की महिमा कब तक जाय बखानी ।। ९ ।।

दोहा—परीसा नामी भागवत, रहे पढरपुर धाम।
पारायण बांचे सदा, श्री विट्ठल गुण ग्राम ।।

राग—मारू

श्री विट्ठल के धाम बड़े सरनाम विप्र कुलवानी।
व्यास गद्दी पर बैठ कहे सुनो भागवत बानी ।। १ ।।
परीसा मराठी भाषा शब्दार्थ हिन्दी में सुनो प्रमानी।
याते परीसा भागवत द्विज पुर में लगे कहानी ।। २ ।।
कथा बांचते वक्त एक दिन आये नामदेव ज्ञानी।
राम राम करी जन तमाम लख हरी भक्त सन्मानी ।।३।।
जाति विद्या धन उच्च आसन मद भरसूत सुमानी।
नामदेव की देख प्रशंसा द्वेष बुद्धि मन आनी ।। ४ ।।
बोले कटु बचन शठ जाने क्या भक्ति निर्वाणी।
है अनपढ़ अधर्म जाति का सीख्यो जगत भ्रमाणी ।। ५ ।।
विष्णु भक्त नामा गम खाके नमें जोड़ युग पानी।
क्षमा करो भृगु ज्यु दे शिक्षा तुम गुरु लोग पुरानी ।।६।।
विनय वाक्य सुन जनके फूले दूणा देह अभिमानी।
जा घर पोमाये पत्नी ढिग कर बातें गुमरानी ।। ७ ।।
नामा छींपा भक्ताई की ठसक मैं आज उड़ानी।
व्यासासन पुर शीश झुकाये मांगी माफ अज्ञानी ।। ८ ।।
नारी भक्त भक्ति की निन्दा सुण दिये जवाब सयानी।
हे पति नामदेव प्रभु प्यारा उनको न करो अपमानी ।।९।।
प्रथम गाधीज नृप बसी है किसब करत सुखदानी।
अधम गति पर हुन्नर से पण आपत्ति मांय बखानी ।।१०।।

फिर भी नाम भक्त पै राजी विट्ठल रमा महारानी ।
नाग नाथ को मन्दिर फिरियो मृतक गऊ जिवानी ॥११॥
व्यासासन लख नामा वैष्णव नमिया रीस विसरानी ।
शम्भू अश हो तोले खिजतो सूतप ज्यूं हलपानी ॥ १२ ॥
भक्तिमती का गूढ़ ज्ञान सुण मूढ़ता विप्र मिटानी ।
नामा घर या करी नम्रता सुणे पद भक्ति रसानी ॥ १३ ॥
पूछे परीसा नामा जी कैसे मिले बिनानी ।
नामो कहे जाति धन विद्या मोह तज हो प्रभु ध्यानी ॥१४॥
जभी भट्टजी पारस का टुकड़ा धरे भक्त नजरानी ।
नामा ले फेंके नदी मांही द्विज सूरत कुमलानी ॥ १५ ॥
शीघ्र जाय नामा चन्द्रभागा पैठ कटि तक पानी ।
काढ़ पत्थर कई दिये विप्रन को कर पारस पाषानी ॥१६॥
चमत्कार पण्डित नामा का जान गुरु लिए मानी ।
भागवती जन गाये भजन में नामा विट्ठल एक जानी ॥१७॥
प्रत्यक्ष पांडूरग मिलाये नामा कृपा निधानी ।
कह नाथू छींपो नामा की महिमा अमित बखानी ॥ १८ ॥

दोहा—नामदेव के कुटुम्ब सभी, भज नित पंडरी नाथ ।
शशि भागा तट एक दिन, बिराजे मंडली साथ ॥

राग—मारू

बिराजे मंडली साथ हरि यश गाय भक्त मिल सारा ।
बोले संत एक सतयुग में भये बाल्मीकि प्रभु प्यारा ॥ १ ॥
सौ करोड़ रामायण रच बने कविजन के सरदारा ।
क्या कलि में हम तुम जन करते हरि गुण का विस्तारा ॥२॥
ऐसी बात सुन नामदेव गये पांडू रंग के द्वारा ।
बोले हरि से कछु नहीं कीना हम ले मनुष्य जमारा ॥ ३ ॥
अब बिठ्ठल मै करूं प्रण ऐसा ले तव चरण सहारा ।
सत करोड़ पद माल्मीकी ज्युं रच गुण गाह तुम्हारा ॥ ४ ॥
ऐसी प्रतिज्ञा सुन कही ठाकुर नामा कठिन प्रण धारा ।
सतयुग आयु चार सौ वर्षो की अब सौ वर्षी उचारा ॥ ५ ॥
तेरी उम्र कछु बीत गई सत कोटि के कठिन करारा ।
जो प्रतिज्ञा पूरी न हो तो जीभ पं धरूं कटारा ॥ ६ ॥
सुन कही नामो प्रण सिद्ध करने तुम तो सरजन हारा ।
ऐसा नामा धारा मत लख विठ्ठल सोच विचारा ॥ ७ ॥

हुकम दिया हरि सरस्वती को देदीं सुमती उद्यारा।
नामदेव की रसना बैठो रचो भजन तत्व सारा ।। ८ ।।
भीमा नदी तट कथे नामदेव पद खुब विठ्ठल लिखारा।
जैसे व्यास रचित लिखी रिद्धि सिद्धि भरतारा ।। ९ ।।
केते भजन रचे कृष्ण रुक्मणी नामदेव हितकारा।
जिनका विवरण न्यारा गिण कहे अन्य ग्रन्थ कर्तारा ।। १० ।।
नामदेव व्यापार के मिस एक दिन ले द्रव्य उधारा।
राक्षस भवन में विप्र जिमाये किये उनका निस्तारा ।। ११ ।।
सुन साहुकार नामा को आ कही देवो द्रव्य हमारा।
नामा के तप बल से उलटे पंडरपुरी सिधारा ।। १२ ।।
विस्मय मन भर कनक कडे में निज धन मिल्या निहारा।
नाथू दर्जी नाम देव सिद्ध लख नम करी साहूकारा ।। १३ ।।

दोहा—परच्या दे श्रीमान् को, करी सेठ बहु सेव।
पंडरपुर शुभ धाम में, फिर रट नाम ही देव ।।

राग—मारू

फिर रट नाम ही देव अलौकिक पूज के विप्र जिमाये।
पगत दोष का प्रायश्चित करके विश्व रूप दर्शाये ।। १ ।।
एक २ नामा एक २ ब्राह्मण पांत में बैठे लखाये।
जाति गर्व हर द्विज भक्तन को रूप विराट दिखाये ।। २ ।।
पुनः श्री ज्ञानेश्वर श्री सोपान देव गुण गाये।
मुक्ता निवृति नाथ बटेश्वर चांगा समाधि समाये ।। ३ ।।
सत ज्ञानेश्वर लिये समाधि नामा को दरशाये।
नामदेव लख सतगुरु सच्चा पुनि पुनि शीश नवाये ।। ४ ।।
श्री विष्णु का अश ज्ञानेश्वर अजर अमर कहलाये।
कह नाथू छींपो कुल भूषण हरिजन यस फैलाये ।। ५ ।।

दोहा—पंडरपुर महाराष्ट्र द्विज, ऋगवेदी सरनाम।
लक्ष्मी दत्त जी के घरां, रुपा देवी बाम ।।

राग—मारू

रूपा देवी बाम दम्पत्ति श्याम विठ्ठल का प्यारा।
पाले गृहस्थ धर्म नीति से करत अतिथि सत्कारा ।। १ ।।

उनकी भक्ति पै खुश होके घर पांडूरग पधारा।
सन्त रूप भगवत की सेवा करी कर नेह अपारा ॥ २ ॥
मनु सम पुत्र भावना लख हरि दिये वर निज अवतारा।
होऊँ त्याग वैराग्य विभूति अंश से करूं उबारा ॥ ३ ॥
सम्वत तेरह सौ सैंतालीस मंगसर सुदी गुरुवारा।
दूजे लगन धन रुपा देवी के प्रगटे गर्भ कुमारा ॥ ४ ॥
विष्णु भक्त विरक्त धन तासे रांका नाम निकारा।
गृहस्थाश्रम में त्यागी रहना मत खांडे की धारा ॥ ५ ॥
सम्वत् तेरह सौ इक्काबन वैशाख शुक्ल पखवारा।
कर्क लगन बुधवार पंचमी हर देव विप्र के द्वारा ॥ ६ ॥
लक्ष्मी अंश से बांका प्रगटी भये रांका भरतारा।
मांगन कर्म अधम वर कीना मेहनत करत विचारा ॥ ७ ॥
रहे उस धाम नित ईंधन बेचे प्रभु रट करे गुजारा।
कहे हाल पांडू रग जी को द्यो हरि द्रव्य अपारा ॥ ८ ॥
विट्ठल कही धन चाहे न रांका सन्तोषी पति दारा।
जब नामो कही गृहस्थ होय सो कैसे द्रव्य से न्यारा ॥९॥
कहे कृष्ण तुम करो परीक्षा मिट जाय भ्रम विकारा।
नामदेव रुपया का थैला जा बन मारग डारा ॥ १० ॥
नजर आत वित्त रांका पग से धूरी डार पधारा।
बांका कही धूरी पर धूरी क्यू करो खेल गँवारा ॥ ११ ॥
दम्पति को दृढ़ भाव देख हँसे मन धन्यवाद सितारा।
जब नामा धन थैले ले गये रांका घर परवारा ॥ १२ ॥
दें बरजोरी नट रहे रांका ताना छान के मारा।
ताना सुन नामा विट्ठल ढिग आके हाल पुकारा ॥ १३ ॥
कह नाथू छींपी जन पावे कैसे पार किनारा।
रांका बांका से निष्कर्मा भक्त मणि अवतारा ॥ १४ ॥

पद राग माढ तर्ज—मतवारी ऐ मैना

बचन नामा का

क्यूं छाई भवाना छाना ताना श्याना नाना देत ॥ टेर ॥
धन की थैली मग मे डाली रांका भक्त रे हेत।
रांका डारी धूरी धन पे बांका मानी रेत ॥ १ ॥
बरजोरी बित्त घर में डारे रांका नाहीं लेत।
छान छवान को मोसो मार्‌यो भयो कलेजे छेत ॥ २ ॥
है लख बार धिक्कार मेरे को अब चित मे भयो चेत।
मजूर बनाए हजूर श्याम को नाम भवन दी सेत ॥३॥

छप्पर तुम्हारा तुम ही रखो क्षमा करो खग केत।
निष्कामा भक्ति प्रभु दीज्यों मेरे हृदय खेत।। ४।।
दरजी नाथूराम नारी बन बांका पद निशि सेत।
काट ताना को करन नामा को कियो हरि सकेत।। ५।।

दोहा—नामदेव हरि बचन सुनि, कहि रांका ढिग जाय।
तुम हम से बढ़ कर भये, प्रभु कर चरण दबाय।।
सुन रांको कही मोर पग, चांपति मोरी बाम।
पांडू रग कब आइया दाबन मेरा पाम।।
तब नामा कहि भक्त तुम, रांका सुघड़ सुचाल।
पहली पूछ निज नार को, फिर यो करो सवाल।।
तब रांका निज नार को, पूछत दिया जबाव।
मै पति नहीं पग दाबिया, गये और कोई दाब।।
रांका भक्त लज्जित भये, कर मनमें पछताव।
ब्रह्मादिक के ईश से, भूल दबाये पॉव।।
रमा सहित हरि प्रगट कहि तजो रांकाजी खार।
पद निष्कामी भक्त का, सेयां उतरे भार।
मिली बॉका लक्ष्मी बरन, रॉका विठ्ठल अग।।
नामदेव छबि लख नमै जय जय पॉडू रग।
धन गुड़ गन्दा चाह ज्यूं, सॉठा लक्ष्मी रूप।
लक्ष्मी पति के क्या कमी, अमित भरे रस कूप।।
मोहरां से मोह त्याग के, भये रॉका सरनाम।
धन धूरी सम जानिये, बॉका बैरागिनी बाम।।
आपही भगवत भक्त हो, लीला करो जग हेतु।
पतित पावन जस, नामी की, बांधो भवनदी सेतु।।

पद राग भैरवी तर्ज—गुजरी बनाई मैं तो

करूं क्या बड़ाई मै तो थारी जग में रघुराई।। टेर।।
कैसे जड़ मति हो ससारी, माने जड़ देह को प्यारी।
ताके हितकारी हानि रह्यो तब भलाई मै तो।। १।।
काठ को तिरावे पानी आपको खींच्योड़ो मानी।
त्यारण ज्यू ही प्रानी जानी लीला सदाई मै तो।। २।।
प्रभु पद तत्व अद्वितीय दिखलाने प्रीति रीति।
देखो युगल रूप प्रतीति सैव्य सेवकाई मै तो।। ३।।
भक्त वत्सल प्यारे लाखो अधमो को त्यारे।

भूले तुम्हे जिनके लारे धूर ही बगाई मै तो ॥ ४ ॥
दर्जी नाथू नामदेवा दीजो पाद पद्म सेवा।
मिले चारो फल मेवा, कीरती गाई मै तो ॥ ५ ॥

दोहा—नामदेव स्तुति करी, प्रसन्न भये भगवान।
तीनो भक्तो को भक्ति वर, दे भये अन्तर्ध्यान ॥

राग—मारू

दे भये अन्तर्ध्यान मग्न कर नामा निज घर आये।
कई दिन बाद व्रज यात्रा को ले सग संत सिधाये ॥ १ ॥
वृन्दावन में आय कृष्ण गुण गाय के विष्णु रिझाये।
फिर वहां से चल दिये पंजाब को भजनामृत वर्षाये ॥२॥
हिन्दी पजाबी भाषा के पद वहां आप बनाये।
वर्ष अठारह उस प्रदेश में श्रुति धर्म दृढ़ाये ॥ ३ ॥
ग्रन्थ साहव मे नामदेव कृत अभग बहुत दर्शाये।
वहां से जा हरिद्वार ज्वालापुर नामा मठ चिणवाये ॥४॥
गुरुदास पुर जिले के घोमान गांव को ध्याये।
वहां पर ठाकुरद्वार करा के पांडू रग पुजवाये ॥ ५ ॥
उसके पीछे नामदेव की पादुका चिन्ह थरपाये।
वहां पर हस्त लिखित ग्रन्थ में छन्द नामा कृत छाये ॥६॥
आय पढरपुर हरि गुण गाके जीवन सफल कराये।
मात पिता स्वर्गवास भए नामाजी विप्र जिमाए ॥ ७ ॥
अस्सी वर्ष के नामदेव भए चोला बदलन चहाये।
सम्वत चौदह सौ सात श्रावण सुदी तेरस श्वास चढ़ाये ॥८॥
दूजे जन्म हो तुकाराम जी नामा भजन रचाए।
कई कहते पुनि सूर श्याम हो शत कोटि के प्रण निभाए ॥९॥
भगवत और भक्त के गुण को गाते व्यास सकुचाए।
सम्वत उगनी सौ साल चोणमें पौष शुक्ल पखभाए ॥१०॥
नन्दलाल गुरु सिमर नामदेव मगल नाथू गाए।
मगल महातम मिले चतुं फल प्रभु पद प्रेम सवाए ॥ ११ ॥

आरती नामदेव मगल की
राग—कजरी रसिया

आरती नामदेव मंगल की कर मुद मंगल की दाता ॥ टेर ॥
गाधिज गात्र वर्ण है क्षत्री छींपी दाम त्राता।
भारद्वाज कुल सीता के सम सती गोणा माता ॥ १ ॥

सनत कुमार प्रह्लाद जी अगद उद्धव विख्याता।
सोई पचम नामदेव बनि उगत प्रभाता॥ २॥
बालपने में भक्ति प्रचारी विट्ठल पद ध्याता।
हठ करके नवेद्य जिमाए पाये दूध ताता॥ ३॥
नवें वर्ष जनेऊ ले राजा बनी व्याता।
सुर तेतीसूं जान में आए बेदर नगर ख्याता॥ ४॥
जरी छान छाई पांडूरंग बांधे रमा बाता।
बाबूराव सुसरा लख प्रभुता मन में चकराता॥ ५॥
मुक्ति भवन हरि आए न्हावन रूप चौदस प्राता।
मन्दिर पुजीजे नामा विट्ठल बदले भोग पाता॥ ६॥
खेचर बिसोवा गुरु कहाये हरि आतम ज्ञाता।
जीव लखे नामा भूतादि श्वान विट्ठल ध्याता॥ ७॥
मृतक गऊ जिवाये तप लख बादशाह घबराता।
एकादशी व्रत की दृढ़ता लखि हरि मन हरसाता॥ ८॥
तुलानी कामद हर मन्तर नाम का जपवाता।
दे परच्या ज्ञानेश्वर सग में यात्रा को जाता॥ ९॥
नाग नाथ कर देवल फिरिया भरमी सरमाता।
राँका आदि नामदेव को भक्त बलि जाता॥ १०॥
नारायण महादेव गोविन्द विट्ठल चारो भ्राता।
नामदेव सुत चार प्रसूती छींपी कहलाता॥ ११॥
नामदेव पुनि तुकाराम भये सूरश्याम भाता।
पूरे प्रण सत कोटि पद का पूरे फल दाता॥ १२॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ाओ ले तन्दुल हाथा।
सुवरन थाल नीराजन करिये शुभ साता॥ १३॥
नन्दलाल गुरु कृपा नाथू दरजी गुण गाता।
चूक सुधार गुणी जन गावे चारों फल पाता॥ १४॥

इति श्री नामदेव मगल सम्पूर्णम्



हनुमान यश पद्माला

की

समीक्षा

भक्त कवि नाथूराम जी ने यह पदावली तब लिखी थी जब वे कवि के रूप में ख्याति की पराकाष्ठा पर थे। कवि ने भूमिका मे अपना आशय भी प्रकट किया है— "बहुत अर्से से मेरी अभिलाषा रामभक्त श्री महावीर जी का गुणानुवाद आपके सम्मुख उपस्थित करने की थी, क्योकि अद्वैत मतानुसार बजरगबली ईश्वर के अवतार ही सिद्ध होते है, इसलिये यह बात तो निर्विवाद है कि उन षट् ऐश्वर्य सम्पन्न अतुलबली दिव्य गुणनिधि महाप्रभु का यशोगान करने से मन विक्षेपादि दोषो का निवारण होता है।" इन सद्भावनाओ से अभिभूत होकर कवि ने साधको के मार्ग दर्शनार्थ पद रूप मे मन्त्र रचे है तथा सर्व साधारण के लाभार्थ गेय पद रचे है, जिससे सत्साहित्य में प्रशसनीय अभिवृद्धि हुई है। ग्रन्थ प्रकाशन सन १९४१ मे हुआ था, परन्तु इसमे जो पद दिये है वे संवत् १९९० (सन् १९३३) में रचे गये थे, जैसा कि पद स० १६ से स्पष्ट हो जाता है।

सवत् उगणी सौ निव्वे नन्दलाल उर ध्यान।
दर्जी नाथूराम चरित्र कथे बारह मास डिडवान।।
करो कवि त्रुटि भजन ।।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे ही दो कवित्त छन्दो के द्वारा कविवर ने हनुमान जी की स्तुति की है। तुलसी की 'कवितावली' की भाँति इस ग्रन्थ मे भी पदो, रगत ख्याल, गजल कव्वाली, लावणी रगत छोटी एव बड़ी तथा हरिगीत छन्द मे अष्टकी की रचना करके जहाँ भाव गाम्भीर्य दर्शाया है, वहाँ अनुप्रास की छटा से पाठको को आनन्दित किया है। कवित्त में शब्दालकार का सफल प्रयोग देखिए—

मगल मूरति मोटा, माता अंजनि के ढोटा, मार मारुती लगोटा, बाल ब्रह्मचारी है।
लांघ सिंधु लंक कोटा, सिय दिखाय रूप छोटा, दे सदेश पुनि लौटा, आने कपि अपारी है।।
असुरो के कर्म खोटा, जान के पकड़ चोटा, दला दुष्ट घुमा घोटा, कीन्हीं खल ख्वारी है।।
दर्जी नाथूराम ओटा, लिया जांका मिटा टोटा, दे प्रसाद घी रोटा सुखिया नरनारी है।।

उपरोक्त प्रकार से मंगलाचरण के पश्चात् कविवर ने पदो के माध्यम से हनुमत-वन्दना की है। आज से ४५ वर्ष पूर्व समाज मे जो राग रागिनियाँ तथा भजनो की धुने प्रचलित थी, उनके आधार पर ही कवि ने पद लिखे है ताकि वे लोगो की जवान पर चढ जावे और कृत्रिमता-हीन शैली मे इस सत्साहित्य का प्रचार हो। किसी पद मे गणेशजी एव हनुमान जी की तुलना की गई है, कही पर माता अजनी तथा पुत्र हनुमान जी का

सवाद है, कही भगवान राम हिंडोरे मे झूलना झूल रहे हैं और हनुमानजी उनको झुला रहे हैं तथा कही पर राग भीमपलासी, राग गर्भी, राग मॉड आदि मे हनुमानजी की विभिन्न प्रकार से वन्दना की गई है। ये समस्त पद आज भी उत्सवो एव कीर्तन-जागरणो मे बडे चाव से गाए जाते हैं।

पद स ८ "आर्य देश बेग आओ कल्कि कन्हैया" हनुमानजी की स्तुति मे नही लिखा गया है, बल्कि देश प्रेमयुक्त रचना है। भारत मे अंग्रेजी राज्य से कवि इतने विक्षुब्ध थे कि इसकी शीघ्र समाप्ति हेतु वे माला जपते रहते थे। सन् १९३९ का अकाल द्वितीय महासमर की घोषणा, भारत के जन धन का युद्ध हेतु शोषण, इन सबसे कविवर बड़े दुखी थे, और भगवान से प्रार्थना करते थे कि महात्मा गांधी के प्रयत्नो से भारत शीघ्र आजाद हो। कवि ने धर्म ग्रन्थो के श्रवण एव विद्वान् सन्त महात्माओ के प्रवचन से मत स्थापित कर लिया था कि भगवान कल्कि का। अवतार शम्भल ग्राम मे माता सुमति एव पिता विष्णु के घर हो चुका है तथा सन् १९४८ मे वे प्रकट होकर कलियुग का अन्त करेंगे और सत्य के राज्य की स्थापना करेंगे। तभी जाति कर्म धर्म सही माग पर आवेगे, गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगेगा, आसुरी खानपान बन्द होगे तथा बेकारी, दुर्भिक्ष एव युद्ध की विभीषिका मिटेगी। कवि का स्वप्न अधिकाश मे सन् १९४७ मे ही सच्चा हो गया, जब विधर्मी अंग्रेजो को भारतवासियो ने देश से निष्कासित करके सत्ता स्वय सम्हाल ली।

पद स० ९ मे हनुमानजी के १० नाम गिनाए गए हैं जो कवि की भावना के अनुसार १० मन्त्र ही हैं। सस्कृत साहित्य मे जैसे 'विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र' है, अथवा 'दुर्गा अष्टोत्तर शत 'नाम हैं' अथवा गणपति द्वादश नामानि' है वैसे ही कवि ने अपने ढंग से हनुमानजी के १० नाम गिनाए है—

> महिमा तुम्हारी मोटी माता अजनी का पूत ॥ टेर ॥
> एक तो अश शिवजी का दूजा वायु जिव भूत।
> तीजा केशरी कुल नीका चौथा राघवजी का दूत ॥
> पंचम बाल ब्रह्मचारी, छठा मत अवधूत ॥
> सप्तम अतुल विद्वाना, अष्टम तन मजबूत।
> नवमे नमे नाथू दर्जी, दसवें अवतारी करतूत ॥

लावणी रचना करने मे कवि अपना सानी नही रखते। 'रामचरित तिथि पत्र बारहमासा" मे उन्होने अपने गहन अध्ययन एव पदलालित्य-लाघवता का सुन्दर परिचय दिया है। रामचरित्र की तिथिवार घटनाओ को सही चित्रित करने मे उन्होने बडा परिश्रम किया है और साहित्य में एक नई चीज दी है। ऐसा तिथिपत्र वही व्यक्ति तैयार कर सकता है जिसके मस्तिष्क मे रामचरित्र की सूक्ष्म से सूक्ष्म घटना की जानकारी विद्यमान है। लावणी के प्रारम्भ के दो छन्द देखिए—

> श्री रामनिरजन देवन दुःख भंजन रघुकुल अवतरे ॥ टेर ॥
> बन्दौ मगसर शुक्ला पांचें राम जानकी ब्याया,
> बन याता में बिछ्ड़ी सीता सुध हित कपि पठाया;
> वर्ष चौवहवें इस पख महीने बजरंग लंक सिधाया;

लकनि मार एकादशी निशि हेरी जग माया;
भेद विभीषण दिए बारस को सीता से बतलाया, आय करे खल मद गजन ॥ १ ॥
बन के तेरहवे बरस पौष मे शूपनखा भई नकटी;
चोदह सहस्र निशाचर खपिया खर दूषण से विकटी;
वर्ष चौदहवें पौह सुद आठें सेना चली मरकटी,
दल पहुंचे त्रिकूट गिरि पालक चढे सुबेल,
आए विभीषण शरण राम शर सागर सके न झेल, राय दी सेतु सर्जन ॥ २ ॥

सन् १९३३ में रचा गया यह तिथिपत्र आज भी कई देवस्थानो में टग रहा है। इसकें समस्त १३ पद रामजन्म से लका विजय तक सही तिथिवार रचे हुए है कई स्थानो पर ख्याल के रूप मे अभिनीत भी हुए हैं।

इस ग्रन्थ मे एक और भी अच्छी लावणी दी हुई है जो हनुमान जी की स्तुति मे न होकर पाढा माता (सर की माता) के मन्दिर की उत्पत्ति के विषय मे है और इससे बड़ी ऐतिहासिक महत्व की सामग्री मिलती है। कविवर ने तथ्यो के आधार पर लिखा है कि विक्रमादित्य ने दिल्ली मार्ग पर चामुण्डा का मठ बनवाया। सर के पास देवी का अचल धाम था, उसके पास डीडवाना बसा। सवत् ९०१ वि० मे इस मन्दिर का शिखर तथा चबूतरा बनाया गया। भगतसिह जी ने फिर इसका सगीन मण्डप बनवाया। दरबार ने देवी की पूजा व भोग के निमित्त रु० २०० वार्षिक व्यय की व्यवस्था कर दी। सर का मन्दिर दूर होने से सवत् ९४१ वि० मे डीडवाना ग्राम मे देवी का मन्दिर (वर्तमान माताजी का मन्दिर, कोट मुहल्ला) तत्कालीन हाकिम विजयसिह जी द्वारा बनवाया गया। इस मन्दिर की देवी की रकमे एक बार चोरो ने चुरा ली, देवी तत्काल अपनी पुजारिन (सेवगनी) मे आ गई और चोरो का पता बताया। उधर वे चोर भी अन्धे हो चुके थे, अत. पकड लिए गए। तब से सभी हाकिम देवी का चमत्कार मानने लगे और परम्परा ही बन गई कि डीडवाना का नया हाकिम पद ग्रहण के पहले इस मन्दिर मे आकर देवी का आशीर्वाद प्राप्त करेगा।

कविवर नें लावणी के प्रारम्भ से ही देवी की अपार शक्तियो का परिचय निम्नलिखित 'शेर' के द्वारा दिया है—

ओम नमो अद्वैत आतम ज्ञान घन दिव्य खब है।
अल्पज्ञ जिव सर्वज्ञ शिव शक्तिमयी अवलम्ब है॥
ना नर नारी नपुंसक विभूति मयी बिम्ब है।
चितरे भुजाणे आप कल्पित अपने अंग जगदम्ब है॥

सृष्टि के आदि में अद्भूत नव दुर्गा की प्रशस्ति सत्, त्रेता, द्वापर एव कलि में देवी के विभिन्न चमत्कार, माघ और आषाढ़ के गुप्त नवरात्रो का महत्व आदि का सफल चित्रण करके कविवर ने इस लावणी को महामाया के प्रवल प्रताप का सिद्ध मन्त्र वना दिया है।

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवीभगवती हि सा।
वलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥

ग्रन्थ के अन्त मे हरिगीत छन्द (गेर) मे हनुमान्नाष्टक दिया हुआ है जो तुलसी के हनुमान्नाष्टक (वाल समय रवि भक्ष कियो तव तीनहुँ लोक भयो अँधियारो) के समकक्ष है। तुलसी का उद्देश्य आततायियो द्वारा त्रस्त भारत की जनता को शक्ति शील सौंदर्य समन्वित भगवान का अवलम्बन प्रदान करना था अतः उन्होने भाषा को सरल ही बनाए रक्खा। तुलसी स्वय लेखनी से लिखते थे, उनकी नेत्र ज्योति अच्छी थी; उन्होने स्वय शास्त्रों का गहन अध्यनन किया था। इसके विपरीत कविवर नाथूराम जी की नेत्र-ज्योति नहीं थी, कम पढ़े लिखे होने के कारण स्वयं लिख भी नही सकते थे; शास्त्रो का अध्ययन उन्होने स्वय ने नही किया। उन्होंने स्वामो जी वालमुकुन्दाचार्य जी महाराज के श्रीमुख से श्रीमद्‌भागवत तथा महाभारत सुनी, कई विद्वानों का सत्सग किया, मनन चिन्तन करके सव वातो को मन मे ग्रहण किया यही अन्तर तुलसी तथा नाथूजी मे था।

'हनुमान्नाष्टक' के साहित्य-सौरभ की सुवास का कुछ आनन्द आप भी इन दो छन्दो द्वारा कीजिए—

बलशीव जिमि हयग्रीव रघु सुग्रीव मिल बा दुख हरण।
सिये अरि फल परी लांघे सरी हरी ज्यूं करि तरन॥
अशोक रक्षण असुर भक्षण आदि क्षम किए फल चरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारुती शरण॥ १॥
लंक जाल ले काल गाल कराल ज्यूं त्रिनेतरन।
नद पैठे मछ कछ भाँति गछ करे नारदी लछ खल मरण॥
परे लखन धर मोहनी धनन्तर ज्यूं दी अमिजर गिरधरण।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारुती शरण॥ २॥

ग्रन्थकार ने 'हनुमान यश पद माला' के माध्यम से गेय पदो की भरमार समाज के हाथो मे समर्पित की है और इस प्रयास मे कविवर को अभूतपूर्व सफलता मिली है। विभिन्न राग रागनियो का प्रयोग करके कविवर ने सगीतज्ञो को भी स्वर और साहित्य का सुन्दर सामजस्य प्रदान किया है। एक पद देखिए—

राग श्याम कल्याण

सुने हम सकटमोचन वीर॥ टेर॥
कपि सुग्रीव को सुखिया कीन्हों मित्र वना रघुवीर।
सिन्धु लांघ सिया सुधि लाए, ऐसो गुण गम्भीर।
केशरी वंश अंश शिवजी का, अजनी कोष समीर।
सुर तेंतीस की वन्ध छुड़ाई, मारे असुर रणधीर।
दर्जी नाथूराम पियारे वेगि हरो भव पीर।

हम आशा करते है कि कवि की वाणी से पाठको को प्रेरणा मिलेगी और कोई माई का लाल ऐसा होगा जो गुरु कृपा से भगवती शारदा को अपने हृदय रूपी आँगन में नचाने मे समर्थ होगा। असम्भव कुछ भी नही है। शुभ कार्य मे भगवान भी सहायक होते है—

ॐ नमो आतम ज्ञान, श्री यश तेजवान, शील धर्म खान मान, पूरण भगवान है।
श्री शील रूप नन्द, ब्रह्मा शम्भुजी मुकुन्द सोहे ज्यूं तारा वृन्द, चन्द्र इन्द्र भान है।।
पाँचो देव मगल मूल, रचे विश्व सूक्ष्म स्थूल, जीव की मिटाय भूल, चेता निरवान है।
गुरु नन्दलाल ध्याय, नाथूराम यश गाय, सदा बुद्धि बल बढाय, सहाय हनुमान है।।



कवित्त

(१)

ओ३म नमो आतम ज्ञान, श्रीयश तेजवान, शील धर्म खान मान,
पूरण भगवान है ॥ १ ॥
श्री शील रूपनन्द, ब्रह्मा शम्भूजी मुकन्द, सोहे ज्यूं तारा वृन्द,
चन्द्र इन्द्र भान है ॥ २ ॥
पांचों देव मगल मूल, रचै विश्व सूक्षम स्थूल; जीव की मिटाय भूल;
चेता निरवान है ॥ ३ ॥
गुरु नन्दलाल ध्याय नाथूराम यश गाय, सदा बुद्धि बल बढ़ाय,
सहाय हनुमान है ॥ ४ ॥

(२)

मगल मूर्ति मोटा, माता अजना के ढोटा, मार मारुती लंगोटा,
बाल ब्रह्मचारी है ॥ १ ॥
लांघ सिंधु लंक कोटा, सिय दिखा रूप छोटा दे सदेश पुनि लौटा;
आने कपि अपारी है ॥ २ ॥
असुरों के कर्म खोटा, जानके पकड़ चोटा, दला दुष्ट घुमा घोटा,
कीनी खल ख्वारी है ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम ओटा, लिया ज्यांका मिटा टोटा, दे प्रसाद घी रोटा,
सुखिया नरनारी है ॥ ४ ॥

(३)

पद

चाल—रघुवर कोशल्या के लाल

वन्दौं श्री गणपत हनुमान, बल बुद्धि के बढ़ाने वाले ॥ टेर ॥
दोनों शंकर सुवन सुजान, दोनों महावीर बलवान ।
दोनो ऋद्धि सिद्धि वरदान, मगल मूल मिलाने वाले ॥ १ ॥
गनपत के कर परसा मोटा, बजरग लिये हाथ में घोटा ।
माता सति अंजनी के ढोटा, टोटा विघ्न मिटाने वाले ॥ २ ॥

गनपत लम्बी सू ड ललकाय, बजरंग पूंछ बड़ी लहराय।
जिनसे करे भक्तों की सहाय, दुर्जन दूर हटाने वाले॥ ३॥
दर्जी नाथूराम सराय, पर उपकारी प्रभु कहाय।
जन की बिगड़ी देय बनाय, बेड़ा पार लगाने वाले॥ ४॥

(४)

तर्ज—इसी चाल मे

ईश्वर ऐसा रचो सुत मात, सनातन धर्म बढ़ाने वाले॥ टेर॥
अजनी लगा दूध की धार, पर्वत फार करी ललकार,
यह पय पाया तुम्हे कुमार, काल को गाल दबाने वाले॥ १॥
क्या भये लांघे सिंधु तीर लक घर जारे हो नही वीर
अगन से डर के पेठा नीर जननी दूध लजाने वाले॥ २॥
फिर तू होते हुए हनुमान लषण के लगवा दीना बाण।
जीते अब तक यातुधान सती सीता को चुराने वाले॥ ३॥
बजरग बोले शीश नवाय भोणा सेवक धर्म कहाय।
नींतर तेरे दूध बल माय शिशु है प्रलय दिखाने वाले॥ ४॥
दर्जी नाथूराम सुख धाम नर लीला करदे गुण ग्राम।
हम तो खाना जात गुलाम श्याम के हुक्म बजाने वाले॥५॥

(५)

तर्ज—नन्द के गोविन्दाजी सू लाग्यो म्हारो नेवरो

साचो बजरग पर उपकारी केवड़ो॥ टेर॥
महावीर मारुती मोटो, मुद मगल माधुर्य को मेवड़ो॥ १॥
लाल लंगोटो बालब्रह्मचारी हाथ वज्र कांदे जनेऊ सजेवड़ो॥ २॥
दीन बन्धु दुखिया के साथी दुर्बल जन की नैया खेवड़ो॥ ३॥
कपि सुग्रीव को कष्ट हटायो रघुवर जी से करवायो नेवड़ो॥ ४॥
लका दाहन लखन जिवावन अहिरावण को मिटायो फरेवड़ो॥ ५॥
दर्जी नाथूराम सरावे बजरंग गुण को आवे नही छेवड़ो॥ ६॥

(६)

तर्ज—परदेशी मेरा प्यारा रे मारा नैनो का तीर

हिडोरे झूले श्री भगवान झुलावें बजरंग नीति निधान॥ टेर॥
हेम हिडोला हीरा जड़िया बनाये विश्वकर्माजी बढ़िया।
रतन सिंघासन दम्पति चढ़िया शोभा रवि शशि कोटि समान॥ १॥

राज सुन्दर चरण बढाय बोली निज २ पांव सराय।
परस्पर फंसे बहस सवाय न्याय पूछत यों कहि हनुमान ।। २ ।।
भक्ति भरे वचन तत्गूढा स्वामी पद सूं सिय पद रूढ़ा।
इवछन्न रखन चूंदड़ो-चूड़ा कमला पद पावे धर ध्यान ।। ३ ।।
कपि का वाक्य वेद अनुकूल सुनकर सुर बरसाये फूल।
रघुवर जानकी झूला झूल खुश हो दिये मोदक मिष्टान ।। ४ ।।
नमते दर्जी नाथूराम जानकी जीवन जग सुख धाम
सुरनर मुनिजन भक्त तमाम झांकी लख करते गुणगान ।। ५ ।।

(७)

राग-भीम पलासी
तर्ज—वेदों का डंका

तेरे बल विक्रम बहादुरी पं बजरंगबली बलिहारी है ।। टेर ।।
धन अंजनी तोकूं जन्म दिया धन तू सजनी का दूध पिया।
उड़ बादल ज्यूं रवि ग्रस लिया मुख वज्र सहा बलकारी है ।। १ ।।
सुग्रीव के दु:ख में सहायक हो रघुनायक लायक पायक हो।
चारो फल के वरदायक हो करे सुरनर आश तिहारी है ।। २ ।।
ब्रह्मचर्य का अंग तेज ये शत योजन सिंधु लांघ गये।
लंका मे रिपु भयभीत भये लख महावीर अवतारी है ।। ३ ।।
लक्ष्मण के जब शक्ति लगा तब आने संजीवन पहाड़ जगा।
अहिरावण जब धनमूल ठगा, तब करि खल दल की ख्वारी है ।।४।।
कोई कहे माताजी अंजनी है अंजनी भंजन अघ भंजनी है।
सुत ऐसे जने निरंजनी है सच्ची मानुष महतारी है ।। ५ ।।
लग्र वीर भक्त या रघुवरजी ब्रह्म पद दीना कर मरजी।
जश गावत नित नाथू दर्जी प्रभु तुमको लाज हमारी है ।। ६ ।।

(८)

तर्ज—भरोना कहा भूल आयी

आर्य देश वेग आवो कल्की कन्हैया ।। टेर ।।
सत अड़ चालीस दिव दिन वाला, कलिका अंत समैया।
जाति कर्म धर्म सब उल्टे कटे हजारों गैया ।। १ ।।
भोजन वस्त्र बने आसुरी पाखण्डी मति छैया।
बेकारी दुष्काल समर भय आरत शासक रैया ।। २ ।।

धर्म हेतु युग युग अवतरते छोड़ शेष की शैया।
गोता वाक्य सत्य कर स्वामी, पार लगावो नैया॥ ३॥
गम्भल ग्राम तात विष्णु यश सती सुमति जी मैया।
ज्यों घर हरि अवतार धरो ज्यूं अवध में चारो भैया॥ ४॥
परशुराम की शिक्षा धारो शिव वर पाय विजेया,
काली खड्ग ले मलेच्छ मारो खग से तुरी चढैया॥ ५॥
मरु देवापि करे प्रतिज्ञा भारत की भांति बलया।
दर्जी नाथूराम ज्यूं भेंटो सत्य के राज्य जमैया॥ ६॥

(९)

तर्ज—वृज की लता लागे प्यारी

महिमा तुम्हारी मोटी माता अंजनी रा पूत॥ टेर॥
एक तो अंश शिवजी का दूजा वायु जिव भूत।
तीजा केशरी कुल नीका चौथा राघवजी का दूत॥
पंचम बाल ब्रह्मचारी छठा मत अवधूत।
सप्तम अतुल विद्वाना अष्टम तन मजबूत॥
नवमें नमे नाथूदर्जी दसवें अवतारी करतूत।

(१०)

तर्ज—राग श्याम की महिमा अपार

मेरा बेड़ा लगावे पार, महावीर की महिमा अपार॥ टेर॥
शंभु अंश श्री अंजनी गर्भा, पवन आत्मा रविसी प्रभा भये ज्यूं सर्भावतार॥ १॥
केशरी कु वर बाल ब्रह्मचारी, लाल लंगोट गदा कर धारी बल बुद्धि भंडार॥ २॥
दीन बन्धु दुखिया के संगी, रिध सिध के दाता बजरंगी किये सुग्रीव सुखियार॥ ३॥
अगद संग गये सीता खोजन, लांघ गये सागर शत योजन लाये संदेशा लंका जार॥४॥
लखन जिवावन तुम जग पावन, पंठ पाताल हते अहिरावन सुर माने उपकार॥ ५॥
दर्जी नाथूराम सराये, हनुमान हरि हिये लगाये, सुजस पर बलिहार॥ ६॥

(११)

राग गर्भी . तर्ज—गजरा बेचन वाली

पख रहियो मेरी हनुमान बली बड़ बंका॥ टेर॥
सिंधु लाँघनि सीता सोधनी जारनिया गढ़ लंका॥ १॥

गिरिवर धारण लखन जिवावन बजा विजय का डंका ॥२॥
अहिरावण खल सैन्य सहारन पैठे पाताल निशंका ॥ ३ ॥
नाथूराम सदा गुण गावै उपकारी बजरगा ॥ ४ ॥

(१२)

तर्ज—ध्याऊँ मैं तोहे गणराज

वन्दौ बलि हनुमान निसदिन ॥ टेर ॥
मगल मूर्ति काज में फुरती सुरती से मुरती सुजान ॥ १ ॥
दीन के बन्धु कृपा के सिधु जस इन्दू तप भान ॥ २ ॥
दु:ख में सहायक सुख वर दायक रघुनायक पद ध्यान ॥३॥
नाथू दर्जी करता अर्जी करो मर्जी शुभ ज्ञान ॥ ४ ॥

(१३)

तर्ज—कदर मोरी ना जानी

विपत में बजरगी हो सगी सिर सोहे राम किलगी ॥ टेर ॥
बाली भय से दु खी सुग्रीवा आन मिलाये राम बनाये परसगी ॥ १ ॥
सिधु लांघ सिया सुधि लाये लका जारी दकाल असुर मारे जगी ॥२॥
गिरिवर आन सजीवन दीनी लक्ष्मण बलि की खूब काया बनगई चगी ॥३॥
पैठ पाताल बने कपि दुर्गा प्रकटे ज्यूँ नरसिंह दुष्ट रह गये दगी ॥४॥
कध बिठा रघुनन्दन लाये दिये कई दुष्ट सुलाय, रक्त मेदिनी रगी ॥५॥
दर्जी नाथूराम के लायक सहायक रहियो वीर बहुत आ गई तगी ॥६॥

(१४)

राग—श्याम कल्याण

सुने हम सकट मोचन वीर ॥ टेर ॥
कपि सुग्रीव को सुखिया कीनो मित्र बना रघुवीर ॥ १ ॥
सिधु लांघ सिया सुध लाये ऐसो गुण गम्भीर ॥ २ ॥
केशरी वश अश शिवजी का अजनी कोष समीर ॥ ३ ॥
सुर तेतीस की बध छुड़ाई मारे असुर रण धीर ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे बेगि हरो भव पीर ॥ ५ ॥

(१५)

तर्ज—सभा मे मेरा

वलि बजरंग तेरा बाहुबल अपरंपार ॥ टेर ॥
धार के सरूप बड़े, गिरि सिखा जाय चढ़े।
पवन के मन्त्र पढ़ सागर उलाँघ उड़े ॥
पूछे लक द्वार जड़े, लकनी से जाय अड़े।
छिन में डारी पछार ॥ १ ॥

सिय को सदेश दिया, बाग को विध्वस किया।
असुरों का फोड़ हिया, रण में सुजस लिया ॥
धन्य मात दूध पिया प्रभू बल चिर जिया।
आये है लका जार ॥ २ ॥

राम के पायक बने, सेना के नायक बने।
भक्तों के लायक बने, आनन्द दायक बने ॥
गुणों के गाहक बने, लखन सहायक बने।
लाये द्रोणागिरि धार ॥ ३ ॥

तोपे नायू सुचिकार, बार बार बलिहार।
लेके कपि अवतार, किये बहु उपकार ॥
सुन मेरी यह पुकार, भव नद से उबार।
करुणा भवन उदार ॥ ४ ॥

(१६)

अथ.—रामचरित्र तिथी—पत्र बारहमासा : रगत ख्याल की

श्रीराम निरजन देवन दुख भजन रघुकुल अवतरे ॥ टेर ॥
वन्दौ मगसर शुक्ला पांचे राम जानकी ब्याया।
वन यात्रा मे बिछुड़ी सीता सुध हित कपि पठाया।
वर्ष चौदहवें इस पख महिने बजरग लक सिधाया।
लंकनि मार एकादशी निशि हेरी श्री जगमाया।
भेद विभीषण दिये बारस को, सीता से बतलाय।
आय करे खल मद गंजन ॥ १ ॥

वन के तेरहवें बरस पोष में सूपनखां भई नकटी।
चौदह सहस्र निशाचर खपिया खरदूषण से विकटी।
वर्ष चौदहवे पो सुद आठें सेना चाली भृकटी।

दल पहुंचे त्रिकूट गिरी पालक चढे सुबेल।
आये विभीषण शरण, राम सर सागर सके न झेल।
राय दी सेतु सर्जन ।। २ ।।
माघ महीने पूज रामेश्वर सेतु राम बँधाई।
नाम प्रताप नीलनल कर से जलधी सिला तिराई।
पद्म अठारह बानर सेना लंका में पहुंचाई।
दशकध को समझावने भेजे बाली पूत।
रावण सुत को मार दी शिक्षा, ना मानि खल ऊत।
युद्ध जारी बल पु जन ।। ३ ।।
केकई सवाल के तेरहवे साल के फाल्गुण के माँही।
रावण मृग मारीच भेज हरी सीता जंग के तांई।
खोजत सियावर कुमुद मार गये सिवरी त्यार हित जाई।
खल अश्लील बकै सती को शीघ्र गये फल लाग।
वर्ष चौदहवें मृकट खिलाये असुरों को रण फाग,
राग रंग बिखरै रंजन ।। ४ ।।
त्रेता युग आनन्द सम्वत् सुद नोमी चेत भये राम।
किये पन्दरवें चेती दशहरे राज छोड़ बन ग्राम।
मार विराध करे पूनम को चित्रकूट विश्राम।
अत्री सुतीक्षण अगस्त घर सुखी रहे बारा साल।
मिले जटायु बाद विघ्न भये कपि असुरों के काल।
देव गति अनपच व्यजन ।। ५ ।।
धन बैशाख सुद नोमी जन्मी सिया रावण की मौत।
वर्ष तेरहवें बैशाखा बँधी हरी सुग्रीव के नौत।
प्रीत चीतकर लका रवि सुत गये ज्यों दसकंध सोत।
मल्ल युद्ध कर पटकियो आई रावण को रीस।
नाग फांस डालत ही उछल्यो पड़े प्रभु चरण कपीस।
अग फेर्‌यो कर कजन ।। ६ ।।
कहे राम सुग्रीव जेठ में देख सूरज सितलाई।
नित वसन्त ऋतु रखे लक में रावण तप प्रभुताई।
बाली बरबल रख्यो काख में भूल भिड़ यो कपिराई।
शिव पूजन फल मोहि मिल्यो जीवत मित्र गयो आय।
भुजंग फांस में फस जाता तो कैसी मिलती हाय,
लगातो रघु कुल अजन ।। ७ ।।
फेर फेरि हरि तब रिपुमारो पर आसाढ़ में बाल।
करोड़ गुणो बदलो दियो पाछो सच्ची प्रीत सम्हाल।
रावण इन्द्रजीत स्यूं इकलो ना भिड़ियो कपि पाल।
दोऊ भट साधारण नहीं शिव शक्ति वरदान।

नर के हाथ मृत्यु लिखी विधना मार सकै नहीं आन।
जान जे जीवन चिरजन ॥ ८ ॥
सावण तीज रमावण रावण सजा रहे रणवास।
चहूं चन्द्र मुखी चूमै मुख दश बीस चकोर विलास।
बीसों कर सुन्दर हिये भूषण नृत गायन करे रास।
भोगी घमडी देखकर प्रभु मार्यो तक बाण।
दस सिर टोप मुकुट पड़े धरनी कोप कचेड़ी आन,
बुला भट्ट किये दृग खंजन ॥ ९ ॥
भादो नमै मंत्री लकेश्वर फोजां बानर मारी।
दिये हुक्म सुद पांचे परमुख सदल मरे लड़ भारी।
मेघनाद अहि फांस रात को डारत गरुड़ निवारी।
धूमराक्ष मर्यो दूज वज्र छठ रावण दुष्ट मर्यो तीज।
चोथ अकम्प हस्त पचमी कपि सेना से छीज।
आठे कुम्भकरण समजन ॥१०॥
पूनम कुम्भकरण मरे लगते क्वार इके अति क्याय।
दूज त्रिसरा तीज देवान्तक चौथ नरान्तक खाय।
पांचें महोदर छठ महा सर सातें लखन मुरछाय।
आठें सजीवन ला जली रिपु किये निर्मूल।
सुद नौमी देवी चढै सध्या कटे दश मस्तक फूल।
उछव दशहरे सुर रजन ॥ ११ ॥
राज विभीषण दे रघुवर कार्तिक सिया ले चाले।
भारद्वाज घर पांचें ने हनुमत भेजे उताले।
होत सदेश भरत मिले छठ हरि चित्रकूट प्रणपाले।
सातें अवध पति हो किये सिय बल प्रकट अनूप।
मरा महीरावण दिए धन तेरस चवदस लक्ष्मी रूप,
पूजा करि जय धुनि गु जन ॥ १२ ॥
चौदह वर्ष काती में बीते अधिक मास के कारण।
कच्ची दिवाली दधि कन्या दिन पको विष्णु वरधारण।
जम दीपक भये विघ्न हरण को अंतरामी द्रोहजारन।
सवत उगणीसौ निब्बे नन्दलाल धर ध्यान।
दरजी नाथूराम चरित्र कथे बारह मास डिडवान,
करो कवि त्रुटि भजन ॥ १३ ॥

(१७)

गजल-कव्वाली
तर्ज—मुकद्दर हो तो ऐसा हो

वड़े बजरंग बली बांके वीर नर हो तो ऐसा हो ॥ टेर ॥
मिला सुग्रीव को रघुवर मरा बाली अभय कीना।
सील सज्जन के संकट में, सीर नर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
असुर हर हिन्द की रानी, ले गया द्वीप लका में।
लांघ सिन्धु खबर आनी, नीर तर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
लगा जब बाण लक्ष्मण के धार कर द्रोण गिरि लाये।
भरत सर भी सहा अग पै धीर धर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
बन्धु मुर्छित हुआ लख के भये रघुनाथ भी आरत।
सजीवन ला दई उस दम पीर हर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
फेर अहिरावण को हत के मदद रघुवीर की कीन्हीं।
ज्यूं हीं जन नाथूदर्जी की भीर हर दो तो कैसा हो ॥ ५ ॥

(१८)

राग—घुमणी : चाल ख्याल की

बलि बजरग बाला गुण का उजियाला जग में छा रहा ॥ टेर ॥
मात अजनी करी निरजनी तात केशरी लाला।
वानर कुल को सुनर बनाये देवन का दु.ख टाला ॥ १ ॥
सिन्धु लांघ सिया सुधि लाये रावण का पुर जाला।
पेठ पताल हते अहिरावण रघुवर का पख पाला ॥ २ ॥
नॉही कहाये गिरिधर धर के द्रोणा गिरि विशाला।
पर दु ख हरन सहे सर निज तन महावीर कृपाला ॥ ३ ॥
विभीषण सुग्रीव अंगद के राज तिलक दिये भाला।
काम काल को जीत नीति से सच्चे दीन दयाला ॥ ४ ॥
लखन सियावर आये द्वारका गरुड़ चक्र मद गाला।
अर्जुन रथ के ध्वजा बीच बस कौरव सैन्य दकाला ॥ ५ ॥
अ गद नामदेव भये कलि में छींपो विट्ठल रटवाला।
ताके हित बन नन्दी चढ़ाये दिखलाये सुसराला ॥ ६ ॥
हरि सेवक का सेवक बनके ये कारण ज्यूं दिग्पाला।
ज्ञानवान जति हनुमानजी, अभिमान तज डाला ॥ ७ ॥
दर्जी नाथू राम नाम की हरदम जपते माला।
अगम सृष्टि मे ब्रह्मा होके मोय रखियो दरपाला ॥ ८ ॥

(१९)

लावणी रगत छोटी

लिखे रामायण में धर्म सेवक का झीना, अपने स्वामी हित पिता पुत्र रण कीना ।।टेर।।
अहिरावण छल से रघुवर को हर लीना, उस खलपुर के दरपाल मकड़धज रीना ।। १ ।।
मालूम होते गये हनुमान बल भीना अटकत ही पूछे कुण तूं असुर अधीना ।। २ ।।
जब जन्म हाल सब मकरी सुत कह दीना, बिन लड़े हटूं नहिं तुम्हरा तात पसीना ।। ३ ।।
हँस कहे बजरंग तूं लिया दस महीना कैसे समता करे मेरी कोट नवीना ।। ४ ।।
खिज भने कोट जूं काटे जनक तन सीना, रवि तुल हो पन्द्रहवें दिन शशि कुलीना ।।५।।
भिड़े कोप परस्पर भारत वीर नगीना, मधुकैटभ हरि ज्यूं शिव गणपत परवीना ।। ६ ।।
फिर कपि शिशु गये बांध जा दुष्ट मलीना, रिपु दल हत निज सुत तख्त नसीना ।। ७ ।।
कह दर्जी नाथू राम भक्त धन जीना, अब करो भारत देश वली स्वाधीना ।। ८ ।।

(२०)

राग—माड

वो छवि कब दिखलाओगे रे कपि अवध नाथ की ।। टेर ।।

केश मुकट भेष मुनि सांवल गात की ।
सारंग धनुष वाण धर विशाल हाथ की ।। १ ।।

पद पदम मे सेवकाई गोरे भ्रात की ।
अखण्ड शोभा रहत है सजीले साथ की ।। २ ।।

कीरत ज्यांकी गात पावन होय पातकी ।
मिथ्या होवन बात वो कवियों के गाथ की ।। ३ ।।

निसि दिन आती याद मुकुट सरिस माथ की ।
दर्जी नाथूराम कला हरि साक्षात की ।। ४ ।।

(२१)

चाल—थारी मुग्मा हन्दी डावी समदण

थारे अब के हो सो शिशु देवकी मोकूं दे दीज्यो ।
बड़ो हुयों से बाई थारो पाछो ले लीज्यो ।। टेर ।।

गगन गिराका कंस को धड़का, होगा काल आठवां लड़का ।
गुप्त रीति से जीजाजी कर म्हारे घर मेलीज्यो ।। १ ।।

उसी रात सन्तान हो मेरे सो भगवाज्यो द्वारे तेरे।
दुष्ट राज को त्याग देय सत्याग्रह झेलीज्यो ॥ २ ॥
मारा कंस छः बालक तेरा मै लखस्यू एक बलि गये मेरा।
बदले बचास्यू रिपु असुर को निर्भय खेलीज्यो ॥ ३ ॥
दर्जी नाथू कहे यशोदा सुरति सार यही परबोधा,
देश हिथारथ आपत हो सो तन पर सह लीज्यो ॥ ४ ॥

(२२)

लावणी रगत ज्यान की

शेर—ओम नमो अद्वीत आतम ज्ञान घन दिव्य खम्ब है,
अल्पज्ञ जीव सर्वज्ञ शिव शक्ति मयी अवलम्ब है।
ना नर नारी नपुन्शक विभूति मयी बिम्ब है,
चितरे भुजाणं आप कल्पित अपने अग जगदम्ब है।

झड़—सुन ग्याता माता ओटी आग अवधूती,
सरजी सपना सम खाख की विश्व विभूती।

महामाय नया नित चित्र बनावे जी,
दृढ़ भाव करवाय असत्य को सत्य जनावे जी ॥ टेर ॥
नव दुर्गा भई सृष्टि सवत के आदि,
मानी उत्तम नव रात हुई आबादी।
महामाय भक्त जप यज्ञ करावे जी,
खुश होकर पाढाय मनोरथ सकल पुरावेजी।
सुद चैती नौरता ज्यू ही प्रगट मरजादी,
आसोजी नौरता थरपे शास्त्रवादी।
महामाय भक्त जब तुमकुं ध्यावे जी,
तेरी कृपा हो सजन पदारथ चारो पावे जी।

शेर—माघ और आसाढ़ महीने गुप्त शुभ नव रातरी,
अवतार दासों के लिए करी रक्षा धातरी।
काल दारुण महा मोहा निस पूजीजे मातरी,
और भी कई रंन रटते सफल सिद्धि जातरी ॥

चौपाई—देवों से देवी की उच्च कोटी, दिग्पति पूजे समझ के मोटी।
परतक जननी ढोटाढोटी, दुःख से जनमे कपूत परोटी ॥

झड़—तू सब सृष्टि की रचने वाली अम्बा,
बिना पति पत्नि रचे कैसा बड़ा अचम्भा।

महामाय गति कोई लखियन जावेजी,
दृढ़ भाव करवाय असत्य को सत्य जनावे जी ॥ १ ॥

एक अक्षय पद चेतन सर्वा धारी का,
इसलिए एक पति व्रत धर्म नारी का।
महामाय लोक हित रीति चलावे जी,
सकलप परखण परण लगी खुद सती कवावेजी।
एक समय हास्य रस मन गये मदनारी का,
काली कहकर किये ठट्ठा निज प्यारी का।
महामाय रूठ गई जप करवाने जी,
सुवरण ज्यूँ तप कुनण हो अग लागी तपाने जी।

शेर—चण्ड, मुण्ड निशुम्भ शुम्भ खल उस समय योद्धा भये।
देवताओं का राज हर के विघ्न करते नित नये॥
घमण्डी वे भगवती का रूप लख तेजोमये।
भस्मासुर ज्यूँ होय मोहित दुष्ट रण जीतन गये।

चौपाई—देवी क्रोध का सिंह बनाया, हो असवार निज रची माया।
नव कोटि दुर्गा धरी काया, नाना करों में शस्त्र समाया॥

झड़—महा बारुनी होके भिड़ मारे असुराँने
आर्यो की ध्वजा लगी वहाँ फरकाने।

महामाय तेरा यश सुर नर गावे जी
दृढ़ भाव करवाय असत्य को सत्य जनावेजी ॥२॥

द्वापुर प्रगटी देवकी स्वेत जुग स्वामी,
नन्दपुर पट्टन ग्राम भया सरनामी।
महामाय अम्बिका नाम धरायाजी,
खुश हो नृप को चक्रवर्त्ति का पद बगसाया जी।
त्रेता पदमावती लख करी सिया गुलामी,
बर दीना नृप राघव को समझ मुलामी।
महामाय जमी शिवपुर ये कहाया जी,
तव किरपा से अटल राज रघुवशी पाया जी।

शेर—हरी साधन करी मेटन कंस कौरव की बदी,
देवकी की कूख प्रगटी नाम पायो हरसदी।
रुक्मणी पूजन कियो कृष्ण वर पाये जदी,
विंध्याचल बसी फिर हतं शुम्भ निशुम्भादि मदी।

चौपाई—भैंसा साह की गौ बन जाती, चर केरों के झूण्ड में आती।
देवी नित पय पी सुख पाती, देख ग्वाल की धड़की छाती।।

झड़—भई मालम सेठ कूं देवी का लिया सरणा।
श्री पाढ़ा प्रगटी भूमि फाड़ करि करुणा।।
महामाय पूर्व पट्टण बसवावें जी।
दृढ़ भाव करवाय असत्य को सत्य जनावे जी।। ३।।

कलयुग में माता विक्रम कूं वर दीना।
दिल्ली मारग पर चामुण्डा मठ कीना।।
महामाय अचल सरधाम पुरानाजी।
दोऊ बीच आ डीडु बसाया पुर डिडवाना जी।।
फिर नौ सौ एक में सिखर चूंतरा चीना।।
लख बखतसिंह बनवाया मढ सगीना।
महामाय दोय सौ रुपया सालाना जी।।
बांधा भोग हित पुण्यवान् नृप भक्त सुजाना जी।

शेर—नौ सौ इगतालीस में ही बना मन्दिर ग्राम में।
विजय हाकिम की करा पुरजन किये आराम में।।
फौज कालां की दलन को प्रगटी जब सामने।
नगर जन जैं जैं करी धार्यो हिये तव नाम ने।।

चौपाई—एक समे गई रकम चुराई, सेवगणी अग छाया आई।
अंधे चोर कर दिए पकड़ाई, जब हाकिम मानी सकलाई।।

झड़—गुरु नन्दलालजी द्विजवर की भई मरजी
अम्बा का चरित्र कथ गाया नाथू दर्जी।
महामाय तेरी नित भक्ति चावे जी
दृढ़ भाव करवाय असत्य को सत्य जनावे जी।। ४।।

अथ- हनुमानाष्टक—हरीगीत छंद

ओउम् नमो अज गुरु पद रज मुकुर निज मन सूधरन।
विघनकष्टक शीघ्र नष्टक बलि अष्टक शुभ वरन॥
चौबीस तत् जगदीश चित पच्चीसवां कपि आभरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरन॥ १॥
ईश अशम कोश बशम बान हसम अवतरन।
हिरण्यगर्भा जैसी परभा अजनि जरभा सुर करन॥
नाशकेत वराह सेत ज्यूं इन्द्र हेत यग खलु लरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरन॥ २॥
वाचे काछे साचे लाछे राचे आछे प्रभु चरन।
कपित दत्त समज्ञानी तत् सत असत् हस ज्यूं भिन्न करन॥
कुमार ज्यूं श्रुतिसार हिरदे धार वृषभ ज्यूं आचरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरन॥३॥
बलशींव जिमि हयग्रीव रघु सुग्रीव मिल वा दुख हरन।
सिये अरि फल परी लांघे सरी हरी ज्यू करि तरन॥
अशोक रक्षय असुर अक्षय आदि क्षय किये फल चरण।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरन॥ ४॥
लक जाल ले काल गाल कराल ज्यू त्रिनेतरन।
नव पंठे मछ कछ भांति गछ करे नारदी लछ खल मरण।
परे लखन धर मोहनी धनन्तर वी अमिजर गिरधरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरन॥ ५॥
ब्यात रावन जाल ढावन भाल बावन से बरन।
जस जान पृथु समान दिए हनुमान को मग फट धरण॥
लिये बली बजरग पच अंग नरसिंग ज्यूं निश्चर क्षरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूति शरन॥ ६॥
रघुनन्द बिठला खन्ध आसुरवृन्द बन्धन नीवरन।
सग्राम जीत तमाम रिपु परशुराम राघव अनुसरण॥
ध्रुव रक्षण ज्यूं सुलक्षण करे विभीषण पग परन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरण॥ ७॥
तपो धन बुध नरनारायण ब्यास ज्यूं गुण उच्चरण।
सख फाल्गुन धुन धजा धुन गर्ज केरु सुत लागे डरन॥
गोपाल तुल कलिकाल कल्की ज्वाल हो म्लेछां जरन।
शुचिकार नाथू निहार दीन उदार मारूती शरण॥ ८॥



"रंग पिचकारी"

की

समीक्षा

साहित्यकार का दायित्व है कि वह अपने व्यक्तित्व एव कृतित्व द्वारा जीवन के शाश्वत मूल्यो की रचना करे, सामाजिक परिस्थिति मे उनका समायोजन करे, समय-समय पर उनका परिमार्जन एव पुष्टि करे तथा आने वाली पीढी के लिये साहित्यिक, सास्कृतिक, अध्यात्मिक एव धार्मिक पृष्ठभूमि का मार्ग प्रशस्त करे। वह युग दृष्टा होता है। वह श्रीमद्भागवत का "कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भू" है, श्रीमद्भगवद्गीता का "मुनीनामप्यह् व्यासः कवीनामुशना कविः" है। इस दृष्टि से कवि नाथूराम जी ऐसे साहित्यकार है जिन्होने अपने युग की जन रुचि को परखा, सम्यग्बोध दिया और परिमार्जित किया।

"रग पिचकारी" ऐसी ही पुस्तक है जो सन् १९४६ ईस्वी मे प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक सरल भाषा और उच्च-स्तरीय विचारो से ओतप्रोत है। बिहारी के शब्दो मे यह देखन मे छोटी लगे, घाव करे गम्भीर।" इसके लिखने का उद्देश्य बडा लोकोपकारी है। होली के त्योहार पर लोग अश्लील बोलते है, यह कवि को सहन कैसे हो सकता था ? इस पावन और मस्ती भरे त्योहार की यह विकृति कवि को पसन्द न आई। जैसे रोगी आहार का वमन कर देता है, उसी भाँति समाज के हल्के स्तर के लोग चित्त के उद्गार अश्लील शब्दो द्वारा प्रकट करते है।

"कामी कायर अश्लील भाषे ज्यूँ करे रोगी आहार वमन"। कुछ अत्यन्त हीन स्तर के मूढ और अनपढ लोगो के सिर और पीठ पर कामदेव बुरी तरह सवार हो जाता है "फागुन मे मदन मगर चढिया"। ऐसे लोग सभ्यता का ध्यान न रखते हुए गधे पर चढते है, मुँह काला कर लेते है, भंग पीते है, धूल उडाते है और गन्दे शब्द बोलते है—

बैठ गये मुख काला करके काम का बाण हिये गड़िया।
अकल भग भंगेरे होकर फाटा बकत खाक उड़िया॥
होली त्योहार एकता होवण नेह बढे इतर सुगन्ध बढिया॥

होली का त्योहार स्नेह और प्रेम बढाने का है, इत्र गुलाल से मित्रो की आवभगत करने का है, परन्तु उसके स्थान पर विकृति देखकर कविवर को दुख हुआ। उन्होने लोगो को समझाया कि अच्छे भजन गाओ; फिर उन्होने स्वय ने देखा कि अच्छे गीतो का अभाव है; तब कवि ने इस 'रग पिचकारी" की रचना की।

सभी गायन होली की विभिन्न राग रागिनियो मे दिये गए है। कुछ गायन तो इतने लोकप्रिय हुए है कि जिस मोहल्ले मे भी जाइए, इन्ही को गाया जाता हुआ पाएंगे। इनके बिना मन्दिरो के ब्रह्मोत्सव फीके रहेगे।

(१)

तर्ज—यमुना तट श्याम खेले होरी, यमुना तट

होरी खेले गणपत सूंडाला, होरी खेले ॥ टेर ॥
भेष वसन्ती दिव्य आभूषण, गल सोहे मोतियन माला ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक, आए हरख सब दिक्पाला ॥ २ ॥
अतर अबीर गुलाल उड़ावे, चंवर ढुलावे रिध सिध बाला ॥ ३ ॥
नारद शारद गन्धर्व किन्नर, गाये बजाए शुभ सुरताला ॥ ४ ॥
मोद से मोदक फगवा बांटे, मुदित भवानी लख लाला ॥ ५ ॥
दर्जी नाथू नमे पद पकज, दो भक्ति वर दूंदाला ॥ ६ ॥

सर्वप्रथम गणेशजी को ही मनाया जाता है, अत. कविवर ने प्रथा का निर्वाह करते हुए गणेश वन्दना ही की है और वह भी होरी की राग मे। शब्द चयन, भाव, भाषा, शैली रस-निष्पत्ति आदि की कसौटी से गायन बहुत अच्छा बन पडा है। फाल्गुन मास मे जितने जागरण, सत्संग, कीर्तन आदि होते हैं, उन सब में इसी गायन से शुरुआत की जाती है। चग पर यह राग अच्छी फबती है और एक समा सा बंध जाता है।

(२)

ऋतु आई रे श्याम वसन्त रमण, ऋतु आई रे।
जति सति परखन रति पति आए, तक तक मारे बाण सुमन ॥
धर्म वीर सहन करे अंग में, कर मन विषय इन्द्री दमन।
कामी कायर अश्लील भाषे, ज्यू करे रोगी आहार वमन ॥

उपरोक्त गायन इतना लोकप्रिय नही हो पाया है, जितना होना चाहिए। कवि का आशय गहन है जिसको जन-समाज हृदयगम नही कर सका। वसन्त ऋतु मे रति-पति (कामदेव) ने आकर निशाना लगा लगा कर अपने पुष्पो के बाण छोड़े। उसका उद्देश्य इस बात की परीक्षा लेने का था कि कौन स्त्री या पुरुष सयमी है। केवल जितेन्द्रिय लोग ही अपने मन को विषय वासनाओं से परांमुख कर सकते है। कामी और कायर व्यक्ति अश्लील बोलते है, जैसे किसी रोगी को अपच हो जाने से वह अपना आहार वमन कर देता है। जो व्यक्ति मन वचन कर्म से सयमी होते है उनको ही वसन्त ऋतु का श्रेष्ठ त्यौहार होली मनाने का अधिकार है।

(३)

फागुन में मदन मगर चढिया, फागुन में ।। टेर ।।
पाँच विषय सर चाप चलावे, नर नारिन के रंग मढ़िया ।। १ ।।
राग रग करे जति सति सूरा, धूल उड़ावे मूढ अनपढ़िया ।। २ ।।
बैठ गधे मुख काला करके, काम का बाण हिए गड़िया ।। ३ ।।
अकल भंग भंगेरे होकर, फाटा बकत खाक उड़िया ।। ४ ।।
होली त्यौहार एकता होवण, नेह बढे इतर सुगन्ध बढ़िया ।।५।।
दरजी नाथूराम कृष्ण यश, गाय तरो भव की नदिया ।। ६ ।।

कविवर ने प्रस्तुत पुस्तक लिखने का उद्देश्य इस गायन मे वर्णित किया है। फागुन मे मूढ और अनपढ़ व्यक्तियो के सिर और पीठ पर कामदेव बुरी तरह सवार हो जाता है। वे गधे पर चढते है, मुँह काला करते है, और भंग पी कर अश्लील बोलते है। वास्तव मे होली एक राष्ट्रीय त्योहार है, जिसमे समस्त वर्णो व समाजो के लोग प्रेम और एकता बढावे। इसके विपरीत इस त्यौहार को विकृत कर दिया गया है। इसी उद्देश्य को लेकर कविवर ने इस पुस्तक के गीत भक्ति भावना लिए हुए होली की विभिन्न राग रागिनियों मे लिखे है।

(४)

होरी खेले श्याम कुंजन वन में, होरी खेले ।। टेर ।।
ऋतु वसन्त ले रतिपति आए गोपियां उमंग रही मन में ।। १ ।।
जेते सखियां तेते ही मोहन, रूप धरे है मदन रण में ।। २ ।।
लाल गुलाल उड़े आँधी ज्यूं, बिजली वाम श्याम घन में ।। ३ ।।
घरर घरर डफ घुरे मघवा ज्यूं, झरर झरर पिचकारी तन में ।।४।।
राचे रग नाचे पछी ज्यूं गाना नई नई रागन में ।। ५ ।।
हास विलास परस्पर करते लखि आनन्द भयो सुरगन में ।। ६ ।।
दरजी नाथूराम पियारे, दर्शन से दुख जाय छिन में ।। ७ ।।

यह गायन अत्यन्त लोकप्रिय है। साहित्यिक दृष्टि से मूल्याकन किया जाय तो यह सूर के पदो के समकक्ष उतरता है। शब्द चयन बडा सार्थक है, कोई शब्द निरर्थक नही है, भाषा सबल और दोषो से रहित है। भाव गाम्भीर्य की दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि साक्षात् भगवान कृष्ण ही होरी खेल रहे हो।

(५)

राधा कृष्ण रमेश फाग के सुघड़ खिलाड़ी है, छबी अति प्यारी है।
इतसे आए नन्द कुंवर जी उत वृषभान दुलारी है।
सखा सखी लिए संग मण्डली न्यारी न्यारी है।। १ ।।

मृगमद केसर घोल सुरग के माट भरे अति भारी है।
इतर अबीर गुलाब कुमकुमा चले पिचकारी है॥ २॥
गोपिन सहित श्री राधेजी की भीजी जरकस वारी है।
प्रभु भीजे नहीं लेश ओढ ली कम्बल कारी है॥ ३॥
राधा सेन करी सखियन को आई दौड़ के सारी है।
पकड़ कृष्ण को छीन कम्बल ओढा दई सारी है॥ ४॥
मुख के मली गुलाल लाल के गाल पे गुलचा मारी है।
दरजी नाथूराम कृष्णपद को बलिहारी है॥ ५॥

कविवर का यह सवश्रेष्ठ गायन है जो फागुन मास मे आबालबृद्धनारी के कण्ठों से बरबस फूट पडता है। इसके बिना किसी भी मन्दिर का फाग, गैर या उत्सव फीका रहता है। एक व्यक्ति गायन आगे आगे बोलता जाता है और पीछे से चग की थाप पर सब उसको दुहराते हैं तो एक अद्‌भुत समा सा बँध जाता है। भगवान के होरी खेलने का बडा मनोग्राही वर्णन है जो सबको अच्छा लगता है। ब्रज मण्डल में होरी के जो दृश्य देखने को मिलते हैं, वे दृश्य इस गायन मे हैं। सखियाँ भगवान कृष्ण को साडी पहना देती है और उनके मुख पर गुलाल मलती है।

(६)

सखि जानकि वल्लभ आज खेलते फाग रंगीला है, छल छबीला है॥ टेर॥

पूर्व पद भगवान कृष्ण के होरी खेलने का वर्णन है तो यह पद भगवान राम की होरी के सम्बन्ध मे है। श्रीकृष्ण भगवान नटवर नागर लीला पुरुषोत्तम थे जबकि भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, अत भगवान कृष्ण की होरी का वर्णन ही ज्यादातर गाया जाता है। वैसे इस पद की निम्न पक्तियाँ भी होरी की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत करती हैं—

शुक्ल श्याम सुन्दर ये सुषमा सुरज शशि फबीला है।
मदन रूप या नर नारायण नूर नवीला है॥
गुण गम्भीर बलवीर तीर धनु धारे समर ढबीला है।
मन्द हसन्त वसन्त ऋतु के बड़े उछबीला है॥

(७)

होरी खेलन आई महाराज मोहन तेरे संग में॥ टेर॥
गवरी गणेश्वर पूज महेश्वर, बेसर वसन्ती साज, केशरसो अग में॥ १॥
अबीर गुलाला परस्पर डाला, लाला जाइयो ना भाज रती के जंग में॥ २॥
जतीपण साधा जभी तक राधा, आधा अगी भरि लाज मिली रही अग में॥३॥
सो पिया प्यारी मदद हमारी, थारी खबर पड़ेगी आज रंगीजो नेहरंग में॥ ४॥
नाथू दर्जी करता है अर्जी, मरजी करो ब्रजराज न्हावत गुण गग में॥ ५॥

भगवान कृष्ण की होरी का कितना सागोपाग वर्णन है। कविवर राग रागिनियों के अच्छे ज्ञाता थे और राग गर्वी मे प्रस्तुत गायन रचकर उन्होने न केवल संगीत प्रेमियो का बल्कि सारे रसज्ञो का महान उपकार किया है। राधा की ओर से एक सखी भगवान कृष्ण से होली खेलने आई है। सखी का कथन एक रसमय झाँकी चित्रित करता है।

(८)

ये नौ गायन एक ही तर्ज के है और होली सम्बन्धी गीतो मे इनका स्थान बहुत ऊँचा है। इनको गाने के लिए कठ की लोच, उतार-चढ़ाव और सबल आवाज होनी चाहिये। साधारण गवैया इनको प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत करने मे नितान्त असमर्थ रहेगा। भक्त कवि नाथूरामजी ने अपने आराध्य कृष्ण की विविध लीलाओ का वर्णन करते हुए ये पद बनाए है। इनमे श्रृंगार रस की प्रधानता है। श्रृ गार रस भक्ति योग मे बडी उदात्त भावनाओ की सृष्टि करता है—यह वास्तव में रसराज है। प्रत्येक गायन की टेर निम्नलिखित अनुसार है।

नं०—८ साँवरा जी से रम रस होरी, करूँगी सुद्ध बुद्धि मोरी ॥
नं०—९ साँवरा जी से करके यारी, कौन सुख पाया है नारी ॥
नं०—१० साँवरो होरी खेले अनोखी, देख जरे दाना दोखी ॥
नं०—११ साँवरा जी की बड़ी बदमाशी, प्रीति करे ज्याने देवे त्रासी ॥
नं०—१२ साँवरा म्हासूँ खेलत होरी, करत है अजब ठिठोली ॥
नं०—१३ खेले हरि हर सग होरी, रहे आनन्द रग ढोरी ॥
नं०—१४ साँवरा जी की अजब चालाकी, खेलते होरी बला की ॥
नं०—१५ साँवरा मै तो बाला कुवारी, डारो ना रग पिचकारी ॥
नं०—१६ साँवरा गाली दो लाखन में, लाज नहीं कछु आँखन में ॥

उपरोक्त नौ गीतो की टेर से ही स्पष्टतया परिलक्षित होता है कि सखी श्रीकृष्ण को होरी सम्बन्धी कई उपालम्भ, विनय, डाट-डपट, शिकायत, निमन्त्रण आदि देती है। वह श्रीकृष्ण की "बदमाशी", "चालाकी" आदि बतलाती हुई भी श्रीकृष्ण के साथ रस भरी होरी खेलने को लालायित है। भक्त कवि सूरदास ने भगवान कृष्ण को अपना सखा मानकर बाल लीला के सभी पद रचे है। उन्होने भगवान को सभी तरह की हल्की भारी बात कही है, उनको खरी खोटी सुनाई है। इसी प्रकार भक्त कवि नाथूरामजी ने भी इन पदो में सखियो के माध्यम से भगवान को सखा भाव से अनेक तरह की बाते कही है जो तुलसी की भाँति मर्यादा पालन करने वाला कवि नही कह सकता।

गायन न० ८ मे कवि की मान्यता है कि विवाहित पति, पत्नी सदा प्रेम करते ही रहते हैं, परन्तु परम स्नेही (भगवान कृष्ण) मिल जावे तो उनके साथ होरी खेलने का आनन्द ही निराला है।

परण्यो पिव चाहे जब मिल जाय, याते प्रीत रहे थोरी।
परम स्नेही मिले मुश्किल सों, हरदम लगी रहे लोरी ॥
लखे ज्यूँ चन्द्र चकोरी ॥

गायन नं० ९ मे सखी को भगवान से यही शिकायत है कि उनसे प्रीति बढाकर कोई सुखी नही हुआ। सीता जी ने भगवान के गले मे वरमाला डाली, परन्तु रावण द्वारा वे हरी गयी, अग्नि में शुद्ध की गयी तथा धोबी के कहने से वन में निकाली गई।

जनक सुता लुभकर रघुवर पे. गले वरमाला डारी ॥
रावण हरी जब तपाए अग्नि में, फिर वन माँहि निकारी ॥
रजक की सुन के गारी ॥

गायन नं० १० में शृंगार रस का अच्छा परिपाक हुआ है। सखी की दृष्टि मे साँवरा अनोखी होली खेलने में दक्ष है। वे बालजती हैं तो भी उन्होंने अपने योगबल से सखियो को सन्तुष्ट किया। वे मन ही मन मगन हो गई है जैसे गूंगा गुड़ का स्वाद अन्दर ही अन्दर महसूस करता है, उसे प्रकट करने मे सक्षम नही है।

बाल जती सम बख्तर सजिया, सखियों की मन पोखी।
गूंगा गुड़ खा मगन भई सब चीणा चिबले ज्यू बोखी ॥
रही रति पति देह ओखी ॥

गायन न० ११ मे सखी को भगवान के प्रति शिकायत है कि उनकी बड़ी बदमाशी है। उनसे जो प्रीति करता है, उसी को वे त्रास पहुँचाते है।

बलि पाताल कियो, नृग गिरगिट हरीचन्द नीच खवासी।
सीता सरीखी सतवन्ती को वन के मांय निकासी ॥
शरम नहीं आई जरा सी ॥

गायन न० १२ सयोग शृंगार की ऊँची स्थिति है। भगवान कृष्ण ने खोई हुई गेंद पाने के लिए सखी की चोली टटोली सखी वर्णन करती है कि बाल कृष्ण इतने भोले है कि एक गेंद खो गई तो दो मिल गई। इस वर्णन में कुछ लोगों को अश्लीलता की गन्ध आ सकती है और कृष्ण के चरित्र के विषय मे अट शट बातें बना सकते है।

गेंद की चोरी लगाय समाले, मेरी जरकस चोली।
एक गई दो पाई बतावे, कैसी मति है भोली ॥
लगत है प्यारी बोली ॥

परन्तु कविवर ने इस शका का समाधान किया है कि भगवान कृष्ण उस समय केवल सात वर्ष के थे, वे काम क्रीड़ा क्या जानते हैं।

सात बरस के श्याम सुन्दर क्या जाने काम किलोली।
दर्जी नाथूराम कृष्ण की लीला अजब अतोली ॥
प्रेम फगवा भरि झोली ॥

गायन न० १३ मे शृंगार मे हास्य की धारा बहती है। विष्णु अपने वाहन गरुड पर बैठ कर शिव के साथ होली खेलने गए। गरुड़ को देख कर शिव के बाघम्बर को कसने वाला सर्प डर के मारे भग गया। बाघम्बर नीचे खिसक गया और शिवजी नग्न ही होरी खेलते हुए नाच रहे है। यह दृश्य देखकर लक्ष्मी और पार्वती मुँह फेर कर हँसने लगी।

त्रिलोकी को नाथ गरुड़ चढ़ि साथ ले सिन्धु किशोरी।
आवत लखि शिव सामा धाये सहित अर्धंगा गोरी।।
मिले मग में शुभ ठौरी।।
लख खगपति कोपीन अहि खुल भगत जगी दृग होरी।
दुरे चन्द्र गाजे बांघम्बर ज्यों नरसिंह खम्भ फोरी।।
गए नन्दी डर दौरी।।
नगन मगन शिव नाचन लागे ताण्डव गति मति भोरी।
उमा कमला फाग अनोखा देख हँसी मुख मोरी।।
प्रभु डारे रंग रोरी।।

गायन न० १४ मे सखी भगवान कृष्ण की अजब चालाकी का वर्णन करती है कि होरी खेलते समय मेरी बाँह मरोड़ी गले का हार तोड़ा तथा गेंद के मिस चोली टटोली। तथापि जगत विदित है कि वे काम कला की बातें क्या जानते हैं।

बरजोरी कर बहियाँ मरोरी तोरी माल गला की।
कन्दुक के मिस चोली टटोली होली ना नेक सलाह की।।
भलाई क्या है भला की।।
जग कहे बालो भोलो बातां जाण ना काम कला की।
चोर जार सरदार तीर सी अखियाँ लीला लला की।।
पीर उर घाव घलाकी।।

गायन न० १५ में सखी कुँवारी है और वह श्रीकृष्ण के साथ होरी खेलना नहीं चाहती। साल भर मे ही वह तरुणी हो जायगी और विवाहित भी हो जायगी तब श्रीकृष्ण के साथ छक कर होली खेलेगी। इसलिये अभी वह रंग की पिचकारी डालने के लिये श्रीकृष्ण को मना करती है। वह श्रीकृष्ण को राय देती है कि तब तक ललिता, विशाखा, चन्द्रावल, राधिका आदि के साथ होली खेलो :—

मोसे नेह कर रमण चहो तो एक बरस दो टारी।
उस फागुन में छक जोबन में खूब करूँ रंगदारी।।
चाल संग कुंजबिहारी।।

गायन न० १६ इस शृंखला की अन्तिम कड़ी है सखी भगवान कृष्ण को उलाहना देती है कि अबीर गुलाल की मुट्ठी भर कर आँखो मे डाल देते हो, ऐसी चालाकी नहीं करनी चाहिए। तुम इतने छोटे हो कि काँख मे छिप सकते हो।

घालो हाथ गात रूप को रास पको साखन में।
छोटे छैल छबीला छोना छिप जाओ काखन में।।
कहाँ तेरी अभिलाखन मे।।

(१७)

सुन्दर राधा माधव से खेले होरी है।
संग में गोपी ग्वालों की टोली है।। टेर।।

गाली की राग मे यह सुन्दर कृति है। होली खेलने का बड़ा सटीक वर्णन है। बाल कृष्ण को सखियो ने साडी पहना कर बालिका का रूप दे दिया। इसी प्रकार सारे ग्वाल बालो को भी बालिकाओ की पोशाक पहना दी। सारी सखियाँ मर्दाना वेश धारण करके सखा बन गये। बाल लीला का बहुत अच्छा वर्णन बन पड़ा है।

श्याम कू श्यामा प्यारी बना सिणगारी गेणा गगरा भारी,
सारी गुलक्यारी जरकस चोली है ॥
गोप बने सब गोपी लज्जा लोपी सखियाँ सखा बन ओपी,
करते आपस में हास्य ठिठोली है ॥

गायन न० १८, १९, २० "रंग पिचकारी" की विषय वस्तु से सम्बन्धित नही है ये फुटकर विषयो पर आधारित है।

गायन न० १८ मे जोधपुर के तत्कालीन महाराजा श्री उम्मेदसिंह जी की प्रशस्ति है। प्रजापालक राजा ईश्वर का ही अश होता है, यह प्राचीन मान्यता है। महाराजा श्री उम्मेदसिंह जी वास्तव मे प्रशसा के पात्र थे। सवत् १९९६ के दुर्भिक्ष मे उन्होने जगह जगह नहरे और सडकें बनवाई, ताकि गरीबो को रोजगार मिले। बाहर से पशुओ का चारा मँगाया और सस्ते भाव में बिकवाया। ऐसे प्रजावत्सल राजा के गुण गाना कविवर को अभीष्ठ था।

कैलशालो के मांही गरीबां तांई अम्बरीष की नांई,
खोले खजाना कुबेर भण्डारी है ॥
सड़कें अच्छी जमवाई तलैयां खुदवाई नहरें बणाई पानी,
आवन जन सुखकारी है ॥
गो पालक कहलाए चारा मँगाए सस्ते भाव बिकाए,
जिससे जस छायो जग में भारी है ॥

भक्त कवि नाथूराम जी भगवान को दर्शन देने के लिए विनय करते है :—

हरीजी दर्शन दो, दर्शन दो क्यूँ नांय साँवरा काँई थारी मरजी रे ॥ टेर ॥

गाली की राग मे भगवान से प्रार्थना की गई है कि दर्शन दो। क्या राधा ने दर्शन देने से मना किया है ?

खुद कर घूघट परदे बैठे क्या श्री राधा बरजी रे।
क्या मुझ पातक की घृणा के धन की हरजी रे ॥

कवि नाथूरामजी सखा कृष्ण को और किन शब्दो मे अपील कर सकते है ?

(२०)

बन गई राधे थानेदार, सखियाँ सजी सिपाही लार ॥ टेर ॥
असल बनाती वर्दी राती दरसातो बांको सिरदार ॥ १ ॥
कटी तटा कस कमर पटा चपड़ास छुटा कर में तलवार ॥ २ ॥

आनन्द धाम लिए पकड़ श्याम जसुमती वाम उर भई लाचार ॥ ३ ॥
कहे नन्दलार मेरा कुमार क्या किया विगाड़ पकड़ा सिरकार ॥ ४ ॥
कहे चपरासी ये वृजवासी बदमाशी या करी अपार ॥ ५ ॥
जसुमति मात दी रिश्वत हाथ, नहीं मानी बात कीन्हों तकरार ॥ ६ ॥
कृष्ण पकड़ ले चली अकड़ कुन्जन के निकट लाई छल धार ॥ ७ ॥
कहे नाथूराम श्रीराधेश्याम सारो जो काम शुभ दृष्टि निहार ॥ ८ ॥

यह इस पुस्तक का अन्तिम गायन है। सूर के वाल लीला वर्णन की भांति कवि नाथूराम जी ने भी इस पद में कृष्ण राधा और सखियों के एक खेल का वर्णन किया है। भगवान कृष्ण से अधिकाधिक सामीप्य प्राप्त करने के लिए राधा थानेदार बनती है, सखियां सिपाही बनती है और कृष्ण को पकड़ कर कुंज मे ले जाती है जहाँ उनके साथ बातचीत, मन बहलाव तथा विविध वाल-क्रीड़ाएं करती है। व्यंजना एव अलकार छन्द की दृष्टि से यह पद बेजोड़ है।



रंग पिचकारी

(१)

तर्ज—जमुना तट श्याम खेले होरी जमुना तट

होरी खेले गणपत सूँडाला होरी खेले ॥ टेर ॥
भेष वसन्ती दिव्य आभूषण गल सोहे मोतियन माला ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक आये हरख सब दिक् पाला ॥ २ ॥
अतर अबीर गुलाल उड़ावे चँवर ढुलावे रिध सिध बाला ॥३॥
नारद सारद गन्धर्व किन्नर गाये बजाये शुभ सुरताला ॥ ४ ॥
मोद से मोदक फगवा बांटे मुदित भवानी लख लाला ॥ ५ ॥
दरजी नाथू नमे पद पकज द्यो भक्ति वर दूँदाला ॥ ६ ॥

(२)

तर्ज—इसी चाल मे

ऋतु आई रे श्याम वसन्त रमण ऋतु आई रे ॥ टेर ॥
जति सति परखण रति पति आये तक तक मारे बाण सुमन ॥ १ ॥
धर्म वीर सहन करे अग में कर मन विषय इन्द्री दमन ॥ २ ॥
कामी कायर अश्लील भाषे ज्यूं करे रोगी आहार वमन ॥ ३ ॥
हम पतिव्रता बाल जती तुम खेलो फाग सग बाग चिमन ॥ ४ ॥
दरजी नाथू राम पियारे. चरण कमल में करता नमन ॥ ५ ॥

(३)

तर्ज—इसी चाल मे

फागुन में मदन मगर चढिया फागुन में ॥ टेर ॥
पांच विषय सर चाप चलावे नर नारिन के रंग मंढिया ॥ १ ॥
रंग राग करे जति सति सूरा धूल उड़ावे मूढ अण पढिया ॥ २ ॥
बैठ गधे मुख काला करके काम का बाण हिये गडिया ॥ ३ ॥
अकल भग भंगेरे होकर फाटा बकत खाक उडिया ॥ ४ ॥
होली परब एकता होवण नेह बढे इतर सुगन्ध बढिया ॥ ५ ॥
दरजी नाथू राम कृष्ण यश गाय तरो भव की नदियां ॥ ६ ॥

(४)

तर्ज—इसी चाल मे

होरी खेले श्याम कुंजन वन में होरी खेले ॥ टेर ॥
ऋतु वसन्त ले रति पति आये गोपियां उमग रही मन में ॥ १ ॥
जेती सखियाँ तेते हि मोहन रूप धरे है मदन रण में ॥ २ ॥
लाल गुलाल उड़े आंधी ज्यूं बिजली वाम श्याम घन में ॥ ३ ॥
घरर घरर डफ घुरे मघवा ज्यूं झरर झरर पिचकारी तन में ॥४॥
राचे रंग नाचे पंछी ज्यू गायन नई नई रागन में ॥ ५ ॥
हास विलास परस्पर करते लखि आनन्द भयो सुर गण में ॥ ६ ॥
दरजी नाथू राम पियारे दर्शन से दुख जाय छन में ॥ ७ ॥

(५)

तर्ज—बरसे रे म्हारा छेल भंवर बिना जिवडो तरसे रे···

राधा कृष्ण रमेश फाग के सुघड खिलाड़ी है, छबी अति प्यारी है।
इतसें आये नन्द कुंवरजी उत वृषभान दुलारी है।
सखा सखी लिये संग मंडली न्यारी न्यारी है॥ १ ॥
मृग मद केसर घोल सुरंग के माट भरे अति भारी है।
इतर अबीर गुलाल कुमकुमा चले पिचकारी है॥ २ ॥
गोपिन सहित श्री राधे को भीजी जरकस वारी है।
प्रभु भीजे नहीं लेस ओढली कम्बल कारी है॥ ३ ॥
राधा सेन करी सखियन को आई दौड़ के सारी है,
पकड़ कृष्ण को, छीन कम्बल ओढा दई सारी है॥ ४ ॥
मुख के मली गुलाल लाल के गाल पे गुलचां मारी है।
दरजी नाथूराम कृष्ण पद की बलिहारी है॥ ५ ॥

धाई मात दोय तात हैं पांच चरण नख बीस।
नाथूराम बल्लभ सदा सुमरत सुर अज ईस॥

(६)

तर्ज—इसी चाल मे

सखि जानकी बल्लभ आज खेलते फाग रंगीला हैं, छेल छबीला है।
राजा जनक की पोली होली टोली दोउ कबीला हैं।
फागनिया पोशाक सुमुख रचे पान चबीला है॥ १ ॥

सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन उज्वल वश रवीला है।
दीन दयालु देव वनुज दल तिमिर दवीला है॥ २॥
शुक्ल श्याम सुन्दर ये सुषमा सूरज शशि फबीला है।
मदन रूप या नर नारायण नूर नवीला है॥ ३॥
गुण गम्भीर बल वीर तीर धनु धारे समर ढबीला है।
मंद हसंत वसत ऋतु के बड़े उछबीला है॥ ४॥
सूपनखां मोहित हो आई करि नकटी गजबीला है।
नाथूराम रसिक एक नारी नेम लुभीला है॥ ५॥

राधा श्री मुकुन्द की, आधा अंग की जोत।
नाथू भव बाधा हरे लाधा तत की होत॥

(७)

राग—गर्वी

होरी खेलन आई महाराज मोहन तेरे संग में॥ टेर॥
गवरी गणेश्वर पूज महेश्वर बसर वसन्ती साज केसरसी अंग में॥ १॥
अबीर गुलाला परस्पर डाला लाला जइयो ना भाज रती के जग में॥ २॥
जति पण साधा जभी तक राधा आधा अंगी भरि लाज मिली रही अंग में॥ ३॥
सो पिया प्यारी मदद हमारी थारी खबर पड़े आज रंगीजो नेह रग में॥ ४॥
नाथू दरजी करता है अरजी मरजी करो वृज राज न्हावत गुण गंग में॥ ५॥

(८)

राग—काफी

सांवराजी से रम रस होरी करूंगी सुद्ध बुद्धि मोरी॥ टेर॥
पत्नी को पति पति को पत्नी प्रिय लागे सब ठोरी,
राघव रूप लुभाये मुनि जन भव वृज गोप किशोरी।
राम भये माखन चोरी॥
परण्यो पिव चाहे जब मिल जाये, याते प्रीत रहे थोरी,
परम सनेही मिले मुश्किल सों हरदम लगी रहे लोरी।
लखे ज्यूं चन्द्र चकोरी॥
नेह बढन से मेह चातक मुख अधर बून्द दे ढोरी,
ज्यादा प्रेम परताप भेद मिट एक रूप शिव गौरी।
होय जर काम किशोरी॥

अतर अबीर गुलाल कुमकुमा मृग मद केसर घोरी
हाथ लियाँ सोहन पिचकारी मोहन नन्द की पोरी,
हरस डारे रंग रोरी।
हमतो पतित, पतित पावन हरि अजब बनी है जोरी
दरजी नाथूराम कृष्ण भव बन्धन गेरे तोरी,
ज्ञान फगवा भरि झोरी॥

(९)

तर्ज—इसी चाल मे

साँवराजी से करके यारी, कौन सुख पाया है नारी॥ टेर॥
जनक सुता लुभकर रघुवर पे गले वर माला डारी
रावण हरी जब तपाये अग्नि में फिर वन मांहि निकारी,
रजक की सुनके गारी॥ १॥
सूपनखा आई नेह करने लीनी नाक उतारी
शिवपुर दावा कर भई कुब्जा हरजा भरे झकमारी,
करी कमला सी पियारी॥ २॥
चित चोरन और नजर चोट पे चले न उजर दारी
नाँहि तो मै भी महादेव पे देती अर्ज गुजारी,
सुनाई होती हमारी॥ ३॥
फागुन आयो पिया नाँहि आय फीकी लगे फुलवारी
दरजी नाथू राम कृष्ण पद लग रही लगन अपारी,
मिल्यां हरि हो रगदारी॥ ४॥

गोरा ढिग सिंह मावसी मूसा गणपत धाम
हरि हर मिल अहि गरुड़ संग रहे खुश नाथूराम।

(१०)

तर्ज—इसी चाल मे

साँवरो होरी खेले अनोखी, देख जरे दाना दोखी॥ टेर॥
सुमन बाण ले अनग आयो, अंग धारण को सोखी।
कियो परवेश सखी सेना में खोल इन्द्रिय मोखी,
चलाई चोटां चोखी॥ १॥

यान जती सम वस्तर सजिया, सखियां की मन पोखी।
गूंगा गुड़ खा मगन भई सब, चीणा चिवले ज्यूं वोखी,
रही रति पति देह ओखी ॥ २ ॥
विषम वुद्धि की गुलाल उडत है मूढ मती दृग झोखी।
चकाचौंध भये घल घमन्डी असुरणी के कोखी
उठाई भारी जोखी ॥ ३ ॥
जिन वल सुखी हुये पांडव ज्यो सुदामा सन्तोखी।
विन शस्तर भारत जितवाये गंधारी अपरोखी
करी सुत लोथां टोखी ॥४॥

(११)

तर्ज—इसी चाल में

सांवराजी की वड़ी वदमासी, प्रीति करे ज्याने देवे त्रासी ॥ टेर ॥
न्यायाधीश ईश वहु प्यारो ज्याने दी विषग्रासी।
भूमि भार गरुड मय देके पोढे शेष पर खासी,
होय के कमला विलासी ॥ १ ॥
मधुरी वीन वजाय गाय गुण नारद मुनि विश्वासी।
कपि मुख वना स्वयम्वर मांहि कैसी कराई हांसी,
विचारो भयो सन्यासी ॥ २ ॥
वलि पाताल कियो नृग गिरगिट हरीचन्द नीच खवासी।
सीता सरीसी सतवन्ती को वन के मांय निकासी,
लाज नहि आई जरासी ॥ ३ ॥
भली भई सोवत रही सजनी करी नहीं सूपनखासी।
शिवपुर दावो करणो पड़तो लेती करवट काशी,
होती कुवरिया दासी ॥ ४ ॥
पोषे पूतना पय को उजाल्यो चेरी रीझ ब्रजवासी।
दरजी नाथूराम कृष्ण पद पावण को अभिलाषी,
पूरेंगे रमा विलासी ॥ ५ ॥

(१२)

तर्ज—इसी चाल में

सांवरो म्हासूं खेलत होरी करत है अजब ठठोली ॥ टेर ॥
पनियां भरन को मैं नित जाती ओढ चुनड़ अनमोली।
आन अचानक डगर मे घेरे सग सखन की टोली,
कहन लगे वातां फिटोली ॥ १ ॥

अतर अबीर गुलाल कुमकुमा मृगमद केसर घोली।
हाथ लियां सोहन पिचकारी मोहन मुसकाँ भोली,
डारे जबरन रग रोली ।। २ ।।

गेंद की चोरी लगाय सम्भाले मेरी जरकस चोली।
एक गई दो पाई बतावे, कैसी मती है भोली,
लगत है प्यारी बोली ।। ३ ।।

सास सुनत कटु गाली देवे लगत हिये ज्युं गोली।
ननद दुलारी ताना मारे कुण कांचू कस खोली,
मती उनकी गई डोली ।। ४ ।।

सात बरस के श्याम सुन्दर क्या जाने काम किलोली।
दरजी नाथू राम कृष्ण की लीला अजब अतोली,
प्रेम फगवा भरि झोली ।। ५ ।।

(१२)

तर्ज—इसी चाल मे

खेले हरी हर सग होरी, रहे आनन्द रग ढोरी ।। टेर ।।
त्रिलोकी को नाथ गरूड़ चढि साथ ले सिंधु किशोरी,
आवत लखि शिव सामों ध्याये, सहित अर्धगा गोरी,
मिले मग में शुभ ठौरी ।। १ ।।

लख खगपति कोपीन अहि खुल भगत जगी दृग होरी,
दुरे चन्द्र गाजे बाघम्बर ज्यों नरसिंह खम्ब फोरी,
गये नन्दी डर दौरी ।। २ ।।

नगन भगन शिव नाचन लागे ताण्डव गति मति भोरी,
ऊमा कमला फाग अनोखा देख हँसी मुख मोरी,
प्रभु डारे रग रोरी ।। ३ ।।

अबीर गुलाल लाल आंधी ज्युं फेल रहे चहुं ओरी,
पुष्प झड़ी इन्द्रादिक करते नन्दन वन ते तोरी,
बजे बाजा घन घोरी ।। ४ ।।

समझ के हांसी भभूत उड़ाई भोला मुदित अघोरी,
दरजी नाथू राम रामेश्वर रमा गवर की जोरी,
बसो मन आठों पौरी ।। ५ ।।

(१४)

तर्ज—इसी चाल मे

सांवराजी की अजब चलाकी, खेलते होरी बला की ।। टेर ।।
प्रथम चलाकी की पड़ी मालुम न् तन रंग डलाकी,
डार अबीर दृग सुध बिसरावे गू गट गाती पलाकी,
मोज ले अग उजला की ।। १ ।।
बरजोरी कर बहियाँ मरोरी तोरी माल गला की,
कन्दुक के मिस चोली टटोली होली ना नेक सलाह की,
भलाई क्या ये भला की ।। २ ।।
जग कहे वालो भोलो बातां जाण ना काम कलाकी,
चोर जार सरदार तीर सी अखियां लीला ललाकी,
पीर उर घाव घलाकी ।। ३ ।।
कोल पूरब को परम सनेही दियो न जाय तलाकी,
दरजी नाथूराम पियारे सुर तरु फूलां फलां की,
छाइ गई गति कमला की ।। ४ ।।

(१५)

तर्ज—इसी चाल मे

सांवरा मै तो बाला कुंवारी डारो ना रग पिचकारी ।। टेर ।।
होरी के रस मे मैं क्या जानूं गुड़ियां खेलन वारी ।
सोच समझ रग डारो मोहन तुम हो सुघड़ खिलारी,
कहावो गिरवर धारी ।। १ ।।
फाग रमण मतवाले भये तो देखो तरुणी नारी ।
वो ही मजा की होली खेल संग मनसा पूरे तुम्हारी,
मारे गुलचां दो चारी ।। २ ।।
ललिता विसाखा चन्द्र चन्द्रावल और वृषभान दुलारी ।
वे थारी हैं परम पियारी फिर क्यूं मोसे यारी,
करण की धारी मुरारी ।। ३ ।।
मोसे नेह कर रमे चाहो तो एक बरस दो टारी ।
उस फागुन में छक जोबन में खूब करूं रगदारी,
चाल सग कुजविहारी ।। ४ ।।
इसी वक्त वर जोरी करी तो देऊंगी मै गारी ।
दरजी नाथूराम पियारे लीलामय अवतारी
आपकी जाऊं बलिहारी ।। ५ ।।

(१६)

तर्ज—इसी चाल मे

सॉवरा गाली द्यो लाखन में लाज नहीं कछु आँखन में ॥ टेर ॥
नौजवान ज्यूं छोटे मुख ये फूल झड़े भाषण में,
अबीर गुलाल उड़ा भर मूठी रह्यो दृग रग नाखन में,
मजा क्या छल राखन में ॥ १ ॥
जाना चित चलात चिकजा चोखा ये चाखन में,
लुगे गालन रस रसिया ज्यू चोरी के माखन में,
करि मन त्यूं दाखन में ॥ २ ॥
घालो हाथ गात रूप की रास पकी साखन में,
छोटे छैल छबीला छोना छिप जाओ काखन में,
कहाँ तेरी अभिलाखन में ॥ ३ ॥
वेष बसन्ती परम सुन्दर ये ललिता विशाखन में,
वरजी नाथू श्याम पियारे भये कृष्ण पाखन में,
रत्न पारख गिराखन में ॥ ४ ॥

(१७)

तर्ज—सुन्दर फूल गुलाबी गोरी गोरी है

सुन्दर राधा माधव से खेले होरी है, सग में गोपी ग्वालों की टोली है।
श्री वृषभान दुलारी करी सेनकारी उमगी सखियां सारी,
हस के बिहारीजी सु बोली है ॥ १ ॥
छीन पीत पट लुकट मुरली मुकट सज बनी नटखट प्राकट,
शुक्ल शकर सी छबि अमोली है ॥ २ ॥
श्याम कूं श्यामा प्यारी बना सिणगारी गेणा गगरा भारी,
सारी गुल क्यारी जरकस चोली है ॥ ३ ॥
गोप बने सब गोपी लज्जा लोपी सखियां सखा बन ओपी,
करते आपस में हँसी ठठोली है ॥ ४ ॥
गाल पे गुलचा मारे गाली उचारे रंग पिचकारी डारे,
मृगमद केशर घोली है ॥ ५ ॥
चंग मृदग बजाते नाचते गाते मन हरसाते जाते,
पूछे नन्दजी की पोली है ॥ ६ ॥
बावरी बहू निहारी गोरे गिरधारी मन जसुमति महतारी,
करत अचम्भो मति डोरी है ॥ ७ ॥

फगवा माँही ल्याई बहु ढिग आई हांचल दूध उम्हाई,
धारा चलाई पोल खोली है ॥ ८ ॥
श्यामा भेष उतारे गूंगट निकारे सास के चरण पखारे,
दरजी नाथू के प्यारे किलोली है ॥ ९ ॥

(१८)

तर्ज—इसी चाल मे

श्रीपति राजा उमेद अवतारी है, महारानी जी मगन,
अरधगा सिय गुणावारी है ॥ १ ॥
एक पति पत्नि नेमी, दम्पती प्रेमी, सब के कुशल क्षमी,
प्रजापालक पर उपकारी है ॥ २ ॥
केतसाली के मांई, गरीबाँ ताँई, अम्बरीष की नाँई,
खोले खजाना कुबेर भण्डारी है ॥ ३ ॥
सड़कें अच्छी जमवाई तलैयां खुदवाई, लाँबी नहर बणाई,
पाणी आवण जन सुखकारी है ॥ ४ ॥
गौ पालक कहलाये, चारा मगाये, सस्ते भाव बिकवाये,
जिणस्यूँ जस छायो जग में भारी है ॥ ५ ॥
रवि शशि कुल परतापी, मरू देवापी, भरत ज्युं राम मिलापी,
थापी सत जापी असि धारी है ॥ ६ ॥
नाथू दरजी करे अरजी, पूरणगरजी, इबछल रखो रघुवरजी,
राज राठोड़ी पुण्य अपारी है ॥ ७ ॥

(१९)

तर्ज—पनजी मूंडे बोल

हरीजी दर्शन द्यो, दर्शन द्यो क्यूं नॉय साँवरा काँई थारी मरजी रे ॥टेर॥
महिमा नॉव सुनत भई दिल में प्रभु दरसण की गरजी रे।
सौन्दर्य की खान छबी दिखला सुन अरजी रे॥ १ ॥
मायावी बणगट नरनारी सूरत नाना सरजी रे।
ना सतोष नित-नई नूरानी आणो फरजी रे॥ २ ॥
खुद कर घूंघट परदे बंठे क्या श्री राधा बरजी रे।
के मुझ पातक घृणा और के धन की हरजी रे॥ ३ ॥
युग युग ले अवतार आवो प्रभु ज्यू सतां को करजी रे।
तदपी बिरला लखे खेल एही इचरजी रे॥ ४ ॥
तरसा चाहे हरसा गोविन्द जस में तबियत उरझी रे।
पतित उधारण जान शरण लई नाथू दरजी रे॥ ५ ॥

(२०)

तर्ज—कृष्ण खेल रयो बाल जती

बन गई राधे थानेदार, सखियाँ सजी सिपाही लार ॥ टेर ॥

असल बनाती वरदी राती दरसाती बांको सिरदार ॥ १ ॥

कटी तटा कस कमर पटा चपड़ास छटा कर में तलवार ॥ २ ॥

आनन्द धाम लिये पकड़ श्याम जसुमती बाम डरभई लाचार ॥ ३ ॥

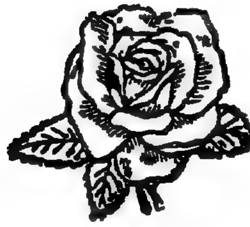
कहे नन्दनार मेरा कुमार क्या किया बिगार पकड़ा सिरकार ॥ ४ ॥

कहे चपरासी ये वृजवासी बदमासी यो करी अपार ॥ ५ ॥

जसुमति मात दी निषपत हाथ नहीं मानी बात कीन्हो तकरार ॥ ६ ॥

कृष्ण पकड़ ले चली अकड़ कुंजन के निकट ल्याई छल धार ॥ ७ ॥

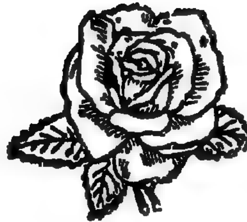
कहे नाथुराम श्रीराधेश्याम सारोजी काम शुभ वृष्टि निहार ॥ ८ ॥



द्वितीय खण्ड

अनुक्रमणिका

पृष्ठांक



गीत एवं भजन सम्बन्धी साहित्य

की

समीक्षा

प्रकाशित पुस्तके

१.	हरियश पीयूष वर्षिणी	प्रकाशन सन् १९१८ ई०	पद सख्या १११
२	हरियश गीतमाला भाग १	,, ,, १९२९ ई०	,, ५४
३.	हरियश गीतमाला भाग २	,, ,, १९३१ ई०	,, ४६
			२११

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और योग उपदेशो से भरी हुई उपरोक्त भजनावलियाँ श्रीमद्राधाकृष्ण चरणकमल मकरन्द रसस्वादानुरागियो के हितार्थ एव अपनी जिह्वा पवित्र करने हेतु गुरुवर नन्दलालजी महाराज की कृपा से कविवर नाथूराम जी ने समाज के हाथो मे दी है। भगवद्‌भक्ति पूर्ण पद रचने मे नाथूराम जी अपने जीवन काल मे ही दूर दूर तक विख्यात हो चुके थे। धार्मिक उत्सवो, समारोहो एव पर्वो पर ये गीत आस्थावान व्यक्तियो द्वारा बडे चाव से गाये जाते है। महिलाओ मे ये गीत बड़े लोकप्रिय है। इन गीतो के माध्यम से ही कविवर जनता जनार्दन के हृदय हार बन गये कविवर ने करीब दो हजार पदो की रचना की थी, परन्तु साहित्य-जगत का दुर्भाग्य है कि अभी तक करीब साढे चार सौ प्रकाशित अथवा अप्रकाशित गीतो का पता लग सका है। शेष साहित्य इस ढग से लुप्तप्राय है कि भगवान कच्छपावतार अथवा मत्स्यावतार अथवा वाराहावतार लेकर उस लुप्तप्राय साहित्य का उद्धार करके लावे, तभी सभव होगा।

आलोच्य पुस्तको मे जो पद आए है, उनको निम्नलिखित श्रेणियो मे बाँटा जा सकता है।

१. कृष्ण भक्ति विषयक पद ९५%
२. दुर्गा, गणेश, हनुमान, शिव एव राम विषयक पद...४%
३ निर्गुण पद... ... .१%
१००%

उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर यह स्पष्ट है कि कविवर मूलत. कृष्ण भक्त थे। कृष्ण की विविध लीलाओ का वर्णन उन्होने मुक्त-कण्ठ एव मुक्त-हृदय से किया है। पत्नी परित्यक्त होने से उन्होने गार्हस्थ्य सुखो के अभाव की पूर्ति अपने आराध्यदेव की विभिन्न लीलाओ, विशेषतया झूला एव होरी सम्बन्धी लीलाओ का गुणगान करके की। जिस प्रकार सूर ने वात्सल्य रस का इतना अधिक परिपाक किया कि वह दसवां रस माना जाने लगा, उसी भाँति कविवर नाथूराम जी ने झूला एव होरी सम्बन्धी पद प्रचुर मात्रा मे रचकर काव्य को नई देन दी है। किसी भी प्रकार की कृत्रिमता से रहित उनका एक होरी गीत देखिए।

कैसे मारो पिचकारी तक तक; मै तो हारी घूघट ढक ढक ॥ टेर ॥
भये मतवारे मानत ना रे, मै न नशे में छक छक ॥ १ ॥
पिचकारन धारण से मेरी, छतियाँ करती धक धक ॥२॥
पीहर जाती पनघट तट पे, मोको हसते बक बक ॥ ३ ॥
श्याम निर्लजता एती करो ना, जगत करेगो चखचख ॥४॥
नाथूराम श्याम के शरणे लज्जा मेरी रख रख ॥ ५ ॥

इस आडम्बर हीन शैली के कारण ही ऐसे गेय पद आज भी सगीतज्ञो द्वारा बड़े चाव से गाए जाते है। सही तुक मिलना और रसानुभूति होना इन पदो की अपनी विशेषता है।

झूला सम्बन्धी गीत भी देखिए .—

मुरारी थारी झूलन झाँकी प्यारी ॥ टेर ॥
मघवा बरसे चपला चमके, शोभित बन हरियारी ॥ १ ॥
लहरिया भूषण दिव्या दूषण, कोटि काम छविवारी ॥ २ ॥
कदम्ब को डलियाँ झूला डाला, झोटा दे ब्रजनारी ॥ ३ ॥
दादुर मोर पपीहा बोलत, कोयल कूक पियारी ॥ ४ ॥
दरजी नाथूराम कृष्ण बल, गावत राग मल्हारी ॥ ५ ॥

कविवर ने सयोग श्रृगार को अपनाया है। भूल कर भी वियोग श्रृगार नही अपनाया। वृन्दावन मे भगवान ने जो क्रीडाएँ की, उन्ही को गाने मे कवि ने भक्ति की पराकाष्ठा मानी है और यह है भी उचित ही। वृन्दावन मे पैर धरते ही ज्ञान वैराग्य बूढे हो गये और भक्ति जवान हो गई, ऐसा वर्णन श्रीमद्भागवत मे आता है। "धन्य वृन्दावन रम्य भक्ति. यत्र च नृत्यति।" कविवर ने विशुद्ध भक्ति भावना से उसी नटवर नागर लीला पुरुषोत्तम की लीलाओ को काव्य बद्ध किया है और भक्तो को एक आदर्श आलम्बन प्रदान किया है।

काव्य सौष्ठव और भाव गाम्भीर्य की कसौटी पर खरे उतरने वाले इन पदो को कविवर स्वय भी गाते थे और भजनी मण्डली उनसे राग सम्बन्धी जानकारी ग्रहण करती थी। कई बार देखा गया कि उनका कोई भजन उनकी अनुपस्थिति मे अशुद्ध गाया जा रहा था। परन्तु कविवर के उपस्थित होते ही वह पद उनकी दी हुई राग रागिनी से दुबारा गाया गया और उसकी अच्छी रसानुभूति हुई। होरी विषयक निम्नलिखित पद कला का उत्कृष्ट नमूना है।

प्रभु पिचकारी चाले सननननन् ।
राधे रंग फेंके श्याम फननननन् ॥ टेर ॥
छाई बरसाले धमाल, लाल आँधी ज्यूं गुलाल ।
घन मरदग ताल घुरे घननननन् ॥ १ ॥
रंग भीनी घटा टोप, सज नाचे गोपी गोप ।
मोर पपैया ज्यूं ओप घूम घननननन् ॥ २ ॥
रंग होरी गारी आप मीठी मल्हारी अलाप ।
शब्द बिछिया मिलाप छूम छननननन् ॥ ३ ॥
फाग फूल विकसन्त, लख मोहन हसन्त ।
ऋतु की बसन्त भूम भननननन् ॥ ४ ॥
गावे दरजी नाथूराम, जस तेरा घनश्याम ।
भक्ति फगवा इनाम, दाम भननननन् ॥ ५ ॥

इसी राग मे रचित झूला पद का भी अवलोकन कीजिए —

चलत हिंडोरो सननननन्, घन गरजत है घननननन् ॥ टेर ॥
आई सावणियाँ री बहार, तीजां तणो है तिंवार ।
राधा सज सिणगार लागी झूलननननन् ॥ १ ॥
नीकी बागन की बहार, खिल रही गुलक्यार ।
करें भँवर गुंजार, भू मनननननन् ॥ २ ॥
झूला देती पूछे बाम, राधा लेवे पिव को नाम ।
सुण सारी व्रजबाम लागी हसननननन् ॥ ३ ॥
सखि मगल रचावे, ताल मृदग बजावे ।
तार सारगी मिलावे तूंम् तननननन् ॥ ४ ॥
मीठे ऊंचे स्वर गावे, भाव नाच बतलावे ।
पग नूपुर बजावे, छूम छननननन् ॥ ५ ॥
नन्दलाल बतलावे, गुण नाथूराम गावे ।
कर झाँझ ही बजावे, झूम झननननन् ॥ ६ ॥

उपरोक्त पद देने का आशय यही है कि कविवर के गेय पदो की विशेषता पाठको के समक्ष लाई जाय ताकि सहृदय रसिक पाठक कविवर द्वारा रचित पदो का सही मूल्याकन करके उनका रसास्वादन कर सके। कविवर पौराणिक अन्तकथाओ के ज्ञाता थे और श्रवण-मनन के द्वारा वे मूर्तिमान ज्ञान हो गए थे। शिव भक्ति का पद राग कालिगडा मे देखिए —

शंकर सुनिए अरज हमारी ॥ टेर ॥
मिला रहत मारा ही चाहत कामादिक ठग भारी ।
महाशत्रु मित्र बन ठगते करने दीन दुखारी ॥ १ ॥
दिन को तो कछु दाँव न लागे निशि एकान्त निहारी ।
पर गट घट चट हट डट शठ ये खटपट करते ख्वारी ॥२॥

शिव शिव लव से जिव शिव पावे सुख ज्यूं पिव मिल प्यारी।
नाथू सरस्वती वर्ण सराही महिमा अमित तुम्हारी ।। ३ ।।

इस प्रकार प्रसगानुकूल भावाभिव्यजना द्वारा कविवर ने विभिन्न देवी देवताओं की वन्दना की है। ये सारे पद और भजन चार प्रकाशित एव दो अप्रकाशित पुस्तको मे है, अतः साहित्यकारो द्वारा उपेक्षित रहे। ये सारे पद एक स्थान पर सकलित होकर छपते तो "विनयपत्रिका" की भाँति एक सागोपाग कृति साहित्य जगत को उपलब्ध हो जाती। कविवर की निर्गुण वाणी भी स्वय मे पूर्ण है :—

हे कृष्ण सारे विश्व का आधार तू ही है ।। टेर ।।
यह दृश्यमान जगत सो सपने का ख्याल है।
केवल मन की कल्पना का इन्द्रजाल है।
मन है तिहारी किरण भी दिव्याकार तू ही है ।। १ ।।
तो सों पृथक् और जीव ईश भूप है।
सो अनात्मा असत् जड़ स्वरूप है।
चैतन्यपूर्ण आत्मा सत्यसार तू ही है ।। २ ।।
स्थूल सूक्ष्म कार्य और कारण अग है।
इस सब सघात का साक्षी असग है।
सबका प्रकाश्यमान निर्विकार तू ही है ।। ३ ।।
दृष्टा हो आप सर्व का को आप कूं लखं।
लिखना लिखाना भरम ज्यूं अहंकार कूं रखं।
अद्वैत नाथूराम निराकार तूं ही हं ।। ४ ।।

ससार की असारता को इगित करने वाले तथा नरदेही को सार्थक करने हेतु भगवद्भक्ति की ओर प्रेरक ये पद जनता में बडे ही लोकप्रिय है। भाव, भाषा एव रागिनी की दृष्टि से इन पदो का शाश्वत मूल्य है —

हाँ जनम नर वृथा गमाया; नरतन पाय हरि गुण नहीं गाया ।। टेर ।।
धन जोवन सुख सम्पत माया, सुन्दर नारी देख लुभाया,
नारी नरक का मूल है, भूल के जीव पसाया रे ।। जनम०।।
श्रवण दिया हर गुण सुणबाने, दन्त कथा में लगा दिया ज्यांने,
कचन घट मांही नर मूरख जहर भराया ।।जनम०।।

उपरोक्त तीनो पुस्तको मे प्रकाशित २११ पदो के आधार पर हमे कविवर की निम्नलिखित विशेषताओ की स्पष्ट झलक मिलती है :—

[१] सूरदास ने भगवान कृष्ण को सखा मानकर अकथनीय बातें भी उनको कही है। "हृदय तें जब जाहुगे, मर्द गिनौगो तोहि', "आखिर जात अहीर" आदि उक्तियो के माध्यम से उन्होंने अपने बाल सखा को चुनौती सी दी है। कविवर नाथूरामजी ने वक्रोक्ति के द्वारा हसी हसी में ही भगवान को वार्तालाप शैली मे मन की बात कही है "हँस के गिरिजा यूँ शकर से वचन सुनावती जी", सुण रे ऊधो निर्गुण ज्ञानी लौ तो लगी

मेरी कान्हा से", "पपैया कहना मान रे, मत बोल या जुबान रे", "माई तुम्हारो साँवरो ये बडो माखन चोर" आदि पदो मे कथोपकथन के द्वारा कविवर ने भगवान के प्रति अनन्य भक्ति भावना दरसायी है।

[२] श्रुति स्मृति, पुराण, उपनिषदादि ग्रन्थो की आख्यायिकाएँ कविवर ने हृदयगम की थी। उनके सम्बन्ध मे पद भी प्रचुर मात्रा मे लिखे गए है, जैसे "हाँ भीलनी बन शिव प्यारी छल लीना शकर त्रिपुरारी", सकट हारी कपि नाम वैकट बलधारी है", "हाँ रे जिया तू, सियावर तत्व पिछाण ले रे"; 'भालूपति कहत सुनो हनुमाना", 'जल मे महादुख पाऊँ नाथ मैं", "वैरागण मीरा राणा जी करे रे वृथा भोड" आदि।

[३] निर्गुण पद बडे शिक्षाप्रद है, और कविवर के जीवन दर्शन के निचोड रूप है। विभिन्न राग रागनियो मे रचित ये पद छोटे है और अन्तर्कथाओ के समावेश से रहित होने के कारण चित्त की तन्मयता और एकाग्रता मे बडा अच्छा योगदान देते है। इस श्रेणी मे निम्नपद है :—"कर मन राम को भजन", (राग केदारा), "कह कपिल देव मुनि ज्ञाता" "मुसाफिर अँखिया खोल गाफिल सोवे मती", मन खल कामी राम भजे ना, हरि चरणन मन क्यो नी लागे", "मन भज ले श्री भगवाना", "रस मजा हरि की भक्ति मे" आदि।

[४] समाज सुधार सम्बन्धी पद भी कविवर ने रचे है। कवि का दायित्व भी समाज के प्रति होता ही है। समाज की जनरुचि परिष्कृत करना तथा जीवन को उन्नत बनाने की कला सिखाना कवि का पावन कर्त्तव्य है। कविवर नाथूराम जी ने इस प्रकार के पद बडे मनोयोग पूर्वक लिखे है, जैसे—"घर बैठाँ ही हीवेला फल अडसट को, बाहर व्यायणजी काँई भटको", "सुशीलताई मनुष्य जनम की बडी बडाई रे", "सत धर्म का मारग गीता मे बतला दिया कृष्ण मुरारी ने", "कभी न मिला नर जन्म भरम तज ये सुकरम करना चाहिए" आदि।"

(५) कविवर नाथूराम जी स्वय मामूली अक्षर ज्ञान रखते थे, और आँखो की ज्योति अत्यन्त क्षीण होने के कारण स्वयं लेखनी और कागज से वास्ता नही रखते थे। वीस साल के सम्पर्क मे मैने उनको कभी लिखते नही देखा। वे रचनाओ को दूसरो से बोलकर लिखवाते थे। आशुकवि होने के कारण उनके लेखक को अबाध गति से लेखनी चलानी पडती थी, इसीलिए उनका लेखक बनने के लिये कोई व्यक्ति स्वत सामने नही आता था। कविवर स्वय ही किसी विद्यार्थी अथवा शिक्षित व्यक्ति को पकडकर लाते थे और अपनी दो तीन निश्चित जगहो मे से कही भी बैठ कर रचनाएँ लिखवाते थे। लेखक यदि अच्छा मिल गया तो ठीक, अन्यथा लेखन मे बहुत सी अशुद्धियाँ हो जाती थी।

कविवर के एक अनन्य मित्र स्व० रामकुमारजी मानधण्या थे जो स्वयं अच्छे गायक थे और भजनो का सग्रह करना उनका शौक था कविवर दिन मे एकाध घन्टे उनकी दूकान पर अवश्य बैठा करते थे और वही पर स्व० मानधण्या जी से कभी कभी नए भजन भी लिखवाते थे और कभी कभी पुराने भजनो को स्व० मानधन्या जी की रुचि के अनुसार लिखवाते थे। वे सारे भजन मूल रूप मे श्री डीडवाना नागरिक सभा

के सौजन्य से मुझे प्राप्त हुए हैं। सभी भजन मारवाडी भाषा मे सुवाच्य एव सुपाठ्य ढग से लिखे हुए है। साहित्य जगत का सौभाग्य है कि यह सग्रह सुरक्षित है। कविवर की प्रौढावस्था मे रचे हुए होने के कारण ये भजन लय, ताल, छन्द, भाव, भाषा, शैली आदि सभी दृष्टियो से अच्छे स्तर के बन पडे है। ऐसे अप्रकाशित भजनो की सख्या १७३ है। (होरी पद ८४, झूला पद १८ तथा फुटकर पद ७१) इनमे से केवल १३ पद श्री वैकुण्ठनाथ सस्थान, कलकत्ता द्वारा "भक्ति प्रभा" एव 'झूलन पद" नामक पुस्तको मे प्रकाशित किए गए है। शेष सभी भजन अब तक प्रकाश मे ही नही आ पाए है, जो इस ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहे है। एक होरी पद देखिए :—

आज रगीली छबीली होऊँ, राधारमण को रिझाय भिजोऊँ ॥ टेर ॥
अहिल्या केवट ज्यू हरि-पद रज जल, मल-मल तन के कलिमल धोऊँ ॥ १ ॥
सज सोलह सिणगार श्रद्धा से, भक्ति विभूषण मुक्ता पोऊं ॥ २ ॥
प्रेम रंग प्रभुता पिचकारी, श्यामसुन्दर सग श्यामा सी सोऊं ॥ ३ ॥
ईश्वरताको अजन अखियाँ, आज मै मनमोहन को मोऊं ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णपद, ज्ञान गुलाल लगा कर जोऊं ॥ ५ ॥

मीराबाई जैसी तन्मयता, उदात्त भक्ति-भावना एवं साधना का परिचायक यह पद बडे चाव से धार्मिक उत्सवो मे गाया जाता है राधा-कृष्ण को आलम्बन मानकर कवि ने जो होरी गीत रचे है वे साहित्य की बेजोड कृति है। सगुण और निर्गुण दोनो प्रकार के होरी गीतो मे कविवर ने समान अधिकार दर्शाया है। आज कल कई स्थानो पर फिल्मी धुनो पर आधारित होरी गीत गाये जाते है, परन्तु उनकी राग रागिनी ऋतु के अनुकूल न होने के कारण रस की सृष्टि नही होती है। कविवर ने वसन्त राग ही को प्रधानता देकर सारे गीत विभिन्न लयो मे बनाए है।

भजनो की खोज के इस सागर मन्थन मे कई मोती प्रकाश मे आए है। झूला गीत यद्यपि अत्यल्प मात्रा मे मिलते है परन्तु कविवर ने कवित्व के प्रभाव से यह झूला-लीला भक्त जनो का एक सुदृढ अवलम्बन बना दी गई है। देखिए एक झूला पद —

झूला झूले वाम सिया, झुलावे राम पिया ॥ टे० ॥
तीज रमण बण आई सीता, सोलह सिणगार किया ॥ १ ॥
हेम हिडोले हीरे हरि लख, घूँघट काढ लिया ॥ २ ॥
धन एक पतिव्रत लख सती का हुलसे श्याम हिया ॥ ३ ॥
नभ घन दामिनि चमके बरसे, भीजे सुन्दर पिया ॥ ४ ॥
फरी चाँदनी नेह कर राघव, सखि सब चरण छिया ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम जानकी, सुमिरत सुफल जिया ॥ ६ ॥

फुटकर गेय पदो की अन्तिम किश्त मे ७१ पद नए मिले है जो बडे हृदयहारी है और पक्की राग रागिनियो मे रचे हुए होने के कारण सगीतज्ञो द्वारा अभिनन्दनीय है। सूरदास के पदो की भाँति ये पद भी भक्त का आर्तनाद है। भगवान का सान्निध्य प्राप्त करने की उत्कट लालसा है, चेतावनी है और निर्गुण भक्ति रसामृत भी है। कविवर ने

इस गीतांजलि द्वारा अपने आराध्यदेव श्री कृष्ण की वन्दना की है, जिससे भक्ति साहित्य अनुप्राणित होकर पुष्पित और पल्लवित हुआ है। राग विहाग मे गाया जाने वाला निम्नलिखित पद देखिए :—

तू शठ राम को भूल रहा क्यों, वो तो तुझे बिसरा भी नहीं ॥ टेर ॥
गर्भ मे भी रक्षा वह कीन्हीं, उनका गुण सुमिरा भी नहीं ॥ १ ॥
बाहर आत दूध कियो तवहित, पल भर भूखा मरा भी नहीं ॥ २ ॥
बालपने हंस खेल गमायो, जवानो में याद करा भी नहीं ॥ ३ ॥
वृद्ध समय तृष्णा बल डोले, ज्यादा तेरी उमरा भी नहीं ॥ ४ ॥
सहायक राम को भूल गयो, तो तेरे सम नुगरा भी नहीं ॥ ५ ॥
नाथू मूढ उम्र वृथा खोई हरि का दण्ड उतरा भी नहीं ॥ ६ ॥

कविवर की एक प्रकाशित पुस्तक "हरियश गीत माला" भाग ३ अभी तक अप्राप्य है। इसलिए उसमें आए हुए भजनों की सख्या, वर्गीकरण आदि अज्ञात है, परन्तु जैसा सत्यसाहित्य अब तक उपलब्ध हो पाया है, उससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कविवर ने गीतो मे, विशेषकर होरी गीतो में, कमाल का सौष्ठव और गौरव प्राप्त कर लिया था। आशा है इस ग्रन्थ के प्रकाशन से ईश भक्ति-गीतो में एक नवयुग का सूत्रपात होगा।

भजन नं० १

राग कल्याणी, चाल—रामगोपाल रघुनाथ

जय शिवलाला जपु तव माला करो प्रतिपाला लखवाला
नव निधिवाला सुमुखकुशाला वक्रतुण्डाला दुंदाला
मुकटविशाला कुण्डलवाला त्रि-पुण्ड्रनिकाला शुभभाला। जय० १ ॥
मुक्त-प्रभाला हिय गलमाला जरकसवाला दुश्शाला
अष्टगन्धाला मोदकवाला भजें त्रि-काला दिगपाला। जय० २ ॥
अशुभकसाला विघ्नकराला हरहु कृपाला तत्काला
दे धन-माला सुमतिसुचाला करहु निहाला सिद्धिसाला। जय० ३ ॥
गुरु नन्दलाला उर गुण डाला भये उजाला खुलताला
नाथु-सिंबाला रचि पदमाला करन कुशाला गोपाला ॥ ४ ॥

भजन नं० २

राग—गाइये गणपति जगवदन

शंकरसम सुर कौ वर दाता।
मार्कन्डेय कुं अमर किय है लज्जित भये लिख भाल विधाता ॥ १ ॥
नेक तपस्या करि असुरादिक पायउ वर तिन ते मन भाता ॥ २ ॥
भागीरथ कूं कृपा करिके दइ कुलतारण सुरसरिमाता ॥ ३ ॥
राधामाधव वेग मिलावो नाथू कूँ शम्भु जगत्राता ॥ ४ ॥

भजन नं० ३

श्री व्रजराज इन्द्र चढ आयोजी

गोवर्द्धन कूं मान दियो प्रभु निज हाथों पुजवायो ॥ १ ॥
नाहि तो मघवा प्रलय करेगो यासे व्रज घबरायो ॥ २ ॥
मूसलधारा वर्षण लाग्यो उमड घुमड घन छायो ॥ ३ ॥
नाथू स्वामी घन मद मोचन गिरधर नाम कहायो ॥ ४ ॥

भजन नं० ४

राग—रघुवर कौशल्या के लाल

बंदौं बीस चार अवतार भू के भार उतारण वारे ॥
१ नृसिंह २वराह ३ ४वामन रूप, ५नारद ६कच्छ ७मच्छ अनूप
७ मोहनि ८धनंतरि ९पृथुभूप, प्रगटे भक्त उधारण वारे ॥ १ ॥

[१०]श्रीहरि [११]ऋषभ [१२]कपिल [१३]रघुवीर, [१४]व्यास [१५]परशुराम रणधीर
[१६]नरनारायण गुणगम्भीर, योगारम्भ सुधारण वारे ॥ २ ॥
[१७]यज्ञ [१८]सनकादिक भये च्यार, [१९]दत्त [२०]बुद्ध [२१]कृष्णचन्द्र कर्तार
[२२]कल्कि [२३]हयग्रीव अवतार, [२४]हंसाज्ञान उच्चारण वारे ॥ ३ ॥
गुणिवर नन्दलाल को दास, नाथूराम कृष्णविश्वास
कर अब कृपा पूर द्यो आस, भव का त्रास निवारण वारे ॥ ४ ॥

न० ५

पद इसी चाल मे

जो तुम कहँ से आये लाल, दधि को दान मांगने वारे ॥ टेर ॥
क्यों तू झगड़ सतावे मोय, ऐसा ढीट लँगरवा होय,
कैसा जाया जसमत तोय, हम पर लकुट उठावन वारे ॥ १ ॥
अलग हटो छोड़ के वाट, क्यों दिल से बनते हो लाठ,
ऐसी क्या पड़गई है चाट, फिरते नट के सांगन वारे ॥ २ ॥
जो तुम करि हो बहुत अन्याय, तो मैं कहूं कंस से जाय,
दे मेरी सारी बदी हटाय, मही के भाजन भांगन वारे ॥ ३ ॥
नाथूराम कृष्ण मन ध्याय, दीने सबके घट पटकाय,
गुजरी चरणन में चितलाय, लखि कंसा के छागन वारे ॥ ४ ॥

न० ६

पद श्री हनुमान का रागगौरी

भालुपति कहत सुनो हनुमाना ॥ टेर ॥
गज, नल, नील, तार कपि, अंगद, निज निज जोर बखाना ॥
तुम चुपके क्यों बैठे पवन सुत, हो अतुलित बलवाना ॥ १ ॥
सो जोजन मरजाद सिंधु की, को अब करे पयाना ॥
अंगद लाँघ हलकी होवे, और नहीं बलवाना ॥ २ ॥
शंकरसुवन पवनतन वीरा, अँजनिपुत्र कहाना ॥
विद्यावान सकल गुणसागर, काज करो मनमाना ॥ ३ ॥
बिन हरि काज किये बिन चाले, रविसुत दे दुःख नाना ॥
नाथू के प्रभू देर करो क्यों, हैं सहाय भगवाना ॥ ४ ॥

न० ७

पद कृष्ण का राग श्यामकल्याण

कन्हैया मोरी नैया को पार लगाय ॥ टेर ॥
भवसागर की बीच धार मे फँसकर गोता खाय ॥ १ ॥

तो सम हम को कोउ न दीखत, खेवटिया यदुराय ॥ २ ॥
गज ही के सम पीर हमारी, हरहु दयानिधि आय ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे, दीन जान अपनाय ॥ ४ ॥

न० ८

राग झिंझोटी पद श्रीजगदीश का—जिनके हिरदे रघुनाथजीवसे—इस चाल में

जगदीश करो बखशीस गुना, अनजानी दोष भयो सो भयो ॥ टेर ॥
जो तन दीनो तेहि बिसार्‌यो, वस विषयो के रयो सो रयो ॥ १ ॥
त्याग सुमारग निगमागम को, कूट कुपंथ बह्यो सो बह्यो ॥ २ ॥
निज स्वारथ हित छल चतुराई, अपयश मोल लयो सो लयो ॥ ३ ॥
नाथू अधम की पत तुम राखो, शठ मन बिगर गयो सो गयो ॥ ४ ॥

न० ९

पद इसी चाल में कृष्ण का

कछु भव सुख ना चाहुं हरीजी, ऐसी महर करोजी करो ॥ टेर ॥
निशि दिन मन तेरे पद लागे, ये अभिलाष भरो जी भरो ॥ १ ॥
होय न बेरा आन जान का, तन त्रय ताप हरो जी हरो ॥ २ ॥
नाथू जन अपनौ लख स्वामी, माथे हाथ धरो जी धरो ॥ ३ ॥

न० १०

पद बलराम का—इसी चाल मे

हमारे बसो नयनों मे राम रँगीला ॥ टेर ॥
रोहिणिनन्दन सब जगवन्दन, आनन्द घन गुणशीला ॥ हमारे बसो० ॥ १ ॥
गवरे वरना मुनिमन हरना, लोचन कंज रसीला ॥ हमारे बसो० ॥ २ ॥
मस्तक राजत मुकुट मनोहर, मन्दहास पट नीला ॥ हमारे बसो० ॥ ३ ॥
रेवतिरमना दानवदमना, जमुना करना लीला ॥ हमारे बसो० ॥ ४ ॥
नाथूराम भजे निशि वासर, दरशन देओ छबीला ॥ हमारे बसो० ॥ ५ ॥

न० ११

पद श्री राम का—इसी चाल मे

तेरी सांवरी सुरत बस रही नैना ॥ टेर ॥
मोर मुकट पीतांवर सोहै मधुर बजावत वैना ॥ १ ॥
जप तप नेम प्रेम युत व्रत का, यहि फल आनन्द देना ॥ २ ॥

सदा सर्वदा श्याम हमारे, लोचन आगे रहना ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणें, ताहि अभय वर देना ॥ ४ ॥

न० १२

पद श्री कृष्ण का—इसी चाल मे

तनक दधि देजा सुन्दर गुजरी ॥ टेर ॥
तू सुन्दर है गगरी भी सुन्दर, सुन्दर है मुखअंबुज री ॥ तनक दधि० ॥ १ ॥
सुन्दर लख के चाहत है चित, खट्टा कि मीठा चखा मुझेरी ॥ तनक दधि० ॥ २ ॥
हे सुन्दर वंशी की सुन्दर, गागर राग सुनाऊँ तुझेरी ॥ तनक दधि० ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम सुन्दरने, अस कहि मटकि पकरि भुज री, ॥ तनकि दधि० ॥ ४ ॥

न० १३

इसी चाल मे

जरा बोलो लाल वोलो संतों के मन रिझैया ॥ टेर ॥
दरशन को चित्त चाया, जब ध्यान में लगाया,
गऊ लोक मै न पाया, आनन्द के दिलैया ॥ १ ॥
गुरु ज्ञान मोय बताया, नन्द जी के लाल कहाया,
वह सगुण ब्रह्म बताया, निज नाम है कन्हैया ॥ २ ॥
कैलाश से मै आया, जसुमति ने लाय दिखाया,
बोलन से मोदछाया हो, दुःख के मिटैया ॥ ३ ॥
नाथू कहे यों सांई, हम तुम में भेव नांई,
खुश हो गये पुर मांई, शिव लेय के बलयों ॥ ४ ॥

भजन न० १४

नाथ विन विगडी कोन सुधारे—इस चालमे ।

जल मे महा दुख पाऊँ नाथ मै २ । टेर ।
सुत दारा को मद मन रखियो, सो अव में पछताऊँ ॥
यह तो संगी हैं स्वारथ के ना इन को अपनाऊँ ॥ १ ॥
ग्राह गह्यो पद रिपु हमारो, मै कुंजन बिलखाऊँ ॥
हार्‌यो हिम्मत चलै न वल अव, किस विध बाहर आऊँ ॥
रुक्यो नीर में स्वास दीन को हे प्रभु कैसे ध्याऊँ ॥
जल को कमल सूंड से लेकर हरि के भेट चढाऊँ ॥ ३ ॥
कृष्ण कही सुन धीरज धर गज दौड़ पयादा हि आऊँ ॥
जो तो मगर पकर दुख देवे, तापर चक्कर चलाऊँ ॥ ४ ॥

डूबत करि तार्यो हरि पल में, कह लग प्रभुता गाऊं ॥
नाथूराम श्याम के शरणे चरणन में चित लाऊं ॥ ५ ॥

भजन नं० १५
इसी चाल मे प्रभु से अर्जी

मोय प्रभु लागे भय उस दिन को ॥ टेर ॥
काल आय देवेगो घेरो, कैसो हाल होयगो तनको ॥ १ ॥
दम निकसेगा यम शस्तर से, डंक लगे ज्यों शत बिछु वन को ॥ २ ॥
सहाय न हो धन सुत दारा से, पावे फल अपने करमन को ॥ ३ ॥
दास जान के नाथू जन को, देहु अंत सहारो चरन को ॥ ४ ॥

भजन नं० १६
इसी चाल मे

रथ बैठे कौ आये सखी री, श्याम रूप दरसाये ॥ टेर ॥
मोर मुकुट मकराकृति कुण्डल, मेघवर्ण छवि छाये ॥
कमलनयन पीतांबर वंसीधर नट भेष बनाये ॥
दूजी कहती सुनहु सखीरी मोय अक्रूर लखाये ॥
जिन लेजाके अपने पियको मथुरा माँहि बसाये ॥ २ ॥
तीजी कहे महाक्रूर निर्दयी फिर क्यों मुख दिखलाये ॥
जीवनमूल प्रथम लेजाके, जी लेने फिर आये ॥ ३ ॥
चौथी कहें कल नन्द घर आये, उद्धव नाम कहाये ॥
जिनको नाथूराम कृष्णजी, दे सन्देश पठाये ॥ ४ ॥

भजन नं० १७
काटो लाग्यो रे देवरिया इस चालमे तथा सारङ्ग मे

तोसे अर्ज करूं सांवरिया, मेरा बेड़ा पार लंघाय ॥ टेर ॥
होय रहा हूं ब्याकुल प्राणी नदिया गहरी नाव पुरानी, अध बिच झोला खाय ॥ १ ॥
तेरे सिवा हे माधव प्यारा, कोई नहीं है खेवनहारा, मल्लाह रूप बनाय ॥ २ ॥
गज के सम लखि पीड़ हमारी, लेना सुधि दीनन हितकारी, रक्षा कीजे आय ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे हरि यश वरणे पार उतरणे, दीन जान अपनाय ॥ १८ ॥

भजन नं० १८
राग केदारा

कर मन राम को भजन ॥ टेर ॥
तिन्ह सिवाय अन्त मे को नहीं सजन ॥ १ ॥

सुत हेतु नाम लेत मिटी रविप्र की दजन ॥ २ ॥
रट ताही तिरे गीध भीलणी सजन ॥ ३ ॥
नाथू कहें उतार दे गुमान को वजन ॥ ४ ॥

भजन न० १९

पद इसी चाल मे—तथा कालङ्गडो

वे प्रभु कब घर आसी, ऊधो प्यारे वे प्रभु कब घर आसी ॥ टेर ॥
मोर मुकुट मकराकृति कुण्डल, चन्द्रमुखी सुखराशी ॥
तन घन श्याम ललित उरमाला, पीताम्बर चपलासी ॥ १ ॥
किया विदीरन हिया हमारा, चला नयन की गासी ।
गये विसार हमें मन मोहन, डार प्रेम की फाँसी ॥ २ ॥
मथुरा जाय बसे जहँ कुबजा, दुष्टराव की दासी ॥
ताही को पटरानी कीन्ही भक्ती देख रजरासी ॥ ३ ॥
हम संग रास विलास किये, वह वृन्दावन के वासी ॥
नाथू के स्वामी दरसन हित, अँखियाँ तरसे पियासी ॥ ४ ॥

न० २०

एक चतुर नार करके सिंगार—इस चाल मे तथा विहाग मे

जै नन्दलाल असुरन के काल, मै आयो चाल,
शरणे कृपाल, करो मेरी पाल, सन्तन दयाल ॥ टेर ॥
मुनिवर मन मानस के मराल, त्रयरेखा भाल
लोचन विशाल, घुँघराले बाल, गल मुक्तामाल ॥ १ ॥
वृष्टि कराल, करि देख पाल, जल प्रलय काल,
को दीन्ह डाल, गिरिधर गोपाल करि वृज पै ढाल ॥ २ ॥
नाथ व्याल दियो गर्व-गाल, क्या बजा लाल,
वंसी रसाल, मोहे गवाल, अरु लोकपाल ॥ ३ ॥
गुरु नन्दलाल, बतलाई चाल, गा नाथु ख्याल,
दिल हरे कुशाल नैणां निहाल, लख वंशीवाल ॥ ४ ॥

न० २१

राग माढ—भजन नामदेव को

धन २ नाम देव यशधारी जी वन्दों चरणा बारम्बार ॥ टेर ॥
सुमती की भगती लखी जी, तेहिं पति को तनधार ॥
रमन कियो हरि स्वप्न में जी, आये गर्भ मझार ॥
लख सुख रूप मुदित महतारी जी ॥ १ ॥

काती सुदि ऐकादशी जी, ऊगत रवि शुभवार ।।
पड्यो नछत्तर रोहिणी जी, कामदेव उणियार ।।
देवाथे विष्णु अन्शावतारी जी, वंदौं० ।। २ ।।
वामदेव करवाई जी, नाना मँगलाचार ।।
विधवा के सुत हो गये जी, ज्यू निन्दे संसार ।।
निन्दक कुष्ठी अन्ध भये ख्वारी जी, वंदौं० ।। ३ ।।
निन्दक के दुख जब हरे जी, तुम शुभ दृष्टि निहार ।।
पांच वरष की भक्ति को जी, दिखलायो प्रचार ।।
पीया पय ठाकुर बनवारी जी, वंदौं० ।। ४ ।।
वर नर कीनी भ्रमना जी, छंपी जात विचार ।।
मन्दिर बाहर निकारियो जी, फेरे देव दवार ।।
या लख चरण पड़े नर नारी जी, वन्दौं० ।। ५ ।।
मृतक गऊ जिलाय दी जी, दुर्जन भये खुवार ।।
माँगी पतस्याही शय्या जी, नद से कोई निकार ।।
दिखाया ढोल्या नृप सुदहारी जी, वन्दौं० ।। ६ ।।
ग्यारस व्रत की दृढता, छल से देखि मुरार ।।
खूब छान प्रभु छादई जी, रूप आप को धार ।।
विट्ठल धाम पंढरपुर जारी जी, वन्दौं० ।। ७ ।।
तुलसीदल लिख राम को जी, नाम तुला धन लार ।।
ज्ञान बतायो सेठ को जी, माया मद सबगार ।।
नाथू जन लेवे बलिहारी जी, वंदौं० ।। ८ ।।

न० २२

पद इसी चाल मे—वनजारा ऊधो को गोपियो का उत्तर

रे वनजारा ऊधो यहाँ नाँहि ये व्यवहार ।। टेर ।।
वृज में टांडो जोग को जी, ल्याया लाद अपार ।।
यहाँ गायक तौ श्याम सुन्दर की, चाहिए न निराकार ।। १ ।।
चाहो विणजी योग की, तौ ऐसा करो विचार ।।
पीछी बालद लाद के, जा काशी मांहि उतार ।। २ ।।
तिरया वो ही लेवसी रे, जाके ना भरतार ।।
शकुन मनावां श्याम का, म्है नित सज सिणगार ।। ३ ।।
जीवत पति दूजो करै जी, तो वो होय खुवार ।।
एक म्यान मे ना खटेरे, दो खाँडे इकसार ।। ४ ।।
वूरा तज को चाहता, सांठा गज आहार ।।
नाथूराम अलख को जाने, श्यामरूप करतार ।। ५ ।।

न० २३

पद गोपाल को चाल उमराव की तथा माढ

गोपाल थारी सूरत प्यारी लागे कृपानिधान,
जाऊं वारणा जी श्रीभगवान ॥ टेर ॥
सघन घटासी सांवरी, कोमल कञ्ज समान।
शरदचन्द सी सोहनी, सुन्दर काम लजान ॥
गोपाल छवि पर होय रही जी, मेरी जान कुर्वान ॥ १ ॥
तिलक त्रिरेखा भाल पे भ्रकुटी तणी कबान।
तीखे लोचन पद्म से ज्यों रति पति के बान ॥
गोपाल देखत युवती के, होवेगा घायल प्रान ॥ २ ॥
कीर चांच तिल फूल सी, नासा सोह सुजान।
गोल अडोल कपोल की उपमा फवे न आन ॥
गोपाल रच रहे बीड़ा अधर मनोहर नागरपान ॥ ३ ॥
मोर मुकुट शिर सोहता, कुण्डल झलके कान।
कृपा करी नन्दलाल जी, नाथू ने शिशु जान ॥
गोपाल बसियो सदा हमारे नैना धरन्ता ध्यान ॥ ४ ॥

न० २४

पद द्वारिकानाथ का इसी चाल मे

मेरी सुधि लीजो जी द्वारिकानाथ।
करूं में अर्ज जोर युग हाथ ॥ टेर ॥
तुम मधुकर में कीट हूं जी रखिये मेरी लाज।
ज्यों द्रोपदि की राखली, चीर बढावन काज ॥
दुष्ट बल छीज्यो जी द्वारिकानाथ ॥ १ ॥
महा दरिद्री दास था, विप्र सुदामा नाम।
मूठी तण्डुल पाय के हरिया दुःख तमाम ॥
वैसी दया कीज्यो जी द्वारिकानाथ ॥ २ ॥
प्रणपालन करुणा करो, दीन पडा भव कूप ॥
गिरगिट योनी मेट के, ज्यों तार्‌यो नृग भूप ॥
ऐसा ही पद दीज्यो जी द्वारिकानाथ ॥ ३ ॥
रुकमणि श्रीयादवपती महिमा रूप अपार।
दर्शन नाथूराम ने दे सब भर्म निवार ॥
दृगन में रीजो जी, द्वारिकानाथ ॥ ४ ॥

न० २५

पद सांवरिया का- चाल तुम पर वारणा रे, राग माढ

कीज्यो-२ रे सॉवरिया मेरी पालना रे ॥ टेर ॥
हे विष्णु मुनी पदधारी, क्षमा बडी है नाथ तुम्हारी।
करिये चूक हमारी पर कछु ख्यालना रे ॥ १ ॥
प्रणपालन हरि सुरति वरणं, जान पड्यो पदपङ्कज सरणं।
मम निस्तारो करणं विरद सम्भालना रे ॥ २ ॥
मै बालक तुम पिता हमारे, तारो ज्यों प्रह्लाद उबारे।
रूप नरहरि धारे, दैत्य मद गालना रे ॥ ३ ॥
कोटिन तारे पतित अगारी अब के नाथ हमारी बारी।
गज की ज्यू गिरधारी आफत टालना रे ॥ ४ ॥
नाथू उरद्यो भक्ति विशेषी, रञ्जन सन्त दलन अघ केशी।
करुणाकर प्रभु ऐसी सतावें कालना रे ॥ ५ ॥

भजन नं० २६

राग लेद

जो मिल जावे नन्दकिसोर, ऊधौ हम समझत है उस जोग में।
श्याम मुखाम्बुज चन्द्रमा नित चाहत नैन चकोर ॥ १ ॥
जमना बीच हम नहावती, मेरा लेता अम्बर चोर ॥ २ ॥
वृन्दावन के कुञ्ज में मोसे रास किये नेह जोर ॥ ३ ॥
नाथू के मनमोहना, चित बस रहे आठों पोर,
उधो हम समझत हैं उस जोगमें ॥ ४ ॥

भजन न० २८

नाथ कैसे नाईको तन धारे, जासे सैन के काज सुधारे ॥ टेर ॥
बादा ग्राम राम तहां राजा नीति जानन हारे।
ताकें शहर बसे निशि वासर सैना हरि के प्यारे ॥ १ ॥
टहल राज री करने जाते आये सत दुवारे।
तन मन धन बानी से ताके बहुत किए सत्कारे ॥ २ ॥
साधुन की सेवामें दे चित नृप के काज बिसारे।
दूत पठाये भूप कोप करि जब लखि नन्द दुलारे ॥ ३ ॥

भजन न० २७ अस्पष्ट होने से छापा नहीं गया।

धंग मना सों नृप दया निधि नृप के धाम पधारे।
वना हजामत मालिश कर तन सब ही दुख निवारे ॥ ४ ॥
भूजल कर हरि अलग भये हैं, फिर आये सेन विचारे ॥
योंने भूप पुनि क्यों आये फिर गए काज हमारे ॥ ५ ॥
भक्त कहे प्रभु दरस दिए हैं धन्य नृप भाग्य तुम्हारे।
नाथूराम जान सब दीना ताको द्रव्य अपारे ॥ ६ ॥

भजन नं० २९

चाल दादरा नबने तेरा जोबना बीता जायरे।

सितम ने मेरे मोहना मारा तीररे ॥ टेर ॥
काने काने बाल हैं, मोर मुकट शीश दिल हरने वाले हैं।
अद्‌भुत रूप सोहना पीला चीर रे ॥ १ ॥
मोहे कमान तान साध बान नैन का, लग कलेजे आन दर्द ना सहन का।
सताय थारा जोबना व्यापी पीर रे ॥ २ ॥
मद सों मुखारविन्द हासरी, जुलम जादु कर दिया बजाय बांसुरी।
बेपीर नहि होवना दावा गीररे ॥ ३ ॥
मथुरा ठाड़ी है सखी नन्दकिशोर के, नाथूराम विनती कर हाथ जोर के।
प्राण तेरा जोबना जादू बीररे ॥ ४ ॥

भजन नं० ३०

चाल मैया तोरे पैया लागु

सयां मोय घट भरवा दे हट पनघटसे दूर ॥ टेर ॥
गागरी फटाई जल भरने फुँआई, क्यू करत कन्हाई मग मांई ये फितूर ॥ १ ॥
सैना नुगाई पराई मन करोजो बराई, मनठानके ढिठाई निठुराई मगरूर ॥ २ ॥
यामें नहीं है भलाई छाड़ो छल चतुराई नाथू कहे जदुराई मन भाई तू ही हूर ॥ ३ ॥

भजन नं० ३१

चाल नाटका पचनी०

हाँनी प्यारी न्यारी परमप्रवीण, सुन्दर यो वनमाली ॥ टेर ॥
मुकट पीताम्बर सोहे, मंद मुसका मन मोहे।
चन्द्रमुख जोह सोभा माली ॥ १ ॥
मधुरे स्वर बैनु बजावे, सैनु से भाव समझावे।
नैना नेह ल्यावे चित्त कुन्याली ॥ २ ॥

सहस्त्र सखियन संग वाके, सहस्त्र स्वरूप बणाके।
नाथू मन मुद छाके खेल ख्याली ॥ ३ ॥

न० ३२

राग कहरवा चाल—मुकुट भांई पडी अमका के मिंदरमाह

मुकट के लटक लखी जिया अटक रहे तिहि माहे ॥ टेर ॥
मै दधि बेचन जात वृन्दावन गही अचानक बॉह,
गोरस गटपट चखी मेरे अटक रही ॥ १ ॥
मन मुसकान मोहनी मूर्ति पल भर बिसरूं नाय
बातें कैसी चटक सखी ॥ २ ॥
भोंह कबान नये शर तीखे फँसे कलेजे जाय,
रहे है खटक अँखी ॥ ३ ॥
कहां जो गये मनमोहन प्यारे हम उस ही के तांय,
सकल वन भटक थकी ॥ ४ ॥
नाथू नैण दरस रा भूखा कृपा करो कर्त्तार,
मतना राखो अटकी ॥ ५ ॥

भजन न० ★

राग काफी

ऐरी ऐसे मित्र हरी के चाल सकै का जोर ॥ टेर ॥
मुख कछु और हृदय कछु और ही करत और की और।
सो न बसाए सनकादिक हारे कर-२ गौर ॥ ऐरी० ॥ १ ॥
अब हम जाने प्रीतम मोहन जैसे हाडोबोर।
दरसे बाहर प्रेम रँगीला भीतर हियो कठोर ॥ ऐरी० ॥ २ ॥
पलक भार हँस बोल हमारो ले गयो चित्त चोर।
जाय बसे मथुरा में प्यारे नेह तिनका ज्यों तोर ॥ ऐरी०॥ ३ ॥
लिख पतियाँ मोय योग पठावे सुन्दर नन्दकिशोर।
नाथू के स्वामी की चितवन जाणै चंद चकोर ॥ ऐरी० ॥ ४ ॥

भजन न० ३३

राग बणजारी

कह कपिलदेव मुनि ज्ञाता सत ब्रह्मज्ञान सुण माता।
ऐ पचभूत का तन है रहने के लिये भुवन है सो अनित्य रचै है विधाता ॥ १ ॥
जननी पितु भगिनी भाई झूठे सुत कन्य लुगाई ऐ छोड़ देह का नाता ॥ २ ॥

मन वुद्धि चित्त अहकारा इद्रियो से आत्मा न्यारा सो नित्यानद कहाता ॥ ३ ॥
कर अन्त करण मुकर से दीदार लखो भीतर से रट नाथू राम पद माता ॥ ४ ॥

भजन न० ३४
पद इसी चाल मे

गोपाल, ऐ प्राण हमारा क्यूं ले अक्रूर सिधारा ॥ टेर ॥
जिनसे जोवन दिन राती, पल ओटे फाटे छाती रे।
उर हार नयन का तारा ॥ १ ॥
जगमे अक्रूर कहाये, यहां क्रूर कर्म दरसाये रे।
हम तेरा कहा बिगारारे ॥ २ ॥
यम की ज्यू फांसी गेरी, किसभौ का बदला वैरीरे,।
तू अव भय लेने वारा ॥ ३ ॥
नाथू के स्वामी मेरा, नेह लागरहै दिल गहरारे।
एहोव्रज के रखवारा ॥ ४ ॥

भजन न० ३५
ताल दादरा चाल—आया करो इधर भी मेरी ज्यान

भवन मोरे आया करो मोहन-कभी कभी ॥ टेर ॥
द्वारे मेरे आया करो, माखन खाया करो।
ल्याया करो जी संग सखा प्यारे सभी-सभी ॥ १ ॥
लख प्रीतमु दया करो, मेरा कह्या करो।
नाहि डरो चालो घरं प्रीते अभी-अभी ॥ २ ॥
सूरत तेरी सोहनी, है मन कूं मोहनी।
लोचन मगन होत है देखूं जभी-जभी ॥ ३ ॥
नाथू कहै नन्दलाल जी, रहियो कृपाल जी।
नयना बसौ सर्व काल जी तुम्हारी छबी-छबी ॥ ४ ॥

गजल न० ३६
इसी चाल मे

ईश्वर तिहारे नाम की महिमा अपार है।
पट् चार आदि ग्रन्थ में एही जो सार है ॥ टेर ॥
रटते हमेश शेष जिह्वा दो हजार है।
भूभार माय तें धरे तिहि के अधार है ॥ १ ॥
गणेस दिनेस मुनेस विधि और त्रिपुरारि है।
नाम के प्रभाव ही पाये अधिकार है ॥ २ ॥

पाई अजामेल गति सुत पुकार है।
ताको नारायण नाम सो वही उधार है॥ ३॥
वाल्मीक भये ब्रह्म ऋषि उलटे उच्चार है।
कहै नाथू राम नाम का ही सहार है॥ ४॥

भजन नं० ३७

राग केदारा ताल दादरा

केसे लेवे जोग उधो ना वियोग सहन हो॥ टेर॥
जब से हरि मथुरा गये तड़फे हमारे नयन हो।
तब से पड़ा तन सोच में ज्यो सिंधु सुत का ग्रहण हो॥ १॥
दिन कटे ग्रहकाम में मुश्किल बड़ी रैन हो।
दिल आत श्याम की जबै ताप प्रबल में न हो॥ २॥
आनन्दकन्द आ मिलै जी मे तभी चैन हो।
कहत नाथू दीन कूं अब आपही सुख देन हो॥ ३॥

भजन नं० ३८

चाल—झरोखा झाकें नदिनी जनक की

प्यारे भगवान कान्ह हमारे जीवन प्रान,
करी कुर्वान ज्यान तिहारी सुरत पै॥ टेर॥
ललित ललाम छवि धाम अभिराम श्याम,
बारो कोटि काम लखि मोहनी मूरत पै॥ १॥
नैना मार मन हर छिपे मोसे छलकर,
देखे बिन जाऊं मर तेरीई सूरत पै॥ २॥
नाथू कहै जोड़ हाथ गोपी तलफात गति,
दरशन देवो नाथ दया कर झुरत पै॥ ३॥

गजल नं० ३९

कहुं श्याम फरज फरयाद गुजर महर की नजर कर गरीब परवर॥ टेर॥
शकटासुर वक की गति कर होय दामो त्यारे तरुवर॥ १॥
आयो इन्द्र चढ कर व्रज पर रक्षा करि नटवर धरि गिरिवर॥ २॥
नाथू सवर हो लिये खवर दिल फिकर जबर लखि भव सरवर॥ ३॥

गजल न० ४०

चाल मेरा जीया जानता

तेने केई अधम उबारा, मेरा जिया जानता है ॥ टेर ॥
अजामील गीध गज गणिका सजन कसाई तारा ॥ १ ॥
बारम्बार दीनहितकारी नाथ धरे अवतारा ॥ २ ॥
पापी पावन नाम तिहारा निगमागम उचारा ॥ ३ ॥
नाथूराम आप के शरणे वेग करो निस्तारा ॥ ४ ॥

भजन न० ४१

चाल परदेशी मेरा प्यारारे

सांवरिया मोरा प्यारा रे घर चालो मोरे आज ॥ टेर ॥
घणें दिनों से आज दिये दरश विहारी बांके।
भये सफल नैन सुख पाके जी कृपाकरो व्रजराज ॥ १ ॥
कर पकर कहै व्रजनारी मत देर करो गिरधारी।
मैं करूं मिजमानी तुम्हारी जी अति प्रेम युक्त महाराज ॥ २ ॥
पकवान बनाये नाना तुम रुच-२ भोगलगाना।
महलन में रास रचाना जी तुम हमरे सँग सिरताज ॥ ३ ॥
नाथू मन लगन निहारी गये युवति घर बनवारी।
भरी आसा मनसा सारी करुणाकर गरीवनिवाज ॥ ४ ॥

भजन न० ४२

पद इसी चाल मे

सखी लागी सोई जाणे री, हरि नयनों की चोट ॥ टेर ॥
बैठी मैं महल अटारी प्रेम की खोल पिटारी।
तक मारी नेन कटारी लगते गई अंगना लोट ॥ १ ॥
मोय मालूम पहली रहती इत आवैंगे हरि हेती।
मैं सावचेत होय रहती करके घूंघट की ओट ॥ २ ॥
वे तीर सितम कर डाले मेरे पीर हिये में साले।
जोर कछु नहिं चालै को दवा पिलावै घोट ॥ ३ ॥
नाथू कहै वैद्य कन्हाई हरि दरस की दवा पिलाई।
प्रिय प्रेम से बोड़ी चबाई दम्पति के राचे होट ॥ ४ ॥

भजन न० ४३

चाल था काना की वसी

सांवरिया से प्रीत मोरी सांची लगी री माय ।। टर ।।
मै जल जमना भरन गई थी सज सोला सिंणगार ।
बेहड़लो ऊचाय मोहि नेह डालावो मुरार ।।
मोकू ऐसी बगरी माय ।। १ ।।
बैठ कदम पर वैण बजावैं गावैं राग मलार।
विन हरि देखे चैन पड़ेना नयन वहै जल धार।
मानो सरजू उमगी री माय ।। २ ।।
जो मोहन सैं नांय मिलूंगी जिय निकसै देह बार।
प्राण जाय प्यारो नहि पावै क्या लज्जा में सार ।।
अंग विरहना जगीरी माय ।। ३ ।।
लोग बतावैं धेनु चरावे कारो नन्दकुमार।
नाथू क स्वामी कूं जाणें आदि पुरुष करतार।
सारी भ्रमना भगी री माय ।। ४ ।।

भजन न० ४४

राग पूर्वी

सुण प्रगटे नारायण व्रज में मुनि दुर्वासा आए है ।। टेर ।।
ग्वाल बाल सँग जमुना तट पै मोहन खेल रचाए है ।।
नगन वदन घन छज रही है रज ऐसा दरसन पाये है ।। १ ।।
लखि शिशु कर्म भर्म मुनी के मन के मांहि छाये है।
एहि नहि कृष्ण नन्दनन्दन है खाली नाम धराये है ।। २ ।।
अतर्यामी जान अंदेशा मुनि के पास सिधाये है।
गोद में बैठ विनोद किये फिर उठ समुख हरसाये है ।। ३ ।।
नासा द्वार खींच कर स्वासा मस्तक मांह चढाये है।
महाप्रलय कर जल में मुनि को लाखों वर्ष घुमाये है ।। ४ ।।
आकर मगर भयंकर निगले जब मुनिवर घबराये है।
ध्यान किए तब विश्वसुरादिक राधापति दरसाये है ।। ५ ।।
पुनि वैसे हरि चढाशीस में अद्भुत खेल दिखाये है।
छीकत बाहर आन परे जहां रमते श्याम लखाये है ।। ६ ।।
मालुम होत स्वप्न सो पल में कई कल्प बिताये है।
नाथू राम जान परमेश्वर मुनि पद शीश नवाये है ।। ७ ।।

भजन नं० ४५

गजल कवाली, चाल—मुकद्दर हो तोऐसा हो

हुवा प्रह्ललाद सतजुग में हरि जन हो तो ऐसा हो ॥ टेर ॥
तुम्हारी ज्ञान जब दीना हिये मै धार चट लीना।
उसी पर आस्तिक रीना शुद्ध मन हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
पिता ने बहुत धमकाया रचाके आसुरी माया।
प्रभु को नाँहि बिसराया दृढ़पन हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
होलिका आग शक्ति से लगीं जालन जुगति से।
लगाने ताव भक्ति से पाक तन हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
अखीर में नरहरि साईं प्रगट भये भक्त केताईं।
वो नाथू अन्तके मांहि ग्यान धन हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥

भजन नं० ४६

इसी चाल मे

हुआ एक दूत रघुवर के सुलायक हो तो ऐसा हो ॥ टेर ॥
लांघि सिंधु सिया सुधि ली दलदुर्जन समर रोपे।
वीर रणधीर सेना के विनायक हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
भूमि लछमन पड़ा सरसे धारकर द्रोण गिर लाये।
सजीवन दिए जिए जोधा सुपायक हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
लेगए रामलछमन को बलि देने अहिरावन।
हते दुष्टों को जा पाताल सहायक हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
भजे कोई दास हनुमतको निडर सो हो गए जम से।
कहे नाथू अभय वर के जो दायक हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥

भजन नं० ४७

इसी चाल मे

गरीबपरवर हरि मेरा दुःख हरना मुनासिब है ॥ टेर ॥
विषयवस होय मै चेरा किया अपराध बहुतेरा।
सहिष्णु नाम है तेरा सहन करना मुनासिब है ॥ १ ॥
शिशु शठ होय भी जाता दया करते पितु माता।
इसी विधि मोय जगत्राता करो करुणा मुनासिब है ॥ २ ॥
तिहारी ओर मै तकके त्रासता आस उर रख के।
मिले मासूक आशिक के दिल भरना मुनासिब है ॥ ३ ॥
पड़ा हूं चरण सुखधामी दीनता लखो अंतर्जामी।
शीश जन नाथू के स्वामी हाथ धरना मुनासिब है ॥ ४ ॥

भजन नं० ४९
इसी चाल मे

होय वेकूफ दिल प्यारे रूप कू क्यो भुलाया है ॥ टेर ॥
अगर तुम कहते जग क्या है इसी का कौन है कारण ।
सफल वो ही बना है जो स्वयं खुद हो बनाया है ॥ १ ॥
कहै सुख दुःख क्या वस्तु भोक्ता कौ कहो इनका ।
वृथा कल्पित किया मन को कपी ज्यो कर फँसाया है ॥ २ ॥
जो कहे दरसता क्या है बढे और क्या घटै नित की ।
सोई गुण तीन तत पांचू इसी को कहत माया है ॥ ३ ॥
दूध में नीर हो शामिल हो गया एकरंग दोनू ।
कहे नाथू जुदा दरसै हँस हो ध्यान लाया है ॥ ४ ॥

भजन नं० ५०
राग कहरवा

मुसाफिर अँखिया खोल गाफिल सोवै मती ॥ टेर ॥
यो नर जन्म रत्न ले आयो करि हरि जी से कौल,
मुफत खोवे मती ॥ १ ॥
षट् तस्कर तेरी गेल लगे हैं चोरन चीज अमोल,
मोह बस होवै मती ॥ २ ॥
ख्याल रखो तुम माल अपन का चोर निहारे पोल,
इत उत जोवै मती ॥ ३ ॥
ठाडो झाज किनारे आके पीछो ताहि झखोल,
जान डुबोवै मती ॥ ४ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे राम नाम मुख बोल,
कॉटा बोवै मती ॥ ५ ॥

भजन नं० ५१
राग षट

कहे प्रह्लाद दैत्य बालक को पढ़ो हरि को नाम रे ॥ टेर ॥
धन सनमान राजबल संपति सुख अरु सुन्दर वाम रे
जान लेओ तुम विद्या पढे से होय सुख तमाम रे ॥ १ ॥

भजन नं० ४८ अस्पष्ट होने मे नही छापा गया ।

सुख और दुःख स्वाभाविक होते जो कछु लिखे कलाम रे
आशा क्यों वे करे नर मूरख भोगै नरक ग्राम रे ।। २ ।।
जो तुम जानौ उद्यम किये बिन ना आवे आराम रे
अनचीती कभी क्यों आपड़ती विपता अपने धाम रे ।। ३ ।।
कर उपाव कृष्ण पद प्रीति रहे आठों याम रे
नर देही को मोही करतब अन्त में आवै काम रे ।। ४ ।।
धर्म अर्थ अर काम मोक्ष के दाता श्रीपति श्याम रे
निगमागम में सार सत्य यो गायो नाथूराम रे ।। ५ ।।

भजन नं० ५२
राग भैरवी

मन खल कामी राम भजैना । टेर ।
अति चंचल शठ हठ बालक ज्यों हित अनहित समजैना
आश अमोघ भोग विषय को लख के रोग तजैना ।। १ ।।
भए समीप सुधा सम बारि दिसा भ्रम सूजेना
खाली खार ताल लखि दौरत मृगजल प्यास बुझै ना ।। २ ।।
लाखन बर अपमान करावे तो भी मूढ लजैना
नाथू कहे शठता यह जब तक नर श्रीकृष्ण भजेना ।। ३ ।।

भजन नं० ५३
राग आवसावरी

हे हरि, चरणन मन क्यों नी लागै
यो तो निज कुलाव नहि त्यागे ।। टेर ।।
तौनज भाव होय मुद मंगल दारुण दुःख भय भागे
मोही विसार अनन्त विषय सुख भोग पुनि२ माँगे ।। १ ।।
आदि करम कर यहाँ पाये यहाँ करे सो आगे
सब जानत हे यदपि सुकरम कर वांचत नहि सागे ।। २ ।।
धरहु नाथ शिर हाथ तभी शठ मोह नींद से जागे
नाथूराम भजे जब हि ते कुपथ सकल ही त्यागे ।। ३ ।।

भजन नं० ५५
सावरिया तुम दरसण विन मो०,

दया करो ऐसी मुरारी जी ।
मन यो अनारी तज कुमति सारी लौ रखे तुमारी ।। टेर ।।
मै न अहितन उससे रह्यो जो गरल चढ्यो व्यभिचार ।

विषय नीम मीठो लगै जी रहम धनन्तर धार।
हरी विष भो दुख भारी जी ॥ १ ॥
नाव उजागर अड रही जी भवसागर मंझधार।
हे जगपति बण खेवट्या जी खेय लगावो पार।
लर्ज ये अर्ज गुजारी जी ॥ २ ॥
दासी कुब्जा, भीलनी, गणिका गौतम नार।
बूडत व्रज गज तारियो वैसे ही विरद विचार।
उबारो मोय गिरधारी जी ॥ ३ ॥
पुनि-२ वन्दौ पद पदम जी सुण-२ सुयश उदार।
सरण परे गति दीजिये प्रणपालन कर्तार।
दास नाथू वलिहारी जी ॥ ४ ॥

भजन न० ५५
राग भीमपलास

हमारी सुध वेगि लेवो गिरधारी जी ॥ टेर ॥
पांच ठगनिया नांच नचावें निसदिन न्यारी न्यारी ॥ १ ॥
मनमोजी वरजो नहि मानै ऐसो निपट अनारी ॥ २ ॥
मै हारयो बहु भांति जतन करि ना कछु जोरि हमारी ॥ ३ ॥
करुणा कर नाथू पर स्वामी भक्ति दो तुम्हारी ॥ ४ ॥

भजन न० ५६
राग श्री

हे हरि मेरो मन निपट अज्ञान री ॥ टेर ॥
विषययान्द बदरीफल चावे परतछ लख रसखान री ॥ १ ॥
ब्रह्मानन्द नारेल कठोरो त्यागे बाहिर जान री ॥ २ ॥
कृपा करि प्रभु भरम निवारो जब रस ले पहुचान री ॥ ३ ॥
नाथू कुं माधवरी मूरति दरसे सुख होय महान री ॥ ४ ॥

भजन न० ५७
राग पीलु

हरि से हेत कीया सो जीते रे ॥ टेर ॥
दैत प्रह्लाद विभीषण निसचर भये प्रभु के प्रीते रे ॥ १ ॥
अभिमानी दुर्जन मूरख के जन्म वृथे बीते रे ॥ २ ॥
समझ मना एक दिन जम गहसी जैसे मृगनको चीते रे ॥ ३ ॥
कहते नाथूराम भजन बिन अन्त में जायेंगे रीते रे ॥ ४ ॥

भजन न० ५८

राग वरवा चाल—मुदडी दा नगीना

जरा सा महर का प्रभु कर दे झोला रे ॥ टेर ॥
तूंही ब्रह्मा तू विष्णु हाँ रे प्रभु तूही शिव भोला रे ॥ १ ॥
तेरे नांव पर आसक प्रभु होक हाँ रे जग वन में डोला रे ॥ २ ॥
दिल अन्दर दीदार तुम्हारा हाँरे प्रभु ले क्यों ओला रे ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे हाँरे तेरे चरण का गोला रे ॥ ४ ॥

भजन न० ५९

राग कहरवा चाल—यारो गरमी

मन भज ले श्री भगवाना, हे 'यारो थिर नहि थाना ॥ टेर ॥
कुल सुत दारा द्रव्य खजाना क्या भये देख दिवाना ॥ १ ॥
हिरणाकुस रावण से दाना खप गये कर अभिमाना ॥ २ ॥
काल बली का गड़े निसाना होत है माल विराना ॥ ३ ॥
नाथूराम कृष्ण गुण गाना नीके मिला जमाना ॥ ४ ॥

भजन न० ६०

चाल—लु गहदो बगलो छवा दे रे

म्हारा दिलवर कान वसी हदो गान सुणा देरे ॥ टेर ॥
इन वंसी में सांवरा जादूरे टोना मोहनी मन्त्र मनहारी रे,
अरे हांरे मन हारी भगवान ॥ १ ॥
इन वंशी मेंरे सांवरा सांता ही स्वर है राग रुरागसारी नाना तान ॥ २ ॥
इन वंशी मेंरे सांवरा जगत मोही जे इन्द्र मद नारि भुले ध्यान ॥ ३ ॥
इन वंसी मेरे सांवरा मो मन लाग्यो सुद बुद भूली सारी कुर्वान ॥ ४ ॥
इन वंसी मेंरे सांवरा मौज घणी री रोज बजावो सुखकारी द्वारे आन ॥ ५ ॥
इन वंसी मेंरे सांवरा नाथू दरजी पुनि-पुनि ले बलिहारी वारों प्रान ॥ ६ ॥

भजन न० ६१

रगत लावनी चाल—मेरा पाड पडी जगैयार जरा चदा

छोड विषय का इश्क करो मन प्रभुगुण गाने का।
तेराजीना सफल हो जाय मजा जब नर तन पाने का ॥ टेर ॥
ईश्वर इस्की सत भये पेली के जमाने का।
सो परमानन्द पायेरे मिटा दुख आने जाने का ॥ १ ॥

सुर दुर्लभ नर जन्म रतन वृथा न गमाने का।
तोय भला मिला है पर्व जिया शुभ इश्क कमाने का॥ २॥
रख जीवों पर रहम प्रेम चरणों मे लगाने का।
मुख्य कर्तव्य है दोही-हरि माशूक रिझाने का॥ ३॥
कर साधन आशिक हो वदे अमर ठिकाने का।
पुनि पुनि नाथराम, नहि यह मौका आने का॥ ४॥

भजन न० ६२

चाल रास दौरिय्या की माधौ वन वँशी वजाई री

व० कृ० का —देवो देवो री गेंद हमारी पियारी चुराई तूने॥ टेर॥
जवाव राधा का—जावो जावोजी बिहारी तुम्हारी न गेंद लखी झूठ।
व० कृ० का —खेल रहे हम जमुना तट पर, टिप्पा खाकर पड़ी उधर कों,
उठालई व्रज नारी॥ १॥
व० रा० का —मैं जमुना तट नित की आऊँ भरने गागर वारी।
हम ना नैन निहारी तिहारी तिहारी॥ २॥
सांच कहै को नारि जगमे करै सो चोरी जारी।
छिपी कचु में फूले सीना रहे सबूत गुजारी॥ ३॥
कहां लगाई ठग बाजी आवै मो मुखगारी।
चारी करबो हम ना सीखी माखन चोर मुरारी॥ ४॥
ठट्ठावाजो जाण मती तू कंदुक चोरन वारी।
कैतो देवो सम्हालन कांचु कहै अदरजा प्यारी॥ ५॥
लई सम्हाल लाल कुचाली क्या कदुक सो नारी।
अगिया मे जो नां निकसी तौ इज्जत दावा दारी॥ ६॥
डाल हाथ चौली में बौले मुसका के गिरधारी।
गये एकसौ दौय मिली है वे त्रिय आनन्द कारी॥ ७॥
तुम तौ मौहन बड़े ठगौरे पर धन पर मनहारी।
नाथू कमे लीला पुरुषौत्तम पल पल बलिहारी॥ ८॥

भजन न० ६३

राग होरी

खेलत फाग श्री गणराजा, मुद मगल करतारधिराज॥ टेर॥
ब्रह्मा विष्णु इंद्र पधारे, सकल जुड़े है देव समाजा॥ १॥
नारद शारद गधर्व आदि, अनहद करते गाजा वाजा॥ २॥
उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, फगवा बांटत मौदक खाजा॥ ३॥
नाथूराम गजानन ध्याव, सारे सकल जनो के काजा॥ ४॥

भजन नं० ६४

इसी चाल में कृष्ण का

किण डारी रे मौ पर रंग पिचकारी ॥ टेर ॥
कस वली के राज के माहीं कौन भयौ ऐसौ नवल खिलाड़ी ॥ १ ॥
रग रसिया कौ नाम बतावौ नीतर मेंद्यू गी दो गारी ॥ २ ॥
लचकी मेरी पतरी कमरिया, भीजगई सब जरकस सारी ॥ ३ ॥
नाथू स्वामी हंस कर बोले फागुन है अनुराग को प्यारी ॥ ४ ॥

भजन नं० ६६

चाल—होरी डगर मोरी छोड दे लला

भवन मोरे चालो लला होरी खेलोंगी महलन में ॥
मोज कछु आवत मोहन हाँ रे पनघट के गैलन में ॥ १ ॥
तुम होरी के बड़े खिलारी, हाँ रे लाला, मेरोचित्त खेलन में ॥ २ ॥
उडत रग अति आनन्द हो के, हाँ रे, अपण अकेलन में ॥ ३ ॥
नाथू खेल संग हरि होरी, हाँ रे, उन गिरन झमेलन में ॥ ४ ॥

भजन नं० ६७

इसी चाल मे

कैसे मारो पिचकारी तक तक ।
मै तों हारी घूंघट ढक ढक ॥ टेर ॥
भये मतवारे मानत ना रे मै न नशे में छक छक ॥ कैसे० ॥ १ ॥
पिचकारन धारन से मेरी छतिया करती धक धक ॥ कैसे० ॥ २ ॥
पिहर जाती पनघट राह पे, मोय हंसते बक बक ॥ कैसे० ॥ ३ ॥
श्याम निर्लज्जता एती करो ना जगत करेगी चक चक ॥ कैसे० ॥ ४ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे लज्जा मेरी रख रख ॥ कैसे० ॥ ५ ॥

भजन नं० ६८

सांवरो ब्रजमण्डल माँहि, हर्ष की होरी मचाई ॥ टेर ॥
सज सिणगार गौपियाँ सारी घर घर से चलि आई
अतर अवीर कुमकुमा केसर घोर घोर रंग ल्याई, श्याम पै छिड़कन ताँई ॥ १ ॥

भजन नं० ६५ अस्पष्ट होने से नही छापा गया ।

उड़त गुलाल आँधी ज्यूं गहरी नभ छाई
घरर घरर कर घन ज्यों गाजें, जरर जरर जरजाई. धार पिचकारी कन्हाई ॥ २ ॥
रंग राचे सखि नाँचे सावे, राग अलाप सवाई
हरि बजावै बेन मनसुखो ढोलक तान मिलाई, गोपनारी मन भाई ॥ ३ ॥
ऐसो फाग मच्यो गोकुल में शोभा बरणी न जाई
नाथूराम श्याम के शरणे मुदित भयो गुणगाई, बसौ हरि हिये सदाई ॥ ४ ॥

भजन नं० ७०

चाल—आज रङ्ग बरसे

देखो आली मेघवा ने लगाई, झड़ी । टेर ।
चपला चमके बादर बरसें बूंदा बड़ी बड़ी ॥ १ ।
श्याम बुलाई कुंज भवन में झूलन इस ही घड़ी ॥ २ ॥
नहिं जाऊँ तो प्रीति घटत है भीज गई चुनड़ी ॥ ३ ॥
बिनवे नाथू घन गम खावो, प्रभु से मिलन खड़ी ॥ ४ ॥

भजन नं० ७१

सग झूलाँरे, झूलाँरे साँवरिया श्रीयमुना की कूलाँरे । टेर ।
सावन आया, घन नभ छाया, जल बरसाया, सुहाया रे
वन मांही हरि बेलां छाई, पानां फूलां रे ॥ १ ॥
बोली प्यारी, पक्षी न्यारी, न्यारी रहे उचारी रे
गावै नारी, बसी तुम्हारी सुण हम फूलां रे ॥ २ ॥
जल्दी चालो, डोलर घालो, पर्व न टालो, भालो रे,
पालो नाथू दीन जान पल भर नहि भूलां रे ॥ ४ ॥

भजन नं० ७२

राग मलार सोरठ

हिंडोलना मे झूले युगल कुमार । टेर ।
गवरे बदन मदन मन हरना, है शषा अवतार
मेघवरण पीतांवर सौहै सुन्दर कृष्ण मुरार । हिं० ॥ १ ॥
वारी वारी झौटा देवै गोप हर्ष मन धार
चग मृदंग उमग बजावे गावत राग मल्हार । हिं० ॥ २ ॥

भजन नं० ६९ अस्पष्ट होने से छापा नही गया ।

घर-ररररररर घन नभ गाज झरररररररर झरत फंवार
सररररररर चलत हिंडौलो है झूलन की वहार। हिं० ॥ ३ ॥
रेसम डौंर कदम की शाखा शोभा अपरम्पार
नाथूराम कृष्ण के शरणे सुमिरत वारंवार। हिं० ॥ ४ ॥

भजन नं० ७३

सखि श्याम घटा नित छावैरी, लखि श्याम छटा चित आवै। टेर।
पपियो वोलै छाती छोलै विरहना जोर जनावै री ॥ १ ॥
वारी वरसे जीया तरसे दामन दमक डरावै री ॥ २ ॥
आवन नीको वनवारी को सावन फीको जावै री ॥ ३ ॥
नाथु के स्वामी आशिक नामी जिय की तपन मिटावै री ॥ ४ ॥

भजन नं० ७३ क
राग भड़ा झिंझोटी

पपिया कहना मानरे मत वोल या जवान ॥ टेर ॥
जवान खोलै जव पीउ पीउ वोलै लागे विरह का वान रे ॥ १ ॥
पीय हमारा वसै द्वारका कुब्जा पर कुर्वान रे ॥ २ ॥
हम कूं योग भोग वैरी कूं या ठाने भगवान रे ॥ ३ ॥
नाथू स्वामी करणा करके दरसन दीज्यो आन रे ॥ ४ ॥

नं० ७४
इसी चाल में

न पाया मोहन मेरा रे मैं तो सर्व वन हैरा ॥ टेर ॥
फिकर सतावै जाय छिपे कहां गोकुलचन्द उजेरा। मैं० ॥ १ ॥
कहां अव जाउं कैसी करूं रे होके जगत अँधेरा। मैं० ॥ २ ॥
को अव ऐसा आन मिलावै मोरे मनका लुटेरा। मैं० ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणें पड पंकज का चेरा। मैं० ॥ ४ ॥

नं० ७५
चाल तुम डॉ० गा० नि०

महारानी राधा हरिये हमारी वाधा ॥ टेर ॥
लीला देवी प्रभु संग करने प्रगटी सन्त अराधा ॥ १ ॥

धन्यवाद दी सब पटरानी भक्ति रूप लखि ज्यादा ॥ २ ॥
वेद विधि जस गावैं तेरो महिमा अगम अगाधा ॥ ३ ॥
नाथू जन पर कृपा करके मेटो जन्म विषादा ॥ ४ ॥

न० ७६

चाल अटरिया पै धीरा रे

वैरागण मीरा राणुजी कर रे वृथा भोड़ ॥ टेर ॥
सुण सुण री राणी साल दुसाला शिर ओढ ।
नहि नहि रे राणा चहिये न दरीयां सौड़ ॥ १ ॥
सुण २ री राणी छपर पलंग पर पौढ ।
नहि २ रे राणा षट नर कॉरी ठोड़ ॥ २ ॥
सुण २ री राणी काठ की कंठी डारो तोड़ ।
नहि २ रे राणा मोती हारा डारो फोड़ ॥ ३ ॥
सुण २ री राणी राम सुमरणा छोड़ ।
नहि २ रे राणा हरि भजना को लाग्यो कोड ॥ ४ ॥
सुण २ री राणी पति कूँ मानों रण छोड़ ।
नहि २ रे राणा नाथू कहै जस जोड़ ॥ ५ ॥

न० ७७

चाल—ख्याल की राग माड

सतदेव मुरारी जाऊँ वलिहारी, थारा रूप की ॥ टेर ॥
कीट मुकुट मकराकृत कुण्डल पटभूषण अति भारी ।
नैन विशाल भाल त्रिरेखा भृकुटी धनुषाकारी ॥ १ ॥
हास मन्द मुख चन्द छवि के सिन्धु मुनि मन हारी ।
शुक्ल वर्ण मन हरण वदन पर कोटि मदन देउँ वारी ॥ २ ॥
श्रीपद मुनि उर गले वनमाला कौस्तुभमणि छवि न्यारी ।
दीर्घ चारु भुज गदा पद्म अरु शख चक्र कर धारी ॥ ३ ॥
हरें दरिदर सन्तन द्विज का दे दरसन बनवारी ।
पायो द्रव्य लकड़हरा अति भक्ति धार तुम्हारी ॥ ४ ॥
चन्द्रचूड भक्त भूपति की विपति सर्व निवारी ।
साधु वणिक तु गध्वज परच्यो देख भजे गिरधारी ॥ ५ ॥
पात पदारथ चार करे ज्यो पूजा व्रत नर नारी ।
नाथू स्वामी सतनारायण पूरी आस हमारी ॥ ६ ॥

न० ७८

राग चन्द्राणी

आज मोय बाबुल घणो सतावेरी, प्रभु तौ विन कौन बचावै ॥ टेर ॥

कर अति क्रोध दुष्ट हिरणाकुश मो पर खड्ग उठावै ।
कहे बता अब राम तुम्हारो नहितर जमपुर आवै ॥ १ ॥

कही पिता कूं राम नाम तो चर व्यापक श्रुति गावै ।
तो मै मो मै खडग खम्भ मै परतछ प्रभु लखावै ॥ २ ॥

समझत नहिं तात हरिद्रोही दुगुणो कोप बढावै ।
दई मुष्टिका खम्भ फट्यो जब नरहरि रूप दिखावै ॥ ३ ॥

असुर मार नृसिंह भक्त कुं राजतिलक बैठावै ।
नाथू दरजी शिव ब्रह्मादिक जय जय शब्द सुनावै ॥ ४ ॥

भजन न० ७९

चाल—पति मरा रेल मे कट के

सखि देखोरी निगाह करके, कैसे दो सुन्दर लरिके ॥ टेर ॥

पूर्व तपकर नंद जसोदा लाल रूप फल पाये
गोकुल पावन कीन्ह शुचि मथुरा को अव करणे आये
छवि लखि लेय मन हर के । कैसे० ॥ १ ॥

गूजर सुत जे नांहि दीसत है तोन देव मांसु कवे
लीना है अवतार समझ में आत श्री हरिहर देव
सरमात रूप रति वर के । कैसे० ॥ २ ॥

गवर स्याम तन ललित रसीले नैन तीर से तीखे
मार विदीरण हिया जब करते रूप अजब दीखे
कुरवान भई चित धर के । कैसे० ॥ ३ ॥

किये विहार विहारी संग नित धन्य उसी ब्रजनारीने
है शुभ दृष्टा नजर लगीना ऐसे अनूप मुरारी नें
मनमोहन मुख नटवर के । कैसे० ॥ ४ ॥

रामकृष्ण का रूप देख मथुरा की युवति फूलरही
नाथू होय मुदित लख चकवी चन्दा सुद बुध भूलरही
प्रभु तारन भवसागर के ॥ ५ ॥

भजन न० ८०

चाल पणाहारीजो है लोय

अरज करूं कर जोड़ के गिरधारी जी तोय,
लीज्यो सुद बजरंग बालाजी ।। टेर ।।
दास आप नु जाण के बलधारीजी मोय दीज्यो बुध बजरंग वाला जी ।। १ ।।
किरपाकर विड़द आपको उपकारी जी जोय कीज्यो मुद बजरंग
। बाला जी ।। २ ।।
दरजी नाथूराम के सुखकारी जी होय सहायक रीज्यो खुद बालाजी ।। ३ ।।

भजन न० ८१

चाल ह्मारो छैल मोह लीयो०

कुब्जा हटीली नार तेने काई पुण्य कीयो ये
तीन भवन का नाथ ज्याने तूं मोह लियो ये ।। टे० ।।
कांई तूं काती ये प्यारी मंगसिर न्हाई
कांई तूं परवी के माय कंचन दान दीयो ये ।। १ ।।
कांई तू तीरथ सारा बरत कियाये
कांई तूं काशी जाय सिर पे करोत लीयो ये ।। २ ।।
कांई तूं निरणी गवर मनाई,
राजी होय गवरी माय तुझे वर यो दीयो ये ।। ३ ।।
कांई तू भोलो महादेव मनायो
ज्यां सेई म्हारो भरतार वश हौय रह्यौ ये ।। ४ ।।
वश मै ये कर कितना दिन रखसी
आखरतो रेवे लो हमारो पियो ये ।। ५ ।।
नंदलाल गुर कृपा कीनी
नाथूराम गुण गाय होवे लो सफल जियो ये ।। ६ ।।

भजन न० ८२

चाल देखो नखरो नखराली को

देखो नाटक बनवारी को धारी रूप सनारी को । टेर ।
अतर लगा सिर वेनो गुंथाई, गजमोतियन की माँग भराई
बिंदी भाल मुख बीड़ो रचाई, नकवेसर गालां छवि छाई
हिवड़े हार हजारी को ।। १ ।।

नव सत अंग जड़ाऊ गहना, घरघुमेर घागरो पहना,
अंजन सारे तीखे नैना, मखमलि अंगिया का क्या कहना,
दुपट्टो जरी किनारी को ।। २ ।।
रति सरूप जोबन मतवाली, सुन्दर घड़ी विधाता ठाली
बिछिया की सिर धरलाई डाली, लचके लक मंदगति चाली,
पगपायल झनकारी को ।। ३ ।।
बरसाने घर २ किलकारी, करत कोऊ बिछिया नारी
पोंछे जहाँ वृषभानु दुलारी ओढी तन पर सुन्दर सारी
जगमग चमकी तारी को ।। ४ ।।
राधे की सखियाँ अनुरागी, ओडलिया सबदेखन लागी,
बिछिया जोवत वशी पागी, या मुरली मोहन की सागी,
जान्यो छल गिरधारी को ।। ५ ।।
लपट झपट सखि बैनु छिपाई, प्यारी सनारी कैसे लाई,
गुलचा गाल पे दे मुस्काई, जब निज कीनों रूप कन्हाई,
नाथू कह पद, गाली को ।। ६ ।।

भजन न० ८३
इसी चाल मे

आशिक करता अरजी है माशूक की क्या मर्जी है ।। टे० ।।
नाम सुनत ही दिल ललचाया, देश विदेश सबही ढुंढवाया ।
पता तुमार कहीं नहिं पाया, तेरा देवी भेद बताया ।।
तबियत तुम से उरझी है ।। १ ।।
आशिक जान गरीब परवर है, महिमा बहोत जबर है ।
मुझे मिले बिन नाहिं सबर है, तेरी जी को तुझ खबर है ।
गरजी या अलगरजी है ।। २ ।।
माशूकि तुम पुनम का चन्दर, हम चकोर आशिक चाहंदर ।
दया बिचारो हिरदे अन्दर, बेग दिखावो सूरत सुन्दर ।
कैसी कर्ता सरजी है ।। ३ ।।
हम इसका है दरस दिवाना, पहरे आशिकी का यह बाना ।
रखो आस नेह पार लगाना, जासु मिटै भव आना जाना ।।
फिर सब आफत सुरजी है ।। ४ ।।
पड़दा खोल अमोल दरस के, आनन्दकन्द मन्द मुख हँस के ।
बचन बोल दया भरे रस के, दो आशिक कू मोहब्बत चसके ।।
चाहत नाथू दरजी है ।। ५ ।।

भजन नं० ८४

चाल—बूटीदार घाघरियो

प्राणाधार हिये को हार मम सिरदार सांवरियो । टेर ।।
जब से करके गये बियोग, तब से सर्व गये सुख भोग ।।
भेजी पतियाँ मैं लिख जोग, अंग मैं छायो विरह अमोग ।।
दीसै न यार साँवरियो ।। १ ।।
उधोजी मिले हरि एक वार, तो मै कराऊँ निश्चय रार ।
कारण हम है दावादार, मन हर ले गयो पलका मार ।।
वो दिलदार सांवरियो ।। २ ।।
उधोजी अगुण बताओ जाने, तिन की बात कहूँ क्या थाने ।
कहता शर्म आती है म्हाने, खिलाइ हिये लगा सखियाँने ।।
कर कर प्यार साँवरियों ।। ३ ।।
नाथू कवि कहै कोऊ ज्ञान, अलख अगोचर है भगवान ।
सो तोले विन देख्याँ मान, हम तो सूरत पर कुर्बान ।।
नन निहार सांवरियो ।। ४ ।।

भजन नं० ८५

चाल—ममदणसी लखिणा वैय

हां ए कुब्जा धन तिहारो भाग ।। टे० ।।
विधना दियो छ सुहाग ए महाराणी राधा ।
ज्यां का दर्श देवाँने दुर्लभ हां ए कुब्जा तो से ऐसो अनुराग ।। १ ।।
चन्दन भाल लगात निसङ्की, तिर्वकी भई चौता लङ्की ।
हां ए कुब्जा पूर्व पुण्य गया जाग ।। २ ।।
वनमाली माली वन आए, तेरा वदन मैं खूब लगाये ।
हां ए कुब्जा रूप तणाँ नववाग ।। ३ ।।
ऐसा चिमन की क्या कहूं शोभा, मधुकर माधव का मन लोभा ।
हां ए कुब्जा लाग्यो प्रेम अथाग ।। ४ ।।
नाथूराम श्याम केशरणे हरि जस वरणे पार उतरणे ।
हां ए कब्जा चित चरण रह्यो लाग ।। ५ ।।

भजन नं० ८६

बादल वरणी ओढणी

म्हांने प्यारी लागै थारी गोपाल, जादूगारी बंसरी रे लाल ।। टे० ।।
मोह लिये गवां सव मोह लिये ग्वाल, मोह लिया जी प्रभु मेरा मन वाल ।। १ ।।

मोह लिये शार्दूल मोह लिये स्याल, मोह लिया जी प्रभु नारी नरपाल ॥ २ ॥
मोह लिये देवता रु मोह लिये व्याल, मोह लिया जी प्रभु मुनि दिग्पाल ॥ ३ ॥
ऐसी था मनोहर गावत रसाल, सुणकर नाथ मन होत कुसाल ॥ ४ ॥

भजन नं० ८७

रा० माड० चाल—जवाई म्हाने वालो लाग ऐ

श्याम म्हाने वालो लागे ए राणी राधारो भरतार,
विहारी म्हाने वालो लागे ए ॥ टे० ॥
मोर मुकुट सिर सोहै ए हां ए वारे कुंडल झलकेदार।
उगे रवि शशि ज्यूं सागै ए ॥ १ ॥
वाहैक बाण दृग तीखा, ए हां ए ज्याकी मदन बाणसी धार।
लगती हिये विरहना जागे ए ॥ २ ॥
मन्द हसन वन हां ए बांको चन्दा सो दीदार।
लखत दारुण दुःख भागे ए ॥ ३ ॥
नाथू जन यूं बिनवे ए हां ए ऐसा सुन्दर नन्दकवाँर।
सदा वसो नैना आगै ए ॥ ४ ॥

भजन नं० ८८

चाल—जिस का आनी जुदा हो जिसका निकाम है

जिसका जिया हरि से लौ ल्यावे।
तिसका जीना सफल हो जावै ॥ टे० ॥
लाखों अधम अगारी तरगे, वेद पुराणा गावै ॥ १ ॥
सुर दुर्लभ नर देह को, लाभ राम भज आवै ॥ २ ॥
पंच पशु सम अज्ञानी हो मूरख जन्म गमावै ॥ ३ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे जीवन मुक्ति पावै ॥ ४ ॥

भजन नं० ८९

चाल नद के लाला कृष्ण मुरारी

म्हाने अब तो मुख दिखलाओ जी मनमोहन प्राण पियारे ॥ टेर ॥
वन उपवन पर्वत भारी, सब ढूंढ ढूंढ हम हारे।
तुम ज्यादा मति तरसावो जी राधावर नन्ददुलारे ॥ १ ॥
लखि जब से सूरत तेरी, भई बिना मोल की चेरी।
सो नैना फिर दरसावो जी सुखदेना वंसी वारे ॥ २ ॥

युग लोचन बान तुम्हारे, सो फँसे हिरदे हमारे।
प्रभु नेक दया उर लावो जी गिरधर नैनों के तारे॥ ३॥
थी मारन की हरि दिल से, क्यो बचालई विष जल से।
कह नाथू पार लगावो जी प्रीत के पालनहारे॥ ४॥

भजन न० ९०

लावनि—रगत लगडी अदर ख्याल

दीनानाथ दयाल दया कर कई जनके कारज सारे।
हूं शरण तिहारे दुःख दारिद्र हर सरजण हारे॥ टेर॥
अनिरुद जान चरण का खुद अनुचर सुद लीजे।
या अर्ज सुनी जे शिशु की चट अघ कूं गञ्जन कीजे॥
यदु कुल नायक सदा सहायक प्रणतपाल तू ही रीजै,।
नहिं देर करीजे राधिका सहित कृष्ण दर्शन दीजे॥
सेर-जनक हिरणाकुश सबन को दर्श दीना नरहरि।
दीया कष्ट ताकू नष्ट कीना उस घड़ी।
धनुष तोरा तिनके की ज्यू जनक की चिन्ता हरी।
करी रक्षा कोई, कोई करी सी करि की करी।
(मिलाप) नेक टेर सुणते ही त्याग खगराज आय गज कूं तारे॥ १॥
लख आरत लघुचर कुञ्जर ज्यो शीघ्र नाथ करिये करुणा।
लीना हूं शरणा जान के कृष्ण तोय तारन तरना॥
दुष्टताई हुये गुनाह सो ना कसूर चित पै धरना।
दारुण दुःख हरना सहिष्णु सहन हिये औगण करना॥
सेर-इन्द्र को सुत हत हरी जी सूरज सूत को दुःख हर्‌यो।
शरण शत्रु को अनुज आयो ताही को निधड़क कर्‌यो॥
सती कूं नगी करण दुःशासन गाढो अर्‌यो।
खींच हारयो नीच लेकिन चीर ना तासो—सर्‌यो।
(तोड) जिन के रक्षी सरोज अक्षी को खलने दक्षी कर डारे॥ २॥
हे नट नागर करुणा सागर जगत उजागर जसधारी।
नरसी हितकारी सेठ हो हुंडी सिकारी गिरधारी॥
त्रिलोकी सोनी हित गहना घड़ कर लाये सुखकारी।
नाऊ देहधारी जभी तो सैना की चिन्ता टारी॥
(सेर)दयालुता कहां लग सराऊँ तिहारी करुना करन।
तुरत ही अरदास सुनिये त्रास दासो की हरन॥
अनायन के नाथ सहाय कीजिये धरनी धरन।
ओट लीनी चरन की हूं हे हरि असरन शरन॥
हटा कुचाली इन्द्रियो की भट हृषीकेश कर निस्तारे॥ ३॥

गुरु गुणी नन्दलाल जिन्हों का ध्यान सदा हित से धरता।
अगण गण टरता छन्द की रचना होय कारज सरता॥
अधर ख्याल की देख चाल दुर्जन जन झाल ऊठ जरता।
सङ्कट हरि हरता सहाय सो नाथू दरजी करता॥
(से) हरि जनके सदा रक्षक रहत जादूराय जी।
हरो जन से द्रोह कोई कीजियो मत आय जी॥
नाश होगे हिरणाकुस हरिदास कु सताय जी।
हर अजादिक हरि की कीर्तो नित गाय जी॥
(तोड़) हरिदासन को दास कही जू गिरधर चरणा चित धारे॥४॥

भजन न० ९१
लावनी झेला की

विनवें द्रोपदी आज लाज मेरी रखो कृष्ण अविनासी॥ टेर॥
अन्ध नन्द मति मन्द आज्ञा खोटी मुख प्रकासी।
यो बाज रूप वेकूफ दुःशासन गही मोथ चिड़िया सी।
शठ खींच रह्यो है चीर सभा मे करके नग्न दिखासी।
सब नरपतियन के मांय दयानिधि होगी हमारी हाँसी।
(झड़) मन छाय रही है उदासी।
सुदल्यो वैकुण्ठ निवासी।
(तोड) घेरी सेर गोपाल आप बिन आकर कौन छुड़ासी॥ १॥
ठाडे भीषम द्रोण चित्र से नीति निपुण गुणरासी।
पति पांचू पराधीन नाथ मै तव प्रण पै विश्वासी।
तुम दौड़ पयादे नाथ उबार्यो डूबत ही ब्रजबासी।
द्विज लियो पुत्र हित नाम अत मै काट दिवी यम फाँसी।
(झड़) लख भक्ति श्याम जरा सी।
करी कुब्जा प्रिय रमासी।
रुक्मिनी वरी हरी जाय लज्यो शिशुपाल करके नाकासी॥ २॥
तड़फै हमारी जान श्याम ज्यूँ जल बिन मीन पियासी।
नहिं आवोगे महाराज मरूंगी खाय गले में फाँसी।
हे प्रणपालन फिर आय जगत में तेरो ही नाम लजासी।
ज्यू मरें माछली बाद नीर विरथा घन वरषासी।
या अरज सुणो सुखरासी।
मै विलख कहत हुं दासी।
(तोड़) हो गरीबपरवर नाथ बखान विधि वेद कैलासी॥ ३॥
सुण टेर पधारे रूप बजाजी धार द्वारका वासी।

मुदित भई है कृष्णा अब मिट गई जिय की त्रासी।
गयो दुष्ट को मान तेज हत यो ज्यूं चन्द ग्रासी।
श्रीनन्दलाल दियो ज्ञान किये हरि ध्यान मुक्ति जन पासी।
(भ०) प्रभु ऐसे रमा निवासी।
भजते मुनि सिद्ध उदासी।
कह नाथू वरजी कृष्ण हमारो मेटों दुःख चौरासी ॥ ४ ॥

भजन न० ९२
तनक दही के कारन माता मेरो मन हर लेगी

सुणोहो ऊधौ निरगुण ज्ञानी, लौ तो लगी मेरी कान्हा से।
मुकट की लटक बातों की चटक वो अटक रही है प्रानां से ॥ टेर ॥
ना मतलब मोय योग शास्त्र नीति वेद पुराना से।
आठों याम लगी रहत है प्रीत श्याम सयाना से ॥ १ ॥
जो तुम कहो होवै नहि रज से मिलना श्री भगवाना से।
रज उड़ती सन्ध्या जब होती भेटा नटवर बाना से ॥ २ ॥
धेनु चराते वेनु बजाते मन हर लेते गाना से।
यमुना तट रसलीला करते घायल दिल दृगबानां से ॥ ३ ॥
जब हमरे संग आनन्द भरते मनमोहन मुसकाना से।
नीका समै और नहि देखा प्यारे उसी जमाना से ॥ ४ ॥
तुम नैना नहिं देखी लीला केवल सुनी हो कानां से।
नाथू के स्वामी कूं निर्गुण जब ही कहो जबानां से ॥ ५ ॥

भजन न० ९३
लावणी र० खड़ी

कभी न मिला नर जन्म भरम तज ये सुकरम करना चहिये।
कृष्ण नाम की नाव पकर करि भवसागर तरना चहिये ॥ टेर ॥
शुचि सनातनधर्म हिये में दृढता से धरना चहिए।
झूठ कपट छल छिद्र बुरे कामों से नित डरना चहिए ॥ १ ॥
रिपु मित्र का भाव छोड़ उर बीच क्षमा करना चहिए।
नहि सताना दीन बनै तो दुख किसी का हरना चहिए ॥ २ ॥
इच्छा कर मन संत जनों को तीरथ में फिरना चहिए।
मिलै महात्मा पुरुष जिनों के पांवों में गिरना चहिए ॥ ३ ॥
रह हँसमुखी सुखी सब हो सो वचन पुष्प झरना चहिए।
शम दम गुण को साध लगा चित माधव के चरनों चहिए ॥ ४ ॥

नन्दलाल गुरु ज्ञान दिये नित गोविन्द गुण वरणा चहिए।
कहता नाथूराम सुगति दे वाही का सरणा चहिए॥ ५॥

भजन न० ९४
रगत छोटी ला०

सब चलो सखी जल भरने यमुना तट पै।
केसव मूर्ति का दर्श करें पणघट प॥ टे०॥
क्या मधुर स्वर वंशी बजाते वट पै।
दिल गया हमारा लाग राग सोरठ पै॥ १॥
मुसकाय हरे मन आय हमारे निकट पै।
जादू की पुड़िया डार गये घूंघट पै॥ २॥
सब रैन परं नहि चैन छप्पर खट पै।
हरि बिना ना रहै चूड़ामन हट पै॥ ३॥
कुर्वान ज्यान हो रही है नागर नट पं।
चित दौर-दौर जात नित मोर मुकुट पे॥ ४॥
देऊँ आग डार दुनिया की लज्जा पट पै।
दृढ होते नाथू नन्दलाला की रट पै॥ ५॥

भजन न० ९५
पणिहारी हुक्म करो तो सासु०

आनन्द की वर्षा रितु आइ जी अब घर आवो गिरधारी॥ टे०॥
लाग्यो मास असाढ प्रभु जी छाई घटा कारी कारी।
गरज गरज घन डारता बूंदा जी विजरी चमक रही न्यारी॥
बैरी पपैयो पिउ पिउ वाणी बोले।
श्याम वियोगण की छाती छोल।
(तोड़) दादुर मोर कीर और कोयल बोली बोले मनहारी॥ १॥
सावन मास आस दिल लागी कृष्ण मिलन की अति भारी।
तीज तिंवार बहार झूलन की फूले वन आनंद कारी॥
हरि वेग पधारो झूला सग रग झूले।
तव चद्र मुखांबुज देखत ही दिल फूलें॥
(तोड़) तरस रहा जिवरा निस वासर तव दरसन बिन बनवारी॥ २॥
भादव माधव बेग पधारो अरज स्रवन करके म्हारी।
बरसै मेघ परसे देह वारी नेह तावै उमर बारी॥

अति व्रहना जोर जनाय मदन तन ताव।
ना सूनी शय्या घटा छटा मन भावै॥
देखूं अटा चढ श्याम घटा चित आत छटा मोहन थारी॥ ३॥
मौज भई आसोज महीने आन मिले हरि सुखकारी।
रास विलास हुलास किये है आस भरी प्रिय की सारी॥
गुरु नन्दलाल जी शुभ गुण दीना।
नाथू दरजी पर मरजी कर जस लीना॥
राधेश्याम बसो उर मेरे युगल चरण पर बलिहारी॥ ४॥

भजन नं० ९६
चाल—गजल

चाल सखी कुञ्जन बन में मोहन की बंशी बाज रही॥ टे०॥
पिउ पिउ पिउ पिउ मधुर मधुर स्वर सातों ही स्वर साज रही।
धा धा धिन्ना धा धा धिक्ता मरदङ्ग घन ज्यों गाज रही॥ १॥
अद्‌भुत तान श्रवन परती है सुध बुध मन की भाज रही।
दिल उचाट अति श्याम मिलन हित नां गुरुजन की लाज रही॥
प्रीत दिवानी पुलकत तन सिणगार उलट में साज रही।
जागत विरह बदन मदन वस लगन लागबहु आज रही॥ २॥
चितवन में चित आत श्याम सूरत मन नैन विराज रही।
नाथू के स्वामी सुध लीज्यो तेरे हाथ नेह भांझ रही॥ ३॥

भजन नं० ९७
चाल—पाप तार दे मेरा तारन०

हे कृष्ण सारे विश्व का आधार तू ही है॥ टे०॥
ये दृश्यमान जगत सो स्वप्न का ख्याल है।
केवल मन की कल्पना का इन्द्रजाल है॥
मन है तिहारी किरण दिव्याकार तू ही है॥ १॥
तोसें पृथक् और जीव ईश भूप है।
सो अनात्मा असत जड़ स्वरूप है॥
चैतन्य पूर्ण आत्मा सत्य सार तू ही है॥ २॥
स्थूल सूक्ष्म कार्य कारण काही अङ्ग है।
इस सर्व संघात का साक्षी असङ्ग है।
सब का प्रकाश्यमान निर्विकार तू ही है॥ ३॥

दृष्टा हो आप सर्व का को आप कूं लखै।
लखणा लखाणा भर्म जू अहंकार कूं रखै।
अद्वैत नाथूराम निराकार तू ही है॥ ४॥

भजन न० ९
रस मजा तिहारी बोली मे०

रस मजा हरि की भक्ति में। टेर।
कछु आनन्द नहिं पावै प्यारे धारे भेष विरक्ति में। रस० ॥ १॥
महा दुःख रूप नरक गति होवे विषयों की आसक्ति में। रस० ॥ २॥
ध्रुव प्रहलादादिक भये प्रेमी प्रभु सेवा की युक्ति में। रस० ॥ ३॥
नाथूराम भजन में सुख हो जैसा नहिं है मुक्ति में। रस० ॥ ४॥

भजन न० ९९
चाल डगरिया मैं डर लागै

ना डारो सांवरिया चुन्दड़िया मैं पिचकारी। टेर।
बिगड़ जायगी नानी बन्धन धुप जायगा रग सारा ॥ १॥
लाख मोहर की चुनड़ी सुरगी दीनी तात हमारा ॥ २॥
दिन दस ओढ मौज लेने दो सुफल होय अवतारा ॥ ३॥
नाथू दरजी निस दिन चावै किरपा भाव तुमारा ॥ ४॥

भजन न० १००
राग जोगिया चाल ज्या नीडो जगै ना

श्रीराधे जी मनै ना
मनाय हारें री श्याम सारी रात प्यारी जी मनै ना। टेर।
जाणुं किता भाँति रिसाई ताके भेद जन ना
चन्द मुखांवुज ढक कर सूती कछु भी बात भनना ॥ १॥
भांग मिरच की बनी लुगदियां प्यारी बिना छनैना
छनैं छनावैं पिवैं पिवावैं ता विन मौज बनेंना ॥ २॥
कोई नारि कै अपना पिव सै ऐसा मन्न तनैना
तनै जिसी का टूट जात है टूट्यों फेर सनेंना ॥ ३॥
कह मैं हारी सुणो बिहारी बिसरूं अब तन्नैना
नाथूराम श्याम के शरणे मेरा गुनाह गनैना ॥ ४॥

गजल न० १०१

चाल गाली० यार वीणजारो गुल

श्रीकृस्ण वनमाली रो भेष नटवारो
मोय लागै प्यारो। टेर।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल वैजन्ती माला
सांवरी सुरत मूरत मन हरनी सुन्दर नैन विशाला
चट पलक मार मन मोह्यो जी हमारो
मोहि लागै प्यारो ॥ १ ॥
पीत वसन मन्द हसन दसन द्यु ति दामन ज्युं दमकावै
मेघ बदन छवि सदन देख कर कोटि मदन सरमावै
मुख बसी बजावत कामन – गारो
मोय लागै प्यारो ॥ २ ॥
भरी सुगन्ध गति मंद पवन सीतल सुहानी लागै
सहस्त्र रूप हो रास करे हरि सहस्त्र सखिन कै सागै
निसि शरद पूनम शुभ दिन उजियारो ॥
मोय लागै प्यारो ॥ ३ ॥
डीडवाणा मै नन्दलाल गुरु द्विजवर ज्ञान बतायो
परम प्रीत हो श्रीगोविन्द में दिल को भर्म मिटायो।
सुमरत नाथू मथुरावाला रो ॥
मोय लागै प्यारो ॥ ४ ॥

भजन न० १०२

रगत बशीकरण ला०

कहत श्रीकृष्णचन्द्र कर्तार आई क्युं रन सम ब्रज नार ॥ टेर ॥
त्याग पति सुता कुल की लाज, उलट पट भूषण तन पै साज।
भयानी बाट काटकर आज, विकट वन मे आई किण काज।
उचित नहि है नारि को एसा अधम विचार।
निर्धन निर्बल निगुण कुरूपा कैसा ही हो भर्तार।
उसी की सेवा मै है सार ॥ १ ॥
वाही उत्तम नारि सुजान, स्वप्न मै देखं ना नर आन।
लखं मध्यम पर नर कूं जान, आप का पितु सुत भ्रात समान।
लघु इच्छा कर और की बच लोकिक भय धार।
अधम नारि निज पति तज करती दूजा संग व्यभिचार।
नरक भोगेगी कल्प हजार ॥ २ ॥

पति कू परम देव सम जान हिये में हरदम धरना ध्यान।
कराणा हाथों से स्नान धोय पद चरणामृत ले मान।
भोजन बना प्रेम स पति कूं पहलि आप जिमाय।
करा आचमन पान बचें सो आप प्रसादी पाय।
हूकम में रहे नित ताबेदार ॥ ३ ॥
उसी नारी के तिहुं सुरेश, रहै आधीना नित हमेश।
अनुसूया शुक्ला सती विशेष पाई पति सह गति सत शेष।
अच्छा आए वन छवि लख अब जावो निज स्थान।
मन लगा करो पति की सेवा नन्दलाल दिये ज्ञान।
मान नाथू दरजी बलिहार ॥ ४ ॥

गजल न० १०३
ताल दादरा

श्याम निजारा सितम कर डारा ॥ टेर ॥
भोहें कवान बान धर लोचन किया विदीरण हिया हमारा ॥ १ ॥
साले पीर धीर नहि दिल में दीसे नांहि कछ जखम जारा ॥ २ ॥
दरदी की गति दरदी जाणे नांहि वैद्य विचारा ॥ ३ ॥
मन माधव के देस चलो यहां अब नांहि होय गुजारा ॥ ४ ॥
उस मोहन के अरपन करिये कोमल वदन हजारा ॥ ५ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे मन भाया है बंसीवारा ॥ ६ ॥

भजन न० १०४
चाल—रसयो राम रिझास्याये माय

आज कृष्णचन्द मोपे प्रेम फन्द डारे रे ॥ टेर ॥
देख के सलोनी स्यान, हो गई कुर्वान ज्यान।
तान के अचानकान, नैन बान मारे रे ॥ १ ॥
घूमती घायल की भांति, कल ना परै राति प्राति।
सोहैं गोपीनाथ कैसे त्यागना तिहारे रे ॥ २ ॥
चितवन मे चित फँसो जाय, चित चोर मे बस्यो आय।
छिप छिप के वंशी बजाय मोहे मन हमारे रे ॥ ३ ॥
लागी सो जाणे रे माय, दूसरो न जाणे काय।
नाथू के व्रजराय मेरे प्रान से पियारे ॥ ४ ॥

भजन न० १०५
राग सिंह भैरवी

हां रे सांवरिया तू मेरो स्वामी रे, मै तेरी दासी रे ।। टेर ।।
लोक लाज तजि तेरे हित लीनी है बदनामी ।। १ ।।
हाँ रे सांवरिया लाग रह्यो चित तेरे चरन में प्रीत करन निष्कामी ।। २ ।।
क्या कहूं मन के नेह की बातें तुम हो अन्तरजामी ।। ३ ।।
शरणागत राखो हम करती बारम्बार नमामी ।। ४ ।।
नाथूराम श्याम के सरणे माफ करो अब स्वामी ।। ५ ।।

भजन न० १०६
चाल आज श्याम मोह लियो

माखन चोर खडो पणघट पें, मै जल भरने जाउं कैसे ।। टेर ।।
झीना चीर चन्द्रमुख चमकें मारग मांहि छिपाउं कैसे ।। १ ।।
रोक डगर आड़ो फिर जावे मेटो लगर हटाउं कैसे ।। २ ।।
सङ्ग की सहेल्यों बातें बनावे प्रगट प्रीति दिखाउं कैसे ।। ३ ।।
नाथूराम श्याम के शरणे कुल की कान घटाउं कैसे ।। ४ ।।

भजन न० १०७
चाल उमर मेरी०

नहिं देवो कुल कूं दोष, चूक नर करणी के मांहि ।। टेर ।।
नर नाहू की नीत गई है, पंचू की सत रीत गई है,
मुरसद की मति बीत गई है, निज स्वारथ तांई ।। १ ।।
धन हित बेच सुता शठ देवै, वृद्ध बाल वर कछु न देवै,
अन्य पुरुष नारी जब सेवै, काम रुकै नांहि ।। २ ।।
गर्भ पात कर विधवा नारी, झूठे छली मद मांस अहारी,
चोर जार भये लोग जुवारी, कलौ बसै जांहि ।। ३ ।।
सन्त गउ पें रखैं शुभ दृष्टी, षट् रस निपजाते कर वृष्टि,
तासैं पालते नित सब सृष्टि, सर्वेश्वर सांई ।। ४ ।।
गो-वध होत साधु अपमाना, वेद विरोधी कर अघ नाना,
जासैं कर प्रभु हीन जमाना, देते फल यांहि ।। ५ ।।
हो पख भूप पंच गुरु केरा, तो रहे जगत में ठैरा,
चोरां कुत्ती मिल गई पहरा, कुण देवै जांहि ।। ६ ।।
भये कुतर्की निगमागम के, दण्ड पाएगा सो घर जम के,
नाथू शरणे पुरुषोत्तम के, घणी कहुं कांई ।। ७ ।।

भजन नं० १०८

राग माड़ चाल—बगवा गुण दै

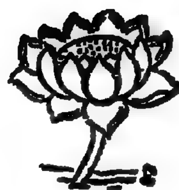
नाथ मैं माँगु वर येह तुम पै वो प्रेमाँ भक्ति दे। टेर।
जैसे तज के गोपियाँ कुल लज्जा पति गेह
अतिहित चित ला श्याम सैं कीन्हा अमित सनेह। वो प्रे० ॥ १ ॥
ध्रु बालक वन मांहि सिधारे ज्ञान मातु को लेह
खान पान तज तव चरणन के भे अनुरागी वेह। वो प्रे० ॥ २ ॥
रंका बका नामा छीपा विप्र सुदामा केह
मन हरदम ताको मन मोहन तुम में लगे रहे। वो प्रे० ॥ ३ ॥
नाथू स्वामी शरणे आयो राखो जी अपणे
करो महर माधव पद कबहुं भूलूं नहिं सुपने। वो प्रे० ॥ ४ ॥

भजन नं० १०९

राग ला० चाल छोटी

है डीडवाणा में नागोर्यां का मंदिर।
जहाँ विराजे जानकी नाथ सलोने अन्दर ॥
परब्रह्म अगोचर करते वेद उचारण
तद्रूप प्रगट भये आप भक्तों के कारण ॥
फिर सन्त महात्मा अर्चा मत प्रचारण।
किये जगै जगै प्रतिमा पूज्य जग तारण ॥
वेदों की सलाह से धर्म सनातन धारण।
सब रहो आस्तिक लोगों जन्म सुधारण ॥
है स्वयं व्यक्त नारायण रघुकुल चन्दर। जहाँ विराजे० ॥ १ ॥
अति अनूप धाम सरनाम विशाल बना है।
सिंहासन ठाकुर शोभा युक्त घना है ॥
सीता सरूप महारानी रमा तणा है।
श्रीराम लखन कूं भगवत वेद भना है ॥
जरकस पटभूषण जड़्या हीर पन्ना है ॥
सिर क्रीट मुकट कुण्डल कर चाप तना है।
जिन पर रघुवर शर धर मारे दशकन्धर। जहाँ वि० ॥ २ ॥
श्रीबालकृष्ण जी और बसरी वारा।
जहां वेकंटेश जी शालग्राम जु सारा ॥
करें अर्चा अर्चक विधि से रख आचारा ॥
बजै झालर घंटा गोमुख भेरि नगारा।

हो जय जयकार स्तुति जन वेद उचारा।
तुलसी चरणामृत बटे लेत प्रभु प्यारा॥
दोय द्वारपाल जय विजय मूर्ति सुन्दर। जहाँ वि०॥ ३॥
बजरंग खड़े है सन्मुख आज्ञाकारी।
गादी पर विराजे महत पुरुष अवतारी॥
श्रीमद्विद्वद्वर बालमुकुन्दाचारी।
शिष्य जन को देते ज्ञान परम हितकारी॥
जहाँ सीताराम जी सर्व बात अधिकारी।
वे बतलाते स्वर ताल तान गति सारी॥
पद गाय रिझावें प्रेमी श्रीराजेन्दर। जहां वि०॥ ४॥
वहाँ हरि कृष्ण जी ऊंचे स्वर से गाते।
हद सरयूदास जी हरष मोद मन माते॥
सभी तान गान रस राम कवांर मिलाते।
लक्ष्मीनारायण पद शुद्ध बोल दरसाते।
गति मीठी बजावें केसरिमल मन भाते॥
पोकर प्रहलाद मधुरे स्वर गा हर्षाते।
गुरु नंदलाल शिष्य नाथू भजे व्रज चन्दर। जहां वि०॥ ५॥



भजन न० १

चाल—छेला म्हाने पायल घडाय दीजो वाजणी

दया मोपे कीजो गवरीका लाल।
देवा म्हाने दीन जान वर यो दीज्यो ।। टे० ।।
हांजी थारो नांव है विघनविनाशक।
हांजी देवा शिमर्‌यांसे मिटे जंजाल ।। १ ।।
हांजी थारी महिमा निगमागम गावे।
शिवसुत दीन दयाल ।। २ ।।
हांजी रिधसिध के वरदायक।
शिमर्‌यांसे करोजी निहाल ।। ३ ।।
हांजी सज मूषे पर असवारी।
आज्यो भगत हित चाल ।। ४ ।।
हांजी मुझ पापीकूं त्यारज्यो।
देकर सुबुध सुचाल ।। ५ ।।
हांजी भेद बतायो देवा आपको।
द्विजवर श्रीनदलाल ।। ६ ।।
हांजी दास नाथू को या विनती।
मेटो मेरा दुख तत्काल ।। ७ ।।

भजन न० २

इसी चाल मे

ऊधो म्हाने सुरत दिखाय दीज्यो, सांवरी।
हांजी बिन देख्यां मै होरई, बावरी ।। टे० ।।
हांजी प्रभु सुरत सलोनी मनमोहनी, हांजी मेरा उरझ्याहेउन में ई प्राण ।।
ऊधो म्हाने लाग्यो दरस को चावरी ।। १ ।।
हांजी पटराणीकी चेरीने, हांजी लाइ मती गोपीनाथ।
ऊधो वाने लाज न राखी उन नामरी ।। २ ।।
हांजी सब सुख दीनु घनश्यामने, तोभी छांड़गये मझधार।
ऊधो म्हाँने आसा बड़ी थी व्रजवारी ।। ३ ।।
हांजी दास नाथूकी या बीनती, हांजी म्हारा बेड़ा लगाय दीज्यो पार।
ऊधो म्हारा जिवड़ारी दुबध्या मिटावरी ।। ४ ।।

भजन न० ३

चाल—आया ये सगीजी थारे पावणाये

जोगी आया ये नंदराणी थारे बारणेहे ।
ये तो दर्श भिखारी मोहन कारणे हो ।। टे० ।।
जोगी दरस भिख्यारी आया, थारे द्वारे अलख जगाया ।
म्हाने दान देवो चित चाया, जास्युं तिरपत होवे काया ।।
जोगी हुकम सुणाया भरम निवारणे हे ।। १ ।।
सुणकर जसुमत भिच्छा ल्याई, जवही जोगी नाड़ हलाइ ।
तेरी माया न मांगुं माइ, तेनें जाया कंवर कनाइ ।।
ज्यांने नैणां दे दिखलाइ कारज सारणे हे ।। २ ।।
या सुण बोली यूं नद राणी, म्हारा बालक अती अजाणी ।
तुझकूं देख्या आवे डराणी, जवही बोले शिव मृदु बाणी ।
राणी प्रगटे हैं अवतारी पतित ऊधारणे हे ।। ३ ।।
नेती-२ वेद बखाणे, शिवसनकादिक खोजे ज्यांने ।
ज्यांको पार न पावे ध्याने, निसदिन गोद खिलावो ज्यांने ।।
शङ्कर सुजस लागे हैं उचारणे हे ।। ४ ।।
ऐसा सुण जोगीका सवाल, जसुमत लाई अपणा लाल ।
हरी हर निरखे भये खुशाल, नाथू वचन पुष्पकी माल ।।
हरि गल डारीहै जन्म सुधारणे है ।। ५ ।।

भजन न० ४

इसी चाल मे

हँसकर गिरजा यूं शङ्करने बचन सुणावती जी ।
शिव जी मै ना व्याहनी तो तुमे कुण व्यावती जी ।। टे० ।।
थारे लम्बा २ केश, थारे तनमें छार लपेश ।
थारे लपटे काला शेष, थारो अती भयानक भेष ।
थांने देख्यांइ डराणी दिल में आवती जी ।। १ ।।
थाने याद न माखन खावो, थे तो तो भांग धतूरा चावो ।
थारा तनपे जरा गावो, थारे मृगछालारो विछावो ।।
थारे पास कोडी ना एक लखावतीजी ।। २ ।।
थारे वाहन वूढो वैल, थारे भूत प्रेत रह गैल ।
थारे गल मु डमाला सैल, थे तो डमरू वजावो सुरेल ।।
थाके गैल लग्योडी गोरां सरमावतीजी ।। ३ ।।
या सुण बोले श्रीत्रिपुरार, वनमे तपस्या करी अपार ।
भेज्या नारद संग समाचार, जब म्हे व्याही दया विचार ।।
अब क्यो मोटी २ बात वणावतीजी ।। ४ ।।

या सुण पड़ी गवरज्या चरणाँ, प्रभुजी हाँसीमें रोस न करणा।
नाथूराम सुजस हरि बरणा, प्रभु जी तुम हो तारण तरणा ।।
थारा श्रुति स्मृति गुण गावतीजी ।। ५ ।।

भजन नं० ५
इसी चाल मे

यो तो पतित उधारण सुन्दर साँवरो ये।
सखियाँ ध्यान धरोनी वाँका नाँव रो ये ।। टे० ।।
साँवरो आदपुरुष करतार, लीनो भक्त हेत अवतार।
वाने मत ना लखो दीदार, वो तो बिरद उबारण सुन्दर साँवरो ये ।। १ ।।
सारी विषय वासना छोड़, लेवो भगवाँ चादर ओढ़।
राखो ध्यान धरनको कोड़, थाँका हिरदामै बसेलो सुन्दर साँवरो ये ।। २ ।।
किरपा कीनी गुरु नंदलाल, गावे नाथुराम रसख्याल।
मिटसी सब जी का जंजाल, मै तो शरणो लीनो छ प्रभुके नाँवरो ये ।। ३ ।।

भजन नं० ६
चाल—देखो नखरो नखरालोको याद कियो बेसर बालीको

नेह्चो शिव कैलासीको, काटे फद चोरासी को ।। टे० ।।
मारकण्ड मुनि तप कियो पुनि पद दियो उसी अविनाशी को ।। १ ।।
नरसी पें ह्रस लेजाय परस करवायो दरस व्रजवासीको ।। २ ।।
दी भगीरथी भागीरथकूं परमारथी पति काशीको ।। ३ ।।
नाथू दास लख पूरो आस मोकुं विश्वास सुखराशीको ।। ४ ।।

भजन नं० ७
इसी चाल मे

बसियो मन रसियो नदलाल, जग हंसियो भावें दे ताल ।। टेर ।।
शिर सोवे मुकट, कर लियाँ लुकट,
अरु कसियो पीतपट, कटि विशाल ।। १ ।।
काना कुण्डल, रविशशिके तुल,
नयन कमलदल गल फुलमाल ।। २ ।।
नैनन का तीर, मारे अहीर,
होगइ अधीर, सब भूली हाल ।। ३ ।।
घायलकी भाँत, तलपूं दिनरात,
वो गोपीनाथ करसी कब भाल ।। ४ ।।

गुरु नंदलाल, मोपे कृपाल।
गावे नाथु ख्याल, गारीकी ढाल ॥ ५ ॥

भजन न० ८
इसी चाल में

गोपालकी भक्ती भूल मती, जगजालकुं देखर फूल मती ॥ टेर ॥
रावण राई, कुबद उठाई, लंक लुटाई कर कुमती ॥ १ ॥
कंस प्रचंड धर्म कर खंड, जिन दियो दंड ब्रह्माण्डपती ॥ २ ॥
मतकर गुमान, तनको थिर जान, निकसेगा प्राण, नहिं वार रती ॥ ३ ॥
भज हरी नाम, सब सरे काम, देवे सुखधाम, वैकुण्ठपती ॥ ४ ॥
ज्यों गजकी वेर, करि हरी मेर, नॉलगी देर हरि कयो जती ॥ ५ ॥
नाथू युं कैत, तज जगतहेत, मत रहे अचत, मेरी मान अती ॥ ६ ॥

भजन न० ९
चाल—परस्थान से आइ परी आसक निरखे खड़ी २

महाप्रलय की लगी झड़ी पृथ्वी पर नहिं छांट पड़ी ॥ टेर ॥
एकसमे व्रजराज म्हाराज, जाय पुजायो बन गिरिराज,
जब सुरराजकुं ठीक पड़ी ॥ पृथ्वी० ॥ १ ॥
वारिद साज आये मेघराज, ब्रजमंडल पर कीनी गाज,
एजी जोरसे ओसर आन करी जब सबके लगी भागादवड़ी ॥ पृथ्वी० ॥ २ ॥
कह व्रजवासी अति घबराय, ओहो कृष्ण गिरि वेग बुलाय,
निरत सुरपति प्रलय करी, तुम पूजा क्यों मेट करी ॥ पृथ्वी० ॥ ३ ॥
जब लोगोंसे कह व्रजराय, आता है गिरि करणे साय,
जब गिरि नखपर धर्‌यो हरी, अर इणबिध व्रजकी साय करी ॥ पृथ्वी० ॥ ४ ॥
सात दिन वर्ष्यो मूसल धार, सब जल सोष्यो चक्र अगार,
हार्‌यो सुरपति छांड अड़ी, अर चरन पड्यो आ उसी घड़ी ॥ पृथ्वी० ॥ ५ ॥
क्षमा करी जबही गोपाल, कहै गुरु मेरे नन्दलाल।
जाण्यों इन्द्र अवतार हरी, कवि नाथू महिमा खूब बड़ी ॥ पृथ्वी० ॥ ६ ॥

भजन न० १० अस्पष्ट होने से छापा नही गया।

भजन न० ११

चाल—केशरिया दुपटामे झालोदेत छिनग्यारी

सुण्योय न देख्यो ऐसो होरीको खिलारी। भयो है अनोखो छैलो नन्दको मुरारी॥ टेर॥
अबीरकी मुठीभर अखियोंपे डारी। तडक ढलक मेरे आयो नैनबारी॥
गोल २ हरि कुमकुमा री जोर २ मारी॥ १॥
रग पिचकारी भर मुखड़ापे डारी। सारी २ रंगसे बिगारी म्हारी प्यारी।
लाजकी बात कहूं क्या साँवरो दीनी खोटी गारी॥ २॥
कर झकझोरी मोरी बेयाँकूं मरोरी, कगन बेसर लड़ मोतियन तोरी।
करि ठठा ठोरि बोरी आँगि फारी सारी॥ ३॥
दास नाथू हरस रसीली गावे होरी रसीले बिहारी सुनो विनती या मोरी,
कहुं कर जोरी तोरी शक्ति द्यो मुरारी॥ ४॥

भजन न० १२

चाल—इसी राहमे

आज रमक से झूला झूले राधा बनवारी।
हरष निरख व्रजनारी झोटा देवे बारी बारी॥ टेर॥
ऊँची २ शाख कदम हूं की भारी, जिनपर रेसमकी तणियां डारी॥
रतनजटित कंचन का खम्भा सिंहासन भारी॥ १॥
कोटि अनंग छबि राजे बनवारी। संग रानि राधा राजे लाजे रतिनारी।
उमड़ घुमड़ घनघटा छाई कारी २॥ २॥
सरररररररर पौन चले प्यारी घरररररररर घन गरजे भारी॥
झररररररर नानी मोटी परत फंवारी॥ ३॥
धाधाकिट २ मरदंग बाजे सारंगी सतार स्वर मोरचंग साजे।
मधुर २ स्वर बन्सी बाजै लागत सु प्यारी॥ ४॥
ठमक २ पग धर सखि नाचे, छनन २ पग बिछिया रग राचे,
भाव बतावे तान मिलावे गावै सखियां सारी॥ ५॥
मेरे गुरु नन्दलाल चाल बताइ, नाथू नइ चाल लख गाय दरसाइ।
प्रेमभक्ति उर धार हरी यश गावो नरनारी॥ ६॥

भजन नं० १३

चाल—इसी राह मे

आज हिंडौरे रमकभमक से भूले राधा प्यारी ॥
कोटि शशी सम देख मुखांबुज लाजे रति नारी ॥ टेर ॥
कदमकी डारि पर भूला डलवाया।
आपकी सहेली भेज कृष्ण बुलवाया ।
आया शाम देख व्रजवनिता खुश भइ सारी ॥ १ ॥
रेसम का लछा अछा कदम की शाखा ॥
जिनपर भूला डारे ललित मजा का ॥
कचन सिंहासन जड़िया रतन अपारी ॥ २ ॥
जिनपर राजे वृषभान की लली है।
सजे सिणगार तन चम्पाकली है,
श्याम अली जो मगन भयेरी देख छबि वाँरी ॥ ३ ॥
रमक भमक भोटो देवे बनवारी।
ठमक ठमक ताय नाचे व्रजनारी ॥ ४ ॥
सांवणियारी लूमाभूमा वरसत न्यारी।
श्याम छबि देख मन हरसत प्यारी।
गावे बजावे आनन्द आवे नाँचे दे दे तारी ॥ ५ ॥
राधा महिमा कहे नाथू जादा क्या तिहारी।
महिमा थारी अगम अगाध है अपारी।
राधा राधा रटुं राधा बाधा हर सारी ॥ ६ ॥

भजन नं० १४

चाल—हाँ नार चल व्यास कचेरी मिसल वणी मोके पर तेरी

हाँ कनैयो जादूगारो, बशी बजाय हर्‌यो मन म्हारो।
सूती ने आयो चेत हेत जद लग्यो उणारो ऐ ॥ टेर ॥
धुनी सुनी बन्शी की, भारी सुधबुध बिसर गई सखि सारी।
लोक लाज कुल काण काज सब घर को बिसारो ए ॥ १ ॥
उलट पुलट पोशाकाँ साजी, राजी होय सखियाँ सब भाजी।
बाजी बन्शी खूब मिल्यो यो नन्द दुलारो ए ॥ २ ॥
हरि को रूप निरख वृजनारी, मगन भई घर सुरति बिसारी।
ठाडे बिहारी लाल भेष नटवर को धारो ए ॥ ३ ॥
और सखी सब आई बन में, एक रही निज सखी भवन में।
वा कियो मन मे ध्यान मिल्यो जाय कृष्ण पियारो ए ॥ ४ ॥

नाथूराम श्याम के शरण, हरिजस बरणे पार उतरणे।
प्रीत सखि को देख मुक्ति दीनी बन्शीवारो ए ॥ ५ ॥

भजन न० १५

चाल—पनिहारीको मे

बण नाजकडी पणिहारी

आज सखी सब पाणिडाने चालीजी, चितवन करती गिरधारी ॥ टेर ॥
शिर पर गागर धरके मनोहर, नवसत अंग सजे सारी।
राह मांह मोहन की चर्चा करन लगी बारी २ ॥ १ ॥
एक कहै मोय मिले कनाइ, एक कहै रह छिपता री।
पीछे से आके में जाणु री, पकरेंगे बंयां म्हारी ॥ २ ॥
तीजी कहै गउ दोहत देखे, मनमोहन नन्द के द्वारी।
चोथी कहै हम अबही देखे, शिरपर मोर मुकटधारी ॥ ३ ॥
सखी पांचवो कहै सखीरी, धेनु चरावत बनवारी।
छठी कहै यूं कान लगाकर, बैन बजी जादूगारी ॥ ४ ॥
सखी सातवीं कहे इस मारग, जावूं नहीं डरकीमारी।
दान मांगेंगे कँवर कनैया, फोरेंगे गागर म्हारी ॥ ५ ॥
गागर फोरे बंयां मरोरे, देवे गारी—गुप्तारी ॥
ये कई दूर दौड़कर आवेजी, फिर में दोड़ जाऊ कॉरी ॥ ६ ॥
ऐसी २ प्रेम की बातां कहत चली सब व्रजनारी।
श्याम वियोग विकल तन भारी, लागरहि मगन सारी ॥ ७ ॥
आपस में हरिलीला गाती, मदमाती सब सुखकारी।
नन्दलाल गुरु के शिष गावे, नाथूराम राह पणिहारी ॥ ८ ॥

भजन न० १६

चाल—हाँ सखी बेरण भरमायो कुब्जा शोक

हाँ सखी यो उद्धव आयो समाचार माधव का ल्यायो ॥ टेर ॥
कल आये ये घर नन्दजी के, इनका रूप है श्यामसरीखो।
श्याम इसी को साथ में, सदेसा देय पठायो ॥ १ ॥
इनको बातां पूछो प्यारी, जो होसी सो कहसी सारी।
ये है सखा गोपाल का हमको ये भेद जनायो ॥ २ ॥
देख उद्धवकूं हरसी सखियाँ, सोच संकोच तज्यो मदर्छकियाँ।
हरिका हेतू जान के चरण मे शीस निवायो ॥ ३ ॥
नन्दलाल गुरु किरपा कोनी, नाथूराम को शिक्षा दीनी।
प्रेममगन मन होय के, हरि को गुण कथ गायो ॥ ४ ॥

थाँने इतरा दिन नदसुत जाण्या,
अब जाण्या अविनाशी नाम थाराजी ॥ २ ॥
या सुण हरि रची पुरि वाँहो ।
लोग देखी ब्रजकी ज्यूं तामे सुखसाराजी ॥ ३ ॥
पाछी माया हरिजी सॉवटली ।
होग्या अपणा ही मूकाम जादु डाराजी ॥ ४ ॥
येतो सब आणी बातॉ सपनासी ।
गुण गावत नाथूराम शरणा थाराजी ॥ ५ ॥

भजन न० २०
चाल—नम्बरो जोर बण्योरे छिनग्यारीरो

शरणो म्हतो लीनो है कुंजविहारीरो ।
नेछो म्हाने यूं कर आयो बनवारीरो ॥ टेर ॥
कुमट ध्यान लगायो, न्याव पकायो, आन बचायो ।
प्रभु थे अग्नीते सुत मजारीरो ॥ १ ॥
नरसिंग रूप बनायो, भक्त बचायो, असुर खपायो ।
पलमें मेट्यो सकट ससारीरो ॥ २ ॥
रूप मोहनी धार्यो, असुर सहार्यो, बिरद उबार्यो ।
सार्यो कारज भवन सहारीरो ॥ ३ ॥
भवरी पुत्र बचायो, घट गिरायो, चीर बधायो ।
पलमें द्रुपदसुता सति नारीरो ॥ ४ ॥
नखपर गिरवर धार्यो, बिरज उबार्यो, गर्व निवार्यो ।
परभू मेघपती बलकारीरो ॥ ५ ॥
नंदलाल गुरु पायो, भरम गमायो ग्यान बतायो ।
मन्ने—नाथूराम गायोजी पद गारीरो ॥ ६ ॥

भजन नं० २१
चाल—हा जगत सुपनाकी माया

हाँ भीलनी बन शिव प्यारी, छल लीना शंकर त्रिपुरारी ॥ टेर ॥
एक समै शिव कह गिरिजासे, हम जावें वन प्यारी याँसे ।
करां अलखका ध्यान आप रहो भवन रुखारीरे ॥ १ ॥
जब शिवसे कह हेमकुमारी, वहाँ आवे कोई सुन्दर नारी ।
देख मोहनी रूप भूलज्यो मत मति थारीरे ॥ २ ॥
या सुण बोले शिव हँस नारी, ऐसी बात क्याँनेजो उचारी ।
जाणे नहीं तूं बाम नाम मेरा है मदनारीरे ॥ ३ ॥

इतनी कह हर वनकुं सिधाये, जा वनमें आसण ठहराये।
प्राणायाम चढाय अलखसे लागी तारीरे ॥ ४ ॥
ध्यान करत बीते षट्मासा, गिरजा चली कर रूप प्रकासा।
सज सोला सिनगार नार रतिसे अधिकारीरे ॥ ५ ॥
जब बरसा रुत नभमें छाई, राग मलार मधुर स्वर गाई।
पडी कान झनकार पलक महादेव उघारीरे ॥ ६ ॥
सन्मुख होय लिया कर जोरी, शिव बोले तूं किसकी गोरी।
क्यूं फिरो वनके मॉय भटकती चद्रउजारीरे ॥ ७ ॥
कहै भीलनी मुनि सुन भाषा, पति बिछड़े होगये षट मासा।
पता बतावो आप मेहर कर करु लाचारीरे ॥ ८ ॥
बोले शिव सुन्दर भइ भोली, कोमल तन वन फिरती डोली।
बिछड़ेका क्या पता चलो तुम सग हमारीरे ॥ ९ ॥
जब भिलणी बोली मृदु बानी, कहा कही थेयु ब्रह्मज्ञानी।
लज्जा हमें बहु आत आप सब सर्म बिसारीरे ॥ १० ॥
पुनि शंकर हसकर फरमाई, तू सुन्दर मेरे मन भाई।
चलो सग कैलास रखू कर प्राणपियारीरे ॥ ११ ॥
जब कह थारे हेम कुमारी, कैसे खटे घर में परनारी।
पाली चल्योयन जाय बैल चढतां डर भारी रे ॥ १२ ॥
हर कह पीर गिरिजा ने मेलुं, थारा हुकुम में हरदम टहलुं।
कॉधे बेठ चलो सुन्दर मत करो अँवारी रे ॥ १३ ॥
कॉधे 'धार भीलनी लाये, चढ कैलासपुरी में आये।
पट खटकावत रूप प्रकट कियो गोरी प्यारी रे ॥ १४ ॥
लज्जित भये देख शिव ध्यानी, जब पद पकर कहे शिवरानी।
आप जगत आदर्श मैं हूं निज दासी थारी रे ॥ १५ ॥
नन्दलालजी गुरु गुण दीना, हरजस रस रंगत में कीना।
दरजी नाथू कह गावो गुणि जैसे गारी रे ॥ १६ ॥

भजन नं० २२

चाल—हा सखी वैरण भरमाया कुब्जा सोक किया मन चाया

हाँ जनम नर वृथा गमाया, नरतन पाय हरि गुण नहिं गाया ॥ टेर ॥
धन जोवन सुख सम्पत माया, सुन्दर नारी देख लुभाया।
नारी नरक का मूल है भूल के जीव फसाया रे ॥ १ ॥
श्रवण दिया हर गुण सुणवाने, दन्त कथा मे लगा दिया ज्यांने।
कन्चन घट माही नर मूरख जहर भराया रे ॥ २ ॥
पाया नेण हर दरसणताँई, निरखे नार चकोर की नाँई।
रतन अमोलक पाय के कूप के मॉय गिराया रे ॥ ३ ॥

सुख पाया हर सुमिरण हेतू, जग परपंच झूट कथ कहे तू ।
निज अमृतकूँ पायके पाँवन पर ढरकाया रे ।। ४ ।।
पाँव से तीर्थ दान कुछ करले, तनसे साधसेव आदर से ।
ऐरावत गजपे नर इन्धन भार लदाया रे ।। ५ ।।
नन्दलालजी हैं गुरु ज्ञानी, म्हैर करी कविता गति जानी ।
दरजी नाथूराम ने निरगुण पद ये बनाया रे ।। ६ ।।

भजन न० २३

चाल—मामी का नाणदा की चाल मे

शंकर त्रिलोचना, थारी अद्‌भुत झाँकी रे ।
सुखदुख मोचना, महिमा कहा कहूं थांकी रे ।। टेर ।।
जगतारण धारण करी, प्रभु शीस जटा में गंगा ।
बाल चन्द्र दिये भाल पे, थारे लपटे अंग भुजंगा ।। १ ।।
कोटि अनग छवि अँगकी, जाँपे भस्मी शोभा देत ।
रूप सागर महासुन्दरी, गौरी सेवा में हरदम रेत ।। २ ।।
पीवत भग सुरंग सदा शिव, रहत नशा में चूर ।
वरदायक भोलानाथजी, पलमें करे दरिदर दूर ।। ३ ।।
बाघंबर मृग की त्वचा, प्रभु नन्दीवाहन रुण्डमाल ।
सन्तन की प्रतिपाल हो, प्रभु कम्पे काल कराल ।। ४ ।।
भागीरथ पर प्रसन्न हुए, दिवी कुलत्यारण गंग ।
मारकण्ड मुनिराजकूँ, करदियो अजर अभँग ।। ५ ।।
एक समै सुरासुर मथ्यो सिन्धु, निकस्यो विषघट आन ।
देव असुर दुखिया भये, जब तुमही कियो विषपान ।। ६ ।।
देव देव महादेव निरंजन सेवत है सब देव ।
महिमा अगम अगाध है, थारी कोई नहिं पावे भेव ।। ७ ।।
गुणिजन गुरु नन्दलालजी कही, शिव २ ध्यान लगाय ।
सीख गुरू को मान के, नाथुराम गुण गाय ।। ८ ।।

भजन न० २४

चाल—पिव नादान बरस दसको यारो को लाग्यो चसको

यो श्याम नहीं किसके वसको ।
माखन को लाग्यो चसको ।। टेर ।।
ग्वाल बाल लियां फिरे सँग व्रजमाँई ।
नित चोरी करे मही दूध की कनाई ।
यो मांटो फोड़्यो गोरस को ।। १ ।।

सूनो घर देख कान्ह चट घुस जावे।
कुछ खुद खावे कुछ साथ्यांने लुटावे।
अब कहा उपाय करों इसको ॥ २ ॥
जहाँ तहाँ छींका ऊपर रख्योड़ा निहारे।
ऊखल पे चढकर वाहिकुँ उतारे।
यो नाँ छाँड़े माखन किसको ॥ ३ ॥
नन्दलाल गुरु गुण खूब बतलाया।
नाथूराम नया पद गाय हरसाया।
कछु पार न पायो हरिजस को ॥ ४ ॥

भजन न० २५
चाल—नखर्याली व्यायण आवे

हाँजी याने माखन चोरी को भावेये,
वनमाली मोय घर आवै ॥ टेर ॥
दूध दही माखन महि गोरस, व्रज में हरण न पावै।
सुबह शाम फिरै चोरी करतो, काहु को नांव बतावै ॥ वन० ॥ १ ॥
जो कोइ मुखके लग्यो बतावै, उलटो उन्हे डरावै।
तैनेई लगवाया मुझ को, कहा अब क्यों धमकावै ॥ वन० ॥ २ ॥
आज पकड़ लाई तेरा कान्हा, अब क्या झूठ हो जावै।
बोली सुन ग्वालन की जसुमत, माता यूँ फरमावै ॥ वन० ॥ ३ ॥
मेरा कंवर तो कलसे घरमें, निकल कहाँ नहीं जावै।
अपना बालक पकड़ के लाई, श्याम का नाव लगावै ॥ वन० ॥ ४ ॥
लज्जित भई देख गवालिनि हरिगति लखी न जावै।
नन्दलाल कृपाल गुरु भये नाथूराम गुन गावे ॥ ५ ॥

भजन न० २६
चाल—आज रग वरसे म्हारा छेल भवर साथणियाँतरसे

संकट हारी कपी नाम वेंकट बलधारीरे, संकट हारीरे ॥ टेर ॥
बार शनिश्चर भये प्रभूजो, अंजनिके अवतारीरे।
विद्यावान हरिभक्तशिरोमणि, परउपकारीरे ॥ १ ॥
वाली भयसे दुखी भये, सुग्रीव कपी लाचारीरे।
राम मिला दे राज, मार वाली बलकारीरे ॥ २ ॥
अगद और नल नील शोक करे, बठे सिंधुकिनारीरे।
लांघ, सियासुध लाये, रामकी चिंतनिवारीरे ॥ ३ ॥

दी सीताकूं त्रास लंकपति, कुमती अति मन धारीरे ।
गर्व असुरको गार जार दी लंक सोनारीरे ॥ ४ ॥
शक्तीबाण लग्यो लक्ष्मणके, भूमीपर दे डारीरे ।
लाय सजीवण आप दई, द्रोनागिरधारीरे ॥ ५ ॥
राम लक्ष्मण पाताल लेगयो, अहिरावण मति हारीरे ।
सेना सहित असुर हत लायें, स्कधे धारीरे ॥ ६ ॥
रावण मार विभीषणकु दी, लका वो सोनारीरे ।
सुर तेतीसां बंध छुड़ाई, अवधविहारीरे ॥ ७ ॥
नंदलाल गुरु भेद बतायो, हनुमत पर उपकारीरे ।
दास कहै नाथू यूं सदा करो साय हमारीरे ॥ ८ ॥

भजन नं० २७

चाल—परस्थानसे आई परी०

मोपे जादुवर जादू डार गयोरे जादुकी नजर चलाके ॥ टेर ॥
रही झरोकां बैठी देख, निकसे श्याम किया नटभेष ॥
नैनोंकी बरछी मार गयोरे सॉवरीसी सुरत दिखाके ॥ १ ॥
लागेसो जाणेरी माय, और न दूजो जाणे ताय ॥
चितवनमें चित अटका गयोरे नैणांसे नेह लगाके ॥ २ ॥
पनियां भरन गई जमनातीर, आ झकझोरी की बलवीर ॥
मेरी अंगियां सारी फार गयोरे नैणांसे नेह लगाके ॥ ३ ॥
कृपा करी ऐसी नंदलाल, गावे नाथू नित नई चाल ॥
यो अधम जणांने त्यारगयोरे, हरि व्रजभूमिमें आके ॥ ४ ॥

भजन नं० २८

चाल—जिदवासे लगन मोरि लागीरे०

मोहनसे लगन मोरी लागीरे, गिरधरसे ल० ।
हांजी तेरी वंसीको झणकार सुनत उठ भागीरे ॥ टेर ॥
हांरे मै तो काज तेरे व्रजराज लाज सब त्यागीरे ॥ १ ॥
हांरे तुमसे प्रीत कसी व्रजराज विरह तन जागीरे ॥ २ ॥
हांरे तुमसे ऐसी कीनी प्रीत जैसे वैरागीरे ॥ ३ ॥
हांरे तेरा नाथूराम जस गाय चरन अनुरागीरे ॥ ४ ॥

भजन न० २९

चाल—उमरावकीमे०

गणराज थॉरी झांकी बड़ी मनोहर दीनदयाल,
जावुं वारणाजी, देवगणेश।
गणराज सारो काज दया कर दुर्मति दुबध्या टाल।
जावुं वारणाजी देव गणेश ॥ टेर ॥
शीश मुकट कानां कुंडल गल मुक्तामणी माल।
बाल चन्द्रमा भालपे दीपे बोत विशाल ॥
गणराज सोहे एकरदन गजवदन विनायक भेस।
बेग पधारणाजी म्हारे देश ॥ १ ॥
रिद्धि सिद्धि कर बदगी चवर ढुलावे बाल।
चवदा विद्या निधान हो सब संकट द्यो टार ॥
गणराज मुद मंगलके कारी दाता आप विशेष।
शीघ्र निवारणाजी विघ्नकलेश ॥ २ ॥
जो जन भक्तीभावसे सिमरे गण किरपाल।
होय कृपाल दयाल वो निहाल करैं तत्काल ॥
गणराज जिनको दुखदारिद्र अविद्या रह नहिं लेश।
अधम उधारणाजी पुत्र उमेश ॥ ३ ॥
पुर डिडवाणेमें वसै भूसुर गुरु नवलाल।
जिनने भेद बताइया है गणदेव कृपाल।
गणराज जबसे नाथूराम जस गावे हितसे हमेस ॥ ४ ॥

भजन न० ३०

इसी चाल उमरावमे०

गिरिजेश म्हाने बालो लागे थारो अद्भुत भेष।
अधम उधारणाजी शंभु महेश ॥
महेश थारो नर क्या कीर्ति उचारे, हारे सुरेश ॥ टेर ॥
गंगा गाजे शीशपे कुंचित भूराकेश।
चंदा राजे भालपें त्रिनयन तेज दिनेश।
महेश थारे कानन मुद्रा सोहे गलमें शेष ॥ १ ॥
मृगछाला वाघबरी, मुण्डमाला हृद वेष।
दिव्य रूप गौरांगपे, भस्मो लसत विशेष ॥
महेश जो तन निरखत मनमें ल्यावे मदन अंदेश ॥ २ ॥

अर्द्ध ग्या है गौरजा, भोले आप उमेश।
हितसे भंग पिलावती, थांने नित्य हमेश।
महेश थारे सन्मुख भंग पी नाचे बाल गणेश ॥ ३ ॥
विद्याधर गन्धर्व नर, सारद शेष सुरेश।
आये विद्या सीखने, इकदिन सर्व मुनेश ॥
महेश सबने डमरू बजाके कीना थे उपदेश ॥ ४ ॥
शेष सुरेश दिनेश अरु, नारदादि निःशेष।
रटै रमेश हमेश विधि, कहू जय-२ गिरजेश ॥
महेश थारी श्रुति स्मृति महिमा गावे चकित हमेश ॥ ५ ॥
शोभित नग कैलाश है, थारा रमणिक देश।
कोटि कल्पतरु काम गौ, कोटिक शक्ति गणेश।
महेश थे तो नंदीगण असवारी करो सुरेश ॥ ६ ॥
डम-२ डम डमरू बजे, मोटी तान विशेष।
झम-२ झम नूपुर बजे, नांचे रंग विशेष ॥
महेश छम-२ सुरति नाचे साजेहद भेस ॥ ७ ॥
डिडवाणो निज ग्राम है, मारवाड़ शुभ देश।
भूसुर गुरु नंदलालजी, दीनो उर उपदेश ॥
महेश गाई नाथूराम हरिमहिमा हरो कलेश ॥ ८ ॥

भजन नं० ३१

चाल—केशरिया दुपटामे झालो देत छनग्यार

कैसे ब्याऊ राधा म्हारी करो यो मुरारी।
राधाकवर रुडो चहिये गेंद हजारी ॥ टेर ॥
तेरो श्याम ऐसो जैसी रैन अंधियारी।
मोरी राधा गोरी निशि शरद उजारी ॥
राधा ओढे सुरंग सारी कान्हो कामल कारी।
ऐसी बात सुन बोली नंदजूकी नारी ॥
कालीदहमे कूद नाग नाथ्यो बनवारी।
लाग्यो फनकारी कारो भयो है विहारी ॥ १ ॥
जब बोली मानकर राधा महतारी।
कैसे सोवे हंसणी या काकघर नारी ॥
राधा रति रंभा तुल यो गायां रोगवारी ॥ २ ॥
पांव तो पद्म जग सारी रच डारी।
रमा पद सेवे-२ विधि मदनारी ॥
ऐसे मेरे श्यामपे वारुं कोटि राधा थारी ॥ ३ ॥

गुणि नंदलाल गुणिजन इधकारी।
सुमग वताया गावे नाथू जस गारी।
राधा शामकी जोरी ऊपर जाउं वलिहारी ॥ ४ ॥

भजन नं० ३२

चाल—इसी चालमे

लागे ठारी ठंडा वारि सारी द्यो मुरारी।
सारी व्रजनारी थारी करें लाचारी ॥ टेर ॥
सरररररर ठंडी पौन चले प्यारी।
थरररररर देह कप रही म्हारी ॥
तरररररर मुखडो उतर्‌यो हरे पट पट विहारी ॥ १ ॥
हसहंस विहारी वारी वारी आरी नारी।
वारी वारी आरी थारी ल्योरी सारी सारी ॥
जव कह नारी विहारी भारी राह निकारी ॥ २ ॥
ऐसी जारी थारी क्या सिखाइहै महतारी।
वारी मोरी नारीने कहे आरी वारी वारी ॥
जारी द्वारी ल्यों वुलारी भूलो सारी जारी ॥ ३ ॥
सुन नारी गारी वोले क्रोधकर विहारी।
ल्यावोगी वुलारी जव मिले सारी थारी ॥
जव नारी सारी गुजारी अर्ज लर्ज भारी ॥ ४ ॥
पुनि नारी सारी वातां ऐसी है विचारी।
जिणकारी सारी साजा व्रत नेमधारी ॥
कंतहै विहारी तौलो क्यांरी लाज प्यारी ॥ ५ ॥
वारी रे वारी चल लेल्यो सारी सारी।
ऐसे टान कान तज आइ वारी वारी ॥
देख उघारी नारी हसे है ओटदे विहारी ॥ ६ ॥
पुनी कह विहारी दोनुं जोर कर सारी।
आवो निकट म्हारी सारी लेल्यो न्यारी न्यारी ॥
जव नारी हारी सारी लाज विसारी ॥ ७ ॥
शक तज जोर कर ऊभी आ उघारी।
हसके विहारी सारी डारी पेरी सारी ॥
नंदलाल गुरु नाथूरामने दीया गुण भारी ॥ ८ ॥

भजन न० ३३

चाल—इसी राह मे

इसकाया नगरका राजा कैसे लेवे नींद गेरी।
जमरायराजकी फौज आयके नगरी तेरी घेरी ॥ टे० ॥
कुटम—कबीला सुत दारा बंधु भाई।
तात मात जात न्यात बहन बहनोई ॥
यांके भरोसे भूल रहो ना चढे भीर तेरी ॥ १ ॥
इनोंके भरोसे भूल गाफल रवेला।
तुरत रिपु आय पुर भेलहो देवेला ॥
फेर जलना काया वन रे चोराशीमे गेरी ॥ २ ॥
दया धर्म धैर्य जाकी ढाल तू बणाले।
ग्यान वैराग्य बोध शस्त्र जु समाले ॥
सतका बक्तर पहन मोरचा रोक समालेरी ॥ ३ ॥
नदलाल बाल जाण गुण ये सिखाया।
नाथूराम जोडके निर्गुण पद गाया ॥
सत्य ब्रह्म जग झूठ जाण ध्या कृष्ण आठों पेरी ॥ ४ ॥

भजन न० ३४

चाल—तबियत फिदा हमारी है पीछे मौज तुमारी है

हरिभक्त काज देह धारी है, उनकू लाज हमारी है ॥ टे० ॥
मथुरा मे लीनो अवतार झूले पालणे नंदद्वार।
हरि पूतना तुरत पछारी है ॥ १ ॥
शकटासुर तृणासुर मारे, जमलार्जुन वृक्षांने तारे।
हरि ग्वालबाल हितकारी है ॥ २ ॥
गोवर्धन गिरिराज पुजायो, देवपति को मान हटायो।
डूबत बिरज उबारी है ॥ ३ ॥
जमुनाजी मे नाथ्यो नाग, ले बंसी मुख गाई राग।
फन फन नृत्य मुरारी है ॥ ४ ॥
चाचा क्रूर बड़े जदुभूप, जिने दिखायो जलमे रूप।
जद जाण्या कृष्णऔतारी है ॥ ५ ॥
पुन आया मथुरा के मांय हर्षे लोग सब दरसण पाय।
छिब देख मगन नरनारी है ॥ ६ ॥
कुवजा कीनी सुन्दर नार, कंसादिक सुर गेर्‌या मार।
करी दैवत जैजेकारी है ॥ ७ ॥
गुणीजनमणि गुरु नंदलाल, किरपा कर गुण दीनो डाल।
जावे नाथूराम बलिहारी है ॥ ८ ॥

भजन न० ३५

चाल—सारग राग मे

हांये म्हारे नंद नंदन मन भावे, माधो वन बैन बजावे ।। टेर ।।
और सखी सब गईरी कुंजनमें, मेरा जिव घबरावे ।
मेरेकू मेरा बालम रोका, हरि अब कैसे पावे ।। १ ।।
मेरा मिलणा जब होय हरिसे दोय बात बणजावे ।
केतो घरकी खुलै किंवाडी, कै देही छूट जावे ।। २ ।।
कृष्ण लगनमें मगन भई सखि तनकी सुध विसरावे ।
देही छांड वेदेही होगी कृष्ण विदेही पावे ।। ३ ।।
सबके पेली जाय मिली ऐसा भाग बन गावे ।
लगन देख हरि मगन भयेरी, ज्योतिमें ज्योति समावे ।। ४ ।।
कोई रीतसें रटो हरीकु, रट्यां मुक्तिपद पावे ।
ज्ञान अज्ञान पिवे अमृतको सोही अमर हो जावे ।। ५ ।।
नंदलाल गुरु है गुणसागर, निसदिन ध्यान बतावे ।
नाथूराम श्याम क शरणे, हितसे ध्यान लगावे ।। ६ ।।

भजन न० ३६

चाल—कृष्ण खेलरयो बालजती

जै जगबन्धु जक्तपती, जानी नही जावे तेरी गती ।। टेर ।।
कर्ता हो आप हर्ता हो आप नहिं पुन्यपाप लगता है रती ।। १ ।।
ज्यो जल में कमल रह हरदम मिल नहिं ऊपर जल रहता है रती ।। २ ।।
गोप्यां से प्रीति कर जक्त रीति तोड इन्द्रि जीत रहे बाल जती ।। ३ ।।
नाथू गावे दास कहावे कृष्ण रिझावें चावे गती ।। ४ ।।

भजन न० ३७

चाल—बूंदडी की राह मे

ऐसा कौन किया तप मथुरावारी कूबरी ।। टेर ।।
मैली छी तिरबंकी नार । कंसासुर की बड़ी गंवार ।।
घस २ चन्दन करती त्यार । रूप अपार अचरज आवे
यूँ मन मे इणरो कहा तबूबरी ।। १ ।।
कांइ या कीना कन्चन दान । कांइ या तीरथ किया सिनान ।।
कांइ सत धूँया तापे प्रान । कांइ वा हरदम भजे भगवान् ।
कांइ कासी लेय करोत काया पाई ऊजरी ।। २ ।।

मोहन देखे मथुरा ग्राम। मग में चन्दन ले मिलि वाम ॥
भक्ती देख मगन भये श्याम। चरचा चन्दन पूर्या काम।
दावी ऐडी से कड़ी ढोडी टेढी कीनी सुन्दरी ॥ ३ ॥
कुबज्या कुटिल कस की दासी। मोहन है मेरा सुखराशी।
ज्यांने भक्ती दिखा जराशी। जिनये मोह लिया व्रजवासी।
हरि से हेत लगाकर चौराशी से ऊबरी ॥ ४ ॥
गोपीवल्लभ गोपीनाथ। अब तो रमे कूबरी साथ ॥
वासे दिल लाग्यो दिनरात। मेरे हात नहीं रही बात।
गोप्यां इणहीज फिकर से झुर २ हो गइ दूबरी ॥ ५ ॥
गुणिजनमणि गुरुवर नन्दलाल। बताया ग्यान महान दयाल ॥
नाथू वचन सुमन की माल। हरि के कन्ठां दीनी डाल ॥
या तो कृष्ण कुबजा की जोरी वाणी खूबरी ॥ ६ ॥

भजन न० ३८

चाल—बारहमास्या मे तथा नाजकनारी की राह मे

सखि मांझल ढलती रात स्वप्न देखा भारी।
प्रीति करी मोसे गिरधारी ॥ टेर ॥
वो नन्दजी को लड़को सुण व्रजनारी।
मेरा आय टँटोला गात कही मोय चल प्यारी ॥ १ ॥
हात पकड़ कर सांवरो सुन व्रजनारी।
मोय ले चले अपने साथ गये जहाँ सखि सारी ॥ २ ॥
हमें छोंड फिर चले गये सुण व्रजनारी।
फिर आय कही व्रजनाथ आइ क्यों यहां प्यारी ॥ ३ ॥
कटुक वचन सुण श्याम का ये व्रजनारी।
मै परी धरण बेख्यांत भूल गई सुध सारी ॥ ४ ॥
जब गोप्यां घबरा उठी सुन व्रजनारी ॥
पुनि पकर उठाई हात धीर दी बनवारी ॥ ५ ॥
फिर हमकू हरि लेय गये सुन व्रजनारी।
ज्याँथी सुन्दर महलात सेजथी फूलांरी ॥ ६ ॥
उसी सेज के मांयने सुन व्रजनारी ॥
मोसे केलि करी व्रजनाथ बात मे कहुं क्यारी ॥ ७ ॥
फिर निद्रा गई नैन से सुन व्रजनारी।
मै रहगइ खाली हात रैन भई जग च्यारी ॥ ८ ॥
सुण राधा की वार्ता हँसि व्रजनारी ॥
घन मिला तोय व्रजराज भाग तेरा भारी ॥ ९ ॥

गुरु नन्दलाल किरपा करी जाउं बलिहारी।
मन नाथूराम हरसात गात हरियश गारी ॥ १० ॥

गजल नं० ३९
चाल—मेंहदी हृदराचणी

कूद हरि जमना में, कैसे नाथ्यो भुजंगी कालो नाग ॥ टेर ॥
ग्वाल बाल संग गेंद खेलते, चढे कदमपर भाग।
सखा बगाई गेंद गिर पड़ी जमना में लाग ॥ १ ॥
गेंद लेणेकुं कूदे हरिजी, जमना नीर अथाग।
पेरता २ गये कृष्ण जद, काली गयो जाग ॥ २ ॥
एक सौ एक फणां से काली, विष उगलण गयो लाग ॥
निकट गया जब लिपटा काला, हरितन बढ़ा अथाग ॥ ३ ॥
शिर काली के चढ़े कृष्णजी भये सब विषका त्याग।
तीन लोक को भार धर्यो शिर, गर्भ जोर गयो भाग ॥ ४ ॥
आदिपुरुष रुप धर आयो, मन में जाण्यो नाग।
और किसी की सामरथ नांई, शीतल करो विष आग ॥ ५ ॥
नागण आय करी अस्तुती, धन्न हमारो भाग।
दरस दिया अब क्षमा करावो, बगसो मेरा सुहाग ॥ ६ ॥
शिथिल जाण काली से उतरे, जब की विनती नाग।
क्षमा करो अपराध हरीजी, अनजाण्या रखि राग ॥ ७ ॥
कहै कृष्ण जावो निज नगरी इस जमनाकूं त्याग।
बुला गरुड़ अभय कर दीनों चले नाग अनुराग ॥ ८ ॥
बाहर आये जभी कृष्णजी, आनन्द भयो अथाग।
नाथूराम श्याम के शरणे बड़ा जनम का भाग ॥ ९ ॥

भजन नं० ४०
चाल—मनदनी की में

राम भजन की भारी मोज, झूठी दुनियां भारी मोज ॥ टेर ॥
क्या सुख चावै निसदिन जावै नेडी आवै जमकी फोज ॥ १ ॥
बिन सुकृत पशु की गत भोगत, रातदिन डोलत लादन बोज ॥ २ ॥
तज खटपट मिट ज्या अटपट झटपट अपणा घटपट खोज ॥ ३ ॥
ढक दरवाजा सुन २ बाजा, लख मनजी हो राजा भोज ॥ ४ ॥
गुरु नन्दलाल बतलाइ चाल गावै नाथू गाल मन में कर चोज ॥ ५ ॥

भजन न० ४१

चाल—चून्दडी की राह मे

हनुमत लेन सिधाया सियावर की मूँदडी ॥ टेर ॥
गज नल नील अंगद कपि तार, जोधा जामवन्तजी लार।
और रहे कपिदल संग अपार, हेरत पहुंच्या सिंधुकिनार।
पाई सीता नांही जब ही बन्दर हो गये वूँदरी ॥ १ ॥
सिंधु सौ जोजन परवान, बन्दर संक्या जोर बखान।
बोले जामवन्त सुरज्ञान, तुमबिन पार लगे हनुमान॥
सिंधु उलांगे लंका पूगे ऐसा हनुमत हुंदरी ॥ २ ॥
आगे फिर गइ लंका नार, मुष्टी मार करी लाचार।
लंका देखी पवन कँवार, पोंछे विभीषण के द्वार।
वांपर राम नाम साकार देख मन कीनो नूंदरी ॥ ३ ॥
भणिया रामहि पवनकंवार, सुण के विभीषण आये बहार।
निज २ कया दोऊसमाचार, विभीषण भेद बताया विचार।
जावो बाग असोक में बैठी सीता सुन्दरी ॥ ४ ॥
कपि जा बैठा वृक्ष की डार, मुन्दडी डार कया समाचार।
निज दुख गायो सीता नार, बजरग बोले वीरता धार।
माता हुकम होवे तो निश्चय डारूँ मुन्दडी ॥ ५ ॥
कपिकुँ आया सुण्या असुर, आपका कीना जाग्या कसूर।
हनुमत किया राक्षस चूर गार्यो रावण को मगरूर।
जारी लका सका मानी सारा निश्चल घुन्दरी ॥ ६ ॥
फिर जा आये हरि ले सग, जितायो रामचन्द्रकूँ जंग।
सुर कह धन २ हो बजरंग, है गुरु नन्दलालकूँ रंग।
दरजी नाथू पर मरजी कर खोली सारी चूंदरी ॥ ७ ॥

भजन न० ४२

चाल—तबियत पिदाकी मे

वेंकट संकटहरणा है आनन्दमंगल करणा है ॥ टे० ॥
शिव बिंद डार्यो अँजनी कान, कान सुंई प्रगट्यो हनुमान।
थांने शिभू सुवन यूँ वरणा है ॥ १ ॥
वनमाहीं मारुती आन, अंजनीकूँ दीना वरदान।
तेरा मारुति नाम यूँ धरणा है ॥ २ ॥
पिता केशरी है बन्दर, जिनकी थी अँजनी सुन्दर।
यूँ केशरी नन्द वन चरणा है ॥ ३ ॥

वार शनीश्चर लियो अवतार, मगल मूरति मगल वार।
प्रभु मंगल नाम सिमरणा है ॥ ४ ॥
लाल देहि और लाल लंगूर, लाल लसरही अग सिंदूर।
थारे अतुलित बल गुण वरणा है ॥ ५ ॥
महर करी द्विज गुरु नन्दलाल, नाथूराम जस गावै विशाल।
मेरे मारुति का शरणा है ॥ ६ ॥

भजन नं० ४३

चाल—जोडी राजा लालमे

गोपाल लाल देखी राजरा वैकुण्ठ की चतराई जी प्यारा नन्दजी का लाल
देखी राजरा वैकुंठ की चतराई हो गोपाल ॥ टेर ॥
गोपाल लाल सुवरण भूमि सुंदरजी जड़े हीरा माणिक लाल ॥
मंदिरों की छबि कवि से कही नहीं जावे हो गोपाल ॥ १ ॥
गोपाल लाल मेघवरण पुरवासीजी सोहे कुंडल गलमाल।
राजरा रूपरी कहांतक करां म्हे बड़ाई हो गोपाल ॥ २ ॥
गोपाललाल शेष सिंगासण विराजोजी रमा चांपै चरण विशाल।
जय विजय चँवर ढुलावै राजन सदा ही हो गोपाल ॥ ३ ॥
गोपाललाल सोला पारसद हाजरजी थारी आज्ञा करे पाल।
ब्रह्मा शकर इंद्र सभी गुण गावै हो गोपाल ॥ ४ ॥
गोपाललाल मुनीजनोंकुं दुर्लभ थांने ध्यावै सदा त्रिकाल।
शिवपुरी व्रजवासिनकुं दिखलाई हो गोपाल ॥ ५ ॥
गोपाललाल नदलाल गुरु मिलियाजी बनि पुष्पकी माल।
हित से नाथू दरजी भेट चढाई हो गोपाल ॥ ६ ॥

भजन नं० ४४

चाल—भागडली मे

मोहन म्हारे आजो रातड़ली।
महला मे थें रीजो, नाना सुख दीजो।
रँगीला थारी खूब करस्यां खातडली ॥ टेर ॥
खटरस भोजन कर मिजमानी,
रंगीला थांने देस्यां भलीभाँतड़ली ॥ १ ॥
सोने की झारी गंग का वारी,
रँगीला लीजो बीड़ी मेरा हातड़ली ॥ २ ॥
फिर मैं फूंन सी सेज विछाऊँ,
रँगीला सुख कीजो सँग साथड़ली ॥ ३ ॥

नवल किशोर मनो सांवलिया,
रंगीला हुं सुन्दर मदमातड़ली ॥ ४ ॥
तज के सक निसंक निशी में,
रंगीला की जो रंगरी बातड़ली ॥ ५ ॥
मधुर २ स्वर केइ केइ रागां,
रंगीला काना गास्यांजी सॉतडली ॥ ६ ॥
सारी रजनी ऐस कराजो,
रंगीला फिर जाजो परभातड़ली ॥ ७ ॥
नन्दलाल गुरुका शिष्य नाथू,
रंगीला महिमा गावै निश प्रातड़ली ॥ ८ ॥

भजन नं० ४५
चाल—गाजो भरवादे की राह मे

मत रोकें घाट गोपाल पाणीड़ो भरवादे ॥ टेर ॥
भरवादे नन्दजी का लाल पाणीड़ो भरवादे।
मै जल भरणे कारणे रे जमना आई चाल ॥ पाणोडो ॥ १ ॥
नित की मारग रोकर बैठो, आ कांइ थारी चाल ॥ पाणीडो ॥ २ ॥
गागर मेरी गिरजावेगी, कांकरि मार मत लाला ॥ पाणीडो ॥ ३ ॥
घरां लड़ेगी सास हमारी, नणदल देगी गाल ॥ पाणीडो ॥ ४ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे, सदा करो प्रतिपाल ॥ पाणीडो ॥ ५ ॥

भजन न० ४६
इसी राह मे

मति आडो फिरै गिंवार हरी से मिलवादे ॥
मिलवादे मेरा भरतार हरी से मिलवादे ॥ टेर ॥
और सखी गइ कुंजन मे रे, मेरे क्युं जड़्या किंवार ॥ १ ॥
बालसनेही सांवरियो रे, उनसे लाग्यो प्यार ॥ २ ॥
लम्पट वॉको मतना जाणे, है निकलंक करतार ॥ ३ ॥
भक्त उबारण लीलाकारण धर्यो मनुज अवतार ॥ ४ ॥
गहना खोल देह कुं विडारूं, मिलुंगी प्रभु से जार ॥ ५ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे, जाग्यो प्रेम अपार ॥ ६ ॥

भजन नं० ४७

बिछिया बाजे झनननन

चलत हिंडोरो सनननन, घन गरजत है घनननन ॥ टेर ॥
आइ सावणियारी भार, तीजाँ तणौ है तिवार।
राधा सज सिणगार, लगी झूलाननननं ॥ १ ॥
नीकी बागन की भार, खिल रही गुलक्यार।
करै भँवर गुंजार, भूँभनननन ॥ २ ॥
झूला देती पूछे वाम, राधा लेवें पिवको नाम।
सुणे सारी व्रजवाम, लागी हसननननं ॥ ३ ॥
सखि मँगल रचावें ताल मृदग बजावें।
तार सारँगी मिलावें, तुन्तननननन ॥ ४ ॥
मीठे ऊँचे स्वर गावें, भाव नाच बतलावें।
पग नूपुर बजावें, छु छननननन ॥ ५ ॥
नन्दलाल बतलावें, गुण नाथुराम गावें।
कर झाँझही बजावें, भूँझननननं ॥ ६ ॥

भजन न० ४८

चाल—रगदे२ रे रगरेजा पेचो समदर लेरको

करदे-२ रे सांवरिया मोपर झोलो महरको ॥ टेर ॥
कीनो भक्त प्रहलाद जान, प्रगटे खंभ फाड़ भगवान।
धार्यो करुणा निधान, पलमें रूप शेरको ॥ १ ॥
भक्त सुदामाको करतार, दीनो दालिदर विड़ार।
भर्यो धनसे भंडार, जैसे यक्ष कुबेरको ॥ २ ॥
राखी द्रुपद सुताकी लाज, प्रभु बनके आये बजाज।
कीनु मीरा पे वृजराज, अमृत हो गयो जहरको ॥ ३ ॥
भजता निसदिन तोय गोपाल, दीनुं ग्यान गुरु नंदलाल।
गावें नाथूराम जस ख्याल, वासी डीडपुर शहरको ॥ ४ ॥

भजन न० ४९

चाल—ब्राह्मण काकी मे

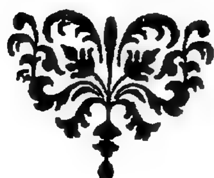
हांरे जिया तू, सियावर तत्व पिछाणलेरे।
हांरे जिया तू, छोड़ सकल जंजाल, जीव म्हारा रे।
हांरे मन म्हारारे, कयो हमारो मानले रे ॥ टेर।
हांरे जिया तू मानुज देह पाई दुर्लभ सें।
हांरे लख्या अमोलक लाल, जीव म्हारारे ॥ १ ॥

हांरे जिया कोल कियो कांइ गरभमें।
हांरे जिया तू वोही कोल समाल, जीव म्हारारे ॥ २ ॥
हॉरे जिया विषयावस तुं कांइ होर्‌यो रं।
हॉरे जिया लख सपनासा ख्याल, जीव म्हारारे ॥ ४ ॥
हांरे जिया देहमें आसक्ति मत कीजे।
हांरे जिया याद रखीजे प्रभु काल, जीव म्हारारे ॥ ५ ॥
हॉरे जिया तूं, उस प्रभुकू मत भूलजे।
हांरे जिया तूं कर सुकरत त्रिकाल, जीव म्हारारे ॥ ६ ॥
हांरें जिया तूं नदलाल गुरुने ध्यावणारे।
हांरे जिया तू, मान वांका सत्त सवाल, जीव म्हारारे ॥ ७ ॥
हांरे जिया तू नाथूको कह्यो सुणलेरें।
हांरे जिया तूं गाणा गुण गोपाल, जीव म्हारारे ॥ ८ ॥

भजन न० ५०

चाल—ब्राह्मण काफीमे

माई तुम्हारो सॉवरो ये बड़ो माखन चोर।
ल्यावै सग सखा दसबीस आवै नित उठ भोर ॥ टेर ॥
निजर चुरा घरमें धसेये ऐसो नंदकिशोर।
ऊखल चढ ले उतार खावै माखन चोर ॥ १ ॥
हरजासे वरजा ना देवु ये घटे दरजा तोर।
परजामें हॉसी होय बाजे नंदको चोर ॥ २ ॥
दरजो रखो तो आपको ये बरजो यो किशोर।
मेरो तो कहनेको काज नहीं दूजो और ॥ ३ ॥
गुरु नदलाल किरपा करीये गावे नाथु जस जोर।
राम कृष्ण निशि भोर बसे हिरदे मोर ॥ ४ ॥



भजन नं० १७

राग झिझोटी

श्री आनन्द कन्द गोविन्द मुकुन्द मुरारी हरे ॥ टेर ॥
भगवान कान कल्याण दान करुणा निधान कंसारि हरे ॥ १ ॥
दीनन दयाल जशोदा के लाल गोपाल बाल गिरधारी हरे ॥ २ ॥
दर्जी नाथूराम सुखधाम श्याम प्रभु पूरे काम बनवारी हरे ॥ ३ ॥

भजन नं० १८

चाल—वेदो का डका आलस मे

सत धर्म का मारग गीता में बतला दिया कृष्ण मुरारी ने ॥ टेर ॥
ब्राह्मण वर्णों को ब्रह्म ज्ञान, युद्ध क्षत्री करे गऊ प्रजा हिते।
वैश्य विणज नृप सेवा शूद्र लिखना दफतर सर्कारी ने ॥ १ ॥
देवी आसुरी दोय सम्पदा उत्तम अधम गुणा करके।
शील दयालु स्वर्ग निवासी दोजख हिंसाचारी ने ॥ २ ॥
पर धर्म गहे सो पतित होय निज जाति कर्म करना अच्छा।
स्वकर्म करत पुण्य पाप बने सो लगे न निअंहकारी ने ॥ ३ ॥
हरी भक्ति निष्काम कर्म कर अन्तः करण को शुद्ध करना।
दर्जी नाथू ज्ञानन से लखना आत्म अविकारी ने ॥ ४ ॥

भजन नं० १९

चाल—वैगणियो

सखी जाणों उनकी बाण छली वो सांवलियो ॥ टेर ॥
बली पताल पठायो हो बावन बसुधा लीनी दान ॥ १ ॥
शूर्पणखा आई नेह करणे, कटवा नाशिका कान ॥ २ ॥
सिया सती को वन में निकाली, निंदक खल की मान ॥ ३ ॥
हम ग्वालन को कौन चिकारी, रखे पास मे कान ॥ ४ ॥
नाथूराम कृष्ण के शरणे, अब कुवरी मिजमान ॥ ५ ॥

भजन नं० २०

चाल—पोमचो

तो कू अभी बुलाई नंद किशोर ये सुन सुन्दर राधे ॥ टेर ॥
बेग पधारो कुंजन में राधे नाम तिहारो।
हरदम रटतो वो तो रयो है वाट निहोर ॥ १ ॥

और कुछ भी चित्त ना चावे वो तव मुख चन्द चकोर ।
रति पति मदन मोहनजी के अति देत बदन में जोर ॥ २ ॥
राधे, झट पट ही सिणगार सजो थाने ज्यादा कहूं क्या और ।
राधे, नाथू दर्जी विनवै बसो हिरदा मै आठों पोर ॥ ३ ॥

भजन न० २१
राग—चेती गुमनौड़ा

माहेश्वर भोला करदोनी महर का झोला ॥ टेर ॥
म्हारो हेलो कैलाशाँ बैठा झेलो ।
मै तो भूली परमपद शूली ॥ १ ॥
चाहुं सेवा परसादी फल मेवा ।
नाथू दर्जी दर्श को गरजी ॥ २ ॥

भजन न० २२
राग—भीम पलासी

तेरा होरी का खिलाना अजब देखा ॥ टेर ॥
डारत रग डरावत नाहीं खेल ये कपट सजब देखा ॥ १ ॥
खेल खिलावे खेल से न्यारा तुमसा नहीं मजब देखा ॥ २ ॥
रति कमाना जति कहाना, गति पिचकारा गजब देखा ॥ ३ ॥
नाथूराम त्रिलोकी मांही ना कोई कृष्ण मुजब देखा ॥ ४ ॥

भजन नं० २३
राग—सारग

घू घट पट तजदो राधाजी ॥ टेर ॥
एक खंजन कंजन पर दिखणा, प्यारी भजन रंकको बाधाजी ॥ १ ॥
तेरे घू घट में अम्बुज ऊपर वह पछी दोय लाधाजी ॥ २ ॥
सो ही कमल मुख नैन दिखा दो प्यारी होय मनें सुख ज्यादाजी ॥ ३ ॥
नाथू के स्वामी मन मोहन दर्शन का है इरादाजी ॥ ४ ॥

मूर्ख जन पंडित कहलावे कृपा कटाक्ष तुम्हारीरे ।
मुक होय वाचाल सुयश सब जग में जारीरे ॥ २ ॥
सिद्धि होय जिनके सुमरण से ऋद्धि बढत सवाईरे ।
दुख दारिद्र मिट जाय शीघ्र इच्छा फल पाईरे ॥ ३ ॥
मुझ अज्ञान को बाल जान कर देवो बुद्धि घनेरीरे ।
नाथूराम गणराज शरण प्रभु चहे तुम्हारीरे ॥ ४ ॥

भजन न० ७

चाल—इसी चाल मे

देखोरी घनश्याम राधिका झूला झुले है, आनन्द ऊले है ॥ टेर ॥
रेशम डोर कदम की शाखा झोटन जोर हलूले है ।
राजे सखा संग हरी भोम जमुना की कूले है ॥ १ ॥
रतन जडित गेणा पोशाकां, जरी कोर मकतूले है ।
कोटि काम रति गवर श्याम छबि पर नही तूले है ॥ २ ॥
रमक झमक दे झोला सखियां माधव मन अनुकूले है ।
रमक बढ़त उड़त पट घूंघट श्रीमुख खूले है ॥ ३ ॥
पुनि पुनि प्रिय मुख जोवे ठानी लीला नन्दके दूले है ।
देख निजातम रूप रसिक मन कांच मे फूले है ॥ ४ ॥
नृत्य गायन कर पाँच पचीसों तन मन धन कबूले है ।
दर्जी नाथूराम श्याम की छबि नहीं भूले है ॥ ५ ॥

भजन न० ८

चाल—सगीजी थारी काई मरजी

वर वर जोर कर करूं अरजी सुणना सांवरिया,
थारी कांई मरजी ॥ टेर ॥
वहुतसी दरखवास्त करी महकमे खास ।
मोटी राजरी है आश पूरण गरजी ॥ १ ॥
सुण्यों राजरो महाराज नाम गरीब नवाज ।
शरणागत की लाज थाने राधावरजी ॥ २ ॥
सुर मुसायव आन चावे रिश्वत दान ।
करू दीन गुजरान प्रति दिन लरजी ॥ ३ ॥
धन गुना वखशोस किया कंई याने विना फीस ।
मेरी वेर जगदीश क्या घाटा घरजी ॥ ४ ॥
फल चार के दातार हो अधम उद्धार ।
देवो मनोरथ सार त्यार नाथू दरजी ॥ ५ ॥

माटु भवन लुभाई, तेरे दर्शन ताँई।
प्रेम चकरी की नांई, घुम गननननन ॥ ३ ॥
नाथू कहे क्वॉर मास. खास आप किये रास।
पूरी आस पास नाचे छुम छुनननन ॥ ४ ॥

भजन नं० १२

सखी लगे सुहानों श्रावण, श्याम सुन्दर घर आये से ॥ टेर ॥
चढ़ आवे घटा चहुं गहरी, होती है रैन अन्धेरी।
आवे पिव की याद घणेरी, पपैयो बिलराये से ॥ १ ॥
घन गरज २ बरसावे, तन परस मदन सरसावे।
अति विरहा जोर जनावे रे चपला चमकाये से ॥ २ ॥
वर्षा की रैन सरासर, वर बिन हो वर्ष बराबर।
वर व्यापक मुण्या चराचर रे सुख हो निजराये से ॥ ३ ॥
नाथू के स्वामी दरसे, अति मेह शीतल बरसे।
मेरा दिल जबही हरषे रे प्रभु तीज रमाये से ॥ ४ ॥

भजन नं० १३

घनश्याम आये बरसाने ज्यु घनश्याम आये बरसाने ॥ टेर ॥
बीज घटा ज्यूं पीत पटा खुद घटा रूप दर्शाने।
मुरली मोर घोर घन गुगरा झड़ी मन्द हर्षाने ॥ १ ॥
सुख दानी सुन्दर तन क्षेत्र ज्यु पानी लगे परसाने।
हरी भोम ज्यु लीला देवी जिव आनन्द सरसाने ॥ २ ॥
धन सांवलिया रचे रास जुग चतुर मास चरसाने।
भक्ति बीजन वक्त मिली है नाथूराम करसाने ॥ ३ ॥

भजन नं० १४

सांवलिया कमलियां तान मेह की बून्दा पड़े ॥ टेर ॥
उमड़ घुमड़ कर आई वो बदलियां. छाय रही असमांन,
गहरोझरना झरे ॥ १ ॥
एक समय तुम वृज को उबार्यो. गारो इन्दर मान,
निगम्मा नाखो मरे ॥ २ ॥
वैसे ही प्रभू कृपा करके, निकट हमारे आण
क्यों नही ओटा करे ॥ ३ ॥

भीज रही मेरी सुरङ्ग चूनड़ीया, होत खराब निशान
मेरा दिल या से डरे ॥ ४ ॥

इस अवसर प्रभु दया करोगे तन मन दूंगी दान,
चलूं सग तेरे घरे ॥ ५ ॥

नाथू दर्जी अजी करता मरजी कर भगवान,
सबही बाधा टरे ॥ ६ ॥

भजन न० १५
राग जोगिया

नँदजी के बधइयाँ बांटे, अवतरियाजी कन्हैयालाल ॥ टेर ॥
पीलो ओढ़ जसोदा राणी, बैठी आंगण पाटे,
वेद विधि से जलवा पूजे मंगल तोरण सांटे ॥ १ ॥
नाई दाई ढाढ़ी ढोली लेन बधइयाँ नाँटे,
चित चाही ले द्रव्य बँधाया बाँधत पोटां फाटे ॥ २ ॥
वृजवासी कई पंच खोबरिया कान्ता वाती छाँटे,
गवर मायत के श्याम पुत्र यो आयो छे आटे साटे ॥ ३ ॥
विष हांचल कर गई पूतना कृष्ण कने क्या लां,
दजी नाथूराम पियारे दौडी मथुरा घाटे ॥ ४ ॥

भजन न० १६

हां सखी बेरण भरमायो कुब्जा शौक कियो मन चायो ॥ टर ॥
हां सखी यो सावण आयो कोल कियो हरी नाह निभायो ।
किण संग झूला झूलांरी सजनी झूला में झूरनो लिखायो ॥ १ ॥
मथुरा गये हरी कस विडारन मग में मिल गई कामण गारन ।
मुख मीठी मन कपटन कुब्जा जादू को चदन लगायो ॥ २ ॥
चेरी को करके पटरानी, वसे द्वारिका सारग पाणी ।
अब कैसे सुध लेय हमारी, सखी पिव भयो है परायो ॥ ३ ॥
दोष नहीं दासी को राई, दोषी दाऊजी को भाई ।
दशरथ सुत होय करी दुर्दशा नकटी मांगेछे वो ही दायो ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम की मरजी जाणी न जाय किस बातें के गर्जी ।
रमा त्याग वृन्दा सग रमियो सालग होय तुलसी न ब्यायो ॥ ५ ॥

मङ्गला चरण

चौपाई

जै दुर्गा दुर्गति दुख हरणी । दे सुध्र बुध मुद मंगल करणी ॥
शेष सुरेश गणेश मनाई । ब्रह्म रमेश महेश सराई ॥
हंसासनि कमलासनि वाली । सिंहासनि रिपु नाशनि काली ॥
नारदादि मुनि नर सेवे । शारदे शुभ गुण गण स्वर देवे ॥
गधर किन्नर सुर विद्याधर । भजइ अपसरा नृत्य गायन कर ॥
जिन पर अनुग्रह करहु भवानी । गृह सम्पदा बहु विद्या वाणी ॥
तीनहि ग्राम सप्त स्वर रागा । शीघ्र बताओ गिरा वर मॉगा ॥
कह नाथू शिष्य नंदलाल के । कठ सरस्वती बैठो बाल के ॥

भजन न० २

चाल—समदण फूल गुलावी

गणपत मूसा चढ़ कर वेगा आईजो,
थारो रिद्ध सिद्ध नारी ने सागे लाईजो ॥ टेर ॥
गढ रणत भँवर के राजा,
सारो काजा श्री महाराजा ताजा मोदक भोग लगाईजो ॥ १ ॥
क्रीट मुकुट सिर साज, बिड़द विराजे
छवि लख रवि शशि लाजे, सुन्दर दर्श दिखाईजो ॥ २ ॥
त्रिपुण्ड भाल निकाला, मोतियन माला अग पर पीत दुशाला,
जरकस वाला सजाइजो ॥ ३ ॥
परसा करमें धारो,विघ्न विडारो कुमति निवारो, सारो
आनन्द रंग बरसाईजो ॥ ४ ॥
नन्दलाल गुरुवरजी, कीजो मरजी, नाथू दरजो सरजी,
अरजी सो पैस चढाईजो ॥ ५ ॥

भजन न० ३

गजल

मुझे अपनावो देवी जिव प्यारा समझ के ।
रज्जु में सर्प दर्शता तुझ में जगत ज्योंही ।
भ्रम हुआ है भ्रमको विस्तारा समझ के ॥ १ ॥

सब रूप विश्व है तेरा ब्रह्मात्मा अखो।
भूला रखा क्यों भ्रम में मोय न्यारा समझ के ॥ २ ॥
करता स्तुति आपकी बुद्धि अनुसारि ये।
सोही गुण प्रताप यह बल थारा समझ के ॥ ३ ॥
कहत नाथू सरस्वती पवित्र कीजिये।
कीट अली ज्योंहि व्यवहार समझ के ॥ ४ ॥

भजन नं० ४

राणी थारी महरबानी से ये पद प्राणी पाये निर्वाणी ॥ टे० ॥
सिंहासनि रिपुनाशिनि दुर्गा, जग सरजनि ब्रह्माणी।
हरो दरिद्र लक्ष्मी होकर शारद दो बुध बाणी ॥ १ ॥
चढ मराल बाल सतपुर से आवो चाल भवानी।
भक्ति मुक्त दो भक्तन को मुक्ति हित कल्याणी ॥ २ ॥
हम पतित तुम पतित पावनी बालक बने धिराणी।
लोभ मोहता मेट मेट चट पारसमणि महाराणी ॥ ३ ॥
अति अनूप सुख रूप सरस्वती, नाथू कवि मन मानी।
दिव्य दिदार दिखा दिल अन्दर दुर्मति दूर नशानी ॥ ४ ॥

भजन नं० ५
ठुमरी

आवो आवो गजानन्द शुभ कारी ॥ टेर ॥
विघ्न भय निकन्दनं भवानी नन्दन,
मुक्त सुख कन्दन जगत वन्धनं प्रभू सज मूसा असवारी ॥ १ ॥
दारिद्र दुख चूरणं, कर दोष दूरणं, निधि भर पूरणं
इच्छा सम्पूर्णम संग लाज्योजी ऋद्धि सिद्धि सारी ॥ २ ॥
नाथू कहे विनायकं सुबुद्धि दायक, मोदक भोग लगायक,
भक्त सहायकं, जै अग्रेश्वर पद बलिहारी ॥ ३ ॥

भजन नं० ६
चाल—आज रंग बरसे रे

विघ्न हरण सुख करण विनायक आनन्द कारीरे भरोसो भारीरे ॥ टेर ॥
प्रथम ध्यावे शुभ फल पावे देव बड़ो उपकारी रे।
भरदेवे भण्डार सरण जो जावे थांरीरे ॥ १ ॥

भजन न० २४
इसी चाल मे

ना तजती गू गट पट रसिया ॥ टेर ॥
जाण गई तुम जिन हित करते तारीफों का थट रसिया ॥ १ ॥
मम मुख कमल कपोल कली रस चहत अली ज्यों लिपट रसिया ॥ २ ॥
सखियों में मेरी हसी उड़ानी ठानी हो या रट रसिया ॥ ३ ॥
नाथू कहे राधा शर्माकर तुम हो नागर नट रसिया ॥ ४ ॥

भजन न० २५
चाल—काफी होली

सांवरा मै तो बाला हूं भोरी, मत करो बाला जोरी ॥ टेर ॥
ओर सखी सब भर यौवन में, मै हूं नवल किशोरी ।
होरी का नाम लेत डर लागे काया कांपे मोरी ॥ १ ॥
अबकी होरी माफ कर मोहन, आणे दे अबकी होरी ।
उन होरी ने होरी जोरी को खेलूगी सग तोरी ॥ २ ॥
कह गिरधारी सुन वृज नारी डालन दे रग रोरी ।
ओसर पाय जाय मत खाली रह जावोगी कोरी ॥ ३ ॥
लग रयो मन जग सुख जाको भ्रम भूल रई हो गोरी ।
नाथूराम पूर्व पुण्य जागे जब लगे नेह की डोरी ॥ ४ ॥

भजन न० २६
इसी चाल में

मारुती मचाई युद्ध होरी, अहिरावण की पोरी ॥ टेर ॥
जाय पताल देवी दरवा की सज्जा दई मरोरी ।
फगवा बली असुरन की लीनी पचानन खम ठोरी ॥
प्रकटे ज्युं हरि थम फोरी ॥ १ ॥
गदा कुमकुमा मार मार के असुरों की गर्दन तोरी ।
रक्त रगको कीच मचायो, फैल गई चहुं ओरी ॥
वीर रस की खसबोरी ॥ २ ॥
ऐसो फाग खेल बांकुरे आये मकरध्वज दोरी ।
राज तिलक तिनको कपि दीन्हा, फेरी राम ढिंढोरी ।
बजन लगी नोपत जोरी ॥ ३ ॥
दशरथ सुत युग कन्धे बिठाये लाय लंका में छोड़ी ।
बिजय पाय अवधपुर आये, लखन राम सिया गौरी ॥
गावे नाथू जश जोरी ॥ ४ ॥

भजन नं० २७

चाल—ओलू डी

ओजी वृज का पालणियां थां विन फागण फीको लागेजी साँवरा ।। टेर ।।
फूल फूल वन फूलन से महकत मधु कर मांगेजी ।। १ ।।
रग राग घर-घर करती सखी सब प्रीतम सागेजी ।। २ ।।
ग्रह ना सुहावे ओलूँ घणी आवें वृहना दूणी-२ जागेजी ।। ३ ।।
नाथू के स्वामी कव दर्शोगे प्यारी के नैना आगेजी ।। ४ ।।

भजन नं० २८

तर्ज—जाड़ा

लुल लुल लागूँ ए अम्बाजी थारे मै चरणा ।
दीजो मारा प्रभु ने मिलाय ।। टेर ।।
दाना लेकर आयो है अम्बाजी वैरी शिशु पालो, दीन्हों दीन्हों घेरो लगाय ।
लीना ए अम्बाजी मै तो आय सरणा ।। १ ।।
राजा भीम री सुता ठाड़ी रुक्मणी, कहली २ अरज लगाय ।
देती क्यूँना हे अम्बाजी वर प्रभू परणा ।। २ ।।
नाथू दरजी विनवे है दोऊ कर जोरी रीज्यो २ सदाई सहाय ।
कीज्यो २ ए अम्बाजी थे तो नित करुणा ।। ३ ।।

भजन नं० २९

राग—कालिङ्ग

शकर सुनिये अरज हमारी ।। टेर ।।
मिला रहत मारा ही चाहत कामादिक ठग भारी ।
महा शत्रु मित्र वन ठगते करते दीन दुखारी ।। १ ।।
दिन का तो कुछ दाँव न लागे निश एकान्त निहारी ।
परगट घट चट हट डट शठ ये खट पट करत ख्वारी ।। २ ।।
मेरोवश कहाँ चाले दया निधि सुर नर मुनि गये हारी ।
होलिये नाम काम मद मोचन तिरलोचन मदनारी ।। ३ ।।
शिव शिव लव से जिव शिव पावें सुख ज्युं पिव मिल प्यारी ।
नाथू सरस्वती वरण सराही महिमा अमित तुम्हारी ।। ४ ।।

भजन न० ३०

राग—बसत

मै तो व्याहूंगी माई सदाशिव के साथ ॥ टेर ॥
मेरो आज जुगादि पति विश्वनाथ।
श्री कमलापति है विष्णु श्याम।
विधि ब्रह्माजी के सावित्री बाम।
ज्युं ही शिव शक्ति के अनादि जोड़।
भोला शम्भू है मेरो सिरको मोड़ ॥ १ ॥
लख वृद्ध भेष मत तत्व भूल।
निरवाणी पद पाणि त्रिशूल।
नित सोला वर्ष को रह स्वरूप।
कैलाशी अखिल ब्रह्मान्ड भूप ॥ २ ॥
हरि पैदा करी सो बरी है गग।
पति व्रता नुलाय धुलाय अंग।
लक्ष्मीजी विभूति लपटी संग।
सज कोटि भान छबि लज अनंग ॥ ३ ॥
शिवपुर में राखे नित वसत।
योगी कृष्ण ज्यूं लीला करे इकन्त।
दरजी नाथूराम महिमा अनन्त।
जप जप के तिरगये कोटि सन्त ॥ ४ ॥

भजन न० ३१

इसी चाल मे

सच्ची भक्ति से राजी राम ना रीजे वो पाखंड से ॥ टेर ॥
छापा तिलक वरुणाश्रमी अछूताई मत भेष ॥
मिथ्या ढोंग से दूणा बढ़सी ममता मोह क्लेश ॥ १ ॥
अधम जाति की भीलनी क्या साध्यो आचार।
जूठे फल राघव चखे कैसी प्रीति निहार ॥ २ ॥
मन बिखरो दुर्भाव में तन पर भक्ति रङ्ग।
अन्तरजामी क्या मिले लख बुगलाई ढंग ॥ ३ ॥
जगत धर्म सुख स्वप्नेसा लख, दुख मन को ले खीच।
पूर्ण प्रेम जबही लगे श्री माधव पद बीच ॥ ४ ॥
रीझे सच्चा प्रेम जाण के हो प्रसन्न यदुराय।
नाथुराम दरजी मथुरा को भक्त भांति अपनाय ॥ ५ ॥

भजन नं० ३२

रे नर भक्ति प्रीति की रीति जानता अन्तरयामी रे ।। टेर ।।
ऋषि आचारयुक्त भजे पहले मिलेन स्वामी रे ।
जूठे फल शबरी घर खाये देख प्रणामी रे ।। १ ।।
सिय लिये कपिदल सेत बन्धा बहु करी इन्तजामी रे ।
गज हित पालो आयो स्वर्ग सु खगपति गामी रे ।। २ ।।
पाये साग विदुर घर अन्न तज करु के नामी रे ।
उग्रसेन अर्जुन हित कीन्ही उलट गुलामी रे ।। ३ ।।
बड़पण विभचारा नेह बाधक चित चल कामी रे ।
नाथूराम श्याम के शरणे हृदय मुलामी रे ।। ४ ।।

भजन नं० ३३
तर्ज—काफी

रे दिल क्यूं भटकावे पास खड़ा महबूब ।। टेर ।।
जिसको श्रुति कहे जग व्यापक, फिर क्या पुकारे ऊब ।। १ ।।
दुनियां की दुर्मति के मांही, बिलकुल डूबा डूब ।। २ ।।
एक भाव से कर नित पूजा, दूजा पर मत लूभ ।
नेक प्रेम युत चरच्यां चन्दन कुबज्या की मिट गई कूब ।। ३ ।।
नाथूराम श्याम के शरणे मौका मिले है खूब ।। ५ ।।

भजन नं० ३४
तर्ज—जमका भजब ताड़ाकारे

गाफल रहो मतोनारे जमका जगत चबीनारे ।। टेर ।।
बालापन हँस खेल गमाया, तरुण पहर मणि पट्टु ।
नर को देख नारी भो चकरी, नारी देखनर लट्टु ।। १ ।।
कहा कमावे क्यासुख पावे, कहां ठमकावे नूपुर,
त्रिलोकी को मोल जात है सांस २ के ऊपर ।। २ ।।
मोह नींद बस जग सुपना में मृग जल सुख हित भटके,
आन अचानक काल पाड़ दियो बाण मरसी झट के ।। ३ ।।
सहनशीलता पीवो दवाई रोग भोग ज्वर करता,
खाज कुपथ्य कुचाला लाग्या कभी घाव नहीं मिटता ।। ४ ।।
कहत मन्दोदर रावण मरता मानी नहीं पिव मेरी,
जिन विषयन को मित्त समझता सोही भये अब वैरी ।। ५ ।।
पाक मोहब्बत सज्जन सोबत कर कपटाई त्यागो ।
नाथूराम कृष्ण के शरणे सत्त सुमारग लागो ।। ६ ।।

भजन न० ३५

तर्ज—बटवा गूथनदे

आज मेरा ठारी से घूजे बदनवा, अंबर मेरा दे ॥ टेर ॥
हर हर गगा कर कर न्हाती थर थर थर कांपे देह ।
बर बर कर कर जोर कर सारी जल में टेरा म्हें ॥ १ ॥
चीर चुराया मेहरम पाया आया हेरा ले ।
मीठी तानां गाना गाये जाना तेरा नेह ॥ २ ॥
चीर दिरावो कृपा कराओ अंग में पहिना म्है ।
बाहर आकर सैयां गल में बैयां गैरां म्हें ॥ ३ ॥
गुरु नन्दलाल उर गुन डाला मेटा मेरा संदेह ।
नाथू के स्वामी पार लंघैयो भव से बेड़ा थे ॥ ४ ॥

भजन न० ३६

नानदा नई बादरगई

म्हारा सांवरजी हो म्हारो मती लूटो मही ॥ टेर ॥
मही लूट्यां रार होगी सार यामे नहीं,
लाखों ग्वालन दही बेचे डाणदे कुण गई ॥ १ ॥
लाग दही की दी सुणीना आज लो क्यों नई ॥ २ ॥
घरों हमारी सासु लड़सी बात मानो सही ॥ ३ ॥
हाट छोडो बाट छोडो मानो म्हारो कही ॥ ४ ॥
नाथू वर्जी पे दया करो ओट थारी लई ॥ ५ ॥

भजन न० ३७

तर्ज—कोई दोडोरे सगी ने बिछडोक

बोले सिसपालो वीरन में, भगी क्यूं पड़ी रणधीरन में ॥ टेर ॥
देखो कांइ चेगा, धारो क्यूं ना तेगा, आडा फिरो वंगा ॥ १ ॥
दंतादर और ठाडे जरासिंध ज्यां बिच धोखो देगो ॥ २ ॥
बड कुंवार भिस्म राजा को पीछी लाणे की कहगो ॥ ३ ॥
रुक्म कुंवर पीछो नहीं आयो फद कौन सो फहगो ॥ ४ ॥
भावज को कहनो भयो सांचो दिल में कटारो बहगो ॥ ५ ॥
नाथू स्वामी रुकमण परणे सिसपालो बिलख रहेगो ॥ ६ ॥

भजन न० ३८

गग श्याम की महिमा अपार

श्री राधा कृष्ण कृपाल वन्दौं परम योगी ।। टेर ।।

गौरी राधा श्याम निरंजन ज्यूं दीपक में रहता अंजन,
युग एक ही रूप विशाल ।। १० ।।

वण अनेक ही गोपी गोप वृज में लीला करी अति ओप,
मूढ बताते हैं कुचाल ।। २ ।।

जो कुरीति करता भगवान, गोपियन को पतिव्रत का ज्ञान,
क्यों देते थे अति बाल ।। ३ ।।

परनारी का सरवस लीना अपना विरज किसे नहीं दीना,
कीन्हा वो अद्भुत ख्याल ।। ४ ।।

कंसारी गिरधर सा भोग, चाहे सो करो किया योग,
विषय वस डूबे भवताल ।। ५ ।।

मुक्त मूल रख दया शील दृढ़, तज हत्या विभिचार नर्क जड़,
चल मनुष्य पणे की चाल ।। ६ ।।

दरजी नाथूराम गोपाला, भारत हितैषी की जप माला,
फिर प्रगटेंगे तत काल ।। ७ ।।

भजन न० ३९

चाल—राघोगढ शहर दिखाओ

श्री नारायण अधम उधार, मारा प्यारा रे नारायण-२ जप माला ।। टेर ।।

श्री नारायण नाम सुत हेत रटे,
अजामिल भये भव पार म्हारा प्यारा रे ।। १ ।।

श्री नारायण नांव गज राज भजे,
थारे नाथ पयादे पधार म्हारा प्यारा रे ।। २ ।।

श्री नारायण ध्रुव बाल जपे,
पाई अटल पदी हरीद्वार म्हारा प्यारा रे ।। ३ ।।

श्री नारायण नाम महात्म भारी,
नाथू दरजी कह सत सार म्हारा प्यारा रे ।। ४ ।।

श्री नारायण नाम पढ़ा सुं,
आगे तिरगई गिनका सरीखी नार ।। ५ ।।

भजन नं० ४०

चाल—गाली मे

कहते कृष्णचन्द्र गोपियन से प्रेम सुहावना हे।
प्यारी नारी धर्म को ज्ञान सुणो सुख पावणा है ।। टेर ।।
वृन्दावन हरि वेन बजाई, गोपियन सुन प्रभु के ढिग आई।
जाने गूढ यह धर्म कन्हाई, बताने लगे नार सुखदाई ।।
सारी पक्षपात को त्याग पतित जन पावणा हे ।। १ ।।
बोले हे वृज बनिता आज, तज कर सूता पति कुल लाज।
आइ रैन समय क्यू भाज, उल्टा वस्त्र गहना साज ।।
यह नहीं चहिये नार कुचाल धर्म पत जावणा हे ।। २ ।।
निर्धन रोगी कुरूप महान, उसको लख भगवान समान।
सेवा करणा होय सुजाण, ज्यां से हो जस सम्पति अन्त ।।
अमर पद पावणा हे ।। ३ ।।
पति की पीठ ताक कर नारी, पर पुरुषों से करती यारी।
लागे पीर सासरे खारी, आखिर हो नरकन इधकारी ।।
कूकरी सूकरी हो दण्ड भोग फेर पछतावणा हे ।। ४ ।।
अच्छा वन छबि आप निहारी, अब घर पीछी जावो वृजनारी।
पति की सेवा करो तुम सारी, जांसे महिमा बढे तुम्हारी ।।
नाथू दरजी कहे प्रभु का यह सत्य फरमावणा हे ।। ५ ।।

भजन न० ४१

चाल—चून्दडी

जुगत से ओढो सुन्दर मनुष्य जन्म की भारी चूंदड़ी ।। टर ।।
श्री ब्रह्माजी रूप कबीर बनाई नौ महिना में उमीर।
रगी नाम देव रघुबोर, मदन धोलाई चिलके चीर,
भड़की नव जोबनी शरीर सोहव सारी चूंदडी ।। १ ।।
मीरां की ज्यूं राखो अबोटी, तो अति उत्तम सोभा मोटी,
बरतो एक पति सग लोटी, तो भी रेती उत्तम कोटी,
खोटी जिनकी करन लगोटी पर नर फारी चूंदड़ी ।। २ ।।
राखो चारूं पल्ला दाब, रूलाया दुर्जन करे खराब,
छिन में उतर जायगी आब, रती रती को लेय हिसाब,
पूछेंगे सायबजी जबाब कियां बिगाडी चूंदडी ।। ३ ।।
अनसूया रखी खूब सवार, वस भये तीनूं देव अवतार,
पचिया रावण सरीखा जार, सीता सकीन नेक बिगाड़,
बिखा में नल की नार बिणजारा कने उबारी चून्दड़ी ।। ४ ।।

अहिल्या इन्द्र पास बिगड़ाई, पत्थर होकर लिवी बुराई,
सूपनखा पर नर पे लुभाई, नकटी बूची हो दुख पाई,
अधम है वो ही लुगाई इश्क कीच में डाली चून्दड़ी ॥ ५ ॥
लगे मोह निद्रा में कभी दाग, साबण ब्रह्म ज्ञान ले झाग,
जल ईश्वर भक्ति अनुराग, कर चन्द्रायण कलि मल त्याग,
फिर ना बिगाडो कुसगा लाग शुद्ध कर प्यारी चून्दड़ी ॥ ६ ॥
दरजी नाथूराम कर कौल, सुर दुर्लभ या दिवी अमोल,
बर बर मैली करे फिटोल, पासी दुख चौरासी डोल,
मिले ना ब्याव बरी ज्युं बर बर वह गोटा की चून्दड़ी ॥ ७ ॥

भजल न० ४२
चाल—जलाल साइ मोगरो

सुसील ताई मनुष्य जन्म की बडी बड़ाई रे ॥ टेर ॥
सुणजो कीणा रामजी वारी, शोभा शीलव्रत की भारी,
न्यारी न्यारी वेदों के मांही ऐसी गाई रे ॥ १ ॥
उत्तम शील यह रहे कुंवारी, शारद वेद मति ज्यू नारी,
निरणी ग्यारस व्रत समान सुगन्धी सोना माहीरे ॥ २ ॥
मध्यम शील एक पति सेवे, शोभा सीता की सी लेवे,
एकादशी ने फला हार सोलहवों सोना सदाई रे ॥ ३ ॥
छोटी शील बाल होय बेवा, दूजा वर बर करती सेवा,
दो वर ग्यारस ने सागार कनक भूषण की नाई रे ॥ ४ ॥
अधम शील एक उत्तम जन सेवे, त्यागे लोभ गनिकापन जेवे,
अन्न पा पानी ने अनखाय रही ज्यूं सोना छिजाइ रे ॥ ५ ॥
नाथू कहे दीन तके दूजा, होवे दान नष्ट निज पूजा,
ग्यारस चावल मान्साहारी हेम तन मिट्टी मिलाई रे ॥ ६ ॥

भजन न० ४३
तर्ज—गाली की

हां सगी जिन पतिव्रत धारो और धर्म व्रत सभी विसारो ॥ टेर ॥
किणा रामजी वाली सुजाण ध्यान कर ज्ञान विचारो हे ॥ १ ॥
फजर कंथ के पहिले जागो, मजन कर हरि से वर मांगो,
हे जगदीश्वर अखण्ड पतिव्रत रखो हमारो हे ॥ २ ॥
मधुर बोल पायल झनकाणों, इण विधि प्रीतम प्रात जगाणो,
कर दरशन कर जोड़ हुक्म हित वचन उचारो हे ॥ ३ ॥

प्रथम पतिव्रत को यो नियमो, पहिले कथ जिमाकर जीमो,
पच वास आदिव्रत को फल मिलसी सारो हे ॥ ४ ॥
दूजा पतिव्रता यूँ बणना, सत्त शास्त्र पढना सुनना,
जिनसे होय सुज्ञान मिटे घट को अँधियारो हे ॥ ५ ॥
तीजा पतिव्रत यूँ रख नारी, कर हुन्नर जाति अनुसारी,
मिले रिजक में मदद सुखी होय प्रीतम प्यारो हे ॥ ६ ॥
चौथा पतिव्रत यूँ रख तरुणी, मूर्ख पुरुष की संग न करणी,
अधम पुरुष की सोबत से हो जाय बिगाड़ो हे ॥ ७ ॥
सो पतिव्रता सिया समाना, नाथू दरजी दर्श सराहना,
पति तज्या गिनका सम देख्या पाप अपारा हे ॥ ८ ॥

भजन नं० ४४

तर्ज—काच री कीवाडी ज्यामे

घर बैठा ही होवेला फल अड़सट को बाहर क्याहणजी कांई भटको ॥ टेर ॥
किणारामजी वाली नार, नारी धर्म विचार
सेवो एक व्रत धार, पति गूंगट को ॥ १ ॥
कर रसोई तैयार, पहले जिमाओ भरतार,
लेवो परसादी निहार, जगदीश अटको ॥ २ ॥
पोकर प्रयाग लख सुसरा सुभाग, सासु पद अनुराग, गंगा तटको ॥ ३ ॥
बद्री केदार जेठ देवर दीदार नणद नर्बदा विचार देणो साड़ी बटको ॥ ४ ॥
ब्रह्मपुत्र पुत्र जान, कन्या कालिन्दी समान और कुल कन्या
स्नान सरजु आदि घटको ॥ ५ ॥
जाणो तीर्थ तमाम, माय बाप कुल बाम, मेल राखो सज धाम
जात्रा को सटको ॥ ६ ॥
नाथू दरजी कहे सार, ऐसो मत्तो लेवो धार होसी परम उधार
देखो धर्म चटको ॥ ७ ॥

भजन नं० ४५

लावणी रगत लँगडी।

[भगवान् मुर्ली मनोहरजी की महिमा]

शेर—सुवस मरूदेश माहीं, डीडवाना ग्राम है।
वैश्य गाढा नाम से हरिदास धाम सर नाम है।
लाहोटियों का बाग जहाँ मंदिर सजा चित्राम है।
भगवान मुर्लीधर विराजे दर्श सुन्दर श्याम है॥

पूर्ण कला अवतार मनोहर मूर्ती मुरलीवाला की,
लाल बाग में भई है कृपा दीन दयाला की ॥ टेर ॥

सतरासो चालीस चैत सुद मगलवारी तीज त्योंहार।
सती हुई है, केशरीचन्द लार पतिव्रता नार।
फिर जमीन ले मोल, लालजी लाहोटी कीना उपकार।
मंदिर बनाया जभी से लाल बाग जाहिर गुलजार ॥
(शेर)—सती मठ के निकट सोहे, हरि भवन विसाल है।
पूर्व शिवाला चौक तुलसी जय विजय दर पाल है ॥
बाहर भीतर कोठ्यार ओरा अरू रसोई शाल है।
मिष्ट जल का होद कूआ कोट पोल कमाल है।
(मिलाप) श्रीनारायणदास प्रेम से सेवा करे
नदलाला की ॥ १ ॥

दिव्य चांदी का सिंघासन पर राजे राधा बनवारी।
राम जानकी श्री लछमन सालिग प्रतिमा सारी ॥
रत्न जड़ित कचन का गेणा, पोशाका जरकस वारी।
विधिसे कर नेम रख पूजन पूरण सत सदाचारी ॥
(शेर) वार्षिक उत्सव सवारी जुलूस झूलन फाग का।
होती सजावट खूबसूरति, भरा बहु अनुराग का ॥
ताल तबला हारमोनियम भजन हो रग राग का।
पर भाव हरि घर लख बढाया लाहोटियों के बाग का ॥
(मिलाप) जग करो खरचो परलोक हित
सहुकारी डाक सुराला की ॥ २ ॥

ज्ञानी जन पद प्रेम बढन श्लोक भागवत मोहि दिया।
जलधातु कष्ट में प्रभु पूजन खडन मुझे समझ लिया ॥
सात विज्ञान भूमिका प्रथम मूर्ति सेवन सिद्ध किया।
दूजी भूमिका ब्रह्म ज्ञानी संगत से शुद्ध से शुद्ध हिया ॥
(शेर) लक्षण तीजी भूमिका श्रीराम सा वैराग हो।
चौथी मे आतम बोध पंचम ब्रह्ममय अनुराग हो ॥
छटवीं गले तक ज्ञान सागर सप्त में तनु त्याग हो।
आवा गमन मिट परम पद जीवात्मा बड़ भाग हो ॥
(मिलाप) शील दया दातारी भक्ति बिन पशु मति
खल मतवाला की ॥ ३ ॥

अगणित जग सम्राट कृष्ण का गऊ लोक सुख धाम है खास।
कोटिन कमला सी गोपिका सग करत है रास विलास ॥
बढे असुर भूभार विकल दिग पति दसों मिल करे अरदास।
जब खुफिया ज्यू रूप धर धर्म सनातन करे परकाश ॥

(शेर) पूजी जे प्रतिमा उसी भारत हितैषी श्यामकी।
सुणाई बेशक हुवे अरजी लिखी स्टाम की॥
फैसलादे जज विधी करनी कर्म तमाम की।
यमपुर छुड़ादे कटा बेडी देख भक्ति राम की॥
(मिलाप) नदलाल गुरु कोशिश नाथू दरजी शरण
गोपाला की ॥ ४ ॥

अथ बाली रघवीर सम्बाद

[छप्पय छन्द]

कर रहे थे युद्ध हम आपस में भाई।
जैसे दो गजराज ठान निज शत्रुताई॥
ता बिच में नरसिंह रूप आके रघुराई।
करी एक की सहाय एक को दिया हटाई॥
बाण अचानक बाय के हैरान कर डारा मुझे।
नाथू कहे यूं बालि राघव किस लिये मारा मुझे॥ १ ॥

सुण शठ इसी समय में अवधपुरी के राजा।
श्री भरत महाराजा सुधर्मि गरीब नवाजा॥
जिनकी आज्ञा यही दण्ड पाप्यां ने द्यावो।
एक तीरही नीर सिंह जम्बू ने प्यावो॥
हम खुफिया हो विचरते अधर्मी निहारा तुझे।
नाथू कहे यूं राम बाली इस लिए मारा तुझे॥ २ ॥

कहो अधर्मी मोय रावरा कहा बिगाड़ा।
कभी अवध में आय किया नहीं चोरी धाड़ा॥
जाति स्वभाव से राय रयत को नांहि सताई।
वन फल खाकर करी सदा हम पेट भराई॥
क्या ऐसा खूनी लखा क्या अवगुण गारा मुझे॥ ३ ॥

महा अवगुण की खानि, महा बल का अभिमानी।
महा खूनी अज्ञान, महा लम्पट नादानी॥
महा अधर्मी ढीट, महा निरलज बद बंगा।
महा कुकर्मी कीट निर्दई करण कुसंगा॥
धर्म को सोचा नहीं समझाया तारा तुझे॥ ४ ॥

तारा हमारी नार बहुत बरज्या नहीं माना।
विश्वासा किये लगा दूरसे पहाड़ सुहाना॥
दीसत के धर्मज्ञ जिमि बगुला बसकी।
ईक्ष्वाकु के मांहि भये हो राम कलंकी।
धोखे में नहीं भेद पाया तेरा हत्यारा मुझे॥ ५ ॥

कहे हत्यारा हमें दोष व्यर्थ ही निकाला।
यह न हत्या का कर्म धर्म नृप नीति पाला।
चार वेद षट शास्त्र स्मृति आदि बखाणा।
सबल निबल की साय सबल को दूर हटाना।
मालूम अभी तक ना हुआ प्रण प्रभाव म्हारा तुझे ॥ ६ ॥

प्रण प्रभाव जस सुण्यो रावरा जबही ठगायो।
घास भूमि लख चलो अंध कुओ निकस्यायो।
दशरथ धर्मी भूप जिनों के वेणु सरीखा
क्यूं तूं पैदा भया मेरे सर मारण तीखा।
राज भोग सुख सब छुड़ा कीन्हां दुखियारा मुझे ॥ ७ ॥

दुखि भया तूं आज जिसा सुग्रीव दुख्यारा।
लागे जाही पीड़ दर्द सबही को खारा।
ताहि जान बल हीन छीन लीनी जागीरी।
पुनि मारण को लगा निर्दई तू बेपीरी।
दूजा को दुषण देवे सूझा नहीं थारा तुझे ॥ ८ ॥

म्हारा घर की राड़ आप कुण बोलण हारा।
दोय, लड़े एक पड़े अनादि यह है धारा ॥
मै गिरि खोह में धंसा मय सुत दानव मारण।
यो गिरी को मुख मूंद राज आ कीनो धारण।
सुग्रीव का ही दोष है गिरि बद कर डारा मुझे ॥ ९ ॥

न सुग्रीव का दोष बचन तेरा ही माना।
अवधि गई थी बीत मरा जब तुझ को जाना।
निश्चर का भय मान गिरी का मुख रोकाया।
मन्त्री सलाह विचार राज इन को समलाया।
तोय देख चरणा पड़ा तोभी लगा खारा तुझे ॥ १० ॥

किये खारा के करम कपट मेरे पर ठाना।
मरा लखा क्यों मोय कहां वन इनसे छाना।
मेरे सामने होय कई योद्धा पचहारा।
छिपा रिपु भय मान देर से हेर पछाड़ा।
राई भर मम दोष ना यूं आत अहंकारा मुझे ॥ ११ ॥

राई भर परदोष मेरु कर देय बताई।
मेरु भर निज दोष छिपाता करके राई।
टुक सग्रीव का दोष हुआ राक्षस के डर से।
ताका सरवस लिया दिया तू काड नगर से।
अपना छोटा भ्रात था लागा नहीं प्यारा तुझ ॥ १२ ॥

प्यारा लागे भ्रात २ की चाहे बड़ाई।
किस विध प्यारी लगे हमारी करी बुराई।
तुम ले इनकी पक्ष हमें भूमि पर डारा।
ऐसा क्या मै रिपु अति सुग्रीव पियारा,
रो रो मरेंगे बाल अगद झूरसी तारा मुझे॥ १३॥

रोणा झूरणा सकल जगत में है स्वार्थ के।
होणा था एक रोज कविस्वर कह रहे कथ के।
आग साक्षी से भये मित्र सुग्रीव हमारा।
मित्र रिपु से रिपु, मित्र प्यारा सो प्यारा,।
लखा मित्र सुग्रीव को दुख देने हारा तुझे॥ १४॥

मित्र हेतु अनर्थ किया हो अवध विहारी।
बिन गुनाह तकदीर हमारी करी ख्वारी।
किस कारण अवधेस आप इण देश पधारे।
किस कारण से भये मित्र सुग्रीव तुम्हारे।
राजलाभ या धन नफा अन्देश यह भारा मुझे॥ १५॥

न राज द्रव्य को लाभ नार मम ले गयो रावण।
तांहि सोधन के निमित हुआ है यहां पर आवण।
सिय सोवन की हामी भरी सुग्रीव कपिन्दर।
जबही मित्रता बन्धी कहा दुख अपना बन्दर।
खास ही हम कह दिये हाल यह सारा तुझे॥ १६॥

ऐसा सारा हाल हमें हरि पहले कहता।
सिया सहित वो चोर पकड़ हाजिर कर देता।
वो रावण छः मास दबा रहा मेरी खाखां।
पुनि अंगद के हेत पालणे बाँध्या राखा।
बिन श्रम लातो ज्यानकी बल का इतबारा मुझे॥ १७॥

लातो सिया जरूर जानता हूं मैं तुमको।
जती सती का बचन सत्य करना था हमको।
यहां नरलीला करण धर्महित लिया अवतारा।
सुग्रीव हाथ हो काज लिखा विधि सरजन हारा।
मै मर्यादा पुरुष हूं, न धर्म का विचारा तुझे॥ १८॥

क्या पाली मरजाद व्याध ज्यूं बाण चलाया।
वीरताई के आज बट्टा रघुवीर लगाया।
क्षत्रियों का धर्म युद्ध करते बकाल कर।
कट मरते रणधीर वीर मन की निकाल कर।
मारणा था आपको तो क्यो नहीं बकारा मुझे॥ १९॥

मारे कौन बकार शिकारी पशु बनचर को।
जैसा मौका होय चलाते वैसा सर को।
हम क्षत्री रजपूत खेल करते शिकार के।
पुरुषों का यह पंथ काम ना अनाचार के।
ललकारे भागे पशु यूँ न ललकारा तुझे॥ २० ॥

भगे भगाणे कंई हम भूपति की पढ़ते।
चेता कर सनमुख सामने होकर लड़ते।
नवां शिकारी भेष धार आये दोऊँ भाई।
बन्दर तणी शिकार कोण शास्त्र में गाई।
मास चर्म सब निकम्मा रचा करतारा मुझे॥ २१ ॥

करता वरणे धर्म वेद शास्त्र के मांहि,।
जिन मुजब बर्ताव तिहारो बिलकुल नांहि।
करे पर स्त्री संग अंग पापी कहलावे।
ताको देणा दण्ड राज नीति में गावे।
सुण पर स्त्री संग सदा करता व्यभिचारा तुझे॥ २२ ॥

परस्त्रीयों का संग चन्द्र इन्द्रादि कीन्हा।
मेरे सरिखा, दण्ड कहो काहू को दीन्हा।
इसी पाप से मृत्यु दण्ड देणा रघुराया।
यह खोटा कानून कायदा कौन बताया।
क्या अनौखा भये नृप सजा देवारा मुझे॥ २३ ॥

सजा सभी की लगी किताबां गावे सारी।
इन्द्र चन्द्र से ही नीच कर्म तुम कीन्हा भारी।
अनुज वधु सुतनार बहन कन्या सुण वादी।
चारों सुता सम सग करे सो महा अपराधी।
भोगी त्रिया लघु भ्रातकी यही लगा कारा तुझे॥ २४ ॥

कारा बिलकुल लगा हो गया मैं महा खूनी।
लेकिन तुम नरनाथ बात ना करी कानूनी।
मृत्यु दण्ड लायक हो कोई प्राणी हो जावे।
गिरफ्तार कर पूछ राव तब ही दण्ड द्यावे।
सजा देती दफे पहले कछु ना उचारा मुझे॥ २५ ॥

पहले कहे ना सूरवीर—खूनी बस आवे।
साम दाम दण्ड भेद राज ,गुण वेद बतावे।
या ते हमें न पाप सजा की नीति देता।
सनमुख भये मम तेज अर्ध तोय मॉय समाता।
जब तूं मर सकता नहीं मारणा विचारा तुझे॥ २६ ॥

मरणा था इक बार राम निश्चय कर हम को।
करी सूते गल छुरी बड़ाई मिले न तुमको।
थे हरि समर्थ हर सकते हर किसके बल को।
फिर क्युं सनमुख होत डरे इचरज यु दिलको।
या में कुछ दरशा नहीं बड़ापण थारा मुझे॥ २७॥
मेरो बड़पण प्रभुता भगतां हेतु घटाऊं।
भक्तां को जस जान बड़ाई अधिक दिखाऊ।
इन्द्र भगत् का वचन आज सांचा रख दिन्हा।
दुख सुग्रीव का मिटा के दंडी तुम को गिन्हा।
यहां सजा अब हो गई फिर हो न जम द्वारा तुझे॥ २८॥
हो न सजा जमद्वार प्राण शुद्ध मेरा होया।
गगा सम तव बाण कलक लागा सो धोया।
मीमांसा और शास्त्र न्याय बिच ऐसे कहते।
गुप्त किस को हते सोई बदला फिर लेते।
दावा का बन्धन भया धोखा यह न्यारा मुझे॥ २९॥
दावा द्वापुर अन्त भील होकर तूं लीजे।
कृष्ण रूप के गुप्त ताक सायक को दीजे।
बदला जासी छूट मुक्त पद पासी कीशा।
धोखा हो तो अभी जिवादूं तोय कपीसा।
मदन छाके बदन को कुफत में डारा तुझे॥ ३०॥
काम वशी में दोष दिये तोय वृथा स्वामी।
लाखों जतन कर मुनि अन्त प्रभु पावहि नाहीं।
सो हरि सनमुख खड़े अबे जीऊं किण ताँई।
अब जिवाणा चाहत हो हे तारण हारा मुझे॥ ३१॥
कहो जिवावण की बात वचन सुण नरम तुम्हारा।
अगद को युवराज तणा देऊं अधिकारा।
लखुं लक्ष्मण से ही प्रिये करो कपि स्वर्ग निवासा।
चतुर चौकड़ी तलक सुरानंद भोगो स्वासा।
लग रही थी करण को नरक से न्यारा तुझे॥ ३२॥



होरी न० १

हां रे होरी खेलो रे ज्ञान घन गोविन्द से ॥ टेर ॥
सजीव चितकारी षट् प्रभुताई, सिद्धि आठ युत समचन्द से ॥ १ ॥
कृष्ण शुक्ल तिथि पन्द्रह घर बढ़, नाम रूप गुण मल वृन्द से ॥ २ ॥
भूले भूले लख भेद बणगटी, दम्पति देह मद छल छन्द से ॥ ३ ॥
जन्मे मरे सो स्थूल नाम तन, फँसे मनादि करम फन्द से ॥ ४ ॥
मिलो रगीजो सुरंग आत्मा, अद्वैत सत चित आनन्द से ॥ ५ ॥
छूटो मैं बड़ विषयासक्ति, घुरी घुसत दुख कन्द से ॥ ६ ॥
दरजी नाथुराम रस होरी, खेली न जाय मतिमन्द से ॥ ७ ॥

होरी नं० २

प्रभु बहु बण खेले भूल भुलैयां होरी।
इस होरी का रहस्य लखे सो वक्त गुजारे सोरी ॥ टेर ॥
सच्चिदानन्द इन्द्रजाली, अद्वैत अद्भुत छवि बणाली,
दरसे द्वैताद्वैत कुशाली, बणगटी दम्पति जोरी ॥ १ ॥
सोचे तो सुपना सी माया, वस्तु एक अनेक जनाया,
हाड़ मांस चाम की काया, कोई सॉवल कोई गोरी ॥ २ ॥
बीज वृक्ष ज्यूं सूक्ष्म स्थूला, नाम रूप मद भूल ही भूला,
विषयासक्त विषम मति डूला, मानत और को औरी ॥ ३ ॥
चर्म दण्ड मिश्री का सोटा, निगले वो भी जान के मीठा,
कामिनी कुच कन्दुक कर दीठा, फूल कपोल कचोरी ॥ ४ ॥
ऐसे काम खर चढ नरनारी, चकाचौंध मोह छार उछारी,
कर्ता खल पशुताई धारी, हिंसा जारी चोरी ॥ ५ ॥
बुध अवतर अवणत दिखावे, गीता ज्ञान गुलाल उड़ावे
नीति युक्त फगवा दे जावे, कई त्यारे हरि घेरी ॥ ६ ॥
धर्म सनातन रंग लग जावे, श्यामल जैसो सम्पति पावे,
बाँट खाय सो बैकुण्ठ जावे, नरक में ईकलखोरी ॥ ७ ॥
सुई अन्धेरे पावे दरजी, नाथूराम पोशाकां सरजी,
बेबजी इचरज जो मर्जी, फर्जी फाग फिटोरी ॥ ८ ॥

होरी नं० ३

खेलो हरि म्हासूं हुलसे हिए ।। टेर ।।
तुम आतम राम हम देह बुद्धि, तोये भूल भरम कई करम किए ।। १ ।।
कुब्जा गोपी गण कीट भये, मल काम दाम भोगण के लिए ।। २ ।।
श्री कृष्ण कृपा कर भँवर बने, अब होंगे नीचे सुपल जिए ।। ३ ।।
सभी कामा कूख कुलटाई कढे, प्रभु पापी पावन चरण छिए ।। ४ ।।
केशर कस्तूरी चनणादिक, नेह रंग छिड़क फल मोक्ष दिए ।। ५ ।।
गही शरण पाल गोविन्द कीजे, रट दरजी नाथूराम सिए ।। ६ ।।

होरी न० ४

खेलो नी होली, रंग रघुबर जी ने छाजां ।। टेर ।।
असुर सहारण भक्त उबारण, बांधन धर्म की पाजा ।
श्री नारायण धर अवतारा भए अवध के राजा ।। १ ।।
एक पति पत्नी व्रत बसन्ती, बसे दम्पति साजा ।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, देख रति पति लाजा ।। २ ।।
अबीर दया सुधि केशर केवड़ा, जाति कर्म पर काजा ।
ज्ञान गुलाल प्रेम पिचकारा, लख प्रभु रूप समाजा ।। ३ ।।
फूले फले एक वर रतिदानी, नृप कुल सिंह रिवाजा ।
दर्जी नाथूराम-राज हो बजे आनन्द का बाजा ।। ४ ।।

होरी न० ५

होरी खेलण की प्रथा भक्त पह्लाद से चाली है, त्योहार खुशाली है ।। टेर ।।
हिरणाकुश मेटन हरि पूजा ठानी अधम कुचाली है ।
ता घर वीर बसे नव हो पितु आज्ञा टाली है ।। त्योहार० ।।
चटशाला में दैत्य सुतन को बाण भजन की घाली है ।
कौप दैत्यपति निज शिशु जालण बहन बुला ली है ।। त्योहार० ।।
पुरजन नव पट साज मनावें, ऋतु वसन्त प्रणाली है ।
बंट फगवा, रंग उड़े, बजे डफ गाय धमाली है ।। त्योहार० ।।
जति सति परखन रतिपति मारे सुमन बाण मोह जाली है ।
दृढ व्रत राखे देव निशाचर करत छिनाली है ।। त्योहार० ।।
ढूंढा भतीजा ने ले गोदी अग्नि चिता में डाली है ।
जली होलिका, बच्यो भक्त रटकर वनमाली है ।। त्योहार० ।।
फिर खिज भेजी असुर डाकणी वज्रनखा रुण्डवाली है ।
शिशु कलेजा खाण लगावे नजर कराली है ।। त्योहार ।।

सेली सील रहे, जल की गैर, और हर्ष का अतर गुलाली है।
चाह शीतला वोदरी ठंडा भोजन थाली है॥ त्योहार०॥
देवी अंश लख होरी छार पिण्डा पूजे नव बाली है।
है मदवर भई गौर ईश्वर शिव तीजन वाली है॥ त्योहार०॥
नए नाज होलीने होला पूज खाय बलसाली है।
दरज नाथूराम कृष्ण मरजादा पाली है॥ त्योहार०॥

होरी न० ६

श्याम अनोखी होरी का रसिया॥ टेर॥
वेणु वजा सुर नर नारी मन, मोहन मुक्त की पोरी का रसिया॥ १॥
माँगत दान महीघट फोरत, आण कस की तोरी का रसिया॥ २॥
नव वधू देखत हीं मन रोके, केवल ठट्टा ठोरी का रसिया॥ ३॥
कन्दुक चोर कहे काँचु सम्हाले, कैसी कोमल कठौरी का रसिया॥ ४॥
घूंघट खोल मुख चन्द चकोर ज्यूँ, नित नए माखन चोरी का रसिया॥ ५॥
जान गई मै छेल छबीला, श्री वृषभान किशोरी का रसिया॥ ६॥
चल बरसाने व्याह करां कर, प्रीतम राधा गोरी का रसिया॥ ७॥
दर्जी नाथूराम पियारे, फाग खिले भल जोरी का रसिया॥ ८॥

होरी न० ७

हाँ श्याम छिप खेलो होरी, कहा पडी ये आदत तोरी।
होरी नहीं या सखि धन यौवन मन की चोरी रे॥ टेर॥
सतचित, आनन्द ज्योति रूपा, गगन के ओटे साँवल अनूपा,
नव वदन पे मदन रवि शशि वारे किरोरी रे॥ श्याम०॥
तेरी माया जग जड जनिया, तू तू कशता घर वहु बनिया,
पच विसे रग पिचकारी भर डारो छोरी रे॥ श्याम०॥
चकाचौंध देह मद तन भूले, ऋणावन्ध हो गर्भ में भूले,
पावे दुःख अपार खेल नित फाग फिटोरी रे॥ श्याम०॥
बिगड़ी सुधारण लेवो अवतारा, श्यामल खेल खेलावो न्यारा,
रहे जागती गोपियाँ जैसे चन्द चकोरी रे॥ श्याम०॥
आधा अंगी राधा चगी, सेन करत ग्वालिनी उमगी,
मन लाई सो करी कृष्ण पकरा बरजोरी रे॥ श्याम०॥
दर्जी नाथूराम पियारे, भक्त कल्पतरु वेद पुकारे।
सारे काज लिए साथ नाथ वृषभान किशोरी रे॥ श्याम०॥

होरी नं० ८

सांवरा हम तोरी गौरी, खिलावो होरी सोरी ॥ टेर ॥
ज्योतिरूप सागर नट नाटर, लेरा विश्व किशोरी।
तव आधार सभी निशि वासर, करती गुजर की लोरी।
विपत क्यूं फिर हो भकोरी ॥ १ ॥
नवी चुनड़ियां ओढ़ के आवूं, रग डारो बर जोरी।
सास नणद यम बूती कपूती, गारी दे जाती पोरी।
लगे हम कूं वो दोरी ॥ २ ॥
दया धरम सम चोवा चन्दन, मृगमद् केशर घोरी।
ज्ञान गुलाल अबीर अतर ले, सरस फेला चहुं ओरी।
खोय खुश सुध बुध मोरी ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्ण फगवा भक्ति भर जोरी।
हिये लगाय रमाय दिखाओ छवि ज्यूं चन्द चकोरी।
कटे आवागमन की डोरी ॥ ४ ॥

होरी नं० ९

हाँ वसन्त मनावो प्यारी, आज हरि सग आनन्दकारी,
यो ही बड़ो त्योंहार चलो सब सज व्रज नारी ए ॥ टेर ॥
जमुना तट ठाडे नन्दलाला, तोय बुलावे देकर भाला,
ले चलो कुंजन मांय फूल रही वा फुलवारी ए ॥ १ ॥
बात सखी की राधा मानी, होत कृष्ण से मन्द मुस्कानी,
हिलमिल रमे ऋतुराज अतर रग खुशबूहारी ए ॥ २ ॥
चग मृदंग मुरलियां बाजे, गावत गन्धर्व रम्भा लाजे,
चले मदन के बाण परस्पर प्रेम अपारी ए ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, जान गोपियों तन मन वारे,
खेले खिलावे ख्याल, जती रहे रसिक बिहारी ए ॥ ४ ॥

होरी नं० १०

कैसे होरी खेल रिझाऊं, रति रस जाणे नहीं नन्दलाल ॥ टेर ॥
मांगे माखन डला समझ कर क्षीर सिन्धु सम गाल।
चोरी लगा कन्दुक कुच माने, चोली मेरी सम्हाल ॥ १ ॥
ठाडी लख करे चकाचौंध अखियों में डाल गुलाल।
रतिमांगे, उछले, चिपटे माखन चोरी चले चाल ॥ २ ॥

प्यारी लागे भोली तोतली बोली से दे गाल।
मैं पकरन को ठाणूं जब प्रभु भाग जाय तत्काल ॥ ३ ॥
चोर जार सरदार कहावे पूरण जती बाल।
सास ननद दे ताना श्याम का लखे नहीं अद्‌भुत ख्याल ॥ ४ ॥
कंसादिक निज बल से मारे गिरधर श्रीगोपाल।
दर्जी नाथूराम कृष्ण निज, बिरद जोय करो निहाल ॥ ५ ॥

होरी नं० ११

होरी खेले सिया रघुवीर, रखण मरजादा ॥ टेर ॥
एक पति पत्नि व्रत रंग केसर, चन्दन सुन्दर शरीर।
शोभित भए ज्यादा ॥ १ ॥
जिनके पायक पर उपकारी, बडा बली महावीर।
मुक्त आह्लादा ॥ २ ॥
एक शंबुक, बाली, रावण और शूपणखा बेपीर।
धर्म का कायदा ॥ ३ ॥
फीटा फाग असुरों का लखकर श्री राघव का तीर।
चखाए सवादा ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम जानकी, भगत बछल रणधीर।
आए पयादा ॥ ५ ॥

होरी न० १२

हाँ हरि, होरी हमारे संग आज, हरस हिए खेल रे ॥ टेर ॥
फाग ही फाग पुकारे द्वारे,
आके नित ब्रजराज, छबीला छैल रे ॥ १ ॥
मैं जल जमुना भरने जाती
गारी देत न लाज, लगो आय गैल रे ॥ २ ॥
चोवा चन्दन केशर कस्तूरी
बेस वसन्ती साज, आई हूँ नवेल रे ॥ ३ ॥
चोर जार सरदार कहावे
फिर क्यों जावे भाज, छबीला छटेल रे ॥ ४ ॥
यह होरी रस भेद न जाणे
राखन लोक रिवाज, सरस रंग झेल रे ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे
अधम उधारण काज, अनोखो सैल रे ॥ ६ ॥

होरी न० १३

अनोखी होरी जी गोपाल, थारी देखत नैन निहाल ॥ टेर ॥
इन्द्रजाली हो बनवारी फैला इन्द्रजाल।
सामग्री कारीगरी विधि हरी उर करा करम विशाल ॥ १ ॥
नीका फाग रमण ओतरे प्यारी सहित नन्दलाल।
डारे सुरग केसर कस्तूरी प्रभुता ज्ञान गुलाल ॥ २ ॥
धर्मयुक्त कामारथ भोगे मुक्ति मिले तत्काल।
मै शठ विषयासक्त अधर्मी फँसा रहत भ्रमजाल ॥ ३ ॥
खेल ही खेल कसादिक मारे तारे भक्त गुवाल।
दर्जी नाथुराम कृष्ण पद, पावन दीन दयाल ॥ ४ ॥

होरी न० १४

ले जाऊँ राज में आज मुरारी, छुड़ाऊँ होरी या रमणी थारी ॥ टेर ॥
मै जल जमना भरन जात नित, रोके डगर हमारी।
चोर जार सरदार कहावे, देवे अश्लील गारी ॥ १ ॥
गेंद की चोरी लगाय सम्हाल काँचू में कर डारी।
एक गई दो पाई बतावे जावे जाणी जारी ॥ २ ॥
खेल श्याम सखि यौवन जोरे भई बावरी मतवारी।
मै बालक रस भेद न जाणूँ बुलाते अँखियाँ मारी ॥ ३ ॥
काँचु में कन्दुक नहीं है तो दुखणा गोलाकारी।
तेरे दुखणे से दूर रहें हम, हम तो बाल ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥
मथुराधीश ,कस नीति को तोड़ रहा हठधारी।
बेशक जाय बुलाय कस को छिन में करूँ ख्वारी ॥ ५ ॥
गुरु ज्ञान हरि का सुण गोपी, गई गुलाल उछाली।
दर्जी नाथूराम कृष्ण की लीला अधम उधारी ॥ ६ ॥

होरी न० १५

खेले जग होरी गुसाईं, जिगर बिलमावण ताईं ॥ टेर ॥
अग्नि स्नान काशी करोत ज्यूं ज्योति शून्य पर छाई।
आधा-आधा राधा कृष्ण बन दृग तारा की नाँई।
सखा सखी दांई बांई ॥ १ ॥
होत भरम कू भरम करम कर मृग ज्यू थक परे पाई।
माखन चोर चोर जारी ज्यू शिक्षा घर की माई।
दिखाई हरि अपनाई ॥ २ ॥

अतर अबीर गुलाल कुमकुमा केशर कस्तूरी ठाई।
प्रभुता रंग प्रेम पिचकारी डारे निज निज डांई।
पिया प्यारी गलबांई ॥ ३ ॥
कसादिक मारे जन तारे गिरधर खेल परकाई।
दर्जी नाथूराम कृष्णपद कल्पवृक्ष की छांई।
मुकुट की देखी झांई ॥ ४ ॥

होरी १६

श्री गोविन्द गोपाल रमो कांईं ऐसी होली रे, धार मतो भोली रे ॥ टेर ॥
इन्द्रजाली जगत बणाली सखा सखी की टोलो रे।
बाल जती बण आप करत हो अजब ठिठोली रे ॥ १ ॥
चोरी लगा, कहाँ है कन्दुक, काचु मांय टटोलीरे।
प्यारी लागे थारी गाली तोतली बोली रे ॥ २ ॥
रति-पति रस में ना समझो बातां करो फिटोली रे।
तब प्रभुता ना घटे, घटे पत मेरी अमोली रे ॥ ३ ॥
अतर अबीर गुलाब कुमकुमा मृगमद केशर घोरी रे।
भर पिचकारी डार भिजोई जरकस चोली रे ॥ ४ ॥
काली कामल ओढ खड़े कैसे डालूं रंग रोली रे।
नाथूराम भगती फगवा बॉटो भर झोली रे ॥ ५ ॥

होरी १७

आज रस रंग की होरी, खेली जी कुंजन में ब्रज राज ॥ टेर ॥
बरसाने से आई बाला बेस बसन्ती साज।
मृगमद केशर घोल के लाई तोय रमावण काज ॥ १ ॥
चौरास्ता पर सखी सखा सब शामिल खड़े समाज।
कैसे रिझा भिजोऊँ रंग से म्हाने आवे लाज ॥ २ ॥
लख इच्छा राधा की माधव गए कुंजन में भाग।
गोपी गोप अचम्भा करते कहाँ गए छलबाज ॥ ३ ॥
श्यामा श्याम शोभा पाते ज्यूं इन्द्राणी सुरराज।
खोजत आन मिले ब्रज वासी सुख राशि सिरताज ॥ ४ ॥
उड़त गुलाल लाल आँधी ज्यूँ रंग झडी उफ घन गाज।
नाथूराम यश होरी गावे, पाले रीति रिवाज ॥ ५ ॥

होरी १८

ठाडो बनवारो, भग में पिचकारी रंग भरी हाथ में ।। टेर ।।
मे जल जमुना भरने जाऊँ बेस बसन्ती साज ;
देख दूर से आवे नेडो नटनागर ब्रजराज ;
बरजोरी रंग डारे, पकड़ू जब तक जावे भाज ;
बस माहीं आवे नहीं छल छलियो छंटेल ।
छवि सागर नन्द जी को छोनो छोटो सो यो छेल ।
गैल पडत यो हमारी ।। १ ।।
मन्द मुस्काय मोहे मन मेरो मोहन मुरली वालो ;
मीठी बोल बुलाऊँ हरि को देकर कर को झालो ;
निकट ही आत प्रेम रंग डारूँ ओढ ले कम्बल कालो ;
मेरा रग डलात ना, प्रभु मुझमें दे डाल ।
सेन करत सखी छीन कमलिया मुख के मली गुलाल ।
गाल गुलचा दे तारी ।। २ ।।
नारी धर्म एक पति ब्याहत भजे परमेश्वर जान ;
बालो भोलो रूप मदमातो लख मै सिमरूँ कान्ह ;
कंसादिक बल मारे खेल से पूर्ण कला भगवान ;
चोरी जारी शिशुपने में लागे नहीं, विधि नीत ।
बाल बृह्मचारी से रहती पतित पावनी प्रीत ।
जीत जावे जग नारी ।। ३ ।।
अहिल्या वृन्दा से कुण दूसरा भोगे पुरुष अजाण ;
वैसी शक्ति पाप श्राप से भई तुलसी पाषाण ;
अहिल्या तारी राम, धरी सिर सालग तुलसी पान ;
समझो अद्वैत ज्ञान से, जड चेतन ब्रह्म एक ।
दर्जी नाथूराम बलिहारी भासे छवि अनेक ।
छेक भरम, भजु मुरारी ।। ४ ।।

होरी १९

साँवरो ब्रज मण्डल मांही, हरष की होरी मचाई ।। टेर ।।
सज सिणगार गोपियाँ सारी घर-घर से चलि आई ।
अतर अबीर कुमकुमा केशर, घोल घोल रंग लाई ।
श्याम पैं छिड़कन ताई ।। १ ।।
उड़े गुलाल आधी ज्यूँ गहरी नभ मण्डल में छाई ।
केशर कीच मच्यो गलियन में रंग के माट भराई ।
धार पिचकारी कन्हाई ।। २ ।।

रंग राचे सखि नाचे गावे राग अलाप सवाई।
भेरी बजावे बेन मनसुखो नारी गनन मिलाई।
गोप नारी मन भाई ।। ३ ।।
ऐसो फाग मच्यो गोकुल में शोभ बरनि न जाई।
नाथूराम श्याम के शरणे मुदित भयो गुण गाई।
आनन्द घर-घर भाई ।। ४ ।।

होरी २०

आज तोये जरा लाज नहीं आई, मोहि गारी देत कन्हाई ।। टेर ।।
फाग ही फाग पुकारे मोरे द्वारे आय सहाई।
छोटे मुख रति मांगे हमसे मन्द मन्द मुसकाई ।। १ ।।
पकड़ूँ जब कहे मै बालक रस भेद न जाणू राई।
तू जोबन मद छाकी सेन कर मोहि नित लेय बुलाई ।। २ ।।
ये तेरो छल छन्द छबीला छैला जादूराई।
मेरे आगे चले नहीं राखूं हिवड़े, हार बनाई ।। ३ ।।
चोवा चन्दन मृगमद केशर अबीर, गुलाल लाई।
बरजोरी मै होरी खिलास्यूं ज्यू वृषमान की जाई ।। ४ ।।
दर्जी नाथूराम पियारे कल्पतरू श्रुति गाई।
जेहि भाव से भजे हरि को तैसी आश पुराई ।। ५ ।।

होरी २१

अरे हाँ, होरी खेलो जी बनवारी म्हारे संग में ।। टेर ।।
वेस वसन्ती सज मै आई बरसाने से चाल।
चोवा चन्दन मृगमद केशर अतर अबीर गुलाल।
डार रंगूगी जी मुरारी ने गहरा रंग में ।। १ ।।
आज समाज से भाज सको ना छल कर गोपीनाथ।
ललिता विशाखा चन्द चन्द्रावल सखी हमारे साथ।
बाथ भर लेगी हो गिरधारी थारा अग में ।। २ ।।
वो राधा वृषभान नन्दिनी आधा अग की जोत।
तारा मांही चन्द्र छवि ज्यू थारी सखी मै होत।
सोवत प्यारी जी उजियारी भरी अनंग में ।। ३ ।।
चोर जार सरदार कहावो रग पिचकारी धार।
बालयति बण रति फाग में मती दिखाज्यो हार।
प्यार कर जीतो जी ब्रह्मचारी मदन के जग में ।। ४ ।।

दर्जी नाथूराम पियारे फगवा भक्ति ज्ञान।
सकल मनोरथ आज पुरीजे हो दिल में खुशियान।
अधिकारी हम, मिल कर न्हावां प्रभु गुण गंग में ॥ ५ ॥

होरी २२

श्याम तुम अद्भुत छलगारा
होरी खेल रहो न्यारा, डार नैन उजियारा ॥ टेर ॥
बहियाँ गाल धर सखी कपोल ज्यूं माखन चोरी द्वारा।
याद रखो मम माया मोहनी जादू भरने जारा।
बहुरूपा बणाववन चाऊं कठिन होय छुटकारा ॥ १ ॥
बोले श्याम भए कहीं चेतन बाल जती अविकारा।
तेरा जादू तुझको ही मोहे ज्यों तू करे अहकारा।
मै पन तन सम्पूरनी देके पूरूं मनोरथ थारा ॥ २ ॥
नाम हमारा प्राम तुम्हारा, चाहे फैले गप्प सारा।
धन सच्चिदानन्द चन्द मुख मन्द मुस्काने वारा।
ज्ञान गुलाल उड़ाय दिखावो दिव्य दीदार तुम्हारा ॥ ३ ॥
तुम में हम मे मिलाण डारते प्रेम रग पिचकारा।
बिगड़े खेल सुधारो तुम अवतार विश्व आधारा।
जीव प्रकृति सत और असत जो भासत बारम्बारा ॥ ४ ॥
कुछ भी हो, हम अंश आपके आप जीवन आधारा।
फगवा भक्ति दे अपने को सुफल हो मनुज जमारा।
दर्जी नाथूराम पियारे चरण कमल बलिहारा ॥ ५ ॥

होरी २३

परमानन्द पावां, खेलां हरी होरी थारे साथ में ॥ टेर ॥
हमने कस कर घिस कर पाया सार रुप भगवान,
आजा आजा मिल ब्रज राजा, ताजा है पकवान,
ताजा है पकवान, तरावट साथ में ॥
गूंगा गुड़ ज्यूं मगन तिहारी गाथ में ॥ परमानन्द० ॥
बणगटी भेद अनेक विश्व मे एक आत्माराम,
अहम् धरे अल्पज्ञ कहावें ब्रजवासी नर बाम,
ब्रज बासी नर बाम श्याम भरी बाथ में ॥
रती रण में ये तीर हो कमल ज्यूं पाथ में ॥ परमानन्द० ॥

चोवा चन्दन मृगमद केशर अतर अबीर गुलाल,
प्रभुता रग प्रेम पिचकारी डारो नी गोपाल,
डारो नी गोपाल, लाल ले हाथ में ॥
मिले सहाय रंगीला गोपीनाथ में ॥ परमानन्द० ॥
धर गागर छबि सागर आने नट नागर नन्द महर,
दर्जी नाथूराम पियारे बसे डीडवाना शहर,
बसे डीडवाना शहर, बड़ा हूं अनाथ मै ॥
दीनानाथ दया से होऊँ सनाथ मै ॥ परमानन्द ॥

होरी न० २४

खेलत फाग श्री जगदम्बा, ब्रह्म सहित रच विश्व कुटुम्बा ॥ टेर ॥
ना नर नारी नपुंस आत्मा, ज्योति ऊपर तना रे खम्भा ॥ १ ॥
मणि दीपक अंजन ज्यूं निरजन, पुरुष विराट भए चौड़ा लम्बा ॥ २ ॥
आधा आधा राधामोहन, मुख दृग कज अधर फल बिम्बा ॥ ३ ॥
पंच विषय का रंग बणा कर, बण बहु सखा सखी लगे रम्भा ॥ ४ ॥
सब सग मांय सखी से न्यारी, लख लीला मन होत अचम्भा ॥ ५ ॥
सुर नर मुनि डफ ताल बजावें, गावें रिझावें करे जय जय अम्बा ॥ ६ ॥
दर्जी नाथू पर मर्जी करो, फगवा भक्ति करो क्यूं विलम्बा ॥ ७ ॥

होरी न० २५

मै क्या करूं री दया, जोरी से होरी खेले ॥ टेर ॥
पनिया भरन मै नित जाती, यमुना जी की गेले ।
हाथ लियां सोहन पिचकारी मोहन मग में टहले ॥ १ ॥
देख दूर से आवे नेड़ा ज्युं बनड़ो सामेले ।
सारी भिजावे सुरग चुनरियां, डरा ऐसे रग रेले ॥ २ ॥
गेंद की चोरी लगाय साँवरो चोली मे कर मेले ।
एक गई दोय पाई बतावे श्याम करे बदफेले ॥ ३ ॥
कसराय की काण छोडाई इस नन्द जी के छेले ।
दर्जी नाथूराम कृष्ण से कुण आ झगडा झेले ॥ ४ ॥

होरी न० २६

रग डारो नी मोहन सम्भल के जरा ॥ टेर ॥
घाट बाट तुम रोके ही ठाडे, सीस मेरे घट जल का भरा ॥ १ ॥
भीज न जाय मोरी रेशम चोली, जरकस बूंटा झलके खरा ॥ २ ॥

फाग रमण अनुराग घणेरो, भवन उमाई चालो परा ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, नाम लिया सो ही भव से तरा ॥ ४ ॥

होरी न० २७

हाँ कृष्ण सग राधा गौरी, खेले आज अनोखी होरी ॥ टेर ॥

श्यामा शुक्ल चन्द मुख चिलके, जैसे श्याम घन दामिनी दमके,
नील मणि सम छवि मोहन की ले चित चोरी रे ॥ १ ॥
ललिता विशाखा और सब गोपी, ससि के सग तारा ज्यू ओपी,
हरि के साथ मनसुखा सुदामादि की टोली रे ॥ २ ॥
अतर अबीर गुलाला गेरी, मले परस्पर बाजी ठेरी,
चले कुमकुमा रग पिचकारी केशर घोरी रे ॥ ३ ॥
रंग अग लगे छवि निराली, लख आपस में होत कुशाली,
माजम मेवा पान दिया वृषभान किशोरी रे ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, फगवा दीन्हे होय मतवारे,
बसो हमारे नैन अनूपम इबछल जोरी रे ॥ ५ ॥

होरी न० २८

मोहन खेले होरी रे ।
खेले होरी गैल मोरी रे, हां जी थारो खूब पुराऊँ कोड ॥ टेर ॥

फाग ही फाग पुकारे नित की आयों पौरी रे ।
पणियाँ भरने जाऊँ डारे रंग बरजोरी रे ॥ १ ॥

रति माँगे, पकड़ जब जावे जती बणे वो दोरी रे ।
कहू भागे, पतिव्रत मरजादा मावुत तोरी रे ॥ २ ॥

चोवा चन्दन मृगमद केशर अतर मै घोरी रे ।
डालो डलावो बारी बारी पिचकारी छोरी रे ॥ ३ ॥

आज लग्यो मम डांव निहारूँ चितवन तोरी रे ।
मल गुलाल गाल दिए गुलचा हँस हँस गौरी रे ॥ ४ ॥

फिर लाइयो फल भक्ति फगवा का सुख भर कर झोरी रें ।
लीजो दासी जान मान वृषभान किशोरी रे ॥ ५ ॥

दर्जी नाथूराम कृष्ण की सुन्दर जोरी रे ।
लीला से ही करे पतित पावन खमठोरी रे ॥ ६ ॥

होरी नं० २९

आतम राम स्याम चित बनी ज्यू चन्दचकोरी है, धन रंग होरी है ॥ टेर ॥
एक ही कृष्ण स्वरूप विभूति सूक्षम बन्धी डोरी है।
नाव स्वरूप स्थूल जन राधा गोपी गौरी है ॥ १ ॥
आज्ञा हरि की मान मनसुखो जा सखियन की पौरी है।
सेन करत सज इन्द्रा जु आई मिल टोरी रे ॥ २ ॥
इत्र अबीर और चोवा चन्दन मृगमद केसर घोरी है।
प्रेम रंग पिचकारी भर प्रभु प्रिये पै ढोरी है ॥ ३ ॥
ज्ञान गुलाल लगाव बजावे अनहद डफ घन घोरी है।
गावे राग धमाल सखी उर कस ली चोरी है ॥ ४ ॥
नमो निरंजन वासुदेव श्रीमति बृषभान किशोरी है।
दर्जी नाथूराम सिया ज्यूं इबछल जोरी है ॥ ५ ॥

होरी नं० ३०

अद्भूत होरी खेलण वारो, श्री कृष्ण पियारो ॥ टेर ॥
वेद पुराण देत है साखी करम भोग सब करता,
चेतन वे कही अमर मुक्त लित सो किस जड़ से डरता,
सिद्ध बन विश्व रूप निहारो ॥ १ ॥
नाम रूप मन भ्रमित जीव प्रभु से मिल कहावे,
सत रज गुण से धर्मी पापी दृढ भाव फल पावे,
भक्त कल्पतरु अवतारो ॥ २ ॥
अतर अबीर गुलाल कुमकुमा केशर चन्दन घोरे,
गोपी गोप राधिका मोहन मिल आपस में ढोरे,
खेलत फाग सनातन धारो ॥ ३ ॥
जेती सखियाँ तेते मोहन बन फिर डण्डिया जोड़े,
दर्जी नाथू श्यामसुन्दर जी उच्छव करते होड़े,
बेगि निन्दक मुख बारो ॥ ४ ॥

होरी नं० ३१

ठाडो रे रे रमण हरि साथ होरी का रसिया ॥ टेर ॥
जारी भाव जल्दी सिघ करने, जय गोप्यां के नाथ, मन्द मुख हसिया ॥ १ ॥
धर्मनीति राखण शिशुपन रो, रंग पिचकारी हाथ, कामल तन कसिया ॥ २ ॥
अतर अबीर गुलाल कुमकुमा, केसर चन्दन पाथ, गहरा घसिया ॥ ३ ॥
ठाडो डाले रंग डलावन नाहीं, पकड़े सखी भर बाथ, खेलन को इकसिया ॥ ४ ॥

चितचाया ज्यूं फाग खिलाया, नथे ज्यू कालिय नाथ, बजा डफ गाय रसिया ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्ण भजले, उनके प्रिय है अनाथ, सकल घट बसिया ॥ ६ ॥

होरी नं० ३२

सॉवरा क्या आदत तोरी, रमो नित अद्भुत होरी ॥ टेर ॥
आप ही गोपी गोप कन्हैया, आप ही राधा गोरी ।
आप ही रग रगीला छबीला, गाजा बाजा घन घोरी ।
करत हो मीठी ठठोली ॥ १ ॥
एक गई दो पाई बतावो, लगा गेंद की चोरी ।
पूरो काम जगा सखियन का यती रहा कमठोरी ।
भजे लख रतिपति जोरी ॥ २ ॥
योगी नीक लगी ना जारी ना माखन की चोरी ।
शिशु लीला नृप नीति माफ दे जाणे लीला छिछोरी ।
भालो काम कियो री ॥ ३ ॥
ना नर नारी नपुसक भासे अद्भुत माया तोरी ।
दर्जी नाथूराम पियारे ज्ञान गुलाला जोरी ।
भरि डारत बरजोरी ॥ ४ ॥

होरी नं० ३३

होरी खेले हो, खेले खेले हो रगाला रघुवीर, होरी खेले हो ॥ टेर ॥
राम लखन भरतादि भया, ए सिया, नदी सरजू के तीर ॥ १ ॥
बन सज सग में खेले, ए सिया, ओढ बसन्ती चीर ॥ २ ॥
केसर चन्दन कुमकुमा ए सिया, ले लो गुलाल अबीर ॥ ३ ॥
मस्त महीनो फागण को, ए सिया, भयो अनुराग शरीर ॥ ४ ॥
गहरी गैर खिलायस्यां, ए सिया, होय आनन्द की भीर ॥ ५ ॥
धर्म हेतु अवतार लियो, ए सिया भगवान गुण गम्भीर ॥ ६ ॥
जिन सँग रँग भर रमस्यां, ए सिया, मिटे सब भव की पीर ॥ ७ ॥
दर्जी नाथूराम रटे ए सिया, यो ही लाख अक्सीर ॥ ८ ॥

होरी नं० ३४

प्रभु पिचकारी चाले सननननन्, राधे रग फके श्याम फननननन् ॥ टेर ॥
छाई बरसाने धमाल, लाल आँधी ज्यूं गुलाल,
घन मरदग ताल, घुरे घननननन् ॥ १ ॥

रंग भीनी घटाटोप, सज नाचे गोपी गोप,
मोर पपैया ज्यूं ओप, घूम घनननननन् ॥ २ ॥
रग होरी गारी आप मीठी मल्हारी अलाप,
शब्द बिछिया मिलाप, छम छलननननन् ॥ ३ ॥
फाग फूल विकसन्त, लख मोहन हसन्त,
बरसा ऋतू की वसन्त, जानु जननननन् ॥ ४ ॥
गावे दर्जी नाथूराम, जस तेरा घनश्याम,
भक्ति फगवा इनाम, दाम झनननननन् ॥ ५ ॥

होरी नं० ३५

आज वसन्ती चीर रंगायो जी, खेलां वसन्त सग गिरधारी ॥ टेर ॥
ऋतु वसन्त मे वेष वसन्ती सॉंचो रूप शोभा भारी ।
हो रग राग फाग में मोहन, बढे अनुराग आनन्दकारी ॥ १ ॥
बोले कृष्ण बसन्ती बस्तर, रग दे रग की पिचकारी ।
गोरे गाल गुलाब लगायो, सुन्दर छवि लागे प्यारी ॥ २ ॥
लाल गुलाल मलो क्या मेरे, अग गुलाबी मोहन म्हारी ।
श्यामल रूप गुलाल मलाओ, छिपे श्याम रग गिरधारी ॥ ३ ॥
श्याम वचन सुन हँस राधे, दृग भर अबीर मुट्ठी डारी ।
हाथ पकड़ कर धम किए जब, लूम झूम गई वृजनारी ॥ ४ ॥
छीन कमलिया मुकुट मुरलिया, औढाई जरकस सारी ।
लहँगा चोली सजा डाल रग, गालों पै गुलचा मारी ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, रसिक होरी के खिलहारी ।
रसिक भक्त हित रसिक बिहारी, धन लीला लीलाधारी ॥ ६ ॥

होरी न० ३६

हॉं श्यामसुन्दर नही वस को, खेले फाग राग रंग रस को ॥ टेर ॥
कुंज गलिन मे फिरतो डोले, मन चाहे सो मुख से बोले ।
रमो सखी अनुरागण फागण दिन दस को ए ॥ १ ॥
छिप छिप डारे रंग पिचकारी, जावे दौड़ भिगो कर साड़ी ।
लग्यो होली को चाव जिमी माखन को चसको ए ॥ २ ॥
लीला कर कसादिक मारे, मन मोहन किसके नहीं सारे ।
वृज को वन्यो पटेल कायदो रखे न किसको ए ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, मन्द हसन मन मोह लिए म्हारे ।
पावे नही कछु पार अनोखे हरि के यश को ए ॥ ४ ॥

होरी न० ३७

खेले खेले रे हलधर जी रो बीर होरी खेले रे ॥ टर ॥
सखा सखी लिए संग में हो राधे, तट जमुना के तीर ॥ १ ॥
केसर चन्दन घोल लेओ ए राधे, अतर गुलाल अबीर ॥ २ ॥
अग सोलह सिणगार करो ए राधे, वारे आभूषण जड़िया हीर ॥ ३ ॥
रिझा भिजावो श्याम ने ए राधे, निरखा सुरग शरीर ॥ ४ ॥
मुरली पिताम्बर छीन लेओ ए राधे, ओढो वसन्ती चीर ॥ ५ ॥
नाथू दर्जी विनय करे ए राधे, दो भक्ति अकसीर ॥ ६ ॥

होरी न० ३८

साँवरा मै तो बाला कु वारी, डारो ना रग पिचकारी ॥ टेर ॥
होरी के रस में मै क्या जानूँ, गुडिया खेलन वारी।
सोच समझ रग डारो मोहन, तुम हो सुघड़ खिलारी ॥
कहाओ गिरधर धारी ॥ १ ॥
फाग रमण मतवाले भये तो देखो तरुणी नारी।
वो ही मजा की होरी खेले मनसा पूरे तुम्हारी ॥
मारे गुलचा दो चोरी ॥ २ ॥
ललिता विशाखा चन्द्र चन्दरावल और बृषभान दुलारी।
वह थारी है परम पियारी फिर क्यू मोसे यारी ॥
करण की धारी मुरारी ॥ ३ ॥
मोसे नेह कर रमे चाहो तो एक बरस वो टारी।
उस फागुन में छक जोबन में खूब करूँ रगदारी ॥
चाव सग कुंजबिहारी ॥ ४ ॥
इसी वक्त बरजोरी करी तो देऊँगी मै तोहे गारी।
दर्जी नाथूराम पियारे, लीलामय अवतारी।
आपकी जाऊँ बलिहारी ॥ ५ ॥

होरी न० ३९

खेले खेले हो लखन रघुवीर, होरी खेले हो ॥ टेर ॥
राम लखन भरतादि भैया, हे सिया, नदी सरजू के तीर ॥ १ ॥
चलो सज संग में खेलण हाँ हे सिया, ओढ वसन्ती चीर ॥ २ ॥
केशर चन्दन कुमकुमा हे सिया, लेओ गुलाल अबीर ॥ ३ ॥
मस्त महीनो फाग को हे सिया, भयो अनुराग शरीर ॥ ४ ॥
गहरी गैर खिलायस्यां हे सिया, होय आनन्द की भीर ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम रटे हे सिया, यो ही लाभ अकसीर ॥ ६ ॥

होरी नं० ४०

रग मै कैसे होरी खेलूँ जी महादेव तिहारे सग ॥ टेर ॥
कामदेव कूँ जार छार करी लगा लई निज अग ।
ज्युँ बालजती हरि बने रास में जीत मदन से जग ॥ १ ॥
भोरे बावरे भए नील गल पीवे हलाहल भंग ।
शेषसाई काली नाथन किए विभूषण भुजंग ॥ २ ॥
शिला नार तरी राघव पद जरी रज भरी धरि सिर गग ।
कैसे आऊँ निकट नाचते भूतेश्वर हो नग ॥ ३ ॥
रघुवर जानी भक्त भीलनी मानी शिव अरधंग ।
दर्जी नाथू राम रामेश्वर दोनों ही एक ढग ॥ ४ ॥

होरी न० ४१

कान्हा क्या रग डारो लुक लुक लुक, होरी खेलो सन्मुख मुख मुख मुख ॥ टेर ॥
रूप तुम्हारो हमारो एक ही, क्या देखो छाने झुक झुक झुक ॥ १ ॥
गौर श्याम रग भेद बिहारी, छली जाते है ठुक ठुक ठुक ॥ २ ॥
ग्यान गुलाल प्रेम पिचकारी, कृपा केसर ठुक ठुक ठुक ॥ ३ ॥
मुक्ति फगवा दो भक्तन को, जग ऋण जावे चुक चुक चुक ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम रमा ज्यूँ, सोवे जुड़ पद तुक तुक तुक ॥ ५ ॥

होरी नं० ४२

श्याम तुम शीघ्र ही होवो राजी, थांने होरी खिलावाँ ताजी ॥ टेर ॥
सूत्रधार तुम नाट्यकार हम लगी जीवन की बाजी ।
हारूँ तो बनूँ रावरी दासी, फिरूँ सेवा में भाजी ॥ १ ॥
विजय पाऊँ तो बनूँ अर्धंगी, ब्याव करे ब्रह्मा जी ।
अगणित जग रच लीला दिखाऊँ अटल रहे सब राजी ॥ २ ।
मुकुट मुरलियाँ पीताम्बर ले मेरे अग पै साजी ।
सारी सजा हरि सखा सखियन की उल्टी छवि समाजी ॥ ३ ॥
मात जसोदा लख भई विस्मय, आँगन मण्डली विराजी ।
खुली पोल फगवा देते वो लेते राधे लाजी ॥ ४ ॥
बरसे रंग घनघोर चग बशी शहनाई बाजी ।
दरजी नाथूराम पियारे अब क्या है नाराजी ॥ ५ ॥

होरी न० ४३

मेरो ना बस मैया मोरी, हरि होरी रमे बरजोरी ।। टेर ।।
पनियाँ भरने सखियाँ जावे कोई साँवल कोई गौरी ।
मद मुसका मोहन मन मोहे लखूँ ज्यूँ चन्द चकोरी ।। १ ।।
विषय गुलाल कुमकुमा चन्दन, मृगमद केशर घोरी ।
रग प्रभुता प्रीति पिचकारी, भर दे सब अंग ढोरी ।। २ ।।
पंदा पालण परले करता दम्पति काम करोरी ।
क्या ऐसे शिशुपन की जारी, क्या माखन की चोरी ।। ३ ।।
रह सर्वज्ञ अलपज्ञ बहु होवे जल तरग की तोरी ।
लोह चुम्बक नचाय डाल ज्यूँ नट पुतली गल डोरी ।। ४ ।।
दर्जी नाथूराम कृष्ण को ललित चिरंजो जोरी ।
भगत उबारण अधम उधारण लीला करे कमठौरी ।। ५ ।।

होरी न० ४४

खेले खूब सखा सग फाग, कान्हो छोटो सो ।। टेर ।।
सखा बसन्त रतिपति लाए, फूले कु जन बाग ।। १ ।।
घर घर से आई ब्रज वनिता, सज बढिया पोशाग ।। २ ।।
डारे चन्दन मृगमद केशर, अबीर गुलाल अथाग ।। ३ ।।
भीजे गोपी बेस बसन्ती, हो दिल में अनुराग ।। ४ ।।
ओढ़ण काली कामली या के, लगे नहीं रग दाग ।। ५ ।।
बाजत नूपुर डफ बाँसरियां, गाय छतीसूँ राग ।। ६ ।।
बाल जती लख काम लजाए, ज्यूँ नाथत ही नाग ।। ७ ।।
दर्जी नाथू पतित पावन, करण आयो बड़ भाग ।। ८ ।।

होरी न० ४५

होरी खेलो जी हरि हम से, आई मै बड़े रे उमंग से ।। टेर ।।
होरी खलण जग रूप बणाए, बिन रहे सकल करम से ।। १ ।।
तेरे मेरे फाग रमण को, प्रेम है जनम जनम से ।। २ ।।
वारी हूं थारी छवि परखना, घूंघट के पट पीतम से ।। ३ ।।
पहले मन मोहन ले छकिए, मोहब्बत की माजम से ।। ४ ।।
शरम धरम सब प्रीत के बाधक, सुनी जो निगमागम से ।। ५ ।।
वेस बसन्ती सजोया सुन्दर, बणगटी जरी रेशम से ।। ६ ।।
अंगियां भरम फार भुगतावो, जो विधि लिखे कलम से ।। ७ ।।

चन्दन मृगमद केशर दिव्य गुण, डारो पिचकारी सम से ॥ ८ ॥
ज्ञान गुलाल ले धब्बा मिटावो, लगे जो करणी अधम से ॥ ८ ॥
कृपा खुशबूदार मिलावो, आतम परमातम से ॥ १० ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, गैल छुटा दो जम से ॥ ११ ॥

होरी न० ४६

सॉवराजी से रमणी होरी, सखी मानो बड़ी दोरी ॥ टेर ॥
नकटी बूची शुर्पनखा लुभ दावा किए शिवपोरी।
करी कुब्जा करुणानिधि कुड़की कड़ी कूब भई सोरी।
सुन्दर ज्यू सिन्धु किशोरी ॥ १ ॥
अजाण वृन्दा विष्णु सग रम, विधवा हो जली भोरी।
फिर तुलसी वण सालगवर के, विश्व पुजीजी जोरी।
खाय गूंगा गुड़ चोरी ॥ २ ॥
परखण राम बणी परनारी, भरी पछताकर गोरी।
अनसूया घर तीनों ईश्वर शिशु होय झूले जोरी।
नमी सतियों उस ठोरी ॥ ३ ॥
ऐसे पतिव्रत की मरजादा नार मूरख दे तोरी।
जणे कंस से पूत दोगले पावे दण्ड कठोरी।
नरक गति कल्प कठोरी॥ ४ ॥
चोवा चन्दन अतर अरगचा मृद मद केशर घोरी।
पकड़ा हाथ गाल दे गुलचा लो लखु चन्द चकोरी।
मुफत फगवा भर झोरी ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम बीनवे पतित पावन कमठोरी।
भगत हेत दिव्य देह धर प्रगटे, ज्यू नृसिंह खम्भ फोरी।
कुंजर ज्यू तारे होरी ॥ ६ ॥

होरी ४७

रग डारो नी गोपाल, रंग डारो नी
म्हारो सुरग चुनरिया भोजसी ॥ टेर ॥
भरी बारी उमरियां यौवना, मुख चन्द उजियाल ज्वाल बीजसी ॥ १ ॥
अग सज गजगमनी नीर ने, आई जमना पे चाल चोखी चीज सी ॥ २ ॥
अच्छी ऋतु वसन्त रची कुंज में मची होरी या धमाल सावण तीज सी ॥ ३ ॥
जरे जररर रग पिचकारियां, स्वर घररर ताल डफ जीज सी ॥ ४ ॥
नारी धरम रहे सतसग से नेह अतर गुलाल छिड़कीजसी ॥ ५ ॥

लख छींटा सासूजी लड़ोकड़ा देगी नणदल गाल पिया खीजसी ॥ ६ ॥
मैं सहन करूँ जो हो दशा, कटे करम, माया जाल मोह छीजसी ॥ ७ ॥
जब घट घट बासी हाथ हो, लगे गुलचा गाल तो पतीजसी ॥ ८ ॥
नाथू दर्जी गर्जी ज्ञान का, देसी भक्ति रसाल प्रभु रीझसी ॥ ९ ॥

होरी न० ४८

सीताराम को मैं बड़ घूँसो फिरतो बाजे छे, उनको ही छाजे छे ॥ टेर ॥
थोड़ी-थोड़ी सत्ता दम्पति बेस बसन्ती साजे छे।
देह मद खर चढ पर कुशतानी शीतला विराजे छे ॥ १ ॥
शिव हित काली बनने गौरी होरी अग्नि दाजे छे।
अर वचने जरूरत पै जगदीश्वर बन गाजे छे ॥ २ ॥
तारे सुत मिस भजत अजामिल पापी पावन बाजे छे।
आधा नाम लेत गज सहायक प्यादा भाजे छे ॥ ३ ॥
मुझ दुखिया की होन सुनाई क्यूँ आ देर दरवाजे छे।
दर्जी नाथूराम कृष्ण बिरद् जिनको लाजे छे ॥ ४ ॥

होरी न० ४९

होरी खेल सको ना लाल मेरे से डट के ॥ टेर ॥
रग पिचकारी भर गिरधारी, बर बर तक रहे डाल ऊपर घूंघट के ॥ १ ॥
जोर जवानी हम मस्तानी, तुम हो छोटा बाल थकोगे झट के ॥ २ ॥
नहीं दई आणा, माखन चुराना, खाना मुफत का माल फोड़ मही मटके ॥ ३ ॥
अभी मैं पकड़ मेटू गी अकड़, मलमुख गाल गुलाल चखाऊँ गट के ॥ ४ ॥
नाथू दर्जी दर्शन गर्जी, राधा रमण गोपाल रमैया रट के ॥ ५ ॥

होरी न० ५०

देखो फाग खिलारी को, अद्भुत चमत्कारी को ॥ टेर ॥
सच्चिदानन्द ज्योति भूपा, सर्व ही शक्तिमान अनूपा,
होरी दीवारी जगमग जूपा, दीसे मायामय बहुरूपा,
भासे भेद नर नारी को ॥ १ ॥
अर्धा अंगी राधा चगी, चन्द चाँदनी ज्यूं भिन्न संगी,
गोपीगोप जन तारा उमंगो, विसम विसे घोला पचरगी,
बल माया पिचकारी को ॥ २ ॥

चकाचौंध अज्ञानी होवे, कामादिक खलताई डुबोवे,
सूक्ष्म जीव सम ज्ञानी जोवे, बाल जती सती रह नित सोवे,
ऐसो मतो गिरधारी को ॥ ३ ॥
श्री यश शील धरम बल ज्ञाना, छवुं प्रभुता रग रंग भगवाना,
समझ भजो तो पद निर्वाना, दर्जी नाथू के मन माना,
शरणो लो बनवारी को ॥ ४ ॥

होरी न० ५१

खोज लिया खोजी बन, ख्यालीलाल, खूब खेलोनी होरी ॥ टेर ॥
छिप छिप छल छटेल छबीला, छापे छापा छिछोरी ॥ १ ॥
भूल भूल हम थूल नाव घर, चढे रूप मद खर घोरी ॥ २ ॥
चौरासी फिरे घुरी घुसत कर, हिंसा जारी चोरी ॥ ३ ॥
अब नन्दलाल गुरू कृपा से, देखी जाकी जिल्लक तोरी ॥ ४ ॥
प्रभुता रंग बरसाय मुक्त का, फगवा दीजो भर जोरी ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, आवागमन मिटा मोरी ॥ ६ ॥

होरी न० ५२

कुब्जा संग कृष्ण रमे होरी ॥ टेर ॥
सूपणखा शिव ढिग कर दावा, नारी धर्म नीति तोरी ॥ १ ॥
ले टिगरी जादू भर केशर, चोवा चन्दन घिस घोरी ॥ २ ॥
श्याम के भाल लगाय स्नेह से, हरजा भराए बरजोरी ॥ ३ ॥
निकली कूब खूब कमला सी, महासुन्दर बन गई गोरी ॥ ४ ॥
पय पूतना के प्रभु उजारो, भूले व्रज माखन चोरी ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम कन्हैया, पतित पावन करे कमठोरी ॥ ६ ॥

होरी न० ५३

या वा ख्यालीलाल, अनोखा फाग रसीला रे, करे जग लीला रे ॥ टेर ॥
चित्त शक्ति निर्गुण का बालमुकुन्द ज्ञान तेजीला रे।
चूमे अक्षयवट दल पै अगूठा सोहं जपीला रे ॥ १ ॥
वृज माटी खा मुख मे दिखाना कोटिन विश्व कबीला रे।
बावन विराट नार नर नाना बणे छबीला रे ॥ २ ॥

सुन जाही से दरसे ज्योति रवि हीरामणि नीलारे।
होवो तरूण घनश्याम मुकुट साजो पट पीलारे ॥ ३ ॥
चवदा देवी देव दिग्पति दिव्य फल चारों चवीला रे।
नभ ज्यों बिन व्यापक घर चैंरा बहु रंगीला रे ॥ ४ ॥
आधा अंगी राधा चँगी, सखियाँ सगी सुशीला रे।
खेले होरी सती जती रति पति लजीला रे ॥ ५ ॥
गोपी चाव सुं रमे हरि से माखन मिश्री खिला रे।
दर्जी नाथूराम कृष्ण जन आस पुरीला रे ॥ ६ ॥

होरी नं० ५४

छिप कर होरी काँई खेलो जी साँवलिया ॥ टर ॥
डारो रग डलावो नाहीं, ओढ रखी अंग कारी कामलिया ॥ १ ॥
या निश्चय करो पापी पावन, जान अजान कोई तेरा नाम लिया ॥ २ ॥
प्रगट प्रहलाद उबार्‌यो, ज्यूं तार्‌यो जो शरणा थाम लिया ॥ ३ ॥
हम गोपी नेह दरस दिवानी, खेलो खिलावो करबाम लिया ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्ण तुम, भक्त कल्पतरु आम लिया ॥ ५ ॥

होरी न० ५५

नहीं रहे कृष्ण किसके बस को, होरी को लाग्यो चसको ॥ टेर ॥
अबीर गुलाल भरी पीताँबर की झोली, सखा मनसुखा सुदामा की संग टोली।
घोली केसर गुलाल अतर खस को ॥ १ ॥
कुंज गली में जाती देख वृजनारी, तकतक मुख डाले रंग पिचकारी।
कुच मारे कुमकुमा न डर किसको ॥ २ ॥
हँस कहे गोपी श्याम शरम नहीं आवे, ऐसी बदमाशी हसी हमें ना सुहावे।
कहे कान्ह फाग गोरी दिन दस को ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णपद अनुरागी, हिल मिल खेले फाग गोपी बड़भागी।
लो आनन्द हरि जस को ॥ ४ ॥

होरी न० ५६

सखि श्यामसुन्दर रंग डार गयो रे, ओलखियों कि नांही ॥ टेर ॥
जमुना जल भरने को जाती, बालचरित्र प्रभु का गाती,
छाने से घूँघट उघाड गयो ये ॥ १ ॥
दूरी से रंग भर पिचकारी, डार भिजोई अंगियां सारी।
जादू की नजरियां मार गयो ये ॥ २ ॥

अबीर गुलाल उड़ाय पियारी, सुध बुध भूली तन की सारी,
लख शशि मुख कर प्यार गयो ये ॥ ३ ।
सब मिल ऐसी अकल उपावो, पकड़ कृष्ण कूँ फाग खिलावो,
कर माजम की मनुवार गयो ये ॥ ४ ॥
नाथूराम भगत हितकारी, लीला करे मुनि मन हारी।
कई पतितन को तार गयो ये ॥ ५ ॥

होरी न० ५७

क्या रंग डारो श्याम लला, तेरा रंग से मेरा अंग ही भला ॥ टेर ॥
जोबन चमके अगणित तारा, झलके मुखचन्द्र पूरण कला ॥ १ ॥
गगन स्वरूप श्याम रजनी का, दरसे चन्दा से ही उजला ॥ २ ॥
बोले कृष्ण नैन का तारा, कारा लखो जग फूला फला ॥ ३ ॥
कारा केस सीस पर जब तक, गोरा कमल मुख तेरा खिला ॥ ४ ॥
चोवा चन्दन मृगमद केशर, फाग में प्रेम का रंग डला ॥ ५ ॥
नाथूराम उच्छब होरी का, परम्परा से आवे चला ॥ ६ ॥

होरी न० ५८

यूँ काँई रे वसन्त रमो रसिया ॥
वसन्त रमो तो रमो हरि डट के, थाँने रमावण हिया हुलसिया ॥ टेर ॥
यद्यपि निर्गुण घट घट बसिया, सगुण भये नन्द मन्द हसिया ॥ १ ॥
सम ज्ञानानन्द अमी आलसिया, विश्व सलोना चखो अधकसिया ॥ २ ॥
रतिपति ऋतु पै सुमन सर कसिया, मोहबत माजम का करो नसिया ॥ ३ ॥
मृगमद केशर चन्दन घसिया, अबीर गुलाल अतर अंग लसिया ॥ ४ ॥
दर्जी नाथू के स्वामी सुजसिया, वाही के प्रेम फंद में फसिया ॥ ५ ॥

होरी न० ५९

आज रंगीली छबीली होऊँ, राधा रमण को रिझाय भिजोऊँ ॥ टेर ॥
अहिल्या केवट ज्यूँ हरिपद रजजल, मलमल तन के कलिमल धोऊँ ॥ १ ॥
सज सोलह शृंगार श्रद्धा से भगती भूषण मुक्ता पोऊँ ॥ २ ॥
प्रेम रंग प्रभुता पिचकारी, श्यामसुन्दर संग श्यामा सी सोऊँ ॥ ३ ॥
ईश्वरता को अंजन अँखियां, आँज के मनमोहन को मोऊँ ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णपद, ज्ञान गुलाल लगा कर जोऊँ ॥ ५ ॥

होरी न० ६०

लगे हरि होरी अद्भुत रंबा, देखत दिल में आवेरी अचम्बा ॥ टेर ॥
चेतन सुन दीपक अंजन ज्यूँ, भये दिव्य दम्पति विश्व कुटुम्बा ॥ १ ॥
पल्टा बेस राधे कूँ श्याम करी, श्याम बणे राधे जगदम्बा ॥ २ ॥
सखा सखी भए सखी सखा हो, खेलत हिलमिल सब प्रतिबिम्बा ॥ ३ ॥
चंग बजाते रंग उड़ाते, गए नन्द घर विस्मै भई अम्बा ॥ ४ ॥
लख शिव काली लगी पग धरने, शम लाल बहु लगे खुद नम्बा ॥ ५ ॥
जसुमति फाग विलास समझ हिये, फगवा लिए सब कर कर लम्बा ॥ ६ ॥
नाथूराम रमा पद एक ही, त्यागो बणगटी भरम का खम्बा ॥ ७ ॥

होरी न० ६१

खिलाई श्याम ऐसी होरी, लगाई गेंद की चोरी ॥ टेर ॥
गेंद तो गिर गई जमुना में, मुझे कहे तेंने ही चोरी ।
हठीले मानी नहीं मोरी कही मै बहुत कर जोरी ॥ १ ॥
बड़े चालाक हो कान्हा, चालाकी जाणी हूं तोरी ।
बुलाके होरी मिस हमको, मचाई तुम ठठा ठोली ॥ २ ॥
जभी अबीर गुलाल उड़ाई श्याम रंग रोली ।
कहे नाथू रहो इबछल, ये राधे श्याम की जोरी ॥ ३ ॥

होरी न० ६२

होरी खेलन मै आई तिहारे संग कन्हाई ॥ टेर ॥
मुरली डफ की धुन सुण कान्हा, हों दिल मांय उमाई ॥ १ ॥
चोवा चोवा चन्दन मृगमद केसर, अतर घोल रग लाई ॥ २ ॥
बारी बारी रंग डारो डलावो, प्रीति बढत सवाई ॥ ३ ॥
तुम होरी के सुघड़ खिलइया, देखो मेरी भी चतुराई ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णपद, प्रेम बढत सुखदाई ॥ ५ ॥

होरी न० ६३

तू हरि होरी का भारी रे रसिया ॥ टेर ॥
वेस बसन्ती नवल सजाए, कान्हा कम्बल कालो रे कसिया ॥ १ ॥
चोवा चन्दन मृगमद केसर, अबीर गुलाल अपारी रे लसिया ॥ २ ॥
तक तक रग पिचकारी डारे, ढक ढक पर मुख हारी रे ससिया ॥ ३ ॥
डालत रग डलावत नाहीं, देकर बक बक गारी रे हसिया ॥ ४ ॥

रती कमाणा जती कहाणा, न्यारा भी हो संसारी रे फसिया ॥ ५ ॥
वेद अजन्मा अलख बखाणे, औतरे भगत हितकारी रे जसिया ॥ ६ ॥
दर्जी नाथू अधम उधारण, मेरे मन कुंज बिहारी रे बसिया ॥ ७ ॥

होरी न० ६४

आज रंगीली रस भरी होरी जी, खेले राधा बनवारी ॥ टेर ॥
गगन घटा सम श्याम छटा तन, बिजली सी राधा प्यारी।
कोटि रवि शशि रति पति लाजे, साजे भूषण पट भारी ॥ १ ॥
चोवा चोवा चन्दन अतर अरगजा, मृगमद केशर रग डारी।
सरस घोल रंग माट भरे है, हर्ष सखा सखियाँ सारी ॥ २ ॥
उड़त गुलाल लाल आँधी ज्यूँ, छाई नभ मण्डल द्वारी।
घरर घरर घन ज्यू डफ बाजे, जरर जरर चले पिचकारी ॥ ३ ॥
डालत रग डलावत नाहीं, करत चालाकी गिरधारी।
श्यामा सेन करी सखियन कूँ, मले गुलाल गुलचा मारी ॥ ४ ॥
हरि हँस प्रिये के मार कुमकुमा, प्यार किए आनन्द कारी।
दर्जो नाथू राधा माधव, भगत कल्पतरु उपकारी ॥ ५ ॥

होरी न० ६५

सखि आज होली मे खुशियाँ घणी, मोहन मोहनी खूब बणी ॥ टेर ॥
राधे सैन सखियन को दीनी, ललिता विशाखा सब रंग भीनी।
छीनी पीताम्बर मुकुट मणि ॥ १ ॥
रेशमी लहँगा चोली भारी, शीश गुंधा ओढाई सारी।
दिव्य भूषण सजे हीरा कणी ॥ २ ॥
लखे मोद मन विधि कैलाशी, इन्द्रादिक अमृत अभिलाषी।
सुद बुद गई जो असुरां तणी ॥ ३ ॥
तिरलोकी की सुन्दरताई, देख रती रम्भा शरमाई।
अद्भुत शोभा सुरती भणी ॥ ४ ॥
अतर अबीर गुलाल उड़ावे, वाजे डफ रग झड़ी लगावे।
नाचे गावे सकल जणी ॥ ५ ॥
दर्जो नाथूराम पियारे, गोपी वल्लभ जग दृग तारे।
लख लीला भजें शेषफणी ॥ ६ ॥

होरी नं० ६६

मै होरी खेलन आई हरी, खूब लगावो रंग जरी ॥ टेर ॥
लीला पुरुषोत्तम भगवान, लीला सारी लई मै जान,
तुम लीला करने देह धरी ॥ १ ॥
नित ज्ञानानन्द अमी अपार, तुम ही हो जग के आधार,
खेलण विश्व वसन्त करो ॥ २ ॥
मृग मद केसर अबीर गुलाल, मलो मलावो सुन्दर गाल,
देखो रंगीली राधा खरी ॥ ३ ॥
वेणु चंग मृदंग बजावो, नाचो नाच मधुर स्वर गावो,
राग बसंत घोल मिसरी ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, आनन्द घन नैनों के तारे,
खुश हो फगवा झोली भरी ॥ ५ ॥

होरी नं० ६७

आनन्द गेरो गेरो लूटो गिरधारी की गैर को ॥ टेर ॥
गहरा अबीर गुलाल उड़ाय, देवो चकाचौंध बणाय,
मृगमद केशर चनण मिलाय, लाल कुमकुमा रंग भराय,
कर दो रिझा भिजा पीताम्बर पचरंग समवर लहर को ॥ १ ॥
गहरा गोप आयो ले संग, गातो बजातो बंशी चंग,
सोहन पिचकारी भर रंग, मारे तक बृजनारी अंग,
मुख से आवे ज्यों ही बोले ढोटो नन्द महर को ॥ २ ॥
गहरा मन्द मुसकाते श्याम, छबीला देख मुदित वृज बाम,
तन मन वार करे प्रणाम, नेह फगवा दिए पूरणकाम,
गावे दर्जी नाथूराम वासी डीडवाना शहर को ॥ ३ ॥

होरी नं० ६८

नेड़ा आओ जी खिलाऊँ होरी रंग रसिया ।
दूर खड़ा क्यों ब्रज बसिया ॥ टेर ॥
श्यामसुन्दर अनुरागणिया, फागणिया रग लागणिया,
सब बेस सजाई जरकसिया ॥ १ ॥
चाव रखो तो सांवलिया, परी धरो कारी कामलिया,
आनन्द कन्द मन्द मन्द हँसिया ॥ २ ॥
माजम मेवा पान मिठाई, अबीर गुलाल कुमकुमा लाई,
केसर अतर चनण घसिया ॥ ३ ॥

देख प्रेम गए पास बिहारी, गैर खिलाण लागी ब्रजनारी,
चारों पदारथ भी लासिया ॥ ४ ॥

दर्जी नाथूराम कन्हाई, लेकर संग सखा समुदाई,
भगत प्रेम फन्द में फँसिया ॥ ५ ॥

होरी नं० ६९

हाँ रे साँवरिया, मस्त महीनो फाग को ॥
हाँ रे साँवरिया, खेलो नी हिलमिल फाग, नटवर प्यारा रे ॥
हाँ रे गिरधर प्यारा रे, रस लीजे रग राग को ॥ टेर ॥

हाँ रे साँवरिया, उमंग आई बृज नारियाँ रे।
हाँ रे साँवरिया, फूले यौजन बाग, नटवर प्यारा रे ॥ १ ॥

हाँ रे साँवरिया, हमरा रूप मुनि जन मोहे।
हाँ रे साँवरिया, रसिया नथइया नाग, नटवर प्यारा रे ॥ २ ॥

हाँ रे साँवरिया, रग पिचकारी झड़ लावणा रे।
हाँ रे साँवरिया, अबीर गुलाल अपाग, कि नटवर प्यारा रे ॥ ३ ॥

हाँ रे साँवरिया, ताल मृदग डफ बाँसरी जी।
हाँ रे साँवरिया, गावो नई नई राग, नटवर प्यारा रे ॥ ४ ॥

हाँ रे साँवरिया, दर्जी नाथू वीनवे जी।
हाँ रे साँवरिया, दो भक्ति अनुराग, नटवर प्यारा रे ॥ ५ ॥

होरी नं० ७०

सखि कैसो होरी को रसियो ये ओ छोटो सो नन्दलाल ॥ टेर ॥

है सात बरस को नानो, सज कामदेव को बानो,
रति मांगे ज्यूँ तरुण सयानो ये, देकर बेसरमी गाल ॥ १ ॥

मैं कहूं आवो रमां होली, जब भाज जाय निज पोली।
दूरी से करत ठिठोली ये, रग अबीर गुलाल उछाल ॥ २ ॥

लख रूप रसीली वाणी, बढे प्रेम रीस मिट जाणी,
हो याद चरित्र कलाणीये, गिरधर बृज को रखवाल ॥ ३ ॥

दर्जी नाथू के स्वामी, जोय पूर्व प्रीत निष्कामी।
फल चारों दे अन्तर्जामी ये, बाल जती हो दीनदयाल ॥ ४ ॥

होरी नं० ७१

आज रमो हरि होरी हित से हँस हँस म्हारे सागे जी ।। टेर ।।
मिले अकेला कुंजन मांही, थारे संग सखा कोई नाहीं ।
सरम त्याग के परम स्नेही, बसिया नैना आगे जी ।। १ ।।
कोटि काम सम रूपतिहारो, लख मन मोहन भयो हमारो ।
रंग भर खेलन फाग हिये, अनुराग हमारे जागे जी ।। २ ।।
तुम कहलाते रसिक बिहारी, जाणो तो रस लो गिरधारी ।
मैं हाजिर जोबन मतवाली, परसत ही रंग लागेजी ।। ३ ।।
मृगमद केशर खुशबूधारी, अबीर गुलाल कुमकुमा भारी ।
रिझा भिजोऊँ नन्द नन्दन के पीत वसन्ती बागे जी ।। ४ ।।
दर्जी नाथूराम पियारे, गोपी वल्लभ हिन्द सितारे ।
भगत उबारण लीलाधारी, भजत भरम भय भागे जी ।। ५ ।।

होरी न० ७२

सून्य में बाल मुकुन्द निरंजन होरी खेले विश्वललाम ।। टेर ।।
एकी चेतन पड़े अखैबट पात समाधि श्याम ।
पर लक्ष्मीपति पूर्णकला चन्द चूमे अँगूठा पाम ।। १ ।।
सूक्षम स्थूल सपन मायावी नाना विधि नर बाम ।
सत संकल्प भगवान जणावे, सत मिथ्या चित्राम ।। २ ।।
सखा बसन्त साथ ले आवे, जति सति परखण दाम ।
सुमन बाण योवन में लागे, अघ वण्ड भोगे तमाम ।। ३ ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश परखने गए अत्रि के धाम ।
पोणे शिशु कर भई अनुसूया पतिव्रता सरनाम ।। ४ ।।
कृष्ण कन्हैया सात बरस के सखियन संगब्रज ग्राम ।
प्रभुता रंग बरसा नेह रमिया, हारे मदन संग्राम ।। ५ ।।
दर्जी नाथूराम सियाव्रत पाल भजे विश्राम ।
तो भी मूढ स्वारथ रत भूले ऐसे प्रभु का नाम ।। ६ ।।

होरी न० ७३

क्यूं मोहन रंग छिप के डालो, फाग रमो नेह मतवालो ।। टेर ।।
सासू छाने छिप के आई, साथे नणदुली ने ल्याई ।
इस बरियाँ कन्हाई रखियो टालो ।। १ ।।
होरी खेलण को चाव लाग्यो थारे ब्रजराव ।
ज्यूं ही मेरे दिल भाव कोई मोको ढालो ।। २ ।।

दिन दोपहर प्रभात या तीजे पहर बात।
कुंज गली में संगात म्हारे चालो ॥ ३ ॥
होरी खेलण के काज, लाऊँ रंग साज बाज,
मती आज्यो आड़े आज कमल कालो ॥ ४ ॥
कहत दर्जी नाथूराम, कृष्ण संग ब्रज बाम,
खेलवे को ले गई धाम देकर झालो ॥ ५ ॥

होरी न० ७४

वसन्त वालो ये, वालो ये ब्रजभूषण हरिसंग खेलन चालो ये ॥ टेर ॥
माघ मनाय वसन्त पचमी उच्छव जात सियालो ये।
आवन काज ऋतुराज मिलण रतिपति मतवालो ये ॥ १ ॥
फूले फाग बाग कुंजन में सज सखियाँ सब चालो ये।
रंग राग कर रला कृष्ण को देकर झालो ये ॥ २ ॥
चेत महीने गवरी ईश्वर लगन तिंवार निरालो ये।
देवी पूज नव रात रामनौमी व्रत पालो ये ॥ ३ ॥
माधव आखातीज परशुधर नृसिंह चौदस मनालो ये।
नाथूराम रंग रचे सुखी फिर आत उनालो रे ॥ ४ ॥

होरी न० ७५

साड़ी भैं गयो बनवारी, रग डार डार डार ॥ टेर ॥
में बड़ा घरां की नारी भर यौवन में मतवारी।
वो दे गयो पिचकारी, अग मार मार मार ॥ १ ॥
फागण है मस्त महीनो, लख नन्द के नन्द नवीनो।
गारी दे गयो बनवारी, वो तो बार बार बार ॥ २ ॥
कुंजन में रंग की होरी, सुन आए शकर गौरी।
वहाँ वह गई अघ—आरी, गग धार धार धार ॥ ३ ॥
दर्जी दाथू के स्वामी, पापी—पावन अन्तर्यामी।
सारी ले गयो ब्रजनारी, संग तार तार तार ॥ ४ ॥

होरी न० ७६

मही माखन को लाग्यो चसको, कृष्ण उमायो होरी रस को ॥ टेर ॥
छाने छाने चोर चोर नवनीत खातो,
ज्यूँ ही छिप छिप रग डारने को आतो,
यो जसुमति के नाहीं बस को ॥ १ ॥

गली गली घर घर ग्वालन के डोले,
गारी गुपतारी मुख आवे ज्यूँही बोले,
कहे फागन है गोरी दिन दस को ॥ २ ॥
आज लग्यो दॉव मेरो आयो पकड़ के मॉही,
केशर घोरी मै होरी खिलाने के ताहीं,
अतर मिलायो खसखस को ॥ ३ ॥
अबीर गुलाल मल, गाल गुलचा मारे,
कमरी छिनाई अंग रंग डारे सारे,
गावे नाथूराम हरि यश को ॥ ४ ॥

होरी नं० ७७

हाँ ए सखी मस्त महीनो आयो फाग ए,
खेलो मोहन स्यू कर अनुराग ए ॥ टेर ॥
फागणिया पोशाक सजावो, अतर अबीर गुलाल उड़ावो,
हां ए सखी, खूब करोनी रंग राग ए ॥ १ ॥
ठाडे मग में कुंज बिहारी, हाथ लियां हो कनक पिचकारी,
हॉ ए सखी साड़ी भिजो कर जावे भाग ए ॥ २ ॥
सब गोपी मिल के करो धावो, पकड़ कृष्ण की कमली छिनावो,
हां ए सखी फेर डालोनी रंग अथाग ए ॥ ३ ॥
उठा गोपिका नन्दलला के, मली गुलाल दी गुलचा गाल पे,
हॉ ए सखी सकल हसन गई लाग ए ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, प्रेमी हित सुन्दर तनु धारे,
हॉ ए सखी मारे कंसादिक नाथे नाग ए ॥ ५ ॥

होरी ७८

हॉ रे हरि, ऐसी होरी ना अबे सुहाय रे, थारां भक्तां ने दुष्ट सताय रे ॥ टेर ॥
गज को ग्राह डुबोवत जल में, प्यादा आप उबारयो पल में,
हॉ रे हरि, मकर पे चक्कर चलाय रे ॥ १ ॥
हिरणाकुश ही आफत टलगी, बच्चो प्रह्लाद होलिका जलगी,
हां रे हरि, नृसिंह होय कीन्हो सहाय रे ॥ २ ॥
दुशासन द्रौपदी कूं खवारी, जब सारी में बसे बनवारी,
हां रे हरि, नीच बीच मुरछाय रे ॥ ३ ॥
भयो सभा में विस्मय भारी, सारी को नारी या नारी की सारी,
हां रे हरि, एको ब्रह्म दीनो जताय रे ॥ ४ ॥
दरजी नाथू की सुण अरजी, अद्‌भुत ज्ञान कृपा को गरजी,
हां रे हरि; ज्योति में ज्योति मिलाय रे ॥ ५ ॥

होरी ७९

मै तो आज खेलने जाऊँ हरि सग होरी री ॥ टेर ॥
ललिता चन्द्रावली विशाखा, सारी नव-सत अंग सज राखा,
प्रभु छवि देखण की अभिलाषा चन्द चकोरी री ॥ १ ॥
चन्दन घिस केशर कस्तूरी, अबीर गुलाला ली भरपूरी,
फाग खिलावण बण रंग रूरी, सांवल गोरी री ॥ २ ॥
तुम सब मेरी सहेली प्यारी, चलो संग इसलिए हमारी,
ठाडे यमुनातट गिरधारी, सखां की टोरी री ॥ ३ ॥
दरजी नाथूराम पियारे; लख कर रंग पिचकारे धारे;
तक तक आपस माहीं डारे; मिलो हद जोरी री ॥ ४ ॥

होरी न० ८०

हाँ सरस रंग की होरी, खेले श्याम वृषभान किशोरी।
रहस्य समझ विधि शिव इन्द्रादि कहे कर जोरी रे ॥ टेर ॥
गवर श्याम मणि रूप की झांई, पड़े दम्पति की आपस माँई,
अद्भुत छवि लख सखा सखी मति भूली भोली रे ॥ १॥
जग पोषक तोषक हरि राधा, करते भजन भव की बाधा,
हास विलास वसंत मनावे करे ठिठोली रे ॥ २ ॥
कस कर केशर मली मुलाम्बुज, लाल गुलाल भरे दृग अम्बुज,
रंग पिचकारी मार भिजोई राधा गोरी रे ॥ ३ ॥
श्यामा घर जा अकल उपाई, लिए राजसी भेष बणाई,
सूबेदार खुद, सखियाँ सिपाही, गए नन्द पौरी रे ॥ ४ ॥
जोर-शोर से हल्ला कीन्हा, गिरफ्तार मोहन को कीन्हा,
डरी यशोदा करी भेंट बहु रिश्वत खोरी रे ॥ ५ ॥
ले रिश्वत राधा-मुस्कानी, हँसे श्याम सब सखी सयानी,
लाज ठिठोली के बदले धन लिया बटोरी रे ॥ ६ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, अतर अबीर गुलाल उछारे,
भगत भणे, रहो इवछल राधा श्याम की जोरी रे ॥ ७ ॥

होरी न ८१

आयो आली वसन्त समो, श्यामसुन्दर के संग रमो ॥ टेर ॥
रति पति हरषी जतिसति परखी, बिषया वरखी जगत जमो ॥ १ ॥
मदनारी जार लईछार धार, तोहि मारमार कहे समरथ मो ॥ २ ॥
सती धर्म लाज, रखने के काज, वृजराज सहायक साज समो ॥ ३ ॥

निगु ण अद्वैत, त्रिगुण अतीत, मोह काम जीत, लख चरण नमो ॥ ४ ॥
प्रभु हो दयाल, प्रभुता गुलाल, कर डाल निहाल, अपराध खमो ॥ ५ ॥

होरी न० ८२

धूँसो बाज्यो रे महाराजा श्री नरसिंह को ॥ टेर ॥
श्री नरसिंह जगत के स्वामी, हुकम दियो फाग खेलो ढंग को ॥ १ ॥
चोरी जारी हिंसा त्यागो, चाव रक्खो नित सत्संग को ॥ २ ॥
जालत कयाधू जल गई होली, खिज्यो दैत्य गरबी जग को ॥ ३ ॥
तो में मो में खड्ग खम्भ में, रूप बतायो जन श्री रंग को ॥ ४ ॥
भगत उबारण असुर संघारण, तेज दिखायो अद्‌भुत अग को ॥ ५ ॥
सतयुग राज प्रह्लाद को दियो, नाश कियो खल बदबंग को ॥ ६ ॥
गन्धर्व गावे रम्भा नाचे, घोर होवे घन ज्यूँ जग को ॥ ७ ॥
ज्ञान गुलाल प्रेम पिचकारी; शील दया केशर रंग को ॥ ८ ॥
दर्जी नाथूराम जस पावन; ज्यूँ अघमोचन जल गग को ॥ ९ ॥

होरी न० ८३

रङ्ग मै कैसे होरी खेलूं जी श्री राघव तोरे संग ॥ टेर ॥
शिला अहल्या उड़ी पदरज से, अघमोचन भई गग ॥ १ ॥
न्हावत चित्रगुप्त की बहि बही, मेरा क्या हो ढग ॥ २ ॥
सुर्पणखा करी नकटी, दावा चले होण अरधग ॥ ३ ॥
चवदा सहस्र रूप धर लड़िया, खरदूषण के जंग ॥ ४ ॥
हरिहर दोनों एक समझ कर, डरता रहे अनग ॥ ५ ॥
कैसे प्रेम हो मेल मिले प्रभु गोरे साँवल अग ॥ ६ ॥
नाथू राम सिया फाग रमावण, बजा सैनाई चग ॥ ७ ॥

गीत गुंजन (झूलापद)

झूला न० १

झूलां रे साँवरिया श्री यमुनाजी की कूलांरे; आज संग झूलां रे ॥ टेर ॥
सावन आयो नभा घन छाई; पानां फूलां रे ॥ १ ॥
बोली प्यारी पक्षी न्यारी न्यारी रहे उचारी रे।
गावे नारी वंशी तुम्हारी; सुन हम फूलां रे ॥ २ ॥
जल्दी चालो; डोलर घालो; पर्व न टालो भालो रे।
दर्जी नाथूदीन जान पल भर नहीं भूलां रे ॥ ३ ॥

झूला नं० २

नन्द नन्दन को अजब हिंडोरो; कदमों की छाया में ॥ टेर ॥
कुंजन बन जमना की तीरा; हेम हिंडोला जड़िया हीरा।
लग रही रेशम डोर ॥ १ ॥
बायें अंग श्रीराधे विराजे; दम्पति लख घन बीजरी लाजे।
शोभा साँवल गोर ॥ २ ॥
झोटा दे सखि बारी बारी; नृत्य गायन नूपुर झनकारी।
बोलत दादुर मोर ॥ ३ ॥
चढ बिमान सुरगन सब आवें देख झूलन झाँकी हरषावें।
ज्यूं लख चन्द चकोर ॥ ४ ॥
दर्जी नाथू के दृग तारे, श्यामा श्याम प्राण से प्यारे।
हिरदे बसो निशि भोर ॥ ५ ॥

झूला नं० ३

थे तो आधे अंग की जोत, सुनो ये सुन्दर राधे।
श्याम से राखो काँई रूसणो ॥ टेर ॥
झूला डाला दे री कुंजन बन माहीं, ऊँची शाखा कदम की सोत ॥ १ ॥
थांने याद करे वे हित से प्रेमी, सजो साड़ी बढ़िया पोत ॥ २ ॥
आई ललिता विशाखा मनावणे, लख पीहरिया को गोत ॥ ३ ॥
प्यारी कला सोलह सिणगार करो, मती रचो कपट का तोत ॥ ४ ॥
दर्जी नाथू के स्वामी संग झूलो, जभी झूला में आनन्द होत ॥ ५ ॥

झूला नं० ४

झूला झूले बाम सिया, झुलावे राम पिया ॥ टेर ॥
तीज रमण बण आई सीता, सोलह सिंगार किया ॥ १ ॥
हेम हिंडोले हीरे हरि लख घूंघट काढ लिया ॥ २ ॥
धन एक पतिव्रत लख सती का, हुलसे श्याम हिया ॥ ३ ॥
नभ घन दामिनि चमके बरसे, भीजे सुन्दर पिया ॥ ४ ॥
फरी चाँदनी नेह कर राघव, सखि सब चरण छिया ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम जानकी, सुमिरत सुफल जिया ॥ ६ ॥

झूला न० ५

बरसे म्हारा श्यामसुन्दर बिन राधा तरसे रे, बिरखा बरसे रे ॥ टेर ॥
लाग्यो मास आषाढ छाँड़ि मोहे श्याम सिधाया घर से रे ।
फिकर सतावे मोहि निकल गई डोरी कर से रे ॥ १ ॥
सावन आवन कह गए मोहन, आए ना मथुरा नगर से रे ।
झूला झूलन की बहार मिलन चाहती गिरधर से रे ॥ २ ॥
भादव यादवनाथ बिना म्हारो जीव दुखी भीतर से रे ।
मेघराज करे गाज मदन की जोड़ी तरसे रे ॥ ३ ॥
भई आसोज में मौज श्याम सूती ने परतक दरसे रे ।
नाथूराम श्याम के शरणे अति मन हरसे रे ॥ ४ ॥

झूला न० ६

मुरारी थारी झूलन झांकी न्यारी ॥ टेर ॥
मघवा बरसे चपला चमके, शोभित बन हरियारी ॥ १ ॥
लहर्‌या भूषण, दिव्याभूषण, कोटि काम छवि वारी ॥ २ ॥
कदम्ब की डलियाँ झूला डाला, झोटा दे व्रजनारी ॥ ३ ॥
दादुर मोर पपीहा बोलत, कोयल कूक पियारी ॥ ४ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्ण बल, गावत राग मल्हारी ॥ ५ ॥

हिंडोला न० ७

सिया झूले, पिया झुलाय, हिया हरषावे है ॥ टेर ॥
हेम हिंडोला, प्रेम मचोला, रमक से घू घट खुलाय, चमक दर्शावे है ॥ १ ॥
राघव मुस्कान, ज्ञानानन्द घन, उमड़ घुमड़ घुलाय, अमी बरसावे है ॥ २ ॥
एक नर नारी, टेक व्रत भारी, देवी देव फुलाय, सुगन्ध सरसावे है ॥ ३ ॥
शूर्पणखा रावण, सुन्दर अपावन, जाति धर्म भुलाय, दण्ड परसावे है ॥ ४ ॥
नाथू रामराज माहो, होती बाल बेवा नाहीं, चारों ही फल उलाय
कोई ने तरसावे है ॥ ५ ॥

झूला न० ८

देखो झूलो बनवारी को, अद्‌भुत आनन्द कारी को ॥ टेर ॥
साधा योग ब्रह्मा तन आराधा, कल्प वृक्ष सुन ज्ञाता लाधा,
फल चारों देत हरे भव बाधा, काली कृष्ण गोरे शिव राधा,
उलट विवाह बिहारी को ॥ १ ॥

श्यामा गौर श्याम बनमाली, गोरे शिव के शक्ति काली,
छवि विचित्र प्रसूती चाली, त्रिगुणी डोर अक्षयतरु डाली,
अमर गोलोक मुरारी को ॥ २ ॥
हेम हिंडोला हीरा जड़िया, विश्वकर्मा कारीगर घड़िया,
साँवल गौर प्रतिबिम्ब पड़िया, बने बहु रूपा घट घट बड़िया,
भुण्ड गोप ब्रज नारी को ॥ ३ ॥
विधि माया कृत इत संसारी, पृथ्वी हरी हिरण्याक्ष अनारी,
खल हतन लाये वाराह तन धारी, ब्रज मथुरा त्रिलोक से न्यारी,
नित्य उत्सव अविकारी को ॥ ४ ॥
नाथूराम बन आदिम दरजी, सीवे बेस बहु सजे अलगरजी,
कोई कहे सच्चा कोई कहे फरजी, जानी न जाय जगदीश की मरजी,
हद हींडो गिरधारी को ॥ ५ ॥

झूला नं० ९

राग—पणिहारी

ऋतु वर्षा की आ गई बनवारी जी तोय ।
अरज करूँ कर जोड़ दीज्यो दर्शन मोय ॥ टेर ॥
अषाढ आशा लगी बिरज चौमासा सोय ।
बरसे मेह देह भीज नेह प्रबल होय ॥ १ ॥
सावन रावन सो भयो पिव बिन दुख होय ।
कैसे रमूँ तीज में झूला जिया माने ना कोय ॥ २ ॥
भादव माधव लो सुधी राघव प्रण जोय ।
भँवर रहे बन भूम फूलन खुशबोय ॥ ३ ॥
कुँवार दशानन जीत सिया बिरह अग्नि धोय ।
नाथूराम अपनाय जुही श्याम हिये पोय ॥ ४ ॥

झूला नं० १०

धीमा झूलो मदन मोहन झूले ॥ टेर ॥
गगन में काली घटा सघन छाई है;
घरर घरर गरज के झड़ जरर जरर लाई है,
लहरियां भीज भीज चुवे रंग की नीकाई है;
बीजलियां चमके दमक रमक बढत सवाई है,
ज्यादा झोटन जोरे घूँघट खुले ॥ १ ॥
सुनत पिये के बैन कमलनैन मुस्काते हैं;
पीताम्बर की चाँदणी गिरधारी जी तनाते हैं;
राधे प्राण बल्लभा को प्रेम सरसाते हैं,

नभ में देख देव गण पुष्प बरसाते हैं;
नीके सावन मे बृन्दावन फूले ।। २ ।।
ललिता विशाखा चन्द चन्द्रावली आती हैं;
परस्पर दम्पति नाम पूछ लिखाती है,
नूपुर मृदंग बजाय मेघ मल्हार गाती हैं;
रीझ मौज लेण नाच तीज मनाती है,
राधे नन्दकँवर पै चँवर ढुले ।। ३ ।।
धन्य गोकुल ग्राम धन्य धाम बरसाना है,
धन्य लीला पुरुषोत्तम रूप दरशाना है;
कंसादि दुष्ट मार भार भू हटाना है;
भजे भक्त लोग जां का दरिद्र दुख मिटाना है;
दर्जी नाथूराम पद मत भूले ।। ४ ।।

झूला न० ११

हाँ राधिका कृष्ण मुरारी; झूले फूले सघन फूलवारी ।। टेर ।।
जमुना तीर कदम्ब की शाखा, झूला डाले ललिता विशाखा ।
सखि अभिलाषा पूरण विराजे सज पिव प्यारी रे ।। १ ।।
बारी बारी सब ब्रज नारी, झोटा देत प्रेम मतवारी ।
गावे मेघ मल्हार बजा नूपुर झनकारी रे ।। २ ।।
घरर घरर घन गरजे भारी बीजरियाँ चमकत है न्यारी ।
लाजे लख झूला की झाँकी छवि अपारी है ।। ३ ।।
दादुर मोर पपीहा बोले, आनन्द हेम हिंडोले जोह ले ।
ढोरे चँवर चन्दरावल गुजरी ले बलिहारी रे ।। ४ ।।
दर्जी नाथू के दृग तारे, श्यामा श्याम जग सरजन हारे ।
कोटि काम रति सुन्दरता पर देय उवारी रे ।। ५ ।।

झूला न० १२

झूले रंग झूले झलकन युग झाँकी है ।
सो ही कला पूरण ब्रह्म चन्द्रमा की है ।। टेर ।।
दिव्य अंग आधा आधा, मुकुन्द राधा, गवरे साँवल लाधा ।
बाधा हरण भगतों की है ।। १ ।।
गो लोक निवासी, रूप की राशि, -लाऊँ योग्य दासी ।
सेवा करण सुषमा की है ।। २ ।।
लाजे नीलम हीरा, रवि शशि धीरा, दामिनि घन गम्भीरा ।
कोटि रति पति उपमा की है ।। ३ ।।

गौ गरीब हितकारी, भये अवतारी, लीला करी अपारी।
गावत थकी जिह्वा सहसफनां की है ॥ ४ ॥
दर्जी नाथू के स्वामी, अन्तर्जामी, लख सदा नमामि।
मुनि मन मोहन छवि बाँकी है ॥ ५ ॥

झूला नं० १३
राग—माँड

सखि राधा माधव आज हिंडोले झूले है खड़ा ॥ टेर ॥
ऊँची शाखा कदम की रेशम तेलड़ा।
हेम हिंडोला रतन सिंहासन ठाला विधि घड़ा ॥ १ ॥
झोटा लेता जोर से मेरी नजर पड़ा।
गोरे साँवल रूप रंगीला आपस माँही अड़ा ॥ २ ॥
झिलमिल झाँकी श्याम श्यामा की ज्यूं नीलम हीर जड़ा।
भिन्न भिन्न घन दामिनि ज्यूं काली मलयागिरि लड़ा ॥ ३ ॥
फूल रही वनराय भँवरा लेत सुगन्ध जड़ा।
गावे नाचे गोपिका झेले फेंक वड़ा ॥ ४ ॥
रमके झमके पायल वाजे ठमके छैल कड़ा।
नाथू के स्वामी झूला आनन्द देखन है उमड़ा ॥ ५ ॥

झूला न० १४

प्रभु जी थांने निशिदिन सिमरूँ जी।
ज्यूं पिउ पिउ पिउ वाणी पपैयो बोले सा ॥ टेर ॥
प्रभु जी थाँको झूलन झाँकी जी, दिव्य दन्त मन्द मुस्कानी।
विजली घन ओले सा ॥ १ ॥
प्रभु जी शुक दादुर कोयल मोरा, बोले बोली मदन जगानी।
नित छाती छोले सा ॥ २ ॥
प्रभु जी धर अधर मुरलियाँ जी, सब राग रागिणी गाणी।
धुनी होले होले सा ॥ ३ ॥
प्रभु जी मेह झरर झरर झड़ लाई, झटपट पीताम्बर ताणी।
झूली नेह झूले सा ॥ ४ ॥
प्रभुजी जस दरजी नाथू गावे, दो दर्शन सारगपाणी।
कला धर सोलह सा ॥ ५ ॥

झूला न० १५

झूला झूले कृष्ण कुंजन में राधा जी के संग ॥ टेर ॥
डार कदम की तणी रेशम की बाँधी गहरी तंग।
हेम हिंडोला हीरा जड़िया रतनासन सुरग ॥ १ ॥
पीताम्बर नीलाम्बर जरकस गवरे साँवल अग।
वारूँ दम्पति छवि पर कोटि रवि शशि रति अनंग ॥ २ ॥
हरी हरी भूमि जमना तीरों बरसत मेघ उमग।
मीठा बोले दादुर पछी कलि रस लेता भृंग ॥ ३ ॥
मोटा भाग समझ, दे झोटा गोपा गति मतग।
रीझ मौज भक्ति वर देवे यदु कुल कमला पतग ॥ ४ ॥
नाचे सखियाँ झूलन आगे बजा ताल मृदग।
दर्जी नाथूराम कृष्ण यश गाय राग सारग ॥ ५ ॥

झूला न० १६

देखो मानव धर्म मरजादी, मिया रघुवर का झूलणा ॥ टेर ॥
जाती कर्मी हेम हिंडोला, एक पति पत्नी नेम अमोला।
हीरा दया सुद भोज मचोला लछमन चँवर सेवा का ढोला।
भरतजी भ्रात प्रेम अमी घोला, विश्व सघन बन फूलणा ॥ १ ॥
रावन शूर्पणखा तप शुद्र, धोबी लगा कसौटी छिद्र।
परखे धर्म सुबरणो उदर दीनी गति दण्ड ज्ञान समुद्र।
अहिल्या धीवर अधर उधारण, नृप नीति अनुकूलणा ॥ २ ॥
ऐसे धर्मानन्द के झोटे, पाये जन राघव के ओटे।
मरते बाप पहले नहीं ढोटे, सुखमय रहते छोटे मोटे।
निशिचरी पशु करम कर खोटे, ना सतजुगी पत झूलणा ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम सीता के, धारो गुणकर्म जग जीता के।
ये ही वचन वेद गीता के, समझो सार भजन कविता के।
नहीं तो चौरासी चकरी डोलर में बर बर डोलणा ॥ ४ ॥

झूला न० १७

ईश्वर इचरजी रंग झूला झूलो कोई थारी मरजी रे ॥ टेर ॥
माया बीज अहकार डार पै डोरी तम सतरंजी रे।
हिरण्यगर्भ विराट पुरुष दिव्य झाँकी सरजी रे ॥ १ ॥
चार खान से चौरासी पोशाकां दरजण दरजी रे ॥
सज द्रौपदी ज्यूँ पट प्रसूती हो नहीं हरजी रे ॥ २ ॥

जीर्ण उतार दे, नया रंक राजा गुण कर्मां करजोरे।
दर्श अदर्श करो न्याय, पतित पावन सुन अरजी रे ॥ ३ ॥
सामग्री कारीगरी अपरम ना सच्ची ना फरजी रे।
न बिना बनाया बने, बनाने की भासण गरजी रे ॥ ४ ॥
बिगरी सुधारण नाथूराम की रसना दी शशि सुरजी रे।
ठाला बैठा करो गोरख धन्धा सके कुण बरजी रे ॥ ५ ॥

झूला नं० १८

श्रीराधा की झिलमिल झाँकी झूलन झलके है, शोभा भलके है ॥ टेर ॥
झूटणा, झूमर, झाला जड़ाऊ, बोर, चूड़ामणि चिलके है।
झनक झनक झनके झांझरियाँ झोटन हलके है ॥ १ ॥
जरर जरर मघवा झड़ लावे मोतीड़ा सा ढलके है।
लहरो भीजे माधव रीझे लजवन्ती ललके है ॥ २ ॥
चन्द चकोर ज्यूं झुक-झुक झाँके मनमोहन मुख मुलके है।
करत चाँदनी प्रिये पर पीताम्बर पलके है ॥ ३ ॥
सुर बरसावे फुल गोपिका नृत्य गायन कर किलके है।
दर्जी नाथू के स्वामी आनन्द मगल के है ॥ ४ ॥

गीत गुंजन (फुटकर भजन)

पद नं० १

केशव क्या कहूं कहा नहीं जावे है; दीसे जैसा कहे-बिन रहा नहीं जावे है ॥ टेर ॥
भींत बिना जग चित्र, चितरे विचित्र, चतुर खानी भीतर,
नित नया होकर कहा बिलावे है ॥ १ ॥
खोजा क्लीब नरनारी, ज्ञानी, अनारी, वन्ध्या बहुपरिवारी,
रोगी नीरोगी कौन कहावे है ॥ २ ॥
यदि सब घट तव ज्योति, क्यू हँस रोती, फुलड़ा कटक बोती,
खोती प्रभुताई ने शर्मावे है ॥ ३ ॥
जो जीव लखे तू न्यारा, पसावणवारा, रचता ज्यू ससारा,
बड़पन थारा नहीं छवि लखावे है ॥ ४ ॥
तेरी राजी नाराजी रगड़ा बाजी, बिगड़ी सुधारण काजी,
कभी आवे कभी ना आवे है ॥ ५ ॥
अपरम सहन शक्ति, सदा विरक्ति, विश्व बनन की युक्ति
इन्द्रजाली कर जीव बिलमावे है ॥ ६ ॥

पद नं० २

अरज सुन बेगी ब्रजराजा; भव रोगों से छुड़ा दीन को कर सुखिया ताजा ।। टेर ।।

दिव्य प्रकाश स्वरूप प्रभू तुम पूर्ण कला बाजा ।
हम तेरे ही अंग इच्छा से बहु जर-पट साजा ।। १ ।।
भेद बणगटी लख अनेक भ्रम किए नट के काजा ।
नरक सुरग जा केई बर आए खारा मीठा खाजा ।। २ ।।
मोह नद विसै अतुल झकोले डोले मेरी जहाजा ।
काल मगर मुख बायां आवे सुजन बली पाजा ।। ३ ।।
यदपि पतित हूं पतित पावन तू बिरद जोय आजा ।
ज्यूं गज आधा नाम लेत तारण पयादा भाजा ।। ४ ।।
मायत से ही अधिक अपणायत बड़पन तोय छाजा ।
मुक्त अजामिल ज्यूं कर रख तू द्रौपदी की लाजा ।। ५ ।।
शर्म धर्मयुत जीवनधन कांई नांय गला दाझा ।
सीताराम युधिष्ठिर जग तज अमर धाम विराजा ।। ६ ।।
जन प्रह्लाद हित बन नृसिंह प्रगट खम्भ गाजा ।
ज्यूं नाथू दर्जी कूं दरस देवो खोल के दरवाजा ।। ७ ।।

माताजी की स्तुति

भजन नं० ३

सतचित आनन्द रूपातम रतनां रा खम्भा है, श्री जगदम्बा है ।। टेर ।।
सगुण भगवती पुरुष प्रकृति बीजाकृति कदम्बा है ।
हिरण्यगर्भ में विराट अंग में विश्व कुटुम्बा है ।। १ ।।
रवि शशि नैन कमलमुख शम्भु अधर अरुण फल बिम्बा है ।
भौंह धनुष शुक मुख नासा सजी बेसर अम्बा है ।। २ ।।
वेणी व्याल विधि नाल विष्णु कुच दिग्पति सुरकर लम्बा है ।
कटि सिंहासनि मारे शुम्भ आदि प्ररलम्बा है ।। ३ ।।
आधा आधा राधा कृष्ण छबि बहु बण लागी रम्भा है ।
नव दुर्गा नव रात दिवस करतो आलम्बा है ।। ४ ।।
बिन पति उत्पति पोषण लय कर दम्पति बड़ा अचम्भा है ।
आत्म हीर जग काच भवन में पड़े प्रतिबिम्बा है ।। ५ ।।
विराजी कोटे अन्दर मन्दिर पुरजन पद अवलम्बा है ।
दर्जी नाथू तारो शीघ्र क्यो करो विलम्बा है ।। ६ ।।

भजन नं० ४

दरस वलिहारी जी, वलिहारी जाऊँ श्री जगदम्वा पलपल थारी जी ॥ टेर ॥
सर डीडवाना कोट के अन्दर मन्दिर चहुं तिवारी जी।
निज मठ बंगले बीच सजी सिंह पर असवारी जी ॥ १ ॥
रवि शशि कोटि वदन की शोभा पट आभूषण भारी जी।
चन्द्रहार तिमण्यो नकवेसर चमक अपारी जी ॥ २ ॥
भेसा शाह को वर दिए सर कर रजत खान महतारी जी।
मोय ना चाहे खान झगड़सी आलम सारी जी ॥ ३ ॥
तव चाँदी का नमक बनाया करी कृपा शुभकारी जी।
दे परचा पुरजन की रक्षा करी कई वारी जी ॥ ४ ॥
नन्दलाल गुरु कृपा से रहे महिमा नित्य उचारी जी।
दर्जी नाथू की सहाय करो यही विनय हमारी जी ॥ ५ ॥

पद नं० ५

मैंने लाखों के बोल सहे, साँवलिया तेरे लिए ॥ टेर ॥
हम सुधातम, वीर्य रज तन, असुध अजीव छिए ॥ १ ॥
हूं वणगटी दम्पति वण भिन्न भिन्न, लुभ मद वशे पिए ॥ २ ॥
उन्मत हो नृत्य, गायन कू कई सागे चरित्र किए ॥ ३ ॥
नाथ नचाए, ज्यूँ ही नाचे, राचे अतरिये ॥ ४ ॥
तुम हो विभु मैं तेरी विभूति, विरद विचार हिए ॥ ५ ॥
वहुरूपा की सफल कर फेरी, चित्त चरण में दिए ॥ ६ ॥
नाथू नामदेव ज्यूँ अपना, लख मन फटे सिए ॥ ७ ॥

पद नं० ६

अव तो मोह फन्द काटो माधव, अव तो मोह फन्द काटो ॥ टेर ॥
ब्रह्म सुभाव से उत्पन्न परले, होवे विश्व विराटो।
गुण करमां जीव उलट पलट सुख दुख रंक समराटो ॥ १ ॥
अल्पज्ञता से लग गयो चित्त मे पाँच वीस को चाटो।
चाटा वस सँ करम भूलकर कियो ममता को जाटो ॥ २ ॥
खेत पके सँ यम ठाकुर लगो लाटन करड़ो लाटो।
जव चोरी जारी हिंसा करी वायो अम्वर में भाटो ॥ ३ ॥
न्यायाधीश ईश रीस कैद दियो वहु घाटो।
धन वल कुल गुण हीन दीन भयो, कठिन खीच खाटो ॥ ४ ॥
दीन वन्धु दुखिया के साथी, दे भूखां ने आटो।
दर्जी नाथूराम कृष्णपद पावे ही वैकुण्ठ बाँटो ॥ ५ ॥

भजन न० ७

राग पीलू

साँई सहायक रचा के मानव, धर्म सनातन सच्चा ॥ टेर ॥
जाति कर्म पतिव्रत दया शुचि भोज ही अनजल जचा रे ॥ १ ॥
पिता के सम्मुख पुत्र ना मरता, फलता बन धन सीचा रे ॥ २ ॥
खण्ड मरजादा नृप के डंडी कहे वेद की ऋचा रे ॥ ३ ॥
रावण सूर्पनखा शंबुक गति, लख रामायण बीचा रे ॥ ४ ॥
पर धर्मी नाता मनसारी आपत्काली पथ कच्चा रे ॥ ५ ॥
दर्लो नाथूराम राज में फिर कोई विघ्न न मचा रे ॥ ६ ॥

भजन न० ८

बारहमासा भगवती का

राग—पणिहारी

सत् चित् आनन्द रूपिणि ये जगदम्बा तोय ।
अरज करूँ कर जोड़ दीज्यो सुधबुध मोय ॥ टेर ॥
चेत भजन नव रात्रि ये नव-दुर्गा होय ।
ब्यावण ईश्वर गौर छवि धारी दोय ॥ १ ॥
सुदि बैशाख नम हो सिया सती वरत संजोय ।
रावण महिरावण खल दिए खोय ॥ २ ॥
जेठ दशहरा गग बण भागीरथ तप जोय ।
आई भारत मांय कुल कलि मल धोय ॥ ३ ॥
मास अषाढी नौड़ता क्यू राख्या लकोय ।
वेना पड़े फल चार क्या बोझा ढोय ॥ ४ ॥
सावण सुदि रा राधिकाए घन लहर्‍या निचोय ।
झूला झूले बाग महकत खुशबोय ॥ ५ ॥
भादों रजनी मोहनी ये लख कसादिक रोय ।
मारण शुम्भ निशुम्भ नही दूजा कोय ॥ ६ ॥
आसोजी नव रेणका ये प्रसिद्ध जग सोय ।
पूजे विधियुत दास चढा फल-दल तोय ॥ ७ ॥
काती घर सुधि कामणीये कर दिवला संजोय ।
घर लक्ष्मी रे भोग नव नाज सिझोय ॥ ८ ॥
मगसर एकादशी उत्पन्ना मुर दत्य पि लोय ।
साधे व्रत मणि आन नहीं जीवण डबोय ॥ ९ ॥
पोष मकर संक्रान्ति ये रस भरे गेहूं जोय ।
चंड महिषासुर खण्ड मुण्ड माला पोय ॥ १० ॥

गुप्त नोड़ता माघ रटे लग ज्योति लोय।
सकल मनोरथ सिद्ध करे सुख भर सोय ॥ ११ ॥
फाग रमे बहु वेसनि ये रंग सरस घिलोय।
नृत गायन डफ बाज रही बसन भिगोय ॥ १२ ॥
अधिक गुरु नन्दलालजी ए कही शास्त्र बिलोय।
दर्जी नाथूराम बीज मन्त्र उर गोय ॥ १३ ॥

भजन नं० ९

आरती

महाबीर परपीर निवारण हो तुम कोई देव मोटा ॥ टेर ॥
शम्भु अंश कपि वश कहावत प्रबल पवन जी का ढोटा।
मात अजनी करण निरजनी बाँधे सुजस का कोटा ॥ १ ॥
रावण बाली बल अभिमानी कामी करम करे खोटा।
रघुवर हाथ मराए मिल सुखी भए बन्धु छोटा ॥ २ ॥
रघुनायकपायक सुखदायक सायक लिए हाथ घोटा।
भक्त उबारे दुष्ट संहारे कर दकाल पकरे चोटा ॥ ३ ॥
लाल देह लाली लसे लाला कसे लालहि लगोटा।
धूप दीप कर अरचे चरचे घिस चन्दन गोटा ॥ ४ ॥
ऋद्धि सिद्धि दाता दया करे नित हरे विघ्न टोटा।
दर्जी नाथूराम भक्ति दे निज पद पकज का ओटा ॥ ५ ॥

भजन न० १०

पग धोय धरो धोय धरो धोय धरो जी,
म्हारी नाव ने उड़ावोला काँई जी ॥ टेर ॥
प्रभु पहली चरण धुवावो, थे फेर नाव पर आओ जी ॥ १ ॥
प्रभु चरण की रज से उड़ गई, वा गौतम ऋषि की नारी जी ॥ २ ॥
प्रभु हम तुम दोनों भाई, थांस्यू नहीं चाहिए उतराई जी ॥ ३ ॥
प्रभु चरण कमल को चेरो, म्हारो काटो पाप घणेरो जी ॥ ४ ॥
प्रभु नाथूराम यश गावे, चरणन में शीश नवावे जी ॥ ५ ॥

पद न० ११

चरण बलिहारी जाऊँ श्री नारायण आनन्दकारी जी ॥ टेर ॥
जिन चरणन को चॉपत निशिदिन महालक्ष्मी प्यारी जी।
जगत विभूति रूप होय फिर रहती न्यारी जी ॥ १ ॥

बावन बढ़त अंगुष्ठ से फूटत ब्रह्मण्ड विरजा पधारी जी।
विष्णुपदी भई ब्रह्म कमण्डल शिव जोंहि सिर पर धारी जी ॥ २ ॥
शिला अहिल्या इन्द्र ई ट तन पतित भए कर जारी जी।
राघव विट्ठल पद रज से भई सुरपुर अधिकारी जी ॥ ३ ॥
पूर्व कमठ पद परसण लागे शेष दिए फटकारी जी।
सो केवट बन लिए चरणोदक, अधम उधारी जी ॥ ४ ॥
शकटासुर नृग कुब्जा काली नाग भाग्य बड़ भारी जी।
दर्जी नाथूराम कृष्णपद भव भय हारी जी ॥ ५ ॥

भजन न० १२

लावणी रगत-घूमणी

कवित्त :—

चेतन सर्व शक्तिमान, शम्भु स्वयभु भगवा, अंशा अशी देव आन, हनुमान मोटा है।
सभी सुर नारी सन्तान, मोहो भूले मस्तान, त्यागी तेज ज्ञान खान, अंजनी के ढोटा है ॥
गुरु नन्दलाल द्वार, पायो बोध योही सार, पर उपकार कार, मेटे दुख टोटा है।
दर्जी नाथूराम पायक, बल बुद्धि सुख दायक, गणनायक ज्यू सहायक, मान लिया ओटा है ॥

प्रभु पर उपकारी, बजरंग बलधारी सांचा केवड़ा ॥ टेर ॥
एक ब्रह्मातम भये विश्वातम जड़ माया विस्तार।
स्पर्श शब्द रूप रस गधा मन बुद्धि अहकार।
व्यापक चेतन सूक्षम हंसो सुन्दर दिव्य दीदार।
बिसमें वीर्य रज मिले, नर नारी देह स्थूल;
संचे पूरे अष्टक ढल जीव नाव मूल को भूल;
बने गुण कर्म अचारी ॥ बजरंग० ॥
महावीर परपीर निवारण, समर धीर बली बंका।
सौ जोजन नद लॉघ सिया सुधि लेण गए गढ़ लका।
फलभोजी ब्रह्मचारी का बल देख निशाचर शंका।
जुल्मी मांसा हारी भिड़े अक्षयकुमार समेत;
मुष्टिक लातां मार मार दिए राम जानकी हेत;
रावण की नगरी जारी ॥ बजरग० ॥
लौट आय सन्देश सुनाए रघुवर दल ले धाए।
नाम प्रताप नील नल कर से जल पाषाण तराए।
मच्यो जग लग मेघनाथ शर लछमण तन मुरछाए।
द्रोणागिरि कर धार के दई सजीवन आण;
सेना सहित यतिराज जी, मारे दुष्ट के बाण;
मर्यो घननाद सुरारी ॥ बजरग० ॥

पंठ पाताल हत्यो अहिरावण सहाय करी रघुवर को।
दशकन्ध दल मरवाय छुड़ाई कैद सकल सुरनर को।
ऐसो पर उपकार करणियो पदवी ले ईश्वर की।
नन्दलाल गुरु ध्यान कर दर्जी नाथूराम;
श्री हनुमान भजे तोहे निशदिन, सारो मनोरथ काम;
हरो भव बाधा सारी ॥ बजरंग० ॥

भजन न० १३

आवागमन निवारण म्हाने जी, रास रमावो बनवारी ॥ टेर ॥
सत् चित् आनन्द रूप के सागर कोटि कामदेव वारी।
जब से छवि दिखलाई मोहन सुध बुध बिसर गई सारी ॥ १ ॥
धर्म अर्थ और काम मुक्ति की हो पतिव्रता अधिकारी।
हम नहीं चहत स्वप्न फल चारों जनम-मरण बारम्बारी ॥ २ ॥
यदि अनग जग संग आय के चाय अंग हमरे द्वारी।
तो भी पतित पावन प्रणपालन ज्योति में ज्योति मिला म्हारी ॥ ३ ॥
सज सोलह सिणगार सखी सब सोलह कला विभु अवतारी।
सोलह कला शशि सरस सुधा जरे शरद पूनम निशि उजियारी ॥ ४ ॥
जेती गोपी तेरे श्याम बण डण्डिया जुरे लारों लारी।
घेर घूमेर नृत्य गायन कर बाजा अनहद धुन प्यारी ॥ ५ ॥
सहनशक्ति लख जति सती की रतिपति लड़ गयो हारी।
पुष्प झड़ी करी सुर इन्द्रादिक चकित भए विधि मदनारी ॥ ६ ॥
ब्रह्मानन्द में ब्रह्म रात करी लिए रसधन तनमन हारी।
चोर जार सरदार कृष्णजी किए शिव जिह्वा को कारी ॥ ७ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे चावे वो किरपा थारी।
राधा सहित हरण भव बाधा बसो उरकर मुरलीधारी ॥ ८ ॥

भजन न० १४
ठुमरी

तुम नन्दलाला कैसी ठानी हो ठगाई रे ॥ टेर ॥
पेली तो चेतन झलक झाँकी की, दिखला मन की भरमना भगाई रे ॥ १ ॥
रास कोल पर वेणु बजाकर, आधी रेण भर निद्रा से जगाई रे ॥ २ ॥
प्रेम दिवानी बन में आई, देह सुधि भूल लज्जा लोक की लगाई रे ॥ ३ ॥
अब पतिव्रत की शिक्षा देते, चढा गिरि डारा दरसी लगाई रे ॥ ४ ॥
पतिव्रता फल चारों चखती, द्वैत मिटन हम प्रीत लगाई रे ॥ ५ ॥

पतग दीप ज्यूँ घन रिपु भावी, आसुर जोत मिले उमगाई रे ॥ ६ ॥
मित्रभाव हम भज बिलखानी, पूरब जनम की तुमसे सगाई रे ॥ ७ ॥
रतिपति सर सेन जति सति डरता, पूरण कला का पद अलगाई रे ॥ ८ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णनिज, भगतां ने बर बर नाम गाई रे ॥ ९ ॥

भजन न० १५

हरि सुमिरण सत, तत मूल करो रे ॥ टेर ॥
देही अमोलक दी कर्ता ने, जिनका लेखा वसूल करो रे ॥ १ ॥
काम क्रोध मदलोभ मोह तज, शास्त्र के अनुकूल करो रे ॥ २ ॥
फूल बासना, तन धन थिरना, विषया सक्त मत भूल करो रे ॥ ३ ॥
मिनखा देही रतन पदारथ, जान बूझ मत धूर करो रे ॥ ४ ॥
हित चित से गोविन्द नांव पर, तन मन धन कबूल करो रे ॥ ५ ॥
नाथूराम श्याम के शरणे, पेली ठिकाणा सूल करो रे ॥ ६ ॥

भजन न० १६

सखि श्याम सनेही मन नाही बस को, चितवन को लाग्यो चसको ॥ टेर ॥
बहु रूपा विश्व खेल प्रभु इच्छा हुआ ।
मै बड़ विषयासक्त देह मद से बिछोवा ।
अब छूटो मोह जड़ बाकस को ॥ चितवन० ॥
बिगड़ो जग ख्याल आप सुधारण आयो ।
सोलह कला रूप वृज भूप कहलायो ।
कियो शुभ चरित्र अद्भुत जस को ॥ चितवन० ॥
बांसुरी की धुन सुन निद्रा से जागी ।
दरस दिवानी प्रेमा लोक लाज त्यागी ।
भयो भूत भरम भय आलस को ॥ चितवन० ॥
एक पतिव्रता नारी धर्मानन्द चाखे ।
शुद्ध जार भाव बाल यति पद राखे ।
मिले अमर स्नेह सुख मोकस को ॥ चितवन० ॥
शरद पूनम रैन रास रचे भगवाना ।
एक एक गोपी सग एक एक कान्हा ।
पायो ज्ञानानन्द अमीरस को ॥ चितवन० ॥
दिव्य रूप नव सत भूषण पट साजा ।
दिव्य गान नाच तान अनहद बाजा ।
दिव्य महके वायु अतर खस को ॥ चितवन० ॥

बाँकी झाँकी साँवरे की दरस परस ताहीं।
भई तृप्त सभी रति योग बिना ही।
हरि हरो जहर यौवन विष को ।। चितवन० ।।
दर्जी नाथूराम कृष्णजी की रस लीला।
जाने विधि शिव भक्त राधा शिशु शीला।
सुर भेद न पायो कोई उस को ।। चितवन० ।।

भजन न० १७

ओजी म्हारो जीव दर्शन बिन तरसे,
नन्दजी का लाला कीकर जाऊँ जमना घाट ।। टेर ।।
बंशी की धुन सुन प्रीत दिवानी संग की सहेली गई न्हाट ।। १ ।।
शरद पूनम की चटक चाँदणी, रैंण गई घड़ी आठ ।। २ ।।
फिर के अपूठी मैं तो हड़बड़ ऊठी, मच गई पिव की बाट ।। ३ ।।
होत ही मालूम जागे साजन, आडा जड़िया कपाट ।। ४ ।।
सासू की जाई मोरी नणदल बाई, ठाडी कर रही काट ।। ५ ।।
परम प्रेम का मर्म न जाने, रोके मुक्त की बाट ।। ६ ।।
जारी बेजारी मै नहीं जाणू लगी दर्शन की चाट ।। ७ ।।
दर्जी नाथू मिलि जब हरि से, देह बख्तर गयो फाट ।। ८ ।।

भजन न० १८
आसावरी

प्रभु तुम सकल सृष्टि के करता; तुम हो अद्‌भुत चेतन भरता ।। टेर ।।
सर्व ही शक्तिमान हो सर्वज्ञ सिद्ध नित अमर अजरता।
जग अल्पज्ञ बनाय क्यूं धर्मी, पापी जनमत मरता ।। १ ।।
इन्द्रजाली निज तन टुकड़ा कर बहु बिगर सुन्दरता।
उनसे अजब तेरी बाजीगरी, अखण्ड रहे नहीं डरता ।। २ ।।
भासे दिव्यत को दिव्य मीत रिपु भावी भरमा फिरता।
भूले बिना टुक भूल भुलैयां हो नहीं खेल चतुरता ।। ३ ।।
अल्प शक्ति जीव विशेष ईश्वर अधम उधार अवतरता।
बैर भावी को मार, दे मुक्ति, प्रेमी का दुख हरता ।। ४ ।।
खोज करे नही मूल की नाना मतवादी हो लरता।
जाति कर्म पतिव्रत दया सुध भोज से भवनद तरता ।। ५ ।।
कीच फँसे कूं खींच निकारे दीन दयालु सतबरता।
दर्जी नाथूराम कृष्ण भजे लख चौरासी से टरता ।। ६ ।।

भजन नं० १९

श्री मन् नारायण श्याम, विष्णु बनवारी ।। टेर ।।
हिरण्यगर्भ विराट पुरुष शिव शक्ति, गणपति राम, सहसकलाधारी ।। १ ।।
केशव कमलाकंत कन्हैया, कल्कि कृष्ण कच्छ काम, केशी कंसारी ।। २ ।।
क्षीर सांई गरुड़ासन गोविन्द गोपाल गुणग्राम ज्ञानी गिरधारी ।। ३ ।।
चक्री चक्रपाणि चतुर्भुज चिदानन्द घनश्याम छबीला अघहारी ।। ४ ।।
जगन्नाथ जगदीश जनेश्वर जानकी जीवनधाम, जीव रहु धारी ।। ५ ।।
टीकम ठाकुर डाकुर देवा दामोदर बलराम, दाऊ हलधारी ।। ६ ।।
धर्मधुरी धन पाणि धराधर नृसिंह प्रभुता राम, पृथु उपकारी ।। ८ ।।
नाथूराम भगवान माधव पापी-पावन नाम मुद मंगलकारी ।। ८ ।।

भजन नं० २०

सच्चिदानन्द जोह ले, झूले फूले रग हिंडोले ।। टेर ।।
एक ही चेतन सार आधारा, जड़ बाकस माया विस्तारा,
भेद बणगटी बहु नर नारी, आय किलोले रे ।। १ ।।
शक्ति अल्प विशेष दिखावे, जीव ईश्वर सो कहलावे,
विज्ञान पलने फिरे चहुं डोलर, त्रिगुण मचोले रे ।। २ ।।
टूट फूट जग झूला सुधारण, अवतरे विष्णु भगतां कारण,
चतुर पदारथ भोग, भरम का परदा खोले रे ।। ३ ।।
सियाराम हो रखी मरजादा, राधाकृष्ण करी लीला ज्यादा,
रहस्य समझ धरो ध्यान राई के पर्वत ओले रे ।। ४ ।।
दर्जी नाथराम कन्हैया, झूला झुलैया फाग खिलैया,
दुष्ट दमन मेरी नैया खेवैया, घट घट बोले रे ।। ५ ।।

भजन नं० २१

कव्वाली

कृष्ण अब तो सुनो, नहीं राधिका से मै करू अरजी ।
दीन दुःख भंजनी दुर्गा करे जन जान के मरजी ।। टेर ।।
नहीं है कम विश्वराज्ञी अष्ट पटराणियां पूजे ।
राज अर्धांगिनी लीला अंस क्या लोक जग सरजी ।। १ ।।
विधि को हुकम नकल अम्ब की नजर सेती कर दिखलाऊं ।
हँसे शारद पढे मिसलां तुच्छ झगड़ा की नहीं सूझी ।। २ ।।

विश्वम्भर नाम पर दावा लगाऊँ हक सफा पूरा।
कुड़क करूँ ना खजाना पै कढाऊँगा भरे गरजी ॥ ३ ॥
प्रेम वकील कैद वारा नजीरां पापी पावन को।
हुवा इकबाल पतित पावन ऊबरे जब नाथू दरजी ॥ ४ ॥

भजन न० २२

राग माज

शिक्षा देवण श्रीकृष्ण रचे रास ॥ टेर ॥
ब्रह्म बीज रूप वृक्ष विश्व प्रकाश।
विश्व वृक्ष माहीं वासुदेव बीज खास ॥ १ ॥
आपी गोपी गोप बने वृन्दावन वास।
लजे लख रति पति प्रभु का विलास ॥ २ ॥
शरद पूनम चन्द निशि में उजास।
शीतल सुगन्ध मन्द पवन सुबास ॥ ३ ॥
नारी सहित देखे इन्द्रादि आकाश।
गोपी बन शम्भु नाचे तज कैलाश ॥ ४ ॥
बाजत मृदंग मुरली मधुर हुलास।
गावत राग माज सोरठ भीमपलास ॥ ५ ॥
विषय विरक्त ब्रह्मानन्द षट्मास।
राधा रमण लीला गाई मुनि व्यास ॥ ६ ॥
नाथू दर्जी बरणे सुन इतिहास।
भजो योगी श्याम लख मिटे भव त्रास ॥ ७ ॥

भजन न० २३

गजल

अब तो हरि हिन्द में, आना पड़ेगा, बिगड़ी दशा को बनाना पड़ेगा ॥ टेर ॥
हो अल्पज्ञ जग सर्वज्ञ स्वामी, अपनों को आपा सुझाना पड़ेगा ॥ १ ॥
भवसागर मरजादा सेतु, टूटी सारी बनाना पड़ेगा ॥ २ ॥
विषयाशक्ति में अधे दृग ज्वाला, शिक्षा दवा से मिटाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
वक्त के फेर से होता ही जाता, खेल की खूबी दिखाना पड़ेगा ॥ ४ ॥
कलिमल हारो कपिला पालने, कल्कि रूप धरना ही पड़ेगा ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, सत का झण्डा जमाना पड़ेगा ॥ ६ ॥

भजन न० २४

आरती जगदम्बा की

जय जननी ज्वाला।
जीवन ज्योति जगदम्बा जगती दीप माला॥ टेर॥
सत चित आनन्द रूपा शक्ति सिद्धि शाला।
कला सोलह सिणगारी सुन्दर नित बाला॥ १॥
पूरण परम प्रकाशी प्रेमी प्रीतपाला।
परमेश्वरी श्रीपाढा पान पीयूष पाला॥ २॥
मणिमय माया मोटी मकरी ज्यूं जाला।
अपति विराट में उद्भिज दूरे जग ब्याला॥ ३॥
अहि गनपति विधि हरिहर रवि शशि दिग्पाला।
वीर जोगिणी दिति तारा भैरव वैताला॥ ४॥
लक्ष्मी लाड़, लड़ाली लाभ लली लाला।
नृप सुधर्म बताणी शारद पथ घाला॥ ५॥
मानुसता सुर उज्ज्वल पशुता असुर काला।
करम जोग नर नारी उर संचा ढाला॥ ६॥
हंसासनी गरुड़ासनी सिंह चढी कराला।
भगत उबारे निशिचर मारे धर भाला॥ ७॥
पूत कपूत दयालो जोय विरद कृपाला।
नाथू दर्जी अर्जी आरती कर वाला॥ ८॥

भजन न० २५

राग विणजारो

श्री पाढा परमेश्वरी थारो यश छायो जग सारो, करके मेहर पधारो॥ टेर॥
महिषासुर संहारणी सुर तेतीसों तेज की राशि।
प्रगट भई जगदम्बा भवानी मणि दीप की वासी।
सब देवन को दुख निवारो॥ १॥
जनम जसोदा उर बा कंस कर छुट बीज सी चमकी।
विन्ध्याचल पर जाय विराजी दे दाना को धमकी।
शुम्भ निशुम्भादि करणी संघारो॥ २॥
पूज गोपिका रुक्मिणी अम्बा श्रीकृष्ण वर पाया।
विक्रम भज चामुण्डा चण्डी चकवे सम्वत चलाया।
तू ही चमकायो चवाणां को सितारो॥ ३॥

भैंसा शाह हित प्रगटी सर में लूण रजत का कीन्हा।
पुर डीडवाना कोट मांय मन्दिर में दर्शन दीन्हा।
सजे सिणगार सिंहवाहिनी प्यारो ॥ ४ ॥
धुकल गडदी भई जब रक्षा तू ही पुरजन की कीन्हीं।
मेरी बेर अबेर देर क्यों घोर नींद मां लीन्हीं।
जागो जगदम्बा जन जीवन सुधारो ॥ ५ ॥
नन्दलाल गुरू ज्ञान दिए, गुण गावे नाथू दरजी।
अरजी सुण मरजी कर दुर्गा दिल दर्शन का गरजी।
दीनदयालो मोय शीघ्र उबारो ॥ ६ ॥

भजन न० २६

(राग—रस की बून्दा पड़े)

श्री कल्कि रूप भगवान, दर्शन दीज्यो हमें ॥ टेर ॥
सत तप दया बिलाये कब के, कीरत स्वारथ दान, किस विधि धर्म थमे ॥ १ ॥
जाति कर्म तज जग पर हुन्नरी, कुलीना कुल्टा समान, रति जन जन से रमे ॥ २ ॥
कपिला कसाई, कन्या कसाई, कलम कसाइयों का मान, धरा से न बोझा समे ॥ ३ ॥
गीता भागवत बीच कहे सो, चिन्ह मिले सब आन, कलियुग अन्त समै ॥ ४ ॥
विष्णु यश धर सुमति उर से, प्रगटे सम्भल स्थान, भृगुनन्द बोधे तुम्हें ॥ ५ ॥
देवापि मरु पै कृपा करे, उन्नत इन्दु स्थान, सत का झण्डा जमे ॥ ६ ॥
गरीब परवर, गोपाल, गुण्डारि, आवो ले तेज कृपाण, तुरंग चढ़ खमे खमे ॥ ७ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्ण लख, भक्तन जीवन प्राण, पुनि पुनि चरण नमे ॥ ८ ॥

भजन न० २७

लावणी रगत छोटी

कोई कहे कृष्ण गोपी लीला जारी है।
वो जारी नहीं शुद्ध प्रेम की फुलवारी है ॥ टेर ॥
जो एक से दूजा सती जन तके अघ भारी है; तो क्यों नियोग प्रसूती प्रचारी है।
जारी धन जोबन लुभ बल छलगारी है; जन जन से रमे मतलब ले तजे यारी है ॥ १ ॥
धन जोवन बस खर खाजन अहंकारी है; उपकारी से लड़ भ्रष्ट होय ख्वारी है।
गये शूर्पणखा रावण से धिक्कारी है; ना बचे गुप्त गणिका खल मत हारी है ॥ २ ॥
श्रुति धर्म नीति जवानों के सिर सवारी है; ना बालक सज्जन रति विधि गति
अनुसारी है।
खेल बींद बीनणी शिशुपन में कंवारी है; क्यों राधे श्याम का रास कलंककारी है ॥ ३ ॥

पिव से ज्यादा रहे मित्र यावगारी है; इस भाव भजन हरि मुनि बने वृजनारी है।
कहीं एक गई दोय मिली गेंद चोली द्वारी है; वो भोली उमर बोली लगती प्यारी है ।।
पट माखन चोर मही लूटा गिरधारी है; प्रीति विरक्ति पारख खल भयकारी है ।। ४ ।।
एक एक गोपी संग एक एक बनवारी है; किए जमना तट रास खेल आनन्दकारी है।
खुद आए सखी बन खेलत मदनारी है; दर्जो नाथू वह कोटि मुक्तवारी है ।। ५ ।।

भजन नं० २८

(राग सारंग)

प्रभु मो पे अब तो होवो राजी; सजाई ज्यूं ही हाजरी साजी ।। टेर ।।
सर्व ही शक्तिमान ज्ञात धन शून्य पर रहा विराजी।
पूर्ण कला सम सुधा पचन करो लीला विस्मयी लाजी ।। १ ।।
हम कठपुतली तुम सूत्रातम सर्वाधार स्वराजी।
नाथ नचाए ज्यूं ही नाचे नव रस तान अवाजी ।। २ ।।
वहु रूपा का धन्धा समाया तेरी खुशी के काजी।
वेस चौरासी लख बर बर धर आणे तेरे दरवाजी ।। ३ ।।
ना दिव्य दृष्टि धन बल कुल गुण दुखी किया मैं हो ताजी।
फिर भी चाऊं भक्ति बने ना हिम्मत हार तजी बाजी ।। ४ ।।
लखु दरकास करी दफ्तर दाखिल ये क्या ठग बाजी।
आन भाँत भगवान बनो मत लक्ष्मी मान मिजाजी ।। ५ ।।
दुर्बल बाल के जोर रोने को औरन को ही उस्ताजी।
मायत अपनायत कर पाले प्रचलित प्रीत निवाजी ।। ६ ।।
नाथू दर्जी को दिखलावो कृपा गरीब निवाजी।
नींतर दीन दयालु थारो बिरद जायगो लाजी ।। ७ ।।

भजन नं० २९

काची काया को काईं गरूर करो रे।
गरूर करो रे मगरूर करो रे ।। टेर ।।
मन मेलाई, तन छेलाई, क्यों गेलाई फितूर करो रे ।। १ ।।
माटी से उपजी माटी में मिलसी, मत स्वास रतन को धूर करो रे ।। २ ।।
खांना सोना भोग भोगणा, इन दुर्मति को दूर करो रे ।। ३ ।।
कर से दान पावों से तीरथ, मुख से ध्यान जरूर करो रे ।। ४ ।।
इस ससार में सार है यो ही, हरि सुमिरन भरपूर करो रे ।। ५ ।।
नाथू जो चावो परम गति तो, कहना हमारा मंजूर करो रे ।। ६ ।।

भजन ३०

राजी रही जो जी राजीव नैन, राधारमण सदा ।। टेर ।।
आनन्द कन्द दिव्य रूपातम शक्ति सब सुख चैन।
दीप अंजन दम्पति निरंजन ज्यू रवि शशि रति मैन।
मुक्ति परम पदा ।। १ ।।
लीला बिहारी लीला बिहारण हो श्री नारायेण।
ब्रह्म कमठ शिव भूषण सुन्दर शेष सैया करो शयन।
साईं खीर नदा ।। २ ।।
विश्व करण कोड़ी से कोट व मधु भए विधि दुख देन।
धरे चतुर कर कंज मधुसूदन विष्णु विश्वकसेन।
शंख धनुष कर गदा ।। ३ ।।
फिर त्रिगुणातम रचे जगत ज्यू नीर बुदबुदा फैन।
बिगड़े खेल सुधारो ओतर सज पट गहणा मृदु बैन।
केशर मृग मदा ।। ४ ।।
होन मुकत अविकार अनादि जग करमवादी जैन।
दर्जी नाथूराम को रचना पतित पावन दिन रैन।
भजिए बांकी अदा ।। ५ ।।

भजन न ३१
माता जी की स्तुति

पाढुला थारी काई या मर्जी ये, लीला जग करो इचरंजो ये ।। टेर ।।
सत चित आनन्द रूपणो ए, अम्बे मैया पुरुष प्रकृति मूल।
वृक्ष ज्यूं सृष्टि सरजी ये ।। १ ।।
उलट पुलट निर्धन धनी ए, भवानीमैया, राव रक गिरि धूल।
करत कोई सके नहीं बरजी ये ।। २ ।।
तू ही ब्रह्माणी शारदा ए, भवानी मैया, तू ही कमलाकर फूल।
भगत की सुनो नित अरजी ये ।। ३ ।।
तू ही महागवरी कालका ए, भवानी मैया असुर सहारो धर शूल।
दासन की पूरो गरजी ये ।। ४ ।।
दीन दयालु कृपा निधि ए, भवानी मैया, कैसे रहो हो भूल।
चरण रो चाकर नाथू दरजी ये ।। ५ ।।

भजन न० ३२

अष्टपदी

दुख भजन सुख दाता समझ भज नटवर छैला ने, करण जग खेला ने ॥ टेर ॥
बिन कर्ता होन कारीगरी है तो क्यू घड़े माटी का ढेला ने।
किस स्वारथ परमारथ तजे से सानन्द डेला ने ॥ १ ॥
जीव प्रकृति माया भिन्न माने ईश्वर अलबेला ने।
लगे पाप किए काल कोठड़ी, मे बन्द पेलां ने ॥ २ ॥
नहीं आवड़े ठाला बैठां चेतन ब्रह्म अकेला ने।
बहु बनने भिन्न रहे न सीधो गुण लागे फेला ने ॥ ३ ॥
सामग्री कारीगरी विधि हरिहर करतब चितबेला ने।
आप ही उद्भिज स्वेदज संचा खर्च न धेला ने ॥ ४ ॥
झेले लुभ कर भरम भरम कामादि करम झमेला ने।
ले नर नार उर अंडज जरायुज भोग का थैला ने ॥ ५ ॥
लख जग करम अनादि कटण सारी संगी करे बेलातेला ने।
पाय दुर्गति नींद बालजती कृष्ण न हेला ने ॥ ६ ॥
बिगड़े खेल सुधारे औतर ज्यूं धोय गंग अंग मेला ने।
खेल ही से खल हत दिखाय तत न्यारा भेला ने ॥ ७ ॥
नन्दलाल गुरु ज्ञान दियो सत वर्जा नाथू चेला ने।
सम ज्ञानी को सेवा सुझावे मुक्ति का गेला ने ॥ ८ ॥

भजन न० ३३

माता जी की स्तुति

पाढुल माँ मोरी, जाऊँ बलिहारी थारा रूप पे ॥ टेर ॥
सत चित आनन्दकन्द भवानी आतम ज्योति रूप।
कोटि रवि शशि लाजे छवि लख सुन्दर-चाँदनी धूप।
सब ही शक्तिमान ज्ञानघन बने तू ही प्रजा भूप।
तू ही बने प्रजा भूप विश्व लीला करे।
बिगड़े खेल जब तू ही प्रगट संकट हरे ॥ १ ॥
सुर नर असुर चराचर सारा होय गुणां अनुकूल।
अल्पज्ञता से देह घमण्ड कर मूल तत्व जाय भूल।
भूल भुलैया का यह तमाशा देख रहा जग फूल।
देख रहा-जग फूल सदा जन्मे मरे।
जगदम्बा को ध्याय सोही भव से तरे ॥ २ ॥
जग जननी जगदम्ब भवानी तेरी ज्योति अखण्ड।
शुम्भ-निशुम्भ महिषासुर मारे बन काली चामुण्ड।

भगतां की रक्षा कई बार दे दुष्टां ने दण्ड।
दे दुष्टां ने दण्ड देव सब ध्यावता।
नारद शारद आदि वेद यश गावता ॥ ३ ॥
बावन वीर जोगणी चौसठ भैरुं गोरा काला।
सजे सात विख्यात मात के हाथ शूल असि माला।
दानव देव डराय सन्त जन फेरे तुम्हारी माला।
फेरे तुम्हारी माला ज्वाला तू बड़ी।
नाथू जन की सहाय सदा करो सिंह चढी ॥ ४ ॥

भजन न० ३४

माता जी की स्तुति

पाढ़ाय माय मोरी तुम आय सहाय कीजो ॥ टेर ॥
सब विश्व की महतारी, बिगड़ी बनाने वारी।
क्यों देर हमारी बारी, सुधि शीघ्र अब लीजो ॥ १ ॥
शुम्भ निशुम्भ घमण्डी, महिषासुर चण्ड अफण्डी।
खल मारणी रण चण्डी, जुग जुग आप जीजो ॥ २ ॥
सर कोट मॉय विराजी, पुर डीडवाना मांह जी।
निशिदिन ध्याऊं राजी, जन जान मो पै रीझो ॥ ३ ॥
करता है नाथू दर्जी, पुनः पुनः यह अर्जी।
शुभ दृष्टि का है गर्जी, दिव्य ज्ञान भक्ति दीजो ॥ ४ ॥

भजन न० ३५

राग सारगा

माधव धन्य तेरा पाखण्डा; सरजो खेल विश्व ब्रह्मण्डा ॥ टेर ॥
ना दरसो कर्ता कारीगरी सामग्री यमदण्डा।
इन्द्रजाली स्वप्नदृष्टा से है प्रबल हतकंडा ॥ १ ॥
हाड़ मास का धड़ तन गोरे श्याम चाम से मन्डा।
भेद बणगटी यौवन लुभ करे सोलह बाद वितण्डा ॥ २ ॥
होत भरम को भरम करम कामादि देह घमण्डा।
ऋण चुकाने नर योग नारी उर नित नई छवि जर अण्डा ॥ ३ ॥
रहो मिलिया भिन्न पय माखन ज्यूं कभी ताता कभी ठंडा।
बिगड़े खेल सुधारो अवतर बल विशेष धर झण्डा ॥ ४ ॥
पूजो पुजावो दीन दयालु बन गिरि ठाकुर पन्डा।
सत कल्पों से अब तो फोरो अपने आप ही भंडा ॥ ५ ॥

सुन जारी दर छुपो भासो ज्योति रूप प्रचण्डा।
रवि शशि तारा चपला चमक ज्यों होरी दीवारी खण्ड खण्डा ॥ ६ ॥
सर्व ही शक्तिमान ज्ञानघन समतानन्द अखण्डा।
दर्जी नाथूराम कृष्ण को छाजे करे सोही अफन्डा ॥ ७ ॥

भजन न० ३६

काईं रे किरत करूँ रघुराई, राम जनम भयो जन सुखदाई ॥ टेर ॥
धन्य दशरथ कौशल्यादि माई, जाकी कोख त्रिलोकी सराई ॥ १ ॥
खोले खजाना धन समुदाई, चितचाही सोही पाई बधाई ॥ २ ॥
शकुन शुभाशुभ दीन्हें दिखाई, शंके असुर, सुर खुशियाँ मनाई ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम सदाई सुमिरत जन की करहु सहाई ॥ ४ ॥

भजन न० ३७
माता जी की स्तुति

पाढुला मैया नैया पार लगाय ॥ टेर ॥
भव सागर में बही जात है काल मगर डरपाय।
विषय हिबोला मांय डुबोवण तुम ही बचावो आय ॥ १ ॥
यद्यपि पतित हूं पतित पावनी तू जगदम्ब कहाय।
बिड़द जोय गज तारण हरि ज्यूँ तार मोय अपनाय ॥ २ ॥
शुम्भ निशुम्भ चन्ड महिषासुर हत करी जग की सहाय।
ज्यूँ ही सहाय करो मेरी भवनद सारा विघ्न हटाय ॥ ३ ॥
नन्दलाल गुरु दीनदयाला तुम को दिए बताय।
दर्जी नाथू की सुन अरजी आवागमन मिटाय ॥ ४ ॥

भजन न० ३८

करदे कृपा सागर सफल जीवन मुझ लहर को ॥ टेर ॥
यद्यपि हूं पापी सरनाम, पापी पावन तेरा नाम,
अवतरे मथुरा में घनश्याम कहायो जाकर गोकुल ग्राम,
छोटो नन्द महर को ॥ १ ॥
पूतना पूत नो रटती आई, पूतना जान के कुँवर कन्हाई,
गोदी विराज के धाय बणाई, गति माता की हरि बगसाई,
बोबो लेकर जहर को ॥ २ ॥

पूतना पथ के ही प्रताप, काटो कंसादिक के पाप,
गोपी जार भाव जपे जाप, ज्याने होरी खिलाकर आप,
दियो ज्ञानानन्द गहर को ॥ ३ ॥
कुब्जा चन्दन चर्च जरा सा, कूब निकाल रूप कमला सा,
करके पूरण करी प्रभु आशा, दर्जी नाथू करे अरदासा,
वासी डीडवाना शहर को ॥ ४ ॥

न० ३६
प्रभाती

ना जानूं जगदीश्वर तुम किस कर्म से होवो राजी रे ॥ टेर ॥
बच्चा बिल्ली का बचा अग्नि से ऋषभदेव देह दाझी रे।
नल, युधिष्ठिर, हरिचन्द, मोरध्वज, शिवि त्रास छवि छाजी रे ॥ १ ॥
बावुल द्रोही जन प्रह्लाद हित नरसिंह बन गयो गाजी रे।
श्रवण से सुत मरा दशरथ घर पुत्र भए सुर काजी रे ॥ २ ॥
पंचभर्ता को चीर वढायो, धर कर वेष बजाजी रे।
वेदवती सिये तजी नपा के, सुखी कियो रजक मिजाजी रे ॥ ३ ॥
हत्यो वालि छल से, सुग्रीव विभीषण कर स्वराजी रे।
हनुमान को तेल मिले फिर कर्ता कर हो ब्रह्मा जी रे ॥ ४ ॥
शूद्र तपत द्विज सुत मरे जिए दिए दण्ड आप सुराजी रे।
बलि पाताल, नृग को किए गिरगिट ऋषिकुल करणी लाजी रे ॥ ५ ॥
कण कण को भटकाय सुदामा की मेटी मोहताजी रे।
सुत मिस सुमिरत सुगति पाई अजामेल सो पाजी रे ॥ ६ ॥
छल से रम वृन्दा वन सालग करी तुलसी सरताजी रे।
रति हित जुर गड़ो गोपा हिवले, बेणु बाल यति बाजी रे ॥ ७ ॥
चातक ज्यूं आशा रख पिऊ पिऊ करता रहे आवाजी रे।
नाथूराम भरोसे आदत चोड़ें रसोई ताजी रे ॥ ८ ॥

भजन नं० ४०
शकापद

करम गति झीनी राम झीनी; कोई विरला ही साधु चीन्ही ॥ टेर ॥
परखन राम सिया वनी उमा, बन्ध्या मरणी जीणी।
तारा चन्द्र के जार पुत्र से चली प्रसूत कुलीनी ॥ १ ॥
अनुसूया के पतिव्रत तप से भये त्रिदेव अधीनी
वेदवती तप जली अग्नि में नर्मदा स्वर्ग रहीनी ॥ २ ॥

अजाण वृन्दा विष्णु संग से भई विधवा, तुलसी नवीनी।
गोपियाँ कृष्ण को जार भाव भजी ज्यांकी कछु न उमीनी।। ३ ।।
परशुराम प्रह्लाद मात पितु घाती शोभा लीनी।
मरे कुमौत मायत को सेवत श्रवण सुत लाखीनी।। ४ ।।
बाली नर्‌यो कुचालो सो ही सुग्रीव विभीषण कीन्हीं।
दोनो भोगे राज भोग, हनुमान चरण रज दीन्हीं।। ५ ।।
रोई बेवा हो तारा मन्दोदर एक पति या कीन्हीं।
फिर देवर वर कन्या कहाई, सो कहे कर्म कमीणी।। ६ ।।
द्विज सुत मरे शूद्र तप करतां मारे राम स्वाधीनी।
मतंग चेली के जूठे फल को, मानी जडो सजीणी।। ७ ।।
अग्नि तपा सिया बन में निकाली सोधी सती कदी नी।
पंचभर्ता को अम्बर बढ गयो गणिका मुक्ति लीनी।। ८ ।।
बलि पाताल नृग भयो गिरगिट हरिचन्द नीच को ऋणी।
स्वर्ग गए रावण दुर्योधन, बदी कर गद्दी नशीनी।। ९ ।।
नाथूराम श्याम के शरणें ये पद है प्राचीनी।
या पद को कोई करे सोधना सो ही आत्म प्रवीनी।। १० ।।

भजन न० ४१

गोविन्द बाल जती बाँको, सखियाँ कहे प्रेमी म्हांको।। टेर ।।
नरनारी क्लीव, अजीव सजीव, जग पिव विधि विष्णु शिव काको।। १ ।।
अद्वैत ठालो, बहु बण ख्यालो करे गुणसालो करमां को।। २ ।।
बड़े पाप ताप, शून्य भिन्न विलाप, करे पावन आप आ पतिता को।। ३ ।।
जल विष अंगार, पी ब्रज उबार, खल मार भार हरो वसुधा को।। ४ ।।
चुरा चीर अग, लखे नंग जंग, भ्रम द्वैत भग कियो गोपा को।। ५ ।।
रग फाग रास, झूलन विलास, मदनास ह्रास भयो मदनां को।। ६ ।।
खलित भै दरी, गुप्त इन्द्री, रति ना नींद री, अग कयां को।। ७ ।।
घर गऊ लाखन निरपद रोह राखन कियो मही माखन कोडां को।। ८ ।।
नए बच्छ गवाल, रच लिए गोपाल दिए गव गाल अजकर्ता को।। ९ ।।
कहे नाथूराम, श्रीकृष्णनाम, स्वरूप श्याम, कला सोला को।। १० ।।

भजन न० ४

साँवरियो नैना बसौ सइयाँ, ए जी मोये पल पल मै चित आवो साँवरा।। टेर ।।
ए री सिर मोर मुकुट हद सोवे, ए री बन माला मनड़ो मोवे,
पीताम्बर काछ कसो सइयां।। साँवरियो०।।

ए री बहा धनुष तीर ननां रो, ए री बारो जगांरो मैना रो,
हमारे हिये फंसो सइयां ।। सांवरियो० ।।
ए री वन मधुरी बेन बजाई, हाँ री मोये कर कर सेन बुलाई,
मेरे से खेलो हसो सइयां ।। सांवरियो० ।।
ए री वाके भाल तिलक चन्दन का, एरी मुख चन्द्र नन्द नन्दन का,
देखन है नाग डसो सईयां ।। सांवरियो० ।।
ए री विष नाग नेह मो चढ़्यो तन में,ए री बिन श्याम चैन नहीं मन में,
तपो धीरेनाटसोसइयां ।। सांवरियो० ।।
कहे नाथू बेद गिरधारी, सारी भजन पीर हमारी,
समरथ है वो ही एसो सइयां ।। सांवरियो० ।।

भजन न० ४३

आज तुम द्रौपदी की अरज सुणो बलबीर ।। टेर ।।
दुर्योधन रिपु अभिमानी, मेरी लाज गमानी ठानी,
दिया हुकम दुशासन बेपीर, खेंचत मेरा चीर ।। आज० ।।
मोये दुष्ट दुशासन घेरी, लायो पकड़ सभा बीच बैरी,
मेरी खेंचत साड़ी हो अधीर, करवा नगन शरीर ।। आज० ।।
रवि सुत गगासुत ठाड़े, कोई सत की बाणी न काढे,
भये पांचों परबस पति रणधीर, नहीं चले तदबीर ।। आज० ।।
हे कृष्ण द्वारकावासी, मेरी होत सभा बिच हांसी,
तुम बेग चढो मेरी भीर, होय कछ दलगीर ।। आज० ।।
करुणा सुन जादूराया, बन के बजाज चट आया,
जोड दिया चीर से चीर, ज्यु खुलीजे जल को सीर ।। आज० ।।
गज बल दस से शेर से हटियो, दस गज अम्बर ना घटियो,
दुर्जन को उतर्‌यो मुख नीर, धन्य सती की तकदीर ।। आज० ।।
गुरु नन्दलाल को ध्याता, दर्जी नाथूराम जस गाता,
सुण सजन होय सुखी शरीर, बहु दुर्जन के तीर ।। आज० ।।

भजन न० ४४

चेतन ये कृशता बहु धर जड़ जग आधारी है।
सो संताप वश दुखी होय मै ली अब शरण तिहारी है ।। टेर ।।
सर्व ही शक्तिमाना, रत सामाना, घड़े उपाधि नाना,
नामी पुरुष नारी है ।। १ ।।
देह मद भूल परमारथ, मोह अकारथ, ऋणाबन्ध विषय पुत्रारथ,
मर जावे गरब मंझारी है ।। २ ।।

बिरला आतमज्ञानी, दृढ निर्वानी, बांस अणी ज्यू ध्यानी,
खेले नट नटी हो सुघड़ खिलाड़ी है ।। ३ ।।
हौं तो भयो महापापी, पावन प्रतापी, शीघ्र ही सुणो विलापी,
लाखों की सुणी ज्यू अबमम बारी है ।। ४ ।।
जोय बिड़द अपणायत, रखो हिमायत, तुम सब ही के मायत,
दर्जी नाथू की अर्जी प्यारी है ।। ५ ।।

गायन न० ४५

सब हिन्द वासी जागो गवां पुकार रही है ।। टेर ।।
गौघाती था विदेशी, होई खराबी कैसी अब क्यूं अनीत बेसी,
फिर भी चला रही है ।। १ ।।
तृण खाय दूध देवूं, जण बैल जस लेऊं, मरके भी चरण सेऊं,
गुण क्यूं बिसार रही है ।। २ ।।
हिन्दू मुस्लिम भाई, पोषूं सबे ज्यूं माई, मेरे ना भेद राई,
अर्जी गुजार रही है ।। ३ ।।
गऊ वश घटता जावे, घी दूध निठता जावे, बल ज्ञान मिटता जावे,
नरता सिधार रही है ।। ४ ।।
गौ-हत्या करणी छूटे, कर्ता खुशी होय तूठे, आनन्द का घन बूठे,
श्रुति उचार रही है ।। ५ ।।
कहता है नाथू दर्जी, पूरो गवां की गरजी, हट जावे सारी हरजी,
कोर्ट अख्त्यार रही है ।। ६ ।।

भजन न० ४६

पिया जानकी ने जान जान जान जानकी ।। टेर ।।
थारे बीस कहीजे कान, तो भी बहरो है नादान,
तुझे नांय सुणीजे मोरी बात ज्ञान की ।। १ ।।
थारे बीस नन दशकन्ध, तो भी हो रया महा अन्ध,
तुझे सूझे नाही घर लाभ हान की ।। २ ।।
थारे बीस भुजा है श्याम, युद्ध में एक न आवे काम,
कट कट शाखा ज्यूं खिर जासी लग रघुवर का बान की ।। ३ ।।
गावे नाथूराम जस जोर, बहु समझायो नार मनोर,
रावण पंडित हो गयो ढोर माया क्या भगवान की ।। ४ ।।

भजन नं० ४७

प्रभाती

गरीब परवर गिरवरधारी नित गरीब की सहाय करे ॥ टेर ॥
संसारी स्वारथ के साथी, दुर्बल से न कोई काज सरे ।
उल्टी आफत दे सेवा की, परहित कुण रणखेत लरे ॥ १ ॥
धर्मवीर दधीचि शिवि से विरला पराइ मौत मरे ।
सो प्रभु रूप मिले प्रभु में कवि जस गा छन्द में जोर धरे ॥ २ ॥
निर्धन सुदामो कण-कण खातर भटक्यो बापुरो सबके घरे ।
दीनबन्धु की कृपा भई जब कनक धाम सिर चमर ढुरे ॥ ३ ॥
टूटी छान नरसी का डेरा, नानी बाई लख जी में जरें ।
वे ही समधी सम्मान किए बहु जब सॉवरियो भात भरे ॥ ४ ॥
निकमां ने पूरे तन बस्तर देह भाग दुख भोग्यां सरे ।
नाथूराम कृष्ण के शरणे नैया भव नव पार तरे ॥ ५ ॥

भजन नं० ४८

दयानिधि तेरे क्या घाटो ?
सुणे न अरजी एक दियो क्यूं कानां के डाटो ॥ टेर ॥
राधा रमा करे पगचम्पी सब जग सन्नाटो ।
प्रभु पूरे सुर नर अजगर करि कीरी मुजब आटो ॥ १ ॥
सारे कई काज, भजन को कियो आटो साटो ।
होड़ करूं नहीं, पतित पावन तू सोच्यो परिपाटो ॥ २ ॥
सुत हित सुमिरत अजामिल को जम फदो काटो ।
आधो नाम लेत गज तार्‌यो, प्यादो ही न्हाटो ॥ ३ ॥
दानव अधिपति कोट खण्ड्यो सज बराह रूप धाटो ।
भू उधार गयो गऊ लोक रमे रास लगा जाटो ॥ ४ ॥
मेरे पाप की घृणा करे, अब फोरन मही माटो ।
ब्रज में घर घर छाने छपके माखन चोर चाटो ॥ ५ ॥
जूठा बेर भीलनी का खाया करमां को खीच खाटो ।
नाथू दर्जी दास तिहारो, कासे मन फाटो ॥ ६ ॥

भजन नं० ४९

सर्व ही शक्तिमान् चेतन ये जग करतारा है, कारज सारा है ॥ टेर ॥
ठाला बैठा आलस उड़ने गोरख धन्धा धारा है ।
मीठे नून नून पं मीठा सुख दुःख प्यारा है ॥ १ ।

सामग्री जड़ देह कारीगरी नाना चमत्कारा है।
सब में सत्ता तब अता पता तुक हारे न्यारा है ॥ २ ॥
छिप रहे माखन चोर चोर दिखलाए कई साहूकारा है।
हम खोजें लख चरण खोज रज अधम उधारा है ॥ ३ ॥
अहिल्या शिवरी कुबरी नृग से तरे पद परस तिहारा है।
अजामेल गति सुत भजते करी हमें ही उबारा है ॥ ४ ॥
ऐसे प्रभु को भूल मूढ मन तन मद होन सितारा है।
विषय धन सुत हित जालो ऋणाबन्ध खोय जमारा है ॥ ५ ॥
आरत नाथू दर्जी अर्जी करता बारम्बारा है।
दीनदयाल दिखा दे दृष्टि दिव्य दीदारा है ॥ ६ ॥

भजन नं० ५०

अब दुख हो गयो मोटो माधव, अब दुख हो गयो मोटो।
दीन बन्धु दुखिया के साथी दे चरनन को ओटो ॥ टेर ॥
भोगूं संकट निशिदिन जब से पड़्यो जन्म ग्रह खोटो।
धन बल कुल गुण हीन दीन भयो सभी तरह को टोटो ॥ १ ॥
बालपने गयो खेल भोल जोवन मद छली लंगोटो।
वृद्धपना लकुटी के सहारे, मिले दोरो सागर रोटो ॥ २ ॥
मन्द भाग्य दृग रोगी निकमो जोगी खुटो निघोटो।
यदि हूं पापी पावन तू कर खिड़ा पाप को कोटो ॥ ३ ॥
गरजी लरजी सरजी अरजी दरजी नाथू छोटो।
है कपूत तो भी मायत जोय अपणायत शीघ्र परोटो ॥ ४ ॥

भजन नं० ५१

बन्दौं श्रीकृष्ण भगवान पूरण ब्रह्म कहाने वाले ॥ टेर ॥
अक्षय वट दल वाला भोला, प्रभुता षट् अठ सिद्धि अमोला।
चित्रकार कलाधर सोलह, खेले खुशी आवे सो ही ख्याले ॥ १ ॥
सच्चिदानन्द मुकुन्द अखण्ड, जा के रोम कोटि ब्रह्मण्ड,
लीला लख मूढ वादवितण्ड, कर दण्ड पावे जाय यमाले ॥ २ ॥
खेले अन्ध खेल जगमूल, ठोकर खाय जाय दृग खुल,
मिटावे गुरु मुख सीस बण मूल, अपणा आपा आप सम्हाले ॥ ३ ॥
हो कई अशकला औतार करते करम विप्र हितकार,
सबका फल भोगण स्वीकार, स्वय बण आते श्रीगोपाले ॥ ४ ॥
जारी भाव भजे कोई बाम, ताके पति कूं बणा घनश्याम,
पूरे रमा रास रतिकाम, योगी श्याम जो रहे निराले ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम पियारे, सर्वाधार नंन के तारे,
सो क्यों चले अनीत अंधारे, जिनसे होते हिय उजियाले ॥ ६ ॥

भजन नं० ५२

श्री नारायण उदारा, बन्दौं पद बारम्बारा ।। टेर ।।
मणिमय महालक्ष्मी प्रतिविम्बा, तत नारायण अवतारा ।। १ ।।
गणपति हरिहर विधि नाना, मुख्य पंच नारायण माना,
श्री सहित रचन संसारा, बन्दौ पद बारम्बारा ।। २ ।।
हम अल्पज्ञ जीव विभूति, श्री नारायण प्रसूती,
तुम मगल मूल हमारा, बन्दौ पद बारम्बारा ।। ३ ।।
गुरु नन्दलाल करी मरजी, कथ गावे नाथू दरजी,
श्री नारायण आधारा बन्दौं पद बारम्बारा ।। ।। ४ ।।

भजन नं० ५३

ईश्वर इचरजी, करो नाटक जग यह कांई थारी मर्जी रे ।। टेर ।।
पद अद्वैत द्वैत बहु भावे जैसे सपना फर्जी रे ।
दृढ भाव से माने असत्य सत्य विषय गर्जी रे ।। १ ।।
धर्माधर्म गति भीनी चोन्ही ज्यादा की सुमति सर्जी रे ।
देय पापी सुखी उठावे धर्मी हर्जी रे ।। २ ।।
बलि पाताल नृग भए गिरगिट हरिश्चन्द्र नीच को कर्जी रे ।
मुक्त पूतना शिशुपाल आदि लख दिल लर्जी रे ।। ३ ।।
वाराह नृसिंह बावन राम कृष्णादि होज्यूं सर्जी रे ।
दिव्य विभूति खेल सुधारण सुण जन अर्जी रे ।। ४ ।।
कई पापी किए पावन फिर भी सके न कोइ बर्जी रें ।
तारो अजामिल गज ज्यूं पुकारे नाथू दर्जी रे ।। ५ ।।

भजन नं० ५४

माधव लाज उबारो, आज हमारो तुम सिवा कोई नहीं प्यारो ।। टेर ।।
गुप्त अंग पर नर एक देखत घटे पतिव्रत सारो ।
याते अनुसूया त्रिगुणातम को शिशु कर कियो सत्कारो ।। १ ।।
बहु पुर श्याम अग उघारण गणिका को लगे खारो ।
मै हूं कुलीन पर्दा बिन देखूं कैसे पशु व्यवहारो ।। ३ ।।
अद्वैत ज्ञाना रहे दिगम्बर पतिव्रत धर्म दुधारो ।
सीता अगन स्नान कियो तो भी धोबी तानो मारो ।। ३ ।।
वेदवती सिये ज्यूं मोह लाया लदसो बिणज तिहारो ।
वो तो थी अर्धंग, तेरी हूं बहिन, तू चूनड़ देवारो ।। ४ ।।

डाकू चोर अनीति करे तो ले जन नृप को सहारो।
नृप अन्याय करे जब सती को तब तू ही रखवारो ॥ ५ ॥
दर्जी नाथूराम चीर में भयो प्रवेश अवतारो।
सभा बीच लाग्यो ढेर बसन को नीच खींच कर हारो ॥ ६ ॥

भजन न० ५५

हाँ धर्म नर जन्म को लाओ, ले नर नारायण पद पाओ,
प्रभु की प्रभुता पाय प्रभु को मत बिसराओ रे ॥ टेर० ॥
श्री नारायण की करतूती, विद्या धन बलराज विभूति,
जीव प्रसूति मय भ्रातृ भाव हिलमिल बरताओ रे ॥ १ ॥
बाँट खाय वैकुण्ठां जावे, कृपण इकलखोर दुख पावे,
चोर जार हिंसक पापी पग यमपुर धाओ रे ॥ २ ॥
घासारी कांसारी भिन्न भिन्न पीवे जल जीभ होठ से
निशि दिन,
वन पशु पक्षी पाप कजूसी फल क्यू खाओ रे ॥ ३ ॥
दर्जी नाथूराम कृष्णादि, शिक्षा सनातन धर्म अनादि,
धारण कर मन नीति युक्त गोविन्द गुण गाओ रे ॥ ४ ॥

भजन न० ५६

हमारी बारी देर करी क्यों मुरारी ॥ टेर ॥
अगणित भक्त पतित जन तारे पूर्व नाथ अपारी।
ध्रुव प्रह्लाद सुग्रीव विभीषण कृपा करी रखवारी ॥ १ ॥
भारत में खग अण्ड बचाए द्रुपद सुता के चीर बढाए।
गज की बेर पयादे धाए छोड गरूड असवारी ॥ २ ॥
टोटा सुदामा जी का मिटाया, कबीरा के घर बालद लाया,
नरसी जी का भात भराया हुण्डी सिकारी ॥ ३ ॥
सैन के काज बने हरि नाई, रैदास के गंगा आई,
धन्ना की खेती निपजाई बिना बीज बनवारी ॥ ४ ॥
अहिल्या गणिका आदि लुगाई, अजामेल और सदन कसाई,
ऊमर कैदी छूट्टी पाई केवल कृपा तुम्हारी ॥ ५ ॥
नामदेव पर पूरी मर्जी, छान छवाय भई सब गर्जी,
उसी वंश में नाथू दर्जी, करते जन्म गुजारी ॥ ६ ॥

भजन न० ५७

विन धोये पद धरो गुसांई जी।
म्हारी नाव ने डुबावोला कांई जी ॥ टेर ॥
या पद रज महिमा हम जानी, हो जाय शिला की नांई जी ॥ १ ॥
निज कर लेऊँ चरणो-दक प्रभु कुल तारण के तांई जी ॥ २ ॥
वरज सके ना पूर्व ज्यूँ लक्ष्मण, आज हमारी डांई जी ॥
दर्जी नाथूराम भगत लख, मगन भए मन माहीं जी ॥ ४ ॥

(नोट —यह पद लका विजय के पश्चात् लोटते समय केवट द्वारा कहा गया है। यद्यपि भगवान पुष्पक विमान मे थे, तथापि केवट के लिए ही वे वहाँ उतरे और सीताजी ने गगा से विनती की।)

भजन न० ५८

गोकुल चलने की ठहराई ॥ टेर ॥
बेड़ो हथकड़ी खुल गई सारी, पट खुल गए घहराई।
चौकीदार सब भये अचेत, निद्रा की गोद समाई ॥ १ ॥
श्रीकृष्ण को रूप देख आनन्द छटा लहराई।
जमुन प्रवाह निरख मन सोचत वसुदेव राई ॥ २ ॥
आदि पुरुष को चित कर मन में पेंठे जमुना मांई।
ज्यूं ज्यूं चाले त्यूं त्यूं जमुना पग पग ऊँची आई ॥ ३ ॥
नीर अथाक, नाक तक आयो, जब काया घबराई।
कृष्ण बढा पग दी हुंकारी, चरण छुवत सकुचाई ॥ ४ ॥
पहूंचे भीतर नन्दजी के द्वारे खुली पोली पाई।
भई कन्या सूती जसुमति ढिग, कीन्हीं या चतुराई ॥ ५ ॥
कन्या उठा सुला बालक को पीछे चले सिधाई।
निज घर आवत जगे पहरायत, कंस को खबर पठाई ॥ ६ ॥
निर्दयी कस पछाड़ी कन्या, विजली सी चमकाई।
कस रिपु गोकुल में पूग्यो सके ना उन्हें मिटाई ॥ ७ ॥
अद्भुत लीला जग मे कीन्हीं, सुर नर मुनि सराई।
दर्जी नाथूराम कृष्ण जी पूरण कला दोऊँ भाई ॥ ८ ॥

भजन न० ५९

(श्री जानकीनाथ, नागोरिया मन्दिर)

दर्शन जानकीनाथ खरारी को।
करो नित अद्भुत लीलाधारी को ॥ टेर ॥
खुद अविकारी कहावे, वहु वन जावे, राव को रक बनावे,
मान बढावे भिखारी को ॥ १ ॥

पुर डीडवाना अन्दर नागोर्‌यां मन्दिर दिव्य सुन्दर चन्दर
भानु किरण उजियारी को ॥ २ ॥
दोनों तरफ तिबारा, दक्षिण द्वारा, बली हनुमत रखवारा,
कनक खम्भ पन्नीगारी को ॥ ३ ॥
चौबीस खम्भ विशाला, सभा मण्डप आला, चित्र निराला,
उज्ज्वल भवन धनुर्धारी को ॥ ४ ॥
मणिमय श्री रघुराई, लक्ष्मण भाई बाएँ सिया सजाई,
सोहे पट भूषण हार हजारी को ॥ ५ ॥
वेद विधि से सेवा, रिझावे देवा, बंटे प्रसादी मेवा,
होवे गुण गान बनवारी को ॥ ६ ॥
श्री महन्त तपोव्रतधारी, गुरु अधिकारी बालमुकुन्दाचारी,
छायो यश पूरण अवतारी को ॥ ७ ॥
नन्दलाल गुरूवर जी, कीन्हीं मर्जी पद कथे नाथू दर्जी,
गायां सिध कारज नर नारी को ॥ ८ ॥

भजन नं० ६०

सुणो हम दीन बन्धु बनवारी हैं, आरत अरज श्रवण प्रणधारी हैं ॥ टेर ॥
पुरुषारथ पुन्य करणो, वेद में बरणो, आखिर हरि को शरणो,
निराधार आधारी है ॥ १ ॥
रुक्मिणी रानी तेरी, पिव क्यों देरी, लज्जा द्रौपदी केरी,
राखोना वह रही पुकारी है ॥ २ ॥
प्रभु कहे अर्धंगी, अभी क्या तंगी, हूं दुर्बल का संगी,
दांतों निज पकड़ी सारी है ॥ ३ ॥
तन का पट फटतां हीं, वसनां माहीं, भए प्रवेश कन्हाई
नीच खींच गयो हारी है ॥ ४ ॥
चीर चुरैया बजाजी, यूँ ही हो राजी, मेहता नरसी का जी,
भात भर्‌या हो आभारी है ॥ ५ ॥
गज ग्राह से लड़ हार्‌यो, कुटुम्ब बिसार्‌यो, अर्धनाम उचार्‌यो,
भाज्यो तज गरुड़ सवारी है ॥ ६ ॥
दुखिया नाथू दर्जी करता अर्जी भक्ति ज्ञान का गर्जी
फर्जी मानो तो मर्जी तुम्हारी है ॥ ७ ॥

भजन नं० ६१

प्रभु लाखों को तार दिए, विलम्ब क्यों मेरे लिए ॥ टेर ॥
हिरणाकुश तव कर मर तरिया, जीवन मुक्ति लिए ॥ १ ॥

शत गाली शिशुपाल दे उधरे, रावण चुरा सिये ।। २ ।।
मार पूतना माँ गति दीन्ही, आँचल जहर पिए ।। ३ ।।
अहिल्या कुब्जा नृग गति पाई, खुद चरणों से छिए ।। ४ ।।
तप्त अलाव में बिल्ली के सुत, तेरी दया से जिए ।। ५ ।।
मगर मार तार गज डूबत, निज दरपाल किए ।। ६ ।।
सुत नारायण रटत पतित के, यम फन्द काट दिए ।। ७ ।।
नाथू दर्जी की सुन अर्जी, विरद विचार हिए ।। ८ ।।

भजन नं० ६२

अधम उधारो हरि, कोई बड़ी बात नहीं है ।। टेर ।।
कीच में फिसल पथिक फँस जावे, ताल में फिर फिर गुलची खावे,
देख दया नर जीवां न आवे, केवल बल ईश्वरी ।। अधम० ।।
ज्यादा पाप से मूढ हो जावे, हिय में शुद्ध भाव न आवे,
ईश कृपा से मिट जावे अविद्या की लय री ।। अधम० ।।
नाम से पत्थर तर गए बारी, पद रज शिला नार उधारी,
त्यारे पापी दीन अपारी, एकादशी सुरसरी ।। अधम० ।।
कुब्जा कीर किरात कसाई, रेगर महर जुलाहा नाई,
गज गनिका अजमिल रघुराई, किए छिन मांय बरी ।। अधम० ।।
दर्जी नाथू अर्जी गुजारे, निशदिन रावरो विरद विचारे,
शीघ्र लग जाय नाव किनारे, सकल झख मारें अरि ।। अधम० ।।

भजन नं० ६३
लावणी रगत लगडी

नहीं आवड़े ठाला बैठा चेतन बुद्ध अकेला ने ।
करे गोरखधन्धा विधि हरिहर करतब चित बेहलाने ।। टेर ।।
पुरुष प्रकृति हिरण्यगर्भ विराट विश्व सभी आप भया ।
बरनन करने कूं निरख सु अक्षर छन्द कवि आप भया ।
प्रभुता सिद्धि चित्र काव्य कला सोलह छबि आप भया ।
दिव्य आधा आधा कृष्ण राधा सम ससी रवि आप भया ।
बीज वृक्ष ज्यूं नाम रूप बहु ईश्वर जीव रमे खेला ने ।। करे० ।।
गौर श्याम तन जोर उलट सब ठौर चराचर नरनारी ।
लख भेद बणगटी भरम कर मनसा करमफल अधिकारी ।
मूल भूल प्रारब्ध स्थूल देह फूल शूल मग गति न्यारी ।
भूल भुलैयां खिलैया खेल कन्हैया अवतारी ।
बिगड़े खेल सुधारे खेल संग बिरला पिछाणें छैला ने ।। करे० ।।

इन्द्रजाली स्वप्नदृष्टा ज्यूँ अद्भूत है जिनकी माया।
वसुदेव देवकी यशोदानन्द तप कर पाया।
भादवा बद अष्टम बुधवारी रोहिणी नक्षत्र में जाया।
आधी रात कूँ भक्तजन आनन्द बधावा शुभ गाया।
शिशु लीला करी मुनि मन रंजन भजन असुर झमेला ने ॥ करे० ॥
शिव पिछाण लिए लोचन लावा ब्रह्मा परीक्षा कर पूजा।
इन्द्र घमण्ड कर बरस जल हारे जब गिरधर सूझा।
रति पति रंग रास के माही बाल जती सती बण जूझा।
नन्दलाल, गुरु ज्ञान दिए सत्य अद्भुत मिथ्या दूजा।
दर्जी नाथूराम कृष्ण भज तज बिन मत का गेला ने ॥ करे० ॥

भजन नं० ६५

प्रभाती

सांचो वीर बलि श्री बजरङ्ग, पीर पराई लख मेटे ॥ टेर ॥
तन मन धन परमारथ अर्पण, धन जननी ऐसे जणी बेटे।
नीतर वन्ध्या शीलसरी रहे, क्यूँ कामी नर संग लेटे ॥ १ ॥
सह न सके सुग्रीव विभीषण, वाली रावण के बेटे।
दूजा का दुख दूर करावण, श्री रघुवरजी से भेंटे ॥ २ ॥
दीन दयालु मारे मराये पापी असुरादि घेंटे।
सीता राघव लक्ष्मण जी के काज अनेक परेटे ॥ ३ ॥
फिर चौरासी नर देह पाई, आई स्यार ज्यूँ पक्की पेटे।
दर्जी नाथूराम भक्ति दे, रख प्रभु की छाया हेटे ॥ ४ ॥

भजन नं० ६६

मै तो अदा पै हो गई फिदा, पण श्याम के कोई असर भी नहीं ॥ टेर ॥
पिव पिव टेरे पपैया ज्यूँ गेरे, मेघवा बून्द अधर भी नहीं ॥ १ ॥
नैन चकोरा पल ही हटेना, चन्द्रमा जोड़े नजर भी नहीं ॥ २ ॥
दरस बिना तरसूँ नित बाला, श्याम के जी में फिकर भी नहीं ॥ ३ ॥
बन बन ढूढू मैन की माती, मिलता वो श्याम सुन्दर भी नहीं ॥ ४ ॥
नाथू के स्वामी अरीत करी क्यूं ममदिल मांय कसर भी नहीं ॥ ५ ॥

भजन नं० ६७

तू शठ राम को भूल रया क्यूँ, वो तो तुझे बिसरा भी नहीं ॥ टेर ॥
गरभ में भी वो रक्षा कीनी, उनका गुन सुमिरा भी नहीं ॥ १ ॥

बाहर आत कियो दूध सबाँ हित, पलभर भूखा मरा भी नहीं ॥ २ ॥
बालपने हँस खेल गमायो, जवानी में याद करा भी नहीं ॥ ३ ॥
वृद्ध समय तृष्णा बल डोले, ज्यादा तेरी ऊमरा भी नहीं ॥ ४ ॥
सहायक राम को भूल गयो, तो तेरे सम नुगरा भी नहीं ॥ ५ ॥
नाथू ऊमर विरथा खोई मूढ, हरि दण्ड तो उतरा भी नहीं ॥ ६ ॥

भजन न० ६८

चाल परी कुंजन की गली, तोये याद करी नट साँवरिया ॥ टेर ॥
सखी बार बार कहती पुकार, चट सार सार सिंगार सार,
शुभ बालबार मुक्ता सवार, चट चाल चाल मत कर अँवार,
श्याम मिलने कूँ उमावरिया ॥ १ ॥
कही मान मान मत करना मान, मेरी मान मान में नहीं है मान,
मान मान तेरा बढसी मान, उस मान मान में शुभ मान
कर निरखो नैन ब्रज रावरिया ॥ २ ॥
तज काम काम कर ओही काम, सरे काम काम पे गया काम,
मुख काम काम के जगो काम, इस काम बुलाने आई काम,
इस काम ही श्याम बुलावरिया ॥ ३ ॥
कहती हूं कर जोर जोर, कर जोर जोर सुन्दर मनोर,
मग जोवत चित्त माखन के चोर, कहे नाथू रटे तोये नन्दकिशोर,
मुख राधे राधे नाँवरिया ॥ ४ ॥

भजन न० ६९

मेरे पकड़ में आयो श्याम, अब नहीं छोड़ूँ ॥ टेर ॥
द्वारे द्वारे फिरे गोपियाँ रमणे फाग उमायो।
मन भावे ज्यूँ अश्लील गावे, चग बजाय सवायो।
महल माहीं रोडू ॥ १ ॥
सोलह आना जान गई मै, सोलह कला धर जायो।
में सोलह सिणगार संवारे, सोलह सुरग रंगायो।
नवल अंगन पर ओढ़ूँ ॥ २ ॥
चुन चुन कलियाँ सेज बिछाई हिंगलू ढोल्यो ढलायो।
रति माँगी सो ले मनसा भर क्यूँ मन मेरो लुभायो।
सग थारे पोढ़ू ॥ ३ ॥
लख मुख चन्द चकोर प्यार चख माखन चोर चित चायो।
खेलो कन्दुक कुच काचु बताए कैसे हरि सरमायो।
माटो रंग रस फोड़ूँ ॥ ४ ॥

बोले श्याम रस भेद न जाणूं बाल जती कहलायो।
तू जोबन मद छकी मोय क्यूं झालो देय बुलायो।
पाप मैं कैसे चोढूं ॥ ५ ॥
चोवा चन्दन मृग मद केसर अतर घोल रङ्ग लायो
दर्जी नाथूराम पियारो आनन्द रस बरसायो।
मिले दोय प्रेम मग दौड़ूं ॥ ६ ॥

भजन न० ७०

देर क्यों करते दीनानाथ, करो झट महर का झोला ॥ टेर ॥
निगम कहे राम है घट में, तो घट का पट क्यों ना खोला,
देते दरस क्यों नाहीं लेत हो कैसे जी छोला ॥ १ ॥
तुम्ही ब्रह्मा, तुम्हीं विष्णु, तुम्हीं हो शंकर भोला,
तुम्हीं भक्तों के हित में लिए अवतार कला सोला ॥ २ ॥
उमरियाँ बीती जाती है, जीरण होत है चोला,
सभी संकट भरा गागर हमारे सिर पै क्यों ढोला ॥ ३ ॥
हमें सन्तोष जभी आवे जीवन मुक्ति सुख दोला,
नहीं तो दास यह नाथू फिरत है भरम में डोला ॥ ४ ॥
बहा जाता हूं मझधारे, तेज भव सिन्धु की छोलों।
तेरे आसान सांवलिया लगायों पार सुख होला ॥ ५ ॥

भजन न० ७१

सतचित और आनन्द स्वरूप, जग जननी दिखलाय अनूप ॥ टेर ॥
जड़ माया व्याप रचो विश्व आप, किए पुन्य पाप, जगत के भूप ॥ १ ॥
दो तव भक्ति, शक्ति मुक्ति, दिव्य ज्योति जगती रही जूप ॥ २ ॥
सृष्टि जगदम्ब, मेरा अवलम्ब, मत कर विलम्ब तन पर्दे छूप ॥ ॥ ३ ॥
दिखला प्रकाश, करो मम घट बास, पूजन को दास लिए फल दल धूप ॥४॥
कहे नाथूराम तू ही राधेश्याम जपूं नित नाम, तारो भव कूप ॥ ५ ॥



समस्या पूर्तियाँ

कविवर नाथूरामजी मूर्तिमान् कविता थे। सोते जागते, उठते बैठते, चलते फिरते और खाते पीते वे कविता का ही ताना बाना बुनते रहते थे। उनके लघु भ्राता स्व० श्रीकृष्ण जी बड़े उदार-हृदय थे। उन्होने कविवर का भोजन वस्त्र का सारा खर्च स्वय वहन करना स्वीकार कर लिया था। कविवर गृहस्थ की चिन्ताओ से मुक्त थे, अत. कविता का चिन्तन करना ही उनका एकमात्र धन्धा रह गया था।

कविवर शौचादि, स्नान, ध्यान के पश्चात् सर्वप्रथम नागौरिया मन्दिर जाते थे। यह उनका नित्य का नियम था। वर्ष मे शायद ही कोई दिन बीतता जिस दिन वे भगवान श्री जानकीनाथ के दर्शन न करते। स्वामी जी श्री बालमुकुन्दाचार्यजी महाराज उनसे बडा स्नेह रखते थे और कविवर के भक्ति रस से ओत प्रोत भजनो को पूर्ण मनोयोग से सुनते थे।

मन्दिर से कविवर अपने अनन्य मित्र कविरत्न स्व० वृजलाल जी मिश्र (सेवक) के घर जाते थे और उनसे काफी समय तक साहित्य चर्चा करते रहते थे। स्व० मिश्र जी स्वय कवि थे और कविवर के साथ काव्य चर्चा करने मे बडे प्रसन्न होते थे। कविवर कई समस्याएँ सोचकर या सुनकर लाते थे और दोनो मित्र कविता बनाते थे। बहुत समय तक दोनो का यही कार्यक्रम रहता था।

वहाँ से कविवर अपनी लाठी टेकते टेकते, कई पद मौखिक रचते-रचते, समस्याओ के विषय सोचते सोचते स्व० नगराजजी लक्ष्मीनारायण जी जड़िया की बैठक मे आते और कई पद सुनाते, नए रचते, लिखाते और समस्या पूर्ति करते थे। कई कई बार भोजन वही कर लेते थे और बैठक मे ही आराम करते जाते तथा जँच गई तो घर के किसी भी व्यक्ति को पास बैठाकर रचनाएँ लिखवाते थे।

कविवर की अन्तिम बैठक स्व० रामकुमार जी मानधण्या की दुकान पर होती थी जहाँ वे घन्टों बैठे रहते थे। स्व० मानधण्या जी को भजनो का बडा चाव था, इसलिए वे कविवर से कई नए पुराने भजन सुनकर अपने मारवाड़ी हस्ताक्षरो से लिखते जाते थे। उनका वह सग्रह आज हमारे सामने उपलब्ध है और कई दुर्लभ भजन उसमे से प्राप्त हुए है। वह दूकान बीच बाजार मे होने के कारण कविवर की कविताएँ सुनने के लिए आगन्तुको का जमघट वहा लगा ही रहता था। खेद की बात तो यह है कि कविवर का सम्पूण साहित्य उपरोक्त तीनो स्थानो पर कही नही है, क्योकि उस समय सभी कुछ जबानी चलता था।

कविवर को जो भी विषय सूझता, उसी पर वे कवित्त, सवैया, छप्पय अथवा पद बनाने लगते थे। मौखिक या लिखित उनके लिए कोई मानी नही रखता था। कोई

रसज्ञ व भावुक व्यक्ति सामने बैठा होता तो वह लिख लेता था। स्व० मानधण्याजी के काव्य सग्रह मे निम्नलिखित कवित्त सुरक्षित है, जिसमे भगवान के प्रति व्यगोक्ति है। इस प्रकार के पद और कवित्त कवि ने असख्य रचे थे। ये अमूल्य रत्न बहुत कम सख्या में उपलब्ध है :—

(व्यग्य मे भगवत् प्रार्थना)

सुदामा का भात सूखा, विदुर घरॉ साग लूखा, भीलणी का फल बूका, भाव भूखा साँई है
साँचा जन नेह निहार दिखाए बहु चमत्कार अर्चावतार का प्रचार, लगे ताके ताँई है॥
ना रमेश घरॉ घाटो, करमॉ को खीच खाटो खायो चोर माखन चाटो, कृष्ण वृज मांई है।
नामदेव भोलो जान, तातो दूध कियो पान, उस कुल को नाथूमान, कृपा क्यू नॉई है।

उपरोक्त उद्धरण देने का तात्पर्य यह है कि कविवर का चिन्तन रात दिन चलता ही रहता था और वे स्वयं समस्याएँ खड़ी करके उनका समाधान समकालीन साहित्य प्रेमियो से कराते थे और स्वय भी एक समस्या की पचासो पूर्तियाँ जरा सी देर मे कर देते थे। एक बार १८८६ मे मुझे भी उन्होने एक समस्या दी और पूर्ति करने को कहा मैने कहा कि इस समस्या मे ग्राम्यत्व दोष है। उन्होने मान लिया। फिर मुझे मानस की बालकाण्ड की चौपाई का का अर्थ बताने को कहा। "रग भूमि जब सिय पगु धारी। रूप देख मोहे नरनारी।" मैने इस चौपाई का सीधा सादा अर्थ उनको बता दिया तो बोले कि उत्तर काण्ड की चौपाई है —"मोहे न नारि नारि के रूपा", उससे इसका विरोधाभास क्यो ? मै उस समय इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर न दे सका। उन्होने मुझे राय दी कि ग्रन्थो का गहन अध्ययन करने की प्रवृत्ति डालो।

यूनान मे सुकरात नामक दार्शनिक हो चुका है। वह प्रतिदिन युवको के सामने कई समस्याएँ रखता था। ज्ञान विज्ञान का कोई विषय उसके लिए अगम नही था। तत्कालीन समाज पर सुकरात का ऐसा प्रभाव पडा कि लोगो मे विचार-मन्थन की अच्छी प्रवृत्ति पड़ी और यूनान ने यूरोप के पुनर्जागरण मे महत्वपूर्ण भाग अदा किया। वही काम डीडवाना के लिए कविवर ने किया। अपने समकालीन साहित्य प्रेमियो को कविवर कसा हुआ रखते थे और उनको साहित्य चर्चा की अच्छी खुराक देते रहते थे।

उस समय जहाँ भी कवि सम्मेलन होते, कविवर अवश्य निमन्त्रित किए जाते थे और वे जाते भी थे। दि० ११-७-१९४२ तत्कालीन बीकानेर राज्यान्तर्गत बीदासर ग्राम मे एक वृहत् कवि सम्मेलन हुआ था जिसमे "कलि-कलि" नामक समस्या रक्खी गई थी। उसमे साठ के आसपास कविगण पधारे थे। कविवर नाथूराम जी भी अपने मित्र प० वृजलाल जी मिश्र 'कविरत्न' को साथ लेकर उक्त कवि सम्मेलन मे भाग लेने हेतु पधारे थे। जो कविताएँ वहाँ अच्छे स्तर की पाई गई, उनका संकलन 'कविकलरव" नामक एक पुस्तक मे किया गया, जिसका मुद्रण सुमित्रा प्रिंटिगप्रेस भिवानी मे हुआ तथा प्रकाशन श्रीमोहनलाल लोढा "ललितेश" मन्त्री, मित्र कवि सम्मेलन, द्वारा किया गया था। कवि सम्मेलन मे कविवर नाथूराम जी की कविता सर्वश्रेष्ठ पाई गई। उनकी रचना निम्नलिखित है :—

१

दुखी चकोरे पतग, होते लुभ अचाय सग, खर खाजी नेह ढग, लूटे सुख छलि छलि !
पारस परस लोहा हेम, करे कीट अलि प्रेम, सम प्रेमी पाले नेम, क्षीर नीर रलि रलि ॥
निर्धन से राखे रीत, सो सबसे श्रेष्ठ मीत, कृष्ण और सुदामा प्रीत शोभा बढी चलि चलि।
दर्जी नाथू वारी जाय, ऐसे मित्र को सराय, नाम लेतहि खिल जाय, हृदय कज कलि कलि ॥

२

श्याम से चतुर घाती, भेजी लिख योग पाती, विरह वियोग आग छाती, सुन जाती जलि जलि ।
क्या हो ओला डाले मेह, चातक ना छाँड़े नेह, देख सीपी आशा देह, भरि बूँदाँ ढलि ढलि ॥
रे रे तन मन कारा, स्वार्थी है प्रेम थारा, हट याँसे तू न प्यारा, त्याग जात छलि छलि ।
नाथू सुचिकार प्रीत, जो निभावे सो पुनीत, तू तो केवल रस चीत, भूम अलि, कलि कलि ॥

इस आशुकवि की सास सास मे कविता थी। एक बार सवत् २००७ के शारदीय नवरात्र में रात्रि के समय कविवर मेरे कन्धे पर हाथ रक्खे हुए पाढा माता के दर्शनार्थ जा रहे थे। रास्ते मे मैने पूछ लिया कि पाढा माता की कोई स्तुति उन्होने रची है या नही, ताकि देवी के सम्मुख ध्यान लगाते समय मानसिक पाठ किया जा सके। मैं उस समय सप्तश्लोकी का पाठ कर लिया करता था। कविवर ने तुरन्त एक सवैया मौखिक रच डाला और मन्दिर से लौटते समय रास्ते मे ही उन्होने मुझे याद भी करा दिया। वह रचना निम्न प्रकार है —

जय जगदम्ब तू मेरी है अम्ब तो दे अवलम्ब विलम्ब न कीजे।
मान ले, मान दे, शान न जान दे, ध्यान दे मो बिनती सुन लीजे ॥
दूषण दूर दुराय सभी वर भूषण मेलि अनन्दित कीजे।
नाथू छन्द प्रकाशन मे वर आसन मो रसना तल कीजे ॥

इसी प्रकार एक बार नागोरिया मन्दिर मे दर्शनार्थ जाते समय उनको किसी ने पूछ लिया कि क्या धर्म की स्थापना भगवान करते है और इसमे उनका क्या स्वार्थ है? कवि ने मन्दिर मे बैठ कर शीघ्र ही निम्न कवित्त की आशु रचना कर डाली और उपस्थित व्यक्तियो मे से जिन्होने भी यह कवित्त सुना, वे कवि की ईश्वर-दत्त प्रतिभा के समक्ष श्रद्धावनत हुए :—

बुध गुणाजड़ तुषार, स्वयभू विश्वकार, नभ ज्यूं चेतनसार, बिन बिरह व्यापे है।
मोड़ा वेगा करम फल, स्थूल मणियां गिरह गल, सूक्षम सुतरातमबल, मती गति अलापे है ॥
नरक सरग वन्द मुक्त, रोग भोग चोढ भुगत नाम निन्दा यश युक्त, मरजीवन जापे है।
वहू विगड़ वा ज्योति, नाथूराम कृष्ण मोती, लीला होती अनहोती, करे धरम छापे है ॥

डीडवाना के दानवीर सेठ साहब स्व० मगनीराम रामकुमार वागड परिवार से दान दक्षिणा नित्य ही वटती रहती है। "जिमि उदार गृह जाचक भीरा" के अनुसार प्रतिदिन सैकड़ो हजारो भिक्षुक उनके दान का लाभ उठाते है। कुछ उत्र वर्ण के लोग

भी, जो दान ग्रहण करने का अपना अधिकार मानते है, येन केन प्रकारेण दान लेने में सफल हो जाते है। चाहे वे षटकर्म में से पाँच कर्म नही करेंगे, परन्तु दान लेने का काम तो अवश्य करेंगे ही और दान की वस्तु कबाडने में अपनी सफलता मानेंगे। कविवर नाथू जी को यह प्रवृत्ति बड़ी अखरती थी। उन्होने एक महिला को लक्ष्य करके निम्न कवित्त लिखा, जो सेठ-सेठानियो के घरो मे फिर फिर कर, उनके घरो के विविध कामकाजो मे सहयोग देकर दान बटोरती रहती थी :—

रसोई की बेर झट भटियारी बन जावे, सेठाणी का माथा हित बण जाये नायणी।
सीवणे को काम पड़े दर्जी की नार होवे, टाबर जणाणे हित बण जावे दायणी।।
गारी गाल हूं की बेर पातर को रूप धरे, सेजां रमाणे हित बण जावे कामिनी।
नाथू कहे वे धिक्कार, बिराणी की लार लार, फिरती है द्वार द्वार निकम्मी नार बामणी।।

इस कवित्त से कुछ लोग क्षुब्ध हुए और कवि के साथ हाथापाई करने की सोची। कवि ने कहा कि तथ्यो के आधार पर ही कवित्त बनोया गया है। मैंने तो जैसा देखा है, वैसा ही लिखा है। मेरी तरफ से आपके घरों की महिलाएं ऐसे काम करती फिरे। मुझे क्या लेना देना है। कवि ने कवित्त के द्वारा ही उत्तर दिया है :—

मेरे भावें रसोई में भटियारी बन जावे, मेरे भावे माथाहित बन जावे नायणी।
मेरे भावें सीवणे में दर्जी की माय बनो, मेरे भावें टाबर जणाने होय दायणी।।
मेरे भावें गाली गीत पातर को रूप धरे, मेरे भावें सेजांहित बन जावे कामिणी।
नाथू कहे जोड़ हाथ, क्षमा करो विप्रनाथ, मेरे भावे इत्ता काम करो भले ही बामणी।।

उपरोक्त तुकबन्दी से कोई यह निष्कर्ष नही निकाले कि कविवर हल्की-फुल्की रचनाएं लिखने मे आनन्द लेते थे। वे तो जो घटनाएं देखते थे उनको बिना लाग-लपेट के निर्भीकतापूर्वक काव्यबद्ध करते थे। उनका उद्देश्य सुधारवादी था, न कि निरा आलोचनात्मक ही था। जहाँ उन्होंने उपरोक्त दोनो कवित्त एक सामाजिक बुराई पर कटाक्ष करते हुए लिखे, वहाँ शाश्वत साहित्यिक महत्व की कई अमर कृतियाँ भी उनकी लेखनी से निसृत हुई है। दीपावली सवत् २००८ वि० मे "साहित्य प्रभाकर" नामक ग्रन्थ में श्री महालचन्द जी बेद ने कविवर की निम्नलिखित रचनाओ को आभार पूर्वक प्रकाशित किया है :—

१

एक समय बृपभान लली हरि सग उमग भरी मदमाती।
आनन्द छाय रह्यो दोउ के उर सोय रहे तिरसठ की भाँती।।
ताहि समय कछु रोष भए तब तिरसठ से छासठ जनाती।
छासठ से जु छत्तीस भए, कहे "नाथू" तिरेसठ ही सुख-राती।।

(२)

कहूँ वार वार यार नार से न प्यार कर, नार तो है पर तन मन धन ताकनी।
हँस हँस बोल बोल धँस जाय देख पोल, घूँघट को खोल खोल टेढी आँख झाँकनी ॥
नजर लगाय जाय कलेजो चुराय खाय, दो चार दस तांय आय ना उलाकनी।
नाथू कहे वारी वारी नारी सारी छलगारी, ऐसी ढंगवारी ने मै स्यारी कहूँ कि डाकिनी ॥

(३)

कामिनी के काज देखो बाली बली मार्‌यो गयो, कामिनी के काज राज रावणादि खोयो है।
कामिनी के काज शिशुपाल को कुटुम्ब खप्यो, कामिनी के हेत कुल कौरवां को सोयो है॥
कामिनी के काज दाग इन्द्र के भी लाग गयो, कामिनी के हेतु मुनि तपोभ्रष्ट रोयो है।
नाथू कहे कामिनी से दस पेंड दूर रहो जहाँ तहाँ अनरथ कामिनी से होयो है॥

नारी-स्वतन्त्रता के इस युग मे जहाँ सविधान मे धर्म, लिंग आदि का कोई भेद मान्य ही नही है, उपरोक्त रचनाएँ कुछ लोगो द्वारा पसन्द नही की जाती। वे इनमे "ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।" अथवा "जिमि स्वतन्त्र होय विगरहिं नारी", अथवा "सहज अपावन नारि' जैसी भावनाओ की गन्ध पा सकते है, परन्तु कविवर नाथूजी का ध्येय वस्तुस्थिति का साहित्यिक चित्रण करना था। वे स्वय पत्नी-परित्यक्त थे। उन्होने अपने गले 'कुनार' पडने का लिखा है। अतः उसी कुनारी के परिप्रेक्ष्य मे ही कविवर ने उपरोक्त कवित्त लिखे है। वैसे उनकी एक समस्यापूर्ति "नारी को पैर की जूती बनाय क्यो मर्द ने अपनी शान गमाई" मे कवि ने नारी गौरव विषयक भावनाएँ काव्य-बद्ध की है, जो इसी ग्रन्थ में अन्यत्र देखे।

स्व० मानधन्या जी की बैठक में कवि के पास अन्य साहित्य-प्रेमी भी आ जाते थे और दिन भर काव्य सर्जना होती ही रहती थी। जो भी अनुकूल उस विषय को आनन्द-मय बना देते थे। एक ऐसा ही अवसर आ गया, जब कवि ने अपनी जिह्वा को उलाहना देते हुए एक कवित्त बनाया, ताकि वह जिह्वा भगवान का नाम लेकर अपना अस्तित्व सार्थक करे।

नाना विधि के पकवान, स्वादिष्ट षट्रस आन, दिए बहुत मेवा पान चावत मौज मानी तू।
आय भर मै कमाय, तेरे हित दियो गँवाय, सुकरत से मन हटाय, कीन्हों बस अयानी तू॥
अब यम रोकी पोरी, थाक बैठी निर्मोरी, होगी क्या हरामखोरी, खाकर नून पानी तू।
नाथू कहे जीभ हाय, क्यू नहीं उऋण हो जाय, काल मार से बचाय बोल हरि बानी तू॥

सवत् १९७४ वि० मे डीडवाना प्लेग (महामारी) के संक्रामक प्रभाव मे आ गया था। लोग नगर छोड़ कर यत्र तत्र अपने अन्य सम्बन्धियों के पास जाने लगे। कविवर भी छोटी खाटु नामक स्थान पर गए, परन्तु तत्कालीन ठाकुर साहब के कर्मचारियो ने

इनको गाँव मे प्रवेश नही करने दिया और रात भर हवालात में रक्खा, क्योकि कही ऐसा न हो कि बीमारी के कीटाणु गाँव मे प्रवेश कर जावे। कविवर को इस तन्हाई से अपार कष्ट हुआ। उन्होने रात्रि मे ही निम्नलिखित कवित्त की रचना कर दी और ठाकुर साहब के कर्मचारियो को सुना भी दिया :—

शास्त्र गाता है कलिजुग में प्रजा कर्म आज्ञानुसार काल बरते बरतारा है।
काहू काहू ठौर महाभारत करवाय माते, काहू काहू जगह पै बीमारी प्रसारा है।।
बीमारी के भय से लोग भाग आवें दूजे गाँव, राजवगी काढे उलटा रिश्वत से गुजारा है।
नाथू कवि कहाँ जाय इधर कुवा उधर खाड, बाड़ खाय खेत प्रभु अबे कौन सहारा है।।

जब यह समाचार ठाकुर साहब के पास पहुँचा तो वे स्वय कवि के पास गए और उन्हे हवालात से निकाल कर गर्म जल से स्नान करा कर नए वस्त्र पहनाकर गाँव में प्रविष्ट कराया। ठाकुर साहब ने कवि से क्षमा-याचना की और कहा कि ऐसी कविता मत बनाना। कवि ने आगे तो कोई पद नही बनाया, परन्तु जो बन गया, वह तो वज्र की लकीर बन गई। "कै रेवे गीतडा, कै रेवे भीतडा।" या तो काव्य अमर रहता है या मकानात।

छोटी खाटू की ही एक अन्य घटना है। कवि को हजामत बनवानी थी, इसलिये उनके एक प्रशंसक उनको नाई की दुकान पर ले गए और पैसे स्वय देने का कह कर निकट ही कही चले गए। नाई ने कवि की हजामत बना कर उनसे पैसे माग लिये, क्योकि कवि को उस दूकान पर लाने वाले सज्जन वहाँ उपस्थित नही थे। उस समय हजामत बनवाने की रेट दो पैसे थी। सरस्वती के उपासक की जेब मे लक्ष्मी का क्या वास्ता था ? उनकी जेब में उस समय मात्र अधेला था। नाई ने उनको खरी-खोटी सुना दी। कवि ने वही बैठ कर निम्नलिखित पद रच डाला :—

खाल की रछानी माही धारदार राछ राखे जीवित बाल काटबा की बहुत चतुराई है।
जुवां मांहि रमे राम ताको नहीं नेक ज्ञान एक उदर भरने खातिर दया ही छिटकाई है।।
उस्तरा की धार से लोहीजार मुँह करे, जीवित नाखून काटे बन्यो तू कसाई है।
कहता है न्याई न्याई, नाई कहत आवे लाज, नाथू कहे न्याई नहीं तू महा अन्याई है।।

कविवर ने जब यह कवित्त सुनाया तो उस दूकान पर कई व्यक्तियो की भीड हो गई और उनमे से कइयो ने कवि की तरफ से नाई को पैसे देने का प्रस्ताव रक्खा। इतने मे वही सज्जन लौट आए और वृत्तान्त सुन कर नाई को खूब डाटा। नाई ने भी अपनी भूल देख कर कवि की पग-चम्पी की और उनको प्रसन्न कर दिया। कविवर ने नाई की नम्रता देख कर अपनी पूर्व रचना मे सुधार करने हेतु निम्नलिखित नया पद रचा :—

कामिनीय के बाल बढे, अति सिंगार भए, जोगियों के बाल बढे, जोगिता दिखाई है।
भोगियों के बाल बढे हरि से पुकार कीन्हीं, प्रभु करि कृपा देह नाई की बनाई है।।

न्याई ने न्याव किया, रिश्वत दोय पैसा लिया, कुरूप को सुरूप किया चतुराई सुखदाई है।
नाथू कहे भक्ति हित प्रभु सेना नाई बने, वो ही सेन वशी तू अन्याई नहीं न्याई है ॥

इसके वाद कविवर जव भी छोटी खाटू जाते, उनके ठहरने आदि का सारा इन्तजाम सत्यनारायण जी की बगीची में हो जाता था और कई भक्तजन सत्सग करने कविवर के पास आते थे।

कविवर का चिन्तन और सत्साहित्य सर्जन का काम अहर्निश चलता ही रहता था। अपनी परिपक्व अवस्था मे, अर्थात् सन १९४९ से सन् १९५४ तक के वर्षों मे वे एक भविष्यदृष्टा ऋषि के रूप मे माने जाने लगे थे। लोग उनके मुँह से शुभ वाणी सुनने को लालायित रहा करते थे। लोग बडे श्रद्धालु होकर उनको घेर लेते थे। उनका सृजनात्मक और उपदेशात्मक साहित्यामृत जनता को सदैव उपलब्ध रहा करता था। निम्नलिखित कवित्त सत्य की प्रतिष्ठा करने हेतु रचा गया है :—

सनातन धर्म सत्य, लोक परलोक गत्त, मिथ्या सभी आन मत्त, स्वार्थी डफाण है।
असत माया अस्थि मांस, मेल बढ हो विनाश, काछ वाच साच भ्रात, ताकिया पिछाण है॥
युधिष्ठिर हिमालय जाय, एक अगूठा गलाय, नेक भूठ को फल पाय, जीतो गयो सुजाण है।
नाथूराम पतिव्रता, अग मेल आग जस्ता, ऋषभ जूण पीड़ करतां, प्रत्यक्ष प्रमाण है ॥

कविवर के हृदय मे अपने आराध्य देव भगवान कृष्ण की विविध लीलाएँ इस कदर समा गई थी कि वे कृष्ण के रूप में एकाकार से रहने लगे थे। जिस प्रकार सूरदास ने भगवान कृष्ण के प्रति "आखिर जात अहीर" तथा "हृदय तै जव जाहुगे, मर्द बदौगो तोहि" आदि शब्द लिखने की छूट ले ली थी, उसी प्रकार कविवर नाथू जी ने भगवान को कई अवसरो पर खरी खोटी सुनाई है। ऐसी व्राह्मी स्थिति तभी आ सकती है जब आराधक तथा आराध्यदेव मे गहरा तादात्म्य स्थापित हो जावे। कविवर अपनी काव्य-साधना एव भक्ति-भावना से उन्नत धरातल पर पहुँच गये, तभी वे अपने आराध्यदेव से व्यग्य मे विनय करते है कि जैसा आपका यश है, उसके अनुसार मेरा भी उद्धार करो। आपने मुफ्त मे ही "पतित-पावन" अथवा "अवढर दानी" जैसे उपनाम धारण कर लिए है। अपने पास से कुछ खर्च नही किया और 'दानी' नाम से धाँधलीवाजी के द्वारा विख्यात हो गए। इसी आशय का है निम्नलिखित कवित्त —

विभीषण, सुग्रीव निहाल किए मार रावण बालि,
दिला छिना कौरव माल, बण्यो पांडव प्यारो है।
ललाट पै मांड बोक, वलि पै ठगे तिहुं लोक,
सुदामा को देते भोक, रमा पुर उबारो है॥
सखियन का चोर चीर, ढाके द्रौपदी शरीर,
नरसी तो पै भये फकीर, भात भर्यो भारी है।
कहे कवि नाथूराम, मुफत में पायो नाम,
गाँठ से दे मोहि श्याम, तब देवो तिहारो है॥

भक्त और भगवान में ऐसी नोक-झोक चलती ही रहती है। कविवर ने इस तरह के सैकडो पद रचे थे, परन्तु वह निधि कहाँ दब गई है, भगवान ही जानता है। जितना भी साहित्य प्राप्त हो चुका है, उसी का अवलोकन किया जाय तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि कविवर की जिह्वा एव हृदय मे स्वयं सरस्वती ने अवतरित होकर यह धार्मिक साहित्य लिखवाया। बिना भगवत् प्रेरणा के ऐसी साहित्य-सर्जना सम्भव नही है।

मानुषी तु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्॥
—अभिज्ञानशाकुन्तलम्

[इस प्रकार के रूप (रूपक) की रचना क्या किसी मनुष्य के द्वारा सम्भव है? (अर्थात् नही)। प्रभा की तरल ज्योति क्या पृथ्वीतल से निकलना सम्भव है? (अर्थात् नही)। यह तो किसी दैवी शक्ति द्वारा होना सम्भव है।]

कविवर का चिन्तन बड़ा प्रबल था। नैत्र ज्योति नही के बराबर होने से तथा लेखनी का प्रयोग स्वय करने मे अक्षम होने के कारण उनका मस्तिष्क बहुत दूर की कौडी लाता था। उन्होने अपनी सिद्धहस्त सवाद शैली मे "मनुष्य" एव "वृद्धावस्था" के प्रश्नोत्तर निम्नलिखित कवित्त छन्दो मे दिए है। वह मनुष्य स्वय कविवर ही है।

कविवर का प्रश्न

सुखाए यौवन बाग, पशुपक्षी गए भाग मन को ना मिट्यो राग, इन्द्रियाँ गई पौढ रे।
रूप को कुरूप कियो, भूप को अभूप कियो, छैल बल छीन लियो, रोगादि रोढ रे॥
कोई ना करे पूछ, धोले बाल बेणी मूछ, काला काला किए कूच, कचली गए छोड़ रे।
नाथू कहे रे बुढापा, बिन बुलाए आय व्यापा, कौन तेरी मात जापा, जणिया कर कोड रे॥

वृद्धावस्था का उत्तर

सेना रोगादि साज, आय गये यमराज, तोहि पकड़ने के काज, बाँह लई चोढ रे।
काल फौज रगरूट अमोलपुर लेही लूट, रोवेगो माथा कूट, मिलेगी कौन ठौर रे॥
घणी गई रही थोड़ी छिन छिन जाय दौड़ी काम न आय कुटुम कौड़ी, अब तो मोह छोड़ रे।
नाथू यूँ बूढ़ापो भण, चेतांण सुकृत तण, बड़ाँ की आशीष मने, जणिया कर कोड रे॥

उपरोक्त शिक्षा-प्रद कवित्त कई बुजुर्ग लोगों को कण्ठस्थ है और वे यदाकदा इनका रसास्वादन किया करते है। जिन व्यक्तियो को कविवर का सान्निध्य प्राप्त हो चुका है वे जानते है कि कविवर के साथ ही कविता चलती रहती थी। वह छाया की भाँति कविवर का अनुगमन करती थी। यदि कोई साहित्य प्रेमी व्यक्ति पास मे हुआ तो

कविता लिख ली जाती थी, अन्यथा उनके अन्तर मे ही रह जाती थी। एक बार सन् १९४२ मे शाम के समय कविवर हमारे घर पधारे और बोले कि मेरे मन मे भाव उमड़ रहे हैं कुछ भक्त नारियो का वर्णन करना है इसलिये शीघ्र कविता लिखो। मै उस समय विद्यालय (तत्कालीन सनातन धर्म विद्यालय) मे खेलो मे ड्यूटी देने जा रहा था, अत: मेरे पिताजी ने उनकी रचनाएँ लिखनी प्रारम्भ कर दी। बाद मे पता लगा कि कविवर ने सात कवित्त लिखाए थे। आज वे कवित्त अप्राप्य है। पता नही कहाँ लुप्त हो गए। उनमे से एक पद पिताजी के हाथ का लिखा हुआ सुरक्षित बचा जो निम्नलिखित है:—

पतिव्रता अनुसूया, वशी तीनू ईश हुया, देवियाँ भी पद छूया, सभी जग सराती है।
वृन्दा विष्णु भगवान, भजे अजान पति मान, बेवा जड़ तुलसी पान, हो दुख दरसाती है ॥
कृष्ण जार भाव गोपी, सुमिर लोक-लाज लोपी, मिली ज्योति रूप ओपी, भागवत गाती है।
कौन नाथू राम धरम, पाले गति पाय परम, याको खोल कहे मरम, सो सत को संगाती है ॥

गाँधी जी की नीतियो को विफल मानते हुए भी कविवर गाधीजी के अछूतोद्धार, कुटीर उद्योग कार्यक्रम, स्त्री शिक्षा, गौरक्षा, खादी का प्रचार आदि के लिये उनकी प्रशसा किया करते थे। यही कारण था कि ३० जनवरी, १९४८ को गाँधीजी की हत्या पर वे बड़े दुखी हुए और निम्नलिखित कवित्त बनाया :—

भूप सर लगे अजान, भयो श्रवण बलीदान,
बिगड़ी जान राघव आन, सुधारी जग बाजी है।
कुर्बानी गाय, माय लख गाँधी मोहनराय,
बिना शस्त्र रिपु हटाय, बणिया स्वराजी है।
उस बापू की देन बली शत्रु की न हिम्मत चली,
तांहि मारे द्विज छली, भली हिन्द लाजी है।
नाथू राम कृष्ण तोय, जिगर से पुकारूँ रोय,
अब तो आ दयाल होय, फिर क्या भयां राजी है ?

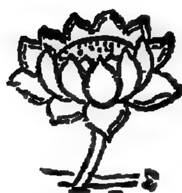
यह दुख कविवर के हृदय मे बना ही रहा कि गाधीजी को मारने वाला उनका ही नामराशि था। मुझसे उन्होने पाँच-सात बार पूछ भी लिया था कि नाथूराम नामक व्यक्ति ने ही गाँधीजी को मारा था। मैंने कहा कि "गोडसे नाम ही अखबारो मे आ रहा है। फिर उसका पूरा नाम नाथूराम विनायक गोडसे था, अत आपको तो अपने नाम से उसका साम्य बैठाना ही नही चाहिए। आपका नाम तो "नाथूराम श्याम के शरणे, हरि जस वरणे पार उतरणे" है। आप तो मारने वाले को अपने से भिन्न ही माने।" मुझे ध्यान है कि कई लोग तो कविवर को छेडते भी थे और कहते थे कि अपना नाम बदल लो। तथापि हत्यारे का नाम नाथूराम होने का मान कविवर को आजीवन बना रहा। वे बड़े शुद्धात्मा थे और तनमन वचन से वैष्णव जन थे। होलिका पर्व मे बनाई जाने वाली आकृति का नाम भी "नाथूराम" रक्खा जाता है, इस बात से भी कवि प्रसन्न नही थे

अपने नाम की कही जरा भी खिल्ली उडना उनको गवारा नही था, अत: उन्होने दो तीन दोहे भी वनाये थे :—

काली नाग नाथैया वो ही मेरा नाथूराम।
जनजन मन को नाथ रहा होली का नाथूराम॥
कवि भी नाथे सदा छन्द को बन कर नाथूराम।
गाँधी नाथ लिया भारत को वो भी नाथूराम॥
ना कोई मरता ना कोई मारे, गीता ज्ञान बताय।
ज्योति में ज्योति मिली नाथू मोहन राय॥

कोई यह शका न करे कि कविवर ने दोहे कब लिखे। कुछ दोहे तो स्व० मानधन्याजी की हस्तलिपि मे अब भी उपलब्ध है, परन्तु वे उन्होने आध्यात्मिक प्रसगों के सम्बन्ध में लिखे थे। जैसे :—

चाह नहीं चेतन के, जड़ से कछु न होय।
नाथू जग कैसे बने, भेद बताओ मोय॥
ना चाही भिन्न शून्य ज्यूं, व्यापक चेतन सार।
नाथू तिहि बल होण बुध, जड़ तुष जंग कर्तार॥



फुटकर कवित्त व सवैये

एव समस्या पूर्त्तियां

(१)

चतुरानन को एक ही मुख गर्भ धार ब्राह्मण जण्यो,
और कहां रह गए तीनों मुख बांझ रे।
थोथ बिना चतुर्भुजा कौन सी जणो ये भूप,
उर से वैश्य भये कैसे, नाभि कमल मांज रे॥
पग की कहो कौन वस्तु कुचर कर रच्यी शूद्र,
ऊँच नीच कैसे लखी ब्रह्म अग मांझ रे।
नाथू कहे वेदारथ उलट किए भेदारथ,
भारत को बिगारे धार बड़पन पोप कॉज रे।

(२)

पदारथ पाने चार, ब्रह्म बने दो आकार,
नारी को नर दातार, नर के लिए नारी है।
नारद को ले श्राप, नरलीला करी आप,
बन सीता को विलाप, शिक्षा नेह पिटारी है॥
पुकारे है चन्द्रमुखी, तो बिन मैं चकोर दुखी,
न अन्न फल से सुखी होत व्रतधारी है।
कहे दर्जी नाथूराम, परखगी शम्भु बाम,
धर्म अरथ मुक्ति काम, आश एक तिहारी है॥

(३)

मुकत शिव काशी मांय, मार्कण्डेय जैसे तांय,
देते अन्यों को बनाय, जड़ी तम किंवाड़ी है।
अरथ खजाने की कूँची, राखने को उड़े ऊँची,
करन करनी बिना पूची, पहने कब भिखारी है॥

काम सुख इन्द्राधीन, दे विश्वामित्र चीन्ह,
धर्म व्यास से प्रवीण, पावे विधि द्वारी है।
कहे दर्जी नाथूराम, दीन को चारों ईनाम,
दुर्लभ दीनबन्धु नाम, आश एक तिहारी है॥

समस्या—केहि कारण राम सिया छिटकाई

सवैया

(४)

पूरब राघव हेत किए तप भूतल बीच देह प्रगटाई।
नारी धर्म पतिव्रत साबुत की दुख में पिय की सेवकाई।
भावी वश खल देश वशी करि अग्नि स्नान पतिपुर आई।
नाथू एक मूरख निन्दत एहि कारण राम सिया छिटकाई॥

(५)

नीच के धाम हरीचन्द श्याम शुचि लखि बाम छू ए नहीं राई।
ज्यू खल जार के द्वार पे नार की शुद्ध अशुद्ध असम्भवताई।
अग्नि स्नान लखे बिन मान सके नहीं आन बड़ी कठिनाई।
नाथू मरजाद रखे ही भली एहि कारण राम सिया छिटकाई॥

(६)

काम प्रभाव अपार लखे भए लोक मरजाद विशाल बणाई।
भुजग पे पाम ज्यूं धाम इकन्त में रहणो न ठीक हो बहन रु भाई।
हरि तोरते जग मरजाद को तो सब नाथू राखत जोर लुगाई।
बिना भीति पशु सम हो तिरिया एहि कारण राम सिया छिटकाई।

(७)

लोक परलोक सुधारण मानस धर्म मरजाद ये वेद बताई।
सिंह विषय सम एक ही बार करो ऋतुदान जभी कुसलाई।
सो स्वीकार करी हरि नीति से फेर सघन तप किए सुहाई।
नाथू बाम-गत प्रेम नहीं एहि कारण राम सिया छिटकाई॥

(८)

पूरव वेदवती तपती लख लंकपति रति हेत सताई ।
तन जार सती अवतार लियो रिपु वश सहार कराकर आई ।
तप आदि सधे न, अधूरा रहे, ताहि को याद रखे रघुराई ।
नाथू सम्पूर्ण योग से मुक्त एहि कारण राम सिया छिटकाई ॥

(९)

नर निकलंक हो सुद्ध मयंक ज्यू कूड़ कलक लगे दुखदाई ।
रोग की औषध वेद कहे सद वहम की लागत नाहि दवाई ॥
मणि की चोरी झूठ लगी तव माखन चोर भी सोद कराई ।
नाथू कवि कूड़ कलंक बुरो एहि कारण राम सिया छिटकाई ॥

(१०)

निशिचर हीन करी धरनी तब राघव सैन सभी घमण्डाई ।
गर्व को खण्डन धर्म को मण्डन बीजिए बीज श्री रघुराई ।
गुप्त उदय होये गुप्त वढे जब वीर भिड़े तो हटी गुमराई ।
नाथू पाने को गूढ सलाह एहि कारण राम सिया छिटकाई ॥

समस्या :—वधू मुख घूंघट से होत के वड़ाई है

(११)

माता सम पराई नार, मानी श्रुतिधर्म सार, अनुज, पुत्रवधू, वहन, कन्या तुल बताई है ।
व्यभिचार मूल पथ, सुव्रत हास्य सग इकन्त, रूप देख लुभे कौन कर सके बुराई है ॥
तस्कर सात ताला तोर, लेवे पर माल चोर, सहाय अन्य जोखिम पास राख करे सहाई है ॥
कहे नाथू शुचिकार, कविरत्न करो विचार वधू मुख घूंघट से होत के वड़ाई है ॥

(१२)

मात वहन कन्या नैन, देखे धरे दिन रैन, विरला राखे धर्म ये न, माने नृप दुहाई है ।
नई सुन्दर मंजु चीज, जोय जाय सभी रीझ, काँसी पै परे बीज, चतुर ले छिपाई है ॥
कौरव कीचक दशकन्ध, भये पतंग ज्यूं निकन्द, राहु ग्रसे खुले चन्द, ढके नित भलाई है ।
नाथू शुचिकार पट से, रहे लाज वचे सट से, वधू मुख घूंघट से होत ये वड़ाई है ॥

(१३)

यवनों के राज से ही, इस भारत देश में, नारियों के बीच यह प्रथा जो चलाई है।
सुख से न सांस लेही, स्वास्थ्य को विदार देही, पुरुषों की वासना को दूनी ललचाई है।
घूंघट की ओट में चलाय नैन सैन और छिप छिप आँख पर पुरुष से मिलाई है।
कहे मान त्याग नाथू परदे की रीत पूछूँ वधू मुख घूंघट से होत के बड़ाई है।।

(१४)

यवन भय से परदा रीत, तो भी मान ये पुनीत, लागे नांय धूप सीत स्वास्थ्य सुखदाई है।
स्वास रुके जीवे कौन, सभी ठौर चले पौन, काच छिपे दीप जोन पतग ना जराई है।।
ओटे से हो यदि पाप, सो तो सम्हल सके आप, खुले मुंह डिगे छाप, गणिका सी बताई है।।
कुरूप भी स्वरुप दरसे, नाथू सम्मान सरसे, वधू मुख घूंघट से होत ये बड़ाई है।।

(१५)

सीता ले तृण की ढाल, रावण से किए सवाल, ससुर श्राद्ध में भी बाल सूरत निज छिपाई है।
उत्तम तो नेक शरम, ओट से बचाय धरम, मध्यम के परदा परम, रहे शीलताई है।।
दिव्य अदिव्य देश काल, समूह मुजब भली चाल, अधम नार लज्जा डाल फैशन कुल्टाई है।
नाथू शुचिकार हठ से, हारो मती झंझट से, वधू मुख घूंघट से होत ये बड़ाई है।।

(१६)

शिशु पैदा पोषणकार, दो ही अग ढके सार, घघरा कचुकी सिणगार, ये ही तन लुगाई है।
कुरूपा सुरूपा मुख, काच देखे जी में सुख, दुष्टों के चित्त दुख, सज्जन के शीलाई है।
ऐसा मुंह दिखाणी नार, रहती नहीं चोर जार, सती का तो दिव्य दीदार, दरसा कुसलाई है।
नाथू शुचिकार हठ से, क्यू प्रथा चली झट से वधू मुख घूंघट से होत के बड़ाई है।।

(१७)

रचे जभी तक भट्टी, चीज जान शंके विधि,
राधे ऋद्धि साधे सिद्धि, कृपण निधि छिपाई है।
पर दारा भरम खाके, पर दारा को रूप ताके,
ताला धर्म शर्म आंखें शुद्ध दवा सराई है।।
मैथुन के आठ भेद, सो सन्यासी कौ निषेध,
मुख मूंडे ओठ कंद, गृहस्थ दुखदाई है।
कहे नाथू शुचिकार, कविरत्न कहो विचार,
वध मुख घूघट से होत के बड़ाई है।।

समस्या :—साँवल गौर भए केहि कारण

सवैया

(१८)

उज्ज्वल नंग अनग रिपु चित ज्योतिर्लिंग शेष सिणगारण।
निराकार साकार निरजन सुन घन बीज पीताम्बर धारण ।।
खेल स्वयभू बहु विगड़े जग अवतार करे चरित्र सुधारण।
नाथूराम हरि हर एक ही सांवल गौर भये एही कारण ।।

(१९)

होत दुरंग से बैर सनेह लख जगदम्ब मणि दीप दवारन।
उगले तम हर कंज लघुमा कारे धोरे मेघ जमारन ।।
सोई माधो उमा धोरी फुता मित्रता बरसी कई बारन।
नाथूराम हरि हर एक ही सलॉव गौर भए एहि कारण ।।

(२०)

ब्रह्म दिन ज्योति माया रजती जननी भैरव खेल खिलारन।
काले धोले नाच छवि करे शुक्ल कृष्ण दोऊ पखवारन ।।
शशि शेखर रवि रूप रमेश के भेटें निशि जो हरे तोहि लारन।
नाथूराम हरिहर एक ही सॉवल गौर भए केहि कारन ।।

(२१)

दिव्य सतोगुणी देव सभी छवि नारायण महादेव अपारन।
छ· प्रभुताई युक्त सदाई मुक्त बड़ाई भगत उवारन ।।
ब्रह्म रचे जग पाले विष्णु शकर जीरण विश्व उधारन।
नाथूराम हरि हर एक ही साँवल गौर भए केहि कारन ।।

(२२)

आदि दिव्य सतोगुणी अंग अरग लखे विन छवि सिणगारण।
तम से भी श्वेत तरंग बने जो डाकी काल की नोजर टारन ।।

नभ का ले जल धोरे रगीजे लोचन कोए विश्व निहारन।
नाथूराम हरिहर एक ही सॉवल गौर भये एहि कारन।।

(२३)

सत तम गुण रग रूप पलटण पड़े जभी हो कोई मारण तारण।
ध्यात बसे उर उलट छवि ज्यूँ जाय नील मणि हीर भँझारण।।
थिर ब्रह्मा तम बल से माया बदले बेस रंगीली अपारण।
नाथूराम हरि हर एक ही सॉवल गौर भए एहि कारण।।

(२४)

मेघ सुभाग दोऊँ प्रभु भिन्न भिन्न ऊँचे नीचे धाम बसारण।
कैलाशी बैकुण्ठ निवासी निकट रवि शशि लोक दवारण।।
शीत रु गरम श्वेत रु कारे भासे श्री बिजरी उजियारण।
नाथूराम हरि हर एक ही सॉवल गौर भए केहि कारण।।

(२५)

फाग रमे अनुराग से विष्णु शम्भु राग रग पिचकारण।
सत्त सुरग कुरग तमोगुणी आपस मांय लगे रंग डारण।
उलट छवि तन भासन लागी खास स्वरूप हो मुक्त निहारण।
नाथूराम हरि हर एक ही सॉवल गौर भए केहि कारण।।

(२६)

सत दृष्टा रज दृष्टि मनादि तन घनश्याम शुक्ल नर नारायण।
भगिनी भ्रात उलट वर चारों ध्यात परस्पर प्रतिबिम्ब धारण।
श्वेत रमा से पले भगत जन, काली खेल हत जीर्ण उधारन।
नाथूराम हरि हर एक ही सॉवल गौर भए एही कारण।।

(२७)

शिव प्रिये यश अमृत रस खुश बस यौवन रूप अहि विष जारन।
काले वाल व्याल लख काल ज्यों शंके किन्तु सके न मारन।
हो विष्णु शैया तजे कंचुकी शेष जो केश श्वेत शम्भु सिणगारन।
नाथूराम हरि हर एक ही सॉवल गौर भए एहि कारन।।

समस्या :—कहाते हैं

कवित्त

(२८)

मुख उर भुजा पाम, गुदा शिश्नु आदि नाम, जुदा जुदा कर्म काम, प्रत्येक यह लखाते है।
मलमूत्र अंग साथ, जिव के रहे शुद्ध गात, न्यारा भया भूप हाथ लगते ही धुलाते है॥
पालो पौसो सभी अग, छु आछू त दूजे ढग, संग कुसग सेतो रग, रोग लग जाते है।
सभी देह शामिल चाम, कहे दर्जी नाथूराम, विराट रूप जग तमाम एक ही कहाते है॥

(२९)

शीलव्रत जाति कर्म, उठ गए दया धर्म, नई फेशन धार शर्म, अधर्म कर बहाते है।
भाइन सग बैर पाले, साले सग मौज घाले, निशि तोड़ ताले बाले निराले हो जाते है॥
सयाना नादान हुआ, चौड़े खेल खेल जुआ, हाथां पींजरे मे सुआ पड़ के पछताते है।
कहे दर्जी नाथूराम, छोड़ लगे बुरे काम, इस जमाने का ही नाम, कलियुग कहाते है॥

(३०)

कहाते है धाता सो ही विश्व का उदर भरे, कहाते है दाता जो जाचक लख उमाते है।
कहाते है हुजूर जो प्रजा दुख दूर करे, कहाते है शूर जो रण सन्मुख जाते है॥
कहाते हैं ज्ञानी जो आत्म निरूपण करे, कहाते है ध्यानी जो तन की सुधि भुलाते है।
कहाते है कवि नाथू ईश्वर चरित्र कथे, बुद्ध बली वीर बड़े घर मे सब कहाते है॥

(३१)

कीट सम है असीम, जान दुखी बध्यजीव, ताते हित मुक्त पीव, भँवर बन आते है।
श्रीयश तेज ज्ञान, धर्म वैराग्य खान, छ. प्रभुता सुजान, घर आतम जगाते है॥
केते भये सन्त रूप, केते न्याई विश्वभूप, चन्द्रकाया छटा धूप, रवि शशि दिखाते है।
नम. नाथू शुचिकार, बीस चार ही अवतार, बीस चार ही उदार तीर्थंकर कहाते है॥

समस्या :—

भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम मही पति कैसे कहाए

सवैया

(३२)

केकई तात कह्यो यूं सुता सुत राज करे रामायण गाये।
बड़प्पन भ्रात के भरत मुं राखण राम की पादुका मॉग के लाए॥

सास के साख कहे कवि नाथू दास के हाथ से राज कराए।
भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम महीपति ऐसे कहाए॥

(३३)

आए सम्बन्धी की वसुधा में अवतरो जानकी के जस छाए।
मथूरा त्रिलोकी से न्यारी जिमि अवध की भू वैकुण्ठ से लाए॥
नाथूराम उसी धरनी को पाल के राज दे धर्म सिखाए।
भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम महीपति ऐसे कहाए॥

(३४)

प्रत्यक्ष भू सब भोग की खान है श्रीलक्ष्मी आदि दर्प उपाए।
खानज भोग के स्वामी हरि खुद भोगन भूप स्वरूप बनाए॥
कहे नाथू विश्व के स्वामी पितामह मूल के सर्व ही साख लखाए।
भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम महीपति ऐसे कहाए॥

(३५)

लकेश कपूत धरा अम्बक भर हार सपूत सुरादि सताए।
अनाथ छिति जगन्नाथ बुला दामाद बुला नृपतिलक कराए॥
कहे नाथू हरि असुरादि हते सुरादि सास के शोक मिटाए।
भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम महीपति ऐसे कहाए॥

(३६)

श्री विष्णु धरणीधर प्यारी मान बाराह हो दन्त लगाए।
उस भू जानकी जनकी जान के औतर प्रभु दोऊ को अपनाए॥
कहे नाथू सिया प्रसूति लिए छिति रूप पे धर्म का राज्य जमाए।
भूमि सुता पत्नी जिनकी श्रीराम महीपति ऐसे कहाए॥

समस्या :—

नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई

सवैया

(३७)

आदि पुरुष अर्धांगिनी होकर महामाया जगदम्ब कहाई।
ताकी कोख अवतार भए सुर भी खल भाँत कथा न चिताई॥

नाथू करी मूल मथ्यो रत्नाकर साधवी धर्म विद्या न पढाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(३८)

देवी गुण आतम बुद्धि तजी जड़ देह बनी तरुणाई रगाई।
नई फेशन धोती सलमें सितारे चौबने चौब मती कल्टाई॥
नाथू सजी चाम पे काम लुभे छैल छबेल गए बिगड़ाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(३९)

पुरुष वशीकर राखण कारण प्रकृति देह बुद्धि उपाई।
सुख काम लिए शुभ काम जिए सट पाम दिए चलिये अकड़ाई॥
नाथू कवि आई भूल फंसे भव कीच से निसरना कठिनाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(४०)

अद्वैत ब्रह्म में युक्ति नहीं दृढ भाव से होत ये लोग लुगाई।
माने ज्यूँ ही खर खाज खुजारन नरबहु चाव छिनार कहाई॥
नाथू एक लखि कुबाम पशुचाम ले पाम के काम कुठाय कमाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(४१)

रावण बाल घमण्डी कुचाल करी सो कथा यह पुरानों में गाई।
तारा मन्दोदर कीन्ही अनादर जो पद त्राण समान सदाई॥
ताकी आखिर सम्पति सुन्दर नाथूराम उपासक पाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(४२)

पूजा हेत भई कमला या जन्म को देने श्री जग माई।
भार्या भोग के काज कहावत अन्त में काली कराली गाई।
नाथू कवि भीम घमण्डी नये जब देख के द्रोपदी की प्रभुताई।
नारी को पैर की की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(४३)

दम्पति नेम प्रेम घटे जब देना तलाक तभी कुशलाई।
नीतर आपस मांय कलह कर होय अधर्म मरे विष खाई॥
नाथू कहे मूढ कूंसड़ा खाय रखाय कटाय फिर लाज गमाई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

(४४)

कलि प्रभाव मति बौराव किए दुर्भाव ससुर जंवाई।
चर्बी चर्म कोड अमी गुण छोड़ हो हस का डोड चमार कसाई॥
नाथू दी सौतनि जोर बेजोर राखि निरादर चोर चुराई।
नारी को पैर की जूती बनाय क्यों मर्द ने अपनी शान गमाई॥

समस्या :—विधि को परपंच यो जान्यो न कोई

सवैया

(४५)

चेतन आवत जावत कसे वीर्य रज मिले देह होई,
दम्पति योग से लोग बने तो वन्ध्या भोग युगां क्यों रोई॥
कर्म कर्तार लखो तो करो बिना भर्तार मिटे एक लोही।
नाथू कवि कई खोज थके विधि को परपंच यो जान्यो न कोई॥

(४६)

सुगन्ध भरी कस्तूरी कुरूप, स्वरूप स्वर्ण नहीं खुशबोई।
गुण माननी बाम अज्ञानी कलाम जिमि अन्धधाम मशाल समजोई॥
नाथू गुणी द्वार कुलच्छनिनार तजि मनहार हो हाथों रसोई॥
विपरीत अमीत क्यों खेल करे विधि को परपंच यो जान्यो न कोई॥

समस्या :—केहि भारत देश गुलाम कहायो

सवैया

(४७)

सत्य दया तप दान ज्ञान और धर्म सदा यहां रहतो ही आयो।
धर्म प्रपाप विद्या बल दर्प बढा जग आर्य नाम यो पायो॥

मै विषया बड़ शक्ति बढी कलि फूट करी मतभेद दृढायो।
नाथू उच्चारे प्रेम बिना इमि भारत देश गुलाम कहायो॥

(४८)

समय अनुसार वही सूत्रधार सभी संसार नचाय नचायो।
राव को रंक, सरंक को लक, मयंक कलंक रवि गिर सायो॥
इन्द्रादि रावण आधीन किए हरिश्चन्द्र को नीच को नीर भरायो।
नाथू बिन भक्ति रूठे विधि इमि भारत देश गुलाम कहायो॥

(४९)

विद्या बल धन यौवन पाकर गर्व कुकर्म बुरो फल पायो।
दिल्ली राज वियोगिता नाम सयोगिता पृथ्वीराज जी लायो॥
विषय मोह जाति द्रोह बढ्यो सुन वैरी विदेशी आय दबायो।
नाथू उच्चारे फूट समय इमि भारत देश गुलाम कहायो॥

(५०)

मोटर, रेलां, हवाई जहाज और बम्ब बनानो कलि अधिकायो।
तन्त्र कला कौशल उन्नति कर ऊँचो भारती माथो सवायो॥
कूटनीति से भीत बने पर-हुन्नर चाकरी में चित लायो।
नाथू सब राय न एक हुए इमि भारत देश गुलाम कहायो॥

समस्या :—विचित्र चित्त तेरा है

कवित्त

(५१)

नाना भाँति नरनार, बोलता सिनेमा द्वार, नित नया हो दीदार, काहु को न बेरा है।
निर्गुण में सगुण रूप विश्वमयी आदि भूप, चित्रकारी धन्धा सूंप, किया तिस बडेरा है॥
ब्रह्माजी नकशा खींच, विष्णु भरे रग पाँच, शम्भु दे भुजाण जाँच, अनुकूल नहीं चेहरा है।
कहे दर्जी नाथूराम, आज्ञा गुण तीन काम, करे जग चित्राम, विचित्र चित्त तेरा है॥

(५२)

ईश जीव नीर भेद, सिन्धु घटि गाए वेद, दोउक रह उम्मेद, चित्र विश्व चेहरा है।
ईश जागरण में जहान, मॉड मॉड दे भुजाण, जीव स्वप्न में अज्ञान, करत यही बखेरा है॥

ईश मडे मिटे जोय, सुखी दुखी नांय होय, जीव मोय आपा खोय, रोय हँसे घणेंरा है।
कहे दर्जी नाथूराम, जो अल्पज्ञ करे काम, भजे नाँहि समर्थ श्याम, विचित्र चित्त तेरा है।।

(५३)

चतुरानन चित्रकार भीत बिना हो ससार चित्र दम्पति द्वार नित नया चेहरा है।
ताके कृत कालबस सब किए हिरणाकुश, विष्णुजी से राखी गुस, खुद बने बडेरा है।।
कहे दर्जी नाथूराम, भक्त हेत चित्राम, देख खम्भ बछल श्याम, हटत डर तेरा है।
जड़े जैसे आधा आधा, नरहरि तेज ज्यादा, ये चितरे जे विधि दादा, विचित्र चित्त तेरा है।।

(५४)

स्वप्न में देखा श्याम, जाने ना नाम ग्राम, तिरलोकी तमाम, चितरे पुरुष चेहरा है।
कामदेव ताके तौर, प्रद्युम्न के किशोर, दीखे मोहि चित्र जोर, चितचोर मेरा है।।
कहे उषा धन्य पिया, ढोले सूता लाय दिया, निद्रा में मिले पिया, चित्रगुण सेहरा है।
दर्जी नाथूराम अब, लेवे खोज देश सब, चित्र ऐसा सम्भव, विचित्र चित्त तेरा है।।

(५५)

दश नांय झूपरी, मन्दिर यहाँ अनूप री, झरोखे में स्वरूप री, शशि मुख उजेरा है।
सोलह सिंणगार पहना नख सिख सजा गहना, पिकबैना मृग नैना, निरखे, मेष मेरा है।।
मोवे हाथ फूल झाला, दे रही नव बाला, वंकुण्ठ से हवाला, खड़े द्वार पहरा है।
कहे दर्जी नाथूराम, भक्त जो सुदामा धाम, चितरे बोलते चित्राम, विचित्र चित्त तेरा है।।

(५६)

ब्रह्मादिक देव नमे, सोए कृष्ण एक समे, छोटे बाल सग रमे, खेल शिशु केरा है।
जभी माटी श्याम खाई, साथी मुखबरी लाई, माई खिजलाई आई, हुआ बहुत जेरा है।।
आखिर को मुख फारा, दिखलाए विश्व सारा, शून्य में ज्यों ग्रह तारा, जाने मां बडेरा है।
दर्जी नाथूराम मण्ड, रहे रोम २ अखण्ड, करणो बृह्माण्ड चण्ड, विचित्र चित्त तेरा है।।

(५७)

चतुर चन्द्र एक ठौर, देखा सूर सूता और, दिव्य इन्दु अंग गौर, दोय श्याम चेहरा है।
चार चार कल कीर, हँस कपोतों की भीर, अष्ट चकोरा अमीर, सिंह अहि ले भेरा है।।
पीले हरे लाल रंगी, इन्द्र धनुष ज्यू सुरंगी, घटा छटा बीज संगी, बरसे मुद घनेरा है।
दर्जी नाथूराम मन, चितरे चित्र बहुतन, बने वर्षा में ज्यों घन, विचित्र चित्त तेरा है।।

समस्या :—कलि कलि

कवित्त

(५८)

कच्छ करुणा मच्छ वीर, वाराह भयाना शरीर,
अद्भुत खम्भ चीर, बावन अंग छलिछलि।
परशुराम रौद्रूप, हास्य मुखी राम रूप,
शान्त बुद्ध कल्कि अनूप, धन्वन्तरि भलि भलि॥
दर्जी नाथू दसवां प्रेम, कृष्ण कल्प तरु नेम,
मनोभाव कुशल क्षेम, दरसाये फलि फलि।
भगवान परगटे आप, भक्त जनों के प्रताप,
धर्म को जमाई छाप, खिलो हिय कलि कलि॥

(५९)

विधि रचे देह गेह, अस्थि रक्त मज्जा खेह,
चाम पाम कलि करी, लुभो मत भलि भलि।
खोटे भूषण धार देह, नई फेशन पाखण्ड नेह,
पूज्य गुणी को न बूझे, माल मारें छलि छलि॥
दर्जी नाथूराम आतम, भूल बैठे हरि प्रियतम,
फूल काम नाम महातम, डोलें फिरें गलि गलि।
महगा भया अन्न तृण, दुखी गौ गरीब जन,
ईश पुकारें कवि गण, कराल काल कलि कलि॥

(६०)

कलि कलि कहत लोग, कलि में क्या दोष रोग,
सब समै करणी योग, फल मिलते फलि फलि।
फलि फलि होत बीज, बीजें उगें तृष्णा भीज,
याते खेलो सोचि तीज, ज्यूं सुरीति चलि चलि॥
चलि चलि चलनी द्वार; आय सार सु दीदार,
अपने पिये निहार, तज विषय मलि मलि।
मलि मलि धुपे शक्त, कीट हो भंवर भक्त,
ले दर्जी नाथू भक्त, कमलानन्द कलि कलि॥

(६१)

विधि रची है सुरंगी, कैसे कहाती नारंगी,
कच्चाई खटाई संगी, पके मीठी भलि भलि।
अनुसूया सती शीली, नाकारे से परोपीली,
तो भी घर बड़ा दिलो, हेम संचे ढलि ढलि॥
सन्तरा सु भाव सम, अमृत सी चाले नम,
दर्जी नाथू नहीं कम, सुख दे अति फलि फलि।
अमीरता छवि हूर सी, वीरता शुचि शूर सी,
पर पीरता अंगूर सी, दे रस भरी कलि कलि॥

(६२)

दुखी चकोरे पतंग, होते लुभ अचाय संग,
खर खाजी नेह ढंग, लूटे सुख छलि छलि।
पारस परस लोहा हेम, करे कीट अलि प्रेम,
सम प्रेमी पाले नेम, क्षीर नीर रलि रलि॥
निर्धन से राखे रीत, सो सबसे श्रेष्ठ मीत,
कृष्ण और सुदामा प्रीत, शोभा बड़ी चलि चलि।
दर्जी नाथू वारी जाय, ऐसे मित्र को सराय,
नाम लेत खिल जाय, हिय कंज कलि कलि॥

(६३)

श्याम से चतुर घाती, भेजी लिख योग पाती,
विरह वियोग आग छाती, सुन जाति जलि जलि।
क्या हो ओला डाले मेह, चातक ना छोड़े नेह,
देख सीपी आशा देह, भरि बूँदों ढलि ढलि॥
रे रे तन मन कारा, स्वार्थी है प्रेम थारा,
हट यासे तुन प्यारा, त्याग जात छलि छलि।
नाथू शुचिकार प्रीत, जो निभावे सो पुनीत,
तू तो केवल रस चीत, भूम अलि कलि कलि॥

भगवान से प्रश्न

कवित्त

सर्व शक्तिमान ईश, सर्वज्ञ हो न्यायाधीश,
मुझ अल्पज्ञ पै रीस, क्यों दयाल आई है।

निराकार को निराकार, कैसे को करे बिगार,
स्वामि दास सखा प्यार, भाव रहे सदाई है ॥
गर्भ काल कोटड़ी, अदोष ही कैद पड़ी,
याही तें अनीत्त बड़ी तिहारी लखाई है ।
नाथूराम कृष्ण श्याम, रटूं नाम आठों याम,
यदि कहो कर्म काम, तृष्णा कुण बुराई है ॥

भगवान का उत्तर

चेतन अपार एक, दोय माने कम विवेक,
सो दम्पति तन अनेक, जड़ बस अल्पज्ञ है ।
कामार्थ धर्म युक्त, बरते वैदेह मुक्त,
मै बड़ देह बड़ी जगत, भूल मूल जप यज्ञ है ।
या पाकर कैद कड़ी गर्भ काल कोटडी,
किए को अनीत बड़ी मीठे बोन नितज्ञ है ।
नाथूराम शेषातम सोय, अपणायत बिरद जोय,
सुधारे कोऊ सगी होय, निमित्त निडर सर्वज्ञ है ॥

समस्या :—क्यों शठ लागे सती को सताने

प्रश्न

सभा वही जहाँ वृद्ध विराजत, वृद्ध वही जो धर्म को जाने ।
धर्म वही सत्यता जहँ बसे, सत्यता वही छलना नहीं माने ।
जहाँ कुमति के कर्म न होवत, यह षट् शास्त्र नीति बखाने ।
भीष्म द्रोण खड़े तहँ नाथू, क्यों शठ लागे सती को सताने ॥

उत्तर

मानुष कौन हराय सके जाहि भीष्म द्रोण से जाय जिताने ।
पाप की सीर अरु भक्त पै भीर बढ़े बिन क्यों लगे ईश्वर आने ।
प्रेरित मौत करी मति भ्रष्ट दुशासन भीष्म द्रोण न जाने ।
सत्य की ठौर असत्य बसी उर यों शठ लागे सती को सताने ॥

समाज सुधार हेतु कवि की कल्पना

(६४)

समाज सुधार बिगार, केवल राजा महाराजा हाथ,
लोभ पक्षपात त्याग बिया दिल दुखाने से।
प्रथम नशीली दवा वैद्यों के आधीन होवें,
दूजे जुआ कम्पनी के खेल शठ मिटाने से ॥
तीजा सुधार जो बेकार उल्टे रोजगार,
जाति अनुसार कला कौशल सिखाने से।
कहे नाथू शुचिकार सच्चे समाजी सुधार,
तन मन करके त्यार, सही शिक्षा दिलाने से ॥

(६५)

सिया, अनुसूया, सती सावित्री, दमयन्ती,
रुक्मिणी आदि पतिपूजन सेव सेवियां।
वैसे पतिव्रत धार, पाल सब सदाचार,
गैर चलन दे विसार, विदेशी एबियां ॥
वेदवती गार्गी सी, गणित में लीलावती सी,
कौशल्या देवकी सी, खोलन कोख जेबियां।
कहे नाथू शुचिकार, जभी समाज को सुधार,
अमूल्य लाल दे औतार, भारत की देवियां ॥

(६६)

दवादार नशीली रोगी हितकारी ईश भोगी,
योगी साकी भए लोगों को हंसात है।
सुरासुर सिन्धु मथ, काठ अमी हितारथ,
छीने दैत्य निजारथ द्वेष उर बसात है ॥
मोहनी रूप न्यायकार, देवो को दी सुधासार,
दैत्य नूर को निहार मोह मद फँसात है।
कहे नाथू शुचिकार, कैसे भारती सुधार,
नशा से नसीब हार, नसीब ही नशात है ॥

(६७)

करो सुख से गुजारो, दम्पति व्रत शिक्षा धारो,
होड़ा होड़ क्यों पसारो, पाँव आगे सौड़ के।

घूंघट तज धोती झीनी, काईं बरबादी कीन्हीं,
नई फेशन शौकीनी, तजे काठा ओढ़ के।।
तन मन वसन साफ, घर पुर आंगन साफ,
खान पान बर्तन साफ कुल्टा कर्म छोड़ के।
कहे नाथू शुचिकार, होवे सामाजी सुधार,
करो पर उपकार देश जाति कार्य दौड़ के।।

(६८)

स्वधर्मियों को ना पिछान, विधर्मियों का मान दान,
एकता के खानपान, छवि पहरान छाकी है।
कन्या-कसाई का बाजार, तेज कमाने कल्दार,
पंचो हित लड्डू तैयार, रीन या कहों की है।।
बढ रही बेवा बाल अर्धामियों को विजयमाल,
सफाई २ सवाल कहत जुबां थाकी है।
नाथू कवि लबालब, भरे हिन्दू सुधारसब,
फकत सुधरने में अब, पुर्नविवाह बाकी है।।

समस्या :—बनाए माँ बाप हैं

चेतन सार जड तुषार, प्रकृति मूलाधार,
भूले देहमद अपार, भोगे पुन्य पाप है।
युधिष्ठिर सत बल, हिमालय ना सके गल,
बचे प्रह्लादादि फल अद्भुत ब्रह्म जाप है।
त्रिगुणातम अत्रिबाम, शिशुकर पोखे धाम,
नमो सतियां कंपे काम किए पश्चाताप है।
नाथूराम सिया धरम, पाले वा में गति परम,
विश्व माँ बाप शरम बनाए माँ बाप हैं।।

कवित्त :—भक्त की आर्त्त पुकार

मिला ब्रह्म रज पाणी, चौरासी लाख प्राणी,
सचा बढाणी घटाणी, भवानी ना सूझे है।
पूरब पाप दुख द्वन्द्व, बाजे क्लीव जन्म अन्ध,
पिता पुत्र ऋणाबन्ध, बहुमती ढोंग पूजे है।

ना सबूत असन्त सन्त, नरक स्वर्ग पाय अन्त,
पतितपावन भगवन्त, कौन करम दूजे है।
नाथूराम कृष्ण तोय, जिगर से पुकारूँ रोय
गौ गरीब पालक होय, दुख में क्यू ना बूझे है।।

कवित्त — भगवान की स्तुति

ना चाहिए तन सार, जड़ तुष होनहार,
बुद्ध विषम पाणीगार, मले नाना दम्पति।
सूक्षम नित विरक्त, स्थूल सदा धर्मयुक्त,
काम वाम भोग मुक्त, पाय छहों सम्पति ।।
रजी नाम रूप गन्ध, रसादि ले ऋणाबन्ध मरे
फेरूँ जनम अन्ध, रोगी होय अधमति।
बहु बिगड़े नाथूराम, कृष्ण ज्योति वो सरनाम,
भक्त कल्पतरु काम, सार देवे शुभगति ।।

सवैया :—झूठ बोलने का फल

झूठे के नीत प्रतीत नहीं नर
झूठ बके सो कहावत झूठो।
कठ चार अठास ही ग्रन्थ कहे कोई
झूठ के पाप कबहुं नहीं छूटो ।।
धर्म अवतार युधिष्ठिर मिथ्या
भाव के वाक् सुधार्यो ही पूठो।
संदेहे ही स्वर्ग गयो
नाथू पण झूठ के हेतु गल्यो अंगूठो ।।

कवित्त :— न्याधीश के प्रति

विधि कलम के प्रभाव राज कलम हाथ लगी,
कलम के कसाई मत कहाज्यो जहान में।।
जो निर्धन शर्मदार भावीवश गुनहगार,
आप त्याग क्रोध रहम कीजियो बयान में।।

राजमद लोभवशी मुकद्दमा बिगाड़ दोगे,
कजाबन्द जाओगे नरक अस्थान में।
नाथू कवि जद कद गरीब की हया लगे,
होही मुख मेरो सो कलम कहे कान में॥

सवैया :—भगवान की विभूति

सत चित आनन्द सदा शिव में जीव में नित्य विभूति तेरी।
मो से जग रच पाले सघारे या अद्भुत करतूती तेरी॥
भूल भुलैयों खेल खिलैया सोई निन्दा अस्तुति तेरी।
दर्जी नाथूराम रामेश्वर अपना लख प्रसूती तेरी॥

कवित्त :— द्रोपदी का चीर बढते समय की कल्पना

सुन सूत्रातम अनन्त मिली एक शक्तिवन्त,
भिन्न प्रकृति बनत, अम्बर नर नारी है।
अन्ध नन्द पाप खांच, देखे कैसे सती सॉच,
धर्मादि पति पॉच, जुआ खेल हारी है॥
नाथूराम ब्रजराज, बैठे तन बन बजाज,
वेत बहु अग साज, विस्मय होत भारी है।
सारी मांही नारी है कि नारी मॉही सारी है,
कि सारी हू की नारी है कि नारी हू की सारी है॥

कवित्त :—जबान का पक्का होने वाले की प्रशंसा में

मुख शोभा रह्यां बात, ना स्वर्ण लग्या दाँत,
क्या हो सुन्दर पान खात, रचात लब पीक है।
युद्ध में ब्लेक चला, रोसत पराया गया,
घूंसखोर राज कला, कहे को असलीक है॥
हरिश्चन्द्र शिवि बली, बात रखी बात चली,
दशरथ की बात भली, कही वालमीक है।
नाथु एक बाप माँ के, सो ही एक बात राखे,
वात की न ठीक जांके, बाप की न ठीक है॥

कवित्त :—ब्राह्मण पद निर्णय

देह ब्राह्मण मान तो, लाश जले ब्रह्म हत्या,
जीव ब्राह्मण मानें तो सभी जीव ब्राह्मण है।
खेत ब्राह्मण मानें तो क्यों नीच घर पाराशर व्यास,
बीज ब्राह्मण मानें तो क्यों राक्षस भयो रावण है।
वेद पढे ब्राह्मण तो समाजी पढ क्यों न होय,
जनेऊ से ब्राह्मण तो क्यों सूतकी अपावन है।
नाथू कवि ब्राह्मण पद ब्रह्म ज्ञान के प्रताप,
नाम के ब्राह्मण काठ हाथी सों कहावन है॥

कवित्त —हिन्दू कोड बिल के विरोध में

विप्र भए भए भाँगड़े, क्षत्रिय भए राँगड़े,
वैश्य ब्लेक मॉगड़े नौकर घूँसखोर है।
अन्नदाता भए करषा, बरसे विपरीत वर्षा,
घी के भाव नाज दर्शा, बढे डाकू चोर है॥
एक पति पत्नी नेम, दया धर्म देश प्रेम,
छुड़ा चाहें कुशल क्षेम, कोड बिल दे जोर है।
"नाथू" रामराज रीत, बरतें सुख हो पुनीत,
पश्चिमी चले रीत, दिन दिन दुख घोर है॥

कवित्त :—समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा

बीजें आम आक तात, अमी विष फल खात,
मेंहदी को घिस हाथ, जोयले तो जोय ले।
परोपकार सत्सग, किए तरे कीट भृग,
बहती गगधार अग, धोय ले तो धोय ले॥
बहु विषय लोलूप, मती गिरो अन्ध कूप,
नर से नारायण रूप, होयले तो होय ले।
नाथूराम जीवन जोत, जग में जरा सी होत,
बीज के झपक्के मोती पोयले तो पोयले॥

कवित्त :—ईश्वर की विभिन्न लीलाएँ

ईश्वर अकेला ने, आवड़े नहीं ठाला ने,
प्राप्त तन खेला ने, स्वयम्भू बिलमावे है।
बीज वृक्ष अनुसारी, बढ नाना नर नारी,
मीठे नोन होन हारी, करणी बदलावे है॥
नाव रूप असन्त सन्त, भासे यूं न गति अन्त,
डूबा गुचलो पारवत, गूंगा गुड़ खावे है।
नाथूराम कृष्ण लोग, हिंसा चोरी जारी भोग,
विष जरा ज्ञान योग, बल तिरे तिरावे है॥

